प्रस्तावना.

आ जगत्मां आत्महित पमाडनार कोइ मार्ग होय तो ते परम पवित्र वीतराग पुरुषोनो धर्म छे. ए मार्ग स्याद्वाद छे; अविरोधी छे. एनी खात्री ए मार्गने अनुसरनारा पूर्वे थइ गयेला एवा महान् आचार्योनां वचनो छे. ए पूर्व पुरुषोए जे जे अपूर्व ग्रंथो रच्या छे, ते ते पवित्र दर्शनना महिमानी अने तेमनां ज्ञाननी साक्षी पुरेछे. आवा सत्पुरुषोए रचेल अपूर्व, अमृतमय ज्ञान पुस्तकोने देखी, वांची, विचारी क्यो आत्मानंदी जीव उल्लास नहिं पामे ?

एवो आनंद आत्महितैपियो प्राप्त करे, तत्त्व पामे, पूर्व महापुरुषोनापगले चाली तेना जेवा थाय, अने ए पूर्व महापुरुषोनी कृतिउं अविछिन्न जलवाइ रहे, ए आदि हेतुथी, स्वपर हित बुद्धिथी, निर्जरानां कारणथी अमे एवा महापुरुषोना प्रकरण ग्रंथो प्रसिद्धकरवा प्रयास कर्यो छे. ए प्रयासना अंगे अमारा तरफथी श्री प्रकरण रत्नाकरना चार भागआदि अनेक ग्रंथो बहार पडी चूक्या छे.ए बधानी खपती, अने एथी जाग्रत थएली जैनभाइयोनी ज्ञानरुचि ए ग्रंथो तथा तेमना कर्त्तापुरुषोनुं महात्म्य प्रगट करेछे; तथा एवा बहु बहु ग्रंथोप्रसिद्धिमां आववानी आवश्यक्ता सूचवे छे.

आ प्रकरण रत्नाकरनो प्रथम भाग एकवार छपाइ गयो हतो; ए खपी जवाथी फरी आवृत्ति सुधारा वधारा साथे छपावी छे. तेमां प्रथम ग्रंथ, न्याय विशारद महोपाध्याय श्रीमद् यशोविजयजी रचित विहरमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामिनी स्तुति गर्भित साडी त्रणसो गाथानुं अति अद्भुत स्तवन छे. ते ग्रंथमां सूत्रथी विरुद्ध आचारें चालनारा अने प्ररुपणा करनारा इत्यादिकोने प्रथम ढालमां सिद्धांत अनुसारे यथाविधि प्रवर्त्तवा उपदेश आपेलो छे अने तेवाज उत्तम विषयो संबंधी सत्तर ढालमां स्तवननी रचना करेली छे. स्याद्वाद शैलीवाली नयगर्भित वाणीना शिखरना टोच उपर पहोंचेला आ विद्वाननी हरेक कृति वांचता मनमां सानंदाश्चर्य थायछे.

बीजोग्रंथ श्रीदेवचंद्रजी कृत आगमसार ग्रंथ छे. आ ग्रंथमां यथाप्रवृत्ति प्रमुख त्रण करणनुं, सात नयनुं, चार निक्षेपानुं, प्रमाणोनुं तथा सप्तभंगीनुं स्वरुप संक्षेपथी दर्शावेलुं छे. आ ग्रंथ वांचतां सिद्धांतनो सामान्यसार उपलब्ध थायछे. जे पद्धतिथी ग्रंथ लखवामां आवेलोछे, ते पद्धति प्राचिन छे, परंतु रसिक छे.

त्रीजो श्रीदेवचंद्रजी माहाराजनो रचेलोश्रीनयचक्रसार ग्रंथछे. आग्रंथमां सप्तनय तथा सप्तभंगोनुं स्वरुप एवुं उत्तम प्रकारे रचेलुंछे, के जेने यथास्थित रीते अध्ययन

करता जैनदर्शननुं सूक्ष्म स्वरूप सारीरीते समजी शकाय तेशिवाय षट् पदार्थनुं पण संक्षेपथी स्वरूप दर्शाव्युंछे

चोथो ग्रंथ श्रीआनंदघनजी माहाराज कृत चोवीशीनोछे, अने ते बालावबोध सहितछे अध्यात्मज्ञानना शिखर उपर बिराजमान थयेला श्रीआनंदघनजी माहाराज अने तेमनी चोवीसी जगप्रसिद्धछे तेमना अध्यात्म ज्ञान विषे अत्रे विशेष लखवानी कांइपण आवश्यकता नथी वली साक्षर पुरुषो ज्यारे तेमनी चोवीसी वांचेछे तथा तेनु अध्ययन करेछे, त्यारे तरत तेमना अंतःकरणमा अध्यात्म ज्ञाननो विलास प्रगट थायछे चोवीसीनो उपरनो बालावबोध प्राचीन गुजराती भाषामा लखायेलो होवाथी, तेने आधुनिक गुजराती भाषामा सुधारी अमे आग्रंथमां छापेलोछे कारणके तेप्रमाणे करवानी सूचना अमने अनेक अध्यात्मीओ तरफथी थयेलीहती ते सूचना अमने [illegible] भागवाथी उपकारनो हेतु जाणी तेम करेलछे अने तेप्रमाणे करतां [illegible] मूलनो आशय लेशमात्र पण फेरफारमा आवेलो नथी [illegible] चोवीसीना अभ्यासीओने हवे ज्ञाननो उत्तम प्रकारे लाभ थवानो संभवछे

पांचमो ग्रंथ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायजी रचित श्रीद्रव्यगुणपर्यायनो रासछे. आ रासना ग्रंथ [illegible] माहाराजे गुजराती भाषामा रचेलोछे अने तेनी पद्यरचना उपर बालावबोध पण ते उपाध्यायजी महाराजे करेलोछे आग्रंथनो विषय अतिगहन, [illegible] गुजराती भाषामा रचवाथी ग्रंथकर्तानो हेतु चमत्कार उपजावे ते [illegible] ते अत्रे दर्शाव्यो नथी गुजराती पद्यरचना अने [illegible] बालावबोध छता सामान्य वाचक वर्गने बोध न थइ शके तेनु कारण [illegible] विषय अतिशय कठिन अर्थात् द्रव्य, गुण अने पर्यायना अतिसूक्ष्म [illegible]

[illegible] "[illegible] समुच्चय सज्झाय" नामनो ग्रंथछे आ मूलपद्य बद्ध छे, तेनो गुजराती बा[illegible] श्री हरिभद्राचार्य मूल संस्कृतमा "श्रीयोगदृष्टि समुच्चय" नामनो [illegible] ग्रंथ रच्या छे तेनाज भाषांतररूप (संस्कृत श्लोकमाथी [illegible]) [illegible] संस्कृतथी अजाण छता आ कालना घणा जी[illegible] बुद्धिथी आ सज्झाय रची छे [illegible] आत्मनिर्वि[illegible] सम्यक्त्वनी, गुणस्था[illegible] आ सज्झाय [illegible] मार्गनुसारपणु छे, [illegible] गुणश्रेणि चढावे छे, ते [illegible] (इच्छा-[illegible]) [illegible] ते आ दृष्टिओने मनन पूर्वक अभ्या

सनारने बराबर मालम पडेछे. मालम पडेछे एटलुंज नहिं, पण अमुक दृष्टिए वर्त्तनारनां लक्षण अमुक गुणो छे,ए वगेरे हकीकत जणावाथी पोतामां ते गुणो होय तो ते वृद्धिंगत करी, अने नहोय तो मेलवी अथवा मेलववा प्रयास करी आगल दृष्टि पामवानुं, गुणश्रेणि वधवानुं निमित्त थाय छे. आम ए सज्झाय बहु उपकारी छे; आत्मार्थीउए ए बहु मनन करवा योग्य छे.

सातमो विषय "अध्यात्मसार" ए नामनो ग्रंथ छे. ए ग्रंथना संबंधमां अमे आ पुस्तकना पृष्ठ (५५६–७) उपर सूचना रुपे कांइक लख्युं छे.ते वांचवा योग्य छे आ ग्रंथ अध्यात्मनो सारज छे, अर्थात् आत्माने उद्देशीने,आत्म हितनी जे जे वातो होय,– तेनो सार छे. हेय (छांडवायोग्य) छांडी देवाना. उपादेय (ग्रहण करवायोग्य) ग्रहण करवाना बोधरुपे छे. आ ग्रंथना सात प्रबंध पाड्या छे; तेना बधामली एकविंश अधिकार छे. ते अद्भुत संकलनावरू छे. जे अनुक्रमणिकाथी समजाशे. आ ग्रंथ बहु उपकारी छे.

आठमो विषय " समाधिशतक " नामे (१०२) पदनो हिंदी भाषानोग्रंथ छे. संसारथी उद्विग्न थएला जीवोने आ पदो बहु बहु शांतिनुं निमित्त थायछे, तथा बाह्य प्रवृत्तिमां तणाता जीवो जो एकवार आ पदोने शांतिथी वांचे, तो तेउने तत्काल तो स्तब्ध करी दिये एम छे. मुमुक्षुउए आ पदो विचारवा योग्य छे.

नवमो विषय पण उपला जेवोज समता उपजावे एवो " समता शतक " नामे पद्यवरू हिंदी भाषानो ग्रंथ छे

दशमो विषय दिगंबरोने कदाग्रह छोडवारुपे हित बुद्धिथी अपाएल उपदेशयुक्त " दिक्पट चोराशी बोल " नामे पद्यवरू हिंदी भाषानो ग्रंथ छे.

अग्यारमो विषय "श्री चिंतामणि पार्श्वजीननां बे स्तोत्रो संस्कृतमां छे. एमांनो बीजो कोइक श्रावक मलुकचंद वीरचंदे रच्यो लागेछे. परम शांत वीतराग एवा प्रभुनी स्तुतिरुपे ए स्तोत्रो स्मरण–पठन करवा योग्य छे.

बारमो श्री समयसार ग्रंथछे एना कर्त्ता कवि बनारसीदास छे. ए पुरुषनो सविगत इतिहास आपणने मल्यो नथी; तथापि आ ग्रंथमांथी एउना विषे आपणने घणुं जाणवानुं मली आवे छे. एनी पंडिताइ, विद्वता अने आत्मनिष्ठानी आ ग्रंथ आपणने प्रतीति करावे छे. आ ग्रंथ हिंदी भाषानां पदमांछे; साथे गुजराती टीका छे. प्रधान पणे एमां उच्यानु योगनो अधिकारछे. नाम प्रमाणेज ए ग्रंथ 'समय' ना,–'आगम' ना सारुप, तत्त्व रुप छे. स्याद्वाद शैलिना जाण पुरुषोए निश्चय अने व्यवहार ए बेरुपे धर्मनुं निरुपण कर्युं छे: तेमां आ ग्रंथ प्रधानपणे निश्चयधर्म प्ररुपतो होवाथी एकांत वादिने रोगीने अपथ्यनी जेम अहित रुप थाय. एकांतवादीने तो बधुं अहित रुप थवा योग्य छे, पण व्यवहार

सनारने बराबर मालम पडेठे, मालम पडेठे एटलुंज नहि, पण अमुक दृष्टिए वर्त्तनारनां लक्षण अमुक गुणो ठे.ए वगेरे हकीकत जणाववाथी पोतामां ते गुणो होय तो ते वृद्धिंगत करी, अने नहोय तो मेलवी अथवा मेलववा प्रयास करी आगल दृष्टि पामवानुं, गुणश्रेणि वधवानुं निमित्त थाय ठे. आम ए सझाय बहु उपकारी ठे; आत्मार्थीउंए ए बहु मनन करवा योग्य ठे.

सातमो विषय "अध्यात्मसार" ए नामनो ग्रंथ ठे. ए ग्रंथना संबंधमां अमे आ पुस्तकना पृष्ट (५५६-७) उपर सूचना रुपे कांइक लख्युं ठे,ते वांचवा योग्य ठे आग्रंथ अध्यात्मनो सारज ठे; अर्थात् आत्माने उद्देशीने,आत्म हितनी जे जे वातो होय,-तेनो सार ठे. हेय (ठांडवायोग्य) ठांडी देवाना, उपादेय (ग्रहण करवायोग्य) ग्रहण करवाना बोधरुपे ठे. आ ग्रंथना सात प्रबध पाड्या ठे, तेना बधामली एकविंश अधिकार ठे. ते अद्भुत संकलनाबद्ध ठे, जे अनुक्रमणिकाथी समजाशे आ ग्रंथ बहु उपकारी ठे.

[illegible] विषय " समाधिशतक " नामे (१०२) पदनो हिंदी नापानोग्रंथ ठे.

वस्तुउंनी सिद्ध [illegible] आ पदो बहु बहु शांतिनुं निमित्त थायठे, तथा अनिलापावालाने तेनां साधनो, व्याक [illegible] शांतिथी वांचे, तो तेउंने तत्का-

अनेक शास्त्रो, तेते शास्त्रोना अध्यापको अने अध्ययनना [illegible] ने.

दिकनी आवश्यकता ठे.

प्राचिन कालमां विद्वानोनी स्मरण शक्ति अतिप्रबल होवाथी हरेक विषयनी प्रक्रिया तेउं श्रेणिबंध कंठाग्र राखी शकता हता, अर्थात् द्वादशांगी सुधी तेउं मुखपाठ करी शकता हता ते समये देवनागरी प्रमुख लीपीउं विद्यमान हती, ठतां स्मरण शक्तिनी उत्कृष्टता होवाथी ग्रंथो लखी राखवानी तेउंने जरुर पडती नही. कालानुसारे मनुष्योनी स्मरण शक्तिमां मंदता थवाथी ज्ञाननी न्यूनता थवा लागी तेथी पूज्यपाद श्रीदेवर्द्धिगणि क्षमा श्रमण प्रमुख विद्वानोए एकत्र थइ ग्रंथो लखवा, लखववानो प्रारंभ कर्यो, ते समयथी उत्तम पुरुषोए अनेक ग्रंथो लखावीने ज्ञानना अनेक भंडारो कराव्याठे, जे अद्यापि विद्यमान ठे.

प्रथम तालपत्र उपर ग्रंथो लखी राखता हता अने तेवा तालपत्र उपरना ग्रंथो जोइने मनमां घणुंज आश्चर्य उत्पन्न थायठे कारणके तालपत्र उपर ग्रंथ लखता बहुज मेहेनत लागेठे. ज्यारथी कागलनी कला प्रसिद्ध थइ त्यारथी कागलो उपर ग्रंथो लखवानुं काम शरु थयुं अने तेवा कागलो उपर लखेला लाखो ग्रंथो अद्यापि विद्यमान ठे.

कागल उपर लखेला ग्रंथोथी ज्ञानवृद्धि थायठे ते सत्य ठे. परंतु ज्ञाननो अति विस्तारथी प्रचार करवो होयतो मुद्रायंत्र कला ज्ञान वृद्धिनुं सर्वोत्कृष्ट साधन ठे. लखेला

२ श्रीदेवचंद्रजीकृत आगमसार

१ यथा प्रवृत्यादिक त्रण करणनु संक्षेपथकी स्वरूप; तथा षट्द्रव्यना नाम अने तेना गुण तथा पर्याय, वळी ते गुण पर्यायनु साधर्मपणु, तथा एकेका द्रव्य उपरे परिणामादिक च्यार बोल, एकेका द्रव्यमा नित्या नित्यादिक आठ पक्ष, तथा नित्यानित्य पक्षथी चौजंगी, तथा द्रव्यार्थिक अने पर्यायार्थिक नयना जेद १३१
२ सात नयनी स्वरुपातरगत वर्गणार्डनु स्वरुप, चार निक्षेपानु स्वरुप तथा चार निक्षेपा अने सात नयनुं पदार्थ उपर लगाडवु १३७
३ प्रमाणोनु स्वरुप, तथा सत् असत् पक्षथी सप्तजंगीनु स्वरुप, इत्यादिक मर्मवातो ते पूर्वोक्त आठ पक्षना विचारमा आवी छे १४३
४ द्रव्यनां ठ सामान्य गुणनु वर्णन तेना अंतरभूत संक्षेपे निगोदनु वर्णन जीवोनी व्यवहार अने अव्यवहार राशिनु वर्णन, अने तेमा डु लनो विचार तथा षड्द्रव्यनो वीचार उत्पाद, व्यय,ध्रुवनु स्वरुप, अगुरु लघुपणु, गुणनी जावना इत्यादिक वातो जूदाजूदा पारीभाषमा जणावी छे त्यांथी जोवी १४७
५ निश्चय चारित्र तथा व्यवहार चारित्रांतरजूत श्रावकना प्राणतिपातादिक बार व्रतनुं निश्चय व्यवहारपणु दर्शाव्यु छे १५१
६ आर्त्त रौद्रादिक चार ध्यान तथा पिंडस्थादिक चार ध्याननु स्वरुप १५६
७ चार ध्यानना अंतरभूत मैत्र्यादि चार जावना तथा अनित्यादि बार जावना १५७
८ समकितनो मार्गदेखाडतां समकितनी दशरुचि, आठ गुण, पाच भूषण इत्यादि १६०

३ श्रीदेवचंद्रजीकृत नयचक्रसार

१ चार अनुयोग तथा गुणठाणाथाश्री जीवनाजेद अने साधारण वैराग्य उपदेश तथा नयनी सामान्य विगत अने मिमांसकादिक दर्शनोनो विचार १६७
२ द्रव्यना, गुणना, अने पर्यायना लक्षण नयनिक्षेपादिक सहित तेना अंतर्गत अन्यदर्शनीर्जनी उन्मार्गता इत्यादिक १७२
पंचास्तिकायनुं स्वरुप तथा एकेक द्रव्यना जिन्न जिन्न लक्षण इत्यादि १७३
पंचास्तिकायनो सामान्य विशेषधर्म १८१
अस्तिस्वजावनु लक्षण अने नास्तिस्वजावनु लक्षण १८४
अर्पित अनर्पितपणे एक धर्मे सप्तजंगी देखामी छे १८६
अत्यंत विस्तारसहितस्वरूपपणे सप्तजंगी दर्शावी छे १८७
गुणनी सप्तजंगीर्ड देखामी छे १९४
नित्यानित्यस्वजावमा अने अस्ति नास्ति स्वजावमा उत्पादव्ययनो एकजेद, बीजो जेद, त्रीजोजेद, चोथोजेद, पांचमोजेद, ठठोजेद सातमोजेद इत्यादि० १९४
एक स्वजाव अनेक स्वजाव २१५, जेद स्वजाव अजेद स्वजाव २१६, जव्य स्वजाव अजव्यस्वजाव २१८, वक्तव्य स्वजाव अवक्तव्य स्वजाव २२०, परम स्वजाव २२५, इत्यादिकना स्वरूप जुदा जुदा पारिभाष्यथी आपता २०१

नयज्ञान करवानो अधिकार २१०
प्रमाणना स्वरूपसाथे ज्ञान स्वरूपनी ओळखाण, आयुंजीकरण इत्यादि २३१
श्रीआनंदघनजीकृत चोवीसी, तेना बाळावबोधसाथे २३८–३१५
श्रीऋषभजिन स्तवनमां शुद्धचेतना पोतानी श्रद्धा सखीने श्री ऋषभदेव परमात्मासाथे प्रीतिनो विलास दर्शावे ने एम सुचव्युं छे २३८
श्रीअजितजिननी स्तुतिमां यूथभ्रष्टमृगनी परे परमात्माना मार्गने जोवानी युक्तिओ अनेक विचारे सहित कर्त्ताये दर्शावी ने २४०
श्रीसंभवजिनना स्तवनमा सेवनानां स्वरूपस्थान अनेक प्रकारनां बताव्यां ने २४३
श्रीअभिनंदन जिननास्तवनमां प्रभुना दर्शननी अति दुर्लभता बतावी छे २४५
श्रीसुमतिनाथना पदपंकजमा आत्माने स्थापन करवानी रीत देखाडीने २४७
श्रीपद्मप्रभ परमेश्वर साथे आत्मानो अंतरायटाळवानी कवीश्वरे पृच्छा करीने २४ए
श्रीसुपार्श्वनाथ परमेश्वरने अनेक नामयुक्त जे जाणे तेने श्रीसुपार्श्वनाथ परमेश्वर परमानंदनो अवतार करे इत्यादि उपमाये स्तुतिकरी ने २५१
श्रीचंद्रप्रभजिनना मुखरूप चंद्रमाने दीठाविना सूक्ष्म निगोदादिक अनेक स्थानको निरर्थक गयां, इत्यादिक रीतो दर्शावी स्तुति करी छे २५५
श्रीसुबुद्धि जिनेश्वरना स्तवनमां प्रभुनी पूजाकरवानो विधि अनेकरीते बताव्यो ने २५७
श्रीशीतळनाथना स्तवनमा विचित्र प्रकारनी त्रिभंगीउं देखाडी छे २६०
श्रीश्रेयास जिनना स्तवनमां चार प्रकारना अध्यात्मनुं स्वरूप दर्शाव्युं छे २६३
श्रीवासुपूज्य जिनना स्तवनमा आत्मानुं साकार निराकारपणुं वर्णव्युं छे २६५
श्रीविमळ जिननी स्तुतिमा प्रभुने चक्षुये जोवाथी वान्छितार्थ सिद्धि कही छे २६८
श्रीअनंत परमेश्वरनी स्तवनामा ए परमेश्वरना चारित्र सेवनानी दुष्करता अनेक हेतुयुक्तिये सापेक्ष निरपेक्षवचनोनावर्णन सहित बतावी ने २७०
श्रीधर्मजिनेश्वरने हर्षसहित गावानारंगमां भंग न पडवा संबंधी स्तुति करीने २७३
श्रीशाति जिनेश्वरनी स्तुतिमा शात रसना स्वरूपनुं घणुं रमणिक वर्णन कर्युंने २७६
श्रीकुंथुनाथना स्तवनमा कोइप्रकारे मनबंधातुं नथीएयुक्तिकहीने २८१
श्रीअरनाथ परमात्मानो उत्कृष्ट धर्म शीरीते जाणयोजाय तेनु समाधान ने २८४
श्रीमल्लिनाथ प्रभु कर्मादिक शत्रुने निवारी श्रेष्ट शोभाकारीथयातेनीपुष्टिकरीने २८७
श्रीमुनि सुव्रतस्वामिनास्तवनमां आत्मतत्त्व शी रीते जाणयो जाय, तेसंबंधीनी विनतिछे, जेमा संक्षेपे षड्दर्शननु स्वरूप दर्शाव्युछे २ए१

श्रीनमिनाथना स्तवनमां षड्दर्शन जेनेते ए परमेश्वरनाज अंगछेएम बताव्युंछे २९९
श्रीनेमनाथना स्तवनमां अनेक युक्तिये करी राजेमतीजीनी विनति दर्शावीछे ३००
श्रीपार्श्वनाथजीनी स्तुति ज्ञानविमलसूरिकृतछे ३०३
श्रीमहावीर स्वामीनीस्तुति ज्ञानविमलसूरिकृतछे एमांक्षायकवीर्यनुं वर्णनछे ३०९
श्रीपार्श्वजिनस्तुति ज्ञानसारजीकृत छे एमां मधुनारूपनुं प्रतिभासदर्शाव्युंछे ३११
श्रीमहावीर जिनस्तुति ज्ञानसारजीकृत स्वरूप चिंतवनकरवा आश्रयीछे ३१३
श्रीयशोविजयजीकृत द्रव्यगुणपर्यायरास ३१५-३८८
मंगलाचरण तथा द्रव्यानुयोगना महिमानुं वर्णन द्रव्य गुणपर्यायनो भेद, स्वरूप तथा द्रव्यमां ऊर्ध्वता सामान्य शक्ति, अने तिर्यक् सामान्य शक्ति समुचित शक्ति अने ओघ शक्त्यादिकनो खुलासो ३१६
द्रव्यमां एकांत भेद माननाराने अभेद पक्ष अनुसरी दूषण दीधुंछे ३२५
भेदवादनो विरोध आदरीने दृष्टांते तथा सप्तभंगीनुं स्थापन दर्शाव्युंछे ३२९
द्रव्य गुणपर्यायनो नयवमांज विचार एमांद्रव्यार्थिक नयना दशभेद [illegible]छे ३३४
पर्यायार्थिकनयना छ भेदनो खुलासो तथानैगमादि सातनयना भेद ३३९
अध्यात्मशैली दिगम्बर प्रक्रियाये उपनयनुं स्वरूप देखाड्युंछे, तेम [illegible]
[illegible]
[illegible] निश्चय अने व्यवहारनयनुं स्वरूप शुद्धाशुद्ध [illegible]
[illegible] देखाड्युं
[illegible], वादीप्रतिवादीना संवादनो [illegible]
[illegible] सहित दर्शाव्युंछे
[illegible] देखाड्याछे, [illegible]
[illegible] सहित गुणना भेद देखाड्याछे
[illegible] सहित गुणना प्रकार बताव्याछे
[illegible] अधिगम नयेकरीदर्शाव्योछे
[illegible]
[illegible] भेद देखाड्याछे, तेमां दिगम्बर प्रक्रियानुं खंडन [illegible]
[illegible]
[illegible] ६ श्रीयशोविजयजी कृत योगदृष्टि सज्झा[illegible]
[illegible]
[illegible] ३८९ | ६ पांचमी स्थिरा दृ[illegible]
[illegible] ३९३ | ७ छठी कांता दृष्टि
[illegible] ३९६ | ८ सातमी प्रभा दृष्टि
[illegible] ३[illegible] | ९ आठमी परा दृष्टि
[illegible] ३९८ | १० उपसंहार

७ श्रीयशोविजयजीकृत अध्यात्मसार पृष्ठ ४१५ थी ५५६

प्रथम प्रबंधः –१ प्रस्तावना, मंगलाचरण, अने अध्यात्ममहात्म्याधिकार ४१५
२ अध्यात्म स्वरुपाधिकार ४१७
३ दम्भत्याग नामाधिकार. ४२२
४ भवस्वरुप चिंताधिकार ४२५
द्वितीय प्रबंधः–५ वैराग्य सम्भवाधिकार. ४३२
६ वैराग्य भेदाधिकार ४३७
७ वैराग्य विषयाधिकार ४४४
तृतीय प्रबंध:–८ ममत्व त्यागाधिकार. ४४८
९ समताधिकार ४५२
१० सदनुष्ठानाधिकार. ४५६
११ मनःशुद्धि अधिकार ४६१
चतुर्थ प्रबंधः– १२ सम्यक्त्वाधिकार ४६६
१३ मिथ्यात्वत्याग नामाधिकार ४७३
१४ कदाग्रहत्याग नामाधिकार. ४७६
पंचम प्रबंधः– १५ योगाधिकार ४८९
१६ ध्यानाधिकार ५००
१७ ध्यान स्तुत्यधिकार ५११
षष्ट प्रबधः– १८ आत्म निश्चयाधिकार ५१४
१९ जैनमत स्तुत्यधिकार. ५४०
सप्तम प्रबंधः– २० अनुभवाधिकार. ५४५
२१ सज्जन स्तुत्यधिकार ५५१
२२ सूचना. ५५६

८ श्रीयशोविजयजीकृत समाधिशतक. ५५७–५६१
९ श्रीयशोविजयजीकृत समताशतक. ५६१–५६६
१० श्रीयशोविजयजीकृत दिक्पटचोराशी बोल. ५६६–५७४
११ श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तोत्र द्वयं ५७४–५७६

---

१२ श्रीवनारसीदासकृत समयसार पद ७२८ पृष्ठ ५७७–७८७

१ उपोद्घात्–श्रीपार्श्वजिन, सिद्ध भगवान, साधु अने सम्यग्दृष्टिनी स्तुति· मिथ्या दृष्टि, आत्मद्रव्य, ग्रंथ गौरव तथा महीमा, कविसामर्थ्य अनुभव लक्षण तथा महीमा षट्द्रव्य तथा नवतत्त्व,–एनुं वर्णन; नाम माला, ग्रंथमा कहे वानावार द्वारना नाम, मंगलाचरण नमस्कार, भगवाननी वाणीने नमस्कार, आदिपद ५४	१–५४	५७७–५९४
२ वार द्वार अधिकार वर्णन–पद ५७५	५५–५७०	५९४–७६५
१ जीव द्वार पद ३२	५५	५९४
२ अजीव द्वार पद १४	८७	६०९
३ कर्त्ताक्रियाकर्म द्वार पद ३५	१०१	६१४
४ पुण्य–पाप एकत्व कथन द्वार पद १६	१३६	६२९
५ अध्यात्म अधिकार साथे आश्रवद्वार पद १६	१५२	६३६
६ संवर द्वार पद ११	१६८	६४१
७ निर्जराद्वार पद ६०	१७९	६४४
८ वध द्वार पद ५८	२३९	६६५
९ मोक्षद्वार पद ५३	२९७	६८७
१० सर्व विशुद्धिद्वार पद १२८	३५०	७०४

११ स्याद्वाद द्वार पद ४१ (अंतर्गत प्रथमहीमा-नवरस, नपड०)	४३३	३३६
१२ साध्य साधक वस्तु स्वरूप द्वार पद ५२	५१०	३५०
३ श्री अमृतचंद्राचार्यनी आलोचना, श्री बनारसी दासनी जिनेंद्र प्रतिमानी स्तुति तथा स्वकथनी पद ए	५३१–५३ए	३६५–३६३
४ चतुर्दश गुणस्थानकस्वरूप, क्षायिक सम्यक्त्वादि तथा श्रावकनी एकादश प्रतिमाना लक्षणादि पद १००	५००–६०३	३६३–३७४
० ग्रंथ तथा ग्रंथकर्त्तानी प्रशस्ति वगेरे पद ४१	६००–३२०	३७४–३७३

॥ श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः ॥

॥ अथ ॥

श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत साडात्रणसोगाथानुं स्तवन अर्थसहित प्रारंभः

॥ प्रथम अर्थ कर्त्तानुं मंगलाचरण ॥

पार्श्वनाथपदद्वंद्वं, नत्वा सीमंधरप्रभुम् ॥
स्तवस्य वार्त्तिकं कुर्वे, स्वपरानुग्रहाय वै ॥ १ ॥

॥ हवे अर्थकर्त्तानी सूचना ॥

ए स्तवन मांहेली गाथाउंना अर्थ अन्वये करी कहीशुं पण पाधरो नही कहेवाय माटे पद आगल पाछल जोडीने पोतानी बुद्धीयें विचारी जोशो तो खरो अर्थ बेसशे.

॥ ढाल पेहेली ॥

॥ एठडिकिहांराखी ॥ ए देशी ॥

श्रीसीमंधरसाहिबआगें ॥ विनतडीएककीजें ॥
मारगशुद्धमयाकरीमुझने ॥ मोहनमूरतिदीजेंरे ॥
जिनजी, वीनतडीअवधारो ॥ १ ॥ एआंकणी ॥

अर्थ ॥ श्री के० चोत्रीशअतिशय अनेआठ प्रातिहार्यादिक बाह्यलक्ष्मी तथा केवलज्ञानादिक अभ्यंतरलक्ष्मी तेणेकरीयुक्त एहवा सीमंधरनामेसाहिब तेआगलएकज शुद्धमार्ग ओलखवारूप अद्वितीयवीनतिकरीयें ते माहरा ऊपर मया के० कृपाकरीने शुद्धमार्गजे रत्नत्रयरूप मोक्षमार्ग अथवा अनेकदर्शनी वितथ्यसंवादी तथा विपरीतस्थापणकरनारा स्वदर्शनीने साचामानवा ते अशुद्धमार्गकहीयें ते सर्वज्ञवेखीने स्याद्वादसेलीयें जैनमार्ग ओलखवोते शुद्धमार्गकहीयेंतेशुद्धमार्गसेवी अनेकभव्यजीव स्वसंपदाभोगीथया एहवो शुद्धमार्गते हे मोहनमूरति के० वल्लभमूरति! मुझनेदीजे के० मुझने ्यो आपो एवीनती करीयेंछेयें माटे हे रागद्वेषनाजीतणहार जिनजी! तेअमारीवीनतीअवधारो के० केवलज्ञानेकरीजाणो ॥ १ ॥

चालेसूत्रविरुधआचारे ॥ जापेसूत्रविरुध ॥ एककहेंअमे
मारगराखूं ॥ तेकेममानूंशुधरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ कोइकप्राणीसूत्रथी विरुद्धआचारेंचालेछे, तथा जापेके० परुपणाकरेछे ते पणसूत्रविरुद्ध, वलीलोकनेकहेछेजे अमेमार्गराखीयेछैयें, जोअमेछैयेंतोमार्गचालेछे एह बुवोलेछे माटेहेप्रजु तेजातने अमेंशुद्ध केमकरीमानियें इहांसूत्रतेशु तेलखेछे – ११ अंग, १२ उपांग, १० पयन्ना, ६ छेद, ४ मूलसूत्र, १ नंदी, १ अनुयोगद्वार, एव ४५ आगम जाणवा यत 'इक्कारसतइबारस ॥ अयुवगाधिदसपयन्नाणी ॥ छछेयाचउमूला ॥ नंदीअणुडेगपणयाला ॥ १ ॥ तथा तेनी जाष्य, चूर्णि, निर्युक्ति, वृत्ति अने मूलसूत्र ए पचांगीने सम्मतजे पूर्वाचार्यप्रणीत धर्मरत्नादि प्रकरण तथा जे नंदीसूत्रगतपयन्ना अने हरीजद्रसूरि उमास्वातिवाचक प्रमुखकृतग्रथादिक ते सर्वसूत्रमांहेजआवे, केमके दुर्निहपदनातेवाले सूत्रविस्तारपहता ते मांहे जेटला साजल्या ते सूत्र खरा अने जे अर्थ साजल्या तेहना प्रकरण प्रमुखबाध्या तेपणसूत्रानुजायी होवाथी सूत्रज वदीये तो तेथीविरुद्धकरेछे तथा बोले छे तेजाने शुद्धकेममानु ॥ २ ॥

आलजनकूडादेसाडी ॥ मुगधलोकनेपाडे ॥ आणाजंग
तिलकनेनालू ॥ थापेआपनिलाडेरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे ते विपरीतचालता कोइकछेशी जे आमकाचालोछो तेहने पाठोजबाब आपता कहा के० गोटाआलजनदेखाडे जे आपचमकाले सघयणधृतिप्रमुखपूर्वे पुरुषनेहपाधिहावे एमकहिने मुगध के० मूर्खलोकने पाडे के० अज्ञानमार्गेपाडेछे एहवापुरुष ते आणा के० जिनाज्ञा तेहनोजेजग तद्रूपजेकालुतिलक तेपोतानेकपाले थापेछे पटले निजाज्ञाओपिछे तेजारेकोइकनोल्यो जे आज्ञाजगनुदूषणदीधुतेलरु पण सर्वथा विधिनो कोई करीशके नही ॥ ३ ॥

विधिजोतारविधुगमाहावे ॥ तिरथनोउछेद ॥ जिमचाले
तिमचलावेजइये ॥ एहधर्मतिभेदरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अनेविधिजोनानो कलियुग के० पाचमोआरो जेने अन्यतिर्थीकलीयुगकहेछे अने जैन पाचमोआरोकहेछे ते कलियुगमातीर्थनोउछेदयाय केमके तमे अविधिनीनानाकहो छोअने विधियेंतोथायनहीं। तेथी तीर्थविछेदजाय माटेजेमचाले तेम चलाव्याजेयें एटलेकार्य। अनविधिवीखांवेनहीं।नगनगरमचलाविथें एवीते कोइक पोतानी मतिनोभेदधरेछे ॥४॥

इमजाणीनेमारगलोपे ॥ सूत्रक्रियासविपीसी ॥ आचरणासू
धीआचरियें ॥ जोइयोगनीवीसीरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एहवांवचनबोलीने जेविधिमार्गनेलोपेछे तेप्राणीयेंसूत्रकियासर्वे पीसी के० द लीनाखी तेमाटे आचरणाके० क्रियातेशुद्धआदरीयें तेश्रीहरीभद्रसूरीयें योगनीवीसत्री सीकरेलीछे तेमांहेली सत्तरमीवीसीमांहेकह्युंछे. यतः ॥ तित्थस्सुछेआइ ॥ विणालंवणंज स्सएमेव ॥ सुत्तकिरियाइनासो ॥ एसोअसमंजसस्सविहाणो ॥ १ ॥ ५ ॥

पंचमेंआरेजिमविषमारे ॥ अविधिदोषतिमलागे ॥ इमउपदेश
पदादिकदेखी ॥ विधिरसिउंजनजागेरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ पांचमाआरामांहेजेमविषमारेछे तेमपांचमाआरामांहे अविधिदोषपणलागेछे एटलेएभावजे पांचमाआरामांपांचविषकाछे तेपणजीवने असत्यप्रवृत्तिनाहेतुछे. यतः ॥ १ दुस्सम २ हुंडा सप्पिणि ॥ ३ दाहिणपासंमि ४ भासगहजोउ ॥ ५ तहकण्हपक्खी जीवा ॥ पंचविसंपंचमेअरए ॥ १ ॥ एगाथासूयणासीत्तरीनीछे एजिमपांचविषकह्यां ते मारेछे तिमपांचमेंआरे जेअविधि दोषलागे तेपणमारेजछे अथवा चोथेआरे जिमविष खाधुंमारे तेम पांचमेआरेपण विषखाधुंमारे; तेमजअविधिदोषपण जेम चोथाआरामांहे लागे तेमपांचमेंआरेपणलागे. यतः " मारेइविसंजुत्तं ॥ जहाचउथारएतहादुसमंमि ॥ तहअविहिदोषजणीउ ॥ धम्मोवियदुग्गइहेऊ ॥१॥ इतिहितोपदेशमालायां" एमउ- पदेशपदादिकग्रंथमांहेपाठदेखीने विधिनोरसियो जनके० लोकहोयते जागेके० विधि करवानेसावधानथाय ॥ ६ ॥

कोइकहेजिमबहुजनचाले ॥ तिमचलियेंसीचर्चा ॥ मारगमहा
जनचालेभाष्यो ॥ तेहमांलहीयेंअर्चारे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीकेटलाकतोएमकहेछे के जेमबहुजनके० घणालोकचाले तेरीतेचालीयें केमके जेघणाकरताहसे तेरुडुंजकरताहसे तोजाझीचर्चासीकरोछो अमेंपोतानीमतियें करताहइये तोभलेचर्चाकरो कारणके मार्गतोतेहनेजकहीयें के जेमार्ग महाजनके० म- होटालोकना समुदायचालेछे तेहनीचाले चालीए तेनेमार्गकहीयें इम भाष्योके० ग्रंथमांहें कह्योछे. यतः ॥ महाजनोयेनगतः सपंथाइति ॥ तोतेमहाजननीचालेंचालतांथकां लहीये के० पामीयें अर्चाके० पूजा इति ॥ ७ ॥

एपणबोलम्रषामनधरीयें ॥ बहुजनमतआदरतां ॥ छेहनआवे
बहुलअनारय ॥ मिथ्यामतमांफिरतांरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥८॥

अर्थ ॥ हवेउत्तरआपेठे के एओलजेकह्यो तेपणमृषाके० जूठो चित्तमांहेधारीयें ते हनोहेतुकहेठे एटले बहुजनमतआदरताके० घणालोकनोमतआदरता तो बहुलअनारयके० घणाजनतोअनार्यठे तेहनो ठेहके० पारपामीयेनही मिथ्यामतमाहेफिरताके० अनार्यठे तेसर्वमिथ्यामतिठे माटे तेमाहेजमतापारनपामीयें इतिजात्र ॥ ७ ॥

थोडाआर्यअनारयजनथी ॥ जैनआर्यमांथोडा ॥ तेमापणपरि णतजनथोडा ॥ श्रमणअलपबहुमोडारे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ए॥

अर्थ ॥ थोडाआर्यअनारयजनथीके० अनार्यलोकथी आर्यलोकथोडाठे केमके घ-णीसहजारदेशमाहें आर्यदेशतोसाडीपचवीसजठे तेवलीआर्यदेशमापण जैननामधरावे एहवालोकथोडाठे वलीजैननामधरावे तेमाहेपण परिणतके० जैनवासनायेंपरिणम्याहोय एहवाश्रद्धावंत स्याद्वादसैलीनाजाणथोडा वलीतेपरिणतजनमाहेपण श्रमण के० मुनीराज तेअलपके० घणाथोडा अने बहुमोडाके० मात्र मस्तकमुंडनकराव्यु पण गुणविनाना एहवालोक बहुजाणवा ॥ ए ॥

जद्रबाहुगुरुवदनवचनए ॥ आवश्यकमालहिये ॥ आणाशु द्धमहाजनजाणी ॥ तेहनीसगेरहियेरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जद्रबाहुस्वामीनामुखनुं एवक्ष्यमाणवचनठे ते आवश्यकसूत्रमाहेंकह्युठे तिहांथी लहियेंके० पामीये जे आज्ञाशुद्धतेहिज महाजन एटले जिनाज्ञापालेतेहिज सघएहवुजाणीनें तेना महाजननीपासें वसीयें गाथा ॥ 'एगोयसाहुएगो, यसाहुणीसाव ठंगसड्ढीना, आणायुत्तोसघो, सेसोपुणअठिसघाउं" ॥ १ ॥ इतिआवश्यक वचनात् १०

अज्ञानीनविहोवेमहाजन ॥ जोपणचलवेटोलुं ॥ धर्मदासग णिवचनविचारी ॥ मननविकीजेजोलुरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥११॥

अर्थ ॥ पणजेअज्ञानीनोसमुदायहोय अने जो ते टोलु के० गछनेचलावे तोहेपण तेहने महाजन न कहीयें एहवु धर्मदासगणीनु वचनविचारीने मनने जोलूनकरीयें एटले अज्ञाने धमाधम न करीयें यत "जजयइअगीयछो" इतिवचनात् ॥ ११ ॥

अज्ञानीनिजछंदेचाले ॥ तसनिश्रायेविहारी ॥ अज्ञानीजो गछनेचलवे ॥ तेतोअनतससारीरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेअज्ञानीपुरुष ते निजछंदेके० पोताना अभिप्रायेंचाले तथा ते अज्ञानीनी निश्रायें जे विहारीके० विचरे तेपण अज्ञानीजहोय तो एहनो अज्ञानी अगीतार्थ थको

जे गच्छनेचलावे तेतोअनंतसंसारी जाणवो. यतः॥जंजयइअगियच्छो॥ जंच अगियच्छंनि स्सियोजयई, वट्टावेश्यगच्छं, अणंतसंसारउहोई ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ १२ ॥

खंमखंमपंमितजेहोवे ॥ तेनविकहीयेनाणी ॥ निश्चितसमय लहेतेनाणी ॥ संमतिनीसहिनाणीरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जे खंमखंमपंमितके० ग्रंथग्रंथमांहेथी थोमीथोमी वातसीखीने पंमितपणुंजेह-नेहोय तेपुरुपनेज्ञानीनकहीयें, यतः "जोसुत्तमच्छमुजयं,समहीजंतेगुरुकम्मविहिणो ॥ नो-जन्नईसोनाणी; अछमयच्छाणमूढमणो" ॥१॥ इति आवस्यकमाहात्म्ये माटे निश्चितसम-य के० निश्चेंसिद्धांतनीवातने लहे के० जाणे ते नाणी के० ज्ञानीकहीयें एटले गुरुक्रमागत निश्चयव्यवहारसहीत स्याद्वादसेलीयें ज्ञानथयुं होय ते सिद्धांत निश्चित ज्ञानकहियें ए-वात संमतिनीके० संमतितर्कशास्त्रनी सहिनाणी के० नीसानी छे. गाथा॥ "जोनिच्छयसम-यन्नू ॥ सववहारसमयमासज्ज ॥ गुरुपारतंतलछ्रुं; नयनि उणोगाहणाकुसलो" इति ॥१३॥

जिमजिमवहुश्रुतवहुजनसंमत ॥ वहुशिष्येंपरवरिउ ॥ तिमतिम जिनशासननोवयरी ॥ जोनविनिश्चयदरीउरे॥ जिन० ॥ वी० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जिमजिम वहुश्रुतके० घणोजाण्यो अने वहुजनसंमतके० घणालोकने मान वायोग्यथयो वलीवहुशिष्येंपरवरिउके० घणाचेलाचांटिकर्यां तिमतिम जिनशासननो वयरीके० सिद्धांतनोशत्रुजाणवो जो निश्चयज्ञाननो दरिउ के० समुद्रनहोय तो. अने जे निश्चेंज्ञानीहोय तेहनेतोसर्वलेखेछे. यडुक्तं ॥ जहजहवहुसुअसमउ ॥ सीसगुण संपरिवुडोय ॥ अविणीछिउअसमए ॥ तहतहसिद्धंतपमिणीउ ॥ इत्युपदेशमालायां तथा पंचवस्तुकेपिच ॥ १४ ॥

कोईकहेलोचादिककष्टें ॥ मारगभिक्षावृत्ति ॥ तेमिथ्यानवि मारगहोवे ॥ जनमननीअनुवृत्तिरे ॥ जिन० ॥वी० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ केटलाएकतोएमजकहेछे जे लोचादिककष्टेके० लोचकरावना उघाडेपगे तथा उघाडेमाथें हिंडवुं इत्यादिककष्टकरवेकरीने मारगके० मुनीमारगजाणवो वली भि क्षायें वृत्तिके० आजीविकाकरवी ते मार्गछे एहवुंजेकहेछे तेमिथ्याके० खोटुंकहेछे ए रीते मार्गनहोय केमके आत्मार्थविना जनमननीअनुवृत्तिके० लोकनामननीअनुजायी यें प्रवर्त्ततांमार्गनहोय इतिभाव. गाथा॥ "कछंकरेइतिव्वं ॥ धम्मंधारेइजाणाणंवित्तीए॥ सोपवयणमग्गस्स ॥ वेरीभूउअहाछंदो" ॥ १ ॥ १५ ॥

जोकष्टेमुनिमारगपावे ॥ बलदथाएतोसारो ॥ भारवहेजेता
वडेभमतो ॥ खमतोगाढप्रहारोरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जोएरीते प्रभुनीआज्ञाविना कष्टकरतां मुनीनोमारग पामे तो तीर्यंच बलद तथा उपलक्षणथी बीजा ढोर पण लइयें तेढोरज साराके० भलाथाय केमके बलदऊपर जेटलोभार भरीयें तेटलो सुखेदुखेपणवहे निरवाहकरे वली तानडेके० तडकेजमतोथको गाढके० आकरा कोरडा प्रोणा प्रमुखनाप्रहारने खमतोके० सहनकरेछे ॥ १६ ॥

लहेपापअनुबंधीपापें ॥ बलहरणीजनशिक्षा ॥ पूरवभवव्र
तखडनफलए ॥ पंचवस्तुनीशिक्षारे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ माटेतेप्राणी वर्त्तमानकालेंपण अशुभ अनेअनागतकालेपणअशुभ तेपापानुबंधीपापकहीयें तेणेकरीने लहेके० पामे बलाहरणीके० वीर्यनेहणे एहवी जनशिक्षाके० लोकनीशिक्षापामे एटलेसंयमयोगसाधीनशके तेबलहरणीशिक्षाकहीयें एपूरवभवके० पाछलाभवें व्रतखडनकर्याहोय तेहनाफलछे तेपापानुबंधीपापें बलहरणीशिक्षा पामे एमपचवस्तुग्रंथ श्रीहरीभद्रसूरीकृतछे तेमाहेकह्युछे गाथा ॥ "चारित्तविहिणस्स ॥ अभसगयस्सअकलुसभावस्स ॥ आणाणिणोयजापुण ॥ सापडिसिद्धाजिनवरेहिं" ॥ १ ॥ "शिक्षअइतिआर ॥ भसगयाअपरिसुद्धपरिणामा ॥ दीणा ससारफल ॥ पावाउकुत्तमेयत्तु" ॥ २ ॥ इसिकाउणसुहणी ॥ वाडीयाजेहिंदुक्ख गहणमि ॥ मायाएकेइपाणी ॥ तेसिपयारिसचहोई ॥ ३ ॥ चेइऊणघरवास ॥ तस्स फलचेवमहापरतता ॥ नगिहिनयपवइया ॥ ससारपवहगाभणिया ॥ ४ ॥ १७ ॥

कोइकहे अमें लिंगे तरसु ॥ जैनलिंगवे चारु ॥ तेमिथ्यानविगु
णविण तरियें ॥ भुजविणनतरे तारुरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवे कोईकहेशेजे द्रव्यलिंगतेहिजप्रमाणछे एटले लिंगजेउंगोमुहपतितेथी तरीससार पारपामीसु केमकेजेननोलिंगते चारु के० सुदरछे तेनेगुरुउत्तरकहेछेके तेमिथ्या के० खोटुछे कारणके गुणविना एकलुमात्रलिंगधारणकरेथी तरायनही तेहनोदृष्टांत – जेम तारुपुरुषतेभुजाविनानदिप्रमुखतरीशकेनही ॥ यदुक्त ॥ वदनावश्यके ॥ शिष्यवचन ॥ "सुविहियदुनिहीयवा ॥ नाहजाणामियखुउमछो ॥ लिंगतुपूययामि ॥ तिगरण सुद्धेण भावेण" ॥ १ ॥ प्रत्युत्तर ॥ माहऊतेलिंगपमाण ॥ वदाहिं निन्हएतुमेसवे ॥ एअवदमाणस्स ॥ लिंगमविअप्पमाणते ॥ इत्यादि ॥ १८ ॥

कुटलिंग जिमप्रगट विडंबक ॥ जाणीनमतांदोष ॥ निद्धंधसजा
णीनेनमतां ॥ तिमज कह्यो तसपोपरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ जेम विडंबकजे नाटकीआ प्रमुख तेहनो जे कुटलिंगके० खोटोवेश तेप्रगटपणेंजाणीनें एटले कोइक नाटकीयो साधुनो वेपलाव्यो तेखोटो वेशछे एम जाणतां थकां जोतेहने नमीयेंतो दोपलागे तथा लोकहांसी प्रमुख पणकरे तेमाटे निद्धंधसजे प्रवचनोपघातक निरपेक्ष केवल लिंगधारी पासत्थादिक जाणीने तेहने नमीयें तो तिमजके० ते पूर्वोक्त नाटकीया साधुनीपरे तसपोपके० ते दोपनोपोप कह्योछे यदुक्तं ॥ "जहवेलंबुगलिंग ॥ जाणंतस्सनमउहवइदोसो ॥ निद्धंधसुत्तिनाउणं ॥ वंदमाणे धुवोदोसो" ॥ १ ॥ इति वंदनावश्यके ॥ एरीते आचार्यें लिंग अप्रमाण कह्युं ॥ १९ ॥

शिष्यकहे जिमजिन प्रतिमाने ॥ जिनवर थापी नमियें ॥ साधुवेस
थापी अतिसुंदर ॥ तिम असाधुने नमियेरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ तेवारें शिष्यवोल्यो जे जिमजिनेश्वरनी प्रतिमामांहे ज्ञानादिक गुणनथी अने तेहने तीर्थंकरनी बुद्धीयें नमस्कार करतां महोटो लाभ थायछे महोटीनिर्जरा थायछे. यथा आवश्यके शिष्यवचनं:–॥ तित्थयरगुणा पडिमा ॥ सुनत्थि निस्संसयं वियाणंतो तित्थयरुत्तिनमंतो ॥ सोपावइनिज्जरंवीउलं ॥ १ ॥ इति ॥ तेम अतिसुंदर एहवो साधुवेस थापी असाधुने पण नमियें एटले गुणविनानी जिमजिन प्रतिमा छे तेहने नमतां निर्जरा थाय तेम पासत्थादिकमां जो साधुनो गुणनथी तोपण साधुनो वेपतो छे माटे जो पोतानुं मनशुद्ध छे तो तेहवाने नमतां लाभ थाय कारणके लाभ अथवा खोट तेतो पोताना अध्यवसाय आश्रीछे. उक्तंच ॥ लिंगंजिणपन्नत्तं, एवनमंतस्सनिज्जरा विउला ॥ जइविगुणविप्पहीणं, वंदइअज्झप्पसोहिए ॥ १ ॥ इति शिष्यवचनं ॥ २० ॥

भद्रबाहु गुरु बोले प्रतिमा ॥ गुणवंति नहीदुष्ट ॥ लिंगमांहेवे
वानांदीसे ॥ तेतोमानि अदुष्टरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ हवे आचार्य उत्तर आपेछे जे श्रीभद्रबाहुगुरु आवश्यकमां एम कहेछे के प्रतिमा गुणवंति नथी तेम दुष्टपण नथी माटे तेहने गुणवंति मानियें एटले अदुष्टपणानो आरोप करियेंतो थाय अने लिंगमांहेतो गुण तथा दोप एवेवानां देखायछे ते तुं हे अदुष्ट के० गुणवंत शिष्यमान. इति गाथार्थ। हवे एनो भावार्थ कहेछे जे जिनप्रतिमा मांहे गुण नथी तेम दोपपण नथी माटे पोताना अध्यवसायनी शुद्धीयें नमतां लाभ थाय इहांकोइ कहेशेजे परिणामे लाभ थाय छे तेवारें प्रतिमानुं शुं काम छे तेहने कहीयें जे

शुद्ध परिणामनो हेतु ते प्रतिमाज छे तेवारे ते कहेशे जे साधुनो वेष ते पण शुद्ध परि णामनो हेतुछे तेहने कहेवुजे साधुवेष पुरुषपणुं ते प्रतिमाने बराबर नथाय केमके प्रति मा हजारो गमे जोइयें पण सर्व एकाकार छे सावद्यक्रिया नथी करती तेम निरवद्य क्रिया पण नथी करती अने साधुलिंग तो कोइक स्थानकें सावद्य कर्म करतो देखीयें तथा को इक स्थानकें निरवद्य शुद्ध चारित्र पालतो देखीयें माटे बराबर नथाय अने जिन प्रतिमामांहे जिन गुणनो आरोप करीने परिणाम करतां निर्जरा थाय पण पासत्था दिकने वंदनाकरतां कोना गुणशजारीश तेवारे ते बोलशे जे बीजा रुडा साधुना गुण आ रोप करीने प्रणाम करिशु तेहने कहेछे जे निरगुणीने विषे गुणनो आरोप थाय नही अने जो गुणनो आरोप करीये तो विपर्यास थाय अने जे विपर्यास तेतो कर्मबंधनो हेतुछे तेमाटे जि हां गुण तथा दोष नहोय तिहां आरोप थाय पण अन्यथा आरोप नथाय यदुक्तं वंदना इयके ॥ संता तिछयरगुणा ॥ तिछयरेतेसिमतुअशप्प ॥ नयसावद्याकिरिया ॥ इयरेसुपु वास भणमता ॥१॥चो०॥ "जइसावद्या किरिया ॥ नछिउपडिमासुएवमियराचि ॥ तयभावे नछीफल ॥ अहहोईअहेउयहोई" ॥२॥ आचा० कामउजयाजावो ॥ तह चित्तउअविमण विसुद्धीए ॥ तिपुणमणविसुद्धीए ॥ कारणहुतिपडिमाउ ॥३॥ जइवीयपडिमाउगुणा ॥ मुणीगुणसकप्पकारणलिंग ॥ उजयमविअछिलिंगे । नयपडिमासुनयअछि ॥ ४ ॥ नि यमाजिणेसुअगुणा ॥ पडिमाउदिस्सजेमणेकुणइ ॥ अगुणोउनियाणंतो ॥ कनमउंमणेयु णेकाउं ॥ ५ ॥ इत्यादि घली एहनो विचार वृहदवृत्तिथी विचारजो ॥ २१ ॥

कोइकहेजिनआगेमागी ॥ मुक्तिमारगअमेलेसु ॥ निरगुणनेप
णसाहेवतारे ॥ तसभक्तेगहगहिसुरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ७२ ॥

र्थ ॥ हवे कोइक एम कहेछे जे जिनेश्वर आगले मुक्तीमार्ग अमे मागी लेशुं नेरगुणने पण साहेब तारशे तथा तेहनी भक्तिमां गहगहिसु के० हरप पा गाथार्थ भावार्थ तो एम छे जे केटलाक एम कहेछे आ भवमातो शक्ति पातरे बोधिबीजनी सामग्री पामीशु त्यारे करिशु एहवुं प्रभुपासे मागी जाय ॥ २२ ॥

नपालेमूरख ॥ मागेबोधविचालें ॥ लहियेतेहकहो
बोल्युउपदेशमाळेरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ७३ ॥

यें के० पामीयें एटले ए जाव जे कोइक वस्तु लेवा जइयें ते वस्तु जो पासे ड्रव्य होय तो जडे अने ड्रव्य न होय तो स्यामूलेजडे. तेम आजवमांहेजो संयमादिक पाल्या होय तो आवतेजवें पण बोधिबीजनी सामग्री मले पण न पाल्या होय तो शेमूले पामे अर्थात् बोधि सामग्री नज पामे. एम उपदेशमाला मध्ये कह्युं छे. यतः ॥ "लद्धिल्लियंचबोहिं ॥ अकरितोणागयंचपठितो ॥ अन्नंदाइंबोहिं ॥ लप्रहिसिकयरेणमुल्लेण" ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां आवश्यकनिर्युक्तौ तथा चतुर्विंशतिस्तवाध्ययनेपिच ॥ २३ ॥

आणापालेसाहेबतूसे ॥ सकलआपदाकापे ॥ आणाकारी
जेजनमागे ॥ तसजसलीलाआपेरे ॥ जिन० ॥ बी० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ ते माटे आज्ञा पालतां थकां साहेब के० परमेश्वर तूष्टमान थाय अने समस्त आपदाने कापे, माटे आज्ञाकारी जे जन के० लोक ते मागे एटले आ जवमांहे प्रजुआज्ञा पाले ने ते प्राणी जे मागे तस के० ते प्राणीने जशनी लीला आपे एटले प्रजु आज्ञाथी जशलीला पामें ॥ २४ ॥ ए प्रथम ढालमांहे एम कह्युं जे अमे निर्गुणी थकां प्रजुपासेथी मांगी लेइसुं एवुं बोलनारने शिखामण दीधी ॥ २४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥ ए देशी ॥

कोइकहेअमेगुरुथीतरसुं ॥ जिमनावाथीलोहारे ॥ तेमि
थ्यानलहेसहवासें ॥ काचपाचनीसोहारे ॥ १ ॥ श्रीसी
मंधरसाहेबसुणजो ॥ जरतखेत्रनीवातोरे ॥ लहुंदेवके
वलरनिश्रणेयुगें ॥ हुंतोतुजगुणरातोरे ॥ श्रीसी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे बीजी ढालमां जे एम कहेछे के अमे निर्गुणी थकाज गुरुथीतरीशुं तेमने शिखामण देवा संबंधी आवी बीजी ढाल ते कहेछे. कोइक तो एम कहेछे जे अमारामां तो गुण नथी पण अमारा गुरु गुणवंत छे तो तेथीज संसार समुड्रतरी पारपामिशुं जेम नावा के० जिहाज तरेछे ते मांहे लोहा के० लोखंडना खीला जड्या होय ते पण तरेछे ए दृष्टांते तरिशुं. यतः "संचंजंपेइजणो ॥ उत्तमसंगेणउत्तमोहोइ ॥ लोहोकठविलग्गो ॥ संजोगे सायरं तरई" ॥१॥ इति पाठात् ॥ तेहने उत्तर जे ए रीतना बोलनारा ते पण मिथ्या के० खोटुं कहेछे केमके सारा गुरुने सहवासे के० मात्र जेला वसवाथीज न लहे के० न पामे, जेम काच ते पाच के० पानानी सोजा पामे नही. उक्तंच ॥ मणिर्लुंठतिपादाग्रे ॥ काचः शिरसिधार्यते ॥ परीक्षककरेप्राप्ते ॥ काचः काचो मणिर्मणिः ॥ १ ॥ तथा उंघनि-

मिछा ॥ तचेव निसेवेई पुणोपावं पच्चरकमुसावाउ ॥ मायानियडी पसंगोय ॥१॥ इत्यादिकने

मूलपदेंपमिक्रमणुजाष्युं ॥ पापतणुंअणकरवु रे ॥ सक्ति
जावतणेंअच्यासे ॥ तेजसअर्थवरवुरे ॥ श्रीसी० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ मूलपदे के० उत्सर्गमार्गे अथवा प्रथमथी पडिकमणु जाष्यु के० कह्यु ते केम कह्यु ठे ते कहेठे के जे पापतणु अणकरवु के० पापनु जे न करवु तेनु नाम पडिकमणु कहीये यत जइयपडिकमियव्व ॥ अवस्सकाउणपावय कम्म ॥ तचेव कायव्वं ॥ तो होइपएपडिक्तो ॥१॥ इति आवश्यके पए के० उत्सर्गपदे अथवा पए के० प्रथमथी पडिकम्या इति ते माटे सक्ति के० शक्तिमाफक जावेकरीने अच्यास करेए ले शक्तिजावथी अच्यास करे ते पण जश के० जेहने अर्थे पाप अणकरवाने अर्थे वरवु के० आदरवु एटले शक्ति अच्यास करे ते पण पठे पाप न करे इति जाव अथवा परमार्थे जश ते मोक्ष तेने अर्थे वरवु के० आदरवु अने कर्तानु नाम पण जशविजय ठे ते पण सुचव्यु ॥ १८ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ तुगीयागिरि शिखरसोहे ॥ ए देशी ॥

देवतुजसिद्धांतमीठो ॥ एकमनेधरिएं ॥ उष्टआल
वननिहाली ॥ कहोकेमतरिए ॥ देवतुज० ॥ १ ॥

॥ अर्थ ॥ हवे त्रीजी ढाल कहेठे एने बीजी ढाल साथे ए संबध ठे जे बीजी ढाल मा एम कह्यु के पाप न करवु ते पडिकमणु माटे त्रीजी ढालमा कहेठे के पाप शी रीते न थाय जो हीणा आलबन न होय तो पाप न थाय ते कहेठे जे हे देव, हे परमानद विलासी, तुजसिद्धात के० ताहारुजे आगम स्याद्वादसैलीरूप ते मुजने अ त्यत मीठु लागे ठे इतिजाव ॥ ते एक मने धरिए के० एकाग्र चित्ते करी धरी राखीये अने उष्ट जे हिणा आलबन ते निहाली के० जोइने एटले कोइकें कोइ कारणे काइ विपरीत अगीकार कस्यु होय ते पोते धारी राखे तो ते धारीने हे सज्जन पुरुषो तमे कहो जे केम के० केवी रीते ससारसमुद्र तरीये ॥ १ ॥

उष्टआलवनधरेजे ॥ जग्नपरिणामि ॥ तेहआव
श्यकजाष्या ॥ त्यजेमुनीनामि ॥ देवतुज० ॥ २ ॥

॥ अर्थ ॥ माटे उष्ट के० दूषणसहित जे अपवादें साधन होय ते जे कोइ चित्तमा धरे तेनो जग्नपरिणामि के० सयम क्रियाथी जाग्या ठे परिणाम जेहना एहवा जे छि

गीहोय तेहने आवश्यकने विषे नाष्या के० कह्या ठे केत्रा कह्या ठे के मुनिनामि के० मुनि नामना धणी एटले जे मुनीश्वर होय ते तेवा लिंगीने त्यजे के० ठांमे ॥२॥

नियतवासविहारचेईय ॥ नक्तिनोधंधो ॥ मूढ अ
ज्जालाजयापे ॥ विगयपमिबंधो ॥ देव० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे कुष्टआलंबन देखाडवामाटे द्वारबांधेठे ते एक नियतवास विहार के० नित्यवासेविचरवुं एटलेनित्यवासकल्पठतिनाव एकस्थानके रहेवुं एमकेठकस्थापेठे,बीजो चेइयनक्तिनोधंधो एटले चैत्यजेदेरुं तथा जिनप्रतिमा तेनी नक्तिनो धंधो जेकार्य व्यग्रता ते साधुनेकरवो एटलेजिनपूजादिक करवी इतिनाव; वलीत्रीजो मूढ के० मूर्ख ते अज्जालाजयापेके० आर्यानोलानथापेठे एटले साध्वीवोहोरीलावे ते साधुने खपे एमथापेठे; चोथो विगयजे डुधदहीप्रमुख अने कडाविगयनेविषे पडिबंधो के० प्रतिबंध आसंग एटलेविगयनालोलपि तेएमकहेठे के विगयखातां दोषनथी. यतः॥ नीआवासविहारं ॥ चेइयनत्तिंचअज्जीयालानं ॥ विगईसुअपडिबंधं ॥ निद्दोसंचोइयाठिंत्ति

कहेउग्रविहारत्नागा ॥ संगमआयरिउ ॥ नियतवा
सनजेबहुश्रुत ॥ सुणिउगुणदरिउ ॥ देव० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेउग्रविहाररूप द्वार दृष्टांतेकरी देखाडेठे जेकोइक एमकहेठे के उग्रविहारथी थाक्यांथकां संगमआयरिउ के० संगमाचार्य नियतवासनजेके० नित्यवासीपणुंनज्युंठे, तेसंगमाचार्य बहुश्रुतके० ज्ञानी पुरुषहता एवुंअमे सुणिउके० आगममां हेसांनल्युंठे एटले गुणसमुद्र तथाबहुश्रुत एवासंगमाचार्ये नित्यवासकबुलकर्यो तेथी अमे पण जाणीयें ठेयें जे एकठामेरहेतांदोष देखातो नथी एमकहीने नित्यवास थापे ठे. यतः ॥ संगमथेरायरिउ ॥ सुहुतवस्सीतहेवगीयछो ॥ पेहित्तागुणदोसं ॥ नियावासंपवन्नोउ ॥ १ ॥ इतिवंदनकनिर्युक्तौ ॥ ४ ॥

नजाणेतेखीणजंघा ॥ बलथिविरतेहो ॥ गोचरी
नानागकल्पी ॥ बहुरह्योजेहो ॥ देव० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एरीतेजेकहेठे तेनेउत्तर करेठे के जे एमकहेठे तेपुरुषनजाणेके० नथीजाणता एटले नथी गणता जे खीणके० ठेतुंथयुंहतुं जंघाबलके० जंघानुंबल एटले हिंडवानी शक्ति हतीनही वली थिविरके० घडपणहतुंएवा तेहोके० तेसंगमाचार्यहत्ता तथा उपलक्षणथी डुर्निक्षहतो शिष्यनेविहारकराव्योहतो वलीतेअप्रतिबंधपणे रह्याह

ता, तेपणगोचरीना चाग गाममाकल्पीनेरह्याहता, एटखे एकघरेथ्याहारनलेता एवोथ कोवहु रह्योके० घणु एकठामे रह्यो जेहोके० जेसगमाचार्य ॥यत ॥ उमेसीसपवास ॥ अप्प डिवधञजगमत्त च ॥ नगणतिएगाखित्ते ॥ गणतिवासनिययवासी ॥१॥ एटखे नित्यवास नकरवो इतिजाव तेसगमाचार्यनु कथानक आवश्यकसूत्रथी जाणवु ॥ ५ ॥

चैत्यपूजामुक्ति मारग ॥ साधुनेकरवी ॥ जिणे
कीधी वयरमुनिवर ॥ चैत्यवास ठवी ॥ देव० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे चैत्यपूजा के० प्रजुपूजा ते मोक्षनोमार्गछे तेमाटे साधुने करवी केमके अमे नकरीयें तो एदेरासरनी सजालकोणकरे, जोमूकीदइये तोविछेदजाय तेमाटे अमे असयमअंगीकारकरखुछे तेठपरदृष्टांतदेखाडेछे के जिणेके० जेकारणमाटे श्रीवयरस्वा मीआचार्यें पूजाजक्तिकरीछे चैत्यवासके० देहरानेविषे पुष्पादिक ठवीके० थापीने प्र जुजक्तिकरीछे माटे निदोपछे इतिजाव यत ॥ चइयपूयाकिवयर ॥ नामीणा मुणियपुव सारेण ॥ नकयापुरियाइतया ॥ तउमुरकगसाहुण ॥१॥ इत्यावश्यके ॥ एक पुष्पादिक लाव्या एटखूजदेखेछे पण आवाकारणहता ते देखतानथी ॥ ६ ॥

तीर्थउन्नतिअन्यशासन ॥ मलिनताटाणे ॥ पूर्वअ
विचितपुप्पमहिमा ॥ तेहनविजाणे ॥ देव० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे तिहांतो तीर्थके० जिनशासननी उन्नतियतिहती वली अन्यशासनके० अन्यतीर्थिनी मलिनताके० मेलाशकरवाने टाणेके० अवसरे तेपण पूर्वअविचितके० पूर्वेपुप्पकनारीनेलाक्ख्याहता एवा फूलहता तेहनो महिमाके० महात्म्यहतुते नवी जाणेके० एहवीवातनी जेने खबरनथी तेजूलेछे, एवयरस्वामीनुचरित्रआवश्यकथीजा णवु यत ॥ उहावणापरेमि ॥ सतिठकआवणचमछल ॥ नगणतिगयेमाणा ॥ पुव· चियपुप्फमहिमच ॥ ५ ॥ इत्यावश्यके ॥ ७ ॥

चैत्यपूजाकरतसयत ॥ देवजोईकह्यो ॥ शुजमनेप
णमार्गनाशि ॥ महानिशीथेलह्यो ॥ देव० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ चैत्यके० जिनप्रतिमातेनीपूजाकरतायका सयतके० द्रव्यलिंगीसाधुते देव जोइके० देवनाद्रव्यनोजोगवनारो कह्योछे, एटलेसयतनेपूजाकरता देवद्रव्यनीशकार· हेनही माटेदेवद्रव्यनोजोगीकहीयें जिनपूजाकरु, एवापरिणामते शुजमनकहीये, पण एवीरपीकरनोयको मार्ग जे जैनमार्गतेनोनाशकरेछे एटलेउन्मार्ग प्रवर्त्तेछे, एरीतेम हानिशीथसूत्रमां कह्युछे तथाचतत्सूत्र ॥ एवंचण गोयमा केइअमूणियस समयसभावे

उसन्नविहारीणीयवासीणो अदिपरलोगपच्चवायंसमयती इड्डीरससायगारवाइसुहिएरागदोसमोहाहंकारसमीकाराइसुपडीबद्धोकसिण संयमसधम्मंपरम्मुहे निद्दयनित्तिंसनिग्घिणअकलुणनिक्किवे पावायरणेकनिविठबुद्धी एगंतेणंअइचंडरोद्दकूराजिग्गहिंउमिछदिठीणो कयसव्वसावज्जजोगपच्चरकाण विप्पमुक्कासेससमारंभ परिग्गहे तिविहेणंपडिपुन्न सामाइएयदव्वताए नन्नावत्ताएनाम मेतमुंडे अणगारे महव्वयधारी समयाणविन्नत्ताणं एवंसन्नमाणेसव्वहाउमग्गं पवत्तंतितहाकिल अम्हे अरहंताणं जगवंताणं गंधमल्लयं दीवसमज्जणोवलेवणे विचित्तवत्थवल्लीधूवाइ एहि पूयासक्कारेहिं अणुदीय अमज्जावणं पकुवाणा तित्थूच्छपणंकरेमो तंचणोणं तहति गोयम्मासमणुजाणेज्जा सेजयवंकेणंअठेणं एवंवुच्चइजहाणं तंचणोणं तहतिसमणुजाणिचा गोयमानियच्छाणुसारेणं असंयमबाहुल्लेणं चमूलकंमासयं थूलकंमासवाओय अज्जवसायं पडुच्चाथूलोयरसूहासूह कम्मपयडिबंधोसव्वसावज्जविरयाणंचवयजंगो वएजंगेणंच आणाईकम्मो आणाईकम्मेणंतु उमग्गगामित्तं उमग्गगामितेणंच समग्गपल्लोयणं उमग्गीपवत्तणं समग्गीविप्पलोयणेणंच मईणंमहतिआसायणा तउअणंत संसारोहिडणंएएणं अठेणंगोयम्माणोणंतं तहतिसमणुजाणिचा ॥ इत्यादिकमहानिशीथेतृतीयाध्ययने अथवा महानिशीथेपंचमाध्ययनेपणपाठछे ॥यथा॥ सेजयवंजेणंकेई साहुवा साहूणीवा निग्गंथे अणगारे दव्वछयंकुवासेणंकिमालाविया गोयम्मा जेणं केईसाहूवासाहूणीवा निग्गंथे अणगारे दव्वत्थयंकुधासेणं अजएवा देवनोएइवादेवच्चगेईवाजावण उमग्गपयईएवापुरुज्जियसीलेईवाकुसीलेईवाआलवेचा ॥ इत्यादि ॥ ७ ॥

पुष्टकारणविनामुनिनवि ॥ द्रव्यअधिकारी ॥ चैत्य
पूजायेंनपामे ॥ फलअनधिकारी ॥ देव० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ माटे कोइशासननोउद्योतप्रमुख मोहोटापुष्टकारणविना मुनीश्वरते द्रव्यअधिकारीके० द्रव्यस्तवनाअधिकारी नविके० नहोय जेकारणमाटे चैत्यपूजाकरतांसर्वफलनपामे केमके अनधिकारीके० जेहनोजेहनेअधिकारनही अनेते करेतो तेहनुं फल नपामे अन्यथा अधिकारीनोफलपामे. यतः ॥ अकसिणपवत्तगाणं ॥ विरयाविरयाणएसखलुजुत्तो ॥ संसारपयणुकरणे ॥ दव्वछएकूवदिठंनो ॥१॥ इतिवचनात् ॥ तेमाटेमुनिने नकरवी ॥ कसीणसंयमविउंपुप्फाइयंनइच्छति ॥ इतिवचनात् ॥ अनेवयरस्वामीतो कारणे प्रवर्त्त्या माटे तेने तो पूजा फलवंतजछे ॥ ए ॥

मार्गअन्नियपुत्तअजा ॥ लानयीत्रागा ॥ कहे
निजलाजेंअत्रता ॥ गोचरीजागा ॥ देव०॥१०॥

अर्थ ॥ कोइकप्राणी निजलाजेअतृप्ताके० पोतानेवाजे अतृप्तयका तथा अज्ञा लाजथीलागाके० आर्यांने लाजे लम्नठेगृद्धठे वली गोचरीजागाके० गोचरीनाथाउ मुठे तेहने कोइकप्रेरणाकरेजे आर्यानोआण्यो आहारकिमकरोठो ते वारे एमकहेजे मार्गअन्नियपुत्तके० अर्णिकापुत्रनेमार्गे एटले ए जावजे अर्णिकापुत्रेसाध्वीनोआणो आहारलीधोठे तेमार्गे अमेपणलइयेठेयें, जोदोपहोयतो तेअरणीकापुत्रकेमलीये, माटे आर्यानो आणोआहारनिर्दोषठे, परवचनआवश्यके ॥यत ॥ अज्जियलाजेगिद्धा ॥ सए णलाजेणजेअसतुठा ॥ जिरकायरियाजग्गा ॥ अन्नियपुत्तववइसति ॥ १ ॥ १० ॥

नजाणेगतशिष्यअवमे ॥ थिविरबलहीणो ॥ सुगुण
परिचितसयतिकृत ॥ पिंडविधिलीणो ॥ देव०॥११॥

अर्थ ॥ हवेजेएमकहेठे तेहनेउपकोदेतासहुनेकपदेशहेठे के जे अरणीकापुत्रनो दृष्टात आपेठेते नजाणेके० नथीजाणता जे तेअरणीकापुत्र आर्यानोआणोआहारलेता पण केवाहता जे गतशिष्यके० शिष्यनोसमुदायपासेनहतो वली अवमेके० डुकाल हतो एटले एजागजे डुकाल जाणी शिष्यनेविहार कराव्यो हतो वली पोतानीपण थिविरके० वृद्धावस्थाहती तथा बलहीणोके० शक्तिहीणहता, गोचरीयेंफरवाने असमर्थहता तयाआर्याजेपुष्पचूलानामेसाध्वी तेपण जलागुणनीपरिचयवानहती तेसय तिके० साध्वी तेणेकृतके० करयो एटले आण्यो एवोजे पिंडके० आहारतेनली विधिके० विधिसहित लीणोयें० लीधोठे, तेकारणतोकोइगणतानथी अने केवल आर्यालाज गवेपे ठे यत ॥ अन्नियपुत्तायरिउं ॥ भत्तपाणचपुप्फचूलाए ॥ उवणियजुजत्तो तेणेनजवेणअत पठो ॥१॥ गयनीनगणठमे निरकायरियाअपचलेयेर नगणतिसहानिसहा अज्जियलाज गवेसतो ॥२॥ तो सहानिके० सरलाइशिप्यादिकठतापण शठमूर्ख एमकहेठे इतिजाव ११

विगयलेवीनित्यसूजे ॥ लष्टपुष्टजणे ॥ अन्यथा
किमदोपएहनो ॥ उदायननगणे ॥ देव० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे केइक एमकहेठे जे विगयवावरवी निरतरकल्पे एमपोते लष्टपुष्टथका जणेके० कहेठे, एटले निरतरविगय वावरतादोपनथी एमुनोलवारने कोइक रूडा साधु उपको आपे केमांठ विगयतो साधुने निरंतरलेवीकल्पेनहीं यत ॥ विगई विग ईजीयो ॥ विगईगयजोठजुजईसाहु ॥ विगतीविगतीसहावा ॥ विगतीजीगतीबला नेइ ॥ ॥ इतिवचनात्॥ एमकहे तेहनेपाठो आवीरीतेउत्तरआपे जे अन्यथाके० जो विगयवावरता दोषहोयतो तेउदायनराजऋषीयें केमगण्योनहीं एटलेएजाव जे विग

यलेतांलोपहोयतो उदायनऋषियें केमवावरीहती. यत.॥ जत्तंवापाणंवा जुनूणंलावलवि यमविसुद्धं ॥ तोअवज्जपडिवन्नं ॥ उदायनरिसिववईसंति ॥१॥ इत्यावश्यके ॥ १२ ॥

उदायनराजर्षितनुनवि ॥ सीतलुक्खसहे ॥ तेह
ब्रजमांविगयसेवे ॥ सूंतेनलहे ॥ देव० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे उत्तरकहेछे जे उदायनराजऋषीना तनुके० शरीरनेविषे शीतके० टाढुं अने लुक्खके० लुखुं तेनविके० नथी सहेवातुं एटले राजवीयकां हिकालीधीछे अने रोगीष्टशरीरछे तेमाटे सहननथीथातुं इतिजाव. माटे उदायनऋषियें ब्रजमांके० श्रीगोकुलमां विगयवावरीछे एहवुं विगयवावरवानुंकारणते मूढ नलहेके० शुंनथी जाणता ए के कोइकारणेविगयवावरी एटले ते थोडुंलेइने पोते वावरनार उजमालथायछे. यतः॥ सीयललुरकाणुचीयं ॥ वएसुविगईगएणजाविक्तं ॥ इहाविजणंतिसढा ॥ किमासिउदायणोनमुणी ॥ एकथाउंसर्व आवश्यकवृहत्वृत्तियें वंदनावश्यकेछे ॥ १३ ॥

लोकआलंबनेजरिउं ॥ जनअसंयतने ॥ तेह
जगमांकांइदेखे ॥ धरेतेहमने ॥ देव० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एम लोकके० मनुष्यलोकतो आलंबनेजस्योछे. बाल, वृद्ध. सूत्र, अर्थ, द्रव्यादिक आपद प्रमुख आलंबनकरे. जेमहुंबालकछुं, अथवावृद्धछुं तेमज सूत्रजणंछुं, अर्थजणंछुं, आद्रव्यतोहिलुंछे अथवाआक्षेत्रनानुंछे हमणादुर्जिक्षादिकछे तथाहुं आजारीछुं इत्यादिकनिश्चापदकरीने पछेआलंबनखोले. यतः ॥ सुत्तछवालवुछे असहुंदवाइआवइओय ॥ निस्साणपयंकाउं ॥ संथरमाणाविसीयंति ॥ १ ॥ इत्यावश्यकेएमअसंयतने आलंबनेजेजस्योछे तेहवाअयलायेंचालवानीइछाकरनारजननेआलंबनघणाछे तेप्राणी जगतमां जेकांइ नियतवासादिकदेखेते मनेके० मनमांहे धरेके० धारीराखे, अनेकोइपुछे त्यारे तेहदृष्टांतदेखाडे इतिजाव.॥यतः॥ आलंबणाणलोगो॥जरिओजीवस्सअज्जउकामस्स ॥जंजंपिछईलोए ॥ तंतंआलंबणंकुणइ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ १४ ॥

शिथिलआलंबनगहेमुनी ॥ मंदसंवेगी ॥ संयता
लंबनसुजसगुण ॥ तीव्रसंवेगी ॥ देव० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेजे मंदसंवेगीके० अल्पसंवेगवंतमुनिहोय तेशिथिलविहारीना ओठां लेछे जेममथुरामां मंगुआचार्य सुगालमां पण एकगामेरह्या प्रतिबंधतज्योनही पासत्याथया तेमाटे एमकरतांपण प्रजुयेंधर्मदीठो एमजणायछे ॥ गाथा ॥ जेजछजयाजइया बहुसुआचरणं करपन्नछा॥ जंतेसमायरंति। आलंबणं मंदसट्टाणं॥ इत्यावश्यके तथा तीव्रसंवेगी

जिम्रा कुसीलेणेए सेजयव किंजासाए विजासाए कुसीलत्तवड गोयमाजवडसेजयवं जइएवं ताधम्मदेसणनकायव्व गोयमा सावज्जाणच वाण वयणाणंजोनजाणइ विसेस वुत्तुपि तस्सनखमकिमगपुणदेशणकाऊ इतिमहानिशीथे ॥ ६ ॥

जनमेलननीनहीईहा ॥ मुनिजापेमारगनीरीहा ॥
जोवहुजनसुणवाआवे ॥ तोलाजधर्मनोपावे ॥७॥

अर्थ ॥ जनमेलनके० लोकनेलाकरवानी नहीईहाके० इछातोनथी पणधर्मनी प्राप्ति जाणीने लोकआवीवेसेछे तेनेमुनीश्वरजैनमार्गजापे पणनिरीहाके० आशारहितथकाक हे पणकोडीमात्रनीआशानराखे अनेयशतथा माननी इछानराखे एरीतेंधर्मदेशनादेता कदाचित् घणा लोक साजलवाआवे तोधर्मनोलाजघणोथाय घणालोक धर्मपामे स सारतरे ॥ ७ ॥

तेहनेजोमारगनजापे ॥ तोअंतरायफलचाखे ॥
मुनिशक्तिछतीनविगोपे ॥ वारेतेहनेश्रुतकोपे ॥८॥

अर्थ ॥ तथा जेलोकधर्मसाजलवाआव्या तेहनेधर्ममारग नजापेके० नसजलावे तो ते मुनियें ज्ञाननोअंतरायकर्यो तथा जिम्र कलु तेहनाफल चाखेके० जोगवे एटले ज्ञानावरणीकर्मबांधे॥ गाथा ॥ अन्नाणीनरकाणकरेइ ॥ जोतस्सहोइपावफल ॥ नाणी विजोनजासइ ॥ सोअइपनाणविग्घलु ॥ १ ॥ इतिहितोपदेशमालाया ॥ तेमाटेमुनिमा जोदेशनाआपवानी छतिशक्तिहोय तोगोपवेनही अथवा देशनाआपतोथको थाके नही तथा धर्मदेशनादेतायकाने जे वारेछे नाकहेछे तेप्राणीने श्रुतकोपेके० जनातरे ज्ञानावरणीबांध्युहोय ते उदयथाय अज्ञानपणुथावे एटले श्रुतकोप्यु ॥ ८ ॥

ननिंदामारगकहेता ॥ समपरिणामेंगहगहता ॥
मुनिअद्भचरित्तमनरगे ॥ जोइखीजेत्रीजेअगे ॥९॥

अर्थ ॥ एटलेशुद्धमार्गकहेतानिंदानथी केमके देशनातेज्ञाननोहेतुछे समपरिणामेंके० रागद्वेषरहितपणे एटलेकोइऊपररागद्वेषनकरे अनेकोइनु नामलेइ तेनाअवर णवाद नबोले एरीते गहगहताके० हर्षपामीजाय एमआर्द्रकुमारनुचरित्र वीजुश्र गश्रीसुयगडांगसूत्रना बीजाश्रुतस्कंदे छठाअध्ययने जोइलेजो ॥ यथा ॥ इमवयततुम पाउकुव्व।पावाउणो गरिहसिसव्वमेव ॥ पावाउणो पुढोपुढो।किट्टयता॥सयसयदिठी करे

तिपाठे ॥ १ ॥ तअन्नमन्नस्सगरहमाणा ॥ अक्कंतिउसमणामाहणाय ॥ सतोय अच्छी-असतो अनच्छी ॥ गरहामोदिठ्ठीनगरहामो किंचि ॥ २ ॥ नकिंचि रूवेणमभिधार-यामो॥सदिठ्ठिमग्गंतुकरेमिपाठं इत्यादिकअधिकार मननेरंगेकरीनेजोजो ॥ ए ॥

कोईभापेंनवीसमजावो ॥ श्रावकनेगूढाभावो ॥

तेजुठकह्यालच्छा ॥ श्रावकसूत्रेगहियठ्ठा ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वलीकोइकएमकहेछे जे श्रावकने गूढाजावोके० सूक्ष्मअर्थशुंसमजावो ठो एनहीसमजावो जोतमेसमजावशोतो सर्वनेपूठताफरशे सामाआपणांठिद्रजोशे एवी रीते जेकहेठे तेजुठुंकहेठे केमके श्रावकनेतो श्रीभगवतिसूत्रमध्येलद्धठा, गहियठा, पुछीयठा, अभिगयठा, विणिछियठा इत्यादिकपाठकह्योठे माटेजोश्रावकनेगूढअर्थन-समजाव्याहोय तोएपाठकेमकह्योठे इतिभाव ॥ १० ॥

कहेकोईनवीसिजोमी ॥ श्रुतमांनहीकाईखोमी ॥ तेमि

थ्याउच्चतभावा ॥ श्रुतजलधिप्रवेशेनावा ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ वलीकेटलाक असमंजस एमवोलेठे के नवीसीजोडीके० नवाग्रंथ अथवा स्तवन सज्झाय जोमवानुं शुंकामठे केमके श्रुतके० सिद्धांतमांतोकांइखोमनथी एटले सिद्धांतमांठे तेकरतांतमे अधिकशुंकहेशो एवुंकहेठे तेपण मिथ्याके० खोटुं कहेठे कारणके सिद्धांतमांथी उद्धरीनेजेग्रंथकर्याठे तेभावठे ते श्रुतजलधिके० श्रुतरूपस-मुद्रमां प्रवेशकरवाने नावासरिखाठे एटलेसमुद्रमां जोनावाहोय तोप्रवेशथाय तेमज सिद्धांतरूपसमुद्रमांपण जो एग्रंथप्रकरणरूपीनावडांहोय तोजप्रवेशथाय ॥ ११ ॥

पूरवसूरीयेंकीधी ॥ तेणेजोनविकरवीसिध्धी ॥

तोसर्वेकीधोधर्म ॥ नवीकरवोजोयोमर्म ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ एवुंसांजली वली प्रतिवादीबोल्याके तो पूर्वाचार्यंजे जोडीकीधीठे तेहज भणो तेणेके० तेमाटे जोनवीकरवीसिद्धिके० नवीजोमीनकरवी एमवातसिद्धथई एटलेनवाप्रकरणप्रमुखजोडवानही एमसिद्धथयुं एवुंवोलनारने उत्तरकहेठेके तो पू-र्वेसर्वउत्तमजीवोथया तेणेसर्वेधर्मकर्याठे तेमाटे तमेवलीधर्म शुंकरवाकरोठो, तमने पणनकरवो केमके पूर्वाचार्येजोडीकरीठे माटेआपणेनकरवी तोपूर्वेधर्मेपणघणाजी-वेंकर्योठे माटेआपणेनकरवो ए मर्मके० एभाव ॥ १२ ॥

पूरवबुधनेवहुमाने ॥ निजशक्तिमारगग्याने ॥ गुरु

कुलवासीनेजोडी ॥ युगतिएहमांनहीखोडी ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ माटे जोग्रथनोजोडनार आवोथश्नेनवाग्रथजोडे तोतेमाकांइदोपनथी पूरववुधनेग्रहुमानेके॰ पूर्वपंडितगीतार्थथया तेहनुग्रहुमानकरेजेपूर्वाचार्यआगलेंहुते शाहीसाग्मांतु पणतेनुवचनग्रडेनहीतयापोतानी शक्तिप्रमाणेयोजनाकरे पण अधिकयोजनानकरे जोअधिकयोजनाकरे तोकोइकठेकाणेरा़ेइआवीजाय माटे शक्तिप्रमाणे जोडे वलीमार्गग्यानेके॰ जैनमार्गनुंज्ञानचोखुनिर्मलहोयतोजोडे वली गुरुकुलवासीहोय तेसप्रदायशुद्धजाणे तेवारेयथार्थजोडाय एवापुरुपेजोडवु युक्त घटमानछे एह मांकाइखोडीके॰ हाणीनथी ॥ १३ ॥

एमश्रुतनोनहीउछेद ॥ एतोएकदेशनोभेद ॥
एअर्थसुणिउल्लासें ॥ भविवरतेश्रुतअभ्यासे ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एरीते नवीजोडीकरता श्रुतज्ञाननो उछेदनथीथातो पणश्रुतरुढियावंत एतोएकदेशेभेदछे एटले ग्रथनामेभेदछे पण आत्यतिकभेदनथी वली एग्रथनोजे अर्थके॰ भावते उल्लासेंके॰ हर्पे साजलीने भव्यप्राणीते श्रुतज्ञानभणवाना अभ्यासमा वर्ते केमके तेहनामनमांहे एमउपजेके आग्रथमा आटलीवातकहीछे तो सिद्धातमा तोघणीसुदर वातहशे तेसारुभधारेजणवानो अभ्यासकरे माटेनवीजोडीकरवी ते सिद्धांतनीरुढिवरेछे पण उछेदकरतीनथी इतिभाव ॥ १४ ॥

इहांदूपणएकजहोय ॥ जेखलनेपीडाथाय ॥ तोपण
नवीकोटीजें ॥ जोसज्जनसुखदीजे ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ इहांएकदूपणकहेवायछे तेआवीरीतेके पडितलोकजेग्रथकरेछे तेथीपडितनो यशवादथोवायछे तेजखलोनेदुःखहोयतेथीग्रमातुनथी माटे ते खललोकोने पीडा थायछे तोपणएनवीजोडीकरवी ते नवीजोडीजेके॰ नमूकीये जोसज्जनपुरुपने सुखथापीये तोनवाग्रंथनो अभावजजइयें पणयाकिंयनहीइत्यादिभाव ॥ १५ ॥

तेपुण्येहोसंतोप ॥ तेहनेपणइमनहीदोप ॥ उज
मनाहीयेहींसी ॥ जोखीजेपेखीवीसी ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ ते नवाग्रथजोडना पुण्यथाशे तेपुण्येकरीने सज्जनलोकोने सतोपउपजशे इह सज्जनदयहारथीजाणें तथा तेहनेपणके॰ तेखललोकोनेपण एमदोपनथी एटलेते एवरीज्ञानथाय केवीरीतेनथायके जो उजमनाके॰उद्यमकरीने हीयेहींसीके॰हदय हर्षरामीने एवर्य ग्रथमवीसीमा हरिनइसूरियेंभ्युछे तेजोइ खेजो॥यत ॥इमपुण्ये

दोसो॥जंजायइखललजणस्सपिडत्ति ॥ तहविपयट्टोइढं॥दिठुंसुयणाणअइतोसं॥१॥तत्तोचि यजंकुसलं ॥ तत्तोतिसिंपिहोइनहुपीडा ॥ सुद्धासयापवित्ति ॥ सहेनिद्दोसियाजणिया ॥२॥

कहेकोईकजूदीरीतें ॥ मुनिभिक्षाभांजेभीतें ॥ तेजू
ठुंगुभमतिईहे ॥ मुनिअंतरायथीवीहे ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ वलीकाइंकतो जूदीजरीतेंकहेछे जे देशनादेवानीनाकहीयेंछेयें तेहनोआ शय एछे जेमुनीदेशनादेतां अमारीभीक्षाभांगोछो कारणकेतमे एवोमार्गप्ररुपोजेथकी अ मनेभिक्षाकोइआपेनही ते भीतीके०बीकनेमाटे देशनादेवानी नाकहीयेंछेयें तेजुठुंके० एमबोलनारापण खोटुंकहेछे केमके जेयथार्थदेशनाआपनारमुनिछे तेशुभमतिने ईहेके० वांछेछे एटले उत्तरोत्तर शुभ अध्यवसायराखनाराछे तो ते एहवा मुनिराज तो अंत- रायथीबीहेछे के जोकोईने अंतरायपाडीशुं तोपोतानेअंतरायकर्मबंधाशे तो एवामुनि बीजानी भिक्षाकेमभांजे ॥ इतिभावः ॥ १७ ॥

जेजनछेअतिपरिणामी ॥ वलीजेहनहीपरणामी ॥
तेहनेनितेंसमजावे ॥ गुरुकल्पवचनमनभावे ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ माटे जे लोक अतिपरणामीछे एटले एकनिश्चेमार्गज आदस्योछे ते पोतेज आ स्तवनमां आगलकहेशे जे–भेदलवजाणतांकेइमारगतजे ॥ होयअतिपरिणतिपर- समयथितिभजे ॥ वली केटलाकलोकते नहीपरणामीके०केवल व्यवहारनेज आदरेछे तेक्रियाव्यवहारमांराता पणनिश्चेमार्गजाणताजनथी तेपण पोतेजआस्तवनमांआगल- कहेशे केइनवीभेदजाणेअपरिणतमती ॥शुद्धनयअतिहिगंभीरछेतेवती॥ एवचनथीतो एमजाणीयेंछेयेंजे अतिपरिणतिते निश्चयवादी अने अपारणतिते व्यवहारवादी तथा विशेषावश्यकमध्ये तो वृत्तिकारेंएमलख्युंछे जे इहशिष्यास्त्रिविधास्तद्यथा अपरिणामा अतिपरिणामाः परिणामाश्चेति तत्राऽविपुलमतयोऽगीतार्था अपरिणतजिनमतरहस्या अपरिणामाः अतिपरिणामा अतिव्यासापवाददृष्टयोऽतिपरिणामा.सम्यक्परिणतजिन- वचनास्तुमध्यस्थवृत्तयःपरिणामाः तत्रयेअपरिणामास्तेनयानांयः स्वस्वआत्मीयआत्मी- यविषयो ज्ञानमेवश्रेयः क्रियावाश्रेय इत्यादिकस्तमश्रद्धानाः येत्वतिपरिणामा. तेपि- यदेवैकेननये क्रियादिक वस्तुप्रोक्तं तदेतन्मात्रं प्रमाणतया गृण्हंत इत्यादिकलख्युंछे इहांतो पूर्वोक्तअर्थपणलागेछे तथा महाभाष्योक्तअर्थ पणलागेछे वलीविशेषे बहुश्रुत- कहेतेखरुं इतिभावः एहवाअतिपरिणामी तथा नही परिणामी जे लोकछे तेहने नि- तेंके०न्यायमार्गे स्याद्वादमार्गेदेखाडी गुरुसमजावेछे अथवा नितेंके०निरंतरदेशनायेंक-

रीसमजावेछे तेकोणसमजावेछे गुरूके०गुरूसमजावेछे एमवृहत्कल्पभाष्यमांवचनछे ते मनमांजाणीनेकहेछे ॥यत॥ अइपरिणइअपरिणई॥ दुण्हंविमग्गजणोपणासति ॥ त ह्मादेसणमाइस्कई ॥ सुद्दगुरूमग्गरक्कहा ॥ १ ॥ १८ ॥

खलवयणगणेकुणसूरा ॥ जेकाढेपयमांपूरा ॥ तुज
सेवामांजोरहीये ॥ तोप्रभुजशलीलालहीये ॥ १९ ॥

अर्थ॥तेमाटे देशनानदेवी विगेरे खललोकना वचनने कोणशूरवीरपुरुष गणेके०कोण मात्रमांगणे एटलेशूरवीरतेनेगणतीमांआणताजनथी जे खलपुरुषछे तेपयके०दूधमांथी पण पूराकाढेछे माटेजेदेशनागुणकारीछे तेहनेअहितकारी कहेछे तो हे प्रभुजी तेहना वचन लेखामांगणीयेंनहीं अने तुजसेवामांरहीयेंके० तमारीआज्ञापालीये एटलेतमारी आज्ञाएवीरीतेछे जे देशनाआपता लाभथायछे माटेदेशनाआपवी ए आज्ञा पालनरूप तमारीसेवाछे तेसेवामांजोरहियें तो जशलीलापामीयें प्रभुपद संबोधनकरी आगलसंब धकरयोछे अथवा प्रभुतानोयशतेहनीलीलापामीये इतिभाव ॥१९॥ एचोथीढालनेविषे खललोके गुणपतनेदूषणदीधा तेहनासमाधानकर्‍या हवे पांचमीढालमा खललोकनिर्गु णीछतां पोतानाआत्माने गुणकारीमानेछे तेनेदोष दीयेछे तेसंबधेपांचमीढालकहेछे॥१९॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ रागरामग्री ॥ मंत्रीकहेएकराजसभामां ॥ एदेशी ॥

विषमकालनेजोरेकेई ॥ उठ्याजडमलधारीरे ॥ गुरुगच्छगेमी
मारगलोपी ॥ कहेअमेउग्रविहारीरे ॥ १ ॥ श्रीजिनतुआल
बनजगने ॥ तुजविणशरणआधारोरे ॥ जगतलोकनेकुम
तिजलधियी ॥ बांहिग्रहिनेतारोरे ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥

अर्थ॥विषमकालनेजोरेके०पांचमोआरो तथा हुंडाअवसर्पिणीकालनेजोरे केटलाए क उठ्याके०प्रगटथया जडके०मूर्ख वली मलधारीके०बाह्यशरीरेपणमेला अनेअंतरगपाप मेलेकरी मलीनथयेला माटेमेलनाधरनारारह्या एटलेएजाजे एढालप्राएढुंढीआ लुका आश्रीने पहीवीनाजीवोनेपणशिरामणदाग्यछे हवेते ढुंढीआओने मायेगुरुनथी माटे एनकहुजेटव्याजडमलधारी॥ उक्तचगंगचूलिकाया॥श्रुतहीलनाअध्ययने विक्कमराया उत्तमरसव ॥ ददहनरीवासेसुगणमुरोहुद्दी ॥ अपरिग्गहिवतरी वहाणाउनारहेनासे॥१॥ मुहदीसयाजिपरहिमाबजिनिमहे करयामग्गदाचारा ॥ दुमेहा मलिणाडुग्गइगमि णि॥ बहवेजिसक्कायरामनुप्पजिहिनिचि ॥ एटले गुरुने तथागच्छनेछाडी मारगलोपीने०

उन्मार्गप्ररूपीने तथा तेमने कोइपुछे तेनेएमउत्तरआपे जे अमे उग्रविहारना करनारछीए, तथा अमेअद्भुतमार्गपाम्याछैयें माटे श्रीजिनके०बाह्यअभ्यंतरलक्ष्मीयुक्त एहवाहेजिन-राज तुंज जगतने आलंबनके०आधारछे पण हे प्रभुतमाराविना बीजोकोणआधारछे तमेतमाराभक्तिनाकरनारा जे भक्तलोकछे तेहने कुमतिरूप जलधिके०समुद्र तेथकी बांहियहीने तारोके०पारकनारो एटले भवनवाकदायहउपजतावारो ॥ २ ॥

गीतारथविणभूलाभमता ॥ कष्टकरेअभिमानेरे ॥ प्रायें
गंठीलगेंनवीआव्या ॥ तेखूताअज्ञानेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवेते मूर्खलोक गीतार्थविनाभूलाभमेछे अहंकारेंकरीजेपोतानोएकमत पकड्यो तेहनाअभिमानेकरी लोच,भिक्षा, उघाडुंमाथुं, उघाडापग इत्यादिककष्टकरता फरेछे, पणप्रायें एमजाणीयेंछेयेंजे तेलोक गंठीलगपणआव्यानथी एटलेगंठीभेदपणन-थीकर्यो तोसमकितनीवाततोवेगलीछे तेप्राणीअज्ञानने विषेजखूता छे केमके गुरु-आणाविनाछेमाटेइतिभावः ॥ ३ ॥

तेहकहेगुरुगछगीतारथ ॥ प्रतिबंधेशुंकीजेंरे ॥ दर्शन
ज्ञानचरितआदरियें ॥ आपेंआपतरीजेंरे ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीते पोतानुंएकाकीपणुं थापवामाटे एमकहेछे जे गुरुनोप्रतिबंध गीतार्थ-नोप्रतिबंध तथागछनोप्रतिबंध राखी तेप्रतिबंधेशुंकरियें केमके प्रतिबंधतेतो दुःखनोहे तुछे माटेप्रतिबंधकोइसाथेनकरवो मात्र दर्शन ज्ञान चारित्र ए रत्नत्रयी आदरीयें बी-जोकोइकोइने तारणहारनथी आपेआपतरीजेके०पोतेपोतानीमेलेतरीयें ॥यतः॥ अप्पान-ईवेयरणी ॥ अप्पामेकुडसामलि ॥ इतिवचनात् ॥ ४ ॥

नवीजाणेतेप्रथमअंगमां ॥ आदिगुरुकुलवासोरे ॥ कह्यो
नतेविणचरणविचारो ॥ पंचाशकनयखासोरे ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेएनेउत्तरआपेछे के ते एमनथी जाणताजे प्रथमअंगमां श्रीआचारांग सूत्रनी आदिके०धुरें गुरुकुलवासोके०गुरुकुलवासकह्योछे ॥ यतः ॥ सूयंमेआउसंतेणं ॥ भगवयाएवमक्खायं एमएसूत्रमांहेकह्युंजे सूयंके०सांभल्युं मेके०सुधर्मास्वामी जंबूप्रतें क-हेछे के में एम सांभल्युंछे साक्षात् पणकरणाघाटेनही आउसंतेणंके०आमृशता भगवान वीरना चरणउंवाससताथकां सांभल्युं एवचनेकरीने सुधर्मास्वामीयें एमबताव्युं जे गु-रुकुलवासेंवसवुंइतिभाव नके०नही तेविणके०तेगुरुकुलवासविना चरणके०चारित्र एम

विचारोकेर्णचतनकरो एटलेएजानजे गुरुकुलवासविनाचारित्रनहोय एमपचाशकमाहे श्रीहरिजद्रसूरियें खासोके०उत्तम नयके०न्यायकह्योछे ॥यत ॥दसणनाणचरित्त ॥ गुरु कुलवासमिसगयत्तणिय ॥ अगुरुकुलवासियाण ॥ डुल्लडिसंजयुत्तिएवमत्रि ॥१॥ तथा सिद्धातमाएणपिडविशुद्धे चारित्रनी शुद्धिकहेवायछे तेपिण्डविशुद्धितो जो गुरुकुलमाहोय तोथाय तेमाटे गुरुकुलवासविना चारित्रनहीं ॥ यत ॥ पिंडअसोहयतो ॥ अचरित्तोइ उसससंनछी ॥ चारित्तमिअसते ॥ सव्वादिरकानिरछिया ॥ ११ ॥ इति ॥ ५ ॥

नित्येगुरुकुलवासेवसवु ॥ उत्तराध्ययनेजाप्युरे ॥ तेहनेअप
मानेवलीतेहमा ॥ पापश्रमणपणुदाख्युरे ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वली निरतरगुरुकुलवासें वसवु एम श्रीउत्तराध्ययनसूत्रनाअग्यारमाअध्ययनेकह्यु छे यत वसेगुरुकुलेनिच्च ॥ जोगवउनहाणवं ॥ पियकरेपियवाई ॥ सेसिरकलद्धुमरीहई ॥१॥ इति वली तेहनेके०तेगुरुनेअपमानेके०अवज्ञा करेतोतेहनेवलीतेहमाके०तेउत्तराध्ययनना सत्तरमापापश्रमणियअध्ययनमध्येज पापश्रमणपणुदेखाड्युछे एटलेगुरु आदिकनी निंदाकरतोहोयतो तेहनेपापश्रमणकहीयें ॥यत॥ आयरियउवज्झायाण ॥ सम्मनपडितप्पई ॥ अप्पडिपूयएथडे ॥ पावसमणित्तिवुच्चइ ॥ १ ॥ तेमाटेगुरुकुलेरहेवु

दसवैकालिकगुरुशुश्रूषा ॥ तसनिंदाफलदाख्यारे ॥ आचंतिमा
द्रहसमसदगुरु ॥ मुनिकुलमछसमजाप्यारे ॥ श्रीजिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीदशवैकालिकसूत्रनेविषे नवमाध्ययने गुरुनी शुश्रूषाके०सेवाकरवी तेहेवाना फल घणाकह्याछे ॥ काव्य ॥ आयरियग्गिमिवाहियग्गी ॥ सुस्सूसमाणोपडिजागरेज्जा ॥ आलोइयगीयमेवनच्चा ॥ जोछंदमाराहयइसपुज्जो ॥१॥ इत्यादिक आखो त्रीजोउद्देशोजाणवो वली तसनिंदाके०तेगुरुनी निंदाना फलपण तेदसवैकालिकमाहेज नवमाध्ययनना पहेलाउद्देशामा कह्याछे॥काव्य ॥ आसीविसोयाविपरसुरुडो॥ किंजीवनासाउपरतुकुज्जा ॥ आयरियपायापुणअप्पसन्ना ॥ अबोहिआसायणनत्थि मोरको॥१॥ इत्यादिकसपूर्ण प्रथमउद्देशोइहाजाणवो वली आचतिमाके०आचारागमा पाचमाअध्ययनना पाचमाउद्देशामध्ये सदगुरुनेद्रहसमानकह्याछे तथा मुनिनाकुलके०समूह ते मछसमानकह्याछे तथाचतत्सूत्र सेवेमि तजहा अविहरएपडीपुन्नेचिठति समसिज्ञोमे उवसतरएसाररकमाणे सेचिठति इत्यादिक एनी वृत्तिनो वचेथीएकदेशलखीयेंछेयें इहपुन प्रथमजंगपतितेनोजयसज्ञाविनाविकारस्तथाजूतस्येनायद्रहदृष्टात सचद्रहोनिर्मलजलस्यप्रतिपूर्णाजलजें सर्वर्तुजेरूपशोजित समे जूजागे विद्यमानोदकनिर्गमप्रवेशो नित्यमेवतिष्ठति नकदाचिच्छोपमुपयातिमुखोत्तारावतारसमन्वितउपशातमपगतरज

कालुष्यापादकं यस्य स तथानानाविधांस्तुयादज्ञान् गणान्सद्वायादीगणैरात्मानमा-रक्षयन्प्रतिपालयन्सारदान् निरत्येपांक्रियाप्रकृतेवयथावासो ह्रदस्तथाचार्येपीति द-र्शयतिसेचिठइ इत्यादिसआचार्यः प्रथमत्नंगपतितःपंचविधाचारसमन्वितो अष्टवि-धाचारसंपडुपेनःपट्त्रिंशफ़ुणगणाधारो ह्रदकल्पोनिर्मलज्ञानप्रतिपूर्णः समेत्नूत्नागइति-संसक्तादिदोपरहिते सुखविहारक्षेत्रेसमोवा ज्ञानदर्शनचारित्राख्योमोक्षमार्ग उपशम-वतांतत्रतिष्टतिसमध्यास्तेकिंत्नूत उपशांतमोहनीयइतिकिंकुर्वन् जीवनिकायान् रक्षन् स्वतः परतश्चसडुपदेशदानतोनरकादिपाता रूतिस्रोतोमध्यग इत्यनेन प्रथमत्नंगपतितं स्थविराचार्यमाहतस्यहिश्रुतार्थदानग्रहणसद्भावात्स्रोतोमध्यगतत्वं सचकिंत्नूतःस्यादि-त्याह इत्यादि ॥ ७ ॥

गुरुदृष्टिअनुसारेंरहेता ॥ लहेप्रवादप्रवादेंरे ॥ एपणअर्थ
तिहांमनधरियें ॥ वहुगुणसुगुरुप्रसादेंरे ॥ श्रीजिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीगुरुदृष्टिके०गुरुनामुखआगल रहेतां तथा अनुसारेंके०गुरुनेअनुजायी रहेतां लहेप्रवादप्रवादेंके०प्रकृष्टजेवाद तेनेप्रवादकहियें तेप्रवादेंकरीने प्रवाद जाणे एटलेप्रवादतेआचार्यपरंपरानोउपदेश तद्रूपप्रवादेंकरीने सर्वज्ञउपदेशरूपप्रवादनेजाणे अथवा प्रवादजे सर्वज्ञवाक्य तेणेकरीने अथवा प्रवादजे अन्यतीर्थिउना वाक्य तेप्र-तेपरिक्षाकरीनेजाणे एरीतेगुरुपासेरहेतांज्ञान अंगीकारकरे इत्यादिक एअर्थ. पणति-हांके०तेआचारांगना पांचमाअध्ययनना ठठाउद्देशामां कह्युंछे तेमनमां धरियें तत्सू-त्रं अणाणाए एगे सोवठाणे अणाणाए एगे ॥ निरुवठाणे एयं ॥ तेमाहोउएयंकुस-लस्सदंसणं॥तद्दिठिए तमोत्तीए तप्पुरकारें तस्सन्नितन्निवेसणे अन्नित्नूय अदक्खू अण-न्नित्नूए पहू निरालंवणयाए जे महंअवहिमणे पवायेणपवायंजाणेज्जा सहसंमुइयाए परवागरणेणं अन्नेसिं वाअंतिएसोच्चा निद्देसं नातिवत्तेज्जा मेहावी सुपडीलेहिय सव्व-तोसव्वआएसममेव समन्निजाणीज्जाइत्यादिक एहनोअर्थटीकामांतोवहुछे पणअहिं श-व्दार्थमात्रलिखीयें छेयें अणाणाएके०प्रत्नुआज्ञारहित एगेके०केटलाक सोवठाणेके० धर्ममांसदाउद्यमवंतथया तथा केटलाक अणाणाएके०अनाज्ञायें निरुवठाणेके०सदनु-ष्ठानानाउद्यमरहीत एयंके०एवेकुमार्गने सद्मार्गनाउद्यमनुंआलसजाणवुं हवेफरिगुरु-शिष्यनेकहेछे तुजने ए वे मांहेजो एयंकुसलस्सदंसणंके०एतीर्थंकरनोदर्शनअन्निप्रा-यछे तद्दिठिएके०विनितशिष्यें तेआचार्यनीदृष्टीयें वर्तवुं तमोत्तिएके०तेआचार्यनीमुक्ति-येंवर्तवुं तप्पुरकारेके०तेआचार्यनी आज्ञा आगलकरीनेवर्ते तस्सन्निके०तेओनीसंज्ञा-जाणे चित्तनोअन्निप्रायजाणे तन्निवेसणे के०सदागुरुकुलवासेंवसे एहवोशिप्यकेवागुण-

नेपामे तेकहेछे अजिजूयकेoपरिसहउपसर्गनेजीतीने अदरफूकेoघातिकर्मनेउछेदे छे शिष्यवली अणजिजूएकेoपरिसहोपसर्गनेअणजित्योथको पहुकेoसमर्थहोय निराउं वणयाएकेoमातापितासज्जनादिकना आलंबनरहितपणे विचरवानेकोणसमर्थहोय तेकहेछे जेकेoजेकोइपुरुष महुकेoमाहराअभिप्रायथकी अरहिमणेकेoमनवाहेरनथी निकल्युजेहनु एटले सर्वज्ञउपदेशेंवर्तेछे इतिजाव तेसर्वज्ञउपदेशकेमजाणीयेतेउपरे कहेछे पवायएणपवाय जाणेज्जा एअर्थ 'छहेप्रवादप्रवादे'एमकलुतिहाकह्योछे तेनाएबु हवेपूर्वोक्तजेप्रवादते त्रणप्रकारेजाणे तेकहेछे सहसंमुइयाएकेoपोतानीमतिअनुयायि कमते अथवा परवागरणेणकेoसिद्धांतेकरीने वाकेoअथवा अनेसिकेoअन्यआचार्यादिकतेहने वाअतिएसोचाकेoसमीपेसांभलीने यथार्थजाणीने निर्देसनातिवत्तेज्जाकेo तीर्थंकरना उपदेशनेउलंगेनहीं केमकेजे मेहावीकेoपवीत सुपडिलेहियकेoजवेप्रकारें जोईने सव्वतोसव्वआएकेoसर्वप्रकारें द्रव्यक्षेत्रकालभावें सर्वपणे स्वदर्शन परदर्शनप्रतें सममेवकेoसम्यक्रीते समभिजाणीज्जाकेoजाणीनेनिराकरणकरे इत्यादिकनहुअधि कारछे तेमाटे घहुगुणसुगुरुप्रसादेकेoगुरुआदिकनाप्रसादथी घणागुणथाय ॥ पुज्जाजस्स पसियति ॥ सबुद्धापुव्वसथुया ॥ पसन्नालाजइस्सति ॥ विउलअठियसुय ॥ १ ॥ इयुत्त राध्ययनेप्रथमाध्ययने इहांसूत्रआलागोविषमहतोमाटेअर्थकह्योछे ॥ ८ ॥

विनयवधेगुरुपासेवसता ॥ जेजिनशासनमूलोरे ॥ दर्शन
निर्मलउचितप्रवृत्ति ॥ सुजरागेअनुकूलोरे ॥ श्रीजिन० ॥ ९ ॥

अर्थ॥वली गुरुपासेवसता विनयवधे अने जेविनयते जिनशासननु मूल छे॥यत ॥एव धम्मस्स विनउमूलपरमोसेमोक्खोइति दसवैकालिक नवमाध्ययनना बीजा उद्देशकेंकह्यो तथा विनयफलशुश्रूषा, गुरुशुश्रूषाफलश्रुतज्ञान॥ ज्ञानस्यफलविरति, विरतिफलचाश्रव निरोध ॥१॥ आश्रवनिरोधात्संवर, तत्तिफ्य सततिक्रियान्मोक्ष ॥ तस्मात्कल्याणाना, स र्वेषांभाजनविनय ॥२॥इतिप्रशमरतौ वली गुरुकुलवासेंदर्शनश्रद्धानिर्मलथाय उक्तच सव गुणमूलभूउ ॥ भणीउआयारपढमसूत्तेज ॥ गुरुकुलवासोवस्स ॥ वसिज्जाउतउचरणठी ॥१॥ इतिधर्मरत्नवचनात् वलीगुरुकुलवासें दर्शनश्रद्धानिर्मलथाय तथा उचित केoयोग्यप्र वृत्तिथाय तेपणसुजरागेकेoभलारागसहितप्रवृत्तिकरे तेपण अनुकूल केoसन्मुखभावप णेकरे पणवेठनीपेठेनकरे ॥ ९ ॥

वैयावच्चेंपातिकत्रूटे ॥ खतादिकगुणशक्तीरे ॥ हितोपदेशे
सुविहितसगे ॥ ब्रह्मचर्यनीगुप्तिरे ॥ श्रीजिन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ गुरुनोवैयावच्चकरतांथकां पातिककेॱपापकर्मत्रूटे यतः॥ वैयावच्चेणंजंते जीवे किंजणइवेयावच्चेणंतिछयरनाम गोयं कम्मंनिबंधइ इतिउत्तराध्ययने उंगणत्रीसमाध्ययनेकह्युं वलीगुरुआदिकपासेरहेतां खंतादिककेॱक्षमाप्रमुखगुणनीशक्तिवधे तथा गुरुपासेंरहेतोथको हितोपदेशसांजले तेणेकरी तथा सुविहितनासंगेकरीने ब्रह्मचर्यनीगुप्तिकेॱनववाडोजलीरीतेंपाले तेगुप्तिपणवाधे ॥ १० ॥

मनबाधेमृडुबुद्धीकेरा ॥ मारगन्नेदनहोवेरे ॥ बहुगुणजाणे
एअधिकारें ॥ धर्मरयणजेजोवेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥तथा मृडुबुद्धीकेराकेॱजे ऋजुमतिनाधणीहोयतेहना मनबाधेकेॱचित्त मांहे उल्लासवधे कारणके जेन्नोलालोकहोयतेगुरुसाथेदेखीने हर्षपामे अने गुरुथी जूदादेखीने नडकीजाय तथा मारगनोन्नेदनथाय अने जे एकाकीमार्गप्ररुपे तेघणो अपवादप्ररुपे अने गीतार्थघणोउत्सर्गप्ररुपे एवीरीते जूदीजूदी प्ररुपणा सांजलीने लोकपणजिन्नमार्गसमजे तेथीधर्ममार्गनोन्नेदथाय अनेगुरुसाथे न्नेलारहेतांथकांनथाय. इत्यादिक गुरुकुलवासमांहे बहुकेॱघणागुणजाणे एअधिकारेंकेॱएगुरुकुलवासना अधिकारनेविषेधर्मरत्नग्रंथजेप्राणीजुए तेजाणे एटले एग्रंथमांगुरुकुलवासेंरहेतां घणागुणछेतेविस्तारेंकह्युंछे इतिन्नाव.॥११॥

नाणतणोसंन्नागीहोवे ॥ थिरमनदर्शनचरित्तेंरे ॥ नत्यजे
गुरुकहियेंएवुधन्नाष्युं ॥ आवश्यकनिर्युक्तेंरे ॥ श्रीजिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ वली तेजीव गुरुपासेथीज्ञानजणे माटे नाणकेॱज्ञाननोसंविन्नागीथाय तेमज दर्शननेविषे तथाचरित्तेकेॱचारित्रनेविषेपण तेहनुंमनथिररहे तेप्राणीगुरुकेॱगुरुआदिकने कहियेंकेॱकोइकाले नत्यजेकेॱनछांडे एरीते बुधन्नाष्युंकेॱपंडितलोकेंकह्युं एटले न्नद्रबाहुस्वामी चउदपूर्वधर तेणेआवश्यकनिर्युक्तिनेविषे एमकह्युंछे यत.नाणस्सहोइन्नागी ॥ थिरयरउदंसणेचरित्तेय ॥ धन्नाआवकहाए ॥ गुरुकुलवासंनमुंचंति ॥१॥ इति ॥ १२ ॥

न्नोतप्रतेंजेमवाणेहणता ॥ पगअणफरसीसवरारे ॥ गुरुगंमि
आहारतणोखप ॥ करतातेमसुनिनिवरारे ॥ श्रीजिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ तथा न्नोतकेॱबोधप्रतेंजेम पिछुंलेवानेमाटे बाणेकरीनेहणता पण पग अणफरसीने एटले पगफरसतांपापलागे तेमाटेसवराकेॱसवरानामेराजानीपेठे जे गुरुकुलवासछांडीने आहारनोखपकरता एटले शुद्धमानआहारखोलताजेमुनि तेहने निवरा जाणवा एटले नकामाजाणवा इतिगाथार्थ. न्नावार्थतोकथाथीजाणीयें तद्यथा कोइकसन्निवेशनेविषे सबरनामेराजा तेबोधनोन्नक्तिवंतहतो तेनाघरेंबोधनोगुरुआव्यो तेणेपो-

तानामाथाऊपर अति अद्भुत शोभावंत मोरनापीछनुछत्रधारणकर्युंहतु राजायेघणो आदरसत्कारआपी आसनेबेसाड्यो पछीतेनुछत्र मोरनाचंद्रेकरीझगझगाट करतु राजा नीराणीयेदीठुं पछीकुतूहलपामतीथकी राणीयेतेछत्रमाग्यु केमके तेदेशमा मोरनहता तेथी ते नवाइजेवु हतु माटे तेछत्रचोथनागुरुयेंआप्युनही अने उलीनेपोतानेठेकाणेजनोरह्यो पछीराणीयेंभोजनकीधुनही तेवारेराजायेंपुछ्युके शाकारणथीभोजन करतीनथी राणीयेंकह्युके एछत्रआवेतोभोजनकरु त्यारेराजायें तेछत्रगुरुपासेमाग्यु पण गुरुये आप्युनही फरीवारंवा रमाग्यु पणगुरुआपेनही पछेलेहरागअतिउधेरछे माटेराणीना स्नेहे राजाये पोताना सु भटोनेहुकमकर्यो जे बलात्कारेंपण एपीछनुछत्र लेइआवो तेवारें सुभटोबोल्याके ए पोतेजीवतातोछत्रआपशेनही माटेतमारोहुकमहोयतो कोइक प्रहारकरी बलात्कारेंआ वियें तेवारेंराजाबोल्योजे गुरुनीआशातनानथाय माटे गुरुनापादस्पर्शकरशोनही पण दूरथीजारहियाथनाखीने चेष्टारहितकरीछत्रलेइआवो पणपादस्पर्शकरशोतो गुरुनीअव ज्ञाथशे तेनुमोहोटुपापलागशे एहवाते जेमशबरराजा गुरुनोनाशकरतो पण पादस्प र्शकरतावारतोहतो एहवोजविवेकगुरुकुलवास तजीने जेशुद्धआहारगवेषेछे तेहनेपण जाणवो यत ॥ सुद्धाईंसुजुचो ॥ गुरुकुलवागाइणोहविन्नेर्ड ॥ सबरससरच्छपिछ॥ व धायपायाछिणतुल्लो ॥ १ ॥ इतिधर्मरत्ने ॥ १३ ॥

गुरुकुलवासेंज्ञानादिकगुण ॥ वाचयमनेवाधेरे ॥ तोआहार
तणोपणदूषण ॥ खपकरतानविवाधेरे ॥ श्रीजिन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वली गुरुकुलवासेंवसतायका ज्ञानदर्शनचारित्रना गुण ते दिनदिनप्रतेंव वाचना पृछनादिकेकरी वाचयमनेके० मुनिराजने वाधे हवेपाछलावेपदनोअर्थअन्वय करीकहीयेंछेयें तेज्ञानादिकगुणनी वृद्धीथायतो आहारनोखपकरतापण दूषण न वाधे इत्यन्वय एटले ज्ञानध्याननी लेहेरमावेगायका कोइकद्रव्यानुयोगमा अत्यंतमग्नथ याछे एवामा गोचरीयेंनिकल्याथका कोइकस्थानकें सूक्ष्मदोषदेखीने चिंतवन करे के ध्याननीलेहेर हजीचित्तमा अतरवासनायेंछे अनेघणाघेरफरवाजइशतो ते लेहेरफरी श्यछेरेहवेंचमालुनिचारी काइकदूषणसहित आहारलीये तोपणतेहनेबाध न करे एट शृत्तियाय तेपणसुजसाय यत अहागडाइजुजता ॥ अन्नमन्नेणकम्मुणो ॥ उवलित्तेवि णेकरे पणवेछनीपेछेनकोत्तेतिनापुणो ॥ १ ॥ इत्यादिकसुयगडांगसूत्रेअध्ययन २१ मामध्ये खसता मुणीणोवद्धतीनाणपमुहेहिं ॥ जइएसणाइदोसस्स ॥ वेयावच्चेपातिकत्रूट ॥ इतिजाव तथाअपवादें गाढग्लानादिकनाकार्यें अणस सुविहितसगे ॥ ब्रह्मचे असछजायेंरत्तेतानेआतुरदशाते आधाकर्मादिक आ

हारतेपण निर्दोपजाणवो तथाचागमः संथरणंमिअसुद्धं ॥ दुन्हविगिन्हंतयाण-हियं ॥ आउरदिठंतेणं ॥ तंचेवहीयंअसंथरणे ॥ १ ॥ तथ्यथा ॥ जाजयमाणस्सजवे॥ विराहणासुत्तविहिसमग्गस्स ॥ साहोइनिज्जरफला ॥ अज्झविसाहिजुत्तस्सत्ति ॥ २ ॥ उत्तराध्ययने एरीतेदूपणसहितआहारतेपणवाधनकरे ॥ १४ ॥

धर्मरतनउपदेशपदादिक ॥ जाणीगुरुआदरवोरे ॥ गछक
ह्योतेहनोपरिवारो ॥ तेपणनितअनुसरवोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ तथाधर्मरत्न अनेउपदेशपद प्रमुखग्रंथजोइने एग्रंथोमांगुरुकुलवासना अधिकारघणाछे माटे तेसांभीजाणीने गुरुआदरवो वली गछ ते कोने कहीयें तेकहेछे तेहनोपरिगारोके० एहवासुविहितसाधुनो परिवारतेहनेगछकहीयें यतः ॥ गुरुपरिवारोगछो इत्यादिकपंचवस्तुवचनात् माटेतेगछपण निरंतरअंगीकारकरवो अनुसरवो इति यतः गुरुगुणजुत्तोगछो ॥ गछोसंविग्गयासाहुसमवाउ ॥ मुरकमग्गठिणासोय ॥ अणुसरियव्वोपयत्तेण ॥ इत्यादि ॥ १५ ॥

सारणवारणप्रमुखलहीने ॥ मुक्तिमारगआराधेरे ॥ सुजवीरय
तिहांसुविहितकिरिया ॥ देखादेखेंवाधेरे ॥ श्रीजिन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ वलीसारणके० विसरुंहोयते संजारीआपे अनेवारणके० पापकरणीकरतानेवारे तथाप्रमुखशब्देंकरीचोयणा प्रतिचोयणापणलेवी तेपणजेगछमांरहे तेहनेथाय पछीतेतेसारणादिक लहीनेके० पामीने मुक्तिमारगआराधेके० मोक्षमार्गसाधे यतः गुरुपरिवारोगछो ॥ तछवसंताणनिज्जराविउला ॥ विणयाउतहासारण ॥ माइहिंनदोसपडिपत्ति ॥ १ ॥ इतिपंचवस्तुके तथाश्रीधर्मरत्नप्रकरणनीवृत्तिमध्येकह्युंछेके सुजवीरयके० जलोवीर्योल्लासवाधे वलीसुविहितकिरियाके० आत्मार्थिगीतार्थनी क्रियाव्यवहार तेदेखादेखीयें वधे एटले साधुउनासमूहने क्रियातपजपादिक करतांदेखीने पोतानेपण करवानुंमनथाय तेहथीवधारोथाय ॥ १६ ॥

जलधीतणोसंखोजअसहता ॥ जेमनीकलतामीनोरे॥ गछसार
णादिकआणसहता ॥ तिममुनीदुखियादीनोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ जेमजलधीके० समुद्रनो संखोजके० कल्लोलप्रमुखनीजे क्षोजना तेहने असहताके० जेवारेंसहीशकेनही तेवारें जेम मीनके० मछहोयतेसमुद्रमांथीवाहारनीकले तोदुःखीथाय तेमगछमांरहेताथका गुरुआदिकजेसारणादिककरे तेसहनकरवी पडे अनेजेवारे नसहवाय तेवारेंगछथीवाहारनिकले तोतेसमुद्रमांथीनिकलेला मछ-

नीपेठेडु खीयाय दीनथाय केमके गत्यतरेडुर्गतियेंजाय माटेडु खीदीनजथाय इति
नाच यत ॥ जहजलनिहिकल्लोय ॥ रकोचमसहतायवाहिरपत्ता ॥ मीणाश्रमुणियमु
णीणो ॥ सारणपमुहाइअसहता ॥ १ ॥ इतिआचारागपचमाध्ययनेचतुर्थोद्देशकवृत्ते
पुनर्यथा ॥ जहसायरमिमीणा ॥ सरकोहसायरस्सअसहंता ॥ णितितउँसुहकामी ॥ णि
ग्गयमित्ताविणस्सति ॥ १ ॥ एवंगच्छसमुद्दे ॥ सारणवीईहिंचोइयासता ॥ णितितउँसु
हकामी ॥ मीणावजहाविणस्सति ॥ १ ॥ इत्यादिकउघनिर्युक्तिवचनात् ॥१७॥

काकनर्मदातटजेममूकी ॥ मृगतृष्णाजलेंजातारे ॥ दुखपा
म्यातेमगछतजीने ॥ आपमतिमुनीथातारे ॥ श्रीजिन० ॥१८॥

अर्थ ॥ वलीदृष्टातकहेछे जेमनर्मदानदीना किनाराऊपररहेनारा काकपक्षीजेम
गटा ते तटके० नदीनोकाठोमूकीने तेनदीनाकाठाथीदूरपाणीजेवीआकखदेखाय प
पाणीहोयनही तेभ्रातिरूपपाणी तेनेमृगतृष्णाजलकहीयें तेजलनीभ्रातियेंदोडताएवा
थागया तेजेमदु खपामे तेरीरीते मुनिहितना समुदायनोगछतजीने जे मुनि आपमतिके
स्वेछाचारी थयाजाय तेआगमनीपेठेडु खपामे ॥ १८ ॥

पाखविनाजेमपाणीनरहे ॥ जीवविनाजेमकायारे ॥ गीता
र्थविणतेममुनीनरहे ॥ जूठकटनीमायारे ॥ श्रीजिन० ॥१९ ॥

अर्थ ॥ माटे जेम सरोवरादिकनुपाणी ते पाल बांध्याविना रहेनही तथा जे
जीवविना काया नरहे तेम जेमुनिराजछे तेगीतार्थविना रहेनही गीयत्थस्सविहारो
बीउगीयत्थमीसिउँभणीउँ ॥इत्यादिवचनात् माटेजे गीतार्थविना जेटला कष्टकरे ते स
अज्ञाना नछे अने जेअज्ञान तेमिथ्यात्वछे ते मायाके० कपटविना होयनही ॥ १९

अयसंतजेमनिर्मललोचन ॥ मारगमाखेईजायरे ॥ तेमगीता
र्थनृत्यमुनिने ॥ दृष्टआलंबनथायरे ॥ श्रीजिन० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ वली दृष्टात कहेछे जेम आयखाने निर्मलआखनो धणी ते काटा प्रमु
रहित एहवा उन्ममार्गे खेडजने स्यानकें पोहोचाडे तेम गीतार्थ जेछे ते जो क
विन् मूर्खमुनि होयतो तेने पण दृष्टके० जबरदस्तआधारभूतथायछे ॥ २० ॥

समभावीनीनारयनाणी ॥ आगममाहेंलहियेरे ॥ आतमअरथी
गुनमनिमज्ञन ॥ कहोनेविणकेमरहियेरे ॥ श्रीजिन० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ वली समभावीके० स्याद्वादवचनना भापीहोय अथवा समभावीके० ग

वने तथा मातवरने रागद्वेषरहितपणे देशना आपे तथा गीतार्थ होय नाणीके० सम्यग्ज्ञानीहोय आगममांहेथी एहवा गीतार्थ लहियेंके० पामीयेंछैये वली आतमअर्थीके० पोतानुं आत्मस्वरूप साधवाने उजमालथया तथा शुभमतिके० जलीमतिना धणी एटले जेमांकुमति कदाग्रहहोयनही वली सज्जनके० उत्तमगुणवंत जलीशिखामणना आपनारा एहवा गीतार्थविना इहां सर्वपदसंबोधने बोलावीयें हे आत्मार्थि हेशुभमति हेसज्जन तमे कहोके ते एहवा गुरुगीतार्थ पुरुषविना केम रहीयें के० शीरीतेरहीशकीयें ॥ २१ ॥

लोचनआलंबनजिनशासन ॥ गीतारथछेमेढीरे ॥ तेविणमु
नीचढतीसंयमनी ॥ आरोहेकेमसेढीरे ॥ श्रीजिन० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ वली गीतार्थ ते ज्ञानरूप लोचनना आपनारा माटे गीतार्थने जिनशासननेविषे लोचन कहियें तथा दुर्गतिनेविषे पडता प्राणीने आधार थाय माटे गीतार्थने जिनशासननेविषे आलंबनकहीयें वली गीतार्थते मेढीबराबरछे एटले जे खेतर खलाना वचमां स्तंजरोपीनेअन्नउपर फेरवेछे तेने मेढीकहीयें उपलक्षणथी स्तंजभूत कहीयें जेहने आधारें घरमालप्रमुख रहेछे तथा यानकहीये जेहने आधारे महाअटवीनो विहामणोमार्ग होय तोपणपारपामीयें यतः मेढीआलंबणंखंभं ॥ दिठि जाणंसुउत्तमं ॥ गीयथ्थंगुरुगुणाइणं ॥ सम्मंजाणसुगोयमा ॥ १ ॥ माटेते गीतार्थविना मुनिराज ते संयमनी सेढीके०श्रेणी केम आरोहे एटलेकेमचढे अने उत्तरोत्तर शुभाध्यवसायें केमवधे एसंयमश्रेणीनो अधिकारते संयमश्रेणीनुंस्तवन अमारागुरुश्रीउत्तमविजयजीकृतछे तेथी विस्तारेंजाणवुं तथापंचसंग्रहथीजाणवुं. ॥ २२ ॥

गीतारथनेंमारगपूछी ॥ छांडीजेंउन्मादोरे ॥ पालेकिरिया
तेतुजभक्ति ॥ पामेजगजशवादोरे ॥ श्रीजिन० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ तेगीतार्थनें मार्ग पूछीने उन्माद जेस्वेछाचारीनुं मदोन्मत्तपणुं तेछांडवुं एरीते तमारीआणासहितचाले तेजतमारीभक्तिजाणवी तेतमारीभक्तिकरीने जे क्रिया पाले एटले एभावके तमारीएआज्ञाछे जेज्ञानसहित क्रियापाले तेप्राणीजगतनेविषे जशवादपामे

॥ ढालछठी ॥

॥ रासुडानीदेशी अथवा हितशिक्षाछत्रीशीनीदेशी ॥

प्रथमज्ञाननेपछेंअहिंसा ॥ दसवेकालिकसाखिरे ॥ ज्ञानवंतते
कारणभजियें ॥ तुजआणामनराखिरे ॥ साहेबसुणजोरे ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे आगली ढालमां ज्ञानसहितक्रियाकरता संयमश्रेणीयारोहे एमकहुं तेमांज्ञानपूर्वकक्रियाकरे तो लेखेछे माटे आढालमांज्ञानवर्णवेछे जेप्रथमज्ञान होयतो पछी अहिंसाके०दयापलीशकेछे एमश्रीदशवैकालिकसूत्रमा कह्युंछे यत पढमनाणतउ दया एवंचिठइसव्वसजए तेकारणेज्ञानवतने जजीयंके०सेवीये पणहेपरमेश्वर तमारी आज्ञा ते मनराखिके०चित्तमाराखीने एटलेएजावजे ज्ञानवंतने जजीयें पण साध्यमा एमराखीयेंजे ज्ञानक्रियाज्यामोक्ष नाणक्रियाहिमुरकोइतिजाष्यवचनात् माटे स्याद्वाद दृष्टीयें ज्ञाननीसेवाकरीयें हेसाहेवसुणजोके०साजल्यानी पेरेसाजलजो अन्यथा परमेश्वर केवलज्ञानीछे तेतो सर्व जगतना जाव देखीरह्याछे तेहनेशुसाजलवुंछे पणजकिवा प्राणीउपचारेकहेछे के हे साहेब साजलजो ॥१॥

द्रव्यखेत्रनेकालनजाणे ॥ जावपुरुषपडिसेवरे ॥ नविउ
त्सर्गलहेअपवादह ॥ अगीतारथनितमेवरे ॥ सा० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वलीजे अगीतार्थछे ते १ द्रव्यनजाणे २ क्षेत्र नजाणे ३ कालनजाणे अने ४ जावपण नजाणे तथा ५ योग्यछेके अयोग्यछे एहवा पुरुषने पण नजाणे तथा ६ पडिसेवके० पापनीसेवनाने नजाणे जे एणेस्ववशे पापकस्यु अथवा एणे परवशें पापकस्यु तेअगीतार्थ नजाणे वली ७ उत्सिंशक्रिये जेमसिद्धांतमां मार्गकह्यो तेमज करवु तेहनेउत्सर्गमार्गकहीयें तेपण नजाणे तथा ८रोगादिक कारणे अल्प दोषसेवे ते अपवादमार्गनेपण नजाणे ए (८) घातो नितमेवके०निरतरपणे जेअगीतार्थछे तेनजाणे यत उपदेशमालायां ॥ दव्वखित्तकाल ॥ जावपुरीसपडिसेवणाउय ॥ नवि जाणईअगीउ ॥ स्सग्गववाइयतचेव ॥ १॥२

सचित्तअचित्तमिश्रनवीजाणे ॥ कल्पअकल्पविचाररे ॥ योग्य
नजाणेनिजनिजठामें ॥ द्रव्ययथास्थितसाररे ॥ सा० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवेप्रथमगाथाविस्तारता एहिज द्वारमाप्रथम द्रव्यद्वार कहेछे तेमाद्रव्य अगीतार्थ शु नजाणे तेकहेछे सचित्तवस्तु तथा अचित्तवस्तु तथामिश्रवस्तुने जाणे नही वलीकल्पनीखबरनपडे जे आवस्तुकल्पेछे वा नथी कल्पति अकल्पछे तेविचार अगीतार्थ नजाणे वलीयोग्यतानी खबरनपडे निजनिजठामेके०पोतपोताने स्थानकें योग्यता नजाणे जे आबालने योग्य के ग्लानने योग्य इत्यादिक नजाणे एरीतें यथास्थितरे०जेद्रव्य जेमहोयतेनीजरीते तेहनी अगीतार्थनेखबरपडेनही यथास्थितद्रव्य वुजे सारके०प्रधानछे यदुक्त ॥ जहठियदव्वनयाणइ ॥ सचित्ताचित्त मीसगचेव ॥ प्पाकप्पवनहा ॥ जोग्गंजजस्सजहोई ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालाया ॥ ३ ॥

खेत्रनजाणेतेहयथास्थित ॥ जनपदअध्वविशेषरे ॥ सुभि
दक्षुर्भिदकल्पनजाणे ॥ कालविचारअशेषरे ॥ सा० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेक्षेत्रद्वार कहेबेअगीतार्थ यथास्थितके० जेवुंक्षेत्रहोय तेहवुंक्षेत्रनसमजे के आलडकक्षेत्रले के अभडकले इति तथा जनपदके०लोकेव्यास देशनेविषे विहार करतां आवीविधियें करवुं अथवा मगधादिकदेशें आवीविधियेंकरवुं इत्यादिक नजाणे वलीअध्वविशेषके०दूरदेशेअटवीप्रमुखें आवीरीते विहारकरवो इत्यादिक वानो अगीतार्थ नजाणे हवेकालद्वारकहेबे जे सुभिक्षमां कल्पनजाणेके० योग्यनजाणे एटले सुभिक्षमां आरीतेविरचवुं वलीडुर्भिक्षमां पणकल्पके० योग्यनजाणे जेडुर्भिक्षमांआवीवस्तु होय तोज लेवाय इत्यादिक वातो कालना विचारनीते अशेषके०समस्तप्रकारें अगीतार्थ नजाणे इतिजावः यतः जहठियंखित्तंनजाणइ ॥ अद्धाणेजणवएयजंजणीयं ॥ कालंपियनविजाणइ ॥ सुभिरकडुभिरकजंकप्पं ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ४ ॥

जावहिठगिलाणनजाणे ॥ गाढअगाढहकल्परे ॥ खमतो
अखमतोजननलहे ॥ वस्तुअवस्तुअनल्परे ॥ सा० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेजावद्वारकहेबे जे जावके०जावना विचारनेविषे हिठके०निरोगीने तथा गिलाणके०रोगाक्रांतने नजाणे एटले निरोगीने आदेवुं तथा रोगीने आवस्तुदेवी ते वातो अगीतार्थनजाणे अने गाढकल्पके०आकरेकारणेंआरीतें करवुं तथा अगाढकल्पके०स्वजावेंसेहेजरीतेंतो आप्रमाणे वर्त्तवुं एअगीतार्थनजाणे हवेपुरुषद्वार कहेबे खमतोके० आपुरुषसामर्थ्यवानशरीरें कठोरबेमाटेखमी शकशे तथाअखमतोके० आपुरुषनुं सुकुमारशरीरबे ते नहींखमीशके एहवा जनके०प्राणीने ते अगीतार्थ ओलखेनही वली वस्तुके०आचार्यादिक अवस्तुके०सामान्यसाधुने ते अगीतार्थ नओलखे जेपदस्थनेआमघटे तथा सामान्यनेआमघटे माटे अनल्पके०इत्यादिकबहुप्रकार ते न जाणे यतः जावेहिठगिलाणं ॥ नविजाणइगाढगाढकप्पंच ॥ सहुअसहुपुरिसबहु ॥ बहुमबहुंचनविजाणइ ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ५ ॥

जेआकुट्टीप्रमादेंदर्पे ॥ पडिसेवावलिकल्परे ॥ नविजाणे
तेतासयथास्थित ॥ पायछित्तविकल्परे ॥ सा० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे प्रतिसेवानामेंद्वार कहेबे जे निषेधआचरण तेहने प्रतिसेवा कहीयें तेहना चारप्रकारबे तेमां प्रथम आकुट्टीके०जाणीने पापसेववुं तेपण कारणविना सेववुं बीजो कंदर्पादिकने वशथका जेपापसेवे तेप्रमाद कहियें त्रीजो धावनवलनादिके

करीजे पापलाग्यु तेदर्प्पकहीये चोथो आगमोक्तकारणेकरीनिपेधाचरण कस्यु तेकल्प कहीये एचारेभेद पडिसेवाना जाणवा ॥ यत पडिसेवणाचउव्हा ॥ आउट्टिपमायद प्पकप्पेसु ॥ नविजाणइअग्गिउं ॥ पछित्तचेवजंतठ ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायांतद्वृत्ति गाथा आउट्टिआउविद्या ॥ दप्पोपुणहोइवग्गणाईउं ॥ कदप्पाउयपमाउं ॥ कप्पोपुणका रणेकरणिउं ॥ १ ॥ इत्याचारांगवृत्तौ एगाथानोअर्थकहेछे आउट्टि तेजाणीनेपापकरवु दर्प्पतेधावनवलनादिक सोत्कर्पपणे निपजे कदर्प्पते प्रमादवशें जाणवु अने जे ज्ञाना दिकने आलवनहेतेआचरवुतेकारणे जाणवु एचारप्रकारनु जेपाप तेपापनु यथास्थि तके०जेहने जेवुघटे तेवुं प्रायश्चित्तनु विकल्प जे आ प्रायश्चित्तजालाने आवु तपदेवु इ त्यादिक वातो ते अगीतार्थ नजाणे ॥ ६ ॥

नयणरहितजेमअनिपुणदेशे ॥ पथनठजेमसत्थरे ॥ जा
णेहुठामेपोंचावु ॥ पणनहीतेहसमत्थरे ॥ सा० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेम कोइकनयणरहितके०अधपुरुपहोय अनेवली अनिपुणदेशेके०मार्गनो अजाणछे ते अधपुरुप एवामार्गनेविपे पथनठजेमसठके० जेममार्गमा कोइकसाथनो एटलेजूलोपड्योहोय ते साथने आधलोजाणे जेहु ठेकाणे पोंचाडु पणपोचाडवाने स मर्थनथाय यत जहनामकोपुरिसो ॥ नयणविहुणोअदेसकुसोय ॥ कंताराडविभीमे ॥ मग्गपणठससछस्स ॥ १ ॥ इछइयदेसियव ॥ किंसोउसम्मछुउदेसियतस्स ॥ दुग्गइ याणतो ॥ नयणविहुणोकहदेसे ॥ २ ॥ ७ ॥

अगीतार्थतेमजाणेगरवें ॥ हुचलवुसविगछरे ॥ पणतस
पासेगुणगणग्रासे ॥ होईगलागलमछरे ॥ सा० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेपूर्वोक्तअधपुरुपनीरीते अगीतार्थ पण तेमगर्वेके० अहकारेकरी एम जाणेके हु वधोगछचलावुतु पण तेनीपासे रहेताथका गुणगणके० गुणनाजेसमूह ते ग्रासेके० घसाइजाय एटलें अगीतार्थने सगें गुणनो नाशथाय यत एवमगीयछोविहु ॥ जिण वयणपईवचरकुपरिहीणो ॥ दव्वाऽयाणतो ॥ उस्सग्गववाइयचेव ॥१॥ कहसोजयउ अगीउं ॥ कहवाकुणऊअगीयनिस्साए ॥ कहवाकरेउगछ ॥ सवालवुड्डाउलसोउ ॥२॥ इत्युपदेशमालाया अगीतार्थने पासे वसता मछगलागलथायके०मोहोटामछ नानाम छनेगलीजाय एम धींगामस्तिनी वातथाय पणमार्गनीरीतनरहे ॥ ८ ॥

पछित्तेअतिमात्रदिएजे ॥ अपछित्तेपछित्तरे ॥ आसाय
णतमसूत्रेबोली ॥ आमायणमित्तरे ॥ सा० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ वली अगीतार्थहोयतेवगरसमजणे पछित्तेंके०प्रायश्चित्त जेटलुं आवेते करतां उलटो अतिमात्रके० अधिकुं दिएके०आपे अने जेहने अपछित्तेके०प्रायश्चित्त नआवतुंहोय तेहने पछित्तके०प्रायश्चित्तआपे एटलेथोडाप्रायश्चित्तवालाने घणुंआपे अने मूलगुंजेने प्रायश्चित्तलागतुंजनहोय तेने कहेशे जे तमने प्रायश्चित्त लाग्युं इत्यादिक असमंजसकरे एम करनारने सूत्रनेविषे आसायणवोलीके०जिनाज्ञानीविराधनाकरी माटे विराधक कह्योछे अनेआसायणके०जिनाज्ञानीविराधना तेहिज मिछत्तके० मिथ्यात्व जाणवुं तथा तेमिथ्यात्वनिमितिउं संसार वधारे यतः सुत्तेयइमंजणियं ॥ अपछित्तेयदेइपछित्तं॥ पछितेअइमत्तं ॥ आसायणतस्समहइउं ॥१॥ आसायणमिछत्तं॥ आसायणवज्जणायसम्मत्तं ॥ आसायणानिमित्तं ॥ कुवईदीहंचसंसारं ॥२॥ इत्युपदेशमालायां॥९॥

तवसीअवहुश्रुतविचरंतो ॥ करीदोषनीश्रेणिरे ॥ नवि
जाणेतेकारणतेहने ॥ केमवाधेगुणश्रेणिरे ॥ सा० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ तवसीके०तपश्चर्याकरतो तथा अवहुश्रुतके० अगीतार्थथको विचरंतोके० विहारकरतोथको करीदोषनीश्रेणिके०अनेकदोषनी श्रेणीनेकरतो एटले अनेक अपराधपद करतोथको पण नविजाणेके०नजाणे एटले पोताना दोषनी पोताने खवर न पडे तेकारणके०ते हेतुयें तेअगीतार्थ कष्ट करताने गुण श्रेणीनीवृद्धि केमथाय अर्थात् न थाय तेटलीज रहे यडुक्तं अवहुस्सउतवस्सी ॥ विहरिउकामोअ जाणिउणपहं ॥ अवराहपयसयाइ ॥ काऊणोविज्जोनयाणेइ ॥१॥ देसियराइयसोहिं ॥ वयाइयारेअजोनयाणेइ ॥ अविसुद्धस्सनवढ्ढइ ॥ गुणसेढीतत्तिआगाइ ॥२॥ इत्युपदेशमालायां ॥ १० ॥

मार्गमात्रजाणेजेमपंथी ॥ अलहीतासविसेसरे ॥ लिंगा
चारमात्रतेजाणे ॥ पामेमूढकलेशरे ॥ सा० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेम कोइक पंथीहोय तेहने कोइकह्योपुरुष मार्ग वतावे नोपण विशेष मार्गनी तेने खवरनपडे केमके पोतेडाह्योनथी माटे डावोजमणो मार्गजेमन जाणे एकसामान्यप्रकारें मार्गमात्रजाणे तासके०तेमार्गनीडावीजमणी वाजु ते अलहीके०अजाणतो क्लेशपामे तेमज लिंगके०साधुवेष ने आचारके०साधुनी क्रिया ते लिंगाचारमात्र जाणे एटलेमात्र एकसूत्रनाज अक्षरमान्यकरी क्रियादिक करतो पण मार्गनेअजाणतो एहवोजे मूढके० मूर्ख अगीतार्थ तेक्लेशनेपामे संसार वधारे. यतः जहदायंमिविपहे ॥ नस्सविसेसेनपहस्सयाणंतो ॥ पहिउकिलिस्सइच्चिय ॥ तह लिंगायारसुअमित्तो॥१॥ इत्युपदेशमालायां ॥११॥

भेदलह्याविणनानापरिणति ॥ मुनीमननीगतवोधरे ॥ खिण
राताखिणताताराता ॥ अंतउपाईविरोधरे ॥ सा० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ गतबोधके०गयुछे बोधज्ञान जेथकी एटले मूर्ख जेहोयते मुनीश्वरोना म ननी नानापरिणतिके०विचित्रप्रकारनी परिणतिर्ठना जे भेदके०प्रकार ते लह्यापिणके० जाण्याविना एटलेजेमूर्खमुनिर्ठहोयते बीजामुनिर्ठनी विचित्रपरिणति अजाणतायका क्षणेकमा राताथाय एटले अंत करणमा क्रोधदीप्तथाय तथा क्षणेकमा ताता थाय एटले बाह्यपणे क्रोधदीप्त थाय एवा मूर्खोने एमथातायका अथवाराताके०रागीथाय परस्परें क्रीडाकरे तथा ताताके०तपीजाय कषायमयीथईजाय अने अंतेके० छेवटे वि रोधने उपाईके०उपजावे एटले तेमूर्ख माहोमाहे वढीमरे, पणसमाधि नउपजावे॥१२॥

पथ्थरसमपामरआदरता ॥ मणिसमबुधजनछोमिरे ॥ भेद
लह्याविणआगमथितिनो ॥ तेपामेंबहुखोडिरे ॥ सा० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ मणिरत्नसमान जेबुधजनके०पंडितलोक तेहने छांडीने पथ्थरसमके० पथरा समान जे पामरके०मूर्खजन तेहनेज आदरताके०अंगीकारकरे तेप्राणी ते मूर्खपासेर हेतायका आगमनीजे उत्सर्ग अपवादादिरूप थितिके०मर्यादा तेनो भेदके०प्रकार त अणलेहतायका तेआदरनारापुरुष घणी खोडपामे एटलेसयमरूपशरीर आखु न रहे जर्जरखंडितथाय इतिभाव ॥ १३ ॥

ज्ञानभक्तिभाजीअणलहेता ॥ ज्ञानतणोउपचाररे ॥ आरा
सारेंमारगलोपे ॥ चरणकरणनोसाररे ॥ सा० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एना जे मूर्खहोयते ज्ञाननी भक्तिनेतो भाजे एटलेखण्डितकरे तथा अण लहेताके०अणआराधना ज्ञानतणोके०ज्ञाननोजे उपचारके०विनय तेनेअणजाणता प्राणी आरासारेंके०जेपाचमोआरो तेनेअनुसारें मारगलोपेके०भलामार्गने लोपेछे ए टले मूर्खनेआदरता ज्ञानभक्तिने भाजता ज्ञाननो उपचार अणलहेता जे पुरुष हो तेपाचमा आराप्रमाणे चारित्रने पाले कातो एकलाजउत्सर्ग मार्गे चाले अथवाका दोपराढी उत्सर्गमार्गनीउकृष्ट मूकीज दे, पण सारके०प्रधान एवोजे चरणसित्त तथा करणसित्तरिनोमार्गतेनेपाचमाआराने अनुसारे तेमूर्ख लोपेछे एरीतेअमनेजा तेरीते सम्योछे नहीएगाथानो अर्थ पंडितलोकोने मुजेतेखरो ॥ १४ ॥

उत्सर्पिनेढनेंपेशिक्षा ॥ उदासीनजेसाररे ॥ परुषवचन
तेहनेनेबोले ॥ अगरदेआचाररे ॥ सा० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ नही उत्सर्पिके०उत्कृष्टाचारिक्रियाहोय तथा उदासीनके०बेपरवाइ होय रके०टनमहोय तेवा साधु जो तेहने प्रमादस्खलितादिकदेखी शिक्षाआपे तेवारेंते

एकाकीगच्छथी निकल्या होय तेपाठो शिक्षा आपनारसाधुने परुषवचनके०कठोरवचन कहे जेमुजने सर्व लोकमां केम तिरस्कार कर्यो मेंशुंमाठुंकर्युं ठे बीजातो एरीते करे-जठे तोधिक्कारपणो माराजीवितने इत्यादिकबोले. एमश्रीआचारांगमध्ये कह्युंठे तयाच त-त्पाठ.॥ वयसाविएगेचु ॥ च्याकुप्पंतिमाणवाउ ॥ णयमाणेयनवरे ॥ महयामोहेणमुचइ॥१ इति एमवचनमात्रेंज गच्छनेठांमि एकला रही अकार्य सेवे इतिनावः ॥ १५ ॥

अमसरिखाहोजोतुमेजाणो ॥ नहीनोस्यातुमबोलरे ॥
एमन्नापीजात्यादिकदूषण ॥ काढेतेहनिटोलरे ॥ सा० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ पठी ते मूर्खमुनि शिक्षा आपनारने पाठा एवाजवाब आपे के जो अम सरिखा तमे होत तोजाणत एटलेएजावजे अमारे गोचरीपाणीप्रमुख लाववां पडे तेतमनेकरवुं प-डतुंहोयतो तमेजाणो नहीतो वेठा मोटाई करो एटलुंज तमारामांठे पणकांइ न्नविचारनथी जोअमारी पेठे चालो तोतमेजे अमने शिक्षाआपोते खरी नहीतो तमारा बोलशा एटले तमारुं बोलवुं सर्व फोकटठे एमन्नापीके०एम कहीने जात्यादिकना दूषणकाढे एटले एम कहेजे तमे हीणिजातिना उपज्याठो तमारुं कुलकेवुंठे इत्यादिक बोले तेहनिटो-लके०तेपुरुपने निटोलजाणवा पण ते सज्जनउत्तमपुरुषमां नगणाय ॥ १६ ॥

पासत्यादिकदूषणकाढी ॥ हिलेज्ञानीतेहरे ॥ यथाठं
दताविणगुरुआणा ॥ नविजाणेनिजरेहरे ॥ सा० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ वली ते मूर्खप्राणी शिखामणना आपनारने उलटा पासत्यादिक दूषण का-ढीने हिलेके०हिलनाकरे एटलेएम कहेजे तमारामां शा गुणठे तमे पासत्थाउसन्ना ठो एम कहीने ज्ञानीके०पंडितगीतार्थनी हिलनाकरे एवेपदनोएकठोअर्थठे एमविणगुरु आणाके०गुरुआज्ञा पाल्याविना यथाठंदताके०आपठंदे आचरणकरवानी एवी जे नि-जके०पोतानी रेहाके०रेखाठे एटले हीणाआचरणनी मर्यादापोतानी ठे तेनी पोता-नेज नजाणेके०खबरनपडे एटले ज्ञानीना अठता दूषण काढे अने पोताना ठतादूषण होय ते उवेखे इतिन्नाव. ॥ १७ ॥

ज्ञानीथीतेमअलगारहेता ॥ हंसथकीजेमकाकरे ॥ न्नेदविन
यनावावनप्राप्या ॥ नलहेतसपरिपाकरे ॥ सा० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे ज्ञानीके०जे गीतार्थ गुरुआदिक तेथकीअलगा रहेतायका केवा दे-खाय जेमराजहंसथकी कागडो जूदो देखाय तेवोतेसाधु देखाय तथा विनयना वा-

वनन्नेद शास्त्रमा कह्याछे तथाहि १ अरिहंत २ सिद्ध ३ नागेंद्रचंद्रादिक तेकुल ४ कोटिकादिक ते गण ५ चतुर्विधसंघ ६ क्रियातेअस्तिवादरूप ७ खत्यादिकधर्म ७ म त्यादिकज्ञान ए मत्यादिकज्ञानवंत ते ज्ञानी १० आचार्य ११ स्थविर ते सिदाताासा धुनेस्थिरकरे १२ उपाध्याय १३ केटलाकसाधुना समुदायनाअधिपतितेगणी ए तेरनो चारचारनेदेविनयकरवो १ अनाशातना तेजात्यादिक दूषणकाढीने हीलनानकरे २ न क्तितेउचितउपचाररूप ३ बहुमानते अंतरप्रीतिप्रतिबंधरूप ४ वर्ण संज्वलनाते यश नोलवा ग्रीतेतेरनेचारेगुणता बावनन्नेदथाय इतिप्रवचन सारोद्धारे पासठमेद्वारे ए अधिकारजोजो उपलक्षणथी बावनकह्या तेमज ए१ न्नेद समवायांगे तथा पिस्तालीस न्नेद तथा दशन्नेद इत्यादिक अनेकन्नेद ग्रंथातरथी जाणवा तेसर्वन्नेदनु शीखवु तथा ते नीतेप्रवर्त्तवु तेने परिपाक कहीयें तेपरिपाकने नलहेके०एकाकी साधुनपामे केमके ए काकीविहारकरनार कोनापासेथीशिखे तथा केनोविनयकरे ॥ इतिन्नाव ॥ १७ ॥

सर्वउद्यमेपणतसबहुफल ॥ पडेकष्टअन्नाणरे ॥ सूत्रअ
न्निन्नतणेअनुसारे ॥ उपदेशमालावाणिरे ॥ सा० ॥ १ए ॥

अर्थ ॥ सर्वक्रियाअनुष्ठाननोउद्यम तेनुजे बहुफलके०घणुफल स्वर्गादिक ते पडे पडेअन्नाणरेके०अज्ञानकष्टमांपडे एटलेनिर्जरानथाय संसारपरित्त न थाय कोनेनथाय तेरदेखे जे अन्निन्नार्थ विशिष्टव्याख्यानरहित एहवुजेसूत्र तेहनेअन्निन्न सूत्रकहीयें तेअन्निन्नसूत्रनेअनुसारें क्रियाप्रमुख अनुष्ठानकरे तेअज्ञानकष्टमांपडे इति योग ज टीकाप्रमुखविनाविशेषप्रतिपत्तिकेम थाय? अन्यथाअनुयोगनुंकथननिरर्थकथाय ए व पदेशमालानीशाखीते पद्धकनसूत्रे॥ अपरिछियसुयणिहसस्स ॥ केवलमन्निन्नसुत्तचा रिस्स ॥ सव्वुज्जमेणविकय ॥ अन्नाणतवेबहुपकइ ॥ १ ॥ अर्थ ॥ अपरिछियके०नथी जाण्यो सुयणिहसस्सके०श्रुतरहस्यजेणे शेषसुगम ॥ १ए ॥

नेतोगजुजारीएकाकी ॥ चालेतेहनेजुत्तरे ॥ वाम्यकुवा
सनजेअनुवासन ॥ देशागधकउत्तरे ॥ सा० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ हवे ज्ञानीथी अलगा थयारे थवु तथा शा कारणे एकाकी रहेवुपडे ते अविवादिककारण घणाते यत अमियेउमोयरिए ॥ रागजण्णाजियउत्तमठेय ॥ फिडि यगिलाणेठन्नेमे ॥ संजयाविरायावरिए ॥ १ ॥ एमकारणेनाअर्थविस्तारेंखरयाते पण अवसन्नतानाथसवे माटेअवसन्नतानथी पणएक अशिवकारणलहीयेंतेयें जे साधु वारवर्ष लगबद्री ज्ञानादिक अनिमयेंकरी मवरगारे जेअमुकनपेंअशिवथशे अने कदाचित

बारवर्ष अगाउ उपयोगनरह्यो होयतो इग्यारे, ते नही तो दशवर्ष अगाउ, एमयावत् एकवर्षअगाउपण उपयोगराखे. तेपणउपयोगनरह्योहोयतो ज्यारें अशिवजाणेतेवारे साधुत्यांथीविहारकरे तेमांकोइक ग्लानसाधु होय तेविहारकरीशकेनही तेवारे एवाकारणेएकला ज्ञानीविना पणहोय तेमांपण १ साधुभद्रक अने गृहस्थप्रांत २ तथा साधुप्रांतअनेगृहस्थभद्रक ३ तथासाधुभद्रकअनेगृहस्थपणभद्रक ४ तथासाधुप्रांतअनेगृहस्थपणप्रांत एमचोभंगीथाय इत्यादिकसर्वेओघनिर्युक्तिमांविस्तारछे तेजोजो हवेअक्षरार्थलखेछे जेसाधुऋजुभावेके० भद्रकथकां पूर्वोक्तरीते एकाकीचालेके० रह्याहोय तेहने युक्तके० कोइकपूर्वोक्तरीते एकाकीपणुंयुक्तछे पणअन्यथानही इतिभावः वलीबेप्रकारनाघटचाल्याछे एकभावित अने बीजोअभावित तेमांअभावितते नवाघट अनेभावितनाबेभेद एकशुभद्रव्येंभावित बीजाअशुभद्रव्येंभावित तेवलीएकेकनाबेबेभेद एकवाम्य बीजो अवाम्य. जेवाम्यतेवासनाटालीशकीयें अने जे अवाम्यतेवासनाटालीनशकीयें तेमांकुवासनावमवायोग्यहोयतेरुडाजाणवा एवाम्यकुवासन एटलापदनोअर्थथयो अने जे अकुवासनाके०कुवासनायेंवास्याजनथी एवानवा घटके०घडाछे तेपणरुडा एम विशेषावश्यकमांछे अथवा वाम्य अवाम्य घटनीभावना नंदिसूत्रनी वृत्तिथी जाणवी. उक्तंच पयइहिंभद्दभावा ॥ कुवासणावासियाविनोउठ्ठा ॥ उज्जुमइणोसुकंखा ॥ तेदेसाराहगाउत्ता ॥१॥ एवादेशाराधकयुक्तहोयते पूर्वोक्तकारणेंएकाकीपणे गीतार्थविनारहे इतिभावः ॥ २० ॥

अज्ञानीगुरुतणेनियोगें ॥ अथवाशुभपरिणामरे ॥ कम्म
पयडीसांखेसुदृष्टि ॥ कहियेंएहनोठामरे ॥ सा० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ वली अज्ञानी अगीतार्थने गुरुतणेनियोगें आज्ञा परवशें थकां पण ऋजुमार्गेवर्त्ते छे अथवा शुभपरिणामवंतछे गुणनो रुचीवंतछे तो कम्मपयडीनीसांखे तेने सुदृष्टीवंत कहियें एनो स्थानक सम्यक्दृष्टीगुणठाणो जाणवो ॥ २१ ॥ एगाथानो अर्थ ज्ञानविमलसूरिना करेला टबा उपरथी लख्योछे ॥ २१ ॥

जेतोहठथीगुरुनेछांडि ॥ भग्नचरणपरिणामरे ॥ सर्वउद्य
मेंपणतसनिश्चय ॥ कांइनआवेठामरे ॥ सा० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेतोके० जेवली भग्नचरणपरिणामके० जेहना चारित्रना परिणाम भांग्याछे एहवोथको हठकदाग्रहथकी गुरुने छांडीने सर्वप्रकारें निन्हवादिकनीपेठे उद्यमेंके० कष्टउद्यमकरेछे पण तसके० तेना कष्टप्रमुखसर्व निश्चयकरीनेकोइनआवेठामके० कांइ लेखे नलागे यतः आणाए तवो आणाइ॥ संजमोतहयदाणमाणाए ॥ आणारहिओधम्मो ॥ पलालपुलुव्वपडिहाइ ॥ १ ॥ इतिसंबोधसित्तरीमध्येकह्युंछे ॥ २२ ॥

आणारुचीविणचरणनिषेधे ॥ पंचाशकेंहरिजद्दरे ॥ व्यव
हारेंतोयोडुलेखे ॥ जेहसकारेंसद्दरे ॥ सा० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ जेने परमेश्वरनी आज्ञानीज रुचीछे तेतोचारित्रनेयोग्यछे पण एवीआज्ञार
चीविना चरणनिषेधेंके० चारित्रनीनाकहीछे शामाटे जे आज्ञारुचीनथी तोवीजोकअ
नुष्ठानकोनी आज्ञायेंकरेछे यत आणारुइस्सचरण ॥ तप्पगेजाणकिनजग्गति ॥ आण
अइक्नो ॥कस्साएसाकुणइसेस॥१॥इति ते जेआज्ञासहितकरेछे तेचारित्र अनेआज्ञावि
ना पचाशकनेविषे हरिजद्रसूरिचारित्रने निषेधेछे व्यवहारेंतोके०गुरूसमाचारीसहीत
व्यवहारपालेतो पोतानी शक्तिप्रमाणे थोडुकरे तोपण लेखामाछे एटले आज्ञासहित थो
डुकरे तेलेखेछेशामाटे जेथोडुपणअनुष्ठानते सकारेंके०सत्यकरे अने सद्दके० शब्दते आग
मकहियें केमके चारप्रमाण कह्याछे तेमा आगमप्रमाणने शब्दप्रमाणकरी बोलाव्युछेमाटे
आगम सत्कारेतोथोडो व्यवहार पण प्रमाणछे अनेवीजुघणुकष्ट तेनिष्फलछे ॥ २३ ॥

शिष्यकहेजोगुरुअज्ञानी ॥ नजतागुणनिभिजाणीरे ॥ जोसु
वासनातोकिमत्यजता ॥ तेनेअवगुणजाणीरे ॥ सा० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ हवेइहाशिष्यकहेछे के जोगुरुअज्ञानीछे तोपणतेहने नजताके० सेवता
कांगुणनिरिजाणतो जोसुवासनाछे तोकेणप्रकारे तेहने अवगुणीजाणीनेत्यजीयें ॥२४॥
एगाथानोअर्थ ज्ञानविमलसूरिना टवामाथी लख्योछे ॥

गुरुबोलेशुनवासनकहियें ॥ पन्नवणिज्जसुन्नावरे ॥ तेआ
यत्तपणेछेआर्जे ॥ जशमनेनद्रकन्नावरे ॥ सा० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ गुरु कहे हे शिष्य जे शुनवासना ते पन्नवणिज्ज स्वनावछे एटले जे सम
जाव्योसमजे एवो जेनो स्वनावछे तो एवोजेहोय तेतो आर्येके० प्रथम गुरुने आय
पणेके० वशवर्तियें होय नही जशमनेके० जेहना मननेविषे नद्रकन्नावछे ते शिष्य
आज्ञारुची जाणीयें ॥ २५ ॥ एगाथानोअर्थ ज्ञानविमलसूरिनाटवाऊपरथी लख्योछे॥

सूधुमानीसूधुयातां ॥ चउनंगीआचाररे ॥ गुरुकहणेंते
हमाफलजाणी ॥ वदींयसुजगअपाररे ॥ सा० ॥ २६ ॥

अर्थ॥एक सूधुमाने अने सूधुकरे, वीजो सूधुमाने अने असूधुकरे, त्रीजो असू
धुमाने अने असूधुकरे चोथो असूधुमाने अने सूधुकरे इत्यादिक शब्दें चउनंगी
आचारमार्गनि सूचना कहीछे तेमायगुरूनानेजागा लाज्यछे अने गुरूनानेजागा छ

आह्यछे ते आंगामां फलहोय एम जाणीने गुरुसेवामां रहीयें तो अपारके० घणोसु-जश लहीयें ॥ २६ ॥ एगाथानो अर्थ ज्ञानविमलसूरिनाटवाऊपरथीलख्योछे ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ राजगीतानीदेशी अथवा सुरतिमहिनानी ॥

कोइकहेगुरुगछगीतारथसारथशुद्ध ॥ मानुपणनविदि
सेजोतांकोईविबुद्ध ॥ निपुणसहायविनाकह्योसूत्रेंएक
विहार ॥ तेहथीएकाकीरहेतांनहीदोषलगार ॥ १ ॥

अर्थ ॥ पूर्वढालमां गीतार्थ वर्णव्या हवे एवा गीतार्थ गुरुपासे वसवुं ते आ ढा-लमांकहेछे कोइक आगमना रहस्यने अजाणतोथको आगमनुंशरणकरी बोलेछे जे गुरुके० गुरुआदिक गछके० सुविहितनोसमुदाय वली गीतार्थनो सारथके० समुदाय संयतार्थोतुदेहिनां इतिसामान्यकांडवचनात् एवा शुद्धके० पवित्र ते गुरु,गछ,गीतार्थ सर्वने मानुके० अंगीकारकरुंवुं पण ते जोतांथका कोइविबुद्धके० कोइडाह्यापंडित नविदिसेके० देखातानथी अमारी नजरमां कोइ आवतानथी निपुणसहायके० डाह्या-नीसखाइनमले तोतेविना सूत्रेंके० उत्तराध्ययनसूत्रनेविषे कह्युंछे जे एकविहारके० एकलाविहारकरीयें उक्तंचकाव्ये ॥ नवालभिज्जानिउणंसहायं ॥ गुणाहियंवागुणउंस-मंवा ॥ इक्कोविपावाइविवज्जयंतो ॥ विहरिज्जाकामेसुअसज्जमाणो ॥ १ ॥ एम तेसूत्रमां एकाकीविहारनी आज्ञाछे माटे एकाकीरहेतांथकांलगारदोषनथी ॥ १ ॥

अणदेखंताआपमांतेसविगुणनोयोग ॥ किमजाणेपरमां
व्रतगुणनोमूलवियोग ॥ छेददोषतांईनवीकह्याप्रवचनेमु
निकुशील ॥ दोषलवेंपणथिरपरिणामीबकुसकुशील ॥२॥

अर्थ ॥ हवे तेने उत्तर आपेछे जे एमकहेछे तेप्राणी आपमांके० पोतामां सर्व गुणनो योगके० संयोगने अणदेखतोथको एटले एजातजे पोते सर्वगुणीनो थयोनथी तो पोते दोषवंतथको केवीरीते परमांके० बीजामां व्रतगुणनोमूलवियोगके० व्रतनो गुण मूलथी नथी एमशीरीतेंजाण्युं केमके गुरुआदिकमांतो कांइक गुण हशेज तोदोषनोलेश देखीने गुरुने मूकाय नही गाथा ॥ इच्छाविवपरिमिद्धा ॥ मज्जत्थानियगुणमुंचंति ॥ सव्वगुणपसं-पडंगं ॥ अप्पाणंमिविअपिछंता ॥ १ ॥ इतिधर्मरत्नप्रकरणे तथा छेददोषनांइके०दसप्र-कारना प्रायश्चित्तमां सातमो छेददोषछाने तिहां लगें प्रवचनेके०सिद्धांतनेविषे मुनिनि-ङ्गशीलके०कुशीलिया हीणानथीकह्या यत. छेयस्सजावदाणं ॥ तायंमेगंपिनोअइक्कमइ॥

एगअइक्कमंतो ॥ अइक्कमेपचमूलेण ॥ १ ॥ इतिवचनात अने थोमो दोष देखीने ज
रुने नहीं आदरे तो सर्वनो त्यागकरवो पडशे तेकहेछे जे पांचप्रकारना निग्रंथ अ
चउदप्रकारनी अन्यतरगंठी तथा नवप्रकारनी बाह्यगंठी तेथी मूकाणा ते निग्रंथ
हीये यत गंठोमिछत्ताई ॥ घणाईओअतरोयनवओय ॥ दुविहाओनंजे ॥ निग्गंठ
तेहुतिनिग्गया ॥१॥ मिछत्तवेयतिय ॥ हासाछक्कयचनाय ॥ कोहोंमाणचउक्क ॥
दसअंभितरागंथी ॥ २ ॥ धणधन्नखित्तकुप्य ॥ वत्थु दुपय चउप्पय रूप चउचरणा ॥
वयाहिरयागंथी ॥ एयतेहुतिपुणपच ॥३॥ सुगम नवर चउचरणाके० चतुष्पदइति १४
२ बकुस ३ कुशील ४ निग्रंथ ५ सनातक एनांलक्षण जगवतिसूत्रना शतक २५
उद्देशेछठेजोजो एपाच कह्या तेमा १ पुलाग २ निग्रंथ ३ सनातक एत्रणनो प्रतिव
रहित जाणवा अने बकुस तथा कुशील ए बेहुने प्रतिसेवाछे गाथा ॥ मूलुत्तरगुण
पया ॥ पडिसेवासेवएकुशिलोय ॥ उत्तरगुणेसुनउसो ॥ सेमापडिसेवणारहिया ॥
तेमापणनिग्रंथ तथा सनातकतो श्रेणीविछेदगड तेमागया तथा पुलागलब्धिपणवि
दगइ तेमाटे एत्रण जंबुस्वामी साथे विछेदगया तेहेतुथ बकुस तथा कुशील एबेहु
तीर्थ चालेछे यत निग्गंथ सिणायाण ॥ पुलागसहियाणतिण्हवुछेओ ॥ समणा
कुशीला ॥ जातिथ्यतावहो हिंति ॥५॥ जेमाटेते छठासातमा गुणठाणावनहोय ते अ
त्मुहूर्त्ते अवश्यपरावर्त्तथाय तेवारे छठेगुणठाणेआवे तिहांअवश्य प्रमत्तदोषनो स
देखीने गुरुनो त्याग केम थाय अने ते त्यागकरीशतो जगतमा आजनाकालेनिर्दोषको
नहीलाभे तेमाटे लवमात्र दोषलागते पण बकुस तथा कुशील एबेहु जातिनामुनि
थिरपरिणामी एटलेतेहना परिणाम अतिउन्मार्गे नथी चालता अथवा थिरपरिण
मीके०एवेमुनि थिरपरिणामेछे एटले पंचमआरानाछेडालगे एहिजछे माटे
इतिजाव एहनोविस्तार धर्मरत्नग्रथनीवृत्तिथीजाणवो ॥ २ ॥

ज्ञानादिकगुणपणगुरुवादिकमाहेजोय ॥ सर्वप्रकारे
निर्गुणनविआदरवोहोय ॥ तेगडेगीतारथजेजाणेवि
धिसर्व ॥ ग्लानौषधदृष्टांतेमूढधरेमनगर्व ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे ज्ञानादिकके०ज्ञानदर्शनचारित्रमाहेथोडोरकोइ उत्कृष्टगुण
आदिकमा जोइयें पण सर्वप्रकारेंके०सर्वथानिर्गुणहोयतो न आदरीयें माटेजेगी
होय तथा जे प्राणी उत्सर्गअपवादप्रमुखनी सर्वविधि जाणता होयते छांडेके० गडे
पण निर्गुण जाणीने छांडे तेउपरदृष्टांत कहेछे ग्लानौषधके०जेमरोगीनेऔषध तेजिहां
लगे रोग तिहालगें औषध तेमजिहालगे अगीतार्थ तिहालगें औषधसदृशगछ अने

ज्यारेनिरोगीसहशगीतार्थ थयो त्यारे औषधरूपगच्छनुं कामनही तेमाटे मूढके०जेमूर्खछे तेअहंकारमनमांधरीने गच्छबाहिरनिकलेछे इहांकोइबीजीरीते ए दृष्टांत जोडे छे, जेमग्लाननेऔषधआपे अनेआहारनआपे माटेरोगीनेछांड्योनकहेवाय पण सामो रोगीने उपकारकर्यो कहेवाय तेमजगीतार्थगच्छछांडे तेछांड्योनकहीयें पणउलटोगच्छने उपकारकर्यो एमकहीयें यतः नाणाइगुणविउत्तं ॥ जोचयइगुरुगणंचगीयछो ॥ अणुकंपेइतमेवय ॥ आउरजेसज्जामिवत्तीए ॥ १ ॥ इतिवचनात् एवेव्याख्याछे माटेजेगीतार्थनी दृष्टीमां ठरे ते खरुं इतिभावः ॥ ३ ॥

तेकारणगीतारथनेछेएकविहार ॥ अगीतार्थनेसर्व
प्रकारेंतेनहीसार ॥ पापवरजतोकामअसजतोजां
प्योजेह ॥ उत्तराध्ययनेगीतारथएकाकीतेह ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तेकारणके०पूर्वेकह्युंतेकारणे गीतार्थनेज एकाकी विहारनी आज्ञाछे यतः गीयछोयविहारो ॥ वीउगीयछनिस्सिउजणिउं ॥ इत्तोतइयविहारो ॥ नाणुन्नाउजिणं देहिं ॥१॥ इतिआवश्यकनिर्युक्तौ अने अगीतारथके० मूर्खने सर्वथा जे एकलो विहार करवोते सारके०प्रधान नथी रुडोनथी इतिभावः तथा पापनेवर्जतो कामने असजतो एटले कामक्रीडामां जे तत्परनही जांप्योजेहके०उत्तराध्ययननामेंसिद्धांतमां जेजांप्योछे के गीतार्थहोय गुणीहोय तेएकाकीरहे तेकाव्यपूर्वेलख्युंछे “ नवालभिज्जानिउणं सहायं ” इत्यादिक विचारीजोजो ॥ ४ ॥

पापतणोपरिवर्जननेवलिकामअसंग ॥ अज्ञानीनेन
वीहुएतेनविजाणेभंग ॥ अज्ञानीशुंकरशेशुंलहशेशुभ
पाप ॥ दशवैकालिकवयणेपंचाशकआलाप ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेएकाकी होयते पापनुंवर्जन केमकरे?वलीकामके०कंदर्प्पनासंगनो जे त्याग करवो ते एकाकी मूर्खने केमहोय? माटे एविचार अज्ञानीने नहोय तेअज्ञानीने तेना भांगानी खबरनपडे के आ अवसरे शुद्धजलेवुं के आअवसरे अशुद्धआहार होय तोपणलइयें इत्यादि भांगानी खबरनपडे वली अज्ञानीपुरुषहशे तेजीवअजीवादिक जाण्याविनाशुंकरशे एटलेसंयमानुष्ठानशुंकरशे तथा शुभपापके०पुण्य अने पाप ते प्रते अज्ञानीशुंजाणशे ते दशवैकालिकवयणेके०दशवैकालिकसूत्रनावचनथकी यदुक्तं॥तत्र अन्नाणीकिंकाहि किंवानाहीछेयपावगं इत्यादिचतुर्थाध्ययने तथा पंचाशकग्रंथमांपण एवोज आलापके०आलावोछे एटले वचन छे ॥ ५ ॥

एकविहारेदेखोआचारंसंवाद ॥ बहुकोधादिकदूषण
वलीअज्ञानप्रमाद ॥ वलियविशेषेभाख्योछेअव्यक्त
विहार ॥ पखीपोतदृष्टांतेजाणोप्रवचनसार ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वलीएकाकी विहारकरे तेहनो आचारंके०आचारांगनेविषे संवादके०प्रमाण तेकहेछे जे तेआचारांगनापांचमाअध्ययनना प्रथम उद्देशानेविषे देखोके०जुओ एकविहारीने बहुक्रोधआदिशब्दे मान प्रमुखपणलेवा. यथा ॥ इहमेगेसिं एगचरिया भवति बहुकोहे बहुमाणे बहुमाए बहुलोभे बहुरते बहुनडे बहुसढे बहुसंकप्पे आसवसक्की पलिउच्छन्ने एमांविषमपदनोअर्थलखियेछेयें बहुरतेके०बहुपाप बहुनडेके० नाटकियानी पेठे जोगनेअर्थे बहुवेषनाकरनारा तथा बहुसढेके०अनेक प्रकारेंशठ तथा बहुसंकल्प उपजे आसवके०आश्रवजेहिंसाप्रमुख तेहनो सक्किके०सक्त एटलेसंगी अने पलिउच्छन्नेके०पलितएटलेकर्मेंकरीअवच्छन्न एटले ढांक्योछेति वलीबीजादोषकहेछे अज्ञानप्रमादथाय एटलेएआवजे एजआलावेपदछे उट्ठियवादपवयमाणे मामेकेइअदक्खु अन्नाणपमायदोसेण इति उट्ठियवादपवयमाणेके०अमें संयमचारित्रमा उजमालथयाछेयें एमबोलता मामेकेइअदक्खुके०आअवमाप्रवर्तताथकाजाणेमुजनेकोइदेखतुनथी एम अन्नाणपमायदोसेणके०अज्ञानप्रमाददोषे सहितप्रवर्त्ते तेनेवलीविशेषेंकरीने आचारांगमा अव्यक्तविहारवाख्योछे अव्यक्तके०वयपणपूरीनही अनेश्रुतपणपूरुनही तेहनेअव्यक्त कहीयें आचारांगपंचमाध्ययननेउद्देशेचोथेकह्युछे यथा ॥ गामाणुगामं दुइज्जमाणस्स दुज्जातं दुपरक्कंतं भवति अवियत्तस्स भिक्खुणो एहनोअर्थ ॥ गामाणुगामं दुइज्जमाणस्सके०एकगामथी बीजेगाम एकाकी विचरताने दुज्जातके०दुष्टगमनछे अर्हन्नकमुनिनी पेरे दुपरक्कंतके०दुष्टपराक्रांतछे थुलिभद्रनाईपांचसिंहगुफानासिमुनिने जेमकोश्याथीपराक्रम्या तेम सर्वमुनिने नहोय तेमाटे विशेषणकरेछे अवियत्तस्स भिक्खुणोके०अव्यक्तभिक्षुने एटलेअव्यक्तभिक्षु बेप्रकारनाछे एकश्रुतअव्यक्त बीजोवयअव्यक्त जेआचारप्रकल्प नभण्याहोय अनेगछमारह्याहोय तेश्रुतअव्यक्तकहीये तथागछथीनिकल्या ते नवमापूर्वनी त्रीजीवस्तुनभण्याहोयतेगछनिरगतअव्यक्तकहीये गछमा रहायका सोलवर्षनाथाय त्यांलगें वयअव्यक्त कहीयें अनेजे गछनिरगतते त्रीसवर्षनाथाय त्यांलगे वयअव्यक्तकहियें इतिइहांचोभंगी छे १ श्रुतअव्यक्त अने वयअव्यक्तहोय तेतोएकाकी विहारकरेजनही केमके संयमात्म विराधनाथाय माटे नकरे २ श्रुतअव्यक्त अनेवयव्यक्त तेपणअगीतार्थ माटे संयमात्मविराधनाथाय माटेतेमनेएकाकीविहार नकल्पे ३ श्रुतव्यक्त अनेवयथीअव्यक्त तेहनेपण नकल्पे बालपणायकीकुलिंगी तथागृहस्थने पराभवनुस्थानकहोयछे

माटे ४ श्रुतअव्यक्ततथावयअव्यक्त तेहनेपणएकलमल्लप्रतिमाप्रमुखकारणें एकाकीपणेविचरवानी आज्ञा छे पणकारणविना नही इत्यादिक बहुवातछे तेआचारांगवृत्तिथीजाणवी एटलाजमाटे आस्तवननी मूलगाथामां विशेषपदमूक्युंछे माटे अव्यक्तने तोविशेषेकरी सर्वथावास्यो तथाव्यक्तनेपणकारणविनावास्योछे तोअव्यक्तनेवास्योतेनुंशुंकहेवुं तेपंखीपोतदृष्टांतेंकरीजाणवुं जेमपंखीनो पोतके०बालक तेने पांखआवीनहोय अने उरूवाजाय तो बीजा ढंकप्रमुख जनावर तेने उपद्रवकरे तेम अव्यक्तअगीतार्थ बालक होय तेहने परदर्शनी उपद्रवकरे जाणोप्रवचनसारके०एजेनागमनो सार जाणवो यतः काव्यं जहादियापोयमपरक्कजायं ॥ सवासयापविउमणं मणागं ॥ तमव्वाइयातरुणपमत्तजाइं ॥ ढंकाइअव्वत्तगमंहरेज्जा ॥ १ ॥ माटे जेमपंखीपोताना बालकने सूंना मूकता नथी तेम मूर्खनेगीतार्थ एकलानमूके इतिभावः ॥ ६ ॥

एकाकिनेस्त्रीरिपुश्वानतणोउपघात ॥ भिक्षानिनविशु
द्धिमहाव्रतनोपणघात ॥ एकाकिसछंदपणेनविपामे
धर्म ॥ नविपामेपृछादिकविणतेप्रवचनमर्म ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे एकाकीविहारकरे तेने स्त्रीनो तथा रिपुके०शत्रुनो अने श्वानके०कुतरानो उपघातथाय तथा भिक्षा पण दोषसहित लीयेतो तेनेकोणनिषेधकरे माटे भिक्षानी शुद्धि पण नरहे तथा महाव्रतनो पण अनुक्रमें घातथाय गाथा ॥ इच्छपसुसाणसावय ॥ इछिभिरकाइदोसउझ्लविउं ॥ वयगाइधम्ममाइ ॥ तम्मारम्मोनएगागी ॥१॥ इतिपिंडनिर्युक्तौ तथा एगाणियस्सदोसा ॥ इछिसाणेतहेवपडिणीएय ॥ भिरकविसोहिमहव्वय ॥ तम्हासविइज्जाएगमणं ॥२॥ इतिधर्मरत्नवृत्तौ जेएकाकी विहारकरे तेस्वछंदपणेविचरे पोतानेमते ऊपज्युं ते खरुं पण गुरुआज्ञानीअपेक्षा नरहे तेमाटेजे स्वमति कल्पनावंत ते धर्म नपामे यतः इक्कस्सकउंधम्मो॥ सछंदमइगईपयारस्स ॥ इत्युपदेशमालायां तथा जे एकाकीहोयते पृछाके०वांचनापृछनादिकतेपण गुरुविनानपामे अने तेविना प्रवचनके० सिद्धांत तेनो मर्म जे रहस्यते केमपामे ॥ यतः ॥ कत्तोसूत्तव्वागम ॥ पडिपुछणचोयणावइक्कस्स ॥ विणउवेयावच्चं ॥ आराहणावमरणंते ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ७ ॥

सुमतिगुपतिपणनधरेएकाकीनिःशंक ॥ भावपराव
र्त्तेंआलंबनधरेसपंक ॥ जुदाजुदाथातांथविरकल्प
नोभेद ॥ भोलाएमनलोकनायाएधर्मउछेद ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ सुमतिके०ईर्यासमितिप्रमुखपांचसमिति तथामनादित्रणगुप्ति तेपण नधरेके०

नपामीशके केमके जेएकाकीविहार करनारहोयतेनि शंकहोय कोइनीशरमनराखे एट लेश्रकार्य करवानुचित्तथायतो कोइनीशंका नधरे सुखेश्रकार्यकरे गाथा ॥ पिल्लिज्जेस णमिक्को ॥ पइन्नपमयाजणाउनिच्चभय ॥ काउंमणोविश्रकज्ज ॥ नतरइकाऊणबहुमज्झे ॥ इत्युपदेशमालायां तथा चित्तनाश्रजिप्रायतेजावकहीये तेजाबनुजे परावर्त्तके॰पलटावु तेणेकरीजेवापोतानाश्रजिप्रायथाय तेवुकांइक आलंबनपामीने तत्काल तेश्रालबन ध रेके॰श्रंगीकारकरे तेश्रालबन केवुहोयतेकहेछे सपके॰मेलुहोय एटलेएजावजे चित्त नाश्रध्यवसायतो क्षणेक्षणेपलटायछे तेचित्तना श्रजिप्राय कोइक श्रवसरें हीणाथाय श्रने निमित्तपणतेवुंज मले तेवारें पोतेपणतेजोजथाय यत एगयिसेणबहुया ॥ सुहा यश्रसुहायजीवपरिणामा ॥ इक्कोयसुहपरिणउ॥चइज्जश्रालंबणलहु ॥ १ ॥ श्रालंबनहिंदु पामीने चइज्जके॰सयमनेछांडे इत्युपदेशमालाया वली एकजणेएकलो विहारकीधो एटले बीजाने पणएकला विचरवानुमनथाय तेमज त्रीजो तथा चोथो इत्यादिक जूदा जूदाथाता एटलेश्रवस्था नरहे तथा थिविरकल्पनोजेदथाय एटले श्रापमतें कोइक क्रिया एकरीतेकरे कोइकबीजीरीतेकरे एमजिन्नजिन्नथाय तेथीलोकनामन लोभाय जे श्रमुकसाधुकरेछेतेखरुछे के श्रमुकसाधुकरेछेतेखरुछे इत्यादिकविकल्पलोकने उपजेतेथी धर्मनो उच्छेदथाय कोइकपरप्रतित रहेनही तेवारें लोकमूलगोधर्ममूकीश्रापे गाथा ॥ सवजिणपडिकुठ्ठ ॥ श्रणवत्थायेरकप्पजेउय ॥ इत्युपदेशमालाया ॥ ८ ॥

टोलेपणजोजोलेश्रंधप्रवाहनिपात ॥ श्राणाविणनविस
घछेश्रस्थितणोसघात ॥ तोगीतारथजध्धरेजेमहरीजल
थीवेद ॥ श्रगीतारथनविजाणेतेसविविधिनोजेद ॥ ए ॥

श्रर्थ ॥ वली टोले पण जोजोलेंके॰कदाचित टोलुहोय नेजोजोलुहोय तेमा कोइ गीतार्थनहोय तो तेटोलामा वसवुतेपण श्रधप्रवाहनिपातके॰श्राधलानीज श्रेणीमापड्यु थयु एमजाणवु कारणके श्राणाविनासघनकहीये पण श्रस्थितणो सघातके॰हा डकानो समूहजाणवो यत एगोसाहुएगोय ॥ साहुणीसावउवसट्टीवा ॥ श्राणाजुत्तो सघो ॥ सेसोपुणश्रठिसघाउ ॥१॥ एमसबोधसित्तरीमाकह्युछे ते माटेजेगीतार्थहोय ते जससारसमुद्रमाथी जव्यजीवने उद्धरेके॰उद्धारकरे जेम हरीजलथीवेदके॰जेरीते श्री कृष्णेसमुद्रमाथी वेदउद्धर्या एहवाते तेनी कथाकहेछे शखनामे दैत्यउपज्यो ते ब्रह्मा पासे वेदजणावेछे एवामा ब्रह्माने बगासुश्राव्यु ते बगासु ठमहीनेपुरुथयु त्यारें ब्रह्मानु मुखमोकलुदेखी शखदैत्यें विचार्यु जे वेदजणता क्यारे पारपामीशु माटे ब्रह्माना पेटमाप्रवेशकरी वेदलेइजाउ एमविचारी पेटमापेसीने वेद लेइगयो नेसमुद्रमा

पातालमां जइपेठो पठी श्रीकृष्णप्रमुखें विचार्युं जे ब्रह्मा तो भूतसरिखा केम देखायछे एम विचार करतां श्रीकृष्णेजाण्युं जे शंखदैत्य चारेवेद लइगयोछे हवेहुं लेइआवुं एम विचारकरी मत्स्यावतारधरी शंखासुरना भवनमांगयो त्यांबालकनुंरूपधरी तेनीस्त्रीपासे बेठो तेस्त्रीयेंजाण्युंजे आपणे मनोहर बालक पाम्या पठीतेनेरमाडवाबेठी एटलामां शंखासुरनापेटमां चारेवेद वातोकरवा लाग्याजे आपणीवाहारकरवा ठाकोरजीआव्याछे तेवात सांभली शंखासुरे जाण्युंजे अनर्थथयो पठीस्त्रीने कह्युंजे बालकमूकीद्यो पणस्त्रीयेंनमूक्युं त्यारेंबालकने मारवादोड्यो तेथीस्त्रीयेंबालकनेमूकीदीधुं पठीतेबालकें तेदैत्य सायेयुद्धकरीमत्स्यरूपेंथइ दैत्यने मारी तेनापेटमांथी चारेवेद लइ श्रीकृष्णपाणीमांथी वहारआव्या तेमाटे प्रथम मत्स्यावतारलीधो एअधिकार शिवमार्गेनाशासने दशावतारग्रंथमध्येकह्युंछे इहांदृष्टांते लख्युंछे वलीजे अगीतार्थ होयते उत्सर्ग अपवादादिक सर्व विधिउंना भेदनजाणे माटे अगीतार्थनेएकलो विहारनहोय ॥ इतिभावः ॥ ए ॥

कारणथीएकाकीपणुंपणभाष्युंतास ॥ विषमकालमांतो
पणरुमोभेलोवास ॥ पंचकल्पभाष्येंभण्युंआतमरक्
णएम ॥ शालिएरंमतणेएमभांगेवहिएखेम ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वली कोइ कहेशेजे श्रीउत्तराध्ययनमध्ये एकाकीपणानी हा केम कही यथा इक्कोविपावाइविवज्जयंतो ॥ विहरिज्जाकामेसुअसज्जमाणो ॥ इतिवचनात् ॥ तेने उत्तर जेगीतार्थहोय तासके० तेने कोइक कारणथी एकाकीपणुं पण भाष्युंके० कह्युंछे यथा तिहांज काव्य नवालभिज्जानिउणंसहायं ॥ गुणाहियंवागुण उंसमंवा ॥ इतिवचनात् तोपणविषमकालमांके० आपांचमाआरामां हुंडाअवसर्प्पिणी कालमां रुमोभेलोवासके० भेलावसवुंतेजरुडुं पणएकाकी वसवुं रुडुं नहीं एमपंचकल्प भाष्यनेविषेकह्युंछे आतमरक्षणएमके० जेसंयमरूपआत्मा तेनी रक्षातेएमज थाय अथवा आत्मानेशरीर अभेदछेमाटे आतमके०शरीरनी रक्षापण एमके०एमजभेलावसतांथकां होय इहां शालितथाएरंडनीचोभंगीछे १ शालिनोवृक्षअनेशालिनीवाडी २ शालिनो वृक्षअनेएरंडनीवाडी ३ एरंडनोवृक्षअनेशालिनीवाडी ४ एरंडनोवृक्षअने एरंडनीवाडी एचोभंगीमांथी शालितथाएरंडना त्रणभांगे वसतांतो खेमके०कल्याणछे इतिअक्षरार्थ ॥ भावार्थतोएछेजे शालि सरिखागीतार्थ एटले आचार्य अने एरंडसरिखा मूर्ख तेनी चोभंगीदेखाडेछे १ गीतार्थआचार्य अने जे गीतार्थनो परिवारते वाडी पणगीतार्थनी २ गीतार्थआचार्य अने मूर्खपरिवारनीवाडी३ मूर्खआचार्यअने गीतार्थनापरिवारनीवाडी एत्रणभांगालगेकोइरीते आज्ञाछे पणमूर्खआचार्य अनेमूर्खपरिवारएभांगोनो सर्वथाज

निषेधछे यत जवयपचकुशीला ॥ गणीवायगयविरपवत्तनिग्गथा ॥ तेणपरडसमाणं । चउठभगीएनायव्वो ॥ १ ॥ इति ॥ १० ॥

एकाकीपासत्थोसछंदोगतयोग ॥ गणवासीउसन्नो
बहुदूषणसंयोग ॥ गछवासीअणुजंगीगुरुसेवीवलि
होय ॥ अनियतवासीआउतोबहुगुणएमजोय ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ १ एकाकी केवलधर्मवधुररहित ते पासठो २ ज्ञानादिकपार्श्ववर्त्तिस्वछंदो गुरुआज्ञारिकल एटलामाटे गतयोगकहिये ॥ गणवासीके०स्थानकवासी तदेकवि हार नित्यवासीत्यर्थ ५ अवसन्न तेआवश्यकादिकें शिथिलमनपरिणामी तेउसन्नो पांचपद ते बहुदूषणसयोगीहोय ते क्यारे कोइकने एकपद क्यारे बेपद क्यारे त्र पद क्यारे चारपद अथवा पाचपदना सयोगीथाय जेमएकपदस्थानक वधे तेमदो षवृद्धिपण जाणवी एव २६ भेदथाय इत्यादिकअनेकप्रकारेदोषवृद्धिथाय यत एगा पासठो ॥ सछदो गणवासीयउसन्नो ॥ दुगमाइसयोगा ॥ जह बहुआतह्गुरुतु ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालाया एकाकिकादिसंयोगकरतां २६ भेदथाय तेमांद्विकसंयोगी । तथात्रिकसयोगी १० चतु संयोगी ५ पचसयोगी १ एव २६ भांगादोषवृद्धिनाजाणव तेमज २६ गुणवृद्धिना जाणवा ते देखाडेछे १ गछगत २ अणुयोगी ३ गुरुसेवी ४ अ नियतवासी ५ आयुक्त एहनापणएमज वत्रीसभेद गुणवृद्धिनाथाय जेमजेमगुणव तेमतेमविशेष आराधकथाय अनेदोषवृद्धियें विराधकपणुवधे तथागुणवृद्धियें आरा धपणुवधे तेमा दोषवृद्धिना २६ भागालखियेंछेयें

द्विकसयोगी १० भागा १ एकाकी–पासत्थो २ एकाकी–सछदो ३ एकाकी–गण वासी ४ एकाकी–उसन्नो ५ पासत्थो–सछदो ६ पासत्थो–गणवासी ७ पासत्थो–उ सन्नो ८ सछदो–गणवासी ९ सछदो–उसन्नो १० गणवासी–उसन्नो

त्रिकसंयोगीभागा १० लखेछे १ एकाकी–पासत्थो–सछदो २ एकाकी–पासत्थो– गणवासी ३ एकाकी–पासत्थो–उसन्नो ४ एकाकी–सछदो–गणवासी ५ एकाकी– सछदो–उसन्नो ६ एकाकी–गणवासी–उसन्नो ७ पासत्थो–सछदो–गणवासी ८ पा सत्थो–सछदो–उसन्नो ९ पासत्थो–गणवासी–उसन्नो १० सछदो–गणवासी–उस

चतुःसंयोगीभागा ५ लखेछे १ एकाकी–पासत्थो–सछदो–गणवासी २ एकाकी– पासत्थो–सछदो–उसन्नो ३ एकाकी–पासत्थो–गणवासी–उसन्नो ४ एकाकी–सछदो– गणवासी–उसन्नो ५ पासत्थो–सछदो–गणवासी–उसन्नो

पचसंयोगी १ भागोथयो एव २६ थाय ते द्विकसयोगीथी त्रिकसयोगीदूषण

चारी तेथीचतुःसंयोगीरूपणेचारी चतुःसंयोगीथीपंचसंयोगीरूपणेचारी इवेदोपनेव्यतिरेके गुणवृद्धिपणोदेखाडेछे १ गच्छवासीके०गच्छमांवसे २ अणुउंगीके०अर्थधारे ३ गुरुसेवीके०गुरुआदिकनीसेवाकरे ४ अनियतवासीके०उग्रविहारी ५ आयुक्तते आउत्तोके० उपयोगीहोय एपांचपदमां जेमजेमएकेकापदनीवृद्धिथाय तेमतेम वहुगुणहोय अने विशेषआराधकथाय यतः १ गच्छगर्उ२ अणुउंगी ३ गुरुसेवी ४ अनियतवासी ५ आउत्तो॥ संजोएणपयाणं ॥ संयमआराहगाजणिया ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ११ ॥

दोषहाणीगुणवृद्धिजयणाजापेंसूरि ॥ तेशुजपरिवारेंहुये
विघनटलेसविदूरि ॥ देवफलेजोआंगणेतुऊकरुणासुर
वेलि ॥ शुजपरिवारेंलहियेंतोसुखजसरंगरेलि ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ एम दोपनी हाणीथाय तथागुणनीवृद्धिथाय अनेजयणाके०जतनाथाय एटले वहुखाज अल्पदोपेंप्रवृत्तिथाय तेएहवागुण क्यारेआवे तेहनोउत्तर जापेसूरिके०आचार्यजापेछे के ते शुजपरिवारेंहुयेके०एवागुणतोपरिवारशुजहोय तिवारे आवे तया विघ्नसर्वदूरटले तेमाटेहेदेव तुऊके०तमारीकरुणारूपजे सुरवेलीके०कल्पवृक्षनीवेलनी ते आंगणे फलेके०माराआत्मरूपजेआंगणुं तिहांजोसफलीथाय तोतेशुजपरिवारपामियें एटलाजमाटे उपदेशमालाना कर्तायेंकह्युंछे यतः सीहगुरुसुसिस्साणं ॥ जदंगुरुवयणसद्दहंताणं॥वयरोकिरदाहीवा ॥ यणत्तिनविकोवियंवयणं ॥१॥ ते माटेशुजपरिवारपामवोदुष्करछे तेशुजपरिवारेंकरी सुखयशनी रंगरेलपामियें एटले सेहेजानंदस्वरूपनारंगनीरेल तेहनोप्रवाहपामीयें एसातमीढालमां कह्युंजेहेदेव तमारीकरुणारूप सुरवेलीजोफलेतो सुखयश पामियें तेमाटे हवे आठमीढालमां करुणा विशेप जे दया तेहनुं स्वरूप कहेछे ॥१२॥

॥ ढालआठमी ॥

॥ प्रजुचित्तधरीनेअवधारोमुऊवात ॥ एदेशी ॥

कोइकहेसिद्धांतमांजी ॥ धर्मअहिंसासार ॥ आदरियेंतेएकलीजी ॥
त्यजीयेंवहुउपचार ॥ मनमोहनजिनजी ॥ तुजवयणेमुऊरंग ॥ १ ॥

अर्थ॥वलीकोइकएमकहेछेके सिद्धांतसूत्रनेविपेएमकह्युंछे जे धर्मअहिंसाके०दयाधर्म तेजसारके०प्रधानछे नत्थिअहिंसासमोधम्मोऽतिवचनात् माटेएकलीअहिंसाजआदरीयें वीजा वहुके०अनेक उपचारके०उपायने त्यजीयेंके०मूकीदइयें एमकहेछे माटे हे मनमोहनजिनजी अथवामननेमोहनाउपजावणहार एवाजेजिनेश्वरतेनोसंवोधनकरियें जे हेमनमोहनजिनजी तुऊवयणेके०तमारावचननेविपेमुऊनेरंगछेरीजछे ॥ १ ॥

अर्थ ॥ वळीजेमपूर्वेमुनिनेहिंसा स्वरूपथी हती तेअनुबंधेअहिंसाकही तेमज पूजा तथाअपवादपदादिकें वर्त्ततामुनि वळीशीलव्रतादिक जेमुनिने अनुत्तरके० कृष्टपुण्यआपीने एटलेएजिनपूजादिकरणी यद्यपिकिंचितमात्र स्वरूपथीसावद्यछे शीलव्रतादिकते स्वरूपथीनिरवद्यछे पणएवेभेदवाळाने अनुबंधे अहिंसानुज आपे तेमाटे एमकह्युंजे अनुत्तरपुण्यआपीने दिएके० आपे शिवपदके० मोक्षपद घहुसेमके० घणुंकेमछेजिहां एटलेपरंपराये सर्वसिद्धनुं देनारछे ॥ १४ ॥

एहभेदविणएकअहिंसा ॥ नविहोवे थिरथंभ ॥ यावत
योगक्रियाछेतावत्त ॥ बोल्योछेआरंभ ॥ मन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एप्रकारे १ हेतु २ स्वरूप ३ अनुबंध एत्रणभेदेहिंसा तथाएत्रणभेदे अहिंसा ते जाण्याविना एकलीजअहिंसासामान्यप्रकारें माने ते नविहोवेके० थिरथंभके० थिरजावे एटलेएकलीअहिंसाछेरेनही शामाटेके यावतयोगक्रियाछेके० ज्यांसुधी मन वचन कायानायोगनीक्रियातेचलनक्रियाछे तावतके० तिहा लगे बोल्योछेके० होछे आरंभके० कर्मबंध एटलेपोतपोताना गुणठाणानीमर्यादा माफक तेरमा गुणठाणासुधी कर्मबंधछे अन्यथाइरियापथिकाबंध वेसमयनी स्थितिनो छे माटे एकली अहिंसाकहेवीतेकाम न आवे पणतेनाभेदसमजे तो सर्वछेकाणेजोडे ॥ १५ ॥

लागेपणलगवेनहिंहिंसा ॥ मुनिएमायावाणि ॥ शुभकि
रियालागीजेआवे ॥ तेमातोनहीहाणि ॥ मन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ इहां कोइक एम कहेछे जे मुनिके० मुनिराजने विहारादिक करता लागेछे पण लगावेनहीएटले हाथेकरी जाणीने हिंसाकरेनही एमजेकहेछे ते मायाणिके० कपटनुं वचनछे एटलेमारीमातावंध्या तेनीपरे मायागाढीनातनोछे शुभक्रिया जे विहारपडिलेहण नदीउतरवी इत्यादिक करता जे हिंसा लागी छे तेपोतानीमेळेज लागेछे एमकेम कहेवाय केमके जे नदीउतरवी विहारकरवो अजाण्योथतो नथी तेनो पोतेजाणेजछे जे नदीप्रमुख उतरता हिंसाथशे पण ते करेछे प्रभुनी आज्ञाछे तेमाटे जेहिंसा शुभक्रियाकरता लागीआवेछे तेमा हाणि दोष लागतो नथी ॥ १५ ॥

हिंसामात्रविनाजोमुनिने ॥ होयअहिंसकभाव ॥ सू
क्ष्मएकेंद्रिनेंहोवे ॥ तोतेशुद्धस्वभाव ॥ मन० ॥१७॥

अर्थ ॥ हिंसामात्रविनाके० एक हिंसाज देखीति न करी एटले देखीतो

जीव न मार्यो एटला मात्रथीज जो मुनिनेके० साधुने होयअहिंसकनावके० अहिं-सकपणुं थायतो सूक्ष्मएकेंद्रिनेके० लोकव्यापी पांचथावरनासूक्ष्मएकेंद्रिजीवोनेपण शुरूस्वजाव होवो जोइयें केमके सूक्ष्मएकेंद्रिय जीवतेहिंसानाममात्र पण नथीकरता माटे तेतमारे लेखे अहिंसक थया अने जे अहिंसकनावेंपरिणम्यो तेतो शुरूस्वजाव नि-रावर्णथाय पण तेएकेंद्रितो कोइए निरावर्णथता देखातानथी तेमाटे मात्रहिंसानेअ एकरवेज अहिंसकनथाय जमालीनीपरें अविरूायापिहियोहिंसां ॥ हिंसाफलनाजनं-नवत्येकइतिअहिंसाष्टकवचनात् ॥ १७ ॥

नावेंजेहअहिंसामाने ॥ तेसविजोमेठाम ॥ उत्सर्गेअ
पवादेंवाणी ॥ जिननीजाणेजाम ॥ मन० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे जेप्राणी ड्व्यनावप्रमुख नेदेंकरी अनेक प्रकारनी अहिंसाछे ते मांपण नावेंके०परिणामें जेप्राणी अहिंसामाने तेके०तेप्राणी सविजोडेठामके०सर्व जिनवाणी पोतपोताने ठेकाणेजोडे तेप्राणीथी आगमवचन एकपण डुपायनही ते नावथी अहिंसामानीने सर्वेआलावाठेकाणे क्यारे जोडे ज्यारे उत्सर्गेअपवादेंवा णीके०उत्सर्गवचन तथा अपवादवचन एवेंहुयेंकरीने जिनेश्वरनी वाणीजाणे एटले एनावजे उत्सर्गमार्गें अहिंसा मुनिराजनें कही आचारांगप्रमुखनेविषे तथासाध्वी प्रमुख पाणीमां वहेती जाणेतो काढे तथा एकमहिना मध्ये बेनदीउतरवी इत्यादिक अपवाद आज्ञा पण प्रनुयेंकरीठे तोए सर्वउत्सर्ग अपवाद नावजाणे तेसर्व वचन ठामेजोडे पण मूर्ख शुंजाणे ॥ १८ ॥

कोइकहेउत्सर्गेआणा ॥ ठांदोठेअपवाद ॥ तेमिथ्या
अणपामेंअर्थें ॥ साधारणविधिवाद ॥ मन० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ इहां कोइक एमकहेठेजे उत्सर्गमार्गेंचालवुं तेज आज्ञाठे पण अपवाद ते ठांदोठे एटलेपोतानीमतिकल्पनाठे पणजिनाज्ञा नथी एमकहेठे ते मिथ्याके०खो-टुंठे अणपामेंअर्थेंके०अर्थजाण्याविना एमकहेठे तेनुं कारण के जे विधिवाद होयते साधारणजहोय एटले एमजाणवुंजे उत्सर्ग ने अपवाद एबंने विधिवादठे ते सर्वजी-वने साधारणठे पण एकजीवआश्रयीनथीकह्युं, तेमाटे अपवाद पण आज्ञाठे पणठांदो एटले स्वमतिकल्पनानथी ॥ १९ ॥

मुख्यपणेजेमनावेआणा ॥ तेमतसकारणतेह ॥ कार्यइ
ठतोकारणइठे ॥ एठेशुनमतिरेह ॥ मन० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ वली एजकहेठेके जंबूद्वीपपन्नतिनीवृत्तिमध्ये एमकह्युंठे के जेअपवाद तेका-

रण अने उत्सर्ग तेकार्य तेमाटे कहेछेजे मुख्यपणे जेमनावेश्राणाके०उत्सर्गे श्राज्ञाछे एटले नावते कार्यकहीयें अने जे कार्य तेउत्सर्गकहीये तेमाटे जेम उत्सर्गे आज्ञाछे ते मतसकारणतेहके०तेमजते उत्सर्गनुजेकारण तेअपवादछे तेनीपणआज्ञाछे केमके कार्यने इछतोयको कारणपण इछे अनेजो कारणछेरेतो कार्यपणछेरें जोकारणनहीतो कार्य किहांथीआवे एरीतेमाने तेजशुजमतिनी रेखा जाणवी ॥ अथवाएगाथानोअर्थबीजी रीतेकरीयेंछेयें जे ढ्हाढुढकलोकएमकहेछे ... पण नामतथास्थापनाअनेद्रव्य ए त्रणनिक्षेपावंदनायोग्यनथी एमकहेछे तेनेशीखामण देछे जेमुख्यपणे जेमनावेश्राणाके०नाव निक्षेपे आज्ञाछे एटले नाव निक्षेपो वांदवायोग्य छे,तेम तस कारणके०तेमज ते नावना कारणजेनामादित्रण निक्षेपातेपण वांदवायोग्य छे केमके जेकार्यनेइछशे तेकारणने इछशे अनेकारण मान्याविना कार्यनेपामशे नही एज शुजमतिनी रेखाछे एटले जे नाव निक्षेपोमानशेतेने नामस्थापनादिकपण मानवाजोइयें जोनामादिकनहीमाने तोनावनिक्षेपोपण नहीमनायो एमथयु ॥ २० ॥

कल्पेंवचनकह्युंअपवादे ॥ तेआणानुंमूल ॥ मिश्रप
क्षतोमुनिनेनघटे ॥ तेहनहीअनुकूल ॥ मन० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ पचकल्पमाहे एहवुवचनकह्युछे के अपवादमार्गते जिनाज्ञानुमूलछे पन अववाईंयवहारो ॥ आणामूलजइजवेतिय ॥ इतिवचनात् माटे मुनिनेतो ते मिश्र पक्षघटेनही एडोनथी तेअनुकूलनथी केमके गुणस्थानादिक क्रियायेंमिश्रपक्षतानथी तथी त हिजथागलीगाथामादेखाडेछे ॥ २१ ॥

अपुनर्बंधथी मांडिनें ॥ जावचरमगुणठाण ॥ नावअ
पेक्षायेंजिनआणा ॥ मारगनापेजाण ॥ मन० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ फरीबंधनथी करशे तेने अपुनर्वंधककहीयेते अपुनर्वंधकजेचोथुगुणठाणु तिहांथी मांडिने जावचरमके०छेल्लाअयोगीकेवली चउदमा गुणठाणालगें इहांअपुनर्बंधशब्दें चोथुगुणठाणु जाणीयेंछेयें जेकारणे अंत कोडाकोडनी स्थितिकरीने कर्म फिरी मिथ्यात्वगुणठाणेआवेतोपण सितेरकोडाकोडीनीस्थितिफरी नबांधे तेमाटे अपुनर्बंधककहीयें तथा उपाध्यायजीयेंपण सवासोगाथाना स्तवनमध्ये एहीगाथा कहे छे, जेनेअहींरेनिश्चयथिरपणु ॥ तेतेजाणोरेधर्म ॥ सम्यक्दृष्टीरेगुणठाणायकी ॥ जाव लहेशिवशर्म ॥१॥ एगाथाने अनुमानेपण एमजजणायछे पछीतो अपुनर्बंधकनो अर्थ बहुश्रुतकहे तेप्रमाण तथाउपाध्यायजीयेंस्पष्टतअध्यात्मसारमथमापण कह्युछे जे अपु

र्वधकायावत् गुणस्थानंचतुर्दशं ॥ इत्यादिथी स्पष्टजणायछे केचोथागुणठाणाथी चउद-मालगें जिनआणाके०जिनेश्वरनी आज्ञाछे अने जाणपुरुपते एनेज मार्ग कहेछे तेस-र्वेज्ञाव ज्ञावनीअपेक्षायें जाणवा अन्यथाचोथागुणठाणाप्रमुखनेविषे तोमहाविज्ञाव-विछेछे पण ज्ञावनीअपेक्षायें जिनआणाछे इतिज्ञावः ॥ २२ ॥

एकअहिंसामांजेआणा ॥ जाषेपूरवसूरि ॥ तेएकांतम
तिनविग्रहियें ॥ तिहांनयविधिछेजूरि ॥ मन० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ तथाशास्त्रमां एकली अहिंसामां आज्ञाछे जेम सर्वेजीवानहंतव्वाइतिआ-चारांगादिकवचनथी एमपूर्वाचार्य यद्यपिकहेछे तथापि एपाठ एकांतमतिके०एकांतपक्षे विग्रहियेंके०अंगीकारनकरीयें तेमजतेअहिंसापण स्याद्वादमतें अंगीकार करीयें जेम मुनिराज नवकोटीपच्चरकाण करीने नदीउतरेछे अनेपच्चरकाण करती वखते नदीमो-कलीतो राखीनथी तोते पच्चरकाण स्याद्वादेछेपणएकांते नथी एम जाणवुं तेमाटे इहां नयविधिछेजूरिके०तेअहिंसानेविषे नयनोविधिघणोछे तेतो जेनयनीवात समजे तेजाणे एटलेअहिंसाते अनेकप्रकारनीछे ॥ २३ ॥

आतमज्ञावहिंसनथीहिंसा ॥ सघलाएपापस्थान ॥ तेहथ
कीविपरीतअहिंसा ॥ तासविरहनुंध्यान ॥ मन० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ वलीतेजवात देखाडेछे आतमज्ञावहिंसनथीके०जेकरणीकरतां पोतानोआ-तमज्ञाव हणाणो तो तेमां हिंसाके०हिंसालागे तथाआत्मज्ञावहणातांथकांअढारे पा-पस्थानकलागे अने तेहथकीके०ते आत्मज्ञावहणायाथकी विपरीतके०आत्मज्ञावजिहां नहणाय ते अहिंसाके०ज्याकहीयें तासके०तेपापस्थानकना विरहनुंध्यानएवीएज्ञाव-अहिंसाछे एपदअहिंसानुंविशेपणछे ॥ २४ ॥

तसउपायजेजेआगममां ॥ बहुविधछेव्यवहार ॥ तेनिःशे
पअहिंसाकहियें ॥ कारणफलउपचार ॥ मन० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ तसके०तेआत्मज्ञाव नहणवाना उपायके०प्रकार जे जे आगममां के०सि-द्धांतमां कह्याछे एवाव्यवहारते बहुविधछेके०अनेकप्रकारनाछे दान देवपूजा पडिक्कमणा पोसहइत्यादिकअनेकछे अने जोऊपरनी मूलगाथानोपाठ विहुविधहोयतो एमअर्थक-रीये जे उत्सर्ग तथा अपवाद एवंप्रकाररूप व्यवहारछे तेनिःशेप के०समस्त जेटला आत्मानहणावचाना प्रकारछेतेअहिंसाकहियें एटलेएनावजे अपवादपणआरमा नह-णाववानुंकारणछे तथादान देवपूजाप्रमुखपण आत्मानहणाववानाकारणछे तेने अहिं-

साकहीयें एमस्तवनकरनारे छेराज्यु तेवारे अपवादनें ठांदोछे अनेउत्सर्ग तेआज्ञाते एही तेपूर्वें प्रतिवादियें कह्युंहतुं तेदूरकह्युइतिजाव ॥ इहांकोइकहेशेजे एअपवादप्रमुख कथ्यात्माने नहणवानाकारणने अहिंसा केवीरीते कहीयें तेने कहेछे के कारणनेविषे उपचारके०कार्यनोउपचार करीयें छेयें यथातन्दुलान् वर्षतिपर्जन्यइतिन्यायात् ।

जीवअजीवविषयछेहिंसा ॥ नेगमनयमत्तजुत्त ॥ सग्रह
व्यवहारेंषटकाये ॥ प्रतिजीवेंरुजूसूत्त ॥ मन० ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ हवे पूर्वें कह्युहतुजे अहिंसामा नयनाप्रकार घणाछे तेदेखाडेछे तेमा प्रथम नेगमनयआश्रीजीवनेविषे तथा अजीवनेविषे हिंसाकहेछे ते नेगमनय जेमलोकमा अमुके जीव हण्यो तेमज अमुके अजीवघटनेहण्यो इत्यादिकहिंसाशब्द सघले प्रवर्त्तेछे तथा सग्रहनय छकायनेविषे हिंसामाने पणजे अजीवनीहिंसा तेने हिंसामानतानथी नावेजेदछे एकदेशग्राहीसग्रह बीजोसर्वग्राहीसग्रह तेमासर्वग्राहीसंग्रहतो नेगमनयमां भल्यो माटे देशग्राहीसग्रह इहांलीधोछे हिंसाशब्द अजीवमा प्रवर्त्ततो नथी तेमाटे देशग्राहीसंग्रह तथा व्यवहारनय तो जेरीतें लोकमाने तेरीतें एवेनयमाने माटे लोकपण छकायने हिंसामानेछे तेमएवेनयवादी पणकहेछे तथा ऋजुसूत्र नयवालो प्रतिजीवेंके० जीवजीवप्रतें भिन्नभिन्न हिंसामानेछे अध्येरलुछे तेयागलएज गाथामा कहेछे तथाच तद्देश तत्रनैगमस्य सा तथाप्रकारोलोकेदृष्टा यदुतजीवोनेनर्हिंसितोविनाशितस्तथा घटोनेनर्हिंसितोविनाशित तत्रथसर्वत्रहिंसाशब्दनुवर्तनात् जीवेष्वजीवेषुचाहिंसानेगमस्यअहिंसाप्येवमेवेति सग्रहव्यवहारयो षट्सुजीवनिकायेषु हिंसासंग्रहश्चात्रदेशग्राहीद्रष्टव्य सामान्यरूपश्चनैगमान्तर्गत व्यवहारश्चस्थूलविशेषग्राही लोकव्यवहारणशीलश्चायतथा लोकेप्युक्तनषट्स्वेवजीवनिकायेषुहिंसासग्रहश्चात्रदेशग्राहीछतीतिऋजुसूत्रश्च प्रत्येकप्रत्येक जीवेजीवेहिंसा व्यतिरिक्तामिच्छतीति हवेशब्दार्थलखीयेंछेयेंजीव नेगमनयने मतेहिंसाकहेवीएजुत्तके०युक्तछे अनेसग्रहतथा व्यवहारनयनेमते विषेज हिंसामानेछे तथाऋजुसूत्रनेमते जीवजीवप्रतेहिंसाजूदीजुदीमानवी ॥ २६ ॥

आतमरूपशब्दनयतिने ॥ मानेएमअहिंस ॥ उंचवृत्ति
जोइनेवहिये ॥ सुखजगखीलप्रसस ॥ मन० ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ आतमरूपके०आत्मातेजस्वरूपछे माटे हिंसाअयनाअहिंसाते

नेठे शब्दनयतिनेके०शब्दठेप्रधान जेने एवात्रणनय१शब्द२समभिरूढ ३ एवंभूत एत्रण नयमानेठे जेपोतानो आत्मा प्रमादीथयो त्यारे आत्मातेहिंसा अने तेजआत्मा जेवारे अप्रमादीथयो तेवारें आत्मा तेज अहिंसा यतः आयाचेवअहिंसा ॥ आयाहिंसतिनिछर्उएसो ॥ जोहोइअप्पमत्तो ॥ हिंसर्उअहिसर्उइयरो ॥१॥ इतिर्उघनिर्युक्तिवचनात् पाठलात्रणनयनिश्चयना घरनाठे माटे र्उघनिर्युक्तिनीवृत्तिनोपाठपणएमठे यथा ॥ शब्दसमभिरूढेवंभूताश्चनयाआत्मैवहिंसामिछंतीतिए जेमहिंसा सातनये फलावी तेमज अहिंसाके०अहिंसापण फलाविये अहिंसाप्येवमेवेतिर्उघनिर्युक्तिवृत्तिवचनात् ए हिंसाना तथाअहिंसानासातप्रकार ते र्उघनिर्युक्तिनीवृत्ति जोइने सुख जगनीलीलातथा रुडीप्रशंसाते लहियेंके०पामिये एटलेयथार्थ जाणवाथीएटलावानां पामियें ॥ २७ ॥

॥ ढालनवमी ॥

॥ चैत्रीपुनमअनुक्रमे ॥ एदेशी ॥

कोइकसूत्रजआदरे ॥ अर्थनमानेसार ॥ जिनजी ॥ आपमतिअ
वलुंकरे ॥ भूलातेढगमार ॥ जिनजी ॥ तुऊवयणेंमनराखीयें ॥१॥

अर्थ ॥ आठमीढालने अंतेसातनयेंकरी हिंसाफलावी तेनयेंकरी हिंसातो तेवारे समजाय जेवारे सूत्रनी टीका चूर्णितथाभाष्य अनेनिर्युक्ति मानीये तो समजायपण केवलसूत्रनो मूलपाठ वांचवाथी नसमजाय केमके जेसूत्रहोय तेसूचनामात्रहोय माटेजे अर्थनेनथीमानता तेने शिक्षादेवा सारु नवमीढालनेआठमीढालसायेंसंबंधकरी कहेठे जे कोइकके०जेटूंढक लुंपाक नामनदेवायोग्य माटेकोइक एवुं नामकह्युं ते सूत्रजआदरेके०केवलसूत्रजमानेठे इहां एकवारते वृत्त्यादिकनिषेधवाचकठे तथाअर्थके० टीकाप्रमुखतेनथीमानता जिनजीके०हेरागद्वेषनाजीतणहारहेवीतराग तेकेवाठे आपमतिके०स्वछंदेंचालणहारठे पणआगमानुयायी चालतानथी अवलुंकरेके०जेटलुंकार्य करेतेटलुं अवलुंकरेठे माटे तेमूर्खगमार भूलाजमेठे कारणके सूत्रतोगणधरनारच्या अने अर्थतो तीर्थंकरनोकह्यो ॥ यतः ॥ अछंभासइअरहा ॥ सुत्तंगंछंति गणहरानिउणं ॥ इतिवचनात् तेमाटे अर्थनी ना कहेतां तीर्थंकरनीआशातनाकरेठे माटे अवलुंकरेठे माटे हेप्रभुतमारेवचने मनराखीयें ॥ १ ॥

प्रतिमालोपेपापीआ ॥ योगअनेउपधान ॥ जि० ॥ गुरुनो
वासनसिरधरे ॥ मायाविअज्ञान ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वली तेलोक प्रतिमाने लोपेठे एटले प्रतिमाउथापेठे पणकेवाठे जेपापी-

निज्जुत्ति अनुगमेइत्यादिक तथाउद्देसे निद्देसे निग्गमे खेत्तकालपुरिमेय योगद्वारमांहे तेनाअर्थकेमकरशोइतिजाव. ॥ ६ ॥

सूत्रअरथपहेलोबीजो ॥ निज्जुत्तीयेमीस ॥ जि० ॥ निरवि
शेषत्रीजोवली ॥ इमजापेजगदीश ॥ जि० ॥ तुम० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेजत्रणप्रकारनु व्याख्यानदेखाडेछे प्रथम सूत्रनो शब्दार्थ शिष्यनेकहे जेम नमोके०नमस्कारथाउं अरिहंताणके०अरिहंत रागद्वेषरूपशत्रुहण्या माटे ते शब्दार्थअवळिरीते आवड्यो तेवारें बीजोके०बीजीवार अर्थकहे ते निर्युक्तिसहित अर्थ कहे हेशिष्य ते अरिहंतचारप्रकारना छे नाम, स्थापना, द्रव्य, अनेभाव भेदें यत नामजिणाजिणनामा ॥ ठवणजिणापुणजिणइंदपडिमाउ ॥ ० णाजिणजीवा ॥ भावजिणासमवसरणत्था ॥१॥ इत्यादिक एम बीजीवार अर्थआवड्यो पछी त्रीजीवार फरी एजपदनो अर्थ निरविशेषके०समस्तरीते कहे एटलेसर्वप्रसंग सं यीकहे नैगमादिकनयपण शक्तिहोय तोफलावे तेना साधनकहे उदाहरण जे अरिहं तने नमस्कारनु फलकहे इत्यादिक एटले एभावजे प्रथम अर्थमां टीकाचूर्णि अने बीजाअर्थमा निर्युक्ति तथात्रीजाअर्थमां भाष्यथाव्यु एम हेजगदीशतु भापेके०भग वतिनाशतक २५ माना त्रीजा उद्देशामां कहेछे सुत्तथोखलुपढमो॥बीउनिज्जुत्तिमीसि उभणीउ ॥ तइउयनिरविसेसो ॥ एसविहिहोइअणुओगो ॥ १ ॥ एगाथा नंदिसूत्र म्येपणछे तेमाटेअर्थप्रमाणकरेतो खेमथाय ॥ ७ ॥

छायानरचालेचले ॥ रहेथितितसजेम ॥ जि० ॥ सूत्रअ
रथचालेचले ॥ रहेथितितसतेम ॥ जि० ॥ तुम० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेमनरके०पुरुषनीछाया तेजेवारें पुरुष चाले तेवारे तेनो छायडो पण अने रहेके०पुरुषजोरहे तेवारे तसके०तेछायानीपण स्थितिके०रहेवु थाय जेम ए सूत्रअने अर्थमांपण एमज भाववु सूत्रनीचाले अर्थ चलेके०चाले रहे के०सूत्ररहे तेवारे तसके०ते अर्थनु पण थितिके०रहेवुथाय ॥ ८ ॥

अर्थकहेविधिवारणा ॥ उभयसूत्रजेमठाण ॥ जि० ॥ तेम
प्रमाणसामान्यथी ॥ नविप्रमाणअप्रमाण ॥ जि० ॥ तुम० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ वली अर्थके०टीकाप्रमुखहोय तेजसमजावे अनेविधिके०विधिवाद वारणाके०निषेधसूत्र तथा उभयसूत्रके०विधिसूत्र तथानिषेधसूत्र एवेहु सूत्रजेम केे०ठाणागसूत्रमध्येकह्याछे यथा॥नोकप्पइनिग्गंथाणवानिग्गंथिणवाइमाउं ॥ उद्दिठाउं

गणियाअ उचितजितार्उपंचमहणवार्उमहानदिर्उ अंतोमासस्स डुखुत्तोवा तिखुत्तोवाउ-त्तरिए संतरित्तए वा तं गंगाजऊणासरसइ एरावतिमही इति एरीते निषेधकरीने वली लगताज सूत्रमांआज्ञाकरी यथा पंचविहिंगाणेकप्पंतितंजयंसिवाडुन्निरकंशिवापवहे जं च णंकोइतिदउग्घंसिवाएज्जमाणंसिमहतावायणारित्तेहिंइति एवे सूत्रकह्यां एकविधिनुं एकनिषेधनुं एवेमांकयुंसूत्रप्रमाणकरियें अनेकयुंसूत्र अप्रमाणकरिये इहां एके अप्रमाण नथायइतिन्नावः हवे पठवामाना वेपदनो अर्थकहेछे तेमके० तेरीतेजेम ठाणांग मध्ये वेहुसूत्र देखाड्या तेम सामान्यप्रमाण जेसूत्रछे ते सूत्रथी नविप्रमाणअप्रमाणके० इहांसामान्यपदछे तेमाटेजाणियेंछेयें जेविशेषपद वाहारथीलावीयें तेवारेएम अर्थथाय जेविशेषप्रमाण तेटीकाप्रमुख तेनविअप्रमाणके०अप्रमाणनथी एटलेएन्नावजे प्रमाण वे प्रकारना एकसामान्यप्रमाण वीजुं विशेषप्रमाण तेमां सामान्यप्रमाण तेसूत्रकहीयें जेमां सामान्यपणे सूचनामात्रे कह्युं होय अने विशेषप्रमाणते अर्थटीकाप्रमुखनेकहीयें जेमां विस्तारीनेकह्युंछे एवेप्रमाणछे तेमां सामान्यप्रमाणखरुं अने विशेषप्रमाणखोटुं एम नकहेवाय सामान्यप्रमाणथी विशेषप्रमाण तेअप्रमाण केमथाय इतिन्नावः ॥ए॥

अंधपंगुजेमवेमले ॥ चालेइछितठाण ॥ जि० ॥ सूत्रअरथ
तेमजाणीयें ॥ कल्पन्नाप्यनीवाण ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेम अंध लोचनहीन अनेपंगुके०चरणहीन एवेमलीने चालेइछितठाणके० वांछितस्थानकनेविषे चाले तेमसूत्र तथाअर्थजे टीकाप्रमुख मलीने यथार्थ स्थानके अर्थ जोडीशकीयें एमकल्पन्नाप्यनीवाणीछे ॥ १० ॥

विधिउद्यमन्नयवर्णना ॥ उत्सर्गहअपवाद ॥ जि० ॥ तडुन्नय
अर्थेजाणीयें ॥ सूत्रन्नेदअविवाद ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ वली १ विधिसूत्र २ उद्यमसूत्र ३ न्नयसूत्र ४ वर्णवसूत्र ५ उत्सर्गसूत्र ६ अपवादसूत्र ७ तडुन्नयसूत्र एसर्वसूत्रनान्नेदनीखवर अर्थथीजणाय नहीतो शीखवर पमेजे आसूत्रते शीअपेक्षानुंछे यथा ॥ संपत्तेन्निरकुकालंमि ॥ असंन्नंतोअ मुछिउ॥इ-म्मेणकम्मजोगेणं ॥ न्नत्तंपाणंगवेसए ॥१॥ एदशवैकालिकनापांचमाअध्ययने कह्युं इ-त्यादिकविधिसूत्रकहीयें तथा डुमपत्तयपंकुयए ॥जहानिवऊइरायगणाणअच्चए ॥ एवं-मणुआणजीवियं ॥ समयगोयमामापमायए ॥ इत्युत्तराध्ययननेदशमाअध्ययनेकह्युं इ-त्यादिकउद्यमसूत्रकहीयें अने नरकनेविषे मांसरुधिरादिकवर्णवीकहेवा यथा ॥ उत्त राध्ययनेमृगापुत्रअध्ययनमां तथा सुयगमांगना नरकविन्नत्तिअध्ययनमां तेपरमार्थेमां-सादिक नथी पणन्नयसूत्रछे यतः नरएसुमंसरुहिराइ ॥ वजंपसिद्धिमित्तेणं ॥ न्नयहेउ-

निजुत्ति अनुगमेइत्यादिक तथाउद्देसे निद्देसे निग्गमे खेत्तकालपुरिसेय एगाथाअनु योगद्वारमाहे तेनाअर्थकेमकरशोइतिभाव ॥ ६ ॥

सूत्रअरथपहेलोबीजो ॥ निज्जुत्तीयेमीस ॥ जि० ॥ निरवि शेषत्रीजोवली ॥ इमभाषेजगदीश ॥ जि० ॥ तुम० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेजत्रणप्रकारनु व्याख्यानदेखाडेछे प्रथम सूत्रनो शब्दार्थ जेम नमोकें०नमस्कारथाओ अरिहंताणके०अरिहंत रागद्वेषरूपशत्रुहण्या माटे ते० त्यार्थअनत्रिरीते आवश्यो तेवारें बीजोकें०बीजीवार अर्थकहे ते निज्जुत्तियेमं निर्युक्तिसहित अर्थ कहे हेशिष्य ते अरिहंतचारप्रकारना छे नाम, स्थापना, द्रव्य अनेभाव जेवें यत नामजिणाजिणनामा ॥ ठवणजिणापुणजिणंदपडिमाउं ॥ - पाजिणजीवा ॥ भावजिणासमवसरणत्था ॥१॥ इत्यादिक एम बीजीवार अर्थआवश्यो पछी त्रीजीवार फरी एजपदनो अर्थ निरविशेषके०समस्तरीते कहे एटलेसगेप्रसंगे लं पंचहे नेगमादिकनयपण शक्तिहोय तोफलावे तेना साधनकहे उदाहरण जे अरिहं तने नमस्कारनु फलकहे इत्यादिक एटले एजावजे प्रथम अर्थमा टीकाचूर्णि अने बीजाअर्थमा निर्युक्ति तथात्रीजाअर्थमां भाष्यआव्यु एम हेजगदीशतु भाषेके०भग वतिनानतक २५ माना त्रीजा उद्देशामा कहेछे सुत्तथोखलुपढमो ॥ बीउंनिज्जुत्तिमीस उंभणीउं ॥ तइयंपनिरविसेसो ॥ एसविहिहोइअणुउंगो ॥ १ ॥ एगाथा नंदिसूत्र पणपछे तेमाटेअर्थप्रमाणकरतो सेमथाय ॥ ७ ॥

गयानरचालेचले ॥ रहेथितितसजेम ॥ जि० ॥ सूत्रअ रथचालेचले ॥ रहेथितितसतेम ॥ जि० ॥ तुम० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेमनरकें०पुरुषनीछाया तेजेवारें पुरुष चाले तेवारे तेनो छायडो पण अने रहेकें०पुरुषउभोरहे तेवारे तसकें०तेछायानीपण स्थितिके०रहेवु थाय जेम ए० सूत्रअने अर्थमापण एमज भाग्नु सूत्रनीचाले अर्थ चलेकें०चाले रहे केंं०सूत्ररहे तेवारें तसकें०ते अर्थनु पण थितिकें०रहेवुथाय ॥ ८ ॥

अर्थरहेविधिवारणा ॥ उभयसूत्रजेमठाण ॥ जि० ॥ तेम प्रमाणसामान्यथी ॥ नविप्रमाणअप्रमाण ॥ जि० ॥ तुम० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ वली अर्थकें०टीकाप्रमुखहोय तेजसमजावे अनेविधिके०विधिवाद वारणाकें०निषेधसूत्र तथा उभयसूत्रकें०विधिसूत्र तथानिषेधसूत्र एवेहु सूत्रजेमठाय केंं०जागमसूत्रमन्येकमां यथा॥ नोकप्पइनिग्गथाणवानिग्गथिणवाइमाउं ॥ इत्यादि

गणियाश्र उचित जिनाउंपंचमहणवाउमहानदिउ अंतोमासस्स डुखुत्तोवा तिखुत्तोवाउत्तरिए संतरित्तए वा तं गंगाजऊणासरसइ एरावतिमही इति एरीते निषेधकरीने वली लगताज सूत्रमांश्राज्ञाकरी यथा पंचविहिंठाणेकप्पंतितंजयंसिवाडुन्निक्कंशिवापवहे जंच णंकोइतिदउग्घंसिवाएज्जमाणंसिमहताबायणारितेहिंइति एवे सूत्रकह्यां एकविधिनुं एकनिषेधनुं एवेमांकयुसूत्रप्रमाणकरियें अनेकयुंसूत्र अप्रमाणकरिये इहां एके अप्रमाण नथायइतिजावः हवे पठवाकाना वेपदनो अर्थकहेठे तेमके० तेरीतेजेम ठाणांग मध्ये वेहुसूत्र देखाड्या तेम सामान्यप्रमाण जेसूत्रठे ते सूत्रथी नविप्रमाणअप्रमाणके० इहांसामान्यपदठे तेमाटेजाणियेंठेयें जेविशेषपद वाहारथीलावीयें तेवारेएम अर्थथाय जेविशेषप्रमाण तेटीकाप्रमुख तेनविअप्रमाणके०अप्रमाणनथी एटलेएजावजे प्रमाण वे प्रकारना एकसामान्यप्रमाण बीजुं विशेषप्रमाण तेमां सामान्यप्रमाण तेसूत्रकहीयें जेमां सामान्यपणे सूचनामात्रें कह्युं होय अने विशेषप्रमाणते अर्थटीकाप्रमुखनेकहीयें जेमां विस्तारीनेकह्युंठे एवेप्रमाणठे तेमां सामान्यप्रमाणखरुं अने विशेषप्रमाणखोटुं एम नकहेवाय सामान्यप्रमाणथी विशेषप्रमाण तेअप्रमाण केमथाय इतिजावः ॥९॥

अंधपंगुजेमवेमले ॥ चालेइछितठाण ॥ जि० ॥ सूत्रअरथ
तेमजाणीयें ॥ कल्पजाष्यनीवाण ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेम अंध लोचनहीन अनेपंगुके०चरणहीन एवेमलीने चालेइछितठाणके० वांछितस्थानकनेविषे चाले तेमसूत्र तथाअर्थजे टीकाप्रमुख मलीने यथार्थ स्थानके अर्थ जोडीशकीयें एमकल्पजाष्यनीवाणीठे ॥ १० ॥

विधिउद्यमजयवर्णना ॥ उत्सर्गहअपवाद ॥ जि० ॥ तडुजय
अर्थेजाणीयें ॥ सूत्रजेदअविवाद ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ वली १ विधिसूत्र २ उद्यमसूत्र ३ जयसूत्र ४ वर्णवसूत्र ५ उत्सर्गसूत्र ६ अपवादसूत्र ७ तडुजयसूत्र एसर्वसूत्रनाजेदनीखबर अर्थथीजणाय नहीतो शीखबर पडेजे आसूत्रते शीअपेक्षानुंठे यथा ॥ संपत्तेजिक्खकालंमि ॥ असंजंतोअ मुछिउ॥इमेणकम्मजोगेणं ॥ जत्तपाणंगवेसए ॥१॥ एदशवैकालिकनापांचमाअध्ययने कह्युं इत्यादिकविधिसूत्रकहीयें तथा डुमपत्तयपंकुयए ॥जहानिवऊइरायगणाणअच्चए ॥ एवंमणुआणजीवियं ॥ समयगोयमामापमायए ॥ इत्युत्तराध्ययननेदशमाध्ययनेकह्युं इत्यादिकउद्यमसूत्रकहीयें अने नरकनेविषे मांसरुधिरादिकवर्णवीकहेवा यथा ॥ उत्तराध्ययनेमृगापुत्रअध्ययनमां तथा सुयगडांगना नरकविजत्तिअध्ययनमां तेपरमार्थेमांसादिक नथी पणजयसूत्रठे यतः नरएसुमंसरुहिराइ ॥ वजंपसिद्धिमित्तेणं ॥ जयहेउ-

इहरतेसि ॥ विउव्वियपावउनतय ॥१॥ इत्यादिक नयसूत्र यथा जक्किमिर
त्यादिकउववाइ ज्ञाताधर्मकथाप्रमुखनेविषे प्रायेंसूत्रछे तेनर्णनसूत्रछे वली
जीवनिकायाण मेवसयदंमसमारजेज्जा इत्यादिक छजीवनिकायना रक्षक
रांगादिकसूत्रनेविषे तेउत्सर्गसूत्रजाणवा तथाछेदग्रयतेप्रायें अपवादसूत्रछे
वालभिज्जा निउणसहाय॥ गुणाहिय वागुणउसमंवा॥ इक्कोविपानाइविवज्जयते॥
ज्जाकम्मेसुसज्जमाणो॥ इत्यादिक अपवादसूत्रजाणवा तथा जेमा उत्सर्ग अने
साथेकहेवाय तेतदुनयसूत्रकहीयें जेम अद्दलाणाजावे समअरिथासियवउवाहि
तप्पावमिउविहिणा ॥ पक्कियारपवत्तणनेय ॥१॥ इत्यादिकअनेकप्रकारना स्वसमय
समय निश्चय व्यवहार ज्ञानक्रियादिक नानाप्रकारें नयमतनाप्रकाशक
तेअविवादपणेके०जेमाजगडोनछे एरीते स्वस्थानकें अर्थथीजोमाय ॥ ११ ॥

एहभेदजाण्याविना ॥ कंखामोहलहत्त ॥ जि० ॥ भगतर
प्रमुखेकरी ॥ भाष्युभगवइतत ॥ जि० ॥ तुज० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ तोएपूर्वोक्तभेद जाण्याविना भगतरप्रमुखेकरीने कखामोहके०
हनीने लहतके०वेदे एमभगवतिसूत्रमा तंतके०निश्चेंभाष्युछे एटले
विविध आशयनाहोय तेआशयनीजेवारेंमालमपडे तेवारें मनमा
के आलरुपवीशकाथाय अनेजेशका तेमिथ्यात्वमोहनीथाय
शतके तृतीयउद्देशके अछिणंभतेसमणाविनिग्गथाकखामोहणिज्जाकम्मवेदेति
छिकहणभतेसमणाविणिग्गथा कखामोहणिज्जाकम्मवेदेतिगोयमा तेहितेहिनाणं
दसणतरेहि चरित्ततरेहिं लिंगतरेहिं पवयणतरेहि पावयणतरेहि
मततरेहिं भगंतरेहि णयंतरेहि णियमतरेहि पमाहिणतरेहि सकित्ता कखिचा
गिछता भेयसमावन्ना कलुसमावणा एवखलुसमणा निग्गथाकखामोहणिज्जा
देतिइति एनासमाधान भगवतिनीवृत्तिथी जोइलेजो तेमाटेटीकाप्रमुख अर्थ
सर्वसमाधानथाय आम्नायपामियें पण केवल सूत्रेंज नपामियें इहा भगतरप्रमुखेकहु
मध्यग्रहणेआद्यतयोर्ग्रहणमितिन्यायात् णाणंतरेहिं पदपणलेवा ॥ १२ ॥

परिवासितवारीकरी ॥ लेपनअशनअशेष ॥ जि० ॥ कारण
थीअतिआदस्या ॥ पंचकल्पउपदेश ॥ जि० ॥ तुज० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ परिवासितके०रात्रें वासीराखवु तेवारीकरीके०वारीने एटले मुनिने
धिमात्रे पणराखवु ते रात्रें नघटेसूरहवु शुतेकहेछे लेपनके०विलेपन अथवा
सिततेलप्रमुख अने अ॥नोएरतथाअशेषशब्देंप्रमुख लेवा तेवारीने वली

श्री अतिके०अत्यंतकारणे आदस्यांके०तेमुनियेंअंगीकारकस्यां एटले वासीराख-
नी मुनिने आज्ञाकरी तेपंचकल्पग्रंथनो उपदेशछे उपलक्षणथी निशीथनेविषे पण
छुंछे यतः ननुउपधादिसंनिधि-क्रियतेनवा उच्यते उत्सर्गेणनकल्पते कारणेतुजनत्थ-
तयाहिवोछिन्नमंरुवनांमयछडुजोयणब्भंतरउगामघोसाइनछितछतुरिएकजोनलप्र-
अउतछविन्नमंरुवेउसहगणोपरिवासिजाइइतिनिशीथे तेमाटे एकारणादिक प्रकार
टीकाप्रमुखविना जणायनही ॥ १३ ॥

वर्षागमननिवारीउं ॥ कारणेंआप्युतेह ॥ जि० ॥ ठाणंगे
श्रमणीतणुं ॥ अवलंबादिकजेह ॥ जि० ॥ तुज० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वर्षागमनके०चोमासानेकाले विहारकरवानुं निवास्युंछे श्रीठाणांगना बीजा-
हेशामध्ये यतः णोकप्पतिनिग्गंछाणंवानिग्गंछीणंवा पढमपाउसंमिगामाणुगामंडुत्ति
जित्तएइति तथा कारणेआप्युंतेहके०तेजवर्षाकालमां कारणथी विहारकरवानी आज्ञा
री तेपणठाणांगसूत्रना पांचमा ठाणाना बीजा उद्देशामांकह्युंछे यतः पंचहिठाणेहिं-
प्पंतितंजयंसिवा डुनिरकंवा जावमहताबाआणारिएहिं इतितथातत्रैववासावासंपज्जो-
सवियाणं नोकप्पइ निग्गंथाणंवा निग्गंथीणवागामाणुगामंडुइज्जितंएवंपंचहिठाणेहिं
कप्पतितं णाणठयाए दंसणठयाए चरित्तठयाए आयरिय उवझाएवा संविसुंजेजा
आयरियउवझायाणवा वहिता वेयावच्चकरणयाएइति वलीएजश्रीठाणांगनेविषे श्रम-
णीके०साध्वीने अवलंबनके०आलंबतो प्रभुनी आज्ञा अतिक्रमेनही यतः पंचहिठा-
णेहिंसमणेनिग्गंथे निग्गंथि गेन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णातिक्कमउतंनिग्गंथिचणं
अन्नयरे पसुजातितेवा पक्खिजातिएवा उव्हातेज्जानत्थनिग्गंथे निग्गंथि गेन्हमाणेवा
अवलंबमाणेवा णाइक्कमइनिग्गंथे निग्गंथि डुग्गंसिवा विसमंसिवा पक्खलमाणिंवा
पवडमाणिंवा गेन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइनिग्गंथे निग्गंथि सेयंसिवा पं-
कंसिवा पणगंसिवा उदगंसिवा उक्कमाणिवा उवुज्जमाणिवा गेन्हमाणेवा अवलंबमा-
णेवा णातिक्कमइ निग्गंथे निग्गंथि णावआरुहमाणेवा उरुंभमाणेवा जावणातिक्कम
निक्खत्तइत्तं जक्खनिठंजावभत्तपाणपडियाइक्खितं निग्गंथे निग्गंथि गेन्हमाणेवा अव-
लंबमाणेवाणातिक्कमइ इत्यादि एत्तपत्तकपणी साधुमार्गी एकस्थानके तेआवले प-
ाणपणआलावा श्रीठाणांगमध्येछे तेकेटलाक लखाय अने वलीनवमेठाणे ब्रह्मचेराध्या
तिमांश्रीनाअंगोपांग जोवानही तथा नीतने आंतरे वमवुंनही एमकह्युं तेवाननो प्र-
सिद्ध छे माटे प्रतिपक्षीआलावो उपाध्यायजीयें मेलाव्योनही तेथी अमे लख्यो पण
नही तो इत्यादिकविना केम वंधवेसेइतिभावः ॥ १४ ॥

आधाकर्मादिकनही ॥ बंधतणोएकत ॥ जिन० ॥ सुयगडे
तेकेमघटे ॥ विणहृत्यादिकतंत ॥ जिन० ॥ तुऊ० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ आधाकर्मी आहारकरवो ते नहीके०नथीकह्यो बधन ...धनो एकातनथी एटले एजावजे श्रीसुयगडागसूत्रमध्ये आधाकर्मी आहारकरता मेरबाय पणएरु अने वली नवधाय एम पण कह्यु तेकेमघटे यत ...ति ॥ अणमणेसकम्मुणा ॥ उवलित्तेवियाणिज्जा ॥ अणुवलित्तेनिवापुणो ॥१॥ ...हिंगाणेहि ववहारोणविज्जइ ॥ एतेहिदोहिंगणेहिं ॥ आणायार तुजाणए ॥ २ ॥ ...यगडागना २१ माअध्ययनेछे माटेएवीगातोते टीकाप्रमुखविना सूत्रकेमस्पष्टथाय ॥

विहरमानगणधरपिता ॥ जिनजनकादिकजेह ॥ जिन० ॥ क्रम
वलीआवश्यकतणो ॥ सूत्रमात्रनहीतेह ॥ जिन० ॥ तुऊ० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ वली विहरमानके०विचरता वीसतीर्थंकर तथा तेओनागणधर अने ...ओना पिता उपलक्षणथी माता लछन नगरी विजय परिवार केवलीप्रमुख ...जदेनही अथवा जेम वीस विहरमानना गणधर तेमज उपलक्षणथी कृपणादि... गणधरपण सर्वसूत्रमा नथी तथागणधरोना पिताप्रमुख सूत्रमात्रेनथी तथा ...चोवीसतीर्थंकरना जनकादिके० मातापिता उपलक्षणथी बीजोपणपरिवार तेसर्व ...नथी ते आवश्यकादिक माने तोज जडे वली आवश्यकजे उभयटक ... तेहनोने क्रमके०अनुक्रम ते जे अमुक पछी अमुक कहेवु इत्यादिक सूत्रमात्रनही ...मात्रपणआगमना नथीजे एवी घणीगातोछे तेकेटलीलखाय पण प्रकरण निर्युक्त्यादि...य माने तोपारपडे नहीतो गोथांज खाय ॥ १६ ॥

अर्थविनाकेमपामिये ॥ भावसकलअनिबद्ध ॥ जि० ॥ गुरु
मुखवाणीधारता ॥ होवेमर्मसुबद्ध ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ वली अर्थके०टीकाप्रमुखविना केमपामियें सकलके०समस्त अनिबद्ध अर्थ बद्ध तेसुखथी ते केमजाणे मरुदेवान केमजडे सूत्रमांतोलगारेक नाम मात्र ... ... टीकाप्रमुखमा जाने अथवा अनिबद्धके०सूत्रमानथी बधाण एवा ... ... अनत आवरमांथी आवीजेम मरुदेवाजी मोक्षगयां इत्यादिक ... पामो आटेगाने तेसर्व केवल सूत्रेज केवीरीते गम्यमान थाय ... माटे गुरु... ...दिकना मुखनी वाणी मानवीये जे सप्रदायिक होय ते ... मर्मसुबद्धाय मुयुक्तिवंतथाय ॥ १७ ॥

पुस्तकअर्थपरंपरा ॥ सघलीजेहनेहाथ ॥ जि० ॥ तेसुवि
हितअणमानतां ॥ केमरहेसेनिजआथ ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ पुस्तक जेअंगोपांगादिक अक्षरन्यासरूप अर्थटीकाप्रमुख जेगुरुसंप्रदायनी
रंपरा तेसर्वजेने हाथेछे एवाजे सुविहित गुरूमार्गना प्ररूपनार तेहने अणमानतां
एटले अं कार कर्याविना केम रहेशे? निजआथकेऽपोतानी समकितरूप जे
अर्थी तेते रहेशे ॥ १८ ॥

गुपासेशिखतां ॥ अर्थमांहिनविरोध ॥ जि० ॥ हेतुवाद
तें ॥ जाणेजेहसुबोध ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १९ ॥

मूर्खपणुं टालीने सद्गुरुपासे विनयादिकेंकरीने सूत्रना अर्थ जे
तेधारवां तेमां कांइविरोधनथी पण तेमूर्खलोक एमजाणेछेजे सूत्रमां विरो
थी अने अर्थमां विरोधछे ते खोटुंछे. गुरुमुखे शीखतांथकां कांइ विरोध छेजनही
तथा एरीते गुरुपासें धारतां हेतुवाद कहेतां कारणनिमित्तवाद एहवो आगमजे सि-
द्धांत तेनेजाणे जेथकीसुबोधकेऽभलोबोधथाय ॥ १९ ॥

अर्थमतभेदादिकें ॥ जेहविरोधगणंत ॥ जि० ॥ तेसूत्रे
पणदेखशे ॥ जोजोएएकंत ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ वली अर्थकेऽटीकाप्रमुखनेविषे मतभेदादिकेंकेऽकोइमतभेदें कोइ वाचनां-
तरभेदे भेदपणुं देखीने जे विरोध गणेछे अने कहेछेजे टीकाप्रमुख विरोधीछे मलती
नथी तोकेम मानीयें तेहने कहेछेके जेप्राणी टीकाप्रमुखमां विरोधपणुं जोशे तेसू-
त्रमांपण विरोधपणुं देखशे जोएकांते निश्चेकरी जोशे तो सूत्रमां पणघणो विरोधछे
तेकेम नथीजोता इतिभावः ॥ २० ॥

संहरताजाणेनही ॥ वीरकहेएमकल्प ॥ जि० ॥ संहरतां
पणनाणनो ॥ प्रथमअंगछेजल्प ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ हवे तेज सूत्रना विरोधिपणाने देखाडेछे जे देवानंदानी कुखथी लेइने
त्रिसलादेवीने कुखे संहरताकेऽसंहर्या तेसंहरनां वीरस्वामीयें जाण्युंनही एमश्रीक-
ल्पसूत्रमां कह्युंछे यथा ॥ साहरिजिस्सामित्तिजाणइ ॥ साहरिजमाणेनजाणइ ॥ साह-
रिएमित्तिजाणइ इतिपाठात् तथा वीरस्वामीने हरणगमेषीये संहर्या तेअवसरे प्रथम
अंगजे श्रीआचारांगतेमां ज्ञाननो जल्पकेऽशब्दछे एटले एजावजे संहरतां थकां प्र-
भुयेंजाण्युं एमकह्युंछे तथाचतत्सूत्रं साहरिजिस्सामित्तिजाणइ साहरि पाठ।
हरिजमाणेविजाणइ सेसमणाउसोइतिपंचदशेभावनाध्ययने इतिविरोधः

रुपचकूटअम्जोयणो ॥ जंवूपन्नत्तिसार ॥ जि० ॥ वारव
वीपाठांतरें ॥ मूलकहेविस्तार ॥ जि० ॥ तुक० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ वली रुपचकूटनु आठयोजन मूलविस्तारछे एमजवूद्वीपपन्नत्तिसूत्रमा
यत पन्नणउसजकूडेनागकूडेपन्नते अठजोयणाइउद्ध उच्चत्तेण दोजोयणाइ उवे
अठजोयणाइविरकंत्रेणमझेठजोयणाइंविरकंत्रेण उवरिचत्तारिजोयणाइ
दिक जंवूद्वीपपन्नत्तिनोपाठछे सारके०प्रधान एहवी जंवूद्वीपपन्नत्तिकहेछे
र्थ अन्नयकरी करियें एटले एकपाठतो ए कह्यो वली एज पाठ
बीजोपाठछे तेमा बारजोजन मूलेंविस्तार कह्योछे तेकेम मले एकज सूत्रमा
सर्वज्ञना ज्ञानमाफेरनथी तोसदिग्धवचन केमहोय इति जाव तथाचतत्पाठ
रजोयणाइविरकंत्रेण मझेअठजोयणाइविरकंत्रेण
दिक पाठजोजो केवलसूत्र मेलवी आपजो ॥ २२ ॥

सत्तावनसयमल्लिने ॥ मणनाणीसमवाय ॥जि०॥ आठ
मयाज्ञाताकहे ॥ एतोअवरउपाय ॥ जि० ॥ तुक० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ श्रीमल्लिनाथस्वामीनें सत्तावनसो मनपर्यवज्ञानी
कह्याछे यत मल्लिस्सणअरहतोसत्तावन्नमणपज्जवनाणीसयाहोत्थाइति ॥
तांगसूत्रमध्ये मल्लिनाथस्वामीनेज आठसो मनपर्यवज्ञानी कह्याछे यथा
धरनाणीण एम श्रीसमवायांगसूत्र तथाज्ञातासूत्र मध्युनहीपविरोध यतो
यवं०एमेडवचनो उपायतो अन्यजछे तेतो गीतार्थज्ञानीजाणे ॥ २३ ॥

उत्तराध्ययनेस्थितिकही ॥ अंतरमुहूर्त्तजघन्य ॥ जि० ॥ वेदनी
यनीपन्ने ॥ पन्नवणामाअन्य ॥ जि० ॥ तुक० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ यथा श्रीउत्तराध्ययनसूत्रमध्ये वेदनी कर्मनी स्थिति जघन्य
कहीछे यत उदहिसरिनामाण तीसइकोडाकोडिउ उक्कोसियाठिइहोइ ॥
जहन्निया ॥१॥ आवरणिज्जाणदुण्हपि ॥ वेयणिज्जेतहेवय ॥ अंतरायएकम्ममि ॥ ठिइ
साहियाहिया ॥२॥ इत्युत्तराध्ययनअध्ययन ३३ मामध्ये कह्युछे वली तेजवेदनी
बारमुहूर्त्तजघन्यस्थिति श्रीपन्नवणासूत्रमध्येकहीछे यथा ॥ सायावेयणिज्जस्स ॥
वंधठिइपन्नत्ता ॥ जहन्नेणबारसमुहुत्ता ॥ उक्कोसेण ॥ दोसमयाम्पराइय ॥ वधगपडुच्चजहन्नेण ॥
मुहुत्ताउक्कोसेण ॥ पण्णरससागरो ॥ वमकोडाकोडिउ ॥ इत्यादिपन्नवणामध्येकह्यु
ध्ययनमां मायेमल्युनहीं माटे विरोध तेनोअन्यसे०जुदीजवातछे ॥ २४ ॥

अनुजोगद्वारेकह्या ॥ जघननिखेपाचार ॥ जि० ॥ जीवा
दिकतोनविघटे ॥ द्रव्यभेदआधार ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ वली श्रीअनुयोगद्वारसूत्रनेविषे एम कह्युंछे के जेवस्तुना जेटला निखेपा करवानी तारीबुद्धिथाय तेवस्तुना तेटला निखेपा तुं तिहांकरजे पण कदाचित्त घणा निखेपा तुं नजाणे तिहांपण चारनिखेपातो अवश्यकरजे एटले एमआव्युंजे जघन्यथी चारनिखेपातो सर्वत्रकरवा पणचारथीऊंणातोहोयजनही १ नाम २ स्थापना ३ द्रव्य ४ भाव एचार अवश्यकरवा यतः जत्थयजंजाणिज्जा निक्खेवं निक्खेवेनिरवसेसं ॥ जत्थवियन-जाणिज्जा ॥ चउक्कयंनिक्खेवेतत्थ ॥ १ ॥ इत्यनुयोगद्वारसूत्रे तेवारे जीवादिकशब्दना निखेपा नविघटेके०घटेनही शामाटे जे द्रव्यनिखेपो भेदआधारके०भिन्न आधारेंथाय केमके जेभावनुंकारण तेद्रव्य तेवारे जीवनो द्रव्यनिक्षेपो केमथायजेभावजीवथवानुं कारणहोय तेद्रव्यजीव कहेवाय तेतोज्ञानादिक गुणेहीणतो जीवहोयनही दवंपज्ज-वविज्जुयं ॥ दवविजुयायपज्जवानत्थि ॥ इतिवचनात् तेमाटे मंडूखनी जटाना भारनी पेठे समस्तधर्मरहित कोइपदार्थजनथी तोएद्रव्यनिक्षेप जीवादिकमां शून्यछे आदि शब्दथी वीजापणजीवादिकलीजीयें जेम द्रव्यदेवमुनिराजनेकहियेंतेमद्रव्यजीवकोने कहेशोतेनासमाधानतोपंचांगीप्रमुखथीनीकले अत्रार्थेतत्त्वार्थवृत्तिजोजो ॥ २५ ॥

एमबहुवचननयंतरें ॥ कोइवाचनाभेद ॥ जि० ॥ एमअर्थे
पणजाणीयें ॥ नविधरीयेंमनखेद ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ एरीते बहुके०घणा सइकमोगमेवचनविरोध अल्पबुद्धिवालाने लागे एवा व सूत्रमध्येछे तेकोइ स्थानकें नयभेदभेदेंव्याख्याहोय अने कोइस्थानकें वाचनाभे-के०वल्लभी तथा मथुरी एवे वाचना थइ तेथीभेदथयो एमउपलक्षणथीमतांतर प्र-मुख लिपिदोष पणलह्ये एवीरीते जेमसूत्रमांभेदछे तेमज अर्थेके०टीकाप्रमुखनेविषे पण नयांतरेकरी वाचनांतरेकरी कोइस्थानके भेदआवे तेमाटे टीकाप्रमुख देखीने मनमांखेदनधरीयें सूत्रतथाअर्थवरावरछे ॥ २६ ॥

अर्थकारथीआजना ॥ अधिकाशुभमतिकोण ॥ जि० ॥ लोके
अमियतणेनहि ॥ आवेकहियेंलूण ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ अर्थकारके०जेनिर्युक्तिकार टीकाकार तेथकी आजनाजेआधुनिकमां अ-धिकाशुभमतिनाधणी कोणथया एटले एभावजे समुद्रजेवीबुद्धिनाधणी टीकाकारतथा चौदपूर्वनाधणीनिर्युक्तिकार तेथी शुभमतिकोणथया एटले शुभमतिनहीज थयाइति

मात्र लोकमालखाणोछे जे खाण्ना खानार तेरीतना एशुजमतिजाणवा पण लूणजेनीमक तेथ्यमृतने तोले आवेनही ॥ २७ ॥

राजासरिखुसूत्रछे ॥ मत्रीसरिखोअर्थ ॥ जि० ॥ एमाएके
हेलीजे ॥ दियेसंसारअनर्थ ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे राजासरिखुंके०चक्रवर्ति बराबरसूत्रछे अने मंत्रीसरिखो अर्थछे टले राजानोआशय मत्री जाणे तेम सूत्रनोआशय अर्थकारकहे बीजो आशय जाणेनही एमाके०एबेहुमाथी एकेहेलीजेके०एकने निंदतांथका अनर्थके०समारनोअनर्थआपे जवपरंपरावधारे ॥ २७ ॥

जेसमतोलेंआचरे ॥ सूत्रअर्थसूंप्रीति ॥ जि० ॥ तेतुऊक
रुणायेंनरे ॥ सुरजजगनिर्मलनीति ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २ए ॥

अर्थ ॥ माटेजे आत्मार्थिप्राणीते सूत्र तथाअर्थ बेहुने समतोल सरिखीरीतें आचरे प्रीतिधरे अवज्ञानकरे तन्मयकरीजाणेतेप्राणीहेप्रभुतमारीकरुणाके० करीने सुगतेनिराबाधपणु अनेजशकीर्ति तथानिर्मलजे नीतिके०न्याय ते वरेके० ॥ २ए ॥ इहे दशमी ढालकहेछे तेने नवमी ढालसाथेए संबधछे जेपूर्वढालमा सूत्रअर्थमां एकनी हीलनाकरेतो तेनेसंसार वधेएम कह्यु तेसूत्रतथाअर्थ तो ज्ञानरूपछे माटेएदशमीढालमाज्ञानवर्णनकरेछे ॥

॥ ढालदशमी ॥

॥ आपछंदेवनीलावलनरे ॥ एदेशी ॥

ज्ञानविनाजेजीवनेरे ॥ क्रियामाछेदोषरे ॥ कर्मबंधछेतेहथी
रे ॥ नहिसमसुखमनोपरे ॥ १ ॥ प्रजुतुऊवाणीमीठमीरे ॥
सुऊमनमेंहेजसुहायरे ॥ अमीयसमीमनधारतारे ॥ पाप
तापसविजायरे ॥ प्रजुतुऊवाणीमीठडीरे ॥ २ ॥ एआकणी

अर्थ ॥ ज्ञानविना जेजीव केवलक्रियारुचिछे तेमा घणादोषनी उत्पत्तिछे नहिंहथी कर्मबंधथायछे समसमसुखमतोपरे०समतानासुख जेमा परजातनी नहीं एहवो जेमनोपरे अज्ञानी क्रियाकरतोहोय तेहने थतो नथी यत नाणगुणे हिणिया ॥ किरियामत्तरूईणीजणिया ॥ सम्मकुपदहमिता ॥ ... १ ॥ एवोअर्थ गीमीमा छे करुंछेमाटे हेस्वामी तमारीवाणी घणीज मीठीलागेछे

रामनमांसेहेज सोहायछे पणकोइना बलात्कारथीनही तेअमृतसरिखीनमारीवाणीने मनमांधारतांथकां पापरूप तापके०उष्णता तेसर्वेमटीजायनेशीतलताथाय ॥ २ ॥

लोकपंतिकिरियाकेरेरे ॥ मनमेलेअन्नाणरे ॥ जवइछानाजो
रथीरे ॥ विणशिवसुखविन्नाणरे ॥ प्रभु० ॥ सुज० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ लोकपंतिके०लोकनी हारमां लोकानुजायी क्रियाकरे मनमेलेके०शुद्ध अध्यवसायविना अन्नाणके०अज्ञानीजीवते भवजे संसार तेनीइछाना जोर थकी एटले बहुलसंसारीजीवछे शिवसुखना विज्ञानविना एटले जेक्रियाकरे तेपण ज्ञानविना यशमानप्रतिष्ठानेअर्थेकरे ॥ ३ ॥

कामकुंभसमधर्मनुंरे ॥ मूलकरीएमतुछरे ॥ जनरंजनकेवल
लहेरे ॥ नलहेशिवतरुगुछरे ॥ प्रभु० ॥ सुज० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ कामकुंभ सरिखो मोक्षसुखनोआपनार एवोजेधर्म तेनुंयशमानादिक तुछ मूलकरीने तेप्राणीकेवल जनरंजनके०लोक रीझे एटलुंज फलपामे पणअज्ञानक्रियाथी मोक्षरूपजेवृक्ष तेनो गुछके०गुछो उपलक्षणथी फललइयें तेनपामे ॥ ४ ॥

करुणानकरेहीननीरे ॥ विणपणिहाणसनेहरे ॥ रूपधरं
तांतेहसुंरे ॥ हेठाआवेतेहरे ॥ प्रभु० ॥ सुज० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे पोडशकमां पांचगुण आशयविशेप देखाड्याछे यथातृतीयपोडशके १ प्रणिधि २ प्रवृत्ति ३ विघ्नजय ४ सिद्धि ५ विनियोग भेदतःप्रायःधर्मज्ञैराख्यातःशुभाशयःपंचधा त्रिविधौ एपांचभेद अन्वयरीतें श्रीहरिभद्रसूरियें देखाड्याछे ते श्रीजशोविजयउपाध्यायजी व्यतिरेकें देखाडेछे तेमां प्रथमप्रणिधाननामाआशयकहेछे जेहीनके० पोताथकी हीणगुणीछे एटले हीणगुणठाणेवर्त्ते तेहनी करुणानकरे विणपणिहाणसनेहके०प्रणिधाननामाआशयविशेपना सनेहविना हीननीकरुणानकरे वलीहीनगुणी ऊपररूपकरतांथकां जेएमांगागुणछे इत्यादिक रूपधरतां तेपोतेज हेठाआवे ॥ ५ ॥

एककाजमांनविधरेरे ॥ विणप्रवृत्तिथिरभावरे ॥ जिहांतिहांमो
होडुंघालतारे ॥ धोरढोरस्वभावरे ॥ प्रभु० ॥ सुज० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे प्रवृत्तिनामाआशय वखाणेछे विणप्रवृत्तिके०प्रवृत्तिनामागुणविना एक काजमांके०एकजेधर्मकार्यमांड्युं तेमां नविधरेके०नराखे थिरभावके०थिरताभाव एटलेएककाजमां थिरनही अने प्रारंभितकार्यमां तेवोप्रयत्नही एमपण समजवुं जिहां तिहां मुखघालतो एटले जेधर्मस्थानक मांड्युंछे तेमूकीने अकालें फलवांछे अनेअका-

लेफल वाळवुते तत्वथीआर्त्तध्यानछे तेवारे जिहांतिहां मोहोडु घालता ढोरनोसत्ता वधरेछे जे खावा मूस्युहोय तेमूकीने वीजामां मुखघाले ॥ ६ ॥

विनाविघनजयसाधुनेरे ॥ नविअविछिन्नप्रयाणरे ॥ किरियाथी
शिवपुरीहोयरे ॥ केमजाणेअन्नाणरे ॥ प्रजु० ॥ सुरु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेत्रीजो विघ्नजय वतावेछे विघनके०अंतराय तेनो जयके०जीतवु तेनि जयनामागुणविना साधुने मात्रक्रियायेंकरी अविछिन्नप्रयाणकेमथाय एटले म॰ अविछिन्नपणे केमसधाये माटेविघ्नजयविना साधुनेक्रियाथी अविछिन्नप्रयाणे शी॰ नहोय ए वातो अज्ञानी केमजाणे हवेविघ्न तथाविघ्ननोजयदेखाडेछे ॥ ७ ॥

शीततापमुखविघनछेरे ॥ वाहेरअंतरव्याधिरे ॥ मिथ्यादर्श
नएहनीरे ॥ मात्रामृडुमध्याधिरे ॥ प्रजु० ॥ सुरु० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेविघ्नना जेदत्रणछे १ हीनविघ्न २ मध्यमविघ्न ३ उत्कृष्टुविघ्न एमा हीनविघ्नते जेमधर्मकरता शीतके०टाढवाए तथातापके०तडकोलागे तेधर्मंमा विघ्न तथा वाह्यव्याधिके० रोगज्वरकासश्वासप्रमुख जे शरीरना रोगते मध्यमविघ्नकहिंये माटे टाहाड तथातडका करतां शरीरना रोगतेविशेषविघ्नकरे तथात्रीजुउत्कृष्टु तेअंतरव्याधि मिथ्यादर्शनके० मिथ्यात्वमोहनीय ए उत्कृष्टु धर्मंमा विघ्नछे ... र्मकरता जो मिथ्यादर्शननो उदयथइ जायतो धर्ममा महोटुविघ्नथाय ए ... वेविघ्नकह्या तेकरतांएथाकरु विघ्नछे माटे उत्कृष्टुविघ्नकह्यु जेममार्गमा चालता जघन्यमध्यम अनेउत्कृष्टु एत्रणविघ्नछे मार्गमाकांटालागेते जघन्यविघ्न, मार्गमां खतेमध्यमविघ्न, मार्गमा दिग्मूढथायतेउत्कृष्टुविघ्न तेमधर्ममापण पूर्वोक्तत्रण... णवा तेनीमात्राके० प्रमाणकहेछे मृडुके० हीन मध्यके० मध्यम अनेअधिके० एमअनुक्रमे जोवा ॥ एतोविघ्नदेखाड्या हवेविघ्नजय अनुक्रमेंदेखाडेछे ॥ ८ ॥

आसनअशनजयादिकेरे ॥ गुरुयोगेंजयतासरे ॥ विघनजो
रएनविटळेरे ॥ वगरज्ञानअभ्यासरे ॥ प्रजु० ॥ सुरु० ॥९॥

अर्थ ॥ आसनके० वीरासनादिकेकरी पूर्वोक्त शीततापादिक विघ्ननो जयकरे अशनएटले आहारेंकरी पूर्वोक्त ज्वरप्रमुखविघ्ननोजयकरे तथा गुरुयोगेंकरी मिथ्यादर्शनरूपविघ्ननो जयकरे केमके गुरुयोगे समकितपामेज एविघ्नजोर तेज्ञाना... भ्यासविना टळेनही माटेज्ञानाभ्यासें परिणाम दृढरासे शीततापप्रमुखमा ... अनेज्वरप्रमुखमा कृतकर्मअहियासे एटले एमजाणे जेमाराउदयेआव्या कर्मजोग तथा मिथ्यात्वनुजोरटळे ज्ञानेसम्यक्जिनवचनजाणे ॥ ९ ॥

विनयअधिकगुणसाधुनोरे ॥ मध्यमनोउपगाररे ॥ सिद्धिवि
नाहोवेनहीरे ॥ कृपाहीननीसाररे ॥ प्रभु० ॥ मुज० ॥१०॥

अर्थ ॥ हवे सिद्धिनामाआशय वखाणेछे जेपोताथकी अधिकगुणवंतासाधुनो विनय तेसिद्धिनामाआशयविशेष आव्याविना होयनही तथा मध्यमके० मध्यमगुणवंताहोय तेने उपकारकरे तेपण सिद्धियोगविना होयनही अने हीननीके० पोताथी हीनगुणी तेनी सारके० प्रधान कृपाके० दयातेपण सिद्धियोगविनानहोय ॥ १० ॥

विणविनियोगनसंभवेरे ॥ परनेधर्मेयोगरे ॥ तेहविनाज
नमांतररे ॥ नहिसंततिसंयोगरे ॥ प्रभु० ॥ मुज०॥११॥

अर्थ ॥ हवे विनियोगनामापांचमोआशयवखाणेछे विनियोगनामागुणविना परजीवने जेधर्मेजोडवुं तेयोग नसंभवेके० नहोय तेविनाके० तेहविनियोगविना जनमांतके० परभवनेविषे संततिके० परंपरानो संयोगते नहीके० नहोय एटले सिद्धनुंकार्य तेविनियोगछे तेयावत् सर्वसंवरथाय तिहांलगे धर्मपरंपरात्रूटेनही अनेजोविनियोग नामागुण नथयोहोय तोत्रूटीजाय एसर्वेगुणतेज्ञानविनानहोय ॥ ११ ॥

किरियामांखेदकरीरे ॥ दृढतामननीनाहिरे ॥ मुख्यहेतुतेधर्म
नोरे ॥ जेमपाणीकृषिमांहिरे ॥ प्रभु० ॥ मुज० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे परमेश्वरनी वाणीमीठीछे तेवाणी स्तवनाद्वारें प्रभुनी स्तवनाकरे तेप्रभुनी स्तवनातो प्रभुजीनुं ध्यानकरियें एटलेते वीतरागनी स्तवनाजथइ तेप्रभुनुंध्यान बेभेदेछे एकसालंबन बीजुंनिरालंबन तेमां सालंबनते चक्षुप्रमुखेंकरी जिनप्रतिमादिकनुंआलंबनकरीने समवसरणस्थजिनस्वरूपनुं ध्यानकरवुं ते तथा वीतरागना शुद्धनिरावर्ण आत्मप्रदेश समुदायने केवलज्ञानादिकस्वभावनुं ध्यानकरवुं तेनिरालंबनध्यान कहियें शुद्धपरमात्मगुणध्यानंनिरालंबनं इतिवचनात् हवेइहांतो सालंबनध्याननी वातछे सालंबन केम थायतेकहेछे जेजूदाजूदा जीवनी अपेक्षायें आठचित्तनो त्यागकरे तके ध्यानथाय तेआठचित्तनानामकहेछे यदुक्तं चतुर्दशेषोडशके १ खेदो २ उद्वेग ३ क्षेपो ४ त्थान ५ भ्रांत्य ६ न्यमु ७ द्रुगा ८ संगैः ॥ युक्तानिहि चित्तानिप्रबंधतोवर्जयेन्मतिमान् ॥१॥ ए आठचित्तने दोषेकरीने ध्यानकरीशकेनही तेमां प्रथम खेदनामा दोषकहेछे खेदके०थाक जेम पंथेहिंडनांथाके तेनीपरे खेददोषेकरी क्रियामां मननी दृढताके० एकाग्रपणुं तेनहोय एटलेक्रियामां प्रणिधाननरहे अनेजे प्रणिधान ते धर्मनोमुख्यहेतुछे जेम करशण (खेती)मां पाणीने मुख्यहेतुछे तेमक्रियामां प्रणिधानने मुख्यहेतुछे ॥ १२ ॥

लेप्त्र वाउवुते तत्वथीथार्त्तध्यानछे तेमाटे जिह्वातिह्वा मोहोडु घालता ढोरनोसर रथरेछे जे खावा मृत्युहोय तेमूकीने बीजामा मुखघाले ॥ ६ ॥

विनाविघनजयसाधुनेरे ॥ नविअविछिन्नप्रयाणरे ॥ किरियाथी
शिवपुरीहोयरे ॥ केमजाणेअन्नाणरे ॥ प्रज्ञु० ॥ मुक० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेत्रीजो विघ्नजय बतावेछे विघनके०अतराय तेनो जयके०जीतवु तेवि जयनामागुणविना साधुने मात्रक्रियायेंकरी अविछिन्नप्रयाणकेमथाय एटले ... अविछिन्नपणे केमसधाये माटेविघ्नजयविना साधुनेक्रियाथी अविछिन्नप्रयाणे ... नहोय ए वातनो अज्ञानी केमजाणे हवेविघ्न तथाविघ्ननोजयदेखाडेछे ॥ ७ ॥

शीनतापमुखविघनछेरे ॥ बाह्यअतरव्याधिरे ॥ मिथ्यादर्श
नमोहनीरे ॥ मात्राम्हमध्याधिरे ॥ प्रज्ञु० ॥ मुक० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेविघ्नना भेदत्रणछे १ हीनविघ्न २ मध्यमविघ्न ३ उत्कृष्टविघ्न ... जेमधर्मकरता शीनके०टाढवाए तथातापके०तडकोलागे तेधर्ममा वि... बाह्यव्याधिके० रोगज्वरकासश्वासप्रमुख जे शरीरना रोगते मध्यमविघ्नकहिये ... शरीरना रोगतेविशेषविघ्नकरे तथात्रीजुउत्कृष्टु ... मिथ्यादर्शनके० मिथ्यात्वमोहनीय ए उत्कृष्ट धर्ममा विघ्नछे जेमाटे ... मिथ्यादर्शननो उदयथए जायतो धर्ममा महोटुविघ्नथाय ए विघ्नपूर्वे ... विघ्न माटे उत्कृष्टविघ्नकह्यु जेममार्गमा ... कांटालागेते जघन्यविघ्न, मार्गमा ... मध्यमविघ्न, मार्गमा दिग्मूढथायतेउत्कृष्टविघ्न तेमधर्ममापण पूर्वोक्तत्रणविघ्न ... प्रमाणके० मृडुके० हीन मध्यके० मध्यम अनेअधिके० ... ॥ एनोविघ्नदेखाड्या हवेविघ्नजय अनुक्रमेदेखाडेछे ॥ ८ ॥

आसनअशनजयादिकेरे ॥ गुरुयोगेजयतासरे ॥ विघनजो
... ॥ ... ज्ञानअभ्यासरे ॥ प्रज्ञु० ॥ मुक० ॥९॥

अर्थ ॥ आसनके० ... पूर्वोक्त शीनतापादिक विघ्ननो जयकरे ... पूर्वोक्त ज्वरप्रमुखविघ्ननोजयकरे तथा गुरुयोगकरी ... विघ्ननो जयकरे केमके गुरुयोगे समकितपामेज एविघ्नजोर ... परिणाम हढराखे शीनतापप्रमुखमा ... जेमाराउदयेथाऱ्या धर्मना ... निवचनना ॥ ९ ॥

विनयअधिकगुणसाधुनोरे ॥ मध्यमनोउपगाररे ॥ सिद्धिवि
नाहोवेनहीरे ॥ कृपाहीननीसाररे ॥ प्रभु० ॥ मुऊ० ॥१०॥

अर्थ ॥ हवे सिद्धिनामाआशय वखाणेछे जेपोताथकी अधिकगुणवंतासाधुनो वि-
नय तेसिद्धिनामाआशयविशेष आव्याविना होयनही तथा मध्यमके० मध्यमगुणवं-
ताहोय तेने उपकारकरे तेपण सिद्धियोगविना होयनही अने हीननीके० पोताथी
हीनगुणी तेनी सारके० प्रधान कृपाके० दयातेपण सिद्धियोगविनानहोय ॥ १० ॥

विणविनियोगनसंभवेरे ॥ परनेधर्मसंयोगरे ॥ तेहविनाज
नमांतररे ॥ नहिसंततिसंयोगरे ॥ प्रभु० ॥ मुऊ०॥११॥

अर्थ ॥ हवे विनियोगनामापांचमोआशयवखाणेछे विनियोगनामागुणविना परजी-
वने जेधर्मजोडवुं तेयोग नसंभवेके० नहोय तेविनाके० तेहविनियोगविना जनमांत-
रके० परभवनेविषे संततिके० परंपरानो संयोगते नहीके० नहोय एटले सिद्धनुंकार्य
नेविनियोगछे तेयावत् सर्वसंवरथाय तिहांलगे धर्मपरंपराचूटेनही अनेजोविनियोग
नामागुण नथयोहोय तोत्रूटीजाय एसर्वगुणतेज्ञानविनानहोय ॥ ११ ॥

किरियामांखेदकरीरे ॥ दृढतामननीनाहिरे ॥ मुख्यहेतुतेधर्म
नोरे ॥ जेमपाणीकृपिमांहिरे ॥ प्रभु० ॥ मुऊ० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे परमेश्वरनी वाणीमीठीछे तेवाणी स्तवनाद्वारें प्रभुनी स्तवनाकरे तेप्र-
भुनी स्तवनातो प्रभुजीनुं ध्यानकरियें एटलेते वीतरागनी स्तवनाजथइ तेप्रभुनुंध्यान
बेभेदेछे एकसालंबन बीजुंनिरालंबन तेमां सालंबनते चक्षुप्रमुखेंकरी जिनप्रतिमादि-
कनुंआलंबनकरीने समवसरणस्थजिनस्वरूपनुं ध्यानकरवुं ते तथा वीतरागना शुद्धनि-
रावर्ण आत्मप्रदेश समुदायने केवलज्ञानादिकस्वभावनुं ध्यानकरवुं तेनिरालंबनध्यान
कहियें शुद्धपरमात्मगुणध्यानंनिरालंबनं इतिवचनात् हवेइहांतो सालंबनध्याननी वा-
तछे सालंबन केम थायतेकहेछे जेजूदाजूदा जीवनी अपेक्षायें आठचित्तनो त्यागकरे
एके ध्यानथाय तेआठचित्तनानामकहेछे यडुक्तं चतुर्दशेषोडशके १ खेदो २ द्वेग ३
क्षेपो ४ त्थान ५ भ्रांत्य ६ न्यमु ७ डुगा ८ संगैः ॥ युक्तानिहि चित्तानिप्रबंधतोवर्जयेन्मति-
मान् ॥१॥ ए आठचित्तने दोषकरीने ध्यानकरीशकेनही तेमां प्रथम खेदनामा दोषक-
हेछे खेदके०थाक जेम पंथहिंडतांथाके तेनीपरे खेददोषकरी क्रियामां मननी दृढताके०
एकाग्रपणुं तेनहोय एटलेक्रियामां प्रणिधाननरहे अनेजे प्रणिधानते धर्मनोमुख्यहेतुछे
जेम करसण (खेती)मां पाणीते मुख्यहेतुछे तेमक्रियामां प्रणिधानते मुख्यहेतुछे ॥ १२ ॥

वेठापणजेऊपजेरे ॥ किरियामांउद्वेगरे ॥ योगद्वेषथीते
क्रियारे ॥ राजवेठसमवेगरे ॥ प्रभु० ॥ मुज० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे उद्वेगनामा बीजो दोषवखाणेछे खेदविनापण वेठायकों तेनीपेरे उद्वेगदोषमा पणजाणवु वेठाथका पणजेक्रिया करे तेमा उद्वेगथाय क्रियाकरता तेप्राणीने सुखजेचित्तनीप्रसन्नता तेकेमउपजे जेवारे क्रियामा तेवारे द्वेषउपनो तेद्वेषथी राजानी वेठनीपेठे कथंचित्क्रियाकरे वेगके० करे एहीरीते राजवेठनी पेठे करे तेने जन्मांतरे योगीनाकुलने विषेजन्मपण एअर्थषोडशकमाजोइलेवो ॥ १३ ॥

भ्रमथीजेहनसाचेरे ॥ काइअकृतकृतकाजरे ॥ तेहथीशुभ
किरियाथकीरे ॥ अर्थविरोधिअकाजरे ॥ प्रभु० ॥ मुज० ॥ १४॥

अर्थ ॥ हवे यद्यपि षोडशकमा भ्रांतिनामा पाचमो दोषकह्योछे तथापि ए यजीयेंइहांत्रीजोभ्रांतिनामा दोषवर्णव्योछे · · · · · · तिनो अर्थकहेछे भ्रांतिके०वस्तु अन्यहोय तिहांअन्यजाणे जेम शुक्ति · · · जतनी भ्रांतिथाय तद्वत् भ्रमेकरी जेवस्तु साचरेनही जेमेंधर्मकृत्यकस्यु · · · उपलक्षणथी मेंपाठउचर्यो के नथीउचर्यो इत्यादि तेशुभक्रियाथकी पण अर्थ· पवुजे अकाजके०इष्टफलरूपजेकार्य ते नथाय तेनेअकाजकहिये ॥ १४ ॥

शातवाहितावियणहोवेरे ॥ जेयोगेउठानरे ॥ त्यागयोगछे
तेहथीरे ॥ अणउक्मातुध्यानरे ॥ प्रभु० ॥ मुज० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे उठाननामाचोथो दोषवर्णवेछे उठानके०चित्तनी अप्रशांतता नप्रमुखनी उत्सुकतायकी जेम कोइक पुरुष मदिराप्रमुखेकरी मदावष्टब्धथयो नीपेठे जेयोगने उठानदोषेकरीने शातवाहितावियणहोयके०शातवाहिता न होय जेक्रियाकरे तेमांउद्वेगरहे पण ठरणनहोय तेक्रियाकेवीछे के त्यागयोग योग्यछे पणतेहथीके०तेत्यागयोगक्रियाथी अणउक्मातु ध्यानके०उक्मातु तजातुनथी ध्यानछे जेम कोइक प्राणीयें दीक्षालीधीहोय अने सर्वथामूलोत्तरगुण निर्वाह अक्षमछे तेप्राणीनेविधिपूर्वक जेमश्रावकाचार ग्रहवानोउपदेशआपीयें ते लिंग वायोग्यछे पणलोकनी निंदाप्रमुखेअणउक्मातुछे उक्तंचउपदेशमालाया ॥ जइनतरि वेउ ॥ मूलगुणनरउत्तरगुणन्न ॥ मोत्तूणतोतिभूमि ॥ सुसावगत्तवरतराग ॥ १॥

विचेविचेवीजाकाजमांरे ॥ जाएमनतेखेपरे ॥ ऊखणतांजि
मशालिनुंरे ॥ फलनहीतिहांनिर्लेपरे ॥ प्रनु० ॥ मुऊ० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवे पांचमो क्षेपनामादोपकहेठे जेक्रियामांमीहोय तेक्रियामां वच्चेवच्चे बीजाकार्यमां मनजाय तेखेपकहियें ऊखणतांके०वारंवार ऊपामेलीऊपामेली एवीजे शालितेनुं निर्लेपके०चोखुंफल नहीके०नथाय एटले एकवारजे एकवार शालि ऊखेमीने वावेतो फलथाय पणवारंवारऊखेमीने वावेतो फलनथाय तेमइहांवारंवार प्रारंनित क्रियामूकीने अन्यक्रियामांमनजाय तेफलनपामे ॥ १६ ॥

एकजठामेंरंगथीरे ॥ किरियामांआसंगरे ॥ तेहजगुणठा
णेथितिरे ॥ तेहथीफलनहीचंगरे ॥ प्रनु० ॥ मुऊ० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवे आसंगनामाठठो दोपकहेठे आसंगके०जेक्रियाकरतोहोय तेमां इहमेसुंदरं एहवो जेरंग तेआसंगनामादोपकहीयें जोपणतेअनुष्ठानशास्त्रोक्तठे तोपण तेमां गनुंजे घरठे तेदोपरूपठे तेहजगुणठाणेथितिके० तेवेनेतेवेजगुणठाणेरहे पण आगल ठाणो वधेनही जेमश्रीमहावीरऊपर गौतमस्वामीने नक्तिरागहतो तेथीतेजगुणठाणे स्थितिरही पणमोहनीकर्मनुंउन्मूलनकरीने केवलज्ञानरूपजेफलते चंगके०मनोनथयुं माटे आसंगते दोपता जाणवी एअर्थपोमशकवृत्तिमांजोजो ॥ १७ ॥

मांमीकिरियाअवगणीरे ॥ वीजेठामेहर्परे ॥ इष्टअर्थमां
जाणीयेंरे ॥ अंगारानोवर्परे ॥ प्रनु० ॥ मुऊ० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवे अन्यमुद्नामा सातमो दोपकहेठे जेप्रारंनितकार्यथकी अन्यस्थानके तेअन्यमुद्दोप जेमांमीकिरियाके०जेक्रियाकरेठे ते अवगणीके०तेनो आदरमूकीने जेठामेंहर्पके०बीजीक्रियामां हर्पराखे एटले चैत्यवंदनकरतोहोयने सामायकमां हरे तेप्राणीने इष्टअर्थके०वांठितअर्थमां अंगारानोवर्पके०अंगारानो वरसादवरसेठे लेमांमेलीक्रियामांजे अनादरठे तेसर्वेदोपनुंमूलठे ॥ १८ ॥

रोगहोएसमजणविनारे ॥ पीमाजंगसुरूपरे ॥ शुद्धक्रिया
उवेदथीरे ॥ तेहवंध्यफलरूपरे ॥ प्रनु० ॥ मुऊ० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ हवे आठमो रोगनामादोप कहेठे तेपीडाजंगसुरूपके०पीडासुरूप अथवा गसुरूप एमसमजणविनाजेपदठे तेशुद्धक्रियाने जोडीयें तेवारेएवो अर्थथायजे समणविनाशुद्धक्रियानो उछेदकरे पण अशुद्धक्रियाकरेखरो तेवारे शुद्धक्रियाने पीमायी अथवा शुद्धक्रियानोजंगथयो एवे अर्थरोगनाथया एटले रोग दोपथके शुद्ध

क्रियानो उछेद ते विनाशकरे तेवंध्यफलके०तेअशुद्धक्रिया वांजियाफलरूपथाय ॥१९॥

मानहानीथीदुखदिएरे ॥ अगविनाजेमजोगरे ॥ शातोदात्त
पणाविनारे ॥ तेमकिरियानोयोगरे ॥ प्रभु० ॥ मुज० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ एऊपर कह्याआठेदोष रहित जेहोय तेने शातादिकगुणआवे माटे एक शातनीजोउदात्त एवेगुणनलाणेठे तेमानीपुरुषने जेममाननी हाणीथाय एटले दुःख उपजे तथाअगविनाके० अगोपागेहीन होय अनेजोगनी सामग्रीस्त्रीप्रमुख मली होय ते जेम चित्तने दुःखआपे अथवाजेम जोगनी सामग्री मलीहोय तोपण मान हानी थीके० प्रमाणहीन अधिका उंचा जोगवे तो दुःखआपे तथाअगविना पण दुःखथाय तेम शातअनेउदात्त एवेगुण आव्याविना क्रियानो योगपणएवो जाणवो ॥ २० ॥

शाततेकषायअभावथीरे ॥ जेउदात्ततेगभीररे ॥ किरियादोष
त्यजीलहेरे ॥ तेसुखजशभरधीररे ॥ प्रभु० ॥ मुज० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ शाततेकहियेजे कषायनोअभाव अनेउदात्ततेगभीरहोय एवाप्राणी जेहोयते क्रियामा लागता दोषत्यजीने लहेके०पामे ते धीरके०धीरपुरुष सुखनोअने यशनो भरके०समूहपामे ॥ २१ ॥ हवेएढालमाशात तथा उदात्तगुणवखाण्या तेशात उदात्त गुणतो धर्मरूपछे तेधर्मरूपरत्ननी योग्यताकोनेहोय तेढुहालमाकहेछे ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ दोहा ॥

एकवीस गुण परिणमे ॥ जास चित्त नितमेव ॥
धरमरतननी योग्यता ॥ तास कहे तू देव ॥ १ ॥

अर्थ ॥ जेनाचित्तमा नितमेवके०निरंतर एकवीसगुणपरिणम्याहोय तेजीवने धर्मने देशविरति सर्वविरतिरूपरत्न तेनी योग्यताहोय एम हेदेव तमेकहोछो ए एकवीसगुण उप्पधावकनाछे तेसहेपेकहेछे ॥ विस्तारथागलकहेशे ॥

१ खुदनही २ वलीरूपनिधि ॥ ३ सोम्म ४ जनप्रियजधन्य ॥
५ क्रूरनही ६ भीरुवली ॥ ७ असठ ८ सार दखिन्न ॥ २ ॥

अर्थ ॥ १ क्षुद्रमतिनहोय एटले गभीरहोय २ रूपनोनिधानहोय एटले पचेंद्रिय स्पष्ट होय ३ सोम्म एटले सोम्य होय तेस्वभावथपापकर्मिहोय ४ जनप्रियजके०लोकने वल्लभ होय ते सदासर्वदासदाचारीहोय धन्यके०एप्रसंगमाकरवायोग्यछे ५ क्रूरनही के०अक्लिष्ट

चित्तहोय एटलेसंक्लेशपरिणामीनहोय ६ आलोकपरलोकनाअपायथी जीरुके०बीहीतो रहे७ असठ एटलेपरनेठगेनही ७ सारके०प्रधान दखिन्नके०दाक्षिण्यगुणवंतहोय एटले परनीप्रार्थनानोभंगनकरे ॥ २ ॥

ए लज्जालुअं १० दयालुअं ॥ ११ सोमदिठिमज्झथ्थ ॥ १२ गुण
रागी १३ सतक्थ १४ सुपख्ख ॥ १५ दीरघदरशिअथ्थ ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ए लज्जालुअंके०स्वकुलादिकनी लज्जावंत एटलेअकार्यवर्जक १० दयालुअं के०प्राणीमात्रनी अनुकंपावंत ११ सोम्यदृष्टिते यथावस्थितविचारनी दृष्टिछे अने दूरदोषत्यागीते सोम्यदृष्टिकहियेंतेज मझ्झछके०मध्यस्थ राग द्वेष रहित एटले सोम्यदृष्टि अने मध्यस्थ एपदे एकज गुण कहियें १२ गुणरागी तेगुणीजीवनो पक्षपाती होय १३ सतकथ ते जली कथानो कहेनार एटले धर्मकथावाहालीछे जेने १४ सुपक्खके०सुशील अनुकूल परिवारयुक्त होय १५ दीरघदरसीके०अनागतकाल विचारीने परिणामें सुंदरकार्यकारी होय अक्के०ए अर्थछे ॥ ३ ॥

१६ विशेषज्ञ १७ वृद्धानुगत ॥ १८ विनयवंत १९ कृतजाण ॥
२० परहितकारी २१ लब्धलख्ख ॥ गुणएकवीसप्रमाण ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ १६ विशेषज्ञके०पक्षपातरहितपणे गुणदोषविशेषनो जाण १७ वृद्धानुगतके० परिणतमतिपुरुषने सेवनारोहोय १८ विनयवंतके०गुणाधिक पुरुषनेविषे गोरवकर्त्ता १९ कृतजाणके०कस्याग्गुणनोजाण २० परहितकारीके०निर्लोभी थको परोपकारकरे एटले जेदाक्षिण्यगुण तेपरनो प्रार्थ्यो उपकारकरे अने परहितकारी तेपोताथी उपकारकरे एटलुं आठमा गुणथी वीसमा गुणमां विशेषजाणवुं २१ लब्धलक्षगुणते धर्माधिकारी तेहनोजावार्थ लब्धइवप्राप्तइवलदयोलक्षणीयोधर्मानुष्टानव्यवहारोयेनसलब्धलक्ष्यःसुशिक्ष्यःसुशिक्षणीयइति एएकवीसगुणसंपन्न जेजीव तेधर्मरत्नने योग्यहोय ॥४॥

खुद्द नही ते जेह मने ॥ अति गंजीर उदार ॥ न
करे जन उतावलो ॥ निज परनो उपगार ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेए एकवीसगुण अर्थ विस्तारें कहेछे खुद्दनहीतेके०अक्षुद्रतेनेकहियें जेनुं मन अतिगंजीरहोय उदारहोय तुछ न होय केमकेजे उतावलो मनुष्यहोय ते पोताने तथा परने उपकार करीशकेनही एटले गंजीर होयते पोताने तथा परने उपकार करे पण उतावलो होयते नकरीशके एप्रथमअक्षुद्रगुण ॥ ५ ॥

शुन्न संघयणी रूपनिधि ॥ पुरण अंग उपंग ॥
ते समरथ सेजें धरे ॥ धर्म प्रजावन चंग ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ शुजके०उत्तम सघयणवनहोय रूपनु निधानहोय सपूर्ण अगोपागहोय प चेंद्रिय परवर्माहोय ते धर्मकरणी करवाने सेहेजे समर्थहोय ते धर्मनी प्रजावनाकरे इह्ना नदिखेण तथा हरीकेशीप्रमुख साथेविरोध न गणवो केमके तेपणसपूर्ण अवयव वतहता तथा आवचनते प्रायिकछे जोशेपत्रीजागुणयुक्तहोयतोरूपनुप्रयोजन नथी॥६॥

पाप कर्म वरते नही ॥ प्रकृति सोम्य जगमित्त ॥
सेवनीक होवे सुखे ॥ परने प्रशम निमित्त ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ पापकर्म तेआक्रोश वध हिंसा चोरीप्रमुखनेविषेनप्रवर्ते आजीविका प्रमुख कारण टालीने सेहेजे सोम्यजाव अवीहामणो सर्वजगतनेविषे मित्रताहोयएवापुरुषने सुखेलोक सेवीशके परने प्रशमके०समतानु कारणहोय एत्रीजो गुणथयो ॥ ३ ॥

जन विरुद्ध सेवे नही ॥ जन प्रिय धर्मसूर ॥ मलिन
जाव मनथी तजी ॥ करी शके अक्रूर ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जनशब्देलोककहियें तेलोकमाइहलोक तथा परलोक अने उजयलोक पण आवे एटले एजावजे इहलोक विरुद्ध नसेवे यडुक्त सव्वस्सचेवनिंदा ॥ विसेसर्उतहय गुणसमिद्धाण ॥ उज्जुधम्मकरणहसण ॥ रीढाजणपूयणिज्जाण ॥ १ ॥ बहुजणविरुद्धसंगो ॥ देसाचारलंघणंतहय ॥ उव्वणजोगोयतहा ॥ दाणाइविपयडमनेर्उ ॥२॥ साहुवसणमितो ॥ सोसइसामठमिथ्यपडिआरोथ ॥ एमाइयाइइह ॥ लोगविरुद्धाइंनियाणति ॥३॥ तथा परलोकविरुद्धजेखरकर्मादि तेपन्नरकर्मादिकतथा उजयलोकविरुद्ध द्यूतादिक सात व्यसन नसेवे तोज जनप्रियके०लोकने प्रिय तथा धर्मे सूरके० धर्मनोअधिकारीहोय ए चोथो गुणकह्यो मलिनजाव मनथी तजीने धर्मकरीशके एटलु धर्मपद बाहारथी लेवु तेअक्रूर कहियें केमके लोकप्रिय तथा अक्रूरगुणनु लक्षण धर्मरत्नप्रकरणमध्ये एमज वखाण्युछे यथा ॥ इहपरलोयविरुद्ध ॥ नसेवए दाणविणयशीलढो ॥ लोयप्पिर्उजणाण ॥ जणेइधम्ममिबहुमाण ॥ १ ॥ कूरोकिलिठजावो ॥ सम्मधम्मनसाहिर्उचरइ ॥ इयसोनइहजोगो ॥ जोगोपुणहोइअक्रूरो ॥ २ ॥ एगाथाने अनुसारें अर्थकर्योछे वली बुद्धिअविरुद्धपणे सुजेतोविशेषकरजोएपाचमोगुण ॥ ८ ॥

इह परलोक अपायथी ॥ बीहे जीरुक जेह ॥ अप
यशथी वली धर्मनो ॥ अधिकारी छे तेह ॥ ए ॥

अर्थ ॥ आलोक तथा परलोकना अपायथीके०कष्टथी बीहे तथा अपयशथी बीहे तेजीरुककहियें तेपुरुष धर्मनो अधिकारीजाणवो एछठो गुणकह्यो ॥ ए ॥

असठ न वंचे परप्रतें ॥ लहे किर्त्ति विश्वास ॥ जाव
सार उद्यम करे ॥ धर्म ठाम ते खास ॥ १० ॥

अर्थ ॥ असठके०मायावी नही एवो गुणवंत तेपरने वंचेके०ठगेनही तिवारे लोकमां कीर्त्तिपामे प्रशंसवायोग्यहोय अने लोकपण तेनो विश्वासकरे वली जाव सारके० पोतानुंचित्त रीझवे पण परनुं चित्तरिझववामाटे उद्यमनकरे तथाचोक्तं जूयांसो जूरिलोके स्युः ॥ चमत्कारकरानराः ॥ रंजयंतिस्वचित्तं ये ॥ जूतलेतेतुपंचषाः ॥ १ ॥ इत्यादिक तथा धर्मठामनेविषे खासके०रुडो उद्यमकरे ॥ एसातमोगुण ॥ १० ॥

निज कारय गंमी करी ॥ करे अन्य उपकार ॥
सुदखिन्न जन सर्वने ॥ उपादेय व्यवहार ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ वली जेपोतानुं कार्य गंमी एटले पमतुंमूकीने पण परउपकारकरे जेजे इहलोक परलोकनेविषे हितकारीछे तेवाउपकारकरे पण पापहेतुयें नप्रवर्त्ते ते सुदाक्षिण्यनामाआठमोगुण कहियें तेजन सर्वलोकने उपादेयव्यवहारके०आदेयवाक्य (जेनुं कहेलुं वधामाने एवो) होय व्यवहारते वाक्यव्यवहार ॥ ११ ॥

अंगीकृत न त्यजे त्यजे ॥ लज्जालुउ अकाज ॥
धरे दयालु धर्मनी ॥ दयामूलनी लाज ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ धर्मकार्य जेअंगीकारकर्युं होय तेनत्यजे अने अकाजके०जेअकार्यहोय ते त्यजे तेने लज्जालु नामेंनवमोगुण कहियेंतथा दसमोदयालु तेने कहियेंजे दयामूल धर्मछे तेनी लाज धरे एटले दयामूलधर्मनलोपे ॥ १२ ॥

धर्म मर्म अवितथ लहे ॥ सोमदिठि मजऊ ॥ गु
णसंयोग करे सदा ॥ वरजे दोष अणाऊ ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे मध्यस्थ सोमदृष्टिनामा अग्यारमो गुणवखाणेछे मध्यस्थते कोइ दर्शनउपर पक्षपातनथी तथा सोमदिठीके०द्वेषरहित दृष्टिदर्शन छेजेने ते मध्यस्थ सोमदृष्टिकहियें तथा धर्मनो जेमर्म तेअवित्तथके०यथार्थ लहे जाणे एटले सद्गुण निर्गुण अल्पगुण वहुगुण तथासर्व पांखंमीनिरुपित जेधर्म ते कनक परिक्षक पुरुषनीपेठे जाणे अनेजेज्ञानादिकगुण तेनो सदासंबंधकरतोरहे तथाअनर्थनाकरनारादोष तेसर्वेवर्जे तेअग्यारमोगुण ॥ १३ ॥

गुणरागी गुण संग्रहे ॥ दूसे न गुण अनंत ॥ उ
वेखे निर्गुण सदा ॥ वहुमाने गुणवंत ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ गुणनो रागीहोय धर्मऊपर रागधरे तथा गुणनो संग्रहकरे नवागुण आगे आगे गुणअनंतके०घणागुणवतने दूसेनके०दुखवेनही एटले एभावजे गुणघणाहोय अने कदाचित् कोइक दोषहोय तोपण तेने दु खवेनही यत भूरिगुणाविरलच्चिय॥ इक्कगुणोविहुजणोनसवच्छ ॥ निद्दोसोणेविजह ॥ पसंसिमोथेवदोसेवि ॥ १ इत्यादि तथा निर्गुणने उवेखेके०दुखवेनही तेमजस्तवे पणनही अनेगुणवत जे देशविरतिसर्वविरतिवत तेनो बहुमानकरे छे धन्यए धन्य एनो अवतार इत्यादिक गुणरागीनामा बारमोगुणथया

अशुभ कथा कलुषित मति ॥ नासे रतन विवेक ॥
धर्म्मार्थि सतकथा हुए ॥ धर्मनिदानविवेक ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ अशुभकथाजे स्त्रियादिकनीकथा तेणेकरीने कलुषितमति थयीछे जेहनी तेप्राणीने विवेकरूपरत्न सदसद्वस्तुनु जेपरिज्ञान तद्रूपरत्न नासे तेमाटे धर्मार्थियको सत्कथकहोय तीर्थंकर गणधर महर्षिप्रमुखनाचरित्रकहे जेधर्मार्थि तेधर्मनो अर्थि थयो ए सत्कथाजधर्मनुनिदानछे विवेकके०विभागछे जेअशुभकथानो त्याग अने शुभकथाकरवी एतेरमोगुण ॥ १५ ॥

धर्मशील अनूकूल यश ॥ सदाचार परिवार ॥
धर्म सुपरख विघने रहित ॥ करी शके ते सार ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवे सुपक्षयुक्तनामा चउदमोगुणकहेछे ते जेनोपरिवारते धर्मशील के० धर्मकरणारा आचारवालोछे अनुकूलके०धर्ममाविघ्न न करे तेनो तथा यशवंत अने सदाचारीपरिवारहोय एनो सुपरख० के सुपक्षगुणवत विघ्नरहितहोय ते पुरुष सारके०प्रधानधर्मने धर्मने प्रतेकरीशके ॥ १६ ॥

माटि मति परिणाम हित ॥ दीरघदर्शी काम ॥
लहे दोष गुण वस्तुना ॥ विशेषज्ञ गुणधाम ॥१७॥

अर्थ ॥ हवे दीर्घदर्शिनामा पन्नरमो गुणकहेछे ते जे कामके०कार्यमाहे तेपरिणामे हितकारीहोय टतउकणथी तेमा लाभघणोहोय अनेक्लेश अल्पहोय बहु लोकने प्रशंसनीयहोय यत आढत्तदीहदंसी ॥ सयलपरिणामसुंदरकज्ज ॥ बहुलाभमप्पकेस॥ सलाहणिज्जंबहुजणाण ॥१॥ इतिधर्मरत्नप्रकरणे हवेविशेषज्ञ नामा सोलमोगुणकहे छे जे लहेके०जाणेवस्तुना गुणदोष अटले पदार्थजेपक्षपातविना वस्तुना गुणदोष समजने जाणे जोमध्यस्थनहोय तोगुणमा दोषकाढे अनेदोषमा गुण काढे पण मध्यस्थपुरुषने यथास्थितजाणे एवोविशेषज्ञ तेगुणनुं धामके०घरहोय ॥ १७ ॥

वृद्धानुगत सुसंग ते ॥ होवे परिणत बुद्धि ॥ विनय
वंत नियमां करे ॥ ज्ञानादिकनी शुद्धि ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवे वृद्धानुगतनामा सत्तरमो गुणकहेछे ते जे परिणतबुद्धिवान परिपक्व बुद्धिनो धणीहोय तेपापना आचारनेविषे नजप्रवर्त्ते अनेगुणवंतजे वृद्ध होयतेने अनुगनके०अनुजायीयें प्रवर्ने एटले वृद्धनी संगतकरवी तेसुसंगतकहियें तेसुसंगते करी पोते पण परिणतबुद्धिवालो थाय परिपक्वबुद्धिवानथाय यतः वुढोपरिणयबुद्धी ॥ पावायारेपवत्तइनेव ॥ वुढाणुगोविएवं ॥ संसग्गिकयागुणाजेण इति हवेविनयनामा अढारमो गुणकहेछे तेविनयवंतप्राणी नियमांके०निश्चेज्ञानादिकनीशुद्धिकरे एटले एत्रावजे सर्वज्ञानादिकगुणनुं तथा मोक्षनुंमूलतेविनयछे माटेविनयगुणजोइये यतः विणउंसव्वगुणाणं ॥ मूलंसन्नाणदंसणाईणं ॥ मुक्खस्सयतेमूले ॥ तेणविणीउंइहपसछो ॥ १८ ॥

गुण जोडे गुरु आदरे ॥ तत्वबुद्धि कृतजाण ॥ पर
हितकारी परप्रतें ॥ थापे मार्ग सुजाण ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ हवेकृतज्ञनामाओगणीसमोगुणकहेछे तेजेगुणनेविषे तथा धर्मनेविषे बीजानेजोडे तथा धर्मगुरुऊपर घणोआदरकरे तथा जेने तत्व ग्रहवानी बुद्धिहोय तेने कृतजाणके०कृतज्ञ कहियें हवे वीसमो परहितकारीनामा गुणकहेछे जे परप्रतें धर्ममार्गेथापे अने सुजाणके०डाह्याहोय वलीजेणेधर्ममार्गजाण्योछे एटले गीतार्थछे केमके जोअगीतार्थहोयअनेतेपरनेहितकरवा चाहे तोपण अहितथाय यतः किंसत्तोकछयरं ॥ जंसंममनायसमयसप्पावो ॥ अन्नंतुदेसणाए ॥ कठंयरागंमिपाडेइ ॥१ ॥ १९ ॥

शीखे लखे सुखें सकल ॥ लब्धलक्ष शुभकाज ॥ एम
एकवीस गुणे वर्यो ॥ लहे धर्मनुं राज ॥ २० ॥

अर्थ ॥ हवे लब्धलक्षनामा एकवीसमो गुणकहेछे तेजे शीखेके०थोडाकालमां आगमादिक भणे तथा लखेके०जाणे सुखेंके०अनायासें वगरप्रयासें सकलके०समस्त शुभकाजजे धर्मनाकार्य तेने लब्धलक्षकहियें यतः लक्खेइलद्धलक्खो ॥ सुहेणसयलंपिधम्मकरणिज्जं ॥ दक्खोसुसासणिज्जो ॥ तुरियंचसुसिक्खिउंहोइ ॥ इतिधर्म रत्नप्रकरणे एरीते एकवीसगुणे करीविराजित होयते धर्मनुंराज्य लहेके०पामेइति ॥

पूरण गुण उत्तम कह्यो ॥ मध्यम पादें हीन ॥ अर्द्ध
हीन जघन्य जन ॥ अपर दरिद्री दीन ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ एपूर्णएकवीसगुणे सहितहोय तेउत्तमकहियें अने पादेंके०चोथेभागेंहीन

होय तेमध्यम कहियें तथा अर्द्धगुणेहीनहोय तेजघन्यकहिये अपरकें०एअर्द्धथकी हीनगुणी होयते दरिद्री दीनजाणवा केमके दरिद्री होयते पोतानाउदरजरवानी चिंतायें व्याकुलपणेकरी रत्नना क्रयविक्रयनी चिंतानकरीशके तेम हीनगुणीते धर्मरत्ननोमनोरथ पणनकरीशके यत पायऊगुणविहिणा ॥ एएसिमज्झिमावरानेया ॥ इत्तापरेणहीणा ॥ दरिद्दपायामुणेयवा ॥ १ ॥ २१ ॥

अरजे वरजी पापने ॥ एह धर्म सामान्य ॥ प्रजु
तुऊ जक्ति जश लहे ॥ तेह होए जन मान्य ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जे पापने वर्जिने एसामान्यधर्म जेश्रावकधर्म तेने अरजेके०उपार्जे ते प्राणी हेप्रजु तारी जक्तिकरीने जशलहेके०जशप्रतिष्ठापामे एटले एवागुणवतहोय तेतारी जक्तिकरेज तथा तेप्राणी सर्वलोकने मान्यहोय ॥ २२ ॥ ए एकवीस गुणेसहितहोयते जावश्रावकपणुपामे माटे जावश्रावकना गुणवर्णवानेबारमीढालकहेछे ॥

॥ ढालबारमी ॥

॥ चोपाइनीदेशी ॥

एकवीसगुणजेणेलह्या ॥ जेनिजमर्यादामारह्या ॥ तेह
जावश्रावकनालहे ॥ तसलक्षणएतुप्रजुकहे ॥ १ ॥

अर्थ ॥ ए एकवीसगुणने जेपाम्याहोय वलीजे पोतानी मर्यादामा रह्याहोय अथवा शीलमारह्याहोय तेजप्राणीजावश्रावकपणुपामे एटले एजावजे पूर्वे कह्यथावयोग्यहोय तेज जावश्रावकथाय ते जावश्रावकना लक्षण एप्रमाणेहेप्रजुवीतरागपरमेश्वर तमेकह्याछे तेप्रमाणे आगल कहियेंछेये ॥ १ ॥

कृतव्रतकर्मांगीलाधार ॥ गुणवतोनेऋजुव्यवहार ॥ गु
रुसेवीनेप्रवचनदक्ष ॥ श्रावकजावेएप्रत्यक्ष ॥ २ ॥

अर्थ ॥ इहां मार्गानुसारीना पात्रीस गुण ज्ञानविमलसूरीये लख्याछे पण निशीथसूत्रादिकमा प्रयोजननथी तथापनुमूल धर्मरत्नप्रकरणकह्युछे तेमापणनथी माटे अमेलख्यानथी १ कर्युछे व्रतरूपकार्यजेणे तेकृतव्रतकर्माकहिये २ शीलवंतहोय ३ विवक्षितगुणवानहोय ४ ऋजुव्यवहार एटले सरलमनहोय ५ गुरुनीशुश्रूषा एटले सेवाकरे ६ प्रवचनके० आगममाकुशलहोय डाह्योहोय एवलक्षण जेमा होय तेप्रत्यक्षे जावश्रावक कहियें यत कयवयकम्मोतह ॥ शीलवंचगुणवंच ऋजुववहारी गुरुसुस्सूसोपवयण ॥ कुसलोखलुजावगोसावो ॥ १ ॥ २ ॥

श्रवणजाणणाग्रहणउदार ॥ पडिसेवाएचारप्रकार ॥ प्रथ
मभेदनामनधारीयें ॥ अर्थतासइमअवतारीयें ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे उपरना छ लक्षणमांथी प्रथमकृतव्रतकर्मानामें लक्षणना चारभेद छे १ श्रवणके०सांभलवुं २ जाणणाके०जाणवुं ३ ग्रहणके०अंगीकारकरवुं उदारके०विस्तारपणे ४ पडिसेवाके०सम्यक्पालवुं एचारभेदकह्या एप्रथमभेदजेकृतव्रतकर्मानामे तेना अवधारीयें तासके० तेनाअर्थ एम अवतारीयेंके०उतारीयें ॥ ३ ॥

बहुमानेनिसुणेगियछ ॥ पासेभंगादिकबहुअछ ॥
जाणगुरुपासेंव्रतग्रहे ॥ पालेउपसर्गादिकसहे ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ इहां बहुमान कह्युं पण विनयतथाबहुमान बंने लेवां यतः विणयबहुमाणसारं ॥ गीयछाउंकरेइवयसवणं ॥ इतिवचनात्. गीयछपासेके०गीतार्थपासेथीजेनिसुणेके०सांभले तेविनय तथाबहुमानसहित सांभले इहांचोभंगीकहेछे १ कोइकधूर्तमां वंदनादिक बाह्य विनयतोहोय पणगुरुकर्माके०भारीकर्मिमाटेबहुमान अंतरप्रीति नहोय२ कोइकमां बहुमानहोय पण विनयकरवानी शक्तिनहोयतेग्लानादिक जाणवा ३ कोइक आसन्नसिद्धियाजीवमां विनय तथा बहुमान बेहु होय ४ कोइकभाकरापापकर्मीमां विनय तथा बहुमान एके नहोय इहां व्रतसांभलवाने कह्युं पण उपलक्षणथी सर्व शास्त्र सांभले सूत्रतेगीत अने तेनुं व्याख्यानतेअर्थ अने जेअर्थसहित तेगीतार्थ यतः गीयंभन्नइसुत्तं ॥ अछोतस्सेवहोइवक्खाणं ॥ गीएणयअछेणय ॥ संजुत्तोहोइगीयछो ॥१॥ एटले गीतार्थपासे सांभलीने एपहेलोभेद भंगादिक बहु अर्थ जाणेके०व्रतनाभांगा प्रमुखबहुअर्थसमजे जेम पच्चक्खाणना ४९ भांगाने त्रिकालनागणियें तेवारे१४७ भांगा थाय वली व्रतआश्रीगणियें तेवारे एकव्रते ६ बेव्रते ४८ त्रणव्रते ३४२ इत्यादिक यावत्बारव्रते १३८४१२८७२०० भांगाथाय अत्रगाथा ॥ तेरसकोडीसयाइं ॥ चुलसीकोडी-लंबारसयलक्खा ॥ सगसीइसहस्सदोसय ॥ सव्वग्गंछक्कभंगीए ॥१॥ नवभंगीयेंएकव्रते ९ बेव्रते ९९ यावत्बारव्रते ९९९९९९९९९९९९ अने एकवीसभंगीकरियेंतेवारें बारेव्रते १२८५५००२६३१०४९२१५ थाय ४९ भंगेबारेव्रते २४४१४०६२४९९९९९९९९९९९९ भांगाथाय १४७ भांगायेंबारेव्रते ११०४४३६०७७१९६११५३३५६९५७६९५ भांगाथाय सर्वेअक्षरसंचारणायें जाणवा. इत्यादिक भांगानुं ज्ञानकरे, आदिशब्दें व्रतनाअतिचार जाणे, एबीजो भेदविस्तारे धर्मरत्नप्रकरणथी जाणवो पछीगुरुपासेथी व्रतअंगीकारकरे. आणंदादिकश्रावकनीपेठे इत्वर तेचोमासाप्रमुखना अथवा यावत्कथिकते जावजीवना

एत्रीजोन्नेदथयो, अने पालेकें०सम्यक्पाले तथा उपसर्गादिक जेआवे तेसर्व कामदेव श्रावकनीपेठेसहे, एचोथोन्नेद कह्यो एकृतव्रतकर्माना चारन्नेदजाणवा ॥ ४ ॥

सेवेआयतणाउद्देश ॥ परगृहतजेअणुप्रडवेस ॥ वचन
विकारत्यजेशिशुलील ॥ मधुरनणेएषटविधशील ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेत्रीजाशीलव्रतनामालक्षणना ठन्नेदकहेछे सेवेआयतणाकें०साधर्मिकने मलवानु स्थान सेवे यत ॥ जन्नसाहम्मियाबहवे ॥ शीलवंतावहुसुया ॥ चरित्तायारस पन्ना ॥ आययणतवियाणाहि ॥१॥ तेवो उद्देशकें०स्थानक सेवे पण जिनवनी पालीप्रमु खसेवेनही, एपहेलोन्नेद वली परगृहतजेकें०पारका घरमापेसतो नफरे, केमके कांइवस्तु खोवाय त्यारेतेनाउपर शकाआवे पण कारणे कोइना घरमाजाय तेनात जूदीछे, ए बीजोन्नेद तथा अणुप्रडवेसकें०उन्नटवेषनपहेरे जेथकी लांठीआ ठोलीआ आदमीमा गणाय तेनकरे, एत्रीजो न्नेद वली वचनविकार त्यजेकें०जेथकी रागद्वेष वधे एवा विकारना वचनबोलेनही, एचोथो न्नेद अनेशिशुलीलकें०बालक्रीमा, जुगटु रमवु इत्या दिक त्यजे, एपाचमोन्नेद वली मधुरन्नणेकें०मीठुबोले गमेतेवु कार्यपके तोपण हे सौ म्य, हेसुदर, आकामकरशो एमकहे ए ठ न्नेद शीलवंतनामागुणना जाणवा ॥५॥ हवे एज ठ न्नेद विस्तारीदेखाडेछे ॥

आयतनेसेवेगुणपोष ॥ परगृहगमनेवाधेदोष ॥ उन्नट
वेषनशोन्नालाग ॥ वचनविकारेजागेराग ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ आयतनकें०जेसाधर्मिना स्थानक तेसेवतायका गुणनी पुष्टिथाय गाथा ॥ आययपसेवणाउ ॥ दोसाजियतीगुणाइतिवचनात् ॥ वली परगृहगमनेकें०पार केघरजाता वाधेदोषकें०दोषवधे यत परगिहगमणपिकलकपकमूलसुशीलाणइतिवच नात् ॥ वली उन्नटवेषतेशोन्नालायकनही गाथा ॥ सहइपसतोधम्मी ॥ उप्रडवेसोनसुद रेतस्सइतिवचनात्॥सहइकें०शोन्नेपसंतधर्मीकें०प्रशांतधर्मिउन्नटवेषतेने सुदर नथीइति तथा वचनना विकारेकरीने रागजागे माटे विकारना वचन कहेनही यत सवियारन निपाइ ॥ मूए मूढरविरागगिग इतिवास्यात्तेमाटेनकहे यत जसुणमाणस्सकइसुहुय उनइरमाणस्स मयणो ॥ समणेणमावयेणविनसाकइाहोइकहियवा ॥ इतिवचनात् ॥६॥

मोहतणोशिशुलीलालिग ॥ अनर्थदमअठेएचग ॥ क
ठिणवचनतुंजल्पनजेह ॥ धर्मिनेनहिसम्मतंतेह ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे शिशुलीलाकें०बालक्रीडा ते मोहतणोकें०मोहनुलिंगछे वली केनीजे अ

नर्थदंडछे तेजीवने चंगके०मनोहर लागेछे यतः वालिसजणकिलाविह्नु ॥ मूलंमोहस्स-णछदंसार्ठ ॥ इतिवचनात् हवे छहोन्नेद कहेछे ते कठिणवचननुं जे वोलवुं ते धर्म्मि-जीवने सम्मतके०मान्यनही यतः परुसवयणाभियोगो ॥ नसम्मठंसुरूधम्मिमणंइतिव-चनात् एछन्नेदेकरी वीजो शीलवंतनामान्नेद संपूर्णथयो ॥ ७ ॥

उद्यमकरेसदासभ्याय ॥ करणविनयमांसर्वउपाय ॥ अन
न्निनिवेशीरुचिजिनआण ॥ धरेपंचगुणएहप्रमाण ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवे गुणवंतनामान्नावश्रावकनुं त्रीजुं लक्षणकहेछे तेमां यद्यपि औदार्य धर्य गांन्नीर्य प्रियवोलवु इत्यादिक अनेक गुणछे तोपण पांचगुणेकरी गुणवंत गीता-र्थकह्याछे १ सज्झायके०न्नणवा वांचवा पृछनादिकनो उद्यमकरे २ करणके०अनुष्ठानक्रि-याकरे ३ विनयमांके०गुरुआदिक आवे अन्युत्थानादिककरे सदाउजमालयको जेजेवि-नयनाप्रकारछे तेते सर्वकरे ४ अनन्निनिवेशीके०कदाग्रहीनहोय इहलोक साधवामां कदाग्रहनकरे ५ रुचिके०आकरी श्रद्धा जिनआणके०जेनागमनेविषे होय एपांचगुण धरे तेगुणवंतकहियें ते प्रमाणके०मान्यछे ॥ ८ ॥

सज्झायेंधरेवेराग ॥ तपनियमादिककरणेराग ॥ विनयप्र
युंजेगुणनिधितणो ॥ जेममनवाधेआदरघणो ॥ ए ॥

अर्थ ॥ हवे एपांचेनां फलकहेछे. प्रथम सज्झायकरतां जीवने वैरागवधे तथा अ-नुष्ठानमां सावधानथको जीव तप तथा नियममां उद्यमवंतहोय. जेतपते वारन्नेदे प्र-सिद्धछे अने नियमते साधुने विश्रामण उत्तरपारणालोचकराव्योहोय तेने घृतप्रमुखनुं दानदेवुं. यतः पहसंतगिलाणेसुय ॥ आगमगाहिसुतहयकयलोए ॥ उत्तरपारणगंमिय ॥ दाणेसुवहुफलंहोइ ॥ १ ॥ इति तथा गुरुवंदना चैत्यवंदना पूजा प्रमुखपण ए गुणमां लेवां३तथा गुणनो निधानजेपुरुषतेनोविनय प्रयुंजेके०करे. गुणवंत आवे तेवारे उन्नोथाय. सामोजाय, मस्तके अंजलीकरे, आसनआपे, गुरुवेठापठी वेसे, सेवाकरे, जायत्यारे वोलावाजाय इत्यादिक विनयकरे तेविनयवंत देखीने तेनाउपर गुरुनो घणो आदरवधे आम्नायादिकगुरुतेनेआपे ॥ ए ॥

अनन्निनिवेशीअवितथगणे ॥ गीतारथन्नापीतजेसुणे ॥
सद्दहणायेंसुणवाचाह ॥ समकितनोमोटोउछाह ॥ १० ॥

अर्थ ॥ अनन्निनिवेशीजेहोय तेने अवितथके०यथार्थ माने अनेगीतार्थ जेवोले गीतार्थकहेतेयथार्थजाणे तथा गीतार्थपासे सांनले श्रद्धापूर्वक सांनलवाने वांछे उप-

लक्षणथी श्रद्धायेंइछापूर्वकअनुष्ठानकरे एवी श्रद्धाविनासमकितनी शुद्धिस्याथी थाय यत सवणकरणेसुइछा॥ होइरुइसद्दहाणसजुत्ता ॥एइएनिणाकत्तो॥सुद्धिसम्मत्तरयणस ॥ १ ॥ इतिएसमकेतनो मोहोटो उछाहके०हर्षछे ॥ १० ॥

अवितथकथनअवचकक्रिया ॥ पातिकप्रकटनमैत्रीप्रिया ॥
बोधबीजसद्भावेसार ॥ चारभेदएऋजुविवहार ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवे भावश्रावकनु चोथुऋजुव्यवहारनामा लक्षण चारभेदेकरी कहेछे। अवितथकथनते यथार्थबोले धर्म व्यवहारमा परने ठगवाने माटे धर्मने अधर्मनकहे अधर्मने धर्मनकहे क्रयविक्रयव्यवहारमा लेवेदेवे जूतु नबोले तथा साक्षीव्यवहारमा राजदरबारे पण खोटीसाहेदी नपूरे तथा धर्मनी हासीथाय एवु पणनबोले ए प्रथ मभेद २ अवचकक्रियाके०बीजाने कष्टउपजे एवीक्रिया नकरे सारीवस्तुमाखराब न्तुभेलीनआपे अथवा ताकडीप्रमुखतोलमा अधिकुओछुं आपीलेइने परने ठगेनही तथा आजनमा पणवंचनक्रियाते केवलपापजछेएमदेखतो परने ठगवाथी निवर्ते यद्य पिअवचकक्रियाते पोतानो आत्माठगायनही ईहा योगअवचक क्रियाअवंचक फल अवचक इत्यादिकपूर्वेना टबामा अर्थलखयोछे पण धर्मरत्नप्रथमा एरीतेनथी माटे अमे नथीलख्यो ३ कोइक पापकरतोहोय तेने प्रकटनके०अपाय कही देखाडे जे हे भद्र पापकरता अनर्थथाय इत्यादिक कहे पणतेने छवेखेनही ४ मैत्रीप्रियाके०निष्क पटपणे मित्राइकरे ते साचेभावेकरे पण खोटेभावे नकरे माटे एमकह्युजे सारबोधबी जपामे एचारभेदेंकरी ऋजुके०सरलतानो व्यवहारकहियें अने एचारबोलथी विपरी तकरे तोबोधबीजजाय एम धर्मरत्नप्रकरणमांकह्यु छे ॥ ११ ॥

गुरुसेवीचउविहसेवना ॥ कारणसपादनभावना ॥ से
वेअवसरेगुरुनेतेह ॥ ध्याननयोगनोनकरेछेह ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे भावश्रावकनु पाचमु लक्षण गुरुशुश्रूषानामेकहेछे ते गुरुसेवा चउवि हके०चारप्रकारेछे १ गुरुनीसेवनाकरे २ कारणके०बीजापासे गुरुनी सेवाकरावे ३ सप दनके०गुर्वादिकने औषधादिकनु देवुकरे ४ भावनाके०गुर्वादिकनो बहुमानकरे तथ गुरुना परिवारनो बहुमानकरे इहां गुरुतेधर्मगुरुसेवा पणमातापितादिकगुरुनसेवा यत धर्मज्ञोधर्मकर्ताच सदाधर्मप्रवर्त्तक ॥ सत्वेभ्योधर्मशास्त्राणा देशकोगुरुरुच्यते ॥ हवे एचारभेदनो अर्थकहेछे १ अवसरपामीने गुरुनीसेवाकरे पणअवसरअवसरें नकरे तेव लेछे जे ध्यानके०धर्मध्यानादिकयोग तेप्रत्युपेक्षणा आवश्यकादिक तेनो न करेछेहके० वेद नकरे एटले जीर्णहोतेनीपछे व्याघातनकरे ॥ १२ ॥

तिहांप्रवर्त्तावेपरप्रतें ॥ गुरुगुणजापेनिजपरथतें ॥ संपादे
औषधमुखवली ॥ गुरुजावेंचालेअविचली ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ २ वली ते परप्रतेंके०बीजाने गुरुसेवानेविषे प्रवर्त्तावे तेनाआगल गुरुगुण जा-षीके०वर्णनकरीने एटले एजावजे पोते गुर्वादिकना गुण वर्णनकरे तेथी प्रमादी होय ते पणगुरुसेवामां प्रवर्त्तेइतिजावः ३ तथा निजके०पोताथी अने परथतें के०परथकीसंपादेके० आपेअपावे औषधमुखवलीके० औषधप्रमुख तेमां एकद्रव्यते औषध अथवा बाह्यउप-योगीतेऔषध अने अनेक द्रव्यसंयोग अथवा शरीरमां जोगववा योग्य तेजेषज वली प्रमु खशब्दें जेसंयमोपकारिवस्तु जोइये ते आपे अथवा अपावे ४ गुरुजावेंचालेके०गुरुने अ-जिप्रायें चाले गुरुनो बहुमानकरे तथा गुरुने अनुजायीचाले अविचलीके०अविचलथको

सूत्रअर्थउस्सग्गववाय ॥ जावेंव्यवहारेंसोपाय ॥ निपु
णपणुंपाम्योठेजेह ॥ प्रवचनदक्षकहिजेतेह ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवे जावश्रावकनुं प्रवचनदक्षनामा ठठुंलक्षण वखाणेठे ते ठजेदेठे ते माटे श्रावकपण ठजेदे जाणवो तेकहेठे १ सूत्रनेविषेकुशल २ अर्थनेविषे कुशल ३ उत्सर्गनेविषे तेसामान्यसूत्रनेविषे कुशल ४ ववायके०अपवाद एटले विशेषसूत्रनेविषे कुशल ५ जावेंके०विधिपूर्वक धर्मानुष्ठाननेविषे कुशल ६ व्यवहारेंके०गीतार्थनीआचर-णारूपजेजितव्यवहार तेनेविषे कुशल सोपायके०उद्यमसहित निपूणपणुंके०कुशलप-णुंपाम्योठे एवो जे पुरुष तेनेप्रवचनदक्षकहियें ॥ १४ ॥

उचितसूत्रगुरुपासेंजणे ॥ अर्थसुतीर्थेतेहनोसुणे ॥ विषय
विजागलहेअविवाद ॥ वलीउत्सर्गतथाअपवाद ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे एठजेद विस्तारीकहेठे १ उचितसूत्रके०श्रावकने योग्यसूत्र चौसर-णादिक प्रवचनमाताथी मांडीने ठजीवणीयाअध्ययनपर्यंतजणे उक्तंच ॥ पवयणमा इठजीवणियंताउजयवियरस्स ॥ अस्यार्थः ग्रहणशिक्षा तत्रप्रकृता उजयतः सूत्रतो अर्थतश्चेतरस्यश्रावकस्येति एरीते सूत्रजणेउपलक्षणथी पंचसंग्रह कम्मपयडीप्रमुख ग्रं-थनासमूह तेपोतानीबुद्धिनेअनुसारेंजणे २ अर्थके०तेसूत्रनोअर्थ ते सुतीर्थे के०संविज्ञ गुरुपासेथी सांजले ३–४ हवेउत्सर्गतथाअपवाद एवेजेदसाथेकहेठे अविवादके०वि-वादरहितपणे विषयविजागलहेके०पोतपोतानेठेकाणेजाणे उत्सर्गनेउत्सर्गठामेजाणे अपवादने अपवादठामे जाणे पण एकलो उत्सर्गज न आलंबे अथवा एकलो अप-वादज नआलंबे जेअवसरें जेकरवुंघटे तेअवसरें ते करे एटले लाजालाज जोइ का-र्यकरे एसर्वेचारजेद कह्या ॥ १५ ॥

पक्षपातविधिमांहेधरे ॥ देशकालमुखजेमअनुसरे ॥ जाणे

गीतारथव्यवहार ॥ तेमसविप्रवचनकुशलउदार ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ ५ देववंदनादिक विधिनेविषे पक्षपातकेऽबहुमानहोय तथा बीजो वि
धिकरतोहोय तेहनोपण बहुमानकरे विधिसामग्रीना अभावें पण विधिआराधवा
मनोरथ मूकेनही इत्यादिक उपलक्षणथी जाणवु ६ हवे व्यवहारकुशलनामा छ
भेदवखाणेछे तेजेम देशकालप्रमुखहोय तेने अनुसरे एटले एभाव जे देशतेसुभि
क्षुस्थितादि तयाकालते सुकाल दुष्कालादिक प्रमुखशब्दें द्रव्यसुलभ दुर्लभादि
थयी दृष्ट ग्लानादिक तेसर्वने पोतपोतानीहृदेजाणे गीतार्थनो व्यवहार सर्वपोतेन
एटले एभावजे उत्सर्गअपवादना जाणजेगीतार्थ तेणे आचर्योजे व्यवहार ते पोत
मते दुषवेनही पण तेसर्वव्यवहार तेमज अंगीकारकरे एछप्रकारनो प्रवचनकुशल
उदारकेऽप्रधानकहिये ए छलक्षण भावश्रावकना जाणवा ॥ १६ ॥

किरियागतएपटविधलिंग ॥ भाषेतुंजिनराजअभंग ॥

एविधिश्रावकजेआचरे ॥ सुखजगलीलातेआदरे ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ पटविधलिंगकेऽछप्रकारना लिंग ते किरियागतकेऽक्रियाथी उपल
जेम धूम्रथी अग्निजणाय तेनीपेठे एम हेजिनराज सामान्यकेवलीमां राजासरिख
भाषेकेऽरहेछे अभंगकेऽसमस्तपणे एविधि जे श्रावक आचरे ते सुख तथायश तेनी
लीला तेने आदरेकेऽपामे ॥ १७ ॥ इहांशिष्यप्रश्न पूछेछे जेहेस्वामी बीजा वली भ
लिंगजे छ सत्तरलिंगक्रियागत कह्या तेटलाजछे तेने गुरुउत्तरआपेछे जेभावगत
सत्तरछे ते तेरमी ढालमां कहेछे एसबंधेआवी ढालतेकहेछे ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ रहीभावननामनधरो ॥ एदेशी ॥

भावश्रावकनांभाखियें ॥ हवेसत्तरभावगततेहोरे ॥

नेहांगे ॥ प्रभुनुंऊवचनेअविचलहोजोए ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे भावश्रावकनालिंग गणधरोयें सत्तरछे तेजाभगतछे तेकहियेंछेयें भा
हेमड हेसयपुरू तारा वचननेविषे चपलनही पणो मुजने स्नेहहोजो ॥ १ ॥

इस्रीचंचलचित्तथी ॥ जेवाटनरकनीमोटी

रे ॥ मोटीरे ॥ गटिएगुणगुरंगुणोए ॥ २ ॥

अर्थ ॥ यत १ इंद्रि २ दिय ३-४ ससारछ ५ विषय ६ आरंभ ७ गेह ८ द

णठे ॥ ए गरुरिगाइंपवाहे ॥ १० पुरस्सरंध्यागमपवित्ति ॥ १ ॥ ११ दाणाईजेहासत्ति॥ पवत्तणा १२ विहर १३ रन्नडुठेय ॥ १४ मझत्र १५ संवरू ॥ १६ परठकामोवन्नो- गीव ॥ २॥ १७ विसाइत्तगिहवासं पालइसत्तरसपयंनिवरूतु॥ नावगयनावसावग ॥ ल- खणमेयंसमासेणं ॥ ३ ॥ एसत्तरगुणकह्या तेमां पहेलुं लक्षणकहेठे इहां इछाचंचल चित्तथी एवुं लिपिदोषे घणीप्रतोमां लखायुंठे तेथी पूर्वटवाकारें इछा एवो अ- र्थकस्योठे पण तेनिर्मूलठे माटेञवेस्योठे अत्रार्थे धर्मरत्नग्रंथजोइनेनिश्चयकरवो इत्री के० स्त्री केवीठे जेचित्तथी चंचलके०चपलठे एटले अन्यअन्य पुरुषनी इछाकरनारीठे व- लीवाट नरकनी मोटीके०मोटीनरकनी वाटठे एटले नरकेजवानोमार्गठे तेखोटीरेके० हीणी वाटठे माटेस्त्रीने एवीजाणीने मूके एगुणधूरेंगुणोके०पहेलोसंख्यामांगणो ॥ २ ॥

इंडियचपलतुरंगने ॥ जेरूधेज्ञाननीराशिरे ॥
पासेंरे ॥ तेवीजोगुणश्रावकधरेए ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे इंडिय जे पांच शास्त्रोक्तस्वरूप तद्रूपजे चपलके० शीघ्रगामीपणामाटे डुर्गतिने सन्मुखचालता एहवाजे तुरंगके०घोडा तेने जे ज्ञानरूप राशिके०राशडीयें करीने रुंधेके०रोकीराखे एवीजोगुणते श्रावकपोतापासेधरे ॥ यतः इंदियचवलतुरंगे ॥ डुग्गइमग्गाणुंधाविरेनिचं ॥ नावियनवस्सरूवो ॥ रुंनइसन्नाणरस्सीहिं ॥ १ ॥ ३ ॥

क्लेशतणुंकारणघणुं ॥ जेअर्थअसारजजाणे
रे ॥ आणेरे॥तेत्रीजोगुणनिजसंनिधिए॥४॥

अर्थ ॥ जे घणुंके०अत्यंत क्लेशनुंकारण एवोजे अर्थके०ड्व्य तेने असारजजाणे एत्रीजोगुण निजसंनिधिके०पोतानीपासे आणेके०लावे ॥ ४ ॥

नवविम्बनामयअठे ॥ वलीडुःखरूपीडुःखहेतो
रे ॥ चेतोरे ॥ एमचोथोगुणअंगीकरेए ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ नवके०जेसंसार तेकवोठे जे विटंवनामयीठे वली जन्म, जरा, मरण, रोग, शोकादिक डुःखरूपीठे वली जन्मांतरे नरकादिक डुःखनोहेतुठे एम डुःखनीज परं- पराआपे तेचेतोके०जाणो एचोथोगुणश्रावकअंगीकारकरे ॥ ५ ॥

खीणसुखविषयविषोपमा ॥ एमजाणीनवीवहुइ
हेरे ॥ वीहेरे ॥ तेथीपंचमगुणवरयोए ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे विषयकेवाठे जे क्षणिकमात्र सुखठे तेपण विषोपमाके०कालकूटस-

रिखाछे परिणामे दारुणछे एवाविषयजाणीने तेने बहुके०अत्यतपणे नवीऽहेके० अनेतेविषयने असारजाणेछे माटे तेथी बीहेके० बीतोरहे एपचमगुणनेवख्योयको ॥

तीव्रारंजतजेसदा ॥ गुणछनोसंजागीरे ॥
रागीरे ॥ निरारंजजननोघणुंए ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवे तीव्रारजके०घणाप्राणीने पीडाकारीजे खरकर्मादिक व्यापार तेने तजे कदाचित्करे तोसशोकथकोकरे पण नि शोकथको नकरे तेछठागुणनो केऽजनारोथाय यद्यपिअणचालतेकाइकआरज पोतेसशोक थकोकरेछे पणरागी निरारजके०आरजरहितजे जनके०लोकतेमुनिराजनोहोयघणोके०अत्यतहोय ॥

मानेसत्तमगुणवर्यो ॥ जनपाससदृशगृहवासो
रे ॥ अन्यासोरे ॥ मोहजितवानोकरेए ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवे सातमो गेहनामा गुणवखाणेछेते सातमो गुणवर्ख्योयको माने णे ते जनके०प्राणी घरवासने पाससदृशके०बधनसरिखो माने जेम पक्षी पड्यो उडीनशके अने पोताना आत्माने दु खीमाने एम ग्रहमातापितादिकसंबंधा क्षा छेहनशके पण दु खमाने अनेतेप्राणी अन्यासतो मोहने जीतवानोज करे ॥७

अठमदसणगुणजर्यो ॥ बहुजातेंकरेगुरुजक्ति
रे ॥ जक्तिरे ॥ निजसहृहणानीफोरवेए ॥ ए ॥

अर्थ ॥ आठमो दर्शननामा गुणेजर्योथको गुरुजेधर्माचार्य जेनाथी स्योतेगुरुनी जक्ति बहुजातेंकरे अने पोतानी श्रद्धानी शक्तिफोरवे एटले ५भावजे स्तिस्यजावसहितअने अतिचाररहित दर्शननेधरतो शक्तियेंप्रजावना तथा बुद्धिवंतकरे यत अत्थिकजावकलिर्ड ॥ पजावणावन्नवायमाइहिं ॥ गुरुजत्तिजुर्डधीम धरेइश्यदसणविमल ॥ १ ॥ ए ॥

लोकसन्नाहविपरिहरे ॥ जाणेगाडरिजपरवाहो
रे ॥ वाहोरे ॥ एमनवमागुणनोसपजेए॥१०॥

अर्थ ॥ हवे गाडरीकप्रवाहनामानवमोजेदवखाणेछे लोकसन्नाहके०लोकअविचा रमणीकतेने परिहरेके०त्यजे अने लोकनीचाल तेगाडरीयाप्रवाहजेवीछे जेम एकगा रनीपछवाडे बीजुगाडर चाले उपलक्षणथकी कीडीनो मंकोडानो प्रवाहपण कष्ट अविचारितछे तेम लोकप्रवाहपण तेवोछे तेमाटे वर्जे एम नवमागुणनोलाहोनीपजे

आगमनेंआगलकरे ॥ तेविणकुणमारगसाखीरे ॥
न्नाषीरे ॥ एमकिरियादशमागुणथकीए ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवेदशमो आगमनामान्नेद वखाणेछे जेकार्यकरेते आगमने आगलकरीनेकरे एम विचारेजे आगमविना जेपरलोकसाधवानोमार्ग तेनो कोणसाखी एटले वीतरागनाआगममांज एवामार्ग होय न्नापीके०एवुं कहीने एरीतनी क्रिया करे एटले एन्नावजे देववंदन गुरुवंदन प्रत्याख्यान प्रतिक्रमणादिरूपक्रिया जिनागमतथ्य जाणीने आगमोक्तक्रियाकरे एदेववंदनादिक क्रियानोविस्तारधर्मरत्नमां जोइलेजो एदशमागुणथकी क्रियापामे ॥ ११ ॥

आपअवाधायेंकरे ॥ दानादिकचारशक्तिरे ॥
व्यक्तिरे ॥ एमआवेगुणइग्यारमोए ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे दानादिक यथाशक्तियेंकरे एअग्यारमोन्नेदकहेछे आपअवाधायेंके० पोताने पीमा नउपजेतेम दानादिकचारेकरे जोद्रव्यपात्रहोय तो देतोथको थाकेज नही अने जोअल्पद्रव्यवानहोय तो अतिउदार न थाय उक्तंच ॥ लाजोवियदाणे ॥ लाजोवियन्नोयणे ॥ लाजोवियपरिन्नावे ॥ लाजोवियनिधिकरेसिया इत्यादि एमथोके कालेघणुंआपीशके तेमज शील तप न्नावनानेविषेपण यथाशक्तिप्रवर्ते एमव्यक्तिके० प्रगटपणेअग्यारमोगुण श्रावकनेआवे ॥ १२ ॥

चिंतामणिसरिखोलही ॥ नविमुग्धहस्योपणलाजे
रे ॥ गाजेरे ॥ निजधर्मएगुणबारमोए ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे विह्निकनामाबारमोगुणकहेछे चिंतामणिरत्न सरिखो पोतानोधर्म लहीके०पामीने जे मुग्धके०मूर्खलोक तेणे हस्योथको पण नविलाजेके०नलाजे एटले धर्मकरणी करतो लाजेनही गाजेरेके०उत्सुकहोय हर्षवंतहोय निजधर्मके०पोतानाधर्मनेविषे एबारमो गुणजाणवो यद्यपि धर्मरत्नग्रंथमांचिंतामणिरत्नसरिखी क्रियाकरतोनलाजे एमकह्युंछे तोइहांचिंतामणिरत्नसरिखोधर्मकह्यो तेमांकांइविरुद्धनथीकेमके क्रियाने धर्मकांइजूदांनथी ॥ १३ ॥

धनन्नवनादिकन्नावमां ॥ जेनविरागीनविरूपी
रे ॥ समपेपीरे ॥ नेविलसेगुणतेरमोए ॥१४॥

अर्थ ॥ हवे तेरमोअरक्तद्विष्टनामान्नेद वखाणेछे शरीरनीस्थिति हेतुने धनन्नवन

मार्गने अनुजायीचेष्टाहोय तेप्रथमलक्षण तथाधर्मनेविषे श्रद्धाके०रुचानीइछा प्रवरके० प्रधान अविवादके०विवादरहित तेबीजुलक्षण अनेपन्नवणिज्ञाताके०प्रज्ञापनीयपणु ए टले परुपणाकरवी ते ऋजुजावेके०सरलजावे एटले तेनी परुपणा तेअसदजिनिवेश कदाग्रहेनहोय एत्रीजुलक्षण वली क्रियाजे गुरुदित्तअनुष्ठान तेनेविषे निरतर अप्र मादीहोय पणशिथिलनहोय एचोथुलक्षण ॥ २ ॥

निजशक्तिसारुकाजनो ॥ आरजगुणअनुराग ॥ आराध
नागुरुआणनी ॥ जेहथीलहियेंहोजवजलताग ॥ सा० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तथा पोतानी शक्तिप्रमाणें तपसयमादिक कार्यनो प्रारजकरे पणशक्ति उलघी तपस्याप्रमुख नकरे एपाचमु लक्षण अने गुणअनुरागके०गुणीनो पक्षपातहोय एछठुलक्षण तथा गुरुआज्ञानु आराधवु तथा गुरुना आदेशें वर्त्तवु गुरुनीआणाथीस सारसमुद्रनो पारलहियेंके०पामियें एसातमु लक्षण ॥ ३ ॥

मार्गसमयनीथितितथा ॥ सविज्ञवुधनीनीति ॥ एदोई
अनुसारेक्रिया ॥ जेपालेहोतेनलहेजीति ॥ सा० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे ऊपरकहेला सातजेदमांथी मार्गानुसारणीक्रिया नामें प्रथमजेदवखा णेठे मार्गके०समयनीस्थिति एटले आगमनी मर्यादा तेआगम केने कहियें उक्त आगमोह्याप्तवचनमाप्तदोपक्षयाद्विडु ॥ वीतरागोनृतवाक्य नव्रूयाद्धेतसजवात् ॥ आगमनी स्थिति उत्सर्गअपवादरूप शुद्ध सयमनो उपाय तेमार्ग कहियें सविज्ञवुधनीनीतिके०सविज्ञ जेमोक्षाजिलापी अने वुध तेगीतार्थ इहां वहुपदअधि कहियें तेवारे एमकहेवुजे सविज्ञ वहुगीतार्थनी नीतिके०जेआचरण क्रियारूप ते पण मार्गकहियें एदोईके०बेअर्थ मार्गनाकह्या तेवामार्गने अनुसारणीजेक्रिया आग मनी अवाधायें सविज्ञ व्यवहाररूप तेमार्गानुसारणीक्रिया कहियें एवी क्रियाजेपाळे जीतिके०ससारनीवीक नलहेके०कदापि नपामे इतिगाथार्थ हवे सविज्ञ गीतार्थनी नीति एनापदछेदकरियेंछेयें सविज्ञपदकह्यु तेअसविज्ञपणु टालवामाटेकह्यु असविज्ञमलीने जेआचर्योहोय तोपण प्रमाण नथाय यदुक्तव्यवहार अर्ज पासत्थपमत्तसजयाईहिं ॥ वहुएहिवियायरिय ॥ नपमाणसुद्धचरणाण ॥ १ ॥ इहां हुगीतार्थपदमूक्यु तेनु कारण एजे एकगीतार्थें आचर्युहोय तेकदाचित् अनवबोधादिककारणें विपरीतपणे आचर्यु होय तेपण प्रमाण नथाय तेमाटे वहुगी तार्थपद मूक्यु तोते वहुगीतार्थ जेआचरेते अनितथहोय इहांकोइ प्रश्नकरे जेआगम मार्ग कहेवो तेनोयुक्तछे पण वहुजनाचरणकहेवु युक्तनथी केमके घणालोकोयें

लौकिकमार्ग आचर्योहोय माटे आगमतेतोप्रमाण पण घणालोकोनुं आचरण प्रमा
नही वली आगमते ज्येष्ठछे अने बहुजनआचरणते अनुज्येष्ठछे अने लौकिकमां प
ज्येष्ठनेमूकी अनुज्येष्ठनुं पूजन युक्तनथी तेमज आगमतो केवलीपण अप्रमाण नकरे
यतः अहोसुउवउत्तो ॥ सुअनाणीजइविगिण्हइअसुद्धं ॥ तंकेवलिविभुंजइ ॥ अपमा-
णंसुअंभवेइहर ॥ १ ॥ तथा आगमछतां जोआचरणा प्रमाणकरियेंतो आगमनील-
घुता थाय हवे गुरुउत्तर कहेछे जे संविज्ञगीतार्थछे तेआगमनी अपेक्षाविना आचरे-
जनही तेशुंआचरे नही तथाशुंआचरे तेकहेछे यतः दोसाजेणनिरुज्झंति ॥ जेणखिज्जं-
तिपुव्वकम्माइं ॥ सोसोमुक्खोवाओ ॥ रोगावत्थासुसमणंच ॥ १ ॥ इत्यादिक आगमव-
चनसंभारी द्रव्य खेत्र काल भाव पुरुषादिकउचितजोइ संयमने वृद्धिकारीज आचरे
तेवीजासंविज्ञगीतार्थ पणअंगीकारकरे तेमार्गकहियें अने बीजा बहुलोके आचर्युं
तो असंविज्ञ अगीतार्थमाटे अप्रमाणछे वलीआचरणा प्रमाणकरतां आगमतो अ-
त्यंत प्रतिष्ठा पामेछे श्रीठाणांगसूत्रमां पांचप्रकारना व्यवहारप्ररूप्याछेउक्तंच पंचविहे
ववहारे पन्नते तंजहा आगमववहारे सुयववहारे आणाववहारे धारणाववहारे जिय-
ववहारे इहां जितअने आचरणा तेएकजअर्थछे तेमाटेआचरणा मानतां अत्यंतपणे
आगममान्युं तो आगमअविरोध जेआचरणा तेप्रमाणजछे ॥ ४ ॥

सूत्रेभण्युंपणअन्यथा ॥ जुडंजवहुगुणजाण ॥ संविज्ञवि-
बुधेआचर्युं ॥ कांइदिसेहोकालादिप्रमाण ॥ सा० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली एज वातकहेछे सूत्रेभण्युंके०आगमनेविषे कह्युंछे तोपण अन्यथाके०
फेरकरीने बहुगुणजाणके०तेमां घणोगुणजाणीने संविज्ञगीतार्थलोके जे आचरण
कर्युं तेवी केटलीकवातो दीसेछे पणतेशुंजाणी आचर्युं तेकहेछेजे कालादि प्रमाणके०
…खमादिकालप्रमुखनुं प्रमाण विचारीने आचर्युं ॥ ५ ॥

कल्पनुंधरवुंझोलिका ॥ भाजनेदवरकदान ॥ तिथिप-
जूसणनीपालटी ॥ भोजनविधिदोइत्यादिप्रमाण ॥ सा० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वली तेज देखाडेछे कल्पनुंधरवुंके०पूर्वेकल्पजेकपडोतेकारणे छंटना तथा
…रीप्रमुखनेविषे वालीने खंधेमूकी चालता एआगमनो आचारहतो अने हवेतो
…रीप्रमुखनेविषे पांगरीनेजावुं तथा चोलपट्टप्रमुख पणसमजवा पूर्वे कुणीयेंरागता
…कंदोरे राखियेंछेयें तथापूर्वेझोलिकाके०झोली मुठीयेंझाली ग्रंथी कुणीयें ढंकनी
… अने हमणां हाथमां झालियेंछेयें उपलक्षणथी उपग्रहिक कटासणुं संथारीनुं
…आदिकलेवां तथा तरपणीप्रमुखनेविषे दोरादेवा एम नीकी दोरानी …

धारविशेष इत्यादिक वली पात्रेलेपदेना तथा पजूसणनी तिथिजे पांचम तेनी
उपलक्षणथी चोमासापुनमनाटाली चउदशनाकरवा तथा जोजनविधिप्रमुख
क्तविनापण आचरितप्रमाणछे जोजनविधिते मांकलीयंनेमु वेंचीदेवुइत्यादिक
चव्यवहारजाणवे ॥ सठपरिणाठकाय ॥ सयमोपिकुउत्तरम्माए ॥ रुरुकेरसदेगीवे ॥
साहीयपुरुकरिणी ॥ १ ॥ एनोलेशथी अर्थकरे छे जेपूर्वे शास्त्रपरिज्ञाअध्ययन सूत्र
जणे के साधुने उठामणकरताहता अने हमणा दशवैकालिकनु चोथुअध्ययन भ
उठावणायायछे तथा पूर्वे पिंडेषणाध्ययनजण्यापठी उतराध्ययन जणाता हम
गरजणेपण जणावियेंछेये तिहांदृष्टांतकहेछे पूर्वेकल्पवृक्षहता हमणा आम्रप्रमुख
मचालेछे पूर्वे अतुल्यबलधवल वृषजहता हमणा धुसरेज कामचालेछे पूर्वे गो
पणी तेचक्रवर्त्तिने तेजदिवसे धान्य नीपजावीदेताहता आजतो
तथापूर्वे सहस्रयोधीहता हमणा अल्पपराक्रमीसुजटोथी पणशत्रूनोपराजयकरी
पालेछे तेम साधुहमणा जितव्यवहारेपण सयमपालेछे तथा पटमासनु
तेने हमणा पाच उपवासकह्याछे तथापूर्वेमहोटी पुष्करणीउंहती हमणा नानी
कामचालेछे इत्यादिकदृष्टांते जितव्यवहारपण जाणवो अथवा किबहुना जसवहु
सुत्ते पडिसिद्धंतेयजीयववहे ॥ उत्तसव्वपिपमाण ॥ चारित्तधणाणजणियच ॥३॥ ह
विकुणकजं ॥ जंकिंचिसमायरतिगीयत्था ॥ थोवावराहवहुगुण ॥सवेसितपमाणु
इत्यादिक जेम आर्यरक्षितजीये आचर्यु तेदुर्वलिकापुष्पमित्रजीये अंगीकारकर्यु
मज सुविहीते जेआचर्यु ते सर्वकबूलकरे ॥ ६ ॥

व्यवहारपाचेजापीया ॥ अनुक्रमेजेहप्रधान ॥ आजतो
तेमाजीतछे ॥ तेतजियेंहोकेमविगरनिदान ॥ सा० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेज कहेछे जे पाचव्यवहार कह्याछे तथा अनुक्रमें जे प्रधानहोय ते
दरवो यदुक्तं कत्तिविहेणजतेववहारेपणत्ते गोयमा पचविहे ववहारेपन्नते त
आगमे सुए ५ आणाधारणाजीए जहासेतछआगमेसिया आगमे ववहे पठवे
सेतछआगमेसिया जहासेतछसुएसिया सुयववहारपठवेज्जा २ ते
जहासेतछआणासिया आणाएववहारपठवेज्जा ३ णोयसेतछआणासिया
धारणासिया धारणाएववहारपठवेज्जा ४ णोयसेतछधारणासिया जहासेतछजीए
जीएणववहारपठवेज्जा ५ इच्चेतेहिंपचहिंववहारपठवेज्जा त आगमेणसुएण
धारणाए जीएण जहाजहा से तहा पहासे धारणा जीए ववहारपठवे
माह नतेआगमवलियास कठेपणानिग्गठाइच्चेयपचविहववहार जहिंजहिं

-हिंतहिं अणस्सितोवस्सयंसमंववहारमाणे णिग्गंथे आणाए आराहएजवइ इतिज्ग-
-तिसूत्रेशतकआठमे उद्देशेआठमेकह्युंछे आजतो तेपांचव्यवहारमां जितव्यवहारमु-
-यछे जितव्यवहारेज कामचालेछे तेजितव्यवहार विगरनिदानके०कोइपणकारणवि-
केमत्यजियें एटले जितव्यवहार जेआचार्येबांध्यो तेप्रमाणछे ॥ ७ ॥

श्रावकममत्वअशुद्धवली ॥ उपकरणवसतिआहार ॥ सुखशी-
लजेजनआचरे ॥ नविधरियेंहांतेचित्तलगार ॥ सा० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवेएवीआचरणातेअप्रमाणछे केमके०सिद्धांतमां नाकहीछे जे श्रावकनुं
ममत्वनकरवुं यतः गामेवा कुलेवा नगरेवा देशेवा ममत्वजावंनकरेचिकुज्जा इत्यादि
ावकनुं ममत्वकरे तेअप्रमाणछे तथा अशुद्धमान उपगरण वसति आहारप्रमुख
वानी आगममां नाकहीछे अने जो लीयेतो तेआचार अप्रमाणछे यतः आगमे पिं
सिज्जंचवछंच ॥ चउछंपायमेवय ॥ अकप्पियंनइछिज्जा ॥ पडिगाहेज्जाकप्पियं ॥१॥ इति
पलक्षणथी वस्त्रपात्रादिकपण एमजाणवांमाटे सुखशील लोके जेआचर्युं एटले पो-
ना शरीरनी शोजानेअर्थे जेआचर्या तेअप्रमाण वाकी दुर्भिक्षादिक कारणे तो
इ अशुद्ध लीयें तोपण निर्दोषछे यतः पिंडनिर्युक्तौ ॥ एसोआहारविहि ॥ जहजणी
सवजावदंसीहि ॥ धम्मावस्सगजोगा ॥ जेणनहायंतितंकुज्जा ॥२॥ तथा कारणपडिसे
पुण ॥ जावेअणासेवणत्तिदवठा ॥ आणाइतिछावे ॥ सोसुद्धोमुक्कहेउत्ति ॥३॥ इत्यादि
लीठववाइसूत्रे शुद्धेसणीए एवा अजिग्रह मुनियेंकर्या तेथी जाणियेंछेयेंजे पूर्वे अ-
द्धपणकोइक कारणे लेतादीसेछे एअपवादतो प्रमाणछे पणसुखशीललोकेजे आचर्युं
चित्तमां लगार पणनधरियें एटलेए जाव जे दुप्पसहआचार्यलगें तो चारित्रसिद्धां-
मां सांजलियेंछेये अनेजो मार्गानुसारीक्रिया कहि तेरीतेपलकरताहोयतेनेचारित्री-
न मानियें तो एथी बीजा चारित्रीया तोदेखाता नथी तेवारे चारित्रविछेदगयो एम
वुं तोतेचारित्रविना तीर्थपण विछेदगयुं एमठेर्युं एम करतांतो आगम विरुद्ध
ायछे यतः व्यवहारजाष्ये जोजणइनछिधम्मो ॥ नयसामाइयं नचेवयवयाइं ॥ सोस-
णसंघबज्जो ॥ कायव्वोसमणसंघेण ॥ १ ॥ इत्यादिवचने तोमार्गानुसारीक्रियानो कर-
ार तेजावसाधुछे एम कह्युं एप्रथमक्रियानामाजेदथयो ॥ ८ ॥

विधिसेवनाअवितृप्तिशुद्ध ॥ देशनाखलितविशुद्धि ॥ श्रद्धा
धर्मइछावणी ॥ चउजेदहोएमजाणेसुबुद्धि ॥ सा० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ हवे बीजुंलिंग श्रद्धाप्रवरनामाकहेछे तेना जेदचारछे तेकहेछे १ विधिसे-
वना २ अवितृप्तिके०अतृप्ति ३ शुद्धदेशनाके०शुद्धदेशना ४ खलित परिशुद्धिनामा

चोथुलिंग ते श्रद्धाप्रवरनोअर्थकहेछे श्रद्धाके० धर्मनीइच्छा घणीके० अत्यतहोय पण बालकने रत्नग्रहवानी अभिलाषानी पेठे सामान्यपणे विषयप्रतिभास मात्रनहोयते एम ऊपरकहेला चारभेदेएलिंगहोय ते सुबुद्धिके०शुद्धिवंतहोय तेजाणे ॥ ए ॥

दढरागछेशुभभोज्यमा ॥ जेमसेवतायेविरुद्ध ॥ आपदा
मारसजाणने ॥ तेममुनीनेहोचरणेतेशुद्धि ॥ सा० ॥१०॥

अर्थ ॥ हवे एश्रद्धाप्रवरनाचारभेदमां प्रथम विधिसेवननानामेभेदओलखावेछे जे शक्तिवतहोयतेश्रद्धावतथको विधिप्रधानशक्तिवतप्रत्युपेक्षणादिक क्रियाकरे अने जे शक्तिरहित होयते द्रव्य क्षेत्र काल तथा भावेकरी जो तादृशक्रियाकरी न शके तो पण प्रतिबंध ते विधिअनुष्ठाननेविषेज होय यत विहिसारचियसेवइ ॥ सद्धालूसत्तिमअणुट्ठाण ॥ दव्वाइदोसनिहउविवि ॥ पक्खवायनहइतंमि ॥ १ ॥ इहा कोइपुछेजे शक्तिरहितजे होय तेअनुष्ठान न करे अनेविधिअनुष्ठानमा पक्षपातिकेमहोय तेनेअन्वयसहित गाथानाअर्थथीकहेछे जेमकोइक पुरुषहोय तेदुकाल अथवादरिद्रपणुंपाम्यो तो तेपुरुष गवार अरणीपत्र तथावृक्षनीछालप्रमुखखाइने दिवसव्यतिक्रमे पणतेवा भोजनमा लपटायनही केमके पोते उत्तम आहारनो स्वादजाणेछे तेथी तेनोराग तो उत्तमभोजनमाज होयछे जे उत्तमभोजन क्यारे मलशे तेमलेतो वावरियें एनो अत्यतरागहोय हवे अक्षरार्थ कहेछे जे शुभभोज्यमा दढरागछे तथा रसनो जाणते केम जे पूर्वघटरस वावरयाछे तेस्वादनो जाणछे तेआपदामाके०दुकालादिक आपदामा विरुद्धसेवतो एटले कुधान्य खातोथको पण तेनोराग सुधान्यमा होय एदृष्टाते मुनिनेपण चारित्रनी शुद्धि जाणवी एटले यद्यपिद्रव्यखेत्रादिक कारणपामीने विरुद्धसेवे तोपण शुद्धचारित्रनो रसीयोछे तेथी भावचारित्रने उलंगेनहीतेनेभावथी चारित्रीयाज सगमाचार्यनी पेठे कहियें इत्यादिक बहुवक्तव्यताछे इतिप्रथमभेद ॥ १० ॥

जेमतृप्तिजगपामेनही ॥ धनहीनलेतोरत्न ॥ तपविनय
वेयावचप्रमुख ॥ तेमकरतोहोमुनिवरबहुयत्न ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवे अतृप्तिनामा बीजु लक्षणकहेछे जेम धनहीनकेदरिद्रीहोय तेने रत्ननो ढगलोमल्यो तेवारें तेरत्नलेता जगतमा तृप्तिके०सतोषपामेज नही तेम मुनिपण तप विनय वेयावच तथा प्रमुखशब्दें ज्ञानचारित्र तेहनेविषे घणोयत्नकरे यत्नकरतो थाकेजनही तृप्तिपामेजनही तेमा तपकरतायकातो निर्जराथाय तथाशासनदीपे तेप्रसिद्धछे तथा विनयनो अधिकार उत्तराध्ययनना पहेलाअध्ययनथी जाणवो अने वेयावचपण निर्जराने अर्थे अनेकप्रकारनुकरे तेप्रश्नव्याकरणसूत्रथी जोजो तथा ज्ञा

नवणतांपण नवनवोवैरागउपजे यतः जहजहसुयमवगाहइ ॥ अइसयरसपसरसंजुयमउव्वं ॥ तहतहपल्हाइमुणी ॥नवनवसंवेगसद्धाइ ॥१॥ इत्यादि तथा चारित्रमांपण विशुद्ध विशुद्धतर संयमस्थानक पामवानेसर्वअनुष्ठानकरे उत्तरोत्तरसंयमकंडकआरोहतां अप्रमादपणे केवल ज्ञाननालाभ नणीथायज यतः जोगेजोगेजिणसासणंमि ॥ दुक्खक्खयापउज्जंति ॥ इक्किक्कंमिअणंता ॥ वट्टंताकेवलीजाया ॥२॥ इत्यादिवीजोभेदकह्यो ॥ ११ ॥

गुरुनीअनुज्ञालेइने ॥ जाणतोपात्रकुपात्र ॥ तेमदेश-
नाशुद्धिदिए ॥ जेमदीपेदोनिजसंयमगात्र ॥सा०॥१२॥

अर्थ ॥ हवे शुद्धदेशनानामा त्रीजुंलक्षण कहेछे गुरुनी अनुज्ञाके० आज्ञालेइ तेमज शुद्धिदेशनाआपे तेपण पात्रकुपात्रने जाणतोथको जेमसंयमरूप गात्रके०शरीर ते दीपेके०शोभे निजके०पोतानुं संयमरूपगात्र शोभेइत्यक्षरार्थ एटले एभावजे सद्गुरुपासेथी सिद्धांतनो सारजाणी गीतार्थथयोहोय तोपण गुरुनी आज्ञालेइने पण पोतानीमेलेनही पोतेधन्यथको मध्यस्थपणे सद्भूतदेशनाआपे पणपात्रकुपात्रओलखीने देशनाआपे तेपात्रना त्रणभेदछे १ वाल २ मध्यम ३ बुद्ध यतः वाल:पश्यतिलिंगं ॥ मध्यमबुद्धिर्विचारयेत्वृत्तं ॥ आगमतत्वंतुबुद्ध: ॥ परीक्षतेसर्वयत्नेन ॥ १ ॥ इत्यादिक तेनीदेशनानीविधि वीजापोडशकथकी जाणवी इहां विस्तारथाय माटे नथी लख्या तेमाटे जेपात्रने जेमउपगारथाय तेमतेपात्रने देशनाआपे अन्यथा संसारवधारे इत्यादिक त्रीजुंलक्षण एत्रीजालक्षणमा पात्रापात्रविचार प्रमुखनी चर्चापणीछे तेधर्मरत्नग्रंथथी जोजो जेम पोतानुसंयमगात्रशोभे ॥ १२ ॥

जेकदाचितलागेव्रतें ॥ अतिचारपंककलंक ॥ आलोयणें
तेशोधतां ॥ मुनिधरेहोअध्यानिःशंक ॥ सा० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे स्खलितपरिशुद्धिनामा चोथुंलक्षणकहेछे ते जे कदाचित व्रतपालतां थकां कोइअतिचाररूप पंकके० कचरो तद्रूपकलंक जो व्रतने विषे अनाभोगे करी अतिचारलागे ते पण १ प्रमाद २ दर्प्प ३ कल्प एत्रण रीते लागे अने चोथो आकुट्टिपेतोप्रायेचारित्रीयाने संभवेजनही तेआकुट्टिप्रमुखनुं स्वरूपकहेछे यत आउट्टिया उविच्चा ॥ दप्पोपुणहोइवग्गणाइउ ॥ विगहाइउपमाउ ॥ कप्पोपुणकारणेकरणं ॥१॥ एलक्षणथी अनेकप्रकारनी प्रतिसेवाछे तेसर्वएमांसमाय तेप्रायश्चित्ताादिकलेइने शुद्धथाय एरीते करतोमुनिराज निःशंकपणेधर्माराधे एचोथोभेदथयो ॥ १३ ॥

श्रद्धायकीजेसर्वघटे ॥ गंभीरआगमभाव ॥ गुरुवचनेपण
चणिइजे ॥ आराधकहोतोभेसरखउस्वभाव ॥ सा० ॥१४॥

अर्थ ॥ हवे बीजालक्षणनो उपसंहारकरतात्रीजुलक्षण कहेछे आसीगाथानोअ नेलोलखियेछेयें १ विधि २ उद्यम ३ जय ४ वर्णव ५ उत्सर्ग ६ अपवाद ७ तदुज इत्यादिक आगमना जेगम्भीरजावछे तेअक्षरथकी सर्व जाणे जोएसर्वेजाव नजाणे जमालीनीपेठेमिथ्यात्वी थइजाय एवीजालक्षणनो उपसंहारथयो हवे त्रीजुलक्षण हेछे जेएवा जावनाजाणहोय तेगुरुनेवचने पन्नवणिज्जके०प्रज्ञापनीय एटले परुप योग्य पदार्थनो सरलस्वजावे उपदेश करतोथको आराधकहोय एत्रीजुलक्षण ॥ १४

पटकायघातप्रमत्तने ॥ पम्लिेहणादिकयोग ॥ जाणीप्रमादी
नविहोए ॥ किरियामाहोमुनिशुजसयोग ॥ सा० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेक्रियानेविषेअप्रमादनामा चोथुलक्षणकहेछे प्रमत्तके०प्रमादीने पमि लेहणादिकयोगवर्त्तनेपृथिव्यादिक छकायनो घातथायछे एटलेएजावजे उपयोगवि प्रमादीथको पमिलेहणादिककरतो छकायनो विराधकथाय अनेउपयोगेकरतो आ धकथाय यत पमिलेहणकुणतो ॥ मिहोकहकुणइजणवयकहवा ॥ देइपञ्चरकाण ॥वा सयपटीछइवा ॥ १ ॥ पुढवीआउक्काए ॥ तेऊवाऊवणस्सइतसाण ॥ पमिलेहणापमत्तो छन्हपिविराहर्ओहोइ ॥ २ ॥ पुढवीआउक्काए ॥ तेऊवाऊवणसइतस्साण ॥ पमिलेह आउत्तो ॥ छन्हपिआराहओहोइ ॥३॥ इत्युत्तराध्ययनना छवीसमेंअध्ययने माटे एवुजा पमिलेहणादिकयोगमाप्रमादी नहोय प्रमादकरता जैनदिक्षावत पण आर्यमंगुनी संसारजमें माटे क्रियामा मुनिराजतेशुजसयोगके०जलायोगवत होय जलीक्रियानो योगकरे आगममा अनेकप्रकारनी क्रियाकहीछे तेसर्वेजलीरीतेकरे एचोथुलिंग ॥१५

जेमगुरुआर्यमहागिरी ॥ तेमउजमेबलवंत ॥ बलअविषय
नवीउजमे ॥ शिवजूतिहोजेमगुरुहीलंत ॥ सा० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवे शक्तिअनुष्ठाननामा पांचमुलक्षणकहेछे तेजेम गुरुश्रीआर्यमहागि जीये उद्यमकर्यो तेमबलवतथको उजमेके०उजमालथाय एटले एजावजे सघय धृतिप्रमाणे निरवाहीशके तेक्रियानेजमुसाधुआरंजे पणप्रतिज्ञानगथाय तेवुआरंजे ही यतअविषयके०जेक्रियामापोतानु बलनचाले तेमाउद्यमनकरे अने करेतोउलटीक ट्यावे यत मोहुनवोरायवो ॥ जेणमणोमंगुलनचिंतेइ ॥ जेणनइंदियहाणी ॥ जेणयज गानहायंति ॥ १ ॥ इति जेमशिवजूतियें शक्तिउल्लंघनकरी गुरुवचन लोपीने गुरु निंदाकरवामाड्यो तेनीपेठेजनममाजुनकरे इहांआर्यमहागिरी तथाशिवजूतिनो अ वार धर्मरत्नग्रंथमाकह्योछे तेथीनाणवो ॥ १६ ॥

गुणवंतनीसंगतिकरे ॥ चित्तधरतगुणअनुराग ॥ गुणलेश
पणपरनुंथुणे ॥ निजदेखेदोअवगुणवडजाग ॥सा०॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवे ठडुंगुणानुरागनामा जावसाधुनुं लिंग कहेछे जे एवा चारित्रीयाहोय तेगुणवंतनीज संगतकरे अने पोताना चित्तनेविषे गुणनोज अनुरागके०रागधरे यतः वयसमणधम्मसंयम ॥वेयावच्चंवंजगुत्तीठं ॥ नाणाइतियंतव ॥ कोहाइनिग्गहाचरणमेयं ॥ १ ॥ एचरणसित्तरीकही तथा पिमविसोहिसमइ ॥ जावणपमिमाठंइंदियनिरोहो ॥ पमिलेहणागुत्तिठ ॥ अजिग्गहाचेवकरणंतु ॥१॥ एकरणसित्तरी इत्यादिक गुणनोराग धरे अने श्रीकूलें जेम कालाकुतराना दांतवखाण्या तेनीपेठे बीजामां गुणनो लेश होय तेपण स्तवे तथानिजके०पोतानाअवगुण देखे वमजागके०मोहोटा जागनोधणी जेमवेश्रावककालादेहरासां पेठा तेम पोताना अवगुणदेखे ॥ १७ ॥

गुरुचरणसेवारत्तहोइ ॥ आराधतोगुरुआण ॥ आचार
सर्वनामूलगुरु ॥ तेजाणेदोचतुरसुजाण ॥ सा० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवेगुरुआणाआराधननामा सातमुंलक्षणकहेछे इहांकोइपुछेजे जावसाधुनांलिंग शास्त्रांतरमांतोठकह्यांछे यतः मग्गाणुसारीसद्धो॥पन्नवणिज्जोकिरियावरोचेव ॥ गुणरागी सक्कारंज ॥संगठतहयचारित्ती ॥ १॥ एरीते ठगुणकह्याछे तोतमे सातमोगुण क्यांथी कहोछो तेनेउत्तरकहेछेजे चौदसेंचुमालीस प्रकरणरूप प्रसादनेविषे सूत्रधारसरिखा श्रीहरिजद्रसूरि तेणेउपदेशपदनामा ग्रंथनेविषे सातमुंलिंगपणकह्युंछे तथा चतत्सूत्रं एयचअत्रिखरकणं ॥ मिमस्सनिसेसमेवधन्नस्स ॥ गुरुतहगुरुआणासं ॥ पाडणंचगसामिहलिंगं ॥ इत्यलंविस्तरेण माटे सातकहियेंछेयें हवेसातमालक्षणनुं स्वरूप कहेछे गुरुजेठत्रीसठत्रीसीगुणे विराजमान तेनाचरणनी सेवानेविषे रक्तहोय तथा गुरुआदिकनी आज्ञाआराधतोथको वलीते साधुएम जाणेजे सर्वआचारनुं मूलतेगुरुछे गुरुथीसर्व प्रगटथाय तेचतुरसुजाण एमजाणे एसातमोगुणकह्यो ॥ १८ ॥

एसातगुणलक्षणवर्यो ॥ जेजावसाधुउदार ॥ तेवरेसुख-
जशसंपदा ॥ तुजचरणेदोजशजक्तिअपार ॥ सा० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ एसातलक्षणनेगुणेकरीवर्योथको एवोजेजावसाधु उदारके०प्रधान ते सुखजशनी संपदानेवरेके०पामे एटले उत्कृष्टजे मोक्षसुखतेनेतो तेवरेजेहेसर्वज्ञ केवलज्ञानजास्कर तमारा चरणनेविषे जशके०जेने अपारजक्तिहोय तेवरे ॥ १९ ॥ एढालमां प्रथमथीमांमीने जेटली वात टवामां लखीछे तेसर्वधर्मरत्नसूत्रवृत्तिथीलखीछे पण तेग्रं-

थमां विस्तारघणोछे तेजोइलेजो एचउदमी ढालमां साधुना लक्षण कह्या तेन कहेतां मुनिराजऊपर बहुमानउपनु तेबहुमानना हर्षेकरी पन्नरमी ढालमध्ये साधुना गुण वर्णन करेछे एसबधेपन्नरमीढालकहेछे ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ आजमारे एकादशीरे, नणदलमौनकरीमुखरहीये ॥ एदेशी ॥

धन्यतेमुनिवरारे ॥ जेचालेसमजावे ॥ जवसायर
लीलाएउतरे ॥ संयमकिरियानावे ॥ धन्य० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ जे मुनिमाप्रधानसरिखा समजावे चालनारा रागद्वेपरहितपणेविचरे ते मुनिराजनेधन्यछे तेमुनिसंयम जेचारित्र तेनी जेक्रियातद्रूप नावेके०नावायेकरीने जवसायरके०ससारसमुद्रनो लीलायेंके०सेहेजमा पारउतरेछे ॥ १ ॥

जोगपंकलजीऊपरबेठा ॥ पंकजपरेजेन्यारा ॥ सिंहपरे
निजविक्रमशूरा ॥ त्रिजुवनजनआधारा ॥ धन्य० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जोग जेपचेंद्रीना विपय तद्रूपजे पंकके०कचरो तेतजीने ऊपरबेठाके०अ लगारह्या अने पंकजके०कमलनीपेठे जेन्याराछे एटलेकमल तेकचराथी उपनो अन कचराथी न्यारोरहे तेम मुनिराजपण जोगरूप कचरामाउपना अने तेजोगथकीन अलगा रह्या इतिजाव वली सिंहनीपेठे पोतानो विक्रमके०पराक्रम फोरववाने शूरवीरछे वलीस्वर्ग मृत्युने पातालरूप जेत्रणजुवननालोकने आधाररूपछे ॥ २ ॥

ज्ञानवतज्ञानीसुमलता ॥ तनमनवचनेसाचा ॥ द्रव्यजा
वसुधाजेजापे ॥ साचीजिननीवाचा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे स्याद्वादशैली देखाडताथका मुनिराजनु वर्णनकरेछे पोतेज्ञानवंत तथा ज्ञानीपुरुपसाये मलीरहेछे पणखेदधरतानथी वली तनके०काया अने मन तथा वचनेकरीसाचाछे पण जूठीप्रवृत्तिनथी वली जेमुनिद्रव्यथी तथा जावथी सूधाजापेके०सत्यबोले एटले द्रव्यते पट्द्रव्यादिक अने जावते तेनापर्याय अथवा द्रव्यथी बाह्यवस्तु अने जावथी अभ्यंतरवस्तु तेसत्यकहे इत्यादिक अनेकप्रकारेते जिनेश्वरनी वाणीकहियें तेनेसाचीकहे एटले शुद्ध परुपकहोय इतिजाव ॥ ३ ॥

मूलउत्तरगुणसंग्रहकरता ॥ त्यजतानिद्रादोपो ॥ पग
पगव्रतदूपणपरिहरता ॥ करतासंयमपोपो ॥ धन्य० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ मूलगुणजे पंचमहाव्रतादिक अने उत्तरगुणपिंडविशुद्ध्यादिक तेनो संग्रह

करताके०राखता वली जिह्वा जेगोचरी तेना बेंतालीसदोष तेने त्यजताके०टांळता प-
गपगके०डगेडगे व्रतनां दूषणजे अतिचार तेने परिहरताथका एरीते संयमने पो-
षेके०पुष्टकरतारहेछे ॥ ४ ॥

मोहप्रतेंहणतानितआगम ॥ जणतासदगुरुपासें ॥ दूषम
कालेंपणगुणवंता ॥ वरतेशुभअभ्यासें ॥ धन्य० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तथा शुभअध्यवसायेंकरी मोहरूप शत्रूने हणता तथा नितके०निरंतर आ-
गमके०सिद्धांतने सद्गुरु पासेथीजणता एवाविषमकालें पंचमआरेपण गुणवंता पुरुषछे
ते रुडेअभ्यासेवर्त्तेछे एटले पूर्वार्द्धमांज्ञानकह्युं अनेपश्चिमार्द्धमांक्रियाकही ॥ ५ ॥

छठुंगुणठाणुंभवअटवी ॥ उलंघणजेणेलहिउं ॥ तससो-
भागसकलमुखएके ॥ केमकरिजाएकहिउं ॥ धन्य० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ प्रमत्तनामा छठुंगुणठाणुं ते केवुंछे जे भवअटवी उलंघणके०संसाररूपअट-
वीनो पारपमाडनारुंछे ते जेणे लहिउंके०जेपुरुषेपाम्युं यतः भवाटवीलंघनतुल्यमेतत् ।
प्रमत्तनामक्रिययासमेत ॥ गुणगुणस्थानमसंख्यवृद्ध्या प्रमादहानेः प्रवरंप्रजास्या ॥ १॥
तेमुनिराजनुं समस्तसौभाग्य तेएकेमुखे शीरीते कह्युंजाय ॥ ६ ॥

गुणठाणानीपरिणतिजेहनी ॥ नवीपेभवजंजाले ॥ रहे
शेलमीढांकीराखी ॥ केतोकालपराले ॥ धन्य० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेपुरुषने गुणठाणानी परिणतिथयीहोय एटलेगुणठाणुंपरणम्युंहोय तेनी प-
रिणति भवजंजालेके०संसारविटंबनामां छीपेनहीके०छानीरहेनही तेपुरुष संसारमां र-
ह्योथको पण उदासीनज देखाय केनीपेठे जेमशेलडीने पराले करीढांकीराखी होय ते
केटलोकालरहे आगलजातां अंकुराफूटे त्यारे प्रगटथाय पण छानीनरहे ॥ ७ ॥

तेहवागुणधरवाअणधीरा ॥ जोपणसूधुंभापी ॥ जिनशा-
सनशोभावेतेपण ॥ सुधासंवेगपाखी ॥ धन्य० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेमुनिराजना पूर्वोक्तगुण धरवाने जेअणधीराके०असमर्थहोय एटले एहवा
गुणजेसाधुधरीशकेनही तोपणजे सूधुंभापीके०शुद्धपरुपकहोय अनेदेशना प्रमुखगुणे
करीने जिनशासनने शोभावे तेनेपण सुधाके०शुद्धसंवेगपक्षीकहियें यतः संविग्गप-
क्खियाणं ॥ लक्खणमेयंसमासओभणियं ॥ उसन्नचरणकरणावि जेणकम्मंविसोहंति ॥१॥
सुद्धंसुसाहुधम्मं ॥ कहेइनिंदइयनियचमायारं ॥ सुतवस्सियाण पुरओ ॥ होइअसव्वोमराइ-
णिओ ॥ २ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ८ ॥

सद्दहणाअनुमोदनकारण ॥ गुणथीसयमकिरिया ॥ व्यव-
हारेरहियातेफरसे ॥ जेनिश्चयनयदरिया ॥ धन्य० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ सद्दहणाके०तत्त्वश्रद्धा अनुमोदनके०गुणवंतनी प्रशसाकरवी तथा कारणक मोक्षसाध्यनासाधन इत्यादिक गुणथीके०पूर्वोक्त गुणेकरीने जे व्यवहार मार्गेरह्या ए वाजेपुरुष तेणे फरसेके०सयमक्रिया फरसीज एमजाणवु केमकेते निश्चय नयरूपम तना समुद्रछे यत सद्दहणाजाणणगु॥ मोयणकारणगुणापरेगिजे ॥ णिछयववहारविज्ञा तेसिकिरियाजवेजावा ॥ १ ॥ इतिसमतिवृत्तौ ॥ ए ॥

डु करकारयकीपणअधिका ॥ ज्ञानगुणेइमतेहो ॥ धर्मदा
सगणीवचनेलहिये ॥ जेहनेप्रवचननेहो ॥ धन्य० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ डु करकारयकीके०डुःसथाय एवा कष्टना करनाराहोय अने अल्पआग मना धणीहोय तो शाकामआवे तथा कष्टादिक थोडुंहुहोय अने ज्ञानीपुरुषहोय तोतेज्ञानगुणेकरी कष्टनाकरनारथी अधिकाकह्याछे एम धर्मदासगणीयें उपदेशमा लामध्ये कह्युंछे यत नाणाहिउगरतर॥ हीणोविहुपवयणपजावतो ॥नयडुक्करकरतो॥सु ठुवियअप्पागमोपुरिसो इतिवचनात् तेधर्मदासगणी केवाछे जेने प्रवचनके० आग मनेविषे घणोस्नेहहतो ॥ १० ॥

सुविहितगछकिरियानोधोरी ॥ श्रीहरिजद्रकहाय ॥ एह
जावधरतोतेकारण ॥ मुजमनतेहसुहाय ॥ धन्य० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ सुविहितके०जलाआचारवत गछछेजेहनो तथा वली क्रियावंतमा धोरी समान एवा श्रीहरिजद्रसूरि १४४४ ग्रथनाकर्त्ता शास्त्रकारेकह्याछेते एहजावके०एस वेगपक्षीना जावने धरनारहता तेकारणे माराचित्तमापण तेसुहायछे गमेछे एटले स सवेगपक्षी शुद्धपरुपक यथाशक्तिये क्रियावतहतामाटेमारा मनमाते घणागमेछे ॥११

सयमठाणविचारीजोता ॥ जोनलहेनिजसाखे ॥ तोजू
ठुंबोलीनेडरमती ॥ शुमाघेगुणपाखे ॥ धन्य० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ वली सयमठाणके०सयमनास्थानक असख्याताछे तेविचारीजोताके०वि चारना जोपोतानी साखें नलहेके०नदेखे सयमनीवातलो मोहोटीछे तेथागमनेमेल जुएनो पोतामा स्याथीदेखे तो जूठुबोलीने सयमविना सयमीनाम धरावीने डरम तिके०हेडुष्टमतीनाधणी गुणपाखेके०गुणविना शुसाधेछे गालीमहेनतस्याकरेछे यत श्र मणधमजमणमाणे ॥ पावसमणेत्तिवुच्चइ इत्युत्तराध्ययनवचनात् ॥ १२ ॥

नविमायाधर्मेंनविकहेवुं ॥ परजननीअनुवृत्ति ॥ धर्मवचनआ-
गममांकह्यिं ॥ कपटरहितमनवृत्ति ॥ धन्य० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ नविमायाधर्मेंके०धर्मनेविषे मायानथी एटले मायाकरतां धर्मनहोय वली परजननी अनुवृत्तिके०परनाअनुजायीपणे अथवा परने आवर्जनअर्थें नविकहेवुंके० धर्मदेशनाप्रमुख धर्मवचन नकहेवुं एम आगमजेउपदेशमाला तेमांकह्यिंके०वक्रोक्तियेंकह्यिंछेयें एटले कह्युंछे यतः धम्मंमिनछिमाया ॥ नयकवडंअणुअतियंचेव ॥ कुडपागरूमकंमिल्लं ॥ धम्मवयणमुज्जुयंजाणं ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां तेधर्मवचनकेवुंछे जे कपटरहित सरलमननीवृत्तिहोय एरीते धर्मवचनकहे ॥ १३ ॥

संयमविणसंयततायापे ॥ पापश्रमणतेजाप्यो ॥ उत्तराध्य-
यनेसरलस्वजावे ॥ शुद्धपरुपकदाख्यो ॥ धन्य० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वली पोतामांसंयम नहोय अने संयततायापे एटले साधुपणुं ठेरावेजे अमे साधुछेयें तेमुनिने पापसाधु कह्योछे तेमाटे सरलके०ऋजुस्वजावनोधणी तेऋजुस्वजावेंकरीने शुद्धपरुपक कह्योछे एटलेसरलस्वजावीहोय तेशुद्धकहे माटे होय तेवुंज कहेवुं यतः समद्दमाणिपाणाणि ॥बीयाणीहरियाणिय ॥ असंजएसंजयमन्नमाणे ॥पावसमणितिवुच्चइ ॥ १ ॥ इत्युत्तराध्ययनेसतरमेअध्ययने ॥ १४ ॥

एकबालपणकिरियानयेंते ॥ ज्ञाननयेंनविबाला ॥ सेवायो-
ग्यसुसंयतनेते ॥ बोलेउपदेशमाला ॥ धन्य० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एकबालके०कोइक बालछे पणकिरियानयेंके०क्रियामां शिथिलछे एटले क्रियानयेबालछे पणज्ञाननयनी अपेक्षायेंनो बालनथीके०गीतार्थशुद्धजापीछे तेगीतार्थ सुसंयनके०जलाक्रियावंतसाधुनेपण सेववायोग्यछे एटले क्रियावंतमुनि तेक्रिया रहितगीतार्थनो वेयावच्चकरे एमउपदेशमालामध्येकह्युंछे यतः हीणस्सविसुद्ध परुवगस्स ॥ नाणाहियस्सकायवं ॥ जणचित्तगाहणठं ॥ कारिंतिलिंगावसेसेवि ॥ १ ॥ १५ ॥

किरियानयेंपणएकबालते ॥ जेलिंगीमुनिरागी ॥ ज्ञानयो-
गमांजसमनवरते ॥ तेकिरियासोजागी ॥ धन्य० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जेक्रियानयनीअपेक्षायें बालछे एटले क्रियावंतनथी शिथिलक्रियावंतछे एवाजे लिंगीके०केवलसाधुनुंलिंगमात्र राखेछे पणजो मुनिरागीके० गुणवंतमुनिना रागीछे एटले पोते गुणवंतनथी पण गुणीनारागीछे तेपोतेपणज्ञानीथाय तेमाटे

कहेछे जे ज्ञानयोगमा जसमनवरतेके०एरीते जेनुमन ज्ञानयोगमा वर्त्तेछे तेनी अ क्रियापण सोभागीके०सोभाग्यवतजाणवी इहां अल्पक्रिया एवो अर्थकरियें तोपूर्व परसवधमले एटले एभावजे पोते अल्पक्रियावत होय पणमुनिनो रागीछे तोएरी ज्ञानयोगमावर्त्तता अल्पक्रियापणसोभाग्यवती जाणवी ॥ १६ ॥

बालादिकअनुकूलक्रियाथी ॥ आपेंइछायोगी ॥ अध्यात्म मुखयोगअभ्यासे ॥ केमनविकहियेयोगी ॥ धन्य० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ आपेके०पोते इछायोगीथकोरहे एटले योगत्रणप्रकारना कह्याछे १ इ योग २ शास्त्रयोग ३ सामर्थ्ययोग तथापुन श्रद्धानाविकलो २ वास्यानिकल ३ श त्यतिक्रम इतियोगनिर्णये एत्रण योगमा प्रथम इछायोगते श्रद्धाअविकलथका आ पेंके०पोते श्रद्धावत अने क्रियावतहोय तो तेक्रियाथी बालादिकअनुकूलके०बालनी मार्गना रागीथाय एटलामाएवकोगुणछे तो अध्यात्ममुखके०अध्यात्मप्रमुख योग धननाप्रयोगे अभ्यासकरे एटले अहोरात्री अध्यात्ममा मग्नरहे तेपुरुषने योगी केम न कहियें एटले श्रद्धावतथकोक्रियाकरतो बालजीवने उपकारीथायछे अनेत कहेवायछे तोअध्यात्ममा मग्नरहेता साधुमुनिनेयोगी केम नकहियें ॥ १७ ॥

उचितक्रियानिजशक्तिछांडि ॥ जेअतिवेगेचढतो ॥ तेभवथि- तिपरिपाकथयाविण ॥ जगमादिसेपडतो ॥ धन्य० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ वली अध्यात्ममार्ग पणपोतानी उचितशक्तियें क्रियाकरतो साधे अने यागक्ति क्रियामूकीने शक्तिउल्लघनकरे तोतेने गुण नथाय माटे जेटली पोतानी क्तिहोय तेटलीज क्रियाकरवी एनुनाम उचितक्रियाकहियें तेरीतेनकरे अनेजे अ वेगेचढतोथे०शक्तिथी अधिककरे एटले एभावजे शक्तिने अभावें उपवास छठप्रमु करे अथवा आतापना लेवाजाय इत्यादिक कामकरतो तेप्राणीपण भवस्थिति परिप थयाविना जगतमा पडतादिसियेंछेये एटले एभावजे शक्तिउल्लघनकरीने अधिक वाजाय अने भवस्थिति पाकीनथी तेथी तेने शुकमालिकाप्रमुखनीपेठे परिप टकेजनहीं परिणाम पडताजहोय इतिभाव ॥ १८ ॥

मांचेमोटाईमाजेमुनी ॥ चलवेभाकडमाला ॥ शुद्धपरुपणगु- णविणनघटे ॥ तमभवअरहटमाला ॥ धन्य० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ वलीने मुनि पोतानी मोटाइमा माचेके०रीझपामे एटले योनीक्रियाप्र आवतीहोय तेमा मग्नरहे जेथमे समजुछेये तथा भाकडमालचलावे जेओ

आडंबरघणोदेखाडे पणशुद्ध परुपकगुणविना तेनी नवके०संसाररूपअरहटनी माला ते घटेनही उंठीथायनही एटलेशुद्धपरुपकगुणविनासंसार उंगोनथाय ॥ १९ ॥

निजगणसंचेमननविखंचे ॥ ग्रंथजणीजनवंचे ॥ लुंचेके
शनमुंचेमाया ॥ तोव्रतनरहेपंचे ॥ धन्य० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ निजगणके०पोतानोजे गच्छसमुदाय तेने संचेके०जेलाकरे जेअमारा श्रावकश्राविका साधुसाध्वी इत्यादिक ऊपर ममत्वकरे मन नवीखंचेके०पोतानुं मन हीणीप्रवृत्तिथी खेंचीराखेज नही ग्रंथजणीके०द्रव्यनेअर्थे जनवंचेके०लोकनेठगे अथवा ग्रंथके०सिद्धांतशास्त्र जणीके०अध्ययनकरीने लोकनेठगे उत्सूत्रपरुपणाकरी लोकने दुर्गतियेंलेइजाय एरीते जे लुंचेकेशके०मस्तकेकेशनुं लोचकरे अने नमुंचेमायाके०मायाकपट मूकेनही तोतेप्राणीना पांचमहाव्रतमां एके नरहे ॥ २० ॥

योगग्रंथनाजावनजाणे ॥ जाणेतोनप्रकाशे ॥ फोकट
मोटाइमनराखे ॥ तसगुणदूरेंनासे ॥ धन्य० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ जेथकी आत्मस्वरूपसधाय एवाजे योगग्रंथके०परमार्थनाशास्त्र तेना जावके० रहस्यने नजाणेके०उलखेनही समजेनही अनेकदाचितजाणे तोप्रकाशेनही जव्यजीवने तेग्रंथोनीवातो कहेनही कारणकेजो तेवीवातोकहे तोपोताने तेमज करवुंपडे वली फोकट मोटाइके०मिथ्याअजिमानराखे जेअमेमोटाछैयें अमारा जेवोकोइनथी एवो अहंकारराखे तसगुणके०तेप्राणीमां जोकोइगुणहोयतो तेपणदूरनासीजाय एम ठतागुणपणजायतो अणठतानुंकहेवुंजशुं ॥ २१ ॥

मेलेवेशेंमहियलम्हाले ॥ वकपरेंनीचोचाले ॥ ज्ञानविना
जगधंधेघाले ॥ तेकेममारगचाले ॥ धन्य० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ मेलेवेशेंके०वस्त्रादिकमलीनराखे अने महियलके०पृथ्वीनेविषे म्हालेके०मलपतांफरे वली वगलानीपेठे नीचुंजोइनेचाले जेथी लोकजाणे ईर्याजूयेछे एवाहोय अनेजो ज्ञानीहोयतो सर्वलेखेछे पणज्ञानविना एटले अज्ञानीथका जगतने धंधेके०क्लेशमां घालताफरे एटले एवीकष्टक्रियाकरनारनांवचन लोकमाने अनेते पोतेतो ज्ञान विनानोछे माटेअशुद्धपरुपे तेवारे लोकनेपण अज्ञानउपदेशलागेमाटे जगतने कदाग्रहरूपक्लेशमां नाख्युंज इतिजाव तो एवा अज्ञानीथकी जैनमार्ग केम चाले यतः- मासेमासेयजोबालो ॥ कुसंगेणंतुजुंजए नसो ॥ सुअक्खायस्सधम्मस्स ॥ कलि अग्घइसोलसिं ॥ १ ॥ तथाअन्नाणीकिंकाहि इत्यादिवचनात् ॥२२॥

परपरिणतिपोतानीमाने ॥ वरतेआरतध्याने ॥ बंधमोक्ष
कारणनपीछाने ॥ तेपहिलेगुणठाणे ॥ धन्य० ॥ ९३ ॥

अर्थ ॥ परपरिणतिके०पारकी समजणते पोतानीकरी माने एटले परअज्ञानी मतेचाले अथवा परपरिणतिके०पुद्गलशरीर वस्त्रपात्रादिकनाजे परिणमन ते अज्ञ करीने तन्मयपणेपरिणमतो सर्वपोतानीज परिणतिमाने अथवा परजे स्वव्यतिरि लोकनाघर तेनाजे परिणमनके०घरव्यापारनु चिंतवनु तेपोतानु करी माने अनेते आर्तध्याननोविकल्पकरे यत सयगेहपरियज्ञ ॥ परगेहसिवावके इत्युत्तराध्ययनवचन माटेपोतानुघर मुकी परघरनी चिंताकरेतो पापश्रमणकह्योछे इतिभाव अने बंध क्षकारणने०बंधनाकारणजे मिथ्यात्व अविरतिकषाययोगप्रमादप्रमुखजेबंधना हेतु नपीछानेके०नजाणे मोक्षनाकारण जे कषायादिकनो अभाव अथवा ज्ञानक्रियाप्रमु एटले नाणकिरियाहिंमुक्खोइतिवचनात् ॥ इत्यादिकमोक्षना हेतुछे तेपण नपीछानेक नजाणे एवाअज्ञानीप्राणी तेगमेतेटला कष्टादिककरो तोपण अज्ञानीछेमाटे पहेले एगणिजाणवा यदुक्त ॥ नाणेणविणाचरण ॥ पढमगुणठाणपुष्टीकर इत्युपदेशमालाटी

किरियालवपणजेज्ञानिनो ॥ दृष्टिथिरादिकलागे ॥ तेथी
सुजशलहिजेसाहिब ॥ सीमधरतुजरागे ॥ धन्य० ॥ ९४ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे ज्ञानिनोके०ज्ञानवतनो क्रियानोलवके०एकअशमात्र पण जे पाम थिरनामादृष्टि तिहांलागनोहोय एटले सम्यक्तसहितहोय आदिशब्दथी काता प्रभ परा एत्रणदृष्टिरूपे तेथीके०तेज्ञानसहित क्रियानाअशथी हेसाहेब सुजश लहिजे सर्वाजशपामिये मोक्षरूपजशछेजशपामिये पणते हेश्रीमधरपरमात्मा तुजरागेक तारे स्नेहेकरीने पामिय ॥ २४ ॥ एपन्नरमीढालनी कोइकगाथामा ज्ञाननीमुख्यताक कोइकगाथामा चारित्रनी मुख्यताकरी तथा कोइक गाथामा बेहुनो स्याद्वादप तेमाटसी वीरजिनने व्यामोहछवजे जेतेनारेस्थितपक्षते शोहशे तेशका टालवाने सोलमी ढालमा स्याद्वादमार्गनो स्थितपक्ष देखाडेछे ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ मनमगममारअजनारणहुगणु ॥ एदेशी ॥

स्वामीसीमधरतुजनेपाडये ॥ आपणोआतमाजे
मप्रगटपाडने ॥ द्रव्यगुणपजवातुजयथानिर्मला ॥
तेमसुजशक्तिथीजईनिजसमामला ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हेसीमंधरसाहेब तुजने मनमांध्यायियें एज नलेके०नलुंछे जेम तमारा ध्यानथी आपणोके०पोतानो आत्मातेप्रगटपामियें तमारा ध्यानथी ज्ञानीथयीये ते ज्ञाने पोतानो आत्मा आवरणरहित थयो तेवारे आत्मनाव पाम्याज इतिनावः ते-वारेयथाके०जेम १ द्रव्य २ गुण ३ पर्याय ते तुजके०तमारानिर्मलछे एत्रणनां लक्ष-णकहेछे यथा गुणाणमासर्डदव्वं॥ एगदव्वसियागुणा॥लक्कणंपज्ज्वाणंतु ॥ उन्नर्डनिस्सि-यानवे ॥ १ ॥ इत्युत्तराध्ययने मोक्षमार्गाध्ययने २७ मे अथवा गुणपर्यायनुं नाजन तेद्रव्य सहनाविधर्म तेगुण क्रमनावी तेपर्याय इत्यादिक व्याख्यान ग्रंथांतरथी जा-णवुं एरीते जेमतमारुंआत्मद्रव्य असंख्यातप्रदेशरूप तथा तमारा ज्ञान दर्शनचारि-त्रादिक अनंतगुण तथा तेमांसमयसमय उत्पादव्ययपणानुं परणमवुं तथा अनंतअ-गुरुलघुप्रमुख जेपर्याय तेसर्वनिर्मल थया निरावरणथया तेरीते मारे पण शक्तिथीके० (यद्यपि व्यक्तिथीनथी तोपण)शक्तियेछेते जडविके०यद्यपि नवके०संसारनेविषे साम-लाके०मेलाछे एटले आवरणलहितछे एटलोफेरछे ॥ १ ॥

चारछेचेतनानीदशाअवितथा ॥ बहुशयनशय
नजागरणचोथीतथा ॥ मिछअविरत्तसुयततेरमें
तेहनी ॥ आदिगुणठाणेनयचक्रमांहमुणी ॥ २ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे चेतनानीअवस्था वर्णवेछे चेतनानी अवितथाके० साचीदशा चार छे तेदेखाडेछे १ बहुशयनके०घोरनिद्रारूपतेपहेली २ शयनके०चक्षुमिचवारूपबीजी ३ जागरणके०कांइक जागवारूपत्रीजी ४ चोथीतथाके०पूर्वेकही तेमज एटले बहुजाग-रणरूप इतिनावः हवेएचारअवस्थानेगुणठाणे फलावेछे आदिगुणठाणेएपद सर्वत्रजो-डियें एटले बहुशयननी आदि मिछके०मिथ्यात्वगुणठाणो अनेबीजीशयनअवस्थानी आदि तेअविरतिसम्यक्दृष्टीगुणठाणो तथात्रीजी जागरणअवस्थानी आदि तेसुय-तके०अप्रमत्तसातमो गुणठाणो ४ बहुजागरणअवस्थानीआदि तेसंयोगीकेवलीनामा तेरमोगुणठाणोछे तेहनीके०तेअवस्थाना आदिगुणठाणते प्रथम धुरगुणठाणा एरीते जोजो एटले एअर्थ जेबहुशयनदशाते १–२–३ गुणठाणे कहेवी अने शयनदशाते ४–५–६ एत्रण गुणठाणेकहेवी अने जागरणदशाते ७–८–९–१०–११–१२ एत्र गु-णठाणेकहेवी अने बहुजागरणते १३–१४ एवे गुणठाणे कहेवी एरीते अमने सुज्यो तेवोअर्थलख्यो वलीजे बहुश्रुतहोय तेणे नय चक्रग्रंथजोयी यथार्थकरवुं स्तवनकर्तायें तो नयचक्रमांमुणीके०नयचक्रमांगुणठाणानीआदिजाणीएमकह्युं तेनयचक्रग्रंथहमणां अमारीपासेनथी माटे विचारजो ॥ २ ॥

भावसंयोगजाकर्मउदयागता ॥ करमनविजीवन
विमूलतेनविगता ॥ खडीयथीभितिमाजेमहोएश्वे
तता ॥ भीतिनवीखमीयनवीतेदभ्रमसंगता ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ भावपदार्थजे सयोगसबधथीउपना कर्मनेउदयेआव्यातेभाव कर्मनं
जीवनथी मूलथी तेठलापणेनथी जेम भीतिके०भींतमाहे खडीयके० खडीथं
श्वेतताके०धवलतायायछे तो तेधवलतामा भींतनथी अनेखडीपणनथी अन्योन्
भिन्नछे पण भ्रमेकरी सगति ऐक्यतामलतिथायछे ॥ ३ ॥ आगाथानोअर्थ ज्ञानवि
मलसूरिनाटबाऊपरथी लख्योछे ॥ ३ ॥

देहनविवचननविजीवनविचित्तछे ॥ कर्मनविरा
गनविद्वेष न विचित्तछे ॥ पुद्गलिभावपुद्गलपणेप
रिणमे ॥ द्रव्यनविजूउंजूउंएकहोवेकिमे ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ देहके०शरीरनथी गेवयतापणे वचनकायिकवाचिकयोगनथी जीवनथी वि
त्तनथी कर्मनथी रागनथी द्वेषनथी विचित्तछेके०विचित्रताअनेकजातिछे एसर्व पु
लिक भावछे तेपुद्गलपणेपरिणमे केमके पुद्गलनु अनेकप्रकारे परिणमनधर्मछे पूरण
गलणधर्माण पुद्गलनुलक्षणछे तेमाटे जीवादिकजेद्रव्यछे तेसर्वथकीजूदोजूदो छे तेर
एकमानोपनहीं उपचारेणकव्हिये ॥ ४ ॥ आगाथानोअर्थ ज्ञानवि० टबाथी लख्योछे

पथीजनलुटताचोरनेजेमजणे ॥ वाटेंकोलुटि
येंतेमजमृढोगिणे ॥ एकक्षेत्रेमल्याअणुतणी
देखनो ॥ विकृतिणजीवनीप्रकृतिउवेपनो ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेम पथीलोकने लुटनायका चोरने कोके०कोइक पुरुषएमकहे जे वाटलु
टेछे पणतेचोर वाटनेलुटनानथीपण वाटेके०वाटजे मार्गनेने विषेरह्याजेलोक तेलुटाय
पण लुटाणो एमवहेछेने वाटलुटी तेमज मूढोके०मूर्खतेशरीर आत्माप्रमुखने एक
गणेछे शामाटेजे एकक्षेत्रेमल्याके०जेक्षेत्रे आत्मा तेजआकाशप्रदेशेमल्या परस्परसग
पणो एवाजे अणुनणीके०परमाणुनी विकृतिके०विकारने देखतोके०देखीने मूर्ख एम
गणेछे अने जीवनीप्रकृतिजेभाव तेने उवेखनोके०वेगलामा अणगणतो थको जीव
नीविदिनने एकपणेगणेछे पणएम जाणतोनथीजे पुद्गलनेजडछे अचेतनछे अने
न्यो ज्ञानस्वरूपीछे तेएक केमथायइतिभाव ॥ ५ ॥

देहकर्मादिसविकाजपुद्गलतणां ॥ जीवनातेद्रव्यव
हारमानेघणां ॥ सयलगुणठाणजीअठाणसंयोग
थी ॥ शुद्धपरिणामविणजीवकारयनथी ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे देहके०शरीर तथा ज्ञानावरणादिकर्म अने आदिशब्दथी घरबार प्रमुख एसर्व पुद्गलनांकार्यछे पुद्गलथी नीपनांछे तेपुद्गलनांकार्यने जीवनांकार्यकहीनो लावेछे तेव्यवहारमानेघणांके०नेव्यवहारनयथी जीवनांकार्यकहियें पणनिश्चयनये तो सर्व पुद्गलस्वरूपछे सयलगुणठाणके०समस्तमिथ्यात्वादिकगुणस्थानक तथा जीअ-ठाणके०समस्तएकेंद्रियादिकजीवस्थानक इत्यादिक सर्वप्रकारते संयोगथीके०पुद्गल-कर्मादिकना संयोगथीजाणवा पणएआत्मस्वरूपनही केमके शुद्धपरिणामके०समस्त उपाधिरहित जेनाप्रदेशनेविषे एक अणुमात्रपण नेलनथी एवुंजे शुद्धस्वरूप तेविना जीवकारयनथीके०जीवरूपकार्यनथी ॥ ६ ॥

नाणदंसणचरणशुद्धपरिणामजे ॥ तंतजोतानछे
जीवथीभिन्नते ॥ रत्नजेमज्योतिथीकाजकारण
पणे ॥ रहितएमएकतासहजनाणीमुणे ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ज्ञानदर्शन तथा चारित्र इत्यादिक अनंतजे शुद्धआत्मानापरिणाम छे ते तंतके०नियतपणाथीजोइयेंतो कांइजीवथकी भिन्ननथी केमके ज्ञानादिक गुण जो भिन्नहोय तो आत्मानिर्गुणजरूपणे मानवोजोइयें तेतो नथी माटेजीवथी ज्ञानादिक गुणभिन्ननथी जेम स्फाटिकरत्नप्रमुख पोतानी ज्योतिथी भिन्ननथी शामाटे जे काज-कारणपणे कहेतां कांइपूरवनुंनथी केमके जो रत्नथीज्योतिथयी एमकहियें तो ज्योति विना रत्नहतुंजनही माटेरत्नथी ज्योतिथयी एम कहेवायनही तथा ज्योतिथी रत्नथ-युंएमपण नकहेवाय केमके रत्नविनाज्योतिपण किहांहती तेमाटे कार्य कारणपणेरहि-तछे एमके०एरीते आत्मा तथाआत्मगुण ते भिन्ननथी सहजस्वभावेजअभेदछे ऐक्य-ताछे एवात नाणीमुणेके०जेज्ञानीहोयतेजाणे पणमूर्ख समजेनही ॥ ७ ॥

अंशपणनविघटेपूरणद्रव्यना ॥ द्रव्यपणकेमकहुं
द्रव्यनागुणविना ॥ अकलनेअलखएमजीवअति
तंतथी ॥ प्रथमअंगेवदिउंअपदनेपदनथी ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ संपूर्णद्रव्यना जेअंग कहेवा तेपणयुक्तनथी केमके जेवारेंअंशकहीयेतेवारें द्रव्यपणगानुं एगंनिच्चंनिरवयवं॥अक्कियंसव्वगत्तसामन्नं॥इतिमहाभाष्यवचनात् जेद्रव्य

देकें० श्रीआचारांगसूत्रमा घटमानछे युक्तछे जेएगंजाणइ सेसव्वंजाणइ जेसव्वं
सेएगं जाणइ इत्यादिपाठात् ॥ ११ ॥

शुद्धनयध्यानतेहनेसदापरिणमे॥ जेहनेशुद्धव्यव
हारहीयडेरमे ॥ मलिनवस्त्रेयथारागकुंकुमतणो ॥
हीनव्यवहारचित्तएहथीनविगुणो ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ एटलीवार शुद्धनयनीमुख्यतायेंवातकही हवेकोइक एमसांभलीनेएक
श्रयनयजअंगीकारकरे अनेव्यवहारनय लेखामांगणेजनही तेने शिक्षाकरेछे जे
कप्रकारें शुद्धनयनुंजे ध्यान तेतो तेप्राणीनेसदानिरंतरपरिणमे जेप्राणीनेशुद्धव्य
रसयमानुष्ठानप्रवृत्तिरूप हीयडेरमेकें०हृदयनेविषेरमे तेनाऊपरदृष्टांत कहेछे जेम
वस्त्रनेविषे कंकुनोअथवा केसरनोरंग नलागे तेमज हीणाव्यवहारवंतनाचित्तने
निगुणोकें०गुणनहोय एटले व्यवहारविनानिश्चयपरिणमेनही ॥ १२ ॥

जेहव्यवहारसेढीप्रथमछांडता ॥ एकएआदरे
आपमतमांडतां ॥ तासउतावलेनविटलेआ
पदा ॥ क्षुधितइछायेंउंबरनपाचेकदा ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जेप्राणी व्यवहारश्रेणीरूपजेअनुक्रम तेतोप्रथमछांडेछे तथा एकपद
कें०एकलोएनिश्चय नयज आदरेछे आपमतमांडताकें०पोतानु मतदृढकरता एक
स्थितिउपर हटथयाछे पणउद्यम करतानथी तोतेनीउतावले आपदाटलेनही प
एकलोनिश्चय पोकारवाथी संसारपरिभ्रमणरूप आपदा टलेनही जेमक्षुधितकें
भ्यानीइछायें उंबरनाफलकदापि नपाके एटले उंबरफल ते जलसेकादिकक्रियाये
पणइछामात्रेंनपाकेइतिभाव ॥ १३ ॥

भावलवजेहव्यवहारगुणथीभले ॥ शुद्धनयभा
वनातेहथीनविचले ॥ शुद्धव्यवहारगुरुयोगपरिण
तपणु ॥ तेहविणशुद्धनयमानहितेघणु ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ भावकें०शुभअध्यवसायनो लवकें०अंशतेपण व्यवहारपडिमाहिकारूप
थकी नहीनोहोय एटले व्यवहारसहितहोय तो शुद्धनयभावनाकें०शुद्धअध्यव
नीजेभावना घोलना तेतेप्राणीथी नविचलेकें०खसेनही एटले शुद्धनयनीभावना
छेतोरे स्थिरथायछे जो व्यवहारयुक्तहोयतो, अन्यथा हणतोलो हणमासीयार

शुद्धव्यवहारतो गुरुयोगके०गुरुनासंयोगे एटले गुरुकुलवासें निर्मलव्यवहारथाय तेशुद्ध-व्यवहारथी परिणतपणुंके०परिपक्कपणुंहोय एटले शुद्धनयमां परिपक्क तोजेशुद्धव्यवहार-वंतहोय तेहजथाय अन्यथाशुद्धव्यवहारविना शुद्धनयठेरीशकेनहि अने तेहविणके०ते गुरुयोगशुद्धव्यवहारविना शुद्धनयमांके०अध्यातममां नहीते घणुंके० तेजे परिणतपणुं ते घणुं न होय एटले गुरुकुलवासे शुद्धव्यवहार अनेशुद्धव्यवहारेपरिपक्कपणुं निश्चयमां नि-श्चलपणुंहोयइति एटले जोगुरुयोगव्यवहारशुद्धहोयतो शुद्धनयमांपरिपक्कताहोय ॥१४॥

केइनविभेदजाणेअपरिणतमती ॥ शुद्धनयअति
हिगंभीरछेतेवती ॥ भेदलवजाणतांकेइमारगतजे ॥
होयअतिपरिणतीपरसमयस्थितिभजे ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एरीते केटलाकप्राणी अपरिणतमतीके०अपरिणामीतेने नविभेदजाणे के० अनेकप्रकारनी खबरनपडे इहां भेदते अपवाद उत्सर्ग निश्चयव्यवहारप्रमुख जाणवा तेनजाणे अपरिणतमतीशब्दे व्यवहारनयवालालीजियें तेकेमनजाणे जे शुद्धनयअति-हिगंभीरछेके०उपलानयतेअत्यंतगंभीरछे एटले एभावजे आगला १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार एत्रणनय यद्यपि अपरिणतमतीजाणे पणनिश्चयनय तो अतिगंभीर उपयो-गरूपनयमांखबरनपडे इति भाव एटलेजे व्यवहारनय एकलोमाने तेनेठपकोदीधो हवे एकलोनिश्चयनय मानेतेने ठपकोदेछे केटलाकप्राणी भेदलवजाणतांके०भेदनो अं-शमात्रजाणतांमार्गने तजेके०छांडीदे एटले अंशमात्र कांइकशिख्युंसांभल्युंछे तेव-चनजाणे तेथी महा अहंकारधरता एमजाणेजे निश्चयस्वरूपनी वातो आपणे जाणिये छिये एवी बीजोकोणजाणेछे अने आपणे आत्मस्वरूपजाण्युं एटले क्रियानुं शुंकामछे क्रियातो ज्ञाननीदासीछे इत्यादिकवचन बोलीक्रियानकरे अनेमार्ग छांडे एवीरीते जे अतिपरिणामिथाय तेशुंकरे तेकहेछे जे समय जेसिद्धांत तेनी परके०उत्कृष्टस्थिति मर्यादा तेनेभजे एटले सिद्धांतमां उत्कृष्टी स्थिति जेनिश्चयनीवातोकरवी तेभजेके० करे अथवा परसमयस्थितिभजेके०अन्यदर्शननीस्थितिभजे एटले एकांतनिश्चयनय-वादी दिगंबरादिक तेपरदर्शनीकहियें तेवारेपणपरदर्शनिनीस्थितिभजी इतिभावः ॥१५॥

तेहकारणथकीसर्वनयनविकह्या ॥ कालिकश्रुतमां
हेतीनप्रायेंलह्या ॥ देखीआवश्यकेंशुद्धनयधुरे
भणी ॥ जाणियेंकुलटीरीतिबोटिकतणी ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ तेकारणथकी निश्चयपरिणामी तेएकली परिणामनी वातोकरीने मार्ग उपा-नाखशे एवुंजाणीने १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्र ५ शब्द ६ समभि-रूढ ७ एवंभूत ए सर्वेनयनथीकह्या किहां नथीकह्यातेकहेछे कालिकश्रुतमांहेके०आ-

चारागादिक कालिकश्रुतनेविषे तीनप्रायेंखह्याके०बहुलताये १ नैगम २ सग्रह ३
वहार एत्रणनयलरयाठे एवात अथकार शिष्यनेकहेठे जेदेखो आवश्यकेके०आव
निर्युक्तिमा देखजो एटलेकालिकश्रुतमां प्रायेत्रणनयकह्याठे एम आवश्यकनिर्यु
कह्युठे यत एएहिं दिठिवाए ॥ परुवणासुत्तश्रठकहणाय॥ इहपुणश्रणज्जुवगमो॥ श्र
रोती हिउंसन्न॥१॥पायसववहार॥ तेहितेहिउजलोएतेण॥परिकम्मणठकालिय॥सु
हिगारो ॥२॥ इत्यावश्यके एरीततोश्वेतावरपक्षेठे जे पूर्वव्यवहार समजावीने पठे
यनीवात समजावेइति तथाहवेदिगवरनीप्रक्रिया दूखवेठे जेशुद्धनयधूरेके०निश्च
धूरेठे तेमाटे घोटिकके० दिगवरनीरीती तेउलटीके०विपरीत जाणीये जेमाटे पहे
निश्चयनय समजावे एटले व्यवहारमा दृष्टिठरेजनही माटे विपरीतकहिइतिभाव ॥

शुद्धव्यवहारठेगछकिरियाथिति ॥ डुप्पसहजाव
तीरथकह्युठेनीति ॥ तेहसविज्ञगीतार्थथीसम्न
वे ॥ अवरएरंडसमकोणजगलेखवे ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे व्यवहार तेप्रधानठे तेशुद्धव्यवहारतो सुविहितगठजे साधुसमु
तेनी क्रियानी जेस्थिति तेमाटे एटले शुद्धव्यवहारते सुविहितगठमा होय डुप्प
नामा आचार्यजेपाचमाआराने ठेडेथशे ज्ञानके०तिहालगें नीतिके०निरंतर तीर्थ
यत इयसवोदयजुगपवरा॥सूरिणोचरणसज्जुएवदे ॥ चउरुत्तरडुसहस्स॥डुप्पसहप
म्माइ ॥ इतिडुसमसघस्तोत्रे तथा वासाणवीससहसा॥नवसयतिमासपचदिणपह
इआघडियादोपल ॥अक्करइगुआलजिणधम्मो॥ इतिदीपालीकल्पे ॥ तेतीर्थतो गी
थसविज्ञथीयतेश्रीज सभवे ...
याथी मोक्ष तेज्ञानक्रिया तोगुणठे अने जेगुणठे तेगुणीथी अभेदरूपठे ...
ज्ञशब्दे क्रियावतथाव्या अने गीतार्थशब्दे ज्ञानवतथाव्या तेसविज्ञ ...
थीजा तेएरडासरिखाजाणवा तेने जगतनेविषे कोणलेखामागणेठे ॥ १७ ॥

शास्त्रअनुसारजेनविहठेताणिये ॥ नीतितपगछनी
तेभलीजाणियें ॥ जीतदाखेजिहासमयसारू
बुधा ॥ नामनेठामकुमतेनहीजससुधा ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेसविज्ञगीतार्थ परमार्थेतोतेने कहियेजे शास्त्रने अनुसारे ...
शास्त्रना अक्षरदेखे एटले पोतानोकदाग्रहमूकीआपे एवीरीती तोतपगछनी
घणीउत्तमठे एटले तपगछमा पचागीप्रकरणादिकजे सुविहितना करयाग्रथ ते
मायठे एमजाणियें इतिभाव जिहाके० जेनपगछनेविषे बुधाके० पंडितलोक ...

सारूके०सिद्धांतप्रमाणे जीतदाखेके०वर्त्तमानकालनोजीतदेखाडेछे जेतपगछनां नाम अने गामके०स्थानक तेकुमतेके०कदाग्रहे मुधाके०फोकट जसके०जेना नही के०नथी एटले एतपगछनांजेनामगामतेसर्वगुणनिष्पन्नछे ॥ १८ ॥

नामनिर्ग्रंथछेप्रथमएहनुंकह्युं ॥ प्रथमअडपाट
लगेंगुरुगुणेसंग्रह्युं ॥ मंत्रकोटीजपीनवमपाटेय
दा ॥ तेहकारणथयुंनामकोटिकतदा ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ हवे तपगछनां नामधुरथकी अनुक्रमे निष्पन्नछे तेकहेछे प्रथमश्रीसुधर्मा स्वामीथी निर्ग्रंथएहवुं नामप्रथमकह्युं तेप्रथमना आठपाटलगें गुरुगुणेके०मोहोटेगुणे निस्पृहतारूपगुणेकरी संग्रह्युंके०ग्रह्युंछे पछे नवमेपाटे सुस्थित सुप्रतिबद्धआचार्य कोटीवार सूरिमंत्रजपीनेरह्यावीजाआचार्यते चारलाख तथा सवालाखमंत्रजपे एटलेसूरिमंत्रपुरोथयो अने एवेआचार्ये कोटीवारजप्यो तेकारणके०तेहेतुये तेवारे कोटीकनाम कहेवाणुं एटलेएनामपणगुणनिष्पन्नछेपणकोइमतकदाग्रहेनथी ॥ १९ ॥

पंनरमेपाटेंश्रीचंद्रसूरेंकर्युं ॥ चंद्रगछनामनिर्म
लपणेंविस्तर्युं ॥ सोलमेपाटवनवासनिर्मम
मति ॥ नामवनवासीसामंतभद्रजोयति ॥ २० ॥

अर्थ ॥ तेकोटिकगछ चउदपाटलगेंचाल्युं तेवारपछे पंनरमेपाटेंश्रीवज्रसेनाचार्यना शिष्य चारथया तेलक्षमूलनी हांडी व्यवहारीयाने घरेचडी तेवारेबीजे दीनेसुकालथशे एमकही जीवाड्या तेव्यवहारीये तथा तेना चारपुत्रे उपकारजाणी चारित्र लीधुं तेचार शिष्यनांनाम १ नागेंद्र २ चंद्र ३ विद्याधर ४ निवृत्ति एचार थया तेचारे आचार्यपदपाम्या तेमां चंद्रनामाआचार्यपन्नरमे पाटेथया तेहथी श्रीजोचंद्रगछ एवुंनाम निर्मलपणे विस्तार पाम्युं तेपण गुणनिष्पन्नथयुं पण मतकदाग्रहे थयुंनथी पछेसोलमेपाटे वनमां वस्या ममत्वरहित जेनीमतिहती एवाआचार्यथया माटे वनवासीनाम चोथुकहेवाणुं तेआचार्यनुंनामसामंतभद्र यतिके०जितेंद्रियहतुं ॥ २० ॥

पाटछत्रीशमेसर्वदेवाभिधा ॥ सूरिवडगछतिहां
नामश्रवणेसुधा ॥ वडतलेंसूरिपदआपीउंतेव
ती ॥ वलीयतसवहुगुणेजेहवाध्यायती ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ तथा छत्रीशमे पाटेसर्वदेवाभिधनामेसूरियकी वडनाझाडतलें सूरिपद आप्युं माटे वडगछ विरुदथयुं तेश्रवणनेविषे सुधाके०अमृतसमान जाणवुं एटले वडनाझाडहेठें आचार्यपदआप्युं माटे वडगछ अने वलीते आचार्यने गुणवंतयतिनो समुदाय

वहुवृद्धिपाम्यो एटले साधुनोसमुदाय तेवडनीपेठेविस्तारपाम्यो तेथीवडगछ कहेवाणा एनाम पणगुणनिप्पन्नछे तेमाटेवडगछनामथयु ॥ २१ ॥

सूरिजगचंदजगसमरसचंद्रमा ॥ जेहगुरुपाटेचउअ
धिकचालीसमा ॥ तेहपाम्युंतपानामबहुतपकरी ॥
प्रगटआघाटपुरीविजयकमलावरी ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ पछे जगतचंद्रसूरिजे जगतनेविषे उपशमरसेकरी चंद्रमासरिखाथया एटले चंद्रमाअमृतरसेजरयो तेमआचार्य ते समतारसेजरेला मोटापाटनाधणी चउअधिक चालीसमाके०चुम्मालीसमेपाटेथया तेणे श्रीआविलवर्द्धमानादिकबहु तप करीने प्रगटपणे आघाटके०उदयापुरनेविषे राणोजी हस्तीउपर चडीआवताहता तेवारें श्रीजगचंद्रसूरि वर्द्धमानतपलागटकरता दुर्बल शरीरनाधणी सन्मुखआवताहता त्यारे राणे प्रधानने पूछ्युजे एकोण आवेछे प्रधानेकह्यु हेमहाराज घणामोहोटा तपनाकरनार आचार्यआवेछे त्यारे राणोजी हस्तिऊपरथी हेगाउतरी नमस्कारकरीने महातपा एवुनिरुददीधु त्यारे प्रधानेकह्यु महाराज महापद काडीनाखो नहीतरलोक महातपानेठेकाणेमहात्माकहेशे तेमाटे महापद मकहो तेसांजली राणाजीयें तपानामदीधु एपण गुणनिप्पन्न ठकुनामथयु पणतपाएवुनामकदाग्रहथीथयुनथी तथा विजयकमलावरीके०राणाजीनी सजामा चोराशी वादीयोने जीतीने जयलक्ष्मीवरया त्यारे राणेहीरलाजगचंद्रसूरिकहीबोलाव्या ॥ २२ ॥

एहपटनामगुणठामतपगणतणा ॥ शुद्धसद्दहणगु
णरयणएहमाघणा ॥ एहअनुगतपरपरजणीसेव
ता ॥ ज्ञानयोगिविबुधप्रगटजगदेवता ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ एपटनामके०एपूर्वोक्तनाम तेकेवाछे जे गुणना स्थानकछे ते तप गणनाके०तपगछना जाणवा शुद्धसद्दहणाके०शुद्धश्रद्धावत गुणरयणके०गुणरूपरत्न ते तपगछमा घणाछे एटले श्रद्धावत गुणवतघणाछे एअनुगतपरपरके०स्वतत्रपरपरा आवेएटले जेनीपरपरामा त्रुटपडीनथी तेनुनाम अनुगतपरपराकहियें तेजणीके०तेमाटे सेवताके०सेवाकरता एवाकोणछे जे ज्ञानयोगिविबुधके०ज्ञानसयोगवतापडित अनुगतपरपरानीसेवाकरेछे इतियोग प्रगटजगदेवताके०ए जगतनेविषे प्रगटपणे देवताजएटलेपडितलोकशुद्धपरपरानीजसेवाकरे ॥ २३ ॥

कोइकहेमुक्तिछेविणतांचीयरा ॥ कोइकहेसहजमताघरदहियरा ॥
मूढएहोयतमनेदजाणेनही ॥ ज्ञानयोगेंक्रियासाधतातेसही ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ हवे सर्वअधिकारकहीने छेके निश्चयनया व्यवहारनयफलावतातेफलावे छे कोइकव्यवहारनयनादिकहेछे जेविणतांथिरांके०पडिलेहणा पडिक्कमणादिक तथा फाटांत्रुटांवस्त्रादिकपहेरतां इत्यादिक कष्टकरतां मुक्तिछेके०मुक्तिपामियें तथा कोइकनिश्चयवादीएमकहेछे जे सेहेजरीतेघरनेविषे दहियरांजमतां उपलक्षणथी पक्वमोदकप्रमुखलेवा एटले निश्चयनयवालाकहेछे जेकष्टकरेशुंथाय खुबखावुंपीवुं पण तत्वज्ञानथयु एटलेसिद्धिजाणवी एवीजूदीजूदीरीतना बोलनाराते बेहु मूढके०मूर्खछे एटले तेमोक्षसाधवानो भेदके०प्रकारजाणतानथी केमके ज्ञानने संयोगेक्रियासाधतां सहीके०तेमुक्तिसत्यछे यतः नाणकिरियाहिंमुक्खोइतिभाष्यवचनात् तथा हयंनाणंकियाहिणं ॥ हयाअन्नाणउक्किया ॥ पासंतोपंगुलोदड्ढो ॥धावमाणोअअंधउ ॥१॥ एवंसव्वेविनया ॥मिछदिठ्ठिसपक्खपडिवद्धा ॥ अन्नोन्ननिस्सियाउण ॥हवंतिते चेवसम्मत्तं॥२॥ इत्यादिक आवश्यकनिर्युक्तिवचनात् ॥ २४ ॥

सरलभावेंप्रभोशुद्धएमजाणतां ॥ हुंलहुंसुजशतुझ
वचनमनआणतां ॥ पूर्वसुविहिततणाग्रंथजाणीकरी ॥
मुझहोजोतुझकृपाभवपयोनिधितरी ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ माटेहे प्रभो एमके०एरीते सरलस्वभावें करीवेहुनयेसिद्धिछे एरीतेजाणतां पणकपटेनही जेकहे एक अने चित्तमां वीजुंहोय एम कपटसहित नही तथा तुझवचन मनआणतांके०पूर्वे ज्ञानक्रियाभ्यांमोक्षः एमजाणतां तथा मनआणतांके०प्रतितकरतां थकां सुजशके०भलोजे जशतेहुंपामुं एटले मुनिराजप्रमुख सुविहितलोक भलोजशबोले एवीस्याद्वाददृष्टि केमथयीतेकहेछे जे पूर्वसुविहिततणा के०पूर्वाचार्य श्रीहरिभद्रसूरि तथाधर्मदासगणी भाष्यकारजी उमास्वातिवाचकप्रमुखना जेग्रंथते जाणीकरीने सम्यक्ज्ञानेकरी स्याद्वाददृष्टियथी तएवीदृष्टितो प्रभुकृपाथी थाय तेमाटेप्रभुपासे प्रार्थनाकरेछे जेभवपयोनिधिके०जेसंसारसमुद्र तेनेविषे तुझकृपाके०तमारीदयारूप तरीके०जहाज तेमुझहोजोके०मारेथाजो एटलेसंसारसमुद्रमां तमारी कृपारूपजहाज मारेथाजो एसोलमीढालनेअंतेस्याद्वाददृष्टिनी सिद्धिकही एवीदृष्टि पोतानी थयी तेथीउपनोजेहर्ष तेहर्षेकरीसतरमीढालमां बोलेछे ॥ २५ ॥

॥ ढाल सतरमी ॥

॥ कडखानीदेशी ॥

आजजिनराजमुजकाजसिध्धांसवे ॥ वीनतीमाहरीचित्तधारी ॥ मार्गजोमेंलह्योतुझकृपारसथकी ॥
तोहुइसंपदाप्रगटसारी ॥ आज० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हेजिनराज आजके०जेदिवसे स्याद्वाददृष्टियें ठेंप्रमाणयुक्त तेहिवसे भ
वीश्वरनु वर्त्तमानछे तेमाटेआजकहियें तेआजे मारा जेकार्यतेमारीनिद्धथयां माट
जेमारीत्रीनती चित्तमापरमेश्वरेधारी यद्यपि परमेश्वरतो वीतरागछे कोइनी वीनं
चित्तमांधरतानथी तोपण परमेश्वरनीजक्तिजनितकार्य जक्तलोकने थयु माटेआ
कार्योपचारकरीनेकहेछेके जोतुकृपारूपरसयकी मेंमार्गलह्योके०तुमार्गपाम्यो य
तेमार्गरूप सारीके० मनोहर सपदा माहरेप्रगटथयी ॥ १ ॥

वेगलोमतहुजेदेवमुऊमनयकी ॥ कमलनावन
थकीजेमपरागो ॥ चमकपाषाणजेमलोहनेखेंच
से ॥ मुक्तिनेसेहेजतुऊजक्तिरागो ॥ आज० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ माटे मारामनयकी वेगला मतयाजो एटले घटमारहेजो जेम कमल
वनयकी परागोके० वासना दूररहेतीनथी एटले जेमकमलनीवासना तेकमल
वनमारहे तेम तमेमाराचित्तमा रहेजो चमकजातीनो कोइपथर विशेष ते जेम
हने खेचसेके० जेम लोढानखेचे एटले एपथरनो गुणो मेहेजस्वनावछे जे लोढु
गलुहोय तोपण तिहाथीपोतानी मेले आवीने पथरनेवलगे तेरीते तमाराऊपर मह
रोजेत्नक्तिरागछे तेखजावेजमुक्तिनेखेंचशे ॥ २ ॥

तुवसेजोप्रजोहर्पजरहीयमहे ॥ तोसकलपापनाबंधत्रूटे ॥ उगते
गगनसूरयतणेमंमले ॥ दहदिगिजेमतिमिरपमलफूटे ॥ आ० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हेप्रजो हर्पजरयु जेमारुहीयु तेनेविषे जोतुवसे तोसमस्तजेजवात
नावधकरयाछे तेत्रुटीजाय तिहादृष्टात कहेछे जे गगनके० आकाशनेविषे
माननु मम्ल तेउगेथके दहदिशिके० दशोदिशानेविषे जेम तिमिरके०
पमलजे समूहते फूटेके० नाशपामे तद्वत् पापपमल त्रूटे ॥ ३ ॥

सीचजेतुसदाविपुलकरुणारसे ॥ मुऊमनेशुद्धमतिकल्पवेली ॥ नाण
दसणकुसुमचरणवरमजरी ॥ मुक्तिफलआपशेतेएकेली ॥ आ० ॥ ४

अर्थ ॥ विपुलकरुणारसेंके० विस्तारवान करुणारूपरसेंकरीने माहारामनमां
शुद्धमतिरूप कल्पवृक्षनीवेलीते हेस्वामीतुसिंचजे इतिजाव तेसिंच्याथका ज्ञानद
रूपतो फूलथ्यावशे तथा प्रधानचारित्ररूप मजरीके० माजरलागशे तेवारपछे मु
रूपफलने आपशे तेएकेलीके० तेशुद्धमतिरूपकल्पवेलडी एकलीआपशे ॥ ४ ॥

लोकसन्नाथकीलोकवहुवाउलो ॥ राउलोदासतेसवित्तवेपे ॥ एकतु
ऊआणसुजेहराताहे ॥ तेहनेएहनिजमित्रदेखे ॥ आज० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ लोकसंज्ञा जेगाडरियोप्रवाह तेथकी लोकबहुवाउलोकें० घणोलोक थैलो थयोछे पणराउलोदासके० राजानोदास एटले तमारोदास एहोजेहुं ते सर्वगाडरिया प्रवाहनेछंडेसुंतुं एटले स्वात्ममां आणनोनथी मात्र एक अद्वितीय तुझआणनुं-जेगनारहुंके० तमारी आज्ञाथी जे रंगाणाछे तेने ए मारो आत्मा ते पोतानो मित्र करीजाणेछे एटले तमारीआणाथीजे वाध्यछे तेने उवेखुनुं पण तमारी आज्ञा-वंतने साधर्मिकसंबंधपणामाटे मित्रकरीजाणुंतुं इतिभावः ॥ ५ ॥

आणजिनभाणतुझएकहुंशिरधरुं ॥ अवरनीवाणीनविकानेसुणियें ॥
सर्वदर्शनतणुंमूलतुझशासनं ॥ तेणतेएकसुविवेकथुणियें ॥ आज० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हेजिनके० सामान्यकेवलीमां भाणके० सूर्यसरिखानारी एक अद्वितीय आज्ञाते हुं मस्तकेंधरुं अने अवरके० बीजानीवाणीते कानेसांभळियेंनही एटले वीतरागनी आज्ञा आदरीयें पण अवर जे रागीद्वेषी तेनां वचन काने न धरियें इति भाव. सर्वदर्शनके० सम्यक्त्व केमके सकलनयश्रद्धायें सम्यक्त्व यदुक्तं महाभाष्ये भवइयावयणपहा ॥ तावइयानयाविस कमया॥ चेवहुंतिनयवाया॥सम्मतंसमुदियासवे ॥ इतिवचनात् तेमाटे समकितनुंमूलते तुझशासनके० तमारी आज्ञाछे अथवा षट्-दर्शननुंमूलते तुझशासनछे एटले सर्वदर्शन तेतमाराजदर्शननाअंशछे तेमाटे त-मारी आज्ञातेज एक अद्वितीय जलाविवेककरी स्तवियेंछेयें एटले सर्वदर्शननुं मूल छांडी अवरनीस्तवना कोणकरे इतिभावः ॥ ६ ॥

तुझवचनरागसुखसागरेहुंगणुं ॥ सकलसुरमनुजसुखएकबिंदू ॥ सा
रकरजोसदादेवसेवकतणी ॥ तुंसुमतिकमलिनीवनदिणंद ॥ आज०॥७ ॥

अर्थ ॥ तमारा वचनऊपर जेराग एटले जैनागमनोजेराग तद्रूपजे सुखसमुद्रना समूह तेआगल समस्तदेवता तथासमस्तमनुष्य चक्रवर्त्यादिकनांसुख तेएकबिंदुस-मान हुंगणुंके० हुंमानुंछुं तेमाटे हेदेव सदासर्वदा तमारो हुंसेवकछुं तेनी सारके० संभालकरजो एटले तमारासरिखो करजो तमे सुमतिरूपजे कमलिनी तेनुं जेवन तेनेविषे दिणंदके० सूर्यसरिखाछो एटले सूर्यजेम कमलिनीने विकस्वरकरे तेम सुम-तिरूपकमलिनीने तमे विकस्वरकरो एटले तमाराथी सुमतिआवे इतिभावः ॥ ७ ॥

ज्ञानयोगेंधरीतृप्तिनविलाजियें ॥ गाजियेंएकतुझवचनरागें ॥ शक्तिउ
ल्लासअधिकोहुसेतुझथकी ॥ तुंसदासकलसुखहेतजागें ॥ आज० ॥८॥

अर्थ ॥ ज्ञानयोगमां तृप्तिधरीने एटले ज्ञानमां मग्नरहीने क्रियानुष्ठान करतां

लाजियेनही पण सावधानथयीने एकतमारा वचननेरागेकरीगाजियें एटले ज्ञानवादिक्रियानुष्ठान उद्यापततोहोय तेने आगमवचनेकरी गाजीनेजवावआपि रीते प्रवर्त्तता तुरुथकीके० तमारा वचनथकी एटले तमारीआज्ञाथकी उल्लास पणअधिकोथशे पणगलियाथयीने वेशीरहेता वीर्योल्लासनहिंथाये उल्लसथसे इतिजाव एवीरीते प्रवर्त्तनकरता कारणद्वारे कर्त्ताने फलदेखाडेछे तुम सकलके० तमे सदानिरतर समस्तसुख जेसिद्धिनासुख तेनो हेतुके० कारणते जके० जागतोछे एटले ज्ञानक्रियाथ्या मोक्ष एप्रजुनु वचनछे तेवचनथकी अजरामरसुखतु जाजनथाय तेमाटे सिद्धिनोहेतु पणतुंहिजथयो इतिजाव ॥८॥

वक्तपागछनंदनवनेसुरतरु ॥ हीरविजयोजयोसूरिराया ॥ तास पाटेविजयसेनसूरिसरू ॥ नितनमेनरपतिजासपाया॥आज० ॥ए॥

॥ अर्थ ॥ श्रीजगचन्द्रसूरियें तपाविरुदधराव्यु एमोहोटोतपगछतद्रूप नंदनवनने विषे सुरतरुके० कल्पवृक्षसमान श्रीहीरविजयसूरि जयोके० जयवतोवर्तो सुरिराये० थीजाआचार्यमा राजासरिखाथया तेहनेपाटें श्रीविजयसेनसूरि सर्वथाकारें ईश्वरतुल्यथया जेमनाचरणकमलने नरपतिके० पादशाह तेनिरतर नमस्कारकरता एटले एनामजेपादशाहजाहांगीरे षटदर्शनपरिक्षानेअर्थे सर्वदर्शनीनेतेडा जैनदर्शनमाहेथी श्रीविजयसेनसूरिगयाहता तेमणेसर्वदर्शननोपराजयकर्यो तेथी ए पादशाहेंप्रजुजे श्रीहीरविजयतेगुरु अने तमे सवाइ गुरुथया इतिजाव॥ए॥

तासपाटेंविजयदेवसूरिसरू ॥ पाटतसगुरुविजयसिंह-
धोरी ॥ जासहितसीखथीमार्गएअनुसर्यो ॥
जेहथीमविटलीकुमतिचोरी ॥ आज० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वली तेनेपाटें श्रीविजयदेवसूरिथया तथा तेमनापाटे श्रीविजयसिंह तेगच्छनो जारवेहेवाने वृषजसमानधोरीथया जेमनी हितसीखके० आज्ञापामीने एसंवेगमार्ग आदर्यो एटलेएनामजे श्रीजशोविजयजीउपाध्यायें पण एमनी आज्ञाने क्रियाउद्धारकर्यो तथा श्रीविजयसिंहसूरिना शिष्य अनेक हता तेमा शिष्य सत्त्वनीनिरुदधारीहता तेमनेमा मोहोटा शिष्य पंडितश्रीसत्यविजयगणि तेमणे श्रीगुरुनी आज्ञापामी क्रियाउद्धारकीधो तेमाटे एमकह्युजे मार्ग . . . संवेगमार्गआदर्यो जेआदरवाथकी तीर्थंकरअदत्त गुरुअदत्त इत्यादिक महोटा चोरीटलीगयी। ए श्रीतपगछना आचार्योनी परंपरा कही ॥१०॥

हीरगुरुशीसअवतंसमोटोहुउं ॥ वाचकांराजकल्या
णविजयो ॥ हेमगुरुसमवर्फ़ेशब्दअनुशासने ॥
शीसतसविबुधवरलाभविजयो ॥ आज० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवे उपाध्यायजी पोतानी परंपराकहेछे तेपूर्वें कह्याश्रीविजयसिंहसूरितेना
ाष्यसमुदायमां अवतंसके० मुकुटसमान महोटाथया वाचकांराजके० उपाध्यायोमां
जासरिखा एवा श्रीकल्याणविजय उपाध्यायथया ते शब्दअनुशासनेके० व्याकरण
ास्त्रमांतो हेमगुरुसमवर्फ़ेके० श्रीहेमाचार्य सरिखाथया वली तेमना शिष्य विबुधवर-
० सर्वपंफितमां शिरोमणी एवा श्रीलाभविजयगणीथया ॥ ११ ॥

शीसतसजितविजयोजयोविबुधवर ॥ नयविजयविबु
धतससुगुरुभाया ॥ रहिअकाशीमठेंजेहथीमेंभलें ॥
न्यायदर्शनविपुलभावपाया ॥ आज० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ वली तेमना शिष्य एकश्रीजितविजयजीजयवंता पंफितोमां प्रधानसरि-
ा तथा बीजाश्रीनयविजयजी पंफितप्रधानथया तेश्रीजितविजयजीनारुमागुरुभाइ-
ाथया जेहथीके० तेवेहुगुरुनापसायथी हुं रहिअकाशीमठेंके० काशीना मठने विषे
हीने भलीरीते न्यायदर्शनके० न्यायशास्त्रना भावते विपुलके० विस्तारपणेपाम्यो.

जेहथीशुध्दलहियेंसकलनयनिपुण॥ सिध्दसेनादि
कृतशास्त्रभावा ॥ तेहएसुगुरुकरुणाप्रभोतुऊसुगु
ण ॥ वयणरयणायरीमुऊनावा ॥ आज० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जेगुरुनाप्रसादथकी श्रीसिद्धसेनदिवाकर तथा आदिशब्दथी हरिभद्रसूरि
ामास्वातिवाचकप्रमुख पंफितोनां करेलां जे शास्त्र तेमांकह्याजेभाव तेनाशुद्धलहियेंके०
ुद्ध रहस्यपामियें तेभावकेवाछे जे सकलनयनिपुणके० समस्त जे न्याय तेमां निपुण
ाथवा समस्तजेनैगमादिकनय तेमां निपुण एवा जे संमति तत्वार्थ, षड्दर्शनसमुच्चय,
यचक्रसार, धर्मसंग्रहणी, अनेकांतजयपताका प्रमुखग्रंथोनाभाव तेना शुद्धरहस्यने
, पाम्यो माटे एगुर्वादिकनी जे करुणा के० कृपा ते केवीछे जे हे प्रभो तुऊ के०
ारुं जे सुगुणवयणके० गुणवंतजेवचन तद्रूप रयणायरीके० समुद्रनेविषे नावा के०
हाजसरिखीछे एटले एभावजे जो गुर्वादिकनी करुणारूपनावा होयतोतमारा वचन-
पसमुद्रनो पार तेपामिये, तेमारागुरुनी कृपारूपनावा मारे थयी ॥ १३ ॥

॥ कलस ॥

इमसकलसुखकरडरितजयहरस्वामीश्रीमंधरतणी ॥ एवीन तिजेसुणेप्रावेंतेलहेलीलाघणी ॥ श्रीनयविजयबुधचरणसे वकजगविजयबुधआपणी ॥ रुचिशक्तिसारुंप्रगटकीधीशा स्त्रमर्यादाप्रणी ॥ १ ॥ इतिश्रीसीमंधरजिनविज्ञप्ति संपूर्णा॥

अर्थ ॥ हवे जेमनवोप्रासादकरावे तेनेमाथे कलशचढावे तेवारे संपूर्णथाय छे आस्तवनरूपप्रासादनीपनुतेसपूर्णकरवामाटे कलशकहेछे एरीते सकलसुखना कर तयाडुरितकें० पापनु जेजयतेना हरवावाला एवा स्वामीकें० नायक श्रीसीमंधरप्रभु अमेविनतीकही तेजेप्राणीभक्तिभावेकरी सांभले तेप्राणी घणीसुखलीलापामे एवी श्रीनयविजयजीपंडितना चरणकमलनी सेवानाकरनार श्रीयशोविजयजीपंडित पोतानी शक्तिप्रमाणे श्रद्धाभावनीजे रुचिहती एटले स्याद्वादमार्गनी रुचिने चित्तमांहतीते शास्त्रनीमर्यादायेप्रगटकरी कहि देखाडी इति ॥ १ ॥

॥ इतिश्रीसीमंधरजिनस्तवनटवार्थ समाप्त ॥

वंदयर्तुयंच शान्त । नानाशास्त्रार्थगर्भितं ॥ कमेऽल्पविषयाप्रज्ञा । मुग्धलाभोपमान्तु । यदत्रवितथंप्रोक्तं । मदबुध्यादिहेतुना ॥ तच्छोधने कृपाकृत्वा । मयिशोध्यमसत्वरे । श्रीमद्विजयसिंहाव्द । सूरिराभूजितेंद्रिय ॥ तस्यांतेवासीसत्यादि। विजय सान्वय ॥३॥ कर्पूरविजयस्तस्य । शिष्योगुणगणैर्युत ॥ तस्यापिक्षमयायुक्त । क्षमाविजय इ त ॥४॥ जिनादिविजयस्तस्य । शिष्योभूरिशिष्यक ॥ शास्त्रज्ञ सज्ञानोधीमान् । गोधर्मकर्मणि ॥५॥ उत्तमादिविजयस्तस्य । शिष्य शिष्योघसत्तम ॥ सर्वोत्तमगुणै कर्मशास्त्रकृशाग्रधी ॥ ६ ॥ तस्याह्निपकजेपद्म । विजयोभ्रमरोपम ॥ नन्दाग्निवसुवः १०३० । तेनेस्वार्थितंस्कृत ॥ ७ ॥

इतिश्रीसीमंधरजिनस्तवनकविवशोविजयजीकृत
सार्द्धत्रिशतगाथाप्रनवेतस्यकविपद्मविज
यकृतबालावबोध समाप्त

॥ ॐश्रीसर्वज्ञायनमः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीपंम्तितदेवचंडजीकृत आगमसार ॥

भव्यजीवनेप्रतिबोधवानिमित्तेमोक्षमार्गनीवचनिकाकहेछे. तिहांप्रथम जीवअनादिकालनो मिथ्यात्वीहृतो तेकाललब्धिपामीने त्रणकरणकरेछे. तेनांनाम-पहेलुं यथाप्रवृत्तिकरण, बीजुं अपूर्वकरण अने त्रीजुं अनिवृत्तिकरण.

तेमांपहेलुं यथाप्रवृत्तिकरणकहेछे. १ ज्ञानावरणी, २ दर्शनावरणी. ३ वेदनी, ४ अंतराय, एचारकर्मनी त्रीसकोडाकोडीसागरोपमनीस्थितिछे, तेमांथी ओगणत्रीस कोडाकोडीखपावे अने एककोडाकोडीबाकीराखे, तथा १ नामकर्म,२ गोत्रकर्म, ए बे कर्मनी वीसकोडाकोडीसागरोपमनी स्थितिछे, तेमांथी ओगणीसखपावे अने एककोडाकोडी राखे, अने मोहनीयकर्मनी सितेरकोडाकोडीसागरोपमनी स्थितिछे, तेमांथी अगणोतेरखपावे बाकीएककोडाकोडीराखे एत्रीरीते एकआयुकर्मवर्जीने बाकीसातेकर्मनी एकपल्योपमना असंख्यातमाभागेन्यून एककोडाकोडीसागरोपमनीस्थितिराखे,एवुं जे रागरूप उदासिपरिणाम ते यथाप्रवृत्तिकरणकहिये. ए पहेलुंकरण सर्व संज्ञीपंचेंद्री जीव अनंतिवार करेछे.

हवे बीजुंअपूर्वकरणकहेछे. तेएककोडाकोडीसागरोपमनी स्थितिमांथी एकमूहुर्त्त प्रनेअनादिमिथ्यात्व जे अनंतानुबंधीआनीचोकडी ते खपाववाने अज्ञान हेय तेछांडु अने ज्ञानउपादेय एटले आदरवुं, ए वांछारूप अपूर्वकहेतां पहेलांक्यारे नाव्यो एवो जे परिणाम ते अपूर्वकरणकहिये, एबीजुंकरणते समकितयोग्यजीवनेथाय.

हवेत्रीजुंअनिवृत्तिकरणकहेछे. तेमुहुर्त्तरूपस्थितिखपावीने निर्मलशुद्धसमकेतपामे मिथ्यात्वनो उदयमटे त्यारे जीव उपशमसमकेतपामे, एवोजेपरिणामते अनिवृत्तिकरणकहिये. एकरणकीधाथी गंठीभेदथयोकहिये उक्तंच आवश्यकनिर्युक्तौ "जागंठी तापटमं । गंठीसमयछेउभवेबीउं ॥ अनिअट्टिकरणंपुण । समत्तपुरस्करकेजीवे" ॥ १॥ ऊपरदेसंदद्धछिअंच । विज्जाइवणदवोयप्पइय ॥ मिछत्तस्सअणुदए । उवसमसम्मंलहइ जीवो ॥ २ ॥ एममिथ्यात्वनोउदयमट्याथी जीवसमकितपामे, तेसमकितनी सद्दहणा बेभेदछे, एक व्यवहारसमकितसद्दहणा, बीजी निश्चयसमकितसद्दहणा.

देवश्रीअरिहंत देवाधिदेव अने गुरुसुसाधु जे सूधोअर्थकहेते तथा धर्मकेवलीनो भाख्यो जे आगममां सातनय तथा एकप्रत्यक्ष बीजुंपरोक्ष एबेप्रमाण अने चार निक्षेपकरीसद्दहे, एवी सद्दहणा ते व्यवहारसमकितकहिये. एपुण्यनुं कारण तथा धर्म प्रगटकरवानुंकारणछे एवीरुचि ज्ञानविनापण घणाजीवोने उपजे.

बीजुनिश्चयसमकित तेथावीरीतेजे निश्चयदेवते आपणोजआत्मा जीवनिरावर पी सिद्ध ते सग्रहनयनीसत्तागवेषता तथा निश्चयगुरुतेपण आपणोआत्मान तत्त अने निश्चयधर्मते आपणाजीवनोस्वजावजछे एवीसद्दृणा ते मोक्षनुकारण छे ब जीवस्वरूपउंलखयाविनाकर्मक्षयपेनही एवी शुद्धसद्दृणा तेनिश्चयसमकित

हवेज्ञाननुस्वरूपकहेछे तेज्ञाननानेभेदछे एकव्यवहारज्ञान बीजुनिश्चयज्ञान ते अन्यमतिनासर्वशास्त्रजाणवा अथवा जेनागममध्ये कथाजे एकगणितानुयोग व मान बीजो चरणकरणानुयोग तेक्रियाविधि त्रीजोधर्मकथानुयोग एत्रणअनुयो जाणवापणु तेसर्वव्यवहारज्ञानछे अथवा अतरउपयोगविनाजेमूत्रना अर्थ करव पण व्यवहारज्ञानकहिये

हवेनिश्चयज्ञान ते छद्रव्य तथा तेनागुण अनेपर्याय सर्वनेजाणे तेमा पाचअजी व्यछे तेहेयके० छांडवायोग्यजाणीछाडवा अने एकजीवद्रव्यतेनिश्चयकरी सिद्धस मोक्षमयी मोक्षनोजाणनार मोक्षनुकारण मोक्षनोजावावाळो मोक्षमाजरहेवे ए आपणोजीव अनतगुणीअरूपीछे तेनेजध्यावे तेनिश्चयज्ञानकहियें

हवे एकधर्मास्तिकाय बीजोअधर्मास्तिकाय त्रीजोआकाशास्तिकाय चोथो स्तिकाय पाचमोजीवास्तिकाय अनेछठोकाल एछद्रव्यशाश्वताछे तेनुज्ञानकहे द्रव्यमध्ये पाचअजीवद्रव्य छे अनेएकजीवद्रव्य ते चेतनालक्षणवंतछे उपादेय

हवेएछद्रव्यनागुणकहेछे पहेलोधर्मास्तिकायनाचारगुण एकअरूपी बीज त्रीजोअक्रिय चोथोगतिसहायगुण, अनेबीजोअधर्मास्तिकायनापण चारगुणछे एक रूपी बीजोअचेतन त्रीजोअक्रिय चोथोस्थितिसहायगुण, अने त्रीजो कायद्रव्यनाचारगुणछे एकअरूपी बीजोअचेतन त्रीजोअक्रिय चोथोअवगाहना गुण, हवेकालद्रव्यनाचारगुणकहेछे एकअरूपी बीजोअचेतन त्रीजोअक्रिय च वापुराण वर्त्तनालक्षण, हवेपुद्गलद्रव्यनाचारगुणकहेछे एकरूपी बीजो अचेतन त्र सक्रिय चोथोमिलणविखरणरूपपूरणगलनगुण, हवेजीवद्रव्यनाचारगुणकहेछे नतज्ञान बीजोअनतदर्शन त्रीजो अनतचारित्र चोथोअनतवीर्य एछद्रव्यना कह्या तेनित्यध्रुवछे ॥

हवेछद्रव्यनापर्यायकहेछे धर्मास्तिकायनाचारपर्यायछे एकस्रध बीजोदेश त्री- देश चोथो अगुरुलघु, अधर्मास्तिकायनाचारपर्याय एकस्रध बीजोदेश त्रीज चोथो अगुरुलघु, पुद्गलद्रव्यनाचारपर्याय एकवरण बीजोगध त्रीजोरस चो गुरुलघुसहित, तथाआकाशास्तिकायनाचारपर्याय एकस्रध बीजोदेश त्रीजोप्रदेश थोअगुरुलघु, कालद्रव्यनाचारपर्याय एकअतीतकाल बीजोअनागतकाल त्री

काल चोथोअगुरुलघु; अनेजीवद्रव्यनाचारपर्याय एकअव्याबाध बीजो अनवगाह त्रीजोअमूर्त्तिक चोथोअगुरुलघु. एछद्रव्यनापर्यायकह्या.

हवेछद्रव्यनागुणपर्यायनुंसाधर्मपणुंकहेछे अगुरुलघुपर्यायसर्वेद्रव्यमांसरिखोछे अने अरूपीगुणपांचद्रव्यमांछे एकपुद्गलद्रव्यमांनथी; तथाअचेतनगुणपांचद्रव्यमांछे,एकजीवद्रव्यमांनथी; अनेसक्रियगुणजीव तथापुद्गलएवेद्रव्यमांछे,बाकी चारद्रव्यमांनथी;तथा चलणसहायगुणएकधर्मास्तिकायमांछे,बीजापांचद्रव्यमांनथी; वलीस्थिरसहायगुण एक अधर्मास्तिकायमांछे,बीजापांचद्रव्यमांनथी; तथाअवगाहनागुणतेएकआकाशद्रव्यमांछे, बीजापांचद्रव्यमांनथी; अने वर्त्तनागुणतेएककालद्रव्यमांजछे, बीजापांचद्रव्यमांनथी; तेमज मिलणविखरणगुणतेपुद्गलमांछे, बीजाद्रव्यमांनथी. तथाज्ञानचेतनागुण ते एक जीवद्रव्यमांछे, पणबीजाद्रव्यमांनथी. एमूलगुण कोइ द्रव्यना कोइ द्रव्यमां मिलेनही. एकधर्म बीजोअधर्म त्रीजोआकाश एत्रणद्रव्यना त्रणगुण तथा चारपर्यायसरिखाछे अनेत्रण गुणेकरीतो कालद्रव्यपणएसमानछे.

हवेवलीअग्यारबोलेकरीछद्रव्यनागुणजाणवानेगाथाकहेछे " परिणामजीवमुत्ता ॥ सपएसाएगखित्तकिरिआय ॥ निच्चंकारणकत्ता ॥ सव्वगइश्वरअप्पवेसा ॥१॥अर्थ॥ निश्चयनयथीआपआपणा स्वभावेंछएद्रव्यपरिणामिछे अनेव्यवहारनयथी जीव तथापुद्गल ए द्रव्यपरिणामीछे तथाएकधर्म बीजो अधर्म त्रीजोआकाश अनेचोथोकाल एचारद्रव्यअपरिणामीछे तथाछद्रव्यमां एकजीवद्रव्यतेजीवछे बीजापांचद्रव्यअजीवछे तथाछ द्रव्यमांएकपुद्गलमूर्त्तिवंतअरूपीछे अनेपांचद्रव्य अमूर्त्तिवंत अरूपीछे. छद्रव्यमां पांच द्रव्यसप्रदेशीछे, अने एककालद्रव्यअप्रदेशीछे तेमां एकधर्मास्तिकाय बीजोअधर्मास्तिकायएवेद्रव्यअसंख्यातप्रदेशीछे अने एकआकाशद्रव्यअनंतप्रदेशीछे जीवद्रव्यअसंख्यातप्रदेशीछे, पुद्गलपरमाणुअनंतप्रदेशीछे; परमाणुआअनंताछे, एमपांचद्रव्य सप्रदेशीछे अनेछठोकालअप्रदेशीछे.

छद्रव्यमां एकधर्मास्तिकाय बीजोअधर्मास्तिकाय त्रीजोआकाशास्तिकाय एत्रणते एकेकद्रव्यछे, तथाएकजीवद्रव्य बीजोपुद्गलद्रव्य त्रीजोकालद्रव्य एत्रणद्रव्यअनेकअनेकछे, छद्रव्यमां एकआकाशद्रव्यक्षेत्रछे, अनेबीजापांचद्रव्यक्षेत्रीछे;निश्चयनयथीछद्रव्यपोतपोतानाकार्यसदाप्रवर्त्तेछे माटेसक्रियछे; अनेव्यवहारनयथी जीवतथापुद्गल एवे द्रव्यसक्रियछे, तेमांपणपुद्गलसदासक्रियछे. अनेजीवद्रव्यतो संसारीयकोसक्रियछे; पण सिद्धअवस्थायेंथकोसंसारीक्रियाकरवाने अक्रियछे, तथाबाकीनाचारद्रव्यतोअक्रियछे, निश्चयनयथी छद्रव्यनित्यछे ध्रुवछे; अनेउत्पादव्ययेंकरी अनित्यपणेपणछे तथाव्यवहारनयें जीवअनेपुद्गलएवेद्रव्यअनित्यछे, बाकीनाचारद्रव्यनित्यछेयद्यपिउत्पादव्यय ध्रुवप-

णेसर्वपदार्थपरिणमेठे तोपण एकधर्म बीजोअधर्म त्रीजोआकाश चोथोकाल द्रव्य सदाअवस्थितठे तेमाटेनित्यकह्यां ॥

वद्रव्यमा एकजीवद्रव्यअकारणठे अनेपाचद्रव्यकारणठे केमके पाचेद्रव्य जोगमाआवेठे माटेकारणकहियें केमके धर्मास्तिकाय चालवानोसाह्यआपेठे स्तिकायथिररहेवानोसाह्यआपेठे आकाशास्तिकायअवकाशआपेठे वनेमधुरादि सुरजिगधादिक तथासकोमलस्पर्शादिक जोगपणेथायठे जीवने जरा बाल तारुण्यअवस्थादेठे तथाअनादिससारीजीव जवस्थिति ठता एकअतरमुहूर्त्तकालमा सकलकर्मनिर्जरीमोक्षपदहोचेतिहासिद्धअवस्थायें तोकालपर्यंतजीवअनतासुखनेविलसे माटेकालद्रव्यपण जीवनेजोगथायठे नद्रव्यकोइनेजोगआवतोनथी माटे अकारणकह्यु अनेपाचद्रव्यजोगआवे यथा तथाघणीप्रतोमातोसक्षेपेएटलुंठेजे ठद्रव्यमा एकजीवद्रव्यकारण ठे अकारणठे एपणवातघणीरीतेमलतीठे माटेजेबहुश्रुतकहेतेखरु मारी वद्रव्यकारण अने पाचद्रव्यअकारणएमसजवेठे निश्चयनयथी ठए द्रव्यकर्त्ता व्यवहारनये एकजीवद्रव्यकर्त्ताठे वाकीपांचद्रव्यअकर्त्ताठे ठद्रव्यमा सर्वव्यापीठे अनेपाचद्रव्यलोकव्यापीठे ठएद्रव्यएकखेत्रमाएकठारह्याठे पणए जासायेमलीजायनही एवद्रव्यनोविचारकह्यो

हवेवलीठद्रव्यमा एकनित्य बीजोअनित्य त्रीजोएक चोथोअनेक पाचमोसत् ठो असत् सातमोवक्तव्य आठमोअवक्तव्य एआठआठपक्षकहेठे

धर्मास्तिकायनाचारगुणनित्यठे तथापर्यायमाधर्मास्तिकायनोएकखधनित्यठे नादेशप्रदेश तथा अगुरुलघुपर्यायअनित्यठे अधर्मास्तिकायनाचारगुण प्रमाणखधनित्यठे अने एकदेश बीजोप्रदेश त्रीजोअगुरुलघु एत्रणपर्यायअनित्य तथा आकाशास्तिकायनाचारगुण तथालोकालोकप्रमाणखधनित्यठे अनेएकदेश प्रदेशत्रीजोअगुरुलघु एत्रणपर्यायअनित्यठे तथाकालद्रव्यनाचारगुण नित्यठे पर्यायअनित्यठे पुद्गलद्रव्यनाचारगुणनित्यठे अनेचारपर्यायअनित्यठे गुण तथा ग्रणपर्यायनित्यठे अने अगुरुलघुपर्यायअनित्यठे

हवेएकअनेकपक्षकहेठे एकधर्मास्तिकाय बीजोअधर्मास्तिकाय काशप्रमाणएकठे अनेगुणअनताठे पर्यायअनताठे प्रदेशअसख्याताठे नेकठे आकाशद्रव्यनोलोकालोकप्रमाणखधएकठे अनेगुणअनताठे पर्यायअनताठे देशअनताठे माटेअनेकठे कालद्रव्यनोवर्त्तनारूपगुणएकठे अनेगुणअनताठे पर्याय नताठे समयअनताठे केमकेअतीतकालेअनतासमयगया अने अनागतकाले

यते सर्वद्रव्यनो स्वजावजाणवो एटले धर्मास्तिकायमां पोतानाज द्रव्य क्षेत्र जावछे पणबीजा पांचद्रव्यनानथी तथा अधर्मास्तिकायद्रव्यमध्ये पण स्वद्रव्या चारछे पणबीजा पांचद्रव्यनानथी एमज आकाशास्तिकायनेविषे आकाशना द्रव्यादिकचारछे पणबीजापांचद्रव्यनानथी कालद्रव्यमां कालनाद्रव्यादिकचारछे पांचद्रव्यनानथी अने पुजलनाद्रव्यादिकचार ते पुजलमांजछे बीजापांचद्र थी तथा जीवद्रव्यना स्वद्रव्यादिकचार ते जीवमांछे पणबीजा पांचद्रव्यनानथी

जेद्रव्यतेगुणपर्यायवत द्रव्यथीअजेदपर्यायहोयतेद्रव्यकहियें ... प्रदेशने ग्रतपणो ते क्षेत्रकहियें अने उत्पादव्ययनीवर्त्तना तेकालकहियें ... विशेषगुणनो स्वजावपरिणति पर्यायप्रमुख ते स्वजावकहियें

इहां १ जेदस्वजाव २ अजेदस्वजाव ३ जव्यस्वजाव ४ अजव्यस्वजाव ५ ... जाव एपांचस्वजावकहेवा तेमांद्रव्यनासर्वधर्मने पोतपोतानास्वस्वकार्यने करवे... दस्वजावछे अने अवस्थानपणेअजेदस्वजावछे अणपलटणस्वजावें तथा पलटणस्वजावें जव्यस्वजावछे अने द्रव्यनासर्वधर्मे तेविशेषधर्मनेअनुजा... रिपणे तेमाटे ते परमस्वजावकहियें एसामान्यस्वजावजाणवा एरीतेंवएक... सतूंछे अनेपरगुणे असतूंछे.

हवे पनव्य तथा अवक्तव्यपक्षकहेछे एकद्रव्यमां अनंतागुणपर्यायछे ... वचनेपहेंचायोग्यछे अने अनंतागुणपर्यायतेअवक्तव्य एटले वचनेकह्याजायनहीं छे तिहांश्रीतीर्थंकरने समस्तजावदीठा तेने अनंतमेजागे जे वक्तव्य ... कहवा ... हता ते कहया पछीतेनोपणअनंतमोजाग श्रीगणधरदेवे सूत्रमां गुंथ्यो तेसूत्र... नेअसंख्यातमेजागे हमणाआगमरह्याछे ए छद्रव्यमांथाअपक्षकह्या

हवेनित्यत्यानित्यपदार्थीचौजगीउपनीतेकहेछे एक जेनीआदिनथी अने ... नथी तेअनादिअनंत पहेलोजागो अनेजेनी आदिनथी पणअंतछे तेअना... जोजागो तथा जेनीआदिपणछे अनेअंतपणछे तेहेलोपणछे तेसादिसांतत्रीजो ... जेनीआदिछे पणअंतनथी तेसादिअनंतनामेचोथोजागो जाणवो.

हवेएचारजागाछद्रव्यमांउतारीदेखाडेछे जीवद्रव्यमां ज्ञानादिकगुणतेअना... तेनित्यछे अनेजव्यजीवनेकर्मनोसंबंध तथा संसारीपणानीआदिनथी ... तेजागे अनाद्यांत तेपीयल अनादिसांत जागोछे अने देवता तथा ... मनुष्य अवस्थानते सादिसांतजागोछे अने जेजीवकर्मक्षयपामी मोक्षगया तेनी ... आदिछे अने पाचोमेमार्गमां कोइकालेंआवतुजयी माटेअनंतनथी तेथ...

ोठे एजीवद्रव्यमांचोभंगीकही जीवद्रव्यनाचारगुणअनादिअनंतठे जीवनेकर्मसार्थे ंयोगतेअनादिसांतठे केमकेकेवारेपणकर्मछूटेठे.

हवेधर्मास्तिकायमांचारगुण तथाखंधपणो ते अनादिअनंतठे अने अनादिसांतभां- ोनथी तथा १ देश २ प्रदेश ३ अगुरुलघु एसादिसांतभांगोठे तथासिद्धनाजीवमां ध- र्मास्तिकायनाजेप्रदेशरह्याठे तेप्रदेशआश्रयीने सादिअनंतभांगोठे एवीजरीतें अधर्मा- स्तिकायमांपण चोभंगीजाणवी अनेआकाशद्रव्यमां गुणतथाखंधअनादिअनंतठे बीजो ांगोनथी अने १ देश २ प्रदेश तथा ३ अगुरुलघुसादिसांतठे तथासिद्धना जीवनी ाथे संबंधतेसादिअनंतठे.

पुद्गलद्रव्यमांगुणअनादिअनंतठे जीवपुद्गलनोसंबंध अभव्यने अनादिअनंतठे भ- यजीवनेअनादिसांतठे पुद्गलनाखंधसर्वेसादिसांतठे जेखंधबांध्यातेस्थितिप्रमाणे रही रेठे वलीनवाबंधायठे माटेसादिअनंतभांगोपुद्गलमांनथी.

कालद्रव्यमां गुणचारअनादिअनंतठे पर्यायमां अतीतकालअनादिसांतठे अनेवर्त्त- ानकालसादिसांतठे अनागतकालसादिअनंतठे एकालनुंस्वरूपते सर्वेउपचारथीठे ए ीतेंकालद्रव्यमां चोभंगीकही.

हवे द्रव्यक्षेत्रकालतथा भावमांचोभंगीकहेठे जीवद्रव्यमां स्वद्रव्यथीज्ञानादिकगु- ते अनादिअनंतठे स्वखेत्रेजीवनाप्रदेशअसंख्याताठे तेसादिसांतठे ततोऊर्चनापणे फ- ठे तेमाटे. अथवा अवगाहनामाटेसादिसांतठे पणठतिपणेतो अनादिअनंतठे स्वकाल गुरुलघुनेगुणे अनादिअनंतठे अनेअगुरुलघुगुणनो उपजवो तथाविणशवोतेसादि- ांतठे तथा स्वभावगुणपर्याय तेअनादिअनंतठे अनेभेदांतरेअगुरुलघु तेसादिसांतठे.

धर्मास्तिकायमां स्वद्रव्यजेचलणसहायगुण तेअनादिअनंतठे अनेस्वखेत्रअसंख्या- प्रदेशलोकप्रमाणठे ते अवगाहनापणे सादिसांतठे स्वकालतेअगुरुलघुगुणेकरी अना- दिअनंतठे अने उत्पादव्ययतेसादिसांतठे स्वभावते चारगुणअगुरुलघुअनादिअनंतठे खंध २ देश ३ प्रदेशतेअवगाहनानेप्रमाणे सादिसांतठे एमअधर्मास्तिकायनापण व्यादिचारभांगाजाणवा तथाआकाशास्तिकायमां स्वद्रव्यअवगाहनादानगुणतेअना- दिअनंतठे अनेस्वखेत्रलोकालोकप्रमाणअनंतप्रदेशते अनादिअनंतठे स्वकालते अगु- लघुगुणसर्वथापणेअनादिअनंतठे अनेउपजवे तथाविणसवेसादिसांतठे स्वभाव ते ारगुण तथा खंधअने अगुरुलघुते अनादिअनंतठे तथादेशप्रदेशते सादिसांतठे ते ाकाशद्रव्यना बेभेदठे एकचौदराजलोकनो खंध लोकाकाश तेसादिसांतठे बीजो लोकाकाशनो खंध तेसादिअनंतठे.

कालद्रव्यमां स्वद्रव्यजे नवपुराणवर्त्तनागुण तेअनादिअनंतठे वते

सादिसांतछे केमके वर्त्तमानसमयएकछेतेमाटे तथा स्वकालतेअनादिअनतछे ।
तेगुणचार अनेअगुरुलघु अनादिअनतछे अतीतकालअनादिसांतछे
सादिसांतछे अनागतकाल सादिअनतछे

पुद्गलद्रव्यमां स्वद्रव्यते द्रव्यपणे जेपूर्णगलनधर्मतेअनादिअनतछे अनेप॰
माणुते सादिसांतछे स्वकालस्थिति अगुरुलघुगुणते अनादिअनतछे अगुरुलघुना
बोविषशवोते सादिसांतछे स्वजाततेगुणचार अनादिअनतछे वर्णादिपर्यायचार
वर्ण गंध रस स्पर्श तेसादिसांतछे एद्रव्यादिचारमा चौभंगीकही

हवे छद्रव्यनासबंधआश्रीचौभंगीकहेछे ... अ॰ ... छे
शमाकोइद्रव्यनथी अनेलोकाकाशमा छद्रव्यछे तिहांलोकाकाशद्रव्य तथाधर्मा
स्तिकायद्रव्य अनेत्रीजुअधर्मास्तिकायद्रव्य ते अनादिअनतसबंधीछे जेलोकाका
एकेकप्रदेशमाधर्मद्रव्य तथाअधर्मद्रव्यनोएकेकप्रदेशरह्योछे तेपण किवारे विछ॰
माटेअनादिअनतसबंधीछे आकाशक्षेत्रलोकसर्व अनेजीवद्रव्यने ...दिअनत॰
अनेससारीजीवकर्मसहित तथा लोकनाप्रदेशनोसादिसांतसबंधछे लोकांतिक
नासिद्धजीवोनो आकाशप्रदेशसाथेंसादिअनतसबंधछे
नादिअनतसबंधछे आकाशप्रदेशनीसाथे पुद्गलपरमाणुनो सादिसांतसंबंधछेपुद्गल
शद्रव्यनीपरेधर्मास्तिकाय तथाअधर्मास्तिकायनोपण सर्वसबंधजाणवो जीवअने पु॰
नासबंधमा अभव्यजीवनेपुद्गलनोअनादिअनतसबंधछे केमके अभव्यजीवना॰
नारें सपर्शनहीमाटे अने भव्यजीवनेकर्मनुलागवुअनादिकालनुछे पणते वि॰
टशे माटेभव्यजीवनेपुद्गलसबंधअनादिसांतछे तथानि॰ नयकरीछ॰ ...
मपरिणम्याछे तेपरिणामीपणोसदाशाश्वतोछे तेमाटेअनादिअनतछे अने जीवन॰
सबेहुद्रव्यमलिसबंधजाणपामेछे तेपरपरिणामीपणोछे ते॰ ...
नेअनादिअनतछे अनेभव्यजीवनेअनादिसांतछे अनेपुद्गलनोपरिणामीपणो ते॰
अनादिअनतछे अनेपुद्गलनोमिलनो विछडवोतेसादिसांतछे पुद्गले ...
साथे मिल्योसक्रियछे अनेपुद्गलकर्मथीरहितथाय तेवारेंजीवद्रव्यअक्रियछे
द्रव्यसदासक्रियछे

हवेएकअनेकपक्षथी निर्धेज्ञानकहेवाने नयकहेछे सर्वद्रव्यमाअनेकस्वभावछे
वचनथीकह्याजायनही माटेमाहोमाहेनयकरीसक्षेपपणेकहेछे ...
एकद्रव्यार्थिक बीजोपर्यायार्थिक तेमाउत्पादव्ययपर्यायगौणपणे अनेप्रधानपणे
नोगुणसत्तानेग्रहेतेद्रव्यार्थिकनयकहियें तेनादशभेदछे १ सर्वद्रव्यनित्यछे तेनित्य॰
थिर २ अगुरुलघु अनेक्षेत्रनीअपेक्षानकरे मूलगुणने पिंडपणेग्रहे तेएकद्रव्यार्थि॰

[illegible] ॥ [illegible] ४ [illegible] ६ [illegible] ७ [illegible] ८ [illegible] ९ [illegible] १० [illegible]

हवे पर्यायार्थिकनयनाछभेदकहेछे. [illegible] तेनाछभेद १ द्रव्यपर्याय [illegible] २ [illegible] ३ गुणपर्याय [illegible] ४ गुण[illegible] ५ [illegible] ६ [illegible] गतिमां [illegible] विभावपर्यायजीवपुद्गलनेद्रव्यमांछे [illegible] विभावपर्याय [illegible] पुद्गलमां [illegible] विभावपर्यायजाणवो.

हवेपर्यायनाछीजाछभेदकहेछे. १ अनादिनित्यपर्याय [illegible] सादिनित्यपर्यायनेजीवद्रव्यनुसिद्धपणु ३ अनित्यपर्याय [illegible] ४ अशुद्ध अनित्यपर्यायते जन्ममरणपामवुछे [illegible] ५ उपाधिपर्यायतेकर्मने [illegible] ६ शुद्धपर्यायजेमूलपर्याय [illegible] एपर्यायार्थिकनुंस्वरूपकह्युं.

हवेसातनयकहेछे.१ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्र ५ शब्द ६ समभिरूढ ७ एवंभूत एसातनयनानामजाणवां तेमां पहेलोनैगमनय कहेछे नथीएकगमोतेनैगम [illegible] गुणनोएकअंशग्रहणनोआरोपतो नैगमनयकहियें. दृष्टांत—जेमकोइकमनुष्यने पा[illegible] [illegible]सावबानोमनथयो तेवारेंजंगलमां लाकडुंलेवाचाल्यो रस्तामांकोइकमनुष्यमल्यो तेणें [illegible] तुक्यांजायछे तेवारें तेणेंकह्युं जे पायलीलेवाजाउंछुं तेपायलीनोदृजीघडीनथी [illegible]मनसांचितवी तेथइएमगण्यु तेमनैगमनय सर्वजीवनेसिद्धसमानकहे केमके सर्व [illegible]वनाआठरुचकप्रदेशनिर्मलसिद्धरूपछे तेथीएकअंशेंसिद्धछे ते माटे सिद्धसमानसर्व [illegible]वकह्या तेनैगमनयनात्रणभेदछे १ अतीतनैगम २ अनागतनैगम ३ वर्त्तमाननैगम [illegible] नैगमनय कह्यो.

हवेसंग्रहनयकहेछे सत्ताग्रहेतेसंग्रह जेएकनामलीधाथी सर्वगुणपर्यायपरिवारसहित [illegible]आवे तेसंग्रहनयजाणवो. तेनोदृष्टांत—जेमकोइकमनुष्येप्रभातें दातणकरवानेअर्थे पो[illegible]नाघरनाबारणेबेसीने चाकरपुरुषने कह्युं जे दातणलइआवो तेवारेतेचाकरमनुष्यपा-

थीनोखोटो तथारुमालध्यनेदातण एमसर्वचीजसङ्ग्राव्यो हवेशेषेतोएकदानथ
इनेमंगाव्युंहतुं पणसर्वनोसग्रहकरीचाकरलेइआव्यो तेमज द्रव्यपणबुनामकरु
नागुणपर्यायसर्वआव्या एसंग्रहनयनाभेदवे ...
तथाअजीवद्रव्यनोभेदपह्योनहीं तेपहेलोसामान्यसग्रह तथाबीजोविशेषनाने
कारकरेछे जेजीवद्रव्य एमकह्युंतो अजीवसर्वटल्या तेविशेषसग्रह

हवे व्यवहारनयकहेछे जेबाह्यस्वरूपदेखीनेभेदनीवेहेचणकरे ...
गुणनेज माने पण अतरगसत्तानमाने एटलेएनयमा आचारक्रियामुख्यछे ...
रिणामनोउपयोगनथी केमके नैगम ... संग्रहनयतेज्ञानरूपध्याननापरि...
शतथासत्ताग्राहीछे तेमइहांकरणीमुख्यछे तेव्यवहारनयपणे जीवनी ...
कारछे तिहा नैगम तथासग्रहनयकरी सर्वजीवसत्तायें एकरूपछे ...
जीवना वेभेदछे एकसिद्ध बीजाससारी तेवलीससारी जीवनाबेभेदछे ...
दमा गुणठाणावाला तथाबीजासयोगी तेसयोगीनावेभेद एककेवली बीजो छद्म
स्थनावेभेद एक क्षीणमोही बारमागुणठाणेवर्त्तता मोहनीयकर्मखपाव्युते
पशातमोह ते उपशात मोहनावली वेभेद एकअकपायी इग्यारमा गुण
नाजीव बीजासकपायी तेसकपायीनावेभेदछे एक सूक्ष्म कपायी दशमा गुण
जीव बीजाबादरकपायी ते बादरकपायीना वलीभेदछे एकश्रेणीप्रतिपन्न
जाश्रेणीरहित तेश्रेणीरहितनावेभेद एकअप्रमादी बीजाप्रमादी ते
एकसर्वविरति बीजादेशविरति देशविरतिनावेभेद एकव्रतिपरिणामि
व्रतिपरिणामि अव्रतिनावेभेद एकअव्रतिसमकेति बीजाअव्रतिमिथ्यात्वी ते
नावेभेद एकभव्य बीजाअभव्य तेभव्यनावेभेद एकग्रथीभेदी बीजाग्रथीअभेदी
रीतेजेजीव जेवोदेखाय तेनेतेवोमाने एव्यवहारनयछे एमजपुद्गलनाभेदकरवा
पुद्गलद्रव्यनावेभेदछे एकपरमाणु बीजोखध खधनावेभेद एकजीवनेलागा तेजीव
बीजाजीवरहित ते धर्मोप्रमुखअजीवनोखध हवेजीवसहिततखधना वेभेदछे
क्ष्मखध बीजोबादरखध

इहा वर्गणानोविचारलखीयेछेयें तिहां पुद्गलनीवर्गणाआठछे १ औदा...
वैक्रियवर्गणा ३ आहारकवर्गणा ४ तेजसवर्गणा ५ भाषावर्गणा ६ उसासवर्गणा ७
वर्गणा ८ कार्मणवर्गणा एआठवर्गणानानामकह्या वेपरमाणुभेलाथाय त्यारे ...
कहेवाय त्रणपरमाणुभेलाथाय तेवारे त्र्यणुकखंधथाय एमसख्यातापरमाणुमिले स
ताणुकखधथाय तेमजअसख्याते असख्याताणुकखधथाय तथाअनंतापरमाणु...

ताणुकखंधथाय एखंधतेसर्वजीवने अग्रहणयोग्यछे अने जेवारें अजव्यथी अनंतगुण
अधिकपरमाणुन्नेलाथाय तेवारें उदारिकशरीरने लेवायोग्यवर्गणाथाय.

एमजउदारिकथी अनंतगुणा अधिकवर्गणामां दलन्नेलाथाय तेवारेंवेक्रियवर्गणा
थाय वली वेक्रियथकीअनंतगुणापरमाणुमिले तेवारेंआहारकवर्गणाथाय एमसर्ववर्गणा-
एकेकथी अनंतगुणाअधिकपरमाणुमिले तेवारेंतेवर्गणाथाय एटलेपहेलीथी वीजीव-
णा वीजीथीत्रीजी एमसातमीमनोवर्गणाथी आठमीकार्मणवर्गणामांअनंत गुणपरमा-
अधिकछे इहां १ उदारिक २ वैक्रिय ३ आहारक ४ तेजस एचारवर्गणावादरछे ते-
पांचवर्ण वेगंध पांचरस आठस्पर्श एवीसगुणछे तथा १ जाषा २ उसास ३ मन ४
र्मण एचारवर्गणासूक्ष्मछे एमांपांचवर्ण वेगंध पांचरस चारस्पर्श एसोलगुणछे अनेएक
रमाणुमां एकवर्ण एकगंध एकरस वेस्पर्श एपांचगुणछे एमपुजलखंधनाअनेकन्नेदछे.

एव्यवहारनयनाछन्नेदछे १ शुद्धव्यवहार तेआगलागुणठाणानुं छोरुवुं अनेउपरना
णठाणानुं ग्रहणकरवुं अथवाज्ञानदर्शनचारित्रगुणते निश्चयनयएकरूपछे पणते शिष्य-
समजाववाने जूदाजूदान्नेद कहेवा तेशुद्धव्यवहारछे २ जीवमां अज्ञानरागद्वेषलाग्या
तेअशुद्धपणुंछे माटेअशुद्धव्यवहार ३ जे पुण्यनीक्रियाकरवी तेशुजव्यवहार ४ जेथ-
जीवपापरूपअशुजकर्मकरेतेअशुजव्यवहार ५ धन घर कुटुंब प्रत्यक्ष सर्व आपणाथी
दाजूदाछे पणजीवेंअज्ञानपणे आपणाकरीजाण्याछे ते उपचरितव्यवहार ६ शरीरा-
कपरवस्तुयद्यपिजीवथीजुदीछे तोपणपरिणामिकन्नाव लोलीपणेएकठा मिलीरह्याछे
नेजीवआपणाकरीजाणेछेते अनुपचरित व्यवहारजाणवो एव्यवहारनयकह्यो.

हवेऋजुसूत्रनयनो विचारकहेछे जेअतीतकालअनेअनागतकालनीअपेक्षानकरे पण
र्त्तमानकालें जेवस्तुजेवागुणेंपरिणमे वर्त्ते तेवस्तुने तेवेजपरिणामेमाने माटे एनयपरि-
णामग्राहीछे जेमकोइकजीवगृहस्थछे पण अंतरंग साधुसमानपरिणामछे तो ते जीवने
साधुकहे अनेकोइकजीव साधुनेवेषेछे पणमननापरिणाम विषयान्निलाषसहितछे तो
जीव अव्रतीजछे एमऋजुसूत्रनुंमानवुंछे तेऋजुसूत्रनावेन्नेदछे एकसूक्ष्मऋजुसूत्र ते एम
हेजे सदाकालसर्ववस्तुमां एकवर्त्तमानसमयवर्त्तेछे एटले जे जीवगयाकालें अज्ञानी
तो अनेअनागतकालें अज्ञानीजावेंअज्ञानीथशे एमवेहुकालनीअपेक्षानकरे पणएक
र्तमानसमये जेजेवोतेनेतेवोकहे तेसूक्ष्मऋजुसूत्रकहियें अनेमहोटा वाह्यपरिणामग्रहे
स्थूलऋजुसूत्रनयजाणवो एटलेऋजुसूत्रनयकह्यो.

हवेशब्दनयकहेछे जेवस्तुगुणवंत अथवानिर्गुण तेवस्तुनेनामकहीबोलावियें जेन्ना-
वर्गणाथी शब्दपणेंवचनगोचरथाय तेशब्दनय जे कारणेअरूपीद्रव्यवचनथीग्रह्या जा-
नहीं पणवचनथी कहेवातेशब्दनयकहियें इहांजेशब्दनोअर्थहोय तेपणोजे वस्तुमां

वस्तुपणेपामियें तेवारें तेवस्तुशब्दनयकहियें जेमघटनीचेष्टानेकरतोहोयतेघट एर
नयमां व्याकरणथीनीपना अनेबीजापणसर्वशब्दलीधा तेशब्दनयनाचारजेदछे १ न
२ स्थापना ३ द्रव्य ४ जाव अने चारनिक्षेपानापणएहिजनामछे

१ पहेलोनामनिक्षेपो ते आकार तथा गुणरहितवस्तुने न , ानोधावेवो जेम
कलाकरूनो कटकोलेइने कोइके तेहनेजीवएवुनामकयु तेनामजीवजाणवु
लीदोरीने सापनीबुद्धियेकरीधावहणे तेहनेसापनीहिंसालागे एनामसर्पथयु
रीते नामतप अथवानामसिद्ध जेमवरुप्रमुखने सिद्धवरु एमकहीनोलावेछे ते
निक्षेपोकहियें एसूत्रसाखेछे

२ स्थापनानिक्षेपोकहेछे जेकोइकवस्तुमा कोइकवस्तुनोआकारदेखीने तेहनेना
कहे जेमचित्राम अथवाकाष्टपाषाणनीमूर्त्ति तेनेघोडाहाथीनोआकारछे ताेवेना
थीकहेवाय तेस्थापनाजाणवी एस्थापनानिक्षेपो नामनिक्षेपसहितहोय
सिद्धजिनप्रतिमाप्रमुख तेसद्जावस्थापनापणहोय अनेअसद्जावस्थापनापण ह
कृत्रिमजिनप्रतिमाते नदीश्वर द्वीपप्रमुखनेविषे अनेजेहइशनीजिनप्रतिमाते ह
सर्वस्थापनाजाणवी जेम चित्रामनीस्त्रीजिहांमांडीहोय तिहांसाधुरहेनहीं
स्थापनास्त्रीछे तेस्त्रीतुल्यजाणवी तेमजजिनप्रतिमा जिनसमानजाणवी इहा
अज्ञानीजीवकहेछे जे स्थापनामाज्ञानादिगुणनथी तेथी स्थापनानेमानवी
तेने उत्तरकहेछे के स्थापनारूपस्त्रीमा स्त्रीपणानागुणनथी तोपणतेविकारनु कारण
तेमज जिनप्रतिमापणध्याननुकारणछे अनेजेएमपुछेके हिंसाथायछे नेज थते
धर्मकह्योछे तेहनेएमकहेवुजे परदेशीराजाकेसीगुरुने वादवाने अर्थें बीजेदीवसे
आडंबरथीआव्यो तेवंदनामाहिंसाथयी पणलाजकारण गणताजोटोनथयो र्य
नाथजीयेंछमित्रप्रतिबोधवाने पुतलीनोदृष्टांतकह्यो ते हिंसातोघणीथयी
कारणमागणीछे एमजावशुद्धहोय तिहांहिंसालागती नथी अथवा कोइकएमकहे
अमेआपणेस्थानकेवेठानमोत्थुणकहिसु अमनेलाजथासेतेजरो पणजगवतीसूत्रमा
वानने वदनाने अधिकारें तोतिहांजइवदनाकरवानुफलमहोटुकह्युछे
अधिकारें एम कह्युजे जावनिक्षेपोएकलोथाय नहीं पण नामस्थापना त
मिथ्याजावनिक्षेपोथाय माटेस्थापनाअवश्यमानवी हवेजेस्थापनानमाने
चित्रामनीमूर्त्तिनेहिंसानापरिणामथीफाडे तेहनेहिंसालागेछे तेमज जिन
जिनप्रतिमा पुजतालाजथायछे एमयुक्ति करता तथाआगमनीसाखेपणजिनप्रतिमा
नसमानमाने तेआराधक अनेजेजिनप्रतिमानेनमाने स्था. नि ७
स्थापनाउथापीतो द्रव्यतथाजावनिक्षेपो थापनाविनाथायनही म १४

स्थाप्यो एम अनिर्दिशजस्थाप्या तेथापिसिद्धांतजगयाज माटेतेजिनप्रतिमानेनदी माने तेविराधक जाणवो तेस्थापना कह्यो अने यावत्कथिक सर्वतेत्तेहे.

३ द्रव्यनिक्षेपो कहेछे. जेनोनामनथायनथा आकारगयनाथणआहार अने तदाहार पणआत्मोपयोगनमिले तेद्रव्यनिक्षेपोजाणवो एटलेअज्ञानीजीव तेजीवनाउपयोगविनाद्रव्यजीवछे अणुवउगोदव्वं इतिअनुयोगद्वारवचनात् वलीश्रुते जेसिद्धांतवांचनापुरुषां पदअक्षरमात्रागुरुअर्थंकरेछे अनेगुरुमुखेनकहेछे तेसगाशुद्धनिश्चे ज्ञानीनथाईजाण्याविना सर्वद्रव्यनिक्षेपामांछे जेनावविनाद्रव्यकांछे ते पुण्यबंधनुंकारणछे पणमोक्षनुंकारणनथी एटलेजेकरणीस्व रूपजाण्याकरेछे अनेजीवअजीवपदार्थनी ज्ञानथईनथी तेने नगरनीजपरमां अजनी नथाअज्ञानीस्मानछे नथाजेपकली करणीकरेछे अनेपोतेसाधुकहेवायछे ते मृषावादीछे एम उत्तराध्ययनसूत्रमांकह्युंछे मुणीअन्नवासेणं एवहनें नाणेणयमुणीहोइ ॥ एवचनथी जेज्ञानवाननेमुनिछे अनेजे अज्ञानीनेमिथ्यात्वीछे तथाकोइक गणिनानुयोगना नवकल्पबाजनाबोल अथवा यतिधर्मनो आचारजाणीनेकहेछेजे अमेज्ञानीछैयें तेपणज्ञानीनथी पणजेद्रव्यगुणपर्यायजाणे ते ज्ञानीकहियें श्रीउत्तराध्ययने मोक्षमार्गाध्ययनेछे गाथा एयंपंचविहंनाणं दव्वाणयगुणाय ॥ पज्जवाणयसव्वेसिं नाणंनाणीहिदंसियं ॥ १ ॥ माटे वस्तुस्वभावजाण्याविना ज्ञानी कहेवुंनहीं अनेनवतत्त्वउद्धरेतेस्मनथी अनेएद्रव्यज्ञानदर्शनविना जेकहेकेअमेचारित्रीयाछैयें तेपणमृषावादीछे कारणके श्रीउत्तराध्ययनसूत्रमध्येकह्युंछे जे नाणंदंसणणं नाणेणविनान हुंतिचरणगुणा ॥ एवचनछे तेमाटे आज केटलाक ज्ञानहीन क्रियानोआडंबरदेखाडेछे तेठगछे तेहनोसंगकरवोनही एवासकरणीअज्ञव्यजीवनेपण आवे माटेएवाय करणीउपर राचवुंनही अनेआत्मानुंस्वरूपओलख्याविना सामायक पडिकमणा पच्चखाणकरवांते सर्वेद्रव्यनिक्षेपामां पुण्याश्रयछे पणसंवरनथी श्रीभगवतीसूत्रमध्येकह्युं छे आयायवलुमामाइयं ॥ एआलावाथीजाणजो तथाजीवस्वरूपजाण्या विना तपसंयमपुण्यप्रकृति तेदेवतानाभवनुंकारणछे पुव्वतवेणंपुव्वसंयमेणंदेवलोएउववज्जंतिनो चेवणंआयत्ताभाववत्तव्वयाए एआलावोभगवतीमांकह्योछे तथाजेक्रियालोपी आचारहीनछे अनेज्ञानहीनछे मात्रगछनीलाजे सिद्धांतभणेवांचेछे व्रतपच्चखाणकरेछे पणद्रव्यनिक्षेपोजाणवो एम श्रीअनुयोगद्वारमांकह्युंछे इमेसमणगुणमुक्क योगीछकायनिरणुकंपा ॥ हयाइवउद्दामा ॥ गयाइवनिरंकुसा ॥ घट्ठामट्ठातुप्पोट्ठा ॥ पंडुरयाउपणाजिणाणं ॥ आणाएसच्छंदा ॥ विहरिऊणउभउकालंआवस्सगस्सउवट्ठंतितं ॥ लोउत्तरियंदव्वावस्सयं ॥ अर्थ ॥ जेनेछकायनीदयानथी घोडानीपेरेंउन्मदछे हाथीनीपेरेंनिरंकुशछे पोतानाशरीरनेधोवता मसलता उजलेकपडेशिणगारकरी गछनाममूत्वभा-

वस्तुपणेपामियें तेवारें तेवस्तुशब्दनयकहियें जेमघटनीचेष्टानेकरतोहोयतेघट एम नयमा व्याकरणथीनीपना अनेवीजापणसर्वेशब्दलीधा तेशब्दनयनाचारजेदछे १ ना. २ स्थापना ३ द्रव्य ४ जाव अने चारनिक्षेपानापणएहिजनामछे.

१ पहेलोनामनिक्षेपो ते आकार तथा गुणरहितवस्तुने न . . आवना कष्ठाकर्मीनो कटकोलेइने कोइके तेहनेजीवएवुनामकह्यु तेनामजीवजाणवु जेम लीदोरीने सापनीबुद्धियेंकरीघावदृणे तेहनेसापनीहिंसालागे एनामसर्पथयु रीते नामतप अथवानामसिद्ध जेमवरूप्रमुखने सिद्धवरू एमकहीबोलावेछे ते निक्षेपोकहियें एसूत्रसाखेछे

२ स्थापनानिक्षेपोकहेछे जेकोइकवस्तुमा कोइकवस्तुनोआकारदेखीने तेह कहे जेमचित्राम अथवाकाष्टपाषाणनीमूर्त्ति तेनेघोडाहाथीनोआकारछे ता थीकहेवाय तेस्थापनाजाणवी एस्थापनानिक्षेपो नामनिक्षेपेंसहितहोय सिद्धजिनप्रतिमाप्रमुख तेसद्भावस्थापनापणहोय अनेअसद्भावस्थापनापण कृत्रिमजिनप्रतिमाते नदीश्वर द्वीपप्रमुखनेविषे अनेजेहशनीजिनप्रतिमाते इत्यादि सर्वस्थापनाजाणवी जेम चित्रामनीस्त्रीजिहांमाडीहोय तिहांसाधुरहेनही स्थापनास्त्रीछे तेस्त्रीतुल्यजाणवी तेमजजिनप्रतिमा जिनसमानजाणवी इहां अज्ञानीजीवकहेछे जे स्थापनामाज्ञानादिगुणनथी तेथी स्थापनानेमानवी पुनः तेने उत्तरकहेछे के स्थापनारूपस्त्रीमा स्त्रीपणानागुणनथी तोपणतेविकारनु तेमज जिनप्रतिमापणध्याननुकारणछे अनेजेएमपुछेके हिंसाथायछे धर्मथयोछे तेहनेएमकहेवुजे परदेशीराजाकेसीगुरुने वांदवाने अर्थे घोजेदोडते आवयथीआव्यो तेवदनामा हिंसाथयीपणलाजकारण गणतात्रोटोनथयो धर्म नापनीपेंज़मित्रप्रतिबोधवाने पुतलीनोदष्टांतकह्यो ते हिंसातोघणीथयी कारणमार्गथीज एमनानशुद्धहोय तिहांहिंसालागती नथी अथवा कोइकएमकहे अमेस्थापनेस्थानकेंजेज्ञानमोटुगणकहिसु अमनेलाजथासेतेत्तरो पणजगवतीसूत्रमा वांनने वंदनाने अधिकारें तोतिहांजइवंदनाकरवानुफलमहोटुकह्युछे ए नि. अधिकारें एम कह्युजे जावनिक्षेपोएकलोथाय नही पण नामस्थापना तथाद्रव्य निक्षेपानावनिक्षेपोथाय माटेस्थापनाअवश्यमानवी. हवेजेस्थापनानमाने चित्रामनीमूर्त्तिनेहिमानापरिणामथीकाके तेहनेहिंसालागेछे तेमज जिनप्रतिमा पूजनाथ्रानयायछे एमयुक्ति करता तथाआगमनीसाखेपणजिनप्रतिमाने नमनानमाने तेआराधक अनेजेजिनप्रतिमानेनमाने तेणेस्थापनानिक्षेपोठयाप्यो स्थापनाउथापीनो द्रव्यनयाजावनिक्षेपो थापनाविनाथायनही ॥

थाप्यो एम त्रणनिक्षेपाउथाप्या तेवारेंसिद्धांतउथाप्याज माटेजेजिनप्रतिमानेनही
ाने तेविराधक जाणवो तेस्थापना इतर अने यावत्कथिक एवेन्नेदेंछे.

३ द्रव्यनिक्षेपोकहेछे. जेनोनामपणहोय तथा आकारथापनागुणपणहोय अने लक्ष-
होय पणआत्मोपयोगनमिले तेद्रव्यनिक्षेपोजाणवो एटलेअज्ञानीजीव तेजीवस्वरूप-
उपयोगविनाद्रव्यजीवछे अणुवउगोदव्वं इतिअनुयोगद्वारवचनात् वलीकह्युंछे जेसि-
ांतवांचतांपुछतां पदअक्षरमात्राशुद्धअर्थकरेछे अनेगुरुमुखेसद्दहेछे तेपणशुद्धनिश्चें
ोतानीसत्ताउंलख्याविना सर्वेद्रव्यनिक्षेपामांछे जेन्नावविनाद्रव्यपणोछे ते पुण्यबंधनुंका-
णछे पणमोक्षनुंकारणनथी एटलेजेकरणीरूप कष्टतपस्याकरेछे अनेजीवअजीवपदार्थनी
त्ताउंलखीनथी तेने न्नगवतीसूत्रमां अव्रती तथाअपच्चखाणीकह्याछे तथाजेएकली
ाह्यकरणीकरेछे अनेपोतेसाधुकहेवायछे ते मृषावादीछे एम उत्तराध्ययनसूत्रमांकह्युंछे
मुणीरन्नवासेणं एवचनें नाणेणयमुणीहोइ ॥ एवचनथी जेज्ञानवानतेमुनिछे अनेजे
ज्ञानीतेमिथ्यात्वीछे तथाकोइक गणितानुयोगना नरकदेवतानाबोल अथवा यति-
ावकनो आचारजाणीनेकहेजे अमेज्ञानीछेयें तेपणज्ञानीनथी पणजेद्रव्यगुणपर्यायजाणे
ने ज्ञानीकहियें श्रीउत्तराध्ययने मोक्षमार्गेकह्योछे गाथा एयंपंचविहणाणं दवाणयगु-
ाणय ॥ पज्जवाणसवेसिं नाणंनाणीहिदंसियं ॥ १ ॥ माटे वस्तुसत्ताजाण्याविना ज्ञानी
मजवुंनही अनेनवतत्वउंलखेतेसमकेति अनेएहवाज्ञानदर्शनविना जेकहेकेअमेचा-
त्रिआछेयें तेपणमृषावादीछे कारणके श्रीउत्तराध्ययनसूत्रमध्येकह्युंछे जे नाणंदंसण
णं नाणेणविनान हुंतिचरणगुणा ॥ एवचनछे तेमाटे आज केटलाक ज्ञानहीन क्रि-
ानोआडंबरदेखारुछे तेठगछे तेहनोसंगकरवोनही एवाह्यकरणीअन्नव्यजीवनेपण
ावे माटेएवाह्य करणीउपर राचवुंनही जेआत्मानुंस्वरूपउंलख्याविना सामायक
क्किमणा पच्चखाणकरवांते सर्वेद्रव्यनिक्षेपनिं पुण्याश्रयछे पणसंवरनथी श्रीन्नगव-
सूत्रमध्येकह्युं छे आयाखलुसामाइयं ॥ एआलावाथीजाणजो तथाजीवस्वरूपजाण्या
ना तपसंयमपुण्यप्रकृति तेदेवतानान्नवनुंकारणछे पुव्वतवेणंपुव्वसंयमे[illegible] वलीएउववं-
तिनो चेवणंआयत्ताभावत्तवयाए एआलावोन्नगवतीमांक[illegible] जेक्रियालोपी
ाचारहीनछे अनेज्ञानहीनछे मात्रगच्छनीलाजें सि[illegible] व्रतपच्चखाणकरेछे
पणद्रव्यनिक्षेपोजाणवो एम श्रीअनुयोगद्वारमांक[illegible] णमुक्क योगीछका-
निरणुकंपा ॥ हयाइवउद्दामा ॥ गयाइवनिरंकुसा ॥ [illegible] पोछा ॥ पंडुं रन्नेग-
ाणाजिणाणं ॥ आणाएसछंदा ॥ विहरिऊणउन्नउकाल [illegible] गस्सउवट्ठंतिपुं किहां
तरियंदवावस्सयं ॥ अर्थ ॥ जेनेछकायनीदयानथी घोडा [illegible] रउन्मदछे हाथीसंख्याता
कुशछे पोतानाशरीरनेधोवता मसलता उजलेकपडेशिण गारकरी गच्छांरहुंउं तेजं-

जुद्वीपमांखेत्रघणाठे तेमांतुकयाखेत्रमांरहेठे तेवारें अतिशुद्धनैगमबोल्यो जे मांरहुतु तेजरतखेत्रनाठलक्षे तेमादेशाकयासंक्रमारदेठे एमक्रमेपूठता ठेल्लेकह्युजेआपणादेशमांरहुतु तेवारेंफरीपुठ्युजे ठे तोतुकिहारहेठे तेवारेंकह्युजे हुअमुकगाममांरहुतु तेगाममावलीअमुकपानो अमुकघरवताव्यु तिहासुधीनैगमनयजाणवो

अनेसग्रहनयवालोबोल्योजे मारापोतानाशरीरमा वसुंठुं बोल्योजे सथारेवेठोठुंतेटलाजविठानामारहुठुं अनेऋजुसूत्रनयवालेकह्युजे स्माना असंख्यातप्रदेशमारहुतु वलीशब्दनयकहेजे मारास्वजावमारहुतु जिरूढनयकहेजे हुमाराशुणमा रहुतु अने एवजूतनयवादीकहेजे ज्ञानदर्शन वसुतु एहसातकह्यो तेमसर्ववस्तुमाकहेवु.

तथाकोइके प्रदेशमात्रखेत्रअगीकारकरी पुठ्युजे एप्रदेशकयाद्रव्यनोठे नयबोल्योजेठएद्रव्यनोप्रदेशठे केमके एकआकाशप्रदेशमध्येठद्रव्यजेलावे नयबोल्यो जे कालद्रव्यतोअप्रदेशीठे तेमाटे सर्वलोकमा एकसमयसरिखोवे एक आकाशद्रव्यनाप्रदेशमा जूदोनथी माटे काललिनापाचद्रव्यनो प्रदेशठे वहारनयबोल्योके जेद्रव्यमुख्यदेखायठे तेहनोप्रदेशठे तेवारेंऋजूसूत्रनय द्रव्यनोउपयोगदेइपुठिये तेद्रव्यनोप्रदेशठे जोधर्मास्तिकायनोउपयोगदेइ पुठिये धर्मास्तिकायनोप्रदेशठे जोअधर्मास्तिकायनोउपयोगदेइपुठियें तोअधर्मास्ति प्रदेशठे तेवारेंशब्दनयबोल्योके जे द्रव्यनोनामलइपुठिये तेद्रव्यनोप्रदेशठे हवे जिरूढनयबोल्योजे एकआकाशप्रदेशमध्येधर्मास्तिकायनोएकप्रदेशठे अधर्मा नोएकप्रदेशठे अनेजीवनाअनताप्रदेशठे पुजलनापणअनताप्रदेशठे बोल्यो के प्रदेशनेजेद्रव्यनी क्रियागुणपर्यायअगीकारकरी देखियें तेसमयते द्रव्यनोगणियें एप्रदेशमासातनयकह्या

हवेजीवमा सातनयकहेठे प्रथमनैगमनयनी मते जेगुणपर्यायवंत शरीरस जीव एटलेशरीरमाजेबीजा पुजल तथाधर्मास्तिकायादिकद्रव्यठे तेसर्वजी तेवारेंसग्रहनयबोल्यो जेअसंख्यातप्रदेशी तेजीव एटलेएकआकाशना प्रदेशटल्या जासर्वद्रव्यएमागणाणा तेवारेंव्यवहारनयबोल्यो जेविषयलेयी इहाधर्मास्ति अधर्मास्तिकाय आकाश तथाबीजापुजलसर्वटल्या पणपाचेइन्द्रि अनेलेश्याएपुजलठे तेजीवमागणाणा कारणके विषयादिकतोइन्द्रियोलेठे तेजीवथी राठेपणइहाव्यवहारनयमते जीवजेलालीधाठे तेवारें ऋजुसूत्रनयबोल्यो जेउपयो तेजीव इहाइन्द्रियादिकसर्वटल्या पणअज्ञान तथा ज्ञाननाजेदटल्यानही २

वोल्यो जे नामजीव स्थापनाजीव द्रव्यजीव भावजीव इहांजीवमां गुणनिर्गुणनोभेद
न्योनही तेवारें समभिरूढनयवोल्यो जे ज्ञानादिगुणवंततेजीव तेवारें मतिज्ञानश्रुत-
न इत्यादिकसाधकअवस्थानागुण तेसर्वजीवस्वरूपमां आव्या हवेएवंभूतनयवोल्यो
अनंतज्ञान अनंतदर्शन अनंतचारित्र शुद्धसत्तावंत तेजीवएनयेजेसिद्धअवस्थामां
हता तेजग्रह्या एसातनयेजीवद्रव्यकह्यो.

हवेसातनयेंधर्मकहेछे नैगमनयवोल्योजे सर्वधर्मछे केमकेसर्वप्राणीधर्मनेचाहेछे एन-
अंशरूपधर्मने धर्मएहवुंनामकह्ये हवेसंग्रहनयवोल्यो जे वडेरायेंआदर्यो तेधर्म ए-
अनाचारछोड्यो पणकुलाचारनेधर्मकह्यो व्यवहारनयवोल्योजे सुखनुंकारणतेधर्म एणे
एकरणीनेधर्मकरीमान्यो ऋजुसूत्रनयमते जेउपयोगसहित वैरागरूपपरिणामते धर्मक-
यें एनयमां यथाप्रवृत्तिकरणनापरिणामप्रमुखसर्वधर्ममांगण्या तेमिथ्यात्वीनेपणहोय
शब्दनयवोल्यो जे धर्मनुंमूलसमकितछे माटेसमकिततेजधर्म तेवारेंसमभिरूढनय
यो जे जीव अजीव नवतत्व तथाछद्रव्यनेओलखीने जीवसत्ताध्यावे अजीवनोत्याग
हवोज्ञानदर्शन चारित्रनोशुद्धनिश्चय परिणामतेधर्म एनये साधकसिद्धनापरि-
मपणेलीधा एवंभूतनयवोल्यो जे शुक्लध्यान रूपातीतनापरिणाम क्षपकश्रे-
वा कारणतेधर्म जेजीवनोमूलस्वभाव तेवस्तुधर्म जेमोक्षरूपकार्यनेकरे
थीपे धर्म कह्यो.

खीसम। पणोकहेछे नैगमनयनीमतेसर्वजीवसिद्धछे केमके सर्वजीवना आ-
थीधर्मास्ति निर्मलछे माटे संग्रहनयकहेजे सर्वजीवनीसत्ता सिद्धसमानछे
अथवादृष्टांतक तिअवस्थातेटालीने द्रव्यार्थिकनयेंकरी अवस्थाअंगी-
विद्या लब्धिप्रमुखगुणेकरी सिद्धथयोतेसिद्ध एन-
त ऋजुसूत्रनयवोल्यो केजेणे पोतानाआत्मानीसिद्ध-
ग ...। अने ध्याननोउपयोगपणतेजवर्त्तेछे तेसमयें तेजीवसिद्धजाणवो
नयेसमकेतिजीवसिद्धसमानछे एमकह्युं हवेशब्दनयवोल्यो जेशुद्धशुक्लध्यान परिणाम
मादिकनिक्षेपेंतेसिद्ध तेवारेंसमभिरूढनयवोल्यो जे केवलज्ञान केवलदर्शन यथा-
यातचारित्र एगुणेसहित तेसिद्धजाणवा एनयें तेरमाचउदमागुणठाणाना केवलीने
द्धकह्याअनेएवंभुतनयकहेछेकेजेना सकलकर्मक्षयथया लोकनेअतेविराजमान अष्ट-
ण संपन्नतेसिद्धजाणवा एरीतेसिद्धपदेंसातनयकह्या एमसातनयमिल्यासमकेतिछे
नेजे एकनयनेग्रहणकरेतेमिथ्यात्वीछे एसातेनयसिद्धतेवचनप्रमाणछे अने एसात
यमां कोइपणनयने उथापेतेनुंवचनअप्रमाणछे.

हवेप्रमाणनोविचारकहेछे प्रमाणनावेभेदछे एकप्रत्यक्षप्रमाण बीजुंपरोक्षप्रमाण

तेमा जेजीवपोतानाउपयोगथीद्रव्यनेजाणे तेप्रत्यक्षप्रमाणकहियें जेमकेवली प्रत्यक्षप्रमाणेजाणे तथादेखे तेमाटेकेवलज्ञानतेसर्वथीप्रत्यक्षज्ञानछे तेमनोवर्गणाप्रत्यक्षजाणे तथाअवधिज्ञानतेपुद्गलद्रव्यनेप्रत्यक्षजाणे माटे प्रत्यक्षछे बीजुछद्मस्थज्ञानतेसर्वपरोक्षप्रमाणछे

हवे परोक्षप्रमाणकहेछे मतिज्ञाननो अनेश्रुतज्ञाननो जेशास्त्रनाबलथीजाणे तेपरोक्षप्रमाणकहियें तेपरोक्षप्रमाणनात्रणभेदछे १ माण २ आगमप्रमाण ३ उपमानप्रमाण तेमां अनुमान एटले जेज्ञानथाय जेम धुमाडोदेखीने अग्निनुअनुमानथाय अनेआगमएटले थीजेवातजाणियें जेम देवलोकतथानरक निगोदविगेरेनोविचारआगमथी यें तेआगमप्रमाण अने कोइकवस्तुनोदृष्टांतआपीने वस्तुनेओलखाववी ते णजाणवो एप्रमाणकह्या हवेसत्असत्पक्षथीसप्तभंगीकहेछे

१ स्यात्के॰ अनेकांतपणे सर्वअपेक्षाएइ जीवद्रव्यमा आपणोद्रव्य आपणोकाल आपणोभाव एमआपणेगुणपर्यायेंजीवछे तेमसर्व तेस्यात्अस्तिनामापहेलोभांगो थयो

२ जेजीवमा बीजापांचद्रव्यना१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव वमाथी एटलेपरद्रव्यनागुणनोनास्तिपणोसर्वद्रव्यमाछे

३ द्रव्य स्वगुणेअस्ति अनेपरगुणेनास्ति एवेभांगाएकसमयेद्रव्यमाछे जेम शुद्धस्वगुणनीअस्तिछे तेजसमयें परगुणनीनास्तिपणछे माटेअस्तिनास्ति लाछे तेस्यात्अस्तिनास्तित्रीजोभांगो थयो

४ अस्ति अनेनास्ति एवेहुभांगा एकसमयमाछे तो वचने असंख्यातासमयलागे तेथीनास्तिभांगो तेजवखतेकहेवाणोनही अने जोनास्ति कह्यो तोअस्तिपणोनाव्यो माटेएकजअस्तिकहेताथका तेनहीकहेवाणो माटेमृषावादलागे तेमजनास्तिकहेता नेअगोचरछे एकसमयमावेहुवचनबोल्याजायनही केमकेएकअक्षरबोलता समयलागेछे माटे वचनथीअगोचरछे तेस्यात्अवक्तव्य एचोथोभांगोकह्यो

५ तेअवक्तव्यपणो वस्तुमांअस्तिधर्मनोपणछे

६ तेमजनास्तिधर्मनोपणअवक्तव्यपणोवस्तुमध्येछे छोभंगोजाणवो

७ तेअस्तिपणोतथानास्तिपणोवेहुधर्मएकसमयेवस्तुमध्येछे पण वचनथीअव माटेस्यात्अस्तिनास्तियुगपत्अवक्तव्य एसातमोभंगोकह्यो

हवे एमानजंगा नित्य तथाअनित्यपणामांलगाडेते १ स्यात्नित्यं २ स्यात्अनित्यं स्यात्नित्यानित्यं ४ स्यात् अवक्तव्य ५ स्यात नित्यअवक्तव्यं ६ स्यात्अनित्यअवक्तव्यं ७ स्यात्नित्यानित्ययुगपत्अवक्तव्यं एमज एकअनेकनामानजंगाकहेवा तथा गुणपर्यायमां पणकहेवा केमकेसिद्धसत्वेनयनथी तोपणसप्तजंगीतोसिद्धमांछे.

हवेसत्ताउलखाववाने त्रिजंगीयोकहेछे १ मिथ्यात्वदशा तेबाधकदशा २ समकेत गुणठाणाथीमांनीने अयोगीकेवली गुणठाणासुधीसाधक दशाजाणवी ३ सर्वकर्मथी रहितते सिद्धदशा १ ज्ञाननोजाणपणोतेजीवनोगुण २ तेनोज्ञातातेजीव ३ ज्ञेयतेसर्वद्रव्य १ ध्यानतेजीवनालक्षपनो २ तेध्याननोध्याताजीव ३ ध्येयआत्मानोस्वरूप १ कर्तातेजीव २ कर्मतेएकमोक्षबीजोबंध ३ क्रियातेएकसंवरबीजीआश्रव १ कर्मतेचेतना कर्मबंधनापरिणाम २ कर्मनुंफलनेचेतनानेजे कर्मउदयनापरिणाम ३ ज्ञानचेतनाते जीवनोस्वगुण तेआत्मानात्रणजेदछे १ अज्ञानीजीव शरीरादिकपरवस्तुनेआत्मबुद्धीयें करीमाने तेपहेलोबहिरात्मा २ जेदेहसहितजीवछे तेपणनिश्चेंसत्तागुणसिद्धसमानछे एमजेपोतानाजीवने सिद्धसमानकरीध्यावे तेबीजोअंतरआत्माजाणवो ३ कर्मखपावीकेवलज्ञानपाम्याते अरिहंत तथासिद्ध सर्वेपरमात्माजाणवा एत्रिजंगीनोविचारकह्यो एमजे आठपक्षनोविचारकह्यो.

हवेएकद्रव्यमध्ये उसामान्यगुणछेतेकहेछे पहेलोअस्तित्वते जेछद्रव्यआपणागुणपर्यायप्रदेशेकरीअस्तिछे तेमां धर्म अधर्म आकाश अने जीव एचारद्रव्यनो असंख्याता प्रदेशमिल्या खंधथायछे अनेपुद्गलमांखंधथयवानीशक्तिछे माटेएपांचद्रव्यअस्तिकायछे अनेछठोकालद्रव्यनोसमय कोइकोइथीमिलतोनथी केमके एकसमयविणस्यापछे बीजो समयआवेछे माटेकालअस्तिकायनथी एद्रव्यमांअस्तित्वपणोकह्यो.

२ वस्तुत्वके० वस्तुपणो कहेछे तेद्रव्यछएएकठाएकखेत्रमध्येरह्याछे एकआकाशप्रदेशमांधर्मास्तिकायनोएकप्रदेशरह्योछे तथाअधर्मास्तिकायनोपण एकप्रदेशरह्योछे अने जीवअनंताना अनंताप्रदेशरह्याछे पुद्गलपरमाणुअनंतारह्याछे तेसर्वेपोतानीसत्तालीधायरह्याछे पणकोइद्रव्यकोइद्रव्यसाथेमिलीजातोनथी तेवस्तुपणो.

३ द्रव्यत्वके० द्रव्यपणोते सर्वद्रव्यपोतपोतानीक्रियाकरे एटलेधर्मास्तिकायमांचलणगुणते सर्वप्रदेशमध्येछे सदाकालेंपुद्गल तथाजीवने चलाववारूपक्रियाकरेछे इहांकोइ पूछेजे लोकांतसिद्धखेत्रमांधर्मास्तिकायछे तेसिद्धनाजीवने चलाववापणोकरतीनथी ते केम? तेनेउत्तरकहेछेजेसिद्धनाजीवअक्रियछे माटेचालतानथी पणतेखेत्रमांजेसूक्ष्मनिगोदनाजीव तथापुद्गलछे तेहनेधर्मास्तिकायचलावेछे माटेपोतानीक्रियाकरेछे तेमजअधर्मास्तिकायजीवतथापुद्गलने स्थिरराखवानीक्रियाकरेछे तथाआकाशद्रव्य ते सर्वद्रव्य-

नेअवगाहनारूपकार्यकरेछे इहांकोइपुछेजे अलोकाकाशमांतो बीजुकोइद्रव्यनथी अलोकाकाश कयाद्रव्यनेअवगाहदानआपेछे तेनेउत्तरकहेछे जेअलोकाकाशमां : गाहकरवानीशक्तितो लोकाकाश जेवी ज छे परतु तिहां अवगाहनो दान लेनार द्रव्य द्रनथी माटे अवगाहदानकरतोनथी अनेपुद्गलद्रव्यमिलवाखिरवारूपक्रियाकरेछे कालद्रव्यवर्तनारूपक्रियाकरेछे अनेजीवद्रव्यज्ञानलक्षणउपयोगरूपक्रियाकरेछे ए वेद्रव्यपोतानेपरिणामीस्वसत्तानीक्रियाकरेछे एद्रव्यत्वपणोकह्यो

॥ प्रमेयत्वके० प्रमेयपणो जे छद्रव्यमांप्रमेयपणोछे तेनोप्रमाण केवलीपोताना श्रीकरेछे जेधर्मास्तिकायतथाअधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय एकेकद्रव्यछे जीवद्रव्यअनंताछे तेहनीगणतिकहेछे सज्ञीमनुष्यसंख्याताछे असज्ञीमनुष्य अस ताछे नारकीअसंख्याताछे देवताअसंख्याताछे तिर्यंचपचेंद्रीअसंख्याताछे बेंद्रीअस ताछे तेंद्रीअसंख्याताछे चौरेंद्रीअसंख्याताछे तेथकीपृथ्वीकायअसंख्याता अपका संख्याता तेउकायअसंख्याता वायुकायअसंख्याता प्रत्येकवनस्पतिजीवअसंख्याता थकीसिद्धना जीवअनंता तेथकीबादरनिगोदनाजीवअनंतगुणा एटलेबादरनिगोद दमूल आदु सूरण प्रमुख एहने सुइने अग्रभागें अनंताजीवछे तेसिद्धना जीवथी नंतगुणाछे अनेसूक्ष्मनिगोद सर्वथीअनंतगुणाछे तेसूक्ष्मनिगोदनोविचार कहेछे जे लोकाकाशना प्रदेशछे तेटला गोलाछे तेएकेक गोलामा असंख्यातानिगोदछे नि शब्दनो अर्थएछे जे अनंताजीवनो पिंडभूतएकशरीर तेहने निगोदकहियें तेए निगोदमध्ये अनंताजीवछे तेअतीतकालना सर्वसमय तथाअनागतकालनासर्वस अनेवर्त्तमानकालनोएकसमयतेनेभेलाकरी अनंतगुणाकरियें एटला एकनिगोदमा यछे एटले अनंताजीवछे एससारीजीवएकेकानाअसंख्याताप्रदेशछे अने एकेकाप्र अनंतिकर्मवर्गणालागीछे ते एकेकवर्गणामध्येअनंतापुद्गलपरमाणुछे एमअनंतापर जीवसाथेलाग्याछे तेथकीअनंतगुणापुद्गलपरमाणुजीवथीरहितछुटाछे गाथा ॥ गो असंखिज्जाअसंखनिगोयउ हवइगोलो ॥ इक्किक्कमिनिगोए अनंतजीवामुणेयव्वा ॥ अर्थ ॥ लोकमाहेअसंख्यातागोलाछे एकेकागोलामध्येअसंख्यातिनिगोदछे एकेकनि दमाअनंताजीवछे गाथा ॥ सत्तरससमहिया । किरइगाणुपाणमिहुतिखुड्डभवा ॥ तिससयतिहुत्तर । पाणुपुणइगमुहुत्तमि ॥ १ ॥ अर्थ ॥ निगोदियाजीवतेमनुष्यना उसासमा सत्तरजन्मजाजेराकरेछे अनेसडत्रीससोतिहुतेर श्वासोश्वासएकमुहूर्त्तमा गाथा पणसट्ठिसहस्सपणसय ॥ छत्तिसाइगमुहुत्तखुड्डभवा ॥ आवलियाणदोसय उप्पन्नाएगखुड्डभवे ॥ २ ॥ अर्थ निगोदनाजीवएकमुहूर्तमा ६५५३६ भवकरे अने गोदनोएकभव २५६ आवलीनोछे क्षुल्लकभवनोएप्रमाणछे ॥ गाथा ॥ अछिअनंत

वा जेहिंनपत्तोतसाइपरिणामो ॥ उवज्जंतिचयंतिय पुणोवितछेवतछेव ॥ १ ॥ अर्थ ॥ निगोदमांअनंताजीवएहवाछे जेजीवत्रसपणोपहेलाकिवारेपाम्यानथीअनंतोकालपूर्वेंगयो अनेअनंतोकालजाशे पणतेजीववारंवारतिहांजउपजेछे अने तिहांजचवेछे एमएक निगोदमांअनंताजीवछे तेनिगोदनावेभेदछे एकव्यवहारराशीनिगोद अनेबीजो अव्यवहारराशीनिगोद तेमांजेबादरएकेंद्रीपणो यावेत्रसपणोपामिनेपाछानिगोदमांजाइ पड्याछे तेनिगोदियाजीवने व्यवहारराशीयाकहियें अनेजेजीवकोइपणकालेनिगोदमांथीनिकल्यानथी तेजीवअव्यवहाररासीयाकहियें अनेइहांमनुष्यपणाथीजेटलाजीवकर्मेखपावीने एकसमयमांमोक्षजायछे तेटलाजीवतेजसमये अव्यवहारराशी सूक्ष्मनिगोदमांथीनिकलीनेउचांआवेछे जोदशजीवमोक्षजायतो दशजीवनिकले कोइकवेलाएजव्यजीव उंगानिकलेतो तेछेकाणेएकबेअजव्यनिकले पणव्यवहारराशीमांजीवकोइवधेघटे नही एवा निगोदनाअसंख्यातालोकमांहेलागोलाते छदिशीनाआव्यापुद्गलने आहारादिपणेलेछे तेसकलगोलाकहेवाय अने लोकअंतना प्रदेशेंजे निगोदनागोलारह्याछे तेने त्रणदिशीनाआहारनीफरशनाछे माटेविकलगोलाकहियें एसूक्ष्मनिगोदमां पांच थावरनासूक्ष्मजीव तेसर्वेलोकमांकाजलनीकुंपलीनीपरे व्याप्यकाव्यापीरह्याछे अनेसाधारणपणोते मात्रएकवनस्पतिमांजछे पणचारथावरमांनथी एसूक्ष्मनिगोदमांअनंतुदुःख छे तेनुंउदाहरणकहेछे सातमीनरकनुंआउष्य तेत्रीससागरोपमनुंछे तेत्रीससागरोपमनाजेटलासमयथाय तेटलावखतसातमीनरकमां उत्कृष्टोतेत्रीससागरोपमनेआयुपेकोइकजीवउपजे तेटलाजवमांजेटलुंछेदन जेदननुंदुःखथाय तेसर्वएकठुंकरियें तेथीअनंतगुणुंदुःखनिगोदनाजीव एकसमयमांजोगवेछे दृष्टांत जेमकोइकमनुष्यनेसाडात्रणक्रोड लोढानीसुइनेअग्नियीतपावीने कोइकदेवतासमकालेचोभे तेनेजेवेदनाथाय तेथीअनंत गुणीवेदनानिगोदमध्येछेअनेजव्यजीवनेनिगोदनुंकारण तेअज्ञानदशाछे माटेतेहनो त्यागकरो एनिगोदनोविचारकह्यो एसर्वप्रमेयनोप्रमाताआत्मा पोतानाज्ञानगुणेकरी प्रमेयनोप्रमाणकरेएप्रमेयत्वपणोकह्यो.

५ सत्वपणो तेछद्रव्यएकसमयमांउपजे विणशेछे अनेस्थिरपणछे उत्पादव्यय ध्रुवपणोतेहिजसत्पणो उत्पादव्ययध्रुवयुक्तसत् इतितत्वार्थवचनात् तेविस्तारथी कहिदेखाडेछे जे धर्मास्तिकायनाअसंख्याताप्रदेशछे तिहांएकप्रदेशमां अगुरुलघुअसंख्यातोछे अनेबीजाप्रदेशमांअनंतो अगुरुलघुछे त्रीजाप्रदेशमां संख्यातोअगुरुलघुछे एमअसंख्याताप्रदेशमां अगुरुलघुपर्यायघटतो वधतोरहेछे तेअगुरुलघुपर्यायचलछे तेजेप्रदेशमां असंख्यातोछे तेप्रदेशमां अनंतोथायछे अने अनंताने ठेकाणे असंख्यातोथायछे एमलोकप्रमाणअसंख्यातप्रदेशमां सरिखोसमकालें अगुरुलघुपर्यायफिरेछे तेजेप्रदेशमांअसंख्यातो

फिटीने अनतोथायठे तेप्रदेशमांअसरयातपणानोविनाशठे अनेअनतपणानोउपजवो अनेअगुरुलघुपणे गुणध्रुवठे एम उपजवो विणसवो अने ध्रुव एत्रणेपरिणामठे

अधर्मास्तिकायमा पणएत्रणेपरिणाम असरयातप्रदेशेंसदासमयसमयमां परिणमी रह्याठे तेमापण उपजे विणशे अनेथिररहेठे एमआकाशनाअनतापदेशमां पण, समयेत्रणपरिणामपरिणमेठे अनेजीवनाअसरयाताप्रदेशठे तेमध्येपणउपजे विणशे थिररहे तथापुद्गलपरमाणुमांपणसमयसमयथायठे अने कालनोवर्त्तमानसमयफिटीनेअतीतकालथायठे तो तेसमयमां वर्त्तमानपणानोविनाशठे अनेअतीतपणानोउपजवो कालपणेध्रुवठे एथुलथकीउत्पादव्ययध्रुवपणोकह्यो अनेवस्तुगते मूलपणे ज्ञेयनेपलटवे ज्ञाननोपणतेजासनपणेपरिणमवोथाय तेपूर्वपर्यायनाजासननोव्यय अनेअजिनवज्ञेयनापर्यायजासननोउत्पाद तथाज्ञानपणानोध्रुव एरीतेसर्वगुणना धर्मनीप्रवृत्तिरूप पर्यायनोउत्पादव्यय श्रीसिद्धजगवतमापणथइरह्योठे एमजधर्मास्तिकायनाप्रदेशें जेलेत्रमांअसरयातापुद्गलतथाजीवने पहेलेसमय चलणसहायीपणोपरिणमतोहतो अनेबीजे समय अनतपरमाणु तथाअनताजीवप्रदेशने चलणसहायीथयो तेवारें असरयाताचलणसहायनोव्यय अनेअनताचलणसहायनोउपजवो अनेगुणपणेध्रुव एमधर्मद्रव्यनेउत्पादव्ययथयीरह्योठे तेमजअधर्मादिकद्रव्यनेविपेपणजाणवु तथावलीकार्यकारणनेउत्पादव्यय तथा अगुरुलघुनाचलणनोउत्पादव्यय पचास्तिकायनेविषे कहेवु तथाअद्रव्यतेउपचारठे तेनुस्वरूपसर्वउपचारथीजकहेवु एरीते सर्वद्रव्यमासत्पणोठे अगुरुलघुनोजेद न थाय तोपठेप्रदेशनोमाहोमाहेजेदकहेवोथाय तेमाटेअगुरुलघुनोसर्वमाठे अने जेनोउत्पादव्ययरूपसत्पणोएकठे तेद्रव्यएकठे तथा जेनोउत्पादव्ययसत्पणो जूदो तेद्रव्यपणाजूदोठे एटलेसत्के० सत्पणो कह्यो

६ अगुरुलघुत्वपणोकहेठे जेद्रव्यनोअगुरुलघुपर्यायठे तेठप्रकारनीहानिवृद्धिकरे तेमाठप्रकारनीवृद्धिठे १ अनंतजागवृद्धि २ असरयातजागवृद्धि ३ सरयातजागवृद्धि ४ सरयातगुणवृद्धि ५ असरयातगुणवृद्धि ६ अनतगुणवृद्धि हवेठप्रकारनीहानि कहेठे १ अनतजागहानि २ असरयातजागहानि ३ सरयातजागहानि ४ सरयातगुणहानि ५ असरयातगुणहानि ६ अनतगुणहानि एरीतेठप्रकारनीवृद्धि तथा ठप्रकारनीहानि तेसर्वद्रव्यमासदासमयसमयथयीरहीठे वृद्धितेउपजवोअनेहानितेव्ययकहियें एअगुरुलघुपणोकह्यो नहीगुरुनथानहीलघु ते अगुरुलघुस्वजावकहियें एसर्वद्रव्यमध्येठे तेश्रीजगवतीसूत्रें सवदवा सवगुणा सवपएसा सवपज्जवा सवद्धाअगुरुलहूआए ...अगुरुलघु... वनेआवरणनथी तयाआत्मामध्येजेअगुरुलघुगुण

गुण सामान्यपणेपरिणमे पणअधिकाउंत्रापरिणमेनही तेअगुरुलघुगुणनुंप्रवर्तनजा- वुं तेअगुरुलघुगुणने गोत्रकर्म रोकेछे एअगुरुलघुस्वजावतेसर्वद्रव्यमांछे.

हवेगुणनीजावनाकहेछे तिहांजेटलाछएद्रव्यमां सरिखागुणछे तेसामान्यगुणकहियें नेजेगुणएकद्रव्यमांछे अनेबीजाद्रव्यमांनथी तेविशेषगुणकहियें जेगुणकोइकद्रव्य- छे अनेकोइकद्रव्यमांनथी तेसाधारणअसाधारणगुणकहियें एमएद्रव्यमां अनंत- ण अनंतपर्याय अनंतस्वजावसदाशाश्वताछे जेमश्रीकेवलीजगवंतेंपरूप्या तेसर्वजेरी- छे तेरीतेंसद्दहणापूर्वकयथार्थउपयोगथी श्रुतज्ञानादिकथीयथार्थपणेजाणवासद्दहवा निश्चेंज्ञानतेमोक्षनुंकारणछे जेजीव ज्ञानपाम्यो तेजीवविरतिकरेछे तेचारित्रकहियें ाननुंफल विरतिपणोछे तेमोक्षनुंतत्कालकारणछे.

हवेनिश्चेंचारित्र अनेव्यवहारचारित्रनोविचारकहेछे तेमांप्रथमव्यवहारचारित्रते प्राणातिपातविरमण प्रमुख पंचमहाव्रतरूप तेसर्वविरतिकहियेंअने स्थुलप्राणाति- ात विरमणव्रतादिकश्रावकना बारव्रत तेदेशविरतिचारित्रजाणवु एव्यवहारचारित्र ्वनुंकारणछे एवीकरणीरूपश्रावकनाबारव्रत अनेयतिनांपांचमहाव्रत तेअजव्यनेपण ावेतेथी देवतानीगतिपामे पणसकामनिर्जरानुं कारणनथाय इहांकोइ पुछेके मोक्ष- कारणनथीतो एटलुंकष्ट शावास्तेकरियें तेने उत्तर जे त्यागबुद्धी निश्चेंज्ञानसहित ारित्र तेमोक्षनुंकारणछे माटेनिश्चेंचारित्रसहित व्यवहारचारित्रपालवुं तेनिश्चेंचा- रित्रकहेछे शरीर इंद्रिय विषय कषाय योग एसर्वपरवस्तुजाणीछांडवा तथाआहार ते ुद्गलवस्तुजाणीछांडवो आत्माअणाहारीछे तेमाटेमुजने आहारकरवोघटेनही आहा- तेपुद्गलछे आत्माअपुद्गलीछे तेमाटेत्यागकरवो तद्रूपजेतप तेतप निश्चेंचारित्रमांजाणवुं ारित्रकहेतांचंचलतारहित थिरतानापरिणाम अनेआत्मस्वरूपनेविषे एकत्वपणेरमण- न्मयतास्वरूपविश्रांति तत्त्वानुजवतेचारित्रकहियें तेचारित्रनावेजेदछे एकदेशविरति बी- ीसर्वविरति तिहांदेशविरतिके०श्रावकनाबारव्रत ते बारव्रतनिश्चेंतथा व्यवहारथीकहेछे.

१ प्राणातिपातविरमणव्रत ते परजीवने आपणाजीवसरिखोजाणी सर्वजीवनी रक्षा करे तेव्यवहारदयाथयी माटे व्यवहारप्राणातिपात विरमणव्रतजाणवु अनेजे आप- णोजीव कर्मवशपड्योदुःखीयायछे तेआपणाजीवनेकर्मबंधनथीमूकाववुं अने आत्म- गुणरक्षाकरीगुणवृद्धिकरवी तेस्वदया बंधहेतुपरिणतिनिवारी स्वरूपगुणनेप्रगटपणेकर- वा जेगुणप्रगटथयोतेराखवो एटलेज्ञानेकरी मिथ्यात्वटाली आपणाजीवनेनिर्मलकरे तेनिश्चेंथी प्राणातिपात विरमणव्रतकहियें.

२ मृषावादविरमणव्रतकहेछे. जूठुंवचनबिलकुलबोलवुंनही ते व्यवहारमृषावादविर- मणव्रत अने जे परपुद्गलादिकवस्तुनेआपणीकहेवी तेमृषावादवचनछे अनेजीवनेअ-

जीवकहे तथाअजीवनेजीवकहे इत्यादिकअज्ञानजाव ते सर्वनिश्चेमृषावादछे मिथ्यात्वनाअर्थ खोटाकहे एमृषावादजेणेटाल्यो तेनिश्चेंमृषावादविरमणव्रतकहियें बीजाअदत्तादानादिक व्रतजोजाजे तोतेनोमात्रचारित्रजगयाय [illegible] गनयाय अनेजेणेनिश्चेंमृषावादनो जगकर्यो तेणे समकेततथाज्ञानअने [illegible] नोजगकर्यो तथाआगममा एमकह्युछेजे [illegible] बीजोमृषावादव्रतजगकर्यो तोजेणेचोथोव्रतजगकर्यो [illegible] सिद्धांतनाअर्थनोमृषाउपदेशआपे तेआलोवणलीधे पणशुद्धथायनही

३ अदत्तादानविरमणव्रतकहेछे जेपारकु धन वस्तु छुपावे चोरीकरे [illegible] लीये तेचोरीछे एटलेपारकीवस्तुधणीनादिधाविनालेवीनही एव्यवहारथी विरमणमनजाणवु अने जेपांचइंद्रियना त्रेवीसविषय आठकर्मवर्गणाइत्यादिक लेवीनही तथा तेनीगाठानकरवी तेआत्माने अमाह्यछे माटे [illegible] कहियें इहांकोइपुछेजे विषयनी अनेकर्मनीगाठाकोणकरेछे तेनेउत्तरजे [illegible] तोपुण्यपापछे ते जीवकर्मनीगाठाकरेछे जेपुण्यना ४२ जेदछे [illegible] एटलेजे व्यवहार अदत्तादानतोनथीलेता पण [illegible] [illegible]

४ मैथुनविरमणव्रतकहेछे जेपुरुषपरस्त्रीनोपरिहारकरे तथा जेस्त्रीपुरुषनो [illegible] पोतानापुरुषविनाअन्यपुरुषनोत्याग करे [illegible] एव्यवहारथीमैथुननुविरमणकहियें अने जेविषयनाअजिलाषनु [illegible] [illegible] परऊन्यनाप्यासिरगादिक तेनोअनोगीपणो [illegible] अनेणपुत्नागव ते अननाजीवनीण्छछे तेनेकेमनोगवे [illegible] मैथुन विरमणकहियें जेणेआविषयछाड्योछे [illegible] [illegible]

५ परिग्रहपरिमाणव्रतकहेछे परिग्रह धन धान्य दास दासी चोपद जमीन [illegible] तेमांथीपोतानेजोइयेतेटलोपरिग्रहराखवो बीजानोत्यागकरे एव्यवहारथीकहीं [illegible] अनेशरीर इंद्रियनो [illegible] तेनिश्चेंथीपरिग्रहनोत्याग एटलेपरवस्तुनीमूर्छा [illegible] [illegible] एमजाणवु

६ [illegible] दिशीपरिमाणव्रतकहेछे निश्चेंविचारदिशी पाचमीअधो छठीऊर्ध्व [illegible] [illegible] एव्यवहारथीदिशीपरिमाणकहियें अनेनाणं

टकवुंतेकर्मनुंफलछे एमजाणी तेथीउदासीपणो अनेसिद्धअवस्थाशुंउपादेयपणो ते
ाश्चेंदिशिपरिमाणव्रतकहियें.

७ नोगोपनोग परिमाणव्रतकहेछे. जेएकवारनोगववुंतेनोग अनेजेवारंवार नोगववुं
उपनोग तेनोपरिमाणकरे ते व्यवहारनोगोपनोगव्रतकहियें अने जेव्यवहारनयें
र्मनोकर्त्तानोक्ताजीवछे अने निश्चयनयेतोकर्मनोकर्त्ता कर्मछे आत्माअनादिनोपरना-
नोगीथयोछे तेथीपरनावग्राहक अनेपरनावरक्षकथयो एटले आत्मानी ज्ञायकता
हकता नोग्यता रक्षकता वीगरे कर्त्तापणोवीगड्यो तेवारेंपरनाव कर्त्ताथयो तेपणप-
नावरंगीपणें आठकर्मनोकर्त्ताथयोछे पणसत्तायेंतोस्वनावनोकर्त्ताछे पणउपगरण
वराणा तेथीस्वकार्यकरीशकतोनथी विनावनेकरेछे अज्ञानपणे जीवनोउपयोगनव्यो
पणन्यारोछे पोताना ज्ञानादिकगुणनोकर्त्तानोक्ताछे एहवोस्वरूपानुयायीपरिणामते
श्चें नोगोपनोगव्रत त्यागजाणवो.

८ अनर्थदंडविरमणव्रतकहेछे. जेकामविनाजीवनोविधकरवो पारकावास्ते आरंन प्र-
खकरवानी आज्ञाप्रमुखआपवी तेव्यवहारअनर्थदंडअनेशुनाशुनकर्मतेमिथ्यात्व
विरति कपाय योगथी बंधायछे तेनेजीवआपणाकरीजाणे एनिश्चेंथी अनर्थदंड.

९ सामायकव्रतकहेछे. जे मनवचनकायाना आरंनटालीने तेनेनिरारंनपणेवर्त्तावे
व्यवहार सामायकजाणवो अनेजेजीवना ज्ञान दर्शन चारित्रगुणविचारे सर्व जीव-
गुणनीसत्ता एकसमानजाणी सर्वजीवसाथे समतापरिणामेंवर्त्ते ते निश्चेंथी सम-
रूपसामायक कहियें.

१० देशावगाशीकव्रतकहेछे. जेमनवचनकायानायोग एकठोरकरी एकस्थानकेंबेसी
र्मध्यानकरवो तेव्यवहारदेशावगाशीककहियें अनेजेश्रुतज्ञानेकरीछद्रव्य उलखीने
ंचद्रव्यनोत्यागकरे अनेज्ञानवंतजीवनेध्यावे तेनिश्चें देशावगाशीकव्रतकहियें.

११ पोशहव्रतकहेछे जेचारपहोर अथवाआठपहोरसुधीसमतापरिणामे सावद्य
ोगी निरारंनपणे सिझायध्यानमांप्रवर्त्ते तेव्यवहारपोशहकहियें अनेपोतानाजीव-
ज्ञानध्यानथीपोषीनेपुष्टकरे तेनिश्चेंथीपोशहव्रतकहियें जीवनेपोतानास्वगुणेकरी पो-
जे तेने पोशहकहियें.

१२ अतिथिसंविनागव्रतकहेछे. जेपोशहनेपारणे अथवा सदासर्वदासाधुने तथाजे-
धर्मिश्रावकने पोतानीशक्तिप्रमाणे दानदेवुं तेव्यवहारअतिथिसंविनागकहियें अने
ोताना जीवने अथवा शिष्यनेज्ञाननुंदानते नणवुं नणाववुं सुणवुं सुणाववुं तेनि-
ेंथी अतिथिसंविनागव्रतकहियें एटले श्रावकनाबारव्रतकह्यां ते समकितसहित
निश्चेंतयाव्यवहारथीबारव्रतधारे तेजीवनेंपांचमेगुणठाणे देशविरति श्रावककहियें

देशके० देशथकी थोमीशीव्रतिपणोछेमाटे अनेयतिनेसर्वथीव्रतिपणोछे तेथी व्रतजछे साधुनेपाचमहाव्रतमासर्वव्रतआव्यां निश्चेत्प। थिरतानापरिणाम तेनिश्चेचारित्रना एकउत्सर्ग बीजोअपवाद एवेमार्गछे तीक्ष्णपरिणाम तेउत्सर्ग अनेजेउत्सर्गराखवाने कारणरूप तेअपवाद मिश्रसुरू दुन्नविगिन्हतदेतयाणहिय ॥ आउरदिठतेणते चेवहीयअसवरणे ॥ एटले ज्यांसुधीसाधकजावने बाधकनपके त्यांसुधी जेहनीनाकही अनेजोसाधकपरिणाम रहेतानदीठा तेवारेंजेहनीना ते आचरे तेने जेआत्मगुणराखवाने करवो तेअपवाद अनेगुणीनेरागे जक्तियेंकरजो तेप्रशस्त साधनछे अनेजेउदेकनेअखमवाधीकरवु तेअतिचारछे तथासजलो अने रूपणेकरवु तेपकिवाइछे तेमध्ये अपवादमार्गते परिणामदढरहे तेमआज्ञायेंकरवो

हवेचारध्यानकहेछे १ आर्त्तध्यान २ रौद्रध्यान ३ धर्मध्यान ४ शुक्लध्यान पहेलावेध्यानतेअशुजकहियें अनेपाछलावेध्यानतेशुजछे तिहांमनमा परिणामते आर्त्तध्यानकहियें तेनाचारपायाछे १ जाइ मित्र सज्जन माता प्रमुखइष्टवस्तुनोवियोगथयाथी विलापकरे तेपहेलो इष्टवियोगनामा आर्त्तध्यान अनिष्टजेदुःखदु खनाकारण दुश्मन दरिद्रीपणो तथा कुपुत्रादिमलवाथी मनमा चिंताउपजे तेअनिष्टसयोग नामाआर्त्तध्यान ३ शरीरमारोगउपनायका ताघणीकरे तेरोगचिंतानामाआर्त्तध्यान ४ मनमांआगलनावखतनोसोचकरे आकामकरशु आवतावर्षमांअमुककामकरशुतोअमुकलाजथशेअथवा दानशील फलमागे जे आजवमातपकीधोछे माटे आवतेजवें इन्द्रचक्रवर्त्तिनी पदविमले लाजवनी वाछाछे तेअग्रशोच आर्त्तध्याननो चोथोपायोजाणवो ५ ह्या पतिर्यंचगतिनाकारणछे एध्याननापरिणामतेपाचमाअथवाछठागुणगणासुधी

२ जेकठोरपरिणामनुर्चिंतवनतेरौद्रध्यान तेनाचारजेदछे १ जीवहिंसाकरीने पामे अथवा बीजोकोइहिंसाकरतोहोय तेनेदेखी खुशीथाय अथवा युद्धनी नाकरे तेहिंसानुबधी रौद्रध्यान २ जूतु बोलीनेमनमा हर्षपामे के जुओ में टकेलव्यो माराजूठापणानी खबरकोइनेपमीनही एवोमृषावादरूप परिणाम तेमृ षधीरौद्रध्यान ३ चोरीकरी अथवाठगाइकरी मनमा खुशीथाय के माराजेवो जोर कोणछे हुंपारकोमालखाउछु एवोपरिणामते चोरानुबधि रौद्रध्यान ४ प परिवार घणोवधवानी लालचहोय तेधनअथवा कुटुबनेमाटे परिग्रहमिल्याथीअहंकारकरे तेपरिग्रहरक्षणानुबधी रौद्रध्यान

कह्या एध्यान नरकगतिपमाडवानुं कारणछे महाअशुभकर्मनुं कारणछे एपांचमा गुणठाणासुधीछेअने छठेगुणठाणेपण एकहिंसानुबंधी रौद्रध्याननापरिणाम कोइकजीवनेहोय.

हवेधर्मध्यानकहेछे. जेव्यवहारक्रियारूप कारणतेधर्म तथाश्रुतज्ञान अनेचारित्र ए उपादानपणेसाधनधर्म तथारत्नत्रयी भेदपणे तेउपादानशुद्धव्यवहार उत्सर्गानुयायी ते अपवादधर्मजाणवो अने अभेदरत्नत्रयी तेसाधनशुद्ध निश्चेनयें उत्सर्ग धर्म अने धम्मो वत्थुसहावो जेवस्तुनोसत्तागम शुद्धपरिणामिक स्वगुणप्रवृत्ति कर्त्रादिक अनंतानंदरूप सेद्धावस्थायेंरह्यो तेएवंभूत उत्सर्गउपादान शुद्धधर्म तेधर्मनुं भासन रमण एकाग्रतापणे चिंतन तन्मयतानो उपयोग एकत्वनोचिंतववो तेधर्मध्यानकहियें तेनाच्यारभेदछे तेकहेछे.

१ आज्ञाविचयधर्मध्यानते जेवीतरागदेवनीआज्ञा साचीकरीसद्दहे एटलेभगवंते षड्द्रव्यनुंस्वरूप नयप्रमाणे निक्षेपासहीत सिद्धस्वरूप निगोदस्वरूप जेमकह्या तेमसद्दहे वीतरागनीआज्ञा नित्यअनित्य स्याद्वादपणे निश्चेव्यवहारपणे माने सद्दहे ते आज्ञाप्रमाणे यथार्थउपयोग भासनथयो तेनेइपॅकरी तेउपयोगमध्ये निरधार भासन रमण अनुभवता एकता तन्मयपणो तेआज्ञावीचयधर्मध्यानकहियें.

२ अपायविचयधर्मध्यान तेजीवमां अशुद्धपणे कर्मनायोगथी संसारीअवस्थामां अनेक अपायके० दूषणछे तेअज्ञान राग द्वेष कषाय आश्रव एमारानथी हुं एथकी न्यारोछुं हुंअनंतज्ञान दर्शन चारित्र वीर्यमयी शुद्ध बुद्ध अविनाशीछुं अजअनादि अनंत अक्षय अक्षर अनक्षर अचल अकल अमल अगम्य अनमी अरूपी अकर्मी अबंधक अनुदय अनुदीरक अयोगी अभोगी अरोगी अभेदी अवेदी अछेदी अखेदी अकषायी असखाइ अलेशी अशरीरी अणाहारी अव्याबाध अनवगाही अगुरुलघुपरिणामी अतेंद्री अप्राणी अयोनी असंसारी अमर अपर अपरंपर अव्यापी अनाश्रित अकंप अविरुद्ध अनाश्रव अलख अशोकी असंगी अनारक लोकालोकज्ञायक एवो शुद्धचिदानंद मारोजीवछे एहवो एकाग्रतारूप ध्यानते अपायविचयधर्मध्यानजाणवो.

३ विपाकविचयधर्मध्यानकहेछे. जे एहवोजीवछे तोपण कर्मवशेदुःखीछे तेकर्मनो विपाकचिंतवे जे जीवनोज्ञानगुण तेज्ञानावरणीकर्मदाब्योछे अनेदर्शनावरणीकर्मेदर्शन गुणदाब्योछे एमआठकर्मे जीवना आठगुणदाब्याछे एटलेआसंसारमांभमतांथकां जीवने जेसुखदुःखछे तेसर्वकर्मनांकीधांछे माटेसुखउपनेराचवुंनही अनेदुःखउपने दिलगीरथवुंनही कर्मस्वरूपनीप्रकृति स्थिति रस अनेप्रदेशनो बंध उदय उदीरणा तथा सत्ता चिंतववानुं एकाग्रतापरिणाम तेविपाकविचयधर्मध्यान.

४ संस्थानविचयधर्मध्यानकहेछे. ते चउदराजमानलोकनुं स्वरूपविचारे जेएलोकते

चउदराजऊचोछे तेमध्ये सातराजअधोलोकछे विचमां अढारसोयोजन मनुष्य
त्रिलोकछे तेऊपर काइकउणो सातराज ऊर्ध्वलोकछे तेमासर्व वैमानिक
अनेऊपरें सिद्धशिलासिद्धखेत्रछे एरीतेलोकनुप्रमाणछे एलोकनुसस्थान वैशाखे
लोकाग्र आपणाजीवें ससारमा भमता सर्वलोकने जन्ममरणकरी फरस्योछे
स्वरूप तथालोकनेविषे पचास्तिकायनु अवस्थान तथापरिणमन द्रव्यमध्ये
यनु अवस्थान तेनो जे एकाग्रताये तन्मयचिंतवणपरिणाम एहवुजेध्यान
धर्मध्यानकहिये एधर्मध्यानना चारपायाकह्या एधर्मध्यान चोथागुणठाणाथी
ने मानमा गुणठाणासुधीछे

हवेशुक्लध्यानकहेछे शुक्लके० निर्मलशुद्ध परआलबनविना आत्मानास्वरूपने
यपणेध्यावे एहवुध्यान तेनेशुक्लध्यानकहिये तेहनापायाचारछे तेकहेछे.

१ पृथक्त्ववितर्कसप्रविचार ते पृथक्त्वके० जीवथी अजीवजूदाकरवा स्वजा
नाव तेनेजूदापणे वहेचणकरवी स्वरूपनेविषेपण द्रव्य तथापर्यायनो
करी पर्यायतेगुणमां सक्रमावे अनेगुणते पर्यायमासक्रमणकरे एरीतेस्वधर्म
धर्मातरनेद तेपृथक्त्वकहिये अनेतेनो वितर्क ते जेश्रुतज्ञाने स्थितउपयोग
विचार ते सविकल्पोपयोग एटलेएकचिंतव्यापछि बीजोचिंतवयो तेने विचार
एटलेनिर्मलविकल्पसहित पोतानीसत्तानेध्यावे तेपृथक्त्ववितर्कसप्रविचार
पायो आठमागुणठाणाथीमांडी इग्यारमा गुणठाणासुधीछे

२ एकत्ववितर्कअप्रविचारनामा बीजोपायोकहेछे जेजीव आपणागुणपर्यायनी
करी ध्यावे तेध्यायीरीतेके जीवनागुणपर्याय अने जीवते एकजछे अने
गिद्रव्यगुणपर्यायएकस्वरूप तन्मयपणेअनता
वितर्कके० श्रुतज्ञानावलबीपणे अनेअप्रविचारके० विकल्परहित दर्शनज्ञाननो
कारणताविना स्वभावीनो एकसमयी कारणकार्यतापणेजेध्यान
एकत्ववितर्क अप्रविचारजाणवो एपायोबारमागुणठाणेध्यावे
श्रुतज्ञानावलबीपणे पण अवधि मनपर्यव ज्ञानोपयोगेवर्ततोजीव
एहवुध्यान परानुसारीजे माटे एध्यानथी घनघातीया
केवलज्ञानपामे एतेरमेगुणठाणे ध्याननथीपामतो तेरमानाअते
ध्यावे

३ सूक्ष्मक्रियाअप्रतिपातिनामा कहेछे तेसूक्ष्म मन वचन कायानायोगरुधे
काउसग्ग अनेअप्रतिपातिनिर्मलवीर्य अचलआत्मपरिणाम तेसूक्ष्म
क्रियानु ८५ प्रकृतिरहीहती तेमध्ये ७२ खपावे

४ उच्छिन्नक्रियानुवृत्तिपायोकहेछे. जेयोगनिरुंधकीधापछे तेरप्रकृतिखपावे अकर्मी
य सर्वक्रियाथीरहितथाय तेसमुछिन्नक्रियानिवृत्ति शुक्लध्यानकहियें एध्यानथ्याव-
शेषदलखरण रूपक्रियाउछेदे अवगाहनादेहमानमांथी त्रीजोजागघटाने शरीरमू-
इहांथी सातराजऊपर लोकनेअंतेजाय सिद्धथाय इहांशिष्यपूछेजे चौदमेगुणठा-
तो अक्रियछे तोसातराजउंचोगयो एक्रियाकेमकरेछे तेनेउत्तर जे सिद्धतोअक्रियछे
तु पुर्वप्रेरणायें तुंबीनेदृष्टांते जीवमांचालवानोगुणछे धर्मास्तिकायमध्ये प्रेरणागुणछे
थीकर्मरहितजीव मोक्षेजना लोकनेअंतेजायीरहे इहांकोइपुछेजे आगलउंचोअलो-
छे तिहांकिमजातोनथी तेनेउत्तर जेआगलधर्मास्तिकायनथी माटेनजाय वलीकोइ
छेजे तोअधोगतियें अथवातिरछीगतियें केमनथीजातो तेनेउत्तर जे कर्मनाजारथी
हेतथयो हलुवोथयो माटेनिचो तथाजावो जिमणोनजाय कारणके प्रेरककोइनथी
याकंपेनही केमकेअक्रियछेमाटे तथाकोइपुछेजे सिद्धनेकर्मकेमलागतानथी तेनेक-
छे जे कर्मतोजीवनेअज्ञानथी तथायोगथीलागेछे तेसिद्धनाजीवने अज्ञान तथायोग
थी माटेकर्मलागेनही एचारध्याननोअधिकारकह्यो.

हवेवलीबीजाचारध्यानकहेछे. १ पदस्थ २ पिंडस्थ ३ रूपस्थ ४ रूपातीत. तेमां पहेलुं
दस्थध्यानकहेछे जेअरिहंतादिक पांचपरमेष्टीना गुणसंजारे तेनोचित्तमां ध्यानकरे ते
दस्थध्यान. २ पिंडके० शरीरमांरह्योजे आपणोजीव तेमां अरिहंत सिद्ध आचार्य
पाध्याय अनेसाधुपणानागुण सर्वछे एहवोजेध्यानतेपिंडस्थध्यान अथवा गुणीनागुण-
ध्ये एकत्वताउपयोगकरवोतेपिंडस्थध्यान. ३ रूपमांरह्योथको पणएमारोजीव अरूपी
नंतगुणीछे जेवस्तुनोस्वरूप अतिशयावलंबीथयापछे आत्मानुं रूपएकतापणो एहवो
ध्यान तेरूपस्थध्यान एत्रणध्यानधर्मध्यानमांगणवा. ४ निरंजन निर्मल संकल्पविक-
परहित अभेद एकशुद्धस्वरूप चिदानंद तत्वामृत असंग अखंड अनंतगुणपर्याय-
रूप आत्मस्वरूपनुंध्यानते रूपातीतध्यानजाणवुं इहांमार्गणागुणठाणा नयप्रमाण मति-
आदिकज्ञान क्षयोपशमभाव सर्वछांडवायोग्यथया एकसिद्धनामूलगुणनेध्यावे ते रूपा-
तीतध्यानजाणवो एटलेमोक्षनुंकारणजेध्यान तेकह्युं.

हवेभावनाकहेछे.तेमांधर्मध्याननीचारभावनाकहेछे—१ मैत्रीभावनाते सर्वजीव साथें
मैत्रतानोभावचिंतववो सर्वनुंभलुंचाहवुं पणकोइनुं मातुंचिंतववुंनही सर्वजीवऊ-
परहितबुद्धिराखवी ते मैत्रीभावना २ गुणवंत अने ज्ञानादिकगुणऊपरें रागते बीजीप्र-
मोदभावना ३ जेधर्मवंतऊपर राग अनेमिथ्यात्वीऊपर रागनही तेम द्वेषपण नही
कारणके हिंसकऊपरेंपण उत्तमजीवने करुणाऊपजे जोउपदेशथकी सारामार्गेआवेतो
तेने शुद्धमार्गेआणवो कदाचितमार्गेनआवे तोपणद्वेषनराखवो केमके ते अजाणछे

एमसमजवु एहवाजेपरिणाम तेमध्यस्थजावना ४ सर्वजीवने पोतानेतुल्यजाणी पाले कोइनेहणेनही तथाजेदुःखी अथवाधर्महीन तेहनाऊपरकरुणा तेनाउ ववानोपरिणाम तथाधर्महीन जीवदेखीने एवोचिंतवेजे एजीवकिवारें यथार्थआत्मसाधन पामीस्वरूपधर्मने किवारेंअवलबशे एवो परिणाम ते चोथी णाके० दयाजावना एचारजावनाकही.

१ हवेबारजावनाकहेछे शरीर कुटुंब धन परिवार सर्वविनाशीछे जीवना अविनाशीछे एम चिंतववुतेपहेलीअनित्यजावना २ ससारमा मरणसमये जी राखनारकोइनथी एकधर्मनोशरणछे एवुचिंतववुते बीजीअशरणजावना ३ ससारमां जमता सर्वजवकीधाछे एससारथी हुकेवारेंछुटीश एससारमारोनथी, हमयीछु एमविचारवु तेत्रीजीससारजावना ४ एमाहरोजीवएकलोछे एकलो एकलोजशे पोतानाकरेलांकर्म एकलोजोगवशे एमचिंतववुते चोथी एकत्व जा आससारमा कोइकोइनोनथी एमचिंतववुतेपांचमीअन्यत्वजावना ६ मलमूत्रनीखाणछे रोगजराथीजरयोछे एशरीरथी हु न्यारोछु एमचिंतववो ते छ चिजावना ७ रागद्वेषअज्ञान मिथ्यात्वप्रमुख सर्वआश्रवछे एमचिंतववुं तेसातमी श्रवजावना ८ ज्ञानध्यानमा वर्त्ततोजीव नवाकर्मबांधेनही ते आठमी सवर ज्ञानसहित क्रियातेनिर्जरानुकारणछे तेनवमीनिर्जराजावना १० चउदरा स्वरूपविचारवुते दशमी लोकस्वरूप जावना ११ ससारमाजमताजीवने ननीप्राप्तिपामवीदुर्लजछे अथवा समकेतपाम्योपण चारित्र सर्व विरति धर्म पामवोदुर्लजछे तेइग्यारमी बोधदुर्लजजावना

१२ धर्मनाकहेणहारगुरु तथाशुद्धआगमनु साजलवु एहवीजोगवाइ मळ छे तेबारमीधर्मदुर्लजजावना एटलेबारजावनाकही. एचारित्रनुंस्वरूप सपूर्णकह्यु

एवोसमकितसहित ज्ञानचारित्र तेमोक्षनुकारणछे तेनाऊपर जव्यप्राणीयें उद्यमकरवो अनेजोतेवु ज्ञानचारित्रनहीपले तोपण श्रेणीकराजानीपेरें सद्दहणा राखजो जोसमकेतशुद्धछे तोमोक्षनजीकछे समकेतविना ज्ञानध्यान क्रियासर्व खछे एमआगममाकह्योछे ॥ गाथा ॥ जसक्केतकिरइ अहवानसक्केइतहयसद्दहइ॥ हमाणोजीवो पावइअयरामरगण ॥ १ ॥ अर्थ ॥ जेजीवतुंकरीशके तोकर अनेजो करीशके तोपण जेवोवीतरागेधर्मकह्यो तेरीतेसद्दहजे सद्दहणाशुद्ध राखनारजीव जरामर स्थानक तेमोक्षपदवीपामे.

हवेसमकितनो मार्गकहेछे १ जीव २ अजीव ३ पुण्य ४ पाप ५ आश्रव ६ स ७ निर्जरा ८ बंध ९ मोक्ष एनवतत्त्वछे तेमामोक्षनुकारणजीवछे अनेसवर तथानिर्

वेगुणठे एटले जीव संवर निर्जरा मोक्ष एचारउपादेयठे अनेवीजा पांचहेयठे ए-
वो परिणामतेने समकेतज्ञानकहियें तेसमकेतज्ञानजलोजथाय तिहां अनुयोगद्वा-
रांकह्योठे ॥ गाथा ॥ नायम्मिगिन्हियव्वे अगिन्हियव्वेअइच्छअत्थमि ॥ जइयवमेवइ-
जो सोउवएसोनउतनाम ॥ १ ॥ अर्थ ॥ ज्ञानथीद्रव्यजाणीने लेवायोग्यहोयतेले
नेठांमवायोग्यठांमे एवोजेउपदेश तेनयउपदेशजाणवो हवेसमकेतनी दशरुचिकहेठे.

१ निसर्गरुचि तेनिश्चयनयकरी जीवादिनवतत्वजाणे आश्रवत्यागे संवरआदरे वी-
रागनाकह्याजाव जेद्रव्य तेद्रव्य खेत्र काल जावसहितजाणे नामादिचारनिक्षेपा
ताती बुद्धिथीजाणे सद्दहे वीतरागनाजाष्याजाव तेसत्यठे एवीसद्दहणाहोय.

२ उपदेशरुचि नवतत्व तथाठद्रव्यने गुरुउपदेशथीजाणीसद्दहेते उपदेशरुचि.

३ आज्ञारुचि ते रागद्वेषमोहजेमनागयाठे अज्ञानमिथ्युंठे एहवाअरिहंतदेव ते-
जे आज्ञाकही तेनेमानेसद्दहे तेआज्ञारुचि.

४ सूत्ररुचि ते १ आचारांग २ सुयगडांग ३ ठाणांग ४ समवायांग ५ जगवती ६
ज्ञाताधर्मकथा ७ उपासकदशांग ८ अंतगडदशांग ९ अनुत्तरोववाइदशांग १० प्रश्न-
व्याकरण ११ विपाक एइग्यारअंग तथा बारमुंअंगदृष्टीवाद जेमांचउदपूर्वहता तेहम-
णांविछेदगयाठे तथा १ उववाइ २ रायपश्रेणी ३ जीवाजिगम ४ पन्नवणा ५ जंबुद्वी-
पपन्नति ६ चंदपन्नति ७ सुरपन्नति ८ कप्पीआ ९ कप्पवडंसिया १० पुप्फिआ ११
पुप्फचुलीआ १२ वन्हिदिशा एबारउपांगजाणवा अने १ व्यवहारसूत्र २ बृहत्कल्प
३ दशाश्रुतस्कंध ४ निशीथ ५ महानिशीथ ६ जितकल्प एठछेद ग्रंथ तथा १ चोस-
रण २ संथारापयन्नो ३ तंडुलवेयालीया ४ चंदाविजय ५ गणिविजय ६ देविंदथुओ
७ वीरथुओ ८ गछाचार ९ जोतिकरंम १० आयुःपच्चखाण एदशपयन्नानानाम तथा
१ आवश्यक २ दशवैकालिक ३ उत्तराध्ययन ४ उघनिर्युक्ति एचारमूलसूत्र तथा
१ नंदि २ अनुयोगद्वार एपीस्तालीसआगम तेमूलसूत्र तथा २ निर्युक्ति ३ जाष्य ४
चूर्णि ५ टीका एपंचांगीनावचन जेजीवमाने तथाआगमसांजलवानी तथा जणवा-
नीजेनेघणीचाहनाहोय तेसूत्ररुचिजाणवी.

५ जेजीवगुरुमुखथी एकपदनोअर्थसांजलीने अनेकपदसद्दहे ते वीजरुचि.

६ अजिगमरुचि ते जेसूत्रसिद्धांत अर्थसहितजाणे अनेअर्थविचार सांजलवानी
घणीचाहनाहोय ते अजिगमरुचि.

७ जे ठद्रव्यनागुणपर्यायने चारप्रमाण तथासातनये करीजाणे ते विस्ताररुचि.

८ क्रियारुचि ते दर्शन ज्ञान चारित्र तप विनय सुमति गुप्ति बाह्यक्रिया सहित
आत्मधर्मसाधे जेनेरुचिघणीहोय तेक्रियारुचि.

ए संक्षेपरुचि ते जे अर्थनेज्ञानमां थोमोकहेयके घणो जाणीने कुमति जिनमतमाप्रतितमाने तेसंक्षेपरुचि

१० जेपाचअस्तिकायनुस्वरूपजाणे श्रुतज्ञाननोस्वभाव

हवेसमकेतनाआठगुणकहेछे १ निसका ते जिनागममध्येसूक्ष्मअर्थकह्या ते सद्दहे तेमांसंदेहआणेनही तथासातभयथीपणडरेनही २ निकंखागुण ते परमतनीवांछनानराखे केमके जिहांइच्छा तिहांकर्मनोबंधछे माटे ३ निवि... ते शुभअशुभपुद्गल एकसरिखाछे तेमा पुण्यनाउदयथी शुभयोग मिल्याथकी अहंकारनकरवो तथापापनाउदयथी दुःखसंयोगमिल्यादिलगीरथावुनही ४ अमू... ढीगुण ते जे आगममा सूक्ष्मनिगोदना तथाछद्रव्यना सूक्ष्मविचारकह्याछे सतोथकोसुजायनही जेपोतानी धारणामाआवेतेधारीराखे अनेजेधारणामां तेनेसद्दहे ५ अवबुहगुण जे एआपणाजीवमां अनंतज्ञानादिकगुणछे ... नही शुद्धसत्ताजेवीछे तेवीकहेवी रागद्वेष अज्ञानतेकर्मनीउपाधिछे ... थीन्यारोछे ६ स्थिरिकरणगुण ते आपणापरिणाम ज्ञानमांस्थिरकरवा ... नही अथवाकोइभव्यप्राणीधर्मथीपडतोहोय तेने साह्यदेइउपदेशआपीस्थिरकरवा ७ वात्सल्यतागुण ते जेनीसाथे ज्ञान ध्यान तप पडिक्कमणो भेलोकरता होइये नेसद्दहणापणएकजहोय तेआपणोसाधर्मिभाइछे तेनीभक्तिकरवी अथवा ... रनाज्ञानादिगुण आपणासमानछे माटे सर्वजीवउपरदयाकरवी ... आपणातुल्यज्ञानादिगुणछे तेजीवने पोषवायोग्यज्ञानध्याननोघणोअभ्यास करावे ८ प्रभावकगुण ते भगवतनाधर्मनीप्रभावनामहिमाकरवी अथवा पोतानेज्ञाना... धारवा दान शील तप भाव पूजा करीघणीमहिमाकरवी एसमकितनाआठगुण

हवेसमकेतनापाचभूषणकहेछे १ उपशमभावभूषण ते ... नकरे अनेजोकदाचित्कषायकरेतोपण तरतमननेपाछोवाले २ आस्ताभूषण ... गवतना वचनउपरशुद्धप्रतितराखे भगवंतजेमआगममा आज्ञाकरीतेमसद्दहे ३ ... याजानभूषण ते सर्वजीव पोतानासरिखाजाणीदयापालवी ४ सवेगभूषण जे ... सारथी तथाधनथी शरीरथी उदासीपणोराखजो ५ निरवेद्यभूषण ते ... मजीवअनतिवारभोगव्या पणतेदुःखनाकारणछे एकचिदानंदमोक्षमथी अतीं... मनेआपणाकरीजाणे ए समकेतनापाचभूषणकह्या

हवेछआयतनकहेछे १ निश्चयकुगुरुतेभगवंतनावचननाखोटाअर्थकरे खोटीप... णाकरे २ व्यवहारकुगुरु ते योगी सन्यासी ब्राह्मण अने आचारहीन वेषधारी ... ति तेपणछोडवा ३ निश्चयकुदेव ते जिणेश्रीवीतरागदेवनुस्वरूपनथीजाण्यु ४ व्यव...

ा ते जेसरागीदेव कृष्ण माहादेव खेत्रपाल देवी पितरप्रमुख तेपणठोमवा ५ निर्ग्रं-
धर्मते जेएकांतमार्ग वाह्यकरणीरूपपरुप्याते अंतरंगज्ञाननथीठलख्योते ६ ज्यव-
कुधर्मे ते पारकाअन्यदर्शनीनामतसर्वठांमवा एटले कुदेव कुगुरु तथा कुधर्मने ठोमी
देव गुरुतथाधर्मसद्दहे तेसमकेतनी सद्दहणाजाणवी समकेतनालक्षण पन्नवणासूत्रथी
ठे गाथा ॥ परमत्थसंथवोवा सुदिठ्ठपरठसेवणावावि ॥ वावन्नकुदंसणा वज्जणायसमी
द्दहणा ॥ १ ॥ अर्थ ॥ परमार्थ ठद्रव्य नवतत्वनागुणपर्याय मोक्षनुंस्वरूप एटले जे
ार्थसूक्ष्मअर्थठे तेजाणवानोघणोपरचोकरे अथवाजाणवानीघणीचाहनाराखे अने
ठके० जलीरीतेदीठाजाण्याठे परमार्थठद्रव्यमोक्षमार्गजेणे एहवागुरुनीसेवाकरे
ज्ञानीगुरुधारवा अने वावन्नके० जिनमतियतिनामधरावीने जेखेत्रपालप्रमुखने
कितविनामाने एवागुरुनोसंगवर्जे अनेकुदर्शनी जेअन्यमतितेनोसंगनकरे एवाजेप
ामतेसमकितनीसद्दहणाजाणवी विरयासासज्जाठे कपायहीणामहवयधराविं ॥ स-
दिठ्ठिविहुणा कयाविमुक्खंनपावंति ॥२॥ अर्थ ॥ जेसावद्यआरंजथी विरम्याठेक्रोधादि
चारकपायजीत्याठे अनेशुद्धपांचमहाव्रतपालेठेपणसमकेतविनाठेतेजीवमोक्षपामेनही
हवेसमकिततेसीवस्तुठे तेविषेगाथाकहेठे गाथा ॥नयजंगपमाणेहिं जो अप्पासा-
ायजावेणं ॥ जाणइमोरकसरूवं सम्मादिठ्ठिउसोनेउ ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ नय तथा
करी तथाप्रमाणेकरी जेपोतानाआत्मानेजाणे ठलखे स्याद्वादआठपक्षेजाणे अने
स्याद्वादपणेमोक्षनिकर्मावस्थानेपणजाणे परवस्तुने हेयजाणे जीवगुणउपादेयजा-
तेने समकेति जाणवो.

हवेजीवस्वरूपध्यानकरवाने गाथाकहेठे ॥ अहंमिक्कोखलुसुद्धो निम्ममउनाणदंसण
ग्गो ॥ तम्मिठिठउतच्चित्तो सव्वेएएखयंनेमि ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ ज्ञानीजीव एहवुं ध्या-
रे के हुंएकलुं परपुद्गलथीन्यारोहुं निश्चेनयकरीशुद्धहुं अज्ञानमलथीन्यारोहुं निर्म-
हुं ममताथीरहितहुं ज्ञानदर्शनथीजर्योहुं हुंमाराज्ञानस्वजावसहितहुं हुंमारागुण-
रह्योहुं चेतनागुणतेमाहारीसत्ताठे हुंमाराआतमस्वरूपनेध्यावतो सर्वकर्मक्षयकरुंहुं
गाथा ॥ निरंजणंनिकलअयल देवअणाइअणइअणात्तं ॥ चेयणलरकणसिद्धसम प-
प्पासिवसंतं ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ कर्मअंजनथीरहित निरंजनहुं कलंकरहितहुं अचल
० पोतानास्वरूपथीकिवारेचलायमानथाउनही परमदेवहुं जेनीआदिनथी तथा जेनो
तनथी चेतनालक्षणहुं सिद्धसमानहुं संतसत्तामयीहुं गाथा॥ जीवादिसद्दहणं सम्म-
एसअधिगमोनाणं ॥ तयेवसयारमणं चरणंएसोउसुरकपहो ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जीवादिकठद्रव्यजेवाठे तेवासद्दहवा तेसमकेत अनेठद्रव्यजेवाठे तेहवा गु-
पर्याय सहितजाणे तेज्ञानजाणवुं तेठद्रव्यजाणीनेठांमे अजीवनेठांमे अने जीवना

स्वगुणमां स्थिरथयीनेरमे तेचारित्रकहियें एज्ञानदर्शनचारित्र शुद्धरत्नत्रयी मार्गछे माटे एज्ञानदर्शनचारित्रनो घणोयत्नकरवो एरत्नत्रयी. नेमम
तिहांनिश्चयवव्यहारनीगाथा ॥ नच्छियमग्गोमुक्खो ववहारोपुन्नकारणोवुत्तो॥ रूवो आसवहेउतउनीउं ॥ ७ ॥

अर्थ निश्चेनयनोमार्ग ज्ञानसत्तारूप ते मोक्षनुकारणछे एटलेमोक्षछे क्रियानय ते पुण्यनुकारणकह्यो पहेलो निश्चेनयसत्तरछे अनेनिश्चेसंवरनिश्चेनय जूदानथी बीजोव्यवहारनय तेआश्रव नवाकर्मलेवानोहेतुछे एटलेशुभपुण्यकर्मनो श्रवथायछे अनेअशुभव्यवहारें अशुभकर्मनोआश्रवथायछे कोइ पुछेजे आश्रवनुकारणछे तो अमेव्यवहारनहीआदरशु एकनिश्चेमार्ग आदरशु कहेछे ॥ गाथा ॥ जइजिणमयपवज्जह तामाववहारनच्छियएमुयह ॥ एके छिज्जइअन्नेणउंतत्त ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ अहोभव्यप्राणी जोतमनेजिनमतनी चाहनाछे अनेजो तुमेजिनमतने छो मोक्षनेचाहोछो तोनिश्चेनय अनेव्यवहारनय छाडशोनही एटलेबेहुनयमानो वहारनयचालजो अनेनिश्चेनयसद्दहजो जोतुमेव्यवहारनयउथापशो तो तीर्थनोउछेदथाशे जेणेव्यवहारनय नमान्यो तेणे गुरुवंदना जिनभक्ति तप सर्वनमान्या एम जेणेआचारउथाप्यो तेणे नि ना एकलो उपादानकारण तेसिद्धनथाय माटे निमित्तकारणरूप व्यवहारनय नवु अनेजो एकलोव्यवहारनय मानियें तोनिश्चेनय उलखयाविना तत्वशुद्ध जाणुजायनही माटेतत्वमार्ग अनेमोक्षमार्ग तेनिश्चेनयविना पामियेंनही ज्ञानविना मोक्षनथी एटलेनिश्चेविना व्यवहारनि फलछे अनेनिश्चेसहित व्यवहार प्रमाणछे तेनोदृष्टांत जेमसोनानाआभूषणमा उपधातु अथवाकिणजोमिल्योहोय उचासोनानेभावलेइ राखियेछैयें अनेजोतेकिणजो तथासोनुजूडुकरियें तो नानेले पण कोइकिणजो जेकुधातु तेलीयेनही तेम निश्चेनय सोनासमानछे नयसहित सर्वभलाछे अनेनिश्चेनयविना सर्वअलेखेछे माटेआगममा रूप मोक्षमार्गछे तेकह्यो

वलीशरीरउपर मोहकरेनही तेविषे ॥ गाथा ॥ छिज्जोभिज्जोजायउ जोई हुशरीर ॥ अप्पाभावेनिम्मलो जपावभवतीर ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ एशरीर छीजजाउ भिजजाउ क्षयथइजाउ विणशीजाउ एमाहारु शरीरपुद्गल रवस्तुछे तेएकदीवसेमूकवुछे माटेरेप्राणी निर्मल तरीनेकांठोपामीश ॥ गाथा ॥ एहिजअप्पासोपरमप्पा

नहुतोजइजिणागमो ॥ १ ॥ अर्थ ॥ हेभगवंत अमसरिखाप्राणीनी शीगतिथात अमेंआहुंसमपंचमकालमा अवतारलीधो हाइतिखेदे अमेअनाथ तु जो जिनेश्वर कहेला आगमनहोत तोआजसुथात एटले आजआगमनोजआधारछे अने आगमधर जे बहुश्रुत तेनोघणोविनयकरवो आगममाविनयनुफल अनेमाननवानु फलज्ञानछे ज्ञाननुफलमोक्षछे एमआगम सांभलीजेवायोग्यछेतेने योग्यताकरजो सद्दहणाशुद्धरागजो सद्दहणाते मोक्षनुमूलछे एइंद्रियसुखतोअनीते नंतिवारपाम्याछे एहवी जाति जन्म योनी कोइरही नथी जेआपणाजीवेनही पजीवने ममारमाजमता अनतापुद्गल परावर्त्तनथया पणधर्मनी जोगवाई नथी तोहवेमनुष्यजन्म श्रावककुल निरोगशरीर पंचेंद्रीप्रगट बुद्धिनिर्मल ए एम वलीश्रीवीतरागनीवाणीनाकेहेनारा शुद्ध गुरुनी जोगवाइपामीने अहोजव्यजीवो मेधर्मनेविषे विशेषउद्यमकरजो फिरियीएवीजोगवाइ मिलवीदुर्लभछे माटेप्रमाद तोनही शरीर धन कुटुंब आयुष्य सर्व चचलछे क्षणक्षणछीजेछे माटे पाचसमवायमला मोक्षरूपकार्य सिद्धथाय तेपचसमवायनानामकहेछे १ काल २ स्वभाव ३ नियत ४ पूर्वकृत ५ पुरुषाकार एपाचसमवायमाने तेसमकेतिछे एमाएकसमवायमाने तेहनेमिथ्यात्वीकह्यो एम सम्मतिसूत्रमा कह्योछे गाथा ॥

कालसहावनियई पुव्वकयंपुरिसकारणेपंच ॥ समवायसम्मत्तं एगंतेहोयमिछत्त ॥ १ ॥

अर्थ ॥ कालस्थितिविना मोक्षरूपकार्य सिद्धथायनही एटलेकालसर्वेनुकारण कार्यनेविषेपक्वतानोहोय तेवारेतेकार्यथाय एकालसमवाय अंगीकारकरीएथी ...तुंनेत्र अजव्यजीव मोक्षेगमनतानथी तेनेउत्तरजे अजव्यनेकालमछे पण स्वभावजव्यनथी तेथीमोक्षनायनही तेमके कालस्वभाव एबेकारणजोइये तेवारे रिपुभुते जव्यजीवमांनो मोक्षजवानोस्वभावछे तोसर्वजव्य केममोक्षजतानथी हवे टक्र ते नियतकेनिश्चयसमकितगुणजागे तेवारमोक्षपामे एटलेकाल स्वभाव निर्य... तेवारे रिपुभुते जे समकितआदिकारणतो श्रेणीकराजानेहता ... तेनेउत्तर जे पूर्वकृतकर्मनणाश्या अथवापुरुषाकार तेउद्यमकरवाने ...रिपुभुते शालीभद्रनुं ना उद्यमकरणीकरी तेनुउत्तरजे तेमनापूर्वकृत ... माटेपांच समवाय तिआकार्यनीसिद्धिथाय तेवारफ रिपुभुते मरुदेवामाताने ... पुरुषाकारउद्यम कर्यो नही तेनेउत्तर जे ... शुक्लध्याननोउद्यमकीधो तेमाटेपाचसमवायमीला मोक्षरूपकार्य सिद्ध

हवे ... जेमरह्याछे तेमदेखे एटले आकाशद्रव्य ... ...छे तेनाप्रदेशमा बीजुद्रव्यकोइनथी लोकाकाशनाप्रदेशमां धर्मा...

अधर्मास्तिकायनो एकेकप्रदेशरह्याछे तथाअनंताजीवना अनंताप्रदेशरह्याछे अनंतापुद्गलपरमाणुरह्याछे कालनोसमय सर्वत्रवर्तेछे.

हवे छद्रव्यनीफरशनाकहेछे धर्मास्तिकायना एक प्रदेशे धर्मास्तिकायना छप्रदेश फरस्याछे तेआवीरीते के चारदिशीनाचार अनेपांचमोनीचे छठोऊपर एछप्रदेशफरस्याछे तथा एकमूलपोतेंप्रदेश एमसातप्रदेशनो संबंधछे अनेधर्मास्तिकायना एकप्रदेशने आकाशद्रव्य तथा अधर्मास्तिकायना सातसातप्रदेश फरशेछे तेएकमूलनाप्रदेशने बीजाद्रव्यनो मूलनोप्रदेशफरशे माटे सातप्रदेशनीफरशनाछे अनेधर्मास्तिकायना एकप्रदेशें जीवपुद्गलना अनंताप्रदेशनी फरसनाछे अनेलोकनेअंतेजे धर्मास्तिकायना प्रदेशछे तेने आकाशनीफरसनातो छएदिशीनीछे अनेएकमूलप्रदेशसुद्धां सातप्रदेशनी फरसनाछे अनेबीजाद्रव्यनी त्रणदिशीनीफरसनाछे एमसर्वद्रव्यनीफरशनाछे अने आकाशथी धर्म अधर्मनीअवगाहना सूक्ष्मछे धर्मअधर्मद्रव्यथीजीवनीअवगाहना सूक्ष्म । जीवथी पुद्गलनी अवगाहना सूक्ष्म छे.

एमछद्रव्यना गुणपर्याय सामान्यस्वजाव ११ छे अनेविशेषस्वजावदशछे तेश्रीकेवली जगवंत ज्ञानथीजाणे दर्शनथीदेखे तेइग्यारसामान्यस्वजावकहेछे १ अस्तिस्वजाव २ नास्तिस्वजाव ३ नित्यस्वजाव ४ अनित्यस्वजाव ५ एकस्वजाव ६ अनेकस्वजाव ७ जेदस्वजाव ८ अजेदस्वजाव ९ जव्यस्वजाव १० अजव्यस्वजाव ११ परमस्वजाव एइग्यारसामान्यजाव सर्वद्रव्यमांछे एसामान्यउपयोग दर्शनगुणथीदेखे हवेदशविशेषस्वजावकहेछे १ चेतनस्वजाव २ अचेतनस्वजाव ३ मूर्तिस्वजाव ४ अमूर्तिस्वजाव ५ एकप्रदेशस्वजाव ६ अनेकप्रदेशस्वजाव ७ शुद्धस्वजाव ८ अशुद्धस्वजाव ९ विजावस्वजाव १० उपचरितस्वजाव एदशविशेषस्वजाव तेकोइकद्रव्यमांकोइकस्वजावछे कोइकद्रव्यमांकोइकस्वजावनथी एज्ञानथीजाणे एटलेसिद्धजगवानलोकालोक सर्व ज्ञानोपयोगथीजाणीरह्याछे दर्शनोपयोगथीदेखीरह्याछे एहवाअनंतगुणीअरूपी सिद्धजगवानछे तेसमान पोतानीआत्मानेजाणे उपादेयकरीध्यावे तेसमकेत जाणवो.

॥ दोहा ॥

अष्टकर्मवनदाहके ॥ जएसिद्धजिनचंद ॥ तासमजोअप्पागणे ॥ वंदेताकोइंद ॥१॥ कर्मरोगऔषधसमी ॥ ग्यानसुधारसवृष्टी ॥ शिवसुखामृतसरोवरी ॥ जयजयसम्यक्दृष्टी ॥ २॥ एहिजसद्गुरुशीखछे ॥ एहिजशिवपुरमाग ॥ लेजोंनिजग्यानादिगुण ॥ करजोपरगुणत्याग ॥ ३ ॥ ग्यानवृक्षसेवोजविक ॥ चारित्रसमकेतमूल ॥ अमरअगमपद फललहो ॥ जिनवरपदवीफूल ॥४॥ संवतसत्तरछिहुत्तरे ॥ मनशुद्धफागुणमास ॥ मोटेकोटमरोटमे ॥ वसतांसुखचोमास ॥ ५ ॥ सुविहितखरतरगछसुधिर ॥ युगवरजिनचं-

दसूर ॥ पुण्यप्रधानप्रधानगुण ॥ पाठकयुगुणेपकूर ॥ ६ ॥ तासशिष्यपाठक प्रवर ॥ तिसारगुणवंत ॥ सकलशास्त्रज्ञायकगुणी ॥ साधुरंगजसवंत ॥ ७ ॥ तास विबुध ॥ जिनमतपरमतजाण ॥ जविकमलप्रतिबोधना ॥ राजसागरगुरुजाण ॥ ग्यानधर्मपाठकप्रवर ॥ शमदमगुणेंअगाह ॥ राजहंसगुरुगुरुसक्ति ॥ ॥ ८ ॥ तासशिष्यआगमरुचि ॥ जैनधर्मकोदास ॥ देवचंदआनंदमें ॥ ॥ १० ॥ आगमसारोद्धारएह ॥ प्राकृतसंस्कृतरूप ॥ ग्रंथकीयोदेवचंदमुनी ॥ मृतरसकूप ॥११॥ कर्योइहांसदायश्रुति ॥ दुर्गदासशुजचित्त ॥ ॥ कीनोग्रंथपवित्त ॥ १२ ॥ धर्ममित्रजिनधर्मरतन ॥ जविजनसमकितवंत ॥ मरपदउल्लसण ॥ ग्रंथकियोगुणवंत ॥ १३ ॥ तत्वग्यानमयग्रंथयह ॥ निजपरसत्तासवलिखे श्रोतालहेप्रबोध ॥ १४ ॥ ताकारणदेवचंद मुनी ॥ ग्रंथ ॥ जणसेगुणसेजेजविक॥लहेशेतेशिवपंथ ॥१५॥ कथकशुद्धश्रोतारुची संयोग ॥ तत्वग्यानश्रद्धासहित ॥ वलीकायनिरोग ॥१६॥ परमागमसुराचजो सोपरमानंद ॥ धर्मरागगुरुधर्मसों ॥ धरजोएसुखकंद ॥ १७ ॥ ग्रंथकीउमनरंगसो तपखफागुणमास ॥ सोमवारअरुतिजतिथि ॥ सफलफलीमनआस ॥ १८ ॥

आआगमसारमा पेज १३७ नी लेन २८ मीमध्ये सादिसांतछे तेआवीरीतेंजे लोकनामध्यजागेआठरुचकप्रदेशथी चउदराजलोकनोअंतआवे तिहांसांत तथा चउदराजलोकनोवेलोप्रदेशमूकी लोकनीआदिलेवी पणअलोकनोअंतनथी माटेसादिअनंतकह्युंछे

तथापेज १४४ नी आठमीलेनमां श्रीजगवतीसूत्रमांसुत्तत्थोखलुपढमो बीर्उ मिसर्उजणिउं ॥ इत्तोतईयणुउंगो नाणुन्नार्उजिणवरेहिं ॥ एवीरी जूदीग्रणप्रतोमां लख्युंहतुंमाटेमेंपण तेमजलख्युंछे पणबीजाघणाठेकाणे सारदीधीछे तिहांतो सुत्तत्थोखलुपढमो बीर्उनिज्जुत्तिमिसर्उजणिउं तइर्उयनिर पसनिहिट्ठोइयणुउंगे ॥ एवोपाठछे तेलखोजणायछे पछेबहुश्रुतकहेतेखरु

॥ इति श्री आगमसारोद्धारग्रंथ समाप्त ॥

॥ श्रीपरमगुरुभ्योनमः ॥

अथश्रीदेवचंद्रजीकृतनयचक्रसारनुंबालावबोधलिख्यते

॥ मंगलाचरण ॥

प्रणम्यपरमब्रह्मशुद्धानंदरसास्पदं ॥ वीरंसिद्धार्थराजेंद्रनंदनंलो
कनंदनं ॥१॥नत्वासुधर्मस्वाम्यादिसंघंसद्वाचकान्वयं॥स्वगुरून्
दीपचंद्राख्यपाठकान्श्रुतपाठकान् ॥ नयचक्रस्यशब्दार्थकथनं
लोकभाषया ॥ क्रियतेबालबोधार्थं सम्यङ्मार्गविशुद्धये ॥ २ ॥

प्रशस्ति

श्रीजिनागमनेविषे १ द्रव्यानुयोग २ चरणकरणानुयोग ३ गणितानुयोग ४ धर्मक-थानुयोग एचारअनुयोगकह्याछे तेमां छद्रव्य अने नवतत्व तेनागुणपर्याय स्वभावपरि-णमनेजाणवुं तेद्रव्यानुयोग एवं पंचास्तिकायनुं स्वरूपकथनरूपछे तेपंचास्तिकायम-ध्येएकआत्मानामेअस्तिकायद्रव्यछे तेआत्माअनंताछे तेनामूलबेभेद छे तेमां एकसि-द्धनिष्पन्न सर्वकर्मावरणदोषरहित संपूर्णकेवलज्ञान केवलदर्शनादिगुणप्रगटरूप अखंड निर्मल अव्याबाधानंदमयी लोकनेअंतेविराजमान स्वरूपभोगी तेसिद्धजीवकहियें ते सिद्धतासर्वेआत्मानो मूलधर्मछे तेसिद्धतानीईहाकरवाने सिद्धभगवंतनो यथार्थसिद्ध-तो ओलखीने निष्पन्नसिद्धनोबहुमानकरवो अनेपोते पोतानीभूले अशुद्धचेतनपणे परिणमतां बांध्या जे ज्ञानावरणादिकर्म तेटालीने पोतानी संपूर्णसिद्धतानी रुचि कर-वी एहीजहितशिक्षाछे.

वलीबीजोभेद संसारीजीवोनोछे तेजेणे आत्मप्रदेशें स्वकर्त्तापणे कर्मपुद्गलनेग्रह्या तेकर्मपुद्गलनोखोलीभावछे तेमिथ्यात्व गुणठाणाथीमांडीने अयोगीकेवली गुणठा-णाना चरमसमयपर्यंत सर्वसंसारीजीवकहियें तेनावलीबेभेदछे एकअयोगी बीजास-योगी तेसयोगीनाबेभेद एकसयोगीकेवली बीजासयोगीछद्मस्थ छद्मस्थनाबेभेद एक-अमोही बीजासमोही समोहीनाबेभेद एकअनुदितमोही बीजाउदितमोही उदित-मोहीनाबेभेद एकसूक्ष्ममोही बीजाबादरमोही बादरमोहीनाबेभेद एकश्रेणीवंत बीजा श्रेणीरहित श्रेणीरहितनाबेभेद एक संयमीविरति बीजाअविरति अविरतीनावलीबे-भेद एकसमकेति बीजामिथ्यात्वी मिथ्यात्विनाबेभेद एकग्रंथिभेदी बीजाग्रंथिअभेदि ग्रंथिअभेदिनाबेभेद एकभव्य बीजाअभव्य तेमां अभव्यजीवोनुं तो दलजएवोहोय जे

श्रुतअभ्यासपणकरे तथा द्रव्यथीपंचमहाव्रतआदरे पणआत्मधर्मनायथार्थ ना पेहेलो गुणठाणो किवारे मूके नही माटे ए जीवो तेसिद्धपद पामवाने तेअभव्यचोयेअनंतेछे

बीजाभव्य तेजेसिद्धपणानेयोग्यछे जेनेकारणयोगमिले पलटणपामे अभव्यथीअनंतगुणाछे तेमध्येकेइकभव्यसामग्रीयोगपामी ग्रंथिभेदकरीने समकित अनेकेटलाएकभव्यतो सामग्रीनेअभावें समकितपामेजनही सामग्गीअभावाउ ववहाररासिअप्पवेसाउ ॥ भव्वावितेअणंता जेसिद्धसुहंनपावंति।

पणतेभव्यजीवोमा योग्यताधर्म छतोछे तेमाटे भव्यकहिये शुद्धयथार्थ आत्मपणेव्यापकरह्यो तेजमारोधर्म अनेजेथीते साधनधर्मवेभेदेंछे एकवायणापुछणादि वंदननमनादि पडिलेहणप्रमार्जादि गप्रवृत्तिते सर्वेद्रव्यथी साधनधर्मकहिये तेभावधर्म प्रगटकरवाने छे द्रव्यतेजेभावनुकारण कारयासेदव इतिआगमवचनात् ॥

अनेजेउपयोगादि पोतानाक्षयोपशमभावें प्रगटयाजे ज्ञानवीर्यादिगुण वीपणायीटालीने शुद्धगुणीजेश्रीअरिहंत सिद्धादिक तेनाशुद्धगुणने अनुयायी अथवाआत्मस्वरूप अनंतगुणपर्यायरूपतेने अनुयायीकरवा तेभावथीसाधनधर्म वो एआत्मानीपजाववानो उपायछे

जिहांलगेंआत्मानुंशुद्धस्वरूप चिदानंदघन तेसाध्यमानयी शायें विप गरल अन्योन्य अनुष्ठान जेकरवु ते संसारहेतुछे माटे आदअद्धायें साधनकरवु एहिजमार्गछे अने एमार्गनीजे प्रतितरुचि ते तेसम्यकग्रंथिभेदकर्योपामियें तेग्रंथिभेदतो त्रणकरणकरेतोजथै तेत्रणकरण तेवारेंसम्यक्दर्शनपामे तेत्रणकरणमा पेहेलुयथाप्रवृत्तिकरण बीजुअपूर्वकरण वृत्तिकरण एकरणसर्व सज्ञीपंचेंद्रीकरे तेमा प्रथमयथा प्रवृत्तिकरणतेभव्य पणकरे कोईकजीवअनंतिवारकरे तेयथाप्रवृत्तिकरणनु स्वरूपलखियेंछेये

सर्वकर्मनी उत्कृष्टस्थितिना बांधनारजीवने संक्लेशघणोछेमाटे रेनही उक्तंचविशेषावश्यके उक्कोसठिनबंधइ भयणाएएसुपुव्वलद्धाए ॥ विन सबंधइजेणपुव्वपडिवन्नो ॥ १ ॥ माटेकर्मनी उत्कृष्टस्थितिनो बांधनारजीव रसामायकनोलाभनपामेअनेजेजीवसातकर्म्मनी जघन्यस्थिति बांधे परीतछेमाटेजेवारेंएककोडाकोडीसागरोपम पल्योपमने असंख्यातमेंभागेंउणी बांधनोहोय तेयथाप्रवृत्तिकरणकरे जेजीवकर्म्मक्षपणारूपशक्तिपाम्योनहतो म्योतेनेयथाप्रवृत्तिकरणकहियें उक्तंचभाष्ये येनअनादिससिद्धप्रकारेण प्रवृत्तकर्म

क्रियते अनेनेतिकरणं जीवपरिणामएवउच्यते अनादिकालात्कर्मक्षपणप्रवृत्तावध्य
ायविशेषो यथाप्रवृत्तिकरणमित्यर्थः

क्षयोपशमीचेतनावीर्य जेसंसारनी असारताजाणे संसार दुःखरूपकरीजाणे तेथी
ग्रहशरीरथीखरे उद्वेगेंउदासीनता परिणामेकरीसातकर्मनीस्थिति अनेककोडाको-
नायोकमा असंख्याताजे सत्तामांहता तेखपावे ने कांइकउणी एककोडाकोडीराखे
यथाप्रवृत्तिकरण आत्माअनंतिवारकरे पणग्रंथिभेदकरीशकेनही एकरण तेगिरिन-
नेविचें आव्युं पाषाणते घंचनाघोलनारूप चालवेकरीने जेमसहेजे सुंहालो थाय
ने कोइकआकारपकडे तेमजन्ममरणादिदुःखनेउद्वेगें अनाभोगथीज भववैरागें
व यथाप्रवृत्तिकरणकरे एहिजजीवकोइकरीतें वैराग्येंविचारेजे भवभ्रमणते दुःखछे
संयोगवियोगादि असारछे पणकांइक ज्ञानानंदादितेसारछे एहवीगवेषणाकरनारो
व तेयथाप्रवृत्तिकरणकरीने अपूर्वकरणकरे इहांकोइपुछे जेभव्यनेतो पलटण यो-
ताछे पण अभव्यजीवकेमकरे तेनुंउत्तर जेतीर्थंकरभक्तिमांजे देवतानीमहिमा त
लोकसन्मानादिकदेखीने पुण्यनीवांछायें देवत्वराज्यादिकलाभइछायें इग्यार अंग
ावाह्यपंचमहाव्रतादिपामे पणतेनेसम्यक्तनहोय जेफुलाभिलापीछे तेनेगुणस्पर्श-
ाय उक्तंचमहाभाष्ये ॥ अर्हदादिविभूतिमतिशयवतींदृष्ट्वाधर्मादेवंविधसत्कारोदेव-
राज्यादयःप्राप्यंते इत्येवंसमुत्पन्नबुद्धेरभव्यस्यापिदेवनरेंद्रादिपदेहया निर्वाणश्रद्धा-
हृत कष्टानुष्ठानं किंचिदंगीकुर्वतोज्ञानरूपस्यश्रुतसामायकमात्रलाभेपि सम्यक्त्वादि-
भःश्रुतस्यनभवत्येवेति ॥ एरीतेंधारवुं.

तथाअपूर्वकरण अनेअनिवृत्तिकरणनो अधिकार जेमआगमसारमां लख्योछे तेज
ाणे इहांपणजाणवो इमत्रणकरणकरीने उपशम अथवा क्षयोपशम अथवाक्षायक
म्यक्तजेपाम्यो अने आत्मप्रदेशें वर्त्तमाने सम्यक्दर्शनगुणनो रोधक एहवोमिथ्या-
मोह प्रकृतिनाविपाकोदयने टलवेकरीने जेसम्यक्दर्शनगुणनी प्रवृत्तिथाय तेथीय-
र्थपणे निर्द्धारसहितजाणपणोप्रवर्त्ततेजीवनेद्रव्यानुयोगें तत्वज्ञानप्रगटे तेथीजेआ-
गुणप्रगटे तेआत्मगुणरक्षणायेंजप्रवर्त्ते एहवीस्वरूपानुयायी आत्मगुणनीप्रवृत्ति तेह-
धर्मकरीसद्दहे तेमाटेस्याद्वादपरिणामी पंचास्तिकायछे तेस्याद्वादरूपज्ञान तेनयज्ञा-
थाय माटेनयसहितज्ञानकरवुं तेनयज्ञानअतीदुर्लभछे अनेनयनीअनंतताछे उक्तंच
ावइयावयणपहा तावइयाचेवहुंतिनयवाया ॥ तेजे पूर्वापरसापेक्षनही ते कुनयकहियें
ने सर्वसापेक्षपणेवर्त्ते तेसुनयकहियें तेमूलसात नयछेतेनुंस्वरूपअल्पमात्रलखियेंछेयें.

नयतेज्ञानगुणनुं प्रवर्त्तनछे जेकारणेएकद्रव्यमध्येअनंताधर्मछे तेएकसमयें श्रुतोपयो-
गमां आवेनही स्यामाटेजेश्रुतज्ञाननो उपयोग असंख्यातसमयेंथाय अनेवस्तुमध्येतोअ-

नंताधर्म एकसमये परिणमतापामियें तेत्रारेंश्रुतज्ञान सत्ययायनहीं तेमाटेनयेंथी तथायद्यपिकेवलीनोउपयोग एकसमयीठे तेमाटेजाणवामा नयनुंकार्यकेवलीने पणवचनेकहेतां केवलीनेपणनयेंकरीकहेवुपडेकारणकेवचन तोक्रमेंगोचरठे मेंअनताएकसमयकालेंठे तेमाटेनयेंकरीकहे वलीजिनमत

जीवादिद्रव्यमाजेगुणठे तेअनतस्वजातीठे गुणनीउत्ति तेनुपरिणमन तेमांजेसमयेकारणता तेसमयेजकार्यता इत्यादि अनेकरूपरिणतिसहितठे रीतें सर्वनु भिन्नाभिन्नपणे ज्ञानथाय तेनयथीथाय माटेसमकितरुचिजीवने तज्ञानकरवु जे एटलाधर्म सर्वद्रव्यमध्ये रह्याठे माटे प्रथमतो गुण पर्याय ओलखावेठे एपीठिकाकही हवेमूलसूत्रनाअर्थनु व्याख्यानकरेठे

श्रीवर्द्धमानमानम्य स्वपरानुग्रहायच ॥ कि
यतेतत्वबोधार्थ पदार्थानुगमोमया ॥ १ ॥

अर्थ ॥ श्रीके०गुणनीशोजा अतिशयगोजायेंविराजमान एहवाश्रीवर्द्धमान हृत शासननानायक तेप्रतेंअत्यतपणे नमीने नमस्कारकरीने पोतानोमानमूकी योगसमावी गुणीनेअनुजायीचेतनानुकरवु तेनेनमवुकहियें तेपण परजेशिष्यअथवाश्रोतादिकने अनुग्रहके०उपकारने सारु तत्वके० बोधके०जाणवानेअर्थें पदार्थके०धर्मास्तिकायादिक ठमूलद्रव्य तेनो अनुगमके० परुपणो ते क्रियतेके०करियेंठेयें

जगतमामतातरीठ द्रव्यनेअनेकपणेकहेठे तिहानैयायिक सोलपदार्थकहे पिक सातपदार्थकहेठे वेदातिसारय एकपदार्थकहेठे मीमासक पाचपदार्थकहे णतेसर्वमिथ्याठे तेणेपदार्थनु स्वरूपजाण्युनथी अनेश्रीअरिहत सर्वज्ञप्रत्यक्ष एकजीवअनेपाचअजीव एरीतेंठपदार्थकहेठे इहाकोइपुठे जेनव तेकेम तेनेउत्तर जे एकजीव बीजोअजीव एबेपदार्थतोमूलठे अनेशेप साततत्व वअजीवनो साधकबाधक शुद्धअशुद्ध परिणतिनीअवस्था भिन्नओलखाववानेस्वरू

श्लोक ॥ द्रव्याणाचगुणानाचपर्यायाणाचलक्षणं ॥
निक्षेपनयसयुक्ततत्वभेदैरलकृतम् ॥ तत्रतत्वभेदप
र्यायैर्व्याख्यातस्यजीवादेर्वस्तुनोभाव स्वरूपतत्व

अर्थ ॥ द्रव्यना गुणना तथा पर्यायना लक्षण जेओलखाण तेनिक्षेपेंकरी करीयुक्ततत्वनाभेदेंसहितकहुं तत्रके०तिहाजिनागमनेविषे तत्वजेवस्तुस्वरूप नाजूदाजूदाभेदपर्याय तेमारह्याजेधर्म एटलाप्रकारें व्याख्याके०अर्थनुकहेवु

-ार्थ व्याख्यानथाय तिहांतत्वनुंलक्षणकहेछे व्याख्यानकरवायोग्य जे जीवादिक -तु तेनोमूलधर्म तेवस्तुनुंस्वरूपतत्वकहियें जेमकंचननुंस्वरूप पीत गुरुस्निग्धतादि -णएनुंकार्यआजरणादिक अने एहनुंफलते एहथीअनेकजोग्यवस्तुआवे एमजीवनुं -रूप ज्ञानदर्शनचारित्रादिअनंतगुण तथाजीवनुंकार्यसर्वजावनुंजाणवुं प्रमुखएरीतें -भेदपणेंरह्याजेधर्म तेसर्ववस्तुनुंतत्वकहियें.

येनसर्वत्राविरोधेनयथार्थतयाव्याप्यव्यापकजावेनलक्ष्यतेव
स्तुस्वरूपंतल्लक्षणं तत्रद्रव्यज्ञेदायथाजीवाअनंताःकार्यज्ञेदे
नजावज्ञेदाजवंति क्षेत्रकालजावज्ञेदानामेकसमुदायित्वंद्रव्यत्वं

अर्थ ॥ हवेलक्षणकहेछे जेगुणेकरीसर्वद्रव्य स्वजातिमां अविरोधिपणे यथार्थपणे अतिव्याप्ति १ अव्याप्ति असंजवादिदोषरहित वस्तुजेव्याप्य तेहनेविषे व्यापकपणे खेयें जाणियें तेनेवस्तुनुंलक्षणकहियें तेलक्षणबेप्रकारनुंछे एकलिंगबाह्य आकाररूप ने बीजुं वस्तुमांरह्योजे स्वरूपते एबेन्नेदछे तेमांलिंगथीतो गायनुंलक्षण जेशास्न- तपणो तेबाह्यआकाररूपलक्षणछे एबाह्यलक्षणेजेउलखाणकरे तेबालचालछे अने ास्तुनेधर्मेंउलखाय तेस्वरूपलक्षणकहियें जेमचेतनालक्षणतेजीव तथाचेतनारहित अजीव इत्यादिकलक्षणें लक्षणस्वरूपजाणवो एमअनेकरीतेंजाणीलेवो न्नेदाश्च हवे ादनुंस्वरूपकहेछे वक्तव्यवस्त्वंशाः के० जेवस्तुकथनकरताहोय तेहना चारन्नेदछे तत्र व्यन्नेदाके०तिहांद्रव्यनान्नेदमूललक्षणे सरिखापणपिंरूपणेजूदाछे ते द्रव्यथीन्नेदक- यें यथाके०जेम सर्वजीवजीवत्वसामान्ये सरिखाछे पणजीवजीवप्रते पोतानागुणप- यनो पिंरूपणोजूदोछे कोइनुंकोइमांजिलिजातोनथी तेमाटे जीवअनंताद्रव्यन्निन्नपणे नजअजीवअनंताद्रव्य जिन्नपणे एमपुजलपरमाणुपण जमतारूपपणेसरिखा पणसर्व माणुआजूदाद्रव्यछे जेकालेंपूरियें तेकालें एटलानेएटलाछे कोइकालेंघटेनही ते- नवोनवेनही ए सर्वद्रव्यथी न्नेदजाणवो.

हवे क्षेत्रांशाः क्षेत्रथीन्नेदते जेविस्तरेतोजूदोक्षेत्रअवगाहीनेरहे जेमजीवादि द्रव्य- प्रदेश अवगाहनाधर्मेंजूदाछे पणद्रव्यथीजूदापडेनही संलग्नपणेरहे गुणपर्यायसर्वप्र- शें अनंताछे तेगुणपर्याय एकप्रदेशमूकीबीजाप्रदेशमांजायनही पर्यायविजागएकनो नेप्रदेशनो अवगाहसरिखोछे पणतेपर्यायअनंताजिन्नछे अनेजेअनंतापर्यायमलीने ए- कार्यकरेतेकार्यनेगुणकहेछे श्रीवीतरागसर्वज्ञएमकहेछे एक्षेत्रथीन्नेदछे.

एकवस्तुमां उत्पादव्ययरूप पर्यायपलटवानुंमान तेसमयकहियें जेटलोउत्पादव्य- तयाअगुरुलघुनीहानिवृद्धिने परिणमतानुंमान तेसमयकहियें अनेतथीबीजीपरिण-

मनथइ तेवीजोसमय एमजेअनंतिअतीतप्रवृत्तियइ तेवर्त्तमानप्रवृत्तिनीपरपरा
णवी अनेआगामिकथासेते कार्यरूपेयोग्यतारूपजाणवी अतीतकालनो
कालनो कोइढिगलोनथीअनेपिंडरूप पचास्तिकायनुं
हियें तेनेसमयभेदते त्रीजोकालरूपभेदकहियें ते जेपर्याय भिन्न भिन्नकार्यकरे
भिन्नपणोछे तेमाटेचोथोभावथीभेदकहियें हवेद्रव्यनुलक्षणकहेछे तेदोत्रकाल
नाजेभेद तेसर्वनुएकठामिलिनेपिंडपणे एकाधारपणे समुदायीपणेरहेवु

तत्रैकस्मिन्द्रव्येप्रतिप्रदेशे स्वस्वएककार्यकरणसामर्थ्यरू
पाअनताअविभागरूपपर्यायास्तेषासमुदायोगुणः ॥ भिन्न
कार्यकरणसामर्थ्यरूपाभिन्नगुणस्यपर्याया. एवंगुणाअप्य
नता प्रतिगुणंप्रतिदेशपर्यायाअविभागरूपा अनतास्तु
ल्या प्रायीइतितेचास्तिरूपा. प्रतिवस्तुनिअनतास्ततोनत
गुणा. सामर्थ्यपर्याया.

अर्थ ॥ हवेगुणनुलक्षणकहेछे तिहां गुणानामासउदव इतिवचनात् .
स्वस्वके० पोतापोतानो एकजाणवाप्रमुख कार्यकरवानु जेनेसामर्थ्यछे एवा
जेनो अविभागके० बीजोछेदनथाय एवाविभागनो जेसमुदाय तेनेगुणकहियें
दोरडो सो तातणानोकर्यो तेसोतातणा लोअविभागपणे छतापर्यायछे
कपर्याय अनेकवस्तुवधाय अने अनेकनेआधारथाय अनेकवेटणथाय
पर्यायकहियें छतिरूपजेपर्याय तेतोवस्तुरूपछे अने सामर्थ्यपर्यायतो
रूपछे तेछतिपर्यायनो समुदाय तेनेगुणकहियें छतिपर्यायनाअविभाग
मयस्यानमा कह्योजछे अने भिन्नके० जुदोकार्य करवानु जेमासामर्थ्यहोय
भागरूप आत्माप्रदेशे वर्तता पर्याय तेभिन्नके० जुदागुणना पर्यायजाणवा जेम
विभाग परिणामालननरूपकार्य सामर्थ्यरूप तेनोसमुदाय तेवीर्यगुण एमज
षसामर्थ्यछे जेमा एहनाजे अविभागपर्यायछे तेनो समुदायतेज्ञानगुण तेवागुण
व्यनेविषेअनताछेतेएकगुणना प्रदेशें प्रदेशे पर्यायअविभागरूप अनताछे
शे सरिखाछे तयापचास्तिकायमध्ये एकअगुरुलघु पर्यायनोभेद तरतमछे
माणुमध्ये कालभेदे अथनाद्रव्यभेदें वर्णादिकनापर्यायनो तरतमयोग ते
योछे तेपर्यायअस्तिरूपछे सदाछताछे कोइपर्यायद्रव्यांतरमा जातोनथी प्रदेशा
घर जातो नथी तेछतिपर्यायथी सामर्थ्यपर्याय अनतगुणाजाणना तेकार्यरूपछे

ात्माण्ये यावंतोज्ञेयास्तावंतएव ज्ञानपर्यायाः तेचअस्तिरूपाः प्रतिवस्तुनिअनंतात-
यनंतगुणाः सामर्थ्यपर्यायाः

तत्रद्रव्यलक्षणं उत्पादव्ययध्रुवयुक्तं सत्लक्षणंद्रव्यं ए
तत्द्रव्यास्तिक पर्यायास्तिक उजयनयापेक्षयालक्षणं ॥
गुणपर्यायवत्द्रव्यं एततृपर्यायनयापेक्षया अर्थक्रियाका
रिद्रव्यं एतत्लक्षणंस्वस्वशक्तिधर्मापेक्षया धर्मास्तिका
य अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय
जीवास्तिकाय कालश्चेति

अर्थ ॥ हवेवलीद्रव्यनुंमुख्यलक्षणकहेछे उत्पादके० नवापर्यायनुंउपजवुं व्ययके०
पर्यायनुंविणसवुं अनेध्रुवके० नित्यपणो एत्रीनपरिणमनपणें सर्वदाजेपरिणमे तेनेद्रव्य
हियें एटलेतेहिजगुणकारणकार्य वेधर्मसमकालेंपरिणमेछे कारण विना कार्यथायज
ो अनेकार्यकरेनही तेकारणपणसमजवुंनही जेउपादानकारण तेहिजकार्यथायछे ते
रणतानोव्यय अनेकार्यतानुंउपजवुं समकालें थायछे वली कारणपणो समयेंनवो-
ोछे अनेकार्यपणोपण समयेंसमयेंनवोनवोछे ते माटेकारणपणानोपणउत्पादव्ययछे
ेकार्यपणानोपण उत्पादव्ययछे अनेगुणपिंडपणें द्रव्याधारपणेध्रुवछे एवीपरिणतियें
ाणमे ते सत्के० ठतिवंतद्रव्यजाणवो एटले एलक्षणते द्रव्यास्तिकनय तथापर्या-
स्तिकनय एवेन्नेलालेश्नेकह्योछे जे ध्रुवपणो ते द्रव्यास्तिकधर्मग्रह्योछे अनेउत्पादव्य-
तेपर्यायास्तिकधर्मग्रह्योछे तेमाटेएलक्षणसंपूर्णछे एतत्वार्थकारकनुंवाक्यछे.

तथावलीबीजुंलक्षण तत्वार्थमांजकह्युंछे एकद्रव्यमां वह्वामांस्वकार्यगुणेवर्त्तमानतेगुण
ने पर्यायते गुणनुंकारणजूत द्रव्यनुंजिन्नजिन्न कार्यपणे परिणमे द्रव्यगुण एवेहुने
ाश्रयीपणेपरिणमन तेवेछेजेमां तेद्रव्यकहियें एटलेगुण तथापर्यायवंत तेद्रव्यक-
यें तेद्रव्यएकनावेखंडथायजनही एमूलद्रव्यनुंलक्षणछे अनेजेघणापरमाणुना खंधने
द्रव्यमान्योछे तेउपचारेंजाणवो जेनीपरिणतित्रणकालमध्येतेरूपनेत्यजेनही तेद्रव्यपो-
नीमूल जातत्यजेनही जेनेअगुरुलघुनुं षड्गुण हानिवृद्धिरूपलक्षण चक्र एकठोफिरे
एक द्रव्य अनेजेने जूदोफिरे ते जिन्नद्रव्यकहियें एटले धर्म अधर्मआकाश ए एक एक
द्रव्यछे अनेजीव असंख्यातप्रदेशरूप एकअखंडद्रव्यछे एवा जीवसर्वलोकमध्येअनंता
तेजीवसिद्धमांवधेछे अनेसंसारीपणामांओछाथायछे पण सर्वसंख्यामां घटता वधता
थी तथापुद्गलपरमाणु एकआकाशप्रदेशप्रमाण एकद्रव्यछे तेवापरमाणु सर्वजीवथी
या सर्वजीवनाप्रदेशथी पण अनंतगुणाद्रव्यछे स्कंधपणे अथवा छुटा परमाणुपणे

वधे तथा घटीजाय पण परमाणुपुद्गलपणे जेमंन्याछे तेमांवधताघटता नथी यनयथी लक्षण कह्यु

हवेव्यवहारनयथीलक्षणकहेछे अर्थजे द्रव्यतेनीजे क्रियाके... कहिये तेमांजीवनीशुद्धक्रिया ते ... नविज्ञानगनीप्रवृत्ति एमसर्वगुणनुजेकार्य जेमज्ञानगुणनुकार्यविशेषधर्मनुजाणवु... र्शनगुणनुकार्य सकलसामान्यस्वभावनोबोध अने चारित्रगुणनुकार्य ... त्यादि अनेधर्मास्तिकायनुकार्य गतिगुणेपरिणम्याजे जीवतथापुद्गल तेने हकारीथाय एमसर्वद्रव्यनीसमजणजोइलेवी एलक्षण सर्वद्रव्यनाजेगुण छे... कार्यानुयायीप्रवृत्तितेने अर्थक्रियाकहेवी हवेतेछद्रव्यछे १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मा... ३ आकाशास्तिकाय ४ पुद्गलास्तिकाय ५ जीवास्तिकाय ६ काल ... वधारेपदार्थ कोइनथी जे नैयायिकादिक सोलपदार्थकहेछे तेमृषाछे कारणके ते ने भिन्नपदार्थकहेछे तेतोज्ञानछे तेआत्माना प्रमेयनोगुणछे तेगुणीजेआत्मा छे तेने भिन्नपदार्थ केमकहियें बीजाप्रयोजन सिद्धांतादिक तेसर्वजीवद्रव्य... तिछे ते माटे भिन्नपदार्थकहेवायनही.

तथावैशेषिक १ द्रव्य २ गुण ३ कर्म ४ सामान्य ५ विशेष ६ समवाय ७ एसातपदार्थकहेछे पणतेनेकहियें जेगुणतेतो द्रव्यमांजरह्याछे तो ... कहेवु तेकेमघटे अने कर्मतेद्रव्यनुकार्यछे तथा सामान्य अने ... परिणमनछे वली समवायते कारणतारूपद्रव्यनु प्रवर्त्तनछे अने अभावतो कहेवाय ते अछताने पदार्थकहेवुघटतुनथी तेमाटेवैशेषिकमतपणमृषाछे ... कहेछे १ पृथ्वी २ आप ३ तेज ४ वायु ५ आकाश ६ काल ७ दिशि ८ आत्मा ९ ... एनवपदार्थकहेछे तेनेउत्तर जे पृथ्वी आप तेज वायुएतोआत्माछे ... जेदें नामपड्याछे अनेदिशितोआकाशमाज मिलीगयीछे तथा मन ते ... पणाना उपयोगप्रवर्तनानो द्वारछे तेनेभिन्नद्रव्यकेमकहियें

वलीवेदांतिसारय तेएकआत्माअद्वैतपणे एकजद्रव्यमानेछे तेनीपणभूलछे जेशरीरछे तेतोरूपीछे अने पुद्गलद्रव्यनाखधछे तेकेमएकथाय तथा आत्मा अने शरीरनो आधार ते आकाशछे तेसर्वप्रसिद्धछे तेजूदोमान्याविना केमचाले द्वैतपणो रह्यो नही

अनेबौद्धदर्शन तेसमयसमय नवानवापणे १ आकाश २ काल ३ जीव ४ पुद्गल चारद्रव्यमानेछे तेनेपुछीयें जेजीवपुद्गलएकजक्षेत्रे केमरहेतानथी ... मेछे माटेतेना अपेक्षाकारणरूप १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकायएबेद्रव्यपण ...

ोइये तथाकेटलाक संसारस्थितिनोकर्त्ता एकपरमेश्वरनेमानेछे तेपण मृषाछे जे
ालरागद्वेषरहित एवो परमेश्वर तेपरनासुखदुःखनो कर्त्ताकेमथाय वली कोइक
ं चलगामेछे तेइहातो अधूरानेछे पूरानेकेमहोय तथा केटलाक परमेश्वरनी लीला कहे
- लीलातो अजाण अधूरो तथा जेनेपोतानो आनंद पोतापासेनहोय तेकरे पणजे संपूर्ण
ानंदघन तेने लीला होयजनही धर्माधर्मोविनानांगंविनांगेनमुखंकुतः ॥ मुखंविना-
,त्तत्वंतच्छास्तारः परेकथं १ अनेमीमांसादिक पांचभूतकहेछे तेमांपण चारभूततो
ापुद्गलना संबंधेउपनाछेअनेआकाशतेलोकालोकभिन्नद्रव्यछे.

तत्रपंचानांप्रदेशपिंडत्वात् अस्तिकायत्वं कालस्यप्रदेशाभा
वात् अस्तिकायतानास्ति तत्रकालउपचारतंवद्रव्यंनवस्तुवृत्त्या ॥

एरीतेअसत्यपरूपणानुंनिराकरणकरी आगमनीसाखे कार्यादिकनेअनुमाने द्रव्यछ
छे माटेतेहिजमानवा तेमां पांचद्रव्य सप्रदेशीछे तेप्रदेशनापिंडरूपणामाटे अस्तिका-
णो पांचद्रव्यनेछे अने छहोकालद्रव्य तेनेप्रदेशनथी तेमाटे अस्तिकायतानथी ति
ालते मुख्यवृत्तियेंद्रव्यनथी उपचारथी द्रव्यकहेवायछे जेमवस्तुगते धर्मास्तिकाया-
ि द्रव्यछे तेमकालद्रव्यनथी जोएककालने पिंडरूपद्रव्यमानियेंतो एनो मानकिहांछे
मनुष्यक्षेत्रमांकालद्रव्यमानियेंतो बाहिरनाक्षेत्रमां नवपूर्णादिक तथाउत्पादव्यय
ाकरेछे अनेजोचौदराजलोकमां व्यापीमानियेंतो असंख्यातप्रदेश मानवा जोइयें
ेप्रदेशमानवेकरी अस्तिकायथाय अनेजोरेणुक असंख्यातामानियें तोलोकप्रदेश
ाण रेणुकथाय तेवारें असंख्याताकालद्रव्यथाय तेतोअनंतद्रव्यमान्योछे माटेएका-
। पंचास्तिकायना वर्त्तनारूपपर्यायने आरोपेंद्रव्यमानियें केमके अस्तिकायतानथी
ेसर्वेमांवर्त्तनाकरे एपक्षसत्यछे जे आगमनेविषे ठाणांगसूत्रनाआलावामांछे किमइंते
ालसमयेतिवुच्चत्ति गोयमा जीवाचेव अजीवाचेव एटलेकाल ते जीवतथाअजीवनो
ामानपर्यायछे तेनाउत्पादव्ययरूप वर्त्तनानेकालकह्योछे ते कालने अजीवद्रव्यमांगण्यो
ोआशयएछे जेजीववर्त्तनाथीअजीववर्त्तनाअनंतगुणीछे तेवहुलतामाटे कालने अजी-
विष्योछे केमके कालनीवर्त्तना अजीवऊपर अनंतिछे अने जीवऊपरतेथीथोडीछे माटे.
तथा विशेषावश्यकभाष्यमध्ये नपश्यतिक्षेत्रकालावसोतयोरमूर्त्तत्वात् अवधेश्चमूर्त्ति
ायत्वात् वर्त्तनारूपंतुकालंपश्यति द्रव्यपर्यायत्वात्तस्येति तथा वाचीसहजारीमध्ये
ा कालस्यवर्त्तनादिरूपत्वात् पर्यायत्वात् द्रव्योपक्रमःउपचारात् तथाभगवत्यांगे १३
माशतकमध्ये इहांपुद्गलवर्त्तनानीअपेक्षायें कालनेरूपीगवेष्योछे.

तत्रगतिपरिणतानां जीवपुद्गलानां गत्युपष्टंभहेतुधर्मा
स्तिकायः सचासंख्येयप्रदेशलोकप्रदेशपरिमाणः

अर्थ ॥ हवेपचास्तिकायनु भिन्नभिन्नलक्षणकहेछे जे॰ ... र्म ... वतथापुद्गलतेनेगतिनाउठजानोहेतु तेधर्मास्तिकायद्रव्यकहियें तेधर्मास्तिअ॰ रयाता प्रदेशपरिमाणछे लोकमांव्यापिछे लोकमानछे लोकनाएकएकप्रदेशेधर्मा यनोएकएकप्रदेश तेअनतसंबधीपणेछे एधर्मादित्रणद्रव्य अचल अवस्थितअनित्य

स्थितिपरिणतानां जीवपुद्गलानां स्थित्युपष्टम्भहेतु॰ अधर्मास्तिकाय सचासख्येयप्रदेशलोकपरिमाण

अर्थ ॥ स्थितिपणेपरिणम्या जेजीव तथापुद्गल तेने स्थितिना उठजानोहेतु॰ धर्मास्तिकाय द्रव्यकहियें तेपणलोकपरिमाणअसख्यप्रदेशीछे

सर्वद्रव्याणांआधारभूतः अवगाहकस्वभावाना जीवपुद्गलाना अवगाहोपष्टम्भक॰ आकाशास्तिकाय सचानतप्रदेशः लोकालोकपरिमाणः यत्रजीवादयोवर्ततेसलोक असंख्यप्रदेशप्रमाण ततःपरमलोक केवलाकाशप्रदेशव्यूहरूप सचानंतप्रदेशप्रमाण

अर्थ ॥ सर्वद्रव्यने आधारभूत अवगाहस्वभावी जे जीवतथापुद्गलने नोउठजानोहेतु तेआकाशास्तिकाय द्रव्यकहियें तेनाप्रदेश अनताछे लोक॰ लोकरूपछे तेमाजेक्षेत्रेजीव तथा पुद्गल तथा धर्मास्तिकायअधर्मास्तिकायछे ते लोककहियेंअने केवल एकलोकमात्र आकाशजजिहाछे तेनेअलोककहियें ... तेजीवादिद्रव्यसहित अने जीवादिकद्रव्य जिहानथी तेने अलोककहियें ते॰ कना प्रदेशअनताछे अवगाहकधर्मे सर्वद्रव्य एमासमायछे

कारणमेवतदन्त्य सूक्ष्मोनित्यश्चभवतिपरमाणु ॥ एकरसवर्णगंधोद्विस्पर्श कार्यलिंगीच ॥ पूरणगलनस्वभाव पुद्गलास्तिकाय सचपरमाणुरूपः तेचलोके अनता एकरूपा परमाणव अनंता द्व्यणुकाअप्यनता त्र्यणुकाअप्यनता एवसख्याताणुकास्कधाअप्यनता असख्याताणुकस्कधाअप्यनता एकैकस्मिन्आकाशप्रदेशे एवसर्वलोकेपि ज्ञेय एवचत्वारोस्तिकाया अचेतना

अर्थ ॥ हवेपुद्गलद्रव्यनुं स्वरूपलखियेंछेयें जेपूरणकेंपूरायें वरणादिगुणेकरी गली-
य गलिजाय वरणादिगुणघटिजाय एवोंजेमांस्वभावछे तेपुद्गलास्तिकायकहियें तेमू-
द्रव्यपरमाणुरूपछे तेपरमाणुनुंलक्षणकहेछे द्व्यणुकादिक जेटलास्कंधछे तेनसर्वेनुं अ-
तकें०मूलकारणपरमाणुछे एटलेस्कंधनुं परमाणुकारणछे पणएपरमाणुनु कारण
कनथी कोइनुंनीपजाव्योथयोनथी अनेकोइनेमिलवेपणथयोनथी सूक्ष्मछे एकआ-
शप्रदेशनी अवगाहनातुल्य एकपरमाणुछे नोपणते एकआकाशप्रदेशमां अनंतपर-
णुसमायछे पणपरमाणुमध्ये बीजुंद्रव्यकोइसमायनहीं माटे परमाणु द्रव्य सूक्ष्मछे
नित्य छे जेटलुं परमाणुद्रव्यछे तेस्कंधादिक अनेकपणेपरिणमे पणपरमाणुद्रव्य
विणसीजायनहीं एवुंपरमाणुद्रव्यछे तेएकपरमाणुमां एकरस होय एकवर्णहोय
गंधहोय अनेलुखोचिकणोटाढोउन्हो एचारफरसमाहेला गमे ते बेफरसहोय एवुं
परमाणुद्रव्यछे छद्मं कोइपुछेजे तेपरमाणुदेखातोनथी तोकेवीरीतेमनाय तेनेउत्तर
घटपटशरीरादिककार्यदेखायछे ग्रहवायछे तेरूपीछेतो एहनासंबंधनुंकारण परमाणु
क्ष्मछे माटे इंद्रियज्ञाने ग्रहेवातोनथी परंतुरूपीछे केमके अरूपीथीरूपीकार्यथायनहीं
माटेज परमाणुरूपीछे तेथीएस्कंधपणरूपीथयाछे अनेआकाशप्रदेश अरूपीछे तोतेनो
नंतप्रदेशीस्कंधपणअरूपीछे एमधारवु तेपरमाणुना द्व्यणुकादिकस्कंध अनंताछे त.
छुटापरमाणु तेपणअनंताछे तेवलीस्कंधमां मिलेछे तोबीजास्कंधमांहेथी छुटाथायछे
स्कंधविखरीजाय ने परमाणुथाय तेनी वर्गणा अठयावीसप्रकारनीछे तेअठयावीस
दकम्मपयडीथीजाणवा एमएकलापरमाणु तेपणअनंता तथावेमिलीनेस्कंधपाम्यातेवा
धपण अनंता एमजसंख्याताणुकनास्कंध पणअनंता तेमजअसंख्यात परमाणुमिलिस्कं-
थाय तेपणअनंता तथा अनंतपरमाणु मल्यास्कंधथाय तेवा स्कंध पणअनंता तेए
तीनास्कंधतेएकआकाश प्रदेश अवगाहे आकाशांशअवगाहे एमअसंख्याताप्रदेश
वगाहेछे पणएकवर्गणानी अवगाहना अंगुलनेअसंख्यातमें भागेअवगाहे वधतिअ-
गाहेनहीं अनेअनंतिवर्गणामिले अंगुल हाथ गाउ योजनादिकने माने अवगाहना
य एम ए १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय ४ पुद्गलास्तिकाय
चारेद्रव्यअचेतनछे अजीवछे जाणपणारहितछे.

चेतनालक्षणोजीवः चेतनाचज्ञानदर्शनोपयोगी अनंतप
र्यायपरिणामिक कर्तृत्वभोक्तृत्वादिलक्षणोजीवास्तिकायः

अर्थ ॥ हवेजीवद्रव्यनुंस्वरूपकहेछे चेतनाजे बोधशक्तिछे लक्षण जेनुं तेजीवकहियें
पोतानीपरिणमन तथा परनीपरिणमन सर्वनेजाणे तेजीव तयासर्वद्रव्य तेअनंता

सामान्यस्वजाव अनेअनताविशेषस्वजाववतछे तेमासर्वद्रव्यनाअनता वबोधक तेज्ञानगुणकहियें तथासामान्यविशेष स्वजाववतवस्तुनेनिप जे जावनु अवबोधक तेदर्शनगुणकहियें तेज्ञानदर्शनोपयोगी जे स्वपर कर्त्ता जोक्तादिक अनतिशक्तिनुपात्र तेजीवजाणवो उक्तंच नाणचदसणचेव, चतवोतहा ॥ वीरीयउवउगोय, एवंजीवस्सलरकण ॥ १ ॥

चेतनालक्षण ज्ञानदर्शनचारित्रसुखवीर्यादिक अनतगुणनुपात्र स्वरूप थाअनवछिन्नजे स्वावस्थाप्रगटी तेनोजोक्ता अनतास्वगुणनीजे स्वस्वकार्यशक्ति कर्त्ता जोक्ता परजावनोअकर्त्ताअजोक्ता स्वक्षेत्रव्यापी अनतिआत्मसत्तानो व्यापक रमणकरनारो तेनेजीवजाणवो

पचास्तिकायानांपरत्वापरत्वेनवपुराणादिलिंगव्यक्तवृत्तिव र्त्तनारूपपर्याय काल अस्यचाप्रदेशिकत्वेनअस्तिकायत्वा जाव पंचास्तिकायातर्जूतपर्यायरूपतेवास्य एतेपचास्तिका याः तत्रधर्माधर्मालोकप्रमाणासंख्येयप्रदेशिको लोकप्रमा णप्रदेशएवएकजीव एतेजीवाअप्यनंता आकाशेहि अनंतप्रदेशप्रमाण पुजलपरमाणुः स्वयंएकोप्यनेकप्र देशवधहेतुजूताद्रव्ययुक्तत्वात् अस्तिकाय कालस्य उपचारेणजिन्नद्रव्यतोक्ता साचव्यवहारनयापेक्ष्याआ दित्यमतिपरिच्छेदपरिमाण काल समयक्षेत्रेएवएपव्यव हारकाल समयावलिकादिरूपइति ॥

अर्थ ॥ हवेकालद्रव्यनुलक्षणकहेछे जेपचास्तिकायनेपरत्वे अपरत्वे एलिंगे पुजलस्थने नवपुराणपणे व्यक्तके०प्रगटछे वृत्तिके०प्रवृत्तिलेनेवर्त्तनाकहियें पर्यायतेनेकालकहियें एनेप्रदेशनथीतेमाटे अस्तिकायपणोनथी एकालते पचा स्तिपेअंतर्जूतपर्यायपरिणमनछे जातेधर्मास्तिकायादिकनोपर्यायछे एम कह्योछे तिहांधर्मास्तिकाय एकद्रव्यछे असख्यातप्रदेशीछे एमअधर्मास्तिकायपण एकद्रव्यछे लोकप्रमाण असख्यातप्रदेशीछे अनेएकजीवद्रव्य पण लोकप्रमाण असख्यातप्रदेशीछे पण स्वअवगाहना प्रमाणव्यापकछे ते नताछे अकृतसदाछना अग्रूकद्रव्यछे सत्चिदानदमयीछे पणपरपरिणामीथने पुजल पुजलजोगीथवे प्रतिसमये नवाकर्मबांधवे ससारीथयाछे तेहिज जेसारीर

जोगीथाय तेवारेंसर्वकर्मरहितथयी परमज्ञानमयी परमदर्शनमयी परमानंदमयी सि-
द्ध अनाहारी अशरीरी अयोगी अलेशी अनाकारी एकांतिक आत्यंतिक निःप्रयासी
नाशी स्वरूपसुखनोजोगी शुद्ध सिद्धथाय तेमाटेअहोचेतन एपरजावअजोग्य सर्व
तनाजीवनीएह तेनोजोगववापणोतजी स्वजावजोगीपणानो रसीयोथयी स्वस्वरूप
धार स्वरूपजासन स्वरूपरमणीथयी पोतानाआनंदनेप्रगटकरीनें निर्मलथावुं.

तथाआकाशद्रव्य तेलोकालोकमिलि एकद्रव्यछे अनंतप्रदेशीछे अनेपुद्गलद्रव्यते
णुरूपछे केमकेपरमाणुअनंताछेमाटे अनंताद्रव्यछे इहांकोइपूछेजे प्रदेशनासंबंध
परमाणुद्रव्यने अस्तिकायकिमकह्योछे तेनेउत्तर जेपरमाणुतो एकप्रदेशीछेपण अ-
परमाणुथीमिलवानाजेकारण तेआद्रव्यतेणेयुक्तछे तेयोग्यतामाटे अस्तिकाय क-
। तथाकालद्रव्यने उपचारें भिन्नद्रव्यपणोकह्योछे तेव्यवहारनयनीअपेक्षायें जे
ष्यक्षेत्रनेविषे सूर्यनीगतिनेपरिज्ञानेएटलेसमयावलिकादिरूप परिमाणे जेमान तेने
हारथीकालकहियें इति एकालमुख्यवृत्तियें तोसमयक्षेत्रमध्येछे अने मनुष्य क्षेत्र-
ाहेर जेजीवोछे तेनाआयुष्यपणएजक्षेत्रप्रमाणे सर्वज्ञदेवेंकह्याछे तथासूर्यनोचारते
जीवपुद्गलनुंजप्रवर्तनछे कारणके सूर्यतेपणजीवतथापुद्गलछे एटले एकालद्रव्यते
रपणे भिन्नपिंरूपणे छेस्योनही उपचारेंजछेस्यो एममानवो.

इहांकोइकहेजे एकएकद्रव्यनेविषे अनेकअनेकपर्यायछे ते कोइपर्यायने द्रव्यपणो
ह्यो अने एकवर्त्तनापर्यायनेविषे द्रव्यनोआरोप शामाटेकस्यो तेनेउत्तर एवर्त्तना
णतितेसर्व पर्यायने सहकारीछे अनेसर्वद्रव्यनेछे तेथीमुख्यपर्यायछे माटे एने द्र-
णोआरोपछे तेपणअनादिचालछे.

एतेपंचास्तिकायाः सामान्यविशेषधर्ममयाएवतत्रसामा
न्यतःस्वभावलक्षणं द्रव्यव्याप्यगुणपर्यायव्यापकत्वेन
परिणामिलक्षणंस्वभावःतत्रएकंनित्यंनिरवयवं अक्रियं
सर्वगतंचसामान्यंनित्यानित्यनिरवयवसावयवः सक्रिय
ताहेतुःदेशगतःसर्वगतंचविशेषपदार्थगुणप्रवृत्तिकारणं
विशेषः नसामान्यविशेषरहितं नविशेषःसामान्यरहितः

अर्थ ॥ हवेएपंचास्तिकायते सामान्यविशेषधर्ममयीछे ते सामान्यनुंलक्षण विशे-
वस्यकेंकह्योछे तिहांप्रथमथी स्वभावनुंलक्षणकहेछे जेद्रव्यनेविषेव्यापतोहोय तथा
पर्यायमांपण व्यापकपणेसदापरिणमतोथकोपामियें तेनेसामान्यस्वभावकहियें ते
मान्यस्वभावजेहोय तेएकहोय तथानित्यअविनाशीहोय तथानिरवयव केण्जेहने

अविजागरूप अवयवनहोय अने सर्वगतके०सर्वमांव्यापकपणेहोय ते
वकहियें जीवादिद्रव्यनेविषे एकपणोतेपिंडपणेछे तेसर्वद्रव्यनेविषेछे सर्व ॥
तानेरूपेंअनेकछे पणतेसमुदायपिंडपणुमूकीने जूदाथायजनही ते माटेएरीतें
मनहोय तेसामान्यस्वजावकहियें तेसामान्यनावेजेदछे
पेंछे तेमहासामान्यकहियें एनीश्रुतज्ञानेकरी प्रतीतथाय पणप्रत्यक्षतो
केवलदर्शनेजजणाय परोक्षेनग्रहवाय तथा वृक्ष अंब निंब जबु प्रमुख व्यक्ति
पणवृक्षत्वपणो सर्वमांछे एअवातरसामान्य तेचक्षुदर्शने तथा चक्षु
अस्तित्व वस्तुत्वादिसामान्य ते अवधिदर्शन तथाकेवलदर्शने ग्रहणाय
मेंते ज्ञानगुणेजग्रहवाय हवे ७ पक्ष ८ पॅठपें को०२कथमानित्य को०१
कोडकरीतेंअवयवसहित कोडकरीतें अवयवरहित अविजागपर्याय सावयव
यांये निरवयव पणसक्रियताहेतु देशगतजेगुणते गुणांतरमांव्यापतानथी तथा
जेगुणहोय तेआखाद्रव्यमां व्यापकजहोय तेनेसर्वगतकहियें तोएवाजेधर्म ते
जाणना पदार्थनागुणनीप्रवृत्ति तेनाजेकारणतेविशेषस्वजाव जेकार्यकरेतेगुणने
पधर्मजगणवो जेसामान्यते विशेषरहितनथी अनेजेविशेषते सामान्यरहित

तेमूलसामान्यस्वजावा षट् तेचामी १ अस्तित्वं २ वस्तुत्व
३ द्रव्यत्व ४ प्रमेयत्वं ५ सत्त्व ६ अगुरुलघुत्व तत्र
१ नित्यत्वादीना उत्तरसामान्याना परिणामिकत्वादीना
विशेषस्वजावानामाधारजूतधर्मत्व अस्तित्व २ गुणपर्या
याधारत्वंवस्तुत्व ३ अर्थक्रियाकारित्वद्रव्यत्व अथवाउत्पा
दव्ययपर्योर्मध्ये उत्पादपर्यायाणांजनकत्वप्रसवस्याविर्जावलक्ष
णव्ययनीनूनपर्यायाणांतिरोजावस्वजावरूपाया शक्तेराधारत्व
द्रव्यत्व ४ स्वपरव्यवसायिज्ञानंप्रमाणं प्रमीयतेअनेनेतिप्र
माणं तेनप्रमाणेनप्रमातुंयोग्यप्रमेय ज्ञानेनज्ञाय तेतयोग्य
त्वंप्रमेयत्व ५ उत्पादव्ययध्रुवयुक्तसत्व ६ षड्गुणहानिवृ
द्धिस्वजावा अगुरुलघुपर्यायास्तदाधारत्वअगुरुलघुत्वंगते
षट्स्वजावा सर्वद्रव्येषुपरिणमति तेनसामान्यस्वजावा

अर्थ ॥ तेमूलसामान्यना जेदछे तेमसर्वद्रव्यमांव्यापकपणेछे १ अस्तित्व
२ वस्तुत्व ३ द्रव्यत्व ४ प्रमेयत्व ५ सत्त्व ६ अगुरुलघुत्व एछमूलस्वजावछे ते सर्वद्र

ामिकपणेपरिणमेछे एधर्मनेकोइनोसहायनथी तत्रके० तिहां १ सर्वद्रव्यनेविषे
ामान्यस्वन्नाव नित्यत्व अनित्यत्वादिक तथाविशेषस्वन्नाव तेपरिणामिकत्वादिक
ाधारन्नूतधर्म तेधर्मनेतीर्थंकरदेवसामान्यस्वन्नाव अस्तित्वरूपकहेछे तथा २ गु-
यनो आधारवंतपदार्थ तेनेवस्तुत्वकहियें अने ३ अर्थजेद्रव्य तेनीजेक्रिया जेम
स्तिकायनी चलणसहायक्रिया अधर्मास्तिकायनी थिरसहायक्रिया आकाशद्रव्य-
वगाहरूपक्रिया जीवनी उपयोगलक्षणक्रिया तथा पुजलनी मिलवाविखरवारूप
नो करवापणो एटलेजे पर्यायनीप्रवृत्ति तेअर्थक्रिया अनेतेअर्थक्रियानो आधारी
ानेश्रीसर्वज्ञदेवें द्रव्यत्वपणोकह्योछे.
ीद्रव्यत्वपणानुंलक्षणांतरकहेछे उत्पादपर्यायनीजें प्रसवशक्ति एटले आविर्जाव-
। जेशक्ति तेनाव्ययीन्नूतपर्यायनो तिरोन्नावथयो अथवा अन्नावथवारूप शक्तिनो
ारन्नूतधर्म तेनेद्रव्यत्वकहियें.
स्वके० पोतेआत्मा अनेपरके० पुजलादिकधर्मास्तिकायादिक अन्यद्रव्यतेने य-
ाणेजाणे तेज्ञानकहियें तेज्ञानपांचन्नेदेंछे तेज्ञानना उपयोगमांआवे एवीजेशक्ति
मेयत्वपणोकहियें तेप्रमेयपणोसर्वद्रव्यनुं मूलधर्मछे प्रमाणमांवसाव्योजेवस्तु तेने
पणोकहियें तेसर्वद्रव्यसर्वगुणपर्यायप्रमेयछे अनेआत्मानो ज्ञानगुण तेमांप्रमाण
तथा प्रमेयपणो एवेधर्मछे पोतानोप्रमाणपणोते पोतेजकरेछे दर्शनगुणनोप्रमाण
ाुणकरेछे केमके दर्शनगुणते विशेषछे सावयवछे जेसावयवहोय तेविशेषजहोय
जे विशेषहोयते ज्ञानथीजजणाय दर्शनगुणते सामान्यधर्मनो ग्राहकछे तेपण प्र-
हेवाय पणप्रमाणनान्नेदकह्याछे तिहां ज्ञानजग्रह्युंछे तेनुंकारणजेदर्शनोपयोग तेव्य-
ातोनथी तेमाटेप्रमाणमध्ये गवेष्यो नथी तेप्रमाणना मूलबेन्नेदछे एकप्रत्यक्ष अने
परोक्ष स्पष्टंप्रत्यक्षं परोक्षमन्यत् इतिस्याद्वादरत्नाकरवाक्यात्.
उत्पादके० उपजवो व्ययके० विणसवो ध्रुवके० नित्यपणो वस्तुनाएकगुणमां
ामये एत्रणेपरिणमनें सदापरिणमेछे एवोजेपरिणामते सत्पणोकहियें अने ते सत्-
ो न्नाव ते सत्वपणो कहियें.
तथा छहो १ अनंतन्नागहानि २ असंख्यातन्नागहानि ३ संख्यातन्नागहानि ४ सं-
ागुणहानि ५ असंख्यातगुणहानि ६ अनंतगुणहानि एछप्रकारनीहानि तथा १
ान्नागवृद्धि२असंख्यातन्नागवृद्धि३संख्यातन्नागवृद्धि४संख्यातगुणवृद्धि५ असंख्या-
वृद्धि ६ अनंतगुणवृद्धि एछवृद्धि एमछप्रकारनीहानि तथा छप्रकारनीवृद्धि तेअगु-
पर्यायनी सर्वद्रव्यने सर्वप्रदेशे परिणमेछे तेकोइकप्रदेशें कोइसमये अनंतन्नाग
पणेपरिणमे अनेकोइकसमये कोइकप्रदेशें अनंतन्नागवृद्धिपणे परिणमेछे एवंवार

प्रकारें परिणमेठे ते अगुरुलघुपर्यायनी परिणमनशक्ति तेअगुरुलघुत्व जाणवो तत्वार्थटीकानेविषेपांचमाअध्याये अलोकाकाशनेअधिकारें कह्योठे स्वजाव सर्वद्रव्यनेविषे परिणमेठे एठएद्रव्यनोमूलस्वजावठे अव्यनो नोजिन्नपणो तेअगुरुलघुनेजेदपणे थायठे तेमाटे एठमूलसामान्यस्वजावठे स्तिकधर्मठे अने एनुपरिणमनते पर्यायास्तिक धर्मठे नोपिंकतेद्रव्यठे पणद्रव्यपणोजिन्ननथी जेम धूरी पडग्रा कागमो १ कागनी प्रमुख समुदायने गाफोकहियें पण सर्वअवयवथीजिन्न मज ज्ञानादिकगुणथी जिन्नपणेकोइ आत्मादेखातोनथी तेने कहियें जे ज्ञान णनेविषे ठतिएकपिंकसमुदायता सदाअवस्थितपणो अनेद्रव्यथीमिलीनजाव क्रियावनपणो इत्यादिकसामान्यधर्मठे ठतिअस्तित्व अर्थक्रियावंततेद्रव्यपणो कपणोतेवस्तुरज इत्यादिकते सर्वद्रव्यपणोठे एटले द्रव्यास्तिक द्गमलीनेद्रव्यपणोठे जकच समतोदवापजावरहिआ नपजावादवठनिठर्या मान्यस्वजावनाठजेद कह्या

तत्रअस्तित्वं उत्तरसामान्यस्वजावगम्यं तेचोत्तरसामान्य स्वजावाअनंताअपिवक्तव्येनत्रयोदश १ अस्तिस्वजा व २ नास्तिस्वजाव ३ नित्यस्वजाव ४ अनित्यस्वजा व ५ एकस्वजाव ६ अनेकस्वजाव ७ जेदस्वजाव ८ अजेदस्वजाव ९ जव्यस्वजावः १० अजव्यस्वजाव ११ वक्तव्यस्वजाव १२ अवक्तव्यस्वजाव १३ परमस्व जाव इत्येवरूपवस्तुसामान्यानंतमयं

अर्थ ॥ तत्रावली अस्तित्व उत्तरसामान्यस्वजावकहेठे ते उत्तरसाम स्तुमध्ये अनंताजे पणतेरसामान्यस्वजाव अनेकांतजयपताकादिग्रंथे बताव्याठ र्दशिशमात्र लखियेंजेयें तेनानामऊपरनामूलपाठमा सुगमठे माटे लिख्यानथी ना व्याख्यानथी पणजणाये एनेर सामान्यस्वजावे परिणमतिवस्तुहोय

स्वद्रव्यादिचतुष्टयेनव्याप्यव्यापकादिसंबंधि स्थितानाम्यपरिणामात् परिणामांतरागमनहे तु वस्तुन सद्रूपतापरिणाति अस्तिस्वजाव

अर्थ ॥ तेना १ प्रथम अस्तिस्वजावनु लक्षणकहेछे स्वके० पोताना द्रव्य

नोजेमां व्यापकपणोछे १ द्रव्यतेगुणपर्यायना समुदायनो आधारपणो २ क्षेत्रतेप्र-
रूप सर्वगुणपर्यायनी अवस्थानेराखवापणो जेजेनेराखे तेतेनुंक्षेत्रजाणवुं ३ कालते उ-
व्यय ध्रुवपणेवर्त्तना ४ भावते सर्वगुणपर्यायनो कार्यधर्म तिहांजीवद्रव्यनुं १ स्वद्र-
देशगुणनोसमुदायद्रव्यछे तेगुणपर्यायनो जनकपणो तेस्वद्रव्य अने २ जीवनाअ-
ख्याताप्रदेशते स्वपर्यायनोस्वक्षेत्रपर्यायतेजाणवा एटले देखवादिकजेगुणनोपर्याय तेनुं
त्र तेस्वक्षेत्र ३ पर्यायमध्ये कारणकार्यादिकनो जे उत्पादव्यय तेस्वकाल तथा ४
तअनागत वर्त्तमाननुंपरिणमनतेस्वभाव तेकार्यादिकधर्म जेमज्ञानगुणनो पर्याय
ंगपणो वेत्तापणो परिछेदकपणो विवेचनपणोइत्यादिक स्वभाव एमस्वद्रव्य स्वक्षे-
त्रकाल स्वभाव जेपरिणामिकपणेपरिणमता तेनीअस्तिताकेवी एसर्वनीछतिछेतेअ-
स्वभावछे एअस्तिस्वभावें द्रव्यछे तेपोतानोमूलधर्ममूकी अन्यधर्मपणे परिणमतो
परिणामांतरे आगमनछे एअस्तिस्वभावते सर्वद्रव्यमां पोतानागुणपर्यायनो
ावो जेअस्तितेसद्रूपता छतारूपपणानी परिणतिलेवी सर्वद्रव्य पोतानेंधर्मेंजपरिण-
ाणजेजीवद्रव्यते अजीवद्रव्यपणेनपरिणमे तथा एकजीव ते अन्यजीवपणे नपरि-
वलीएकगुणते अन्यगुणपणेनपरिणमे ज्ञानगुणनेविषे दर्शनादिकगुणनीनास्तिता
अनेज्ञाननाधर्मनीअस्तिताछे तथा एकगुणनापर्याय अनंताछे तेसर्वपर्यायधर्मसरिखा
ाण एकपर्यायनाधर्म वीजापर्यायमांनही अने वीजापर्यायनाधर्म पहेलापर्यायमांनही
ःसर्व पोतानेधर्मेंजअस्तिछे एरीतेंअस्ति नास्तिनुं ज्ञानसर्वत्रकरवुं एद्रव्यनेविषे
मअस्तिस्वभावकह्यो.

अन्यजातीयद्रव्यादीनां स्वीयद्रव्यादिचतुष्टयतयाव्यवस्थि
तानांविवक्षिते परद्रव्यादिकेसर्वदेवाभावाविछिन्नानां अन्य
धर्माणांव्यावृत्तिरूपोभावः नास्तिस्वभावः यथाजीवेस्वीयाः
ज्ञानदर्शनादयोभावाः अस्तित्वेपरद्रव्यस्थिताः अचेतना
दयोभावानास्तित्वे साचनास्तिताद्रव्येअस्तित्वेनवर्त्तते घटेघ
टधर्माणां अस्तित्वं पटादिसर्वपरद्रव्याणांनास्तित्वंएवंसर्वत्र

अर्थ ॥ हवेवीजानास्तिस्वभावनुं स्वरूपलखियेंछेयें अन्यके०वीजाजेद्रव्यादिक जे
व्यगुणपर्याय तेनापोताना जेद्रव्यक्षेत्रकालभाव तेतेहिजद्रव्यमां सदाअवष्टंभपणे
रेणमेछे एटले विवक्षित द्रव्यादिकथी परजेवीजाद्रव्यादिकना जेधर्म ते तेमांसदा
भावपणे निरंतरअविछेदछे तेमाटेपरद्रव्यादिकना धर्मनीव्यावृत्तिनापणानोजेपरधर्म
विवक्षितद्रव्यमांनथी एवाद्रव्यमांजेभावछे तेनास्तिस्वभावजाणवो जेमजीवनेविषे

ज्ञानदर्शनादिक पोतानाजेजाव तेतोअस्तिपणेछे अनेपरद्रव्यमा
जाव तेनीनास्तिताछे एटलेतेधर्मजीवद्रव्यमांनथी माटे परधर्मनीना[illegible]
स्तिता तेद्रव्यमध्ये अस्तिपणेरहीछे जेमघटनाधर्मघटमाछे तेथीघटमा
स्तित्वपणोछे पणपटादिसर्वपरद्रव्योनो नास्तित्वपणो ते घटनेविषेरह्योछे
जीवज्ञानादिकगुण तेअस्तित्वपणेछे पणपुद्गलनावर्णादिक जीवमध्येनथी
नीनास्ति ते जीवमध्येरहिछे श्रीजगवतीसूत्रेकह्युछे हेगोतम अच्छित्तं
नच्छित्त नच्छित्तेपरिणमयी तथाठाणागसूत्रे १ सियअत्थि २ सियनत्थि ३
नत्थी ४ सियअवत्तव्व एचोजगीकहीछे अनेश्रीविशेषावश्यकमध्येकह्युछे
अस्तिनास्तिपणोजाणे तेसम्यग्ज्ञानी अनेजेनजाणे अथवा अयथार्थपणेजा
थ्यात्वी उक्तंच सदसदविशेषणाओ जवहेउजदृछीओवलजाओ ॥
छादिठिसअन्नाण ॥ १ ॥ एगाथानीटीकामध्ये स्याद्वाद नल
जगीपरिणाम एकैकस्मिन्द्रव्येगुणेपर्यायेचसप्तसप्तजगाजवत्येव अत
एतेवस्तुनिश्चनता सप्तजंग्योजवति इतिरत्नाकरावतारिकाया ते
पर्यायनेविषे स्वरूपेंसातजगाहोय जेएसातजगानो परिणामते स्याद्वाद

तथाहि स्वपर्यायै परपर्यायैरुजयपर्यायै सद्भावेनासद्भा
वेनोजयेनवार्पितोविशेषत कुंज अकुंज कुम्भाकुम्भो वा
अवक्तव्योजयरूपादिजेदोजवति सप्तजंगीप्रतिपाद्यतेस्त्व
र्थ उष्ठग्रीवाकपोलकुक्षिबुध्नादिभि स्वपर्यायै सद्भावेना
र्पित विशेषत कुम्भकुम्भोजण्यते सन्घटइतिप्रथमजंगोभ
वति एवंजीव स्वपर्यायै ज्ञानादिभि अर्पित सन्जीव

अर्थ ॥ एसप्तजगी परनीअपेक्षायेंनथी तेद्रव्यादिकमध्येजछे
एअस्तिधर्मछे अनेपरद्रव्यनाधर्मनेपरिणमवु एनास्तिनुफलछे तेमाटेएसप्तजगी
धर्मछे तेविशेषावश्यकथी सप्तजगीलखियेंछेयें एकविवक्षितवस्तु
सद्भावकेछतापणेछे अनेपरपर्यायेंजे अन्यद्रव्यनेपरिणमे तेनो
परिणमेछे तथाजेछता अथवाअछतापर्याय तेनोछतापणोछे कोइकपणे
नाटे छताअछतापणोपण तेजकालेंछे केमके वस्तुमध्ये अनेकधर्मछे तेसर्वे
क्रमसमयें समकालेंजासेछे तेपणवचनेजगातरेजकहीशके अनेछद्मस्थने श्र
गमे समकालेसदहेछे पण छद्मस्थनोउपयोग असख्यातसमयीछे अनुक्रमें
देखे तेथीमतजगेजासनछे जेवस्तुमांसमकालेंछे समकेतिनी श्रद्धामां समका

नाशासनमां समकालेछे तेश्रुतज्ञानीनाशासनमां क्रमपूर्वकछे केमके नाषासर्वेक्रायछे तेथीअसत्यथाय तेनेजोस्यात्पदेंपरुपियेंजाणियें तोसत्यथाय माटेस्यात्पूर्वकीकहियें द्रव्यगुणपर्याय स्वनावसर्वमध्येछे तेरीतेंसद्दहवी तेदृष्टांतेकरीकहेछे ठंठ गावन कांठो कपाल तलो कुक्षिपेटो बुध्न पोहोलो इत्यादिस्वपर्यायेंकरी घट तेघटनेस्वपर्यायें वनापणे अर्पितकरियें तेवारेंते कुंनकुंनधर्मे सन्केंठतोछे पटादिकधर्मनी वतिसापेक्षरायवाने स्यात्पूर्वककहेवो एटले स्यात्अस्तिघटः एप्रथमजाणवो तथाजीवादिद्रव्यनेविषे जीवनाज्ञानादिगुण तेनेपर्यायें जीवद्रव्यनेनिजस्वनावेंकरीने स्यात्अस्तिजीवः एमसर्वद्रव्यनेकहेवो यद्यपि जीवतथाअजीवनोगो सरिखोजासे पणतेगुणोतेमांनही अनेतेनोएमांनही जोपणजीवसर्व एकजातिछे पणएकजीवमांजे ज्ञानादिगुणछे तेबीजाजीवमांनथी माटेसर्वद्रव्य स्वधर्मेजछे अने परधर्मेनास्तिछे एमस्यात्अस्तिजीव एप्रथमनंगजाणवो.

तथापटादिगतैस्त्वक्त्राणादिभिः परपर्यायैरसद्भावेनार्पितः
अविशेषितः अकुंनोनवति सर्वस्यापिघटस्यपरपर्यायैर
सत्वविवक्षायामसन्घटः एवंजीवोपिमूर्त्तत्वादिपर्यायैः अ
सत्जीव इतिद्वितीयोनंगः

॥ पटनेविषेरह्यात्वक्जे शरीरनीचामडीनेढांके लांबोपथराय इत्यादिपर्याय ते पर्यायनथी परपर्यायछे पटनेविषेरह्याछे घटनेविषेएपर्यायनी नास्तिछे तेथी एप- असद्भावछे तेमाटे एघटनापर्यायनथी एमसर्वपर्यायें घटनथी तेवारेंपरपर्यायना पणानीविवक्षायें अछतोघटछे एमजीवपण मूर्त्तिपणादिक अचेतनादिपर्यायनो ज्येअसत् अछतापणो तेथीजीवपरपर्यायेनास्तिछे माटे स्यात्नास्ति एवीजोनांगो । केमके परपर्यायनी नास्तितानुं परिणमन द्रव्यनेविषेछे.

तथासर्वोघट.स्वपरोभयपर्यायैः सद्भावासद्भावाभ्यांसत्वास
त्वाभ्यामर्पितोयुगपद्वक्तुमिष्टोऽवक्तव्योनवति स्वपरपर्या
यसत्वासत्वाभ्यांएकेकेनाप्यसांकेतिकेनशब्देन सर्वस्यापि
तस्यवक्तुमशक्यत्वादिति एवंजीवस्यापि सत्वासत्वाभ्यामे
कसमयेनवक्तुमशक्यत्वात् स्यादवक्तव्योजीव इतितृतीयो
नंग. एतेत्रयःसकलादेशाः सकलंजीवादिकंवस्तुग्रहणपरत्वात्

अर्थ ॥ सर्वघटादिवस्तुछे तेस्वपर्यायजे पोतानासद्भावपर्याय तेणेकरी वाय तथा परनेपर्यायें अछतापणकहेवाय तेवारें स्वपर्यायनोछतापणो तापणो एवेधर्मसमकालेंछे पणएकसमयेंकहेवायनही તેમાટેપણ स्वपर्यायनोसत्वपणो परपर्यायनोअसत्वपणो तेकोइपणएक सांकेतिकशब्दें કહી नेसमर्थनही माटे सत्व अस्तिपणो असत्व नास्तिपणो તે એકસમયેંકહેવામા આવ तेथीवस्तुस्वभावनावेधर्म तेएकसमयेंछताछे तेनोज्ञानकरवामाटे स्यात्अवक्तव्य नबोल्या केमके कोइकनेएवोबोधथाय जेसर्वथीवचने अगोचरजछे तेमाटेस्यात्पद स्यात्कें०कथंचितपणे कोइकरीते एकसमयेनकहेवाय माटे स्यात्अवक्तव्यएत्री सर्वद्रव्यजाणवा एत्रीजोभागोथयो एत्रणभगासकलादेशीछे सर्वनस्तुने स.. वारूपछे जीवादिकजेवस्तु तेनेसपूर्णप्रकहेवावतछे

अथचत्वारोविकलादेशा तत्रएकस्मिन्देशेस्वपर्यायसत्वेन
अन्यत्रतुपरपर्यायसत्वेन संश्चअसंश्चभवति घटोऽघटश्चएव
जीवोपिस्वपर्यायै सन् परपर्यायै असन् इतिचतुर्थोभग

अर्थ ॥ हवेचारभागाविकलादेशी कहेछे जेवस्तुनुस्वरूपकहेवो તેના एस्वरूपछे तिहांएकदेशनेविषे स्वपर्यायनोसत्वपणो अस्तिपणोगवेषेछे તેવારેવળી द्असत्पणेछे एटलेएघटछे अनेएघटनथी एमजीवपणस्वपर्यायेंसत् परपर्यायेंअसत् माटेएकसमयेंअस्तिनास्तिरूपछे पणकहेवामाअसंख्यातसमयेंछे તેમાટે स्यात् अस्तिनास्ति एचोथोभगोजाणवो

तथाएकस्मिन्देशेस्वपर्यायै सद्भावेनविवक्षित अन्यत्र
तुदेशेस्वपरोभयपर्यायै सत्वासत्वाभ्यायुगपदसंकेतिकेनश
ब्देन वक्तुविवक्षित सन्अवक्तव्यरूप पचमोभगोभवति
एवंजीवोपिचेतनत्वादिपर्यायै सन्शेषै अवक्तव्यइति

अर्थ ॥ तथा एकदेशेंपोतानेपर्यायें स्वद्रव्यादिकें छतापणेगवेषीयें अने बीजादेशोनेविषे स्वपरएवेपर्यायें सत्वछतापणें तथा असत्व अछतापणें समकालें संकेतपणे नामनेअणकहेगवेषीयें तेवारेंसत्कें०अस्तिअवक्तव्यरूप भागोउपजे एभागाछतारीजाछभागाछे तेनीगवेषणामाटे स्यात्पदजोडीयें एटलेस्यात्अस्ति व्य एपाचमोभागोजाणवो जेमजीवनेविषे चेतनपणोसुखवीर्यगुणें अस्तिछे अने नित्यपणे अस्तिनास्ति समकालपणे वचनगोचरनआवे ते स्यात्अस्तिअवक्तव्य

तथाएकदेशेपरपर्यायैरसद्भावेनार्पितोविशेषतः अन्ये
स्तुस्वपरपर्यायैःसद्भावासद्भावाभ्यांसत्वासत्वाभ्यां युगप
दसंकेतिकेनशब्देनवक्तुंविवक्षितकुंभोऽसन् वक्तव्यश्चभ
वति अकुंभोवक्तव्यश्चभवतीत्यर्थः देशेतस्याकुंभत्वात्
देशेअवक्तव्यत्वादिति षष्ठोभंगः

अर्थ ॥ तथाएकदेशेंपरपर्याय जेनास्तिपर्याय तेने असद्भावके०अछतापणे अर्पित
ने मुख्यपणेगवेषीयें तेवारपछिअन्यके०बीजास्वपर्यायें अस्तिपणोतथापरपर्यायजे
स्तिपर्याय एवे सत्वके०छतापणे असत्वके०अछतापणे युगपत्समकालेकहियें एसंके-
क शब्दने अभावें कहेवामांनआवे अनेतेकह्याविनाश्रोतानेज्ञानकेमथाय तेमाटेस्यात्
ते अन्यभांगानी सापेक्षतामाटे तथा सर्वधर्मनीसमकालता जणाववा माटे स्यात्-
स्तिअवक्तव्य एछठोभांगोजाणवो एटलेजीवपोताने स्वगुणेतोछतापणो सर्वपर्याय स-
कालनोअवक्तव्यपणो एस्यात्नास्तिअवक्तव्य छठोभांगोथयो.

तथाएकदेशेस्वपर्यायैःसद्भावेनार्पितः एकस्मिन्देशे परप
र्यायै रसद्भावेनार्पितः अन्यस्मिंस्तुदेशेस्वपरोभयपर्यायैः
सद्भावासद्भावाभ्यां युगपदेकेनशब्देनवक्तुं विवक्षितः
सन्असन्अवक्तव्यश्चभवतिइतिसप्तमोभंगः एतेनएक
स्मिन्वस्तुन्यर्पितानर्पितेनसप्तभंगीउक्ता ॥

अर्थ ॥ तथाएकदेशे स्वपर्यायनेछतापणे अर्पितकरियें अनेएकदेश परपर्यायने अ-
तापणेगवेषियें अनेतेसर्वपर्याय समकालेंमेलारह्याछे पणवचनेकहेवायनही एटलेअ-
स्तपणोपणछे अनेनास्तिपणोपणछे एसर्वधर्म समकालेंछे पणवचनेगोचरथायनही
अपेक्षायें स्यात्अस्ति स्यात्नास्ति स्यात्अवक्तव्य एरीतेंवस्तुनोपरिणमनछे एसा-
मोभांगोजाणवो एसप्तभंगी अर्पितअनर्पितपणेकही तेअर्पितएकधर्मजहोय एम
कधर्मनेविषेसप्तभंगीकही.

तत्रजीवःस्वधर्मैर्ज्ञानादिभिःअस्तित्वेनवर्त्तमानः तेनस्यात्
अस्तिरूपःप्रथमभंगः अत्रस्वधर्माअस्तिपदगृहीताःशेषा
नास्तित्वादयोधर्माः अवक्तव्यधर्माश्चस्यात्पदेनसंगृहीताः

अर्थ ॥ हवेस्वरूपपणेसप्तभंगीकहेछे जेएकद्रव्यनेविषे अथवाएकगुणनेविषे एक
र्यायनेविषे एकस्वभावनेविषे सातसातभांगा सदापरिणमेछे तेरीतेंस[illegible] कहेछे स्या-

द्वादरत्नाकरावतारिकामध्येकह्योठे एकस्मिन्जीवाद्रो ... यमापे ... ग
त्य एवचनथीजाणीलेजो अछिजीवे ... दि ... जाणजो ... पूर्वे
लोकांगोलखियेंठेयें तिहांजीवद्रव्यपोताने स्वद्रव्यपिंमगुणपर्यायसमुदाय
स्वक्षेत्रअसंख्यप्रदेश ज्ञानादिगुणनुअवस्थान अगुरुलघुताहानिवृद्धिनोमान
ल तेगुणनीवर्त्तना उत्पादव्य ... र ... अनतज्ञान ...
नतचारित्र अनंतदान अनतलाज अनंतजोग अनंतउपजोग अनतवीर्य
बाध अरूपी अशरीरी परमक्षमा परममार्द्दव परमआर्जव स्वरूपजोगीप्रमुख
जाव एअनंतज्ञेयज्ञायकपणे जीवद्रव्यठतोठे एमजीवनोज्ञानगुण सधर्म ...
यकपणो स्वशक्तिधर्मे अनतअविजागें एकएकपर्यायअविजागमा ...
जिलाप्प स्वजावनोजाणगपणोठे इहांविस्तारेंलखियेंठेयें तिहांमतिज्ञानना ...
दाठे श्रुतज्ञानना अविजागजूदाठे मनपर्यायज्ञानना अविजागजूदाठे केवलज्ञान
र्यायजूदाठे श्रीविशेषावश्यकें गणधरवादनेठेकेकह्योठे जोआवरवायोग्यवस्तु ...
आवरणजूदाठे तिहांक्षयोपशमनेनेदेंजाणेठे तेपरोक्ष अथवादेशथीजाणेठे ...
वरणगयेथकेप्रत्यक्षजाणे पण केवलज्ञानसर्वजावनोसंपूर्ण प्रत्यक्षज्ञायक ...
तेवारेंबीजाज्ञाननीप्रवृत्तिठे पणजिन्नप्रकृतिनथी माटेतेकेवलज्ञाननो ...
यठे तथाकोइक ज्ञानगुणना अविजागसर्व एकजातीनाकहेठे तेअविजागमध्ये ...
कजाणवानीशक्ति अनेकप्रकारनीठे तेमाजेआवरणएटले जे शक्तिप्रगटेते शक्ति ...
ज्ञानादि जिन्ननामठे अनेसर्वआवरणगयाथी एककेवलज्ञानरह्युठे ...
एपणव्यारयानठे एवोज्ञानगुणपोतानास्वपर्याय ज्ञायक परिछेदक वेदकादि
एमसर्वगुणमा स्वधर्मनी अस्तिताकहेवी तेमजजेअविजागरूपपर्यायठे जेनासमूहनी
प्रवृत्तिनेगुणकहियेंठेयें तेपणस्वकार्यकारणधर्मे अस्तिठे एमठद्रव्यनुस्वरूप ...
स्तिठे अने अन्यठे जागापणठेएवोसापेक्षतामाटे स्यात्पददेइनेबोलवो तेस्यात्
प्रथमजागापणो थयो एटले गवेष्यो जेअस्तिधर्म तेपणनास्तिपणासहितठे
खे अस्तिकहेता थका नास्ति प्रमुख ठजागानीठतिठे तिहाशब्दसहित ...
तेथीसत्यपणो थयो

तयास्वजात्यन्यद्रव्याणा तद्धर्माणाचविजातिपरद्रव्याणा
तद्धर्माणाच जीवेसर्वथैवअजावात्नास्तित्वतेनस्यात् ना
स्तिरूपोद्वितीयोजंग अत्रपरधर्माणानास्तित्वं नास्तिपदे
नगृहीत शेषाअस्तित्वादय स्यात्पदेगृहीताइति

र्थ॥ हवेबीजोज्ञांगोकहेछे जेएकजीवनुं स्वरूप उपयोगमां आण्याछे तेजीवनेविषे अ-
सिद्धसंसारी जीवछेते सर्वना गुणपर्याय अस्तित्वादिप्रमुख सर्वधर्मनीनास्तिछे अने
वद्रव्यतथातेना जडतादिकसर्वधर्मनीनास्तिछे जेम अग्निमांदाहकपणोछे तेनी पासे
अग्निनोकणिउपव्योछेतेपण दाहकछे पणतेदाहकपणो भिन्नछे एटले तेकणीयांनोदा-
पणो ते अग्निमांनथी अने तेअग्निनोदाहकपणो तेकणीयांमांनथी तेमज एकजीवमां
दिकगुणछे तेबीजामांनथी अनेबीजाजीवमां जेज्ञानादिकगुणछेते तेमांनथी बाकी स-
छेतेमाटेजाणवादिककार्यसरिखांकरे तोपणसर्वमांपोतपोतानागुणछे पणकोइद्रव्य-
णकोइद्रव्यमांयावतानथी तेमाटे स्वजाति अन्यद्रव्यपणो अन्यगुणपणो तथाअन्य-
णोते सर्वनीनास्तिछे एमजगुणमांपणसर्व अन्यद्रव्यादिकनीनास्तिछे तथापर्यायना
भागमां पण स्वजातिअविभागकार्यता कारणतानीनास्तिछे तेमाटेपरद्रव्यपणोपरक्षे-
पो परकालपणो परभावपणोएनी नास्तिछे एवोनास्तिपणापण तेमांजरह्योछे तेमाटे
नास्तिपणो एभांगोपणतेमांजछे एमएकज मात्रनास्तिपणोकह्ये थके अस्तिपणो
एककालपणोपणछे तथाजीवमांजडतागुणनीनास्तिछे एटलेजडतानीनास्तिते जी-
जरहीछे इत्यादिकअनंताधर्मनीसापेक्षतामाटे स्यात्पदेंबोलतां सर्वधर्मनोभासन
एटलेसत्यता थाय तेमाटे स्यात्नास्ति एबीजोभांगोकह्यो.

केषांचिद्धर्माणां वचनगोचरत्वेन तेनस्यात्अवक्तव्य इ
तितृतीयोभंगः अवक्तव्यधर्मसापेक्षार्थंस्यात्पदग्रहणं

अर्थ ॥ हवेत्रीजोभांगोकहेछे जेवस्तुहोय तेमां केटलाकधर्मएवाछे जेवचनेकरी कहे-
ानथी तेअवक्तव्यछे तेकेवलीनेज्ञानमांजणायछे पणवचनेकरीतेपणकहीशकेनही
ाटेतेवाधर्मनीअपेक्षायें वस्तुअवक्तव्यछे एटलेकहेतांथकां वक्तव्यनीनायथीपणके-
ाकधर्मवस्तुमध्येवक्तव्यछे तेजणाववामाटे स्यात्पदग्रहणकरीने स्यात्अवक्तव्य
ीजोभांगोकह्यो.

अत्रअस्तिकथने असंख्येयाः नास्तिकथनेप्यसंख्येयाः
समयावस्तुनिएकसमये अस्तिनास्तिस्वभावौ समकवर्त्त
मानौ तेनस्यात्अस्तिनास्तिरूपश्चतुर्थोभंगः

अर्थ ॥ हवेचोथोभांगोकहेछे जेअस्तिएवोशब्द उच्चारकरतांपणअसंख्यातसमयथाय
यानास्तिएशब्द उच्चारकरतांपण असंख्यातसमयथाय अनेवस्तुमांतो अस्तिधर्मना-
तधर्मएबेहुएकसमयमांछे तेबेहुसमकालेंजणाववामाटे अनेजेअस्ति ते नास्तिनथाय
थाजेनास्ति ते अस्ति नथाय तेसापेक्षतामाटेस्यात्अस्तिनास्तिएच ।

तत्रअस्तिनास्तिनावा सर्वेवक्तव्याएवनअवक्त
व्याइतिशंकानिवारणायस्यात्अस्तिअवक्तव्य
इतिपंचमोनग स्यान्नास्तिअवक्तव्यइतिषष्ट

अर्थ ॥ हवेपांचमोतथा बठोनांगोकहेठे तिहांस्यात्अवक्तव्य
तेमूलधर्मेएकलो अवक्तव्यथयो तेसंदेहनिवारवाने कह्योजे ए ५ स्त
स्तुमांअनंताअस्तिधर्मठे पणवचनेअगोचरठे अनेअनंताधर्मवचनगोचरपणे
सापेक्षतामाटे स्यात्पदयुक्तकरीने एटलेस्यात्अस्तिअवक्तव्य ५पांचमो
एमजपांचमानीरीतें स्यात्नास्तिअवक्तव्य एठठोनांगोजाणवो

अत्रवक्तव्यानावा· स्यात्पदेगृहीता अत्रअस्तिनावावक्तव्या
स्तथाअवक्तव्या तथानास्तिनावावक्तव्याअवक्तव्या एकस्मिन्
वस्तुनिगुणेपर्यायेएकसमयेपरिणममानाइतिज्ञापनार्थं स्यात्अ
स्तिनास्तिअवक्तव्यइतिसप्तमोनग. अत्र वक्तव्यानावास्तेस्या
त्पदेसगृहीताइतिअस्तित्वेनअस्तिधर्मानास्तित्वेनना स्तिनासर्वांव
युगपडुनयस्वनावत्वेनवक्तमशक्य...प्रगटतोपणनथी
एजाणवो हवेत्रीजोनित्यस्वनावकहेठे तेजेवस्तुनानावतेनो अन्वयकेंनहींव्यु
टलेतेमनोतेमजरहेवो तेनित्यपणोकहियें तेनावेनेदठेतेकहेठे

एकाअप्रच्युतिनित्यता द्वितीयापारंपर्यनित्यता ॥ तथा
द्रव्याणाऊर्ध्वप्रचयतिर्यग्प्रचयत्वेनतदेवद्रव्यमितिध्रुव
त्वेननित्यस्वनाव नवनवपर्यायपरिणमनादिनि उत्पत्ति
व्ययरूपोनित्यस्वनाव उत्पत्तिव्ययस्वरूपमनित्य ॥

अर्थ ॥ एकअप्रच्युतिनित्यता बीजीपारपर्यनित्यता तिहां अप्रच्युतिनित्य
हियें जेद्रव्यतेऊर्ध्वप्रचय तिर्यक्प्रचयनेपरिणमवे एद्रव्यतेहिज ५७
पने एटलेसदासर्वदा त्रणेकालेतेहिज एवुजेज्ञानथायठे जेमूलस्वनावपलटेनहीं
प्रच्युतिनित्यनाकहियें अनेएनित्यतामाजे ऊर्ध्वप्रचयकह्यो तेउलखावेठे
द्रव्यनीपरिणतिहती तेनीजेसमयेंनवापर्यायनेउपजवे अनेपूर्वपर्यायनेव्ययें सर्व
परावृत्तियइ तोपणएद्रव्यतेनुतेज एवुजे ज्ञानथायते द्रव्यमाऊर्ध्वप्रचयकहि
समयेंनेमाटेऊर्ध्वप्रचयकहियें

आत्मद्रव्यनेविषे स्वधर्मनीअस्तिताछे परधर्मनीनास्तिताछे स्वगुणनोपरिणमवो अ-
यछे अनेतेजगुणपणेनित्यछे तथाद्रव्यपिंडरूपणेएकछे अनेगुणपर्यायपणेअनेक छे त-
आत्माकारणपणे कार्यपणें समयसमयमांनवानवापणोजेपामेछे तेनवनधर्मछे तोप-
आत्मानोमूलधर्मजेपलटतोनथी तेअनवनधर्मछे इत्यादिकअनेकधर्म परिणतियुक्तछे
तिषट्द्रव्यनेजाणी निरधारीने हेयोपादेयपणे श्रद्धान नासनथाय तेसम्यक्ज्ञान
यक्दर्शनछे एजीवनीअशुद्धता तेपरकर्त्ता परनोक्ता परग्राहकता टालवानाउपा-
साधन तेसाधनकरवे आत्माआत्मापणें मूलधर्मेंरहे तेसिद्धपणो तेनीरुचितत्र-
णोकरवो एहिजश्रेयछे.

स्यात्अस्ति स्यान्नास्ति स्यात्अवक्तव्यरूपास्त्रयः सकला
देशाः संपूर्णवस्तुधर्मग्राहकत्वात् मूलतः अस्तिनावाअ
स्तित्वेनसंति नास्तित्वेनसंति एवंसप्तनंगाः एवंनित्यत्व
सप्तनंगी अनित्यत्वसप्तनंगी एवंसामान्यधर्माणां विशेष
धर्माणां गुणानांपर्यायाणां प्रत्येकंसप्तनंगी तद्यथा
दिगुणानं।
ख्यते विस्रसाप्रयोगजन्य स्यातअवक्तव्य एत्रणनांगा वस्तुनासंपूर्ण रूप-
हकारादिपदार्थक्रियाकारणंनवत्येव ॥

अर्थ ॥ तिहांवलीग्रंथांतरे नित्यपणोबेप्रकारेकह्योछे एककूटस्थनित्यता बीजीपरि-
मिनित्यताछे जीवनाअसंख्यातप्रदेश तेसंख्यायें तथाक्षेत्रावगाह पलटतोनथीते त-
गुणनोअविनाग तेसर्वकूटस्थनित्यताछे.
ज्ञानादिकगुणएसर्व परिणामिकनित्यतायेंछे केमकेगुणनोधर्मजएछे जेसमयेंसमयेंस्व-
र्यपणेपरिणमे अनेजेकार्यहोय तेपरिणामिकपणेजहोय एनीतिजछे अने जोज्ञानगुण-
कूटस्थनित्यतापणेमानियें तोपेहेलेसमयेंजे ज्ञानेकरीजाण्यो तेहिज जाणपणो स-
सर्वदारहे पणतेमतोनथी ज्ञेयतोनवनवीरीतें परिणमतादेखायछे तो तेज्ञेयनीनवनवी
वस्थाज्ञानजाणेनही एटलेपहेलेसमयजेरीते ज्ञानपरिणमेछे तेरीतें परिणमनजोवुंजोई-
अनेएरीतें ज्ञानयथार्थथयुं एमघटे नहीं तेमाटे ज्ञेयजे घटपटादिक तेजेमपलटेछे
ज्ञानपणजाणे तोहिजज्ञानयथार्थथाय तेमाटेज्ञानगुण ते नवानवाज्ञेयजाणवामाटे
रेणामीजाणवो अनित्यज्ञायकताशक्ति माटेनित्य एरीतें नित्यानित्यस्वनावी सर्वगुणछे
द्रव्यनेविषेपोतानीक्रियानुंकारणथायजछे.

तत्रअस्तिनास्तिभावा सर्वेवक्तव्याएवनअवक्त
व्याइतिशंकानिवारणायस्यात्अस्तिअवक्तव्य
इतिपंचमोभंगः स्यान्नास्तिअवक्तव्यइतिषष्ट

अर्थ ॥ हवेपांचमोतथा छठोभांगोकहेछे तिहांस्यात्अवक्तव्य तेमूलधर्मेएकलो अवक्तव्यथयो तेसदेहनिवारवाने कह्योजे वस्तुमाअनंताअस्तिधर्मछे पणवचनेअगोचरछे अनेअनंताधर्मवचनगोचरपणे सापेक्षतामाटे स्यात्पदयुक्तकरीने एटलेस्यात्अस्तिअवक्तव्य एमजपांचमानीरीतें स्यात्नास्तिअवक्तव्य एछठोभांगोजाणवो

अत्रवक्तव्याभावा स्यात्पदेगृहीताः अत्रअस्तिभावावक्तव्या स्तथाअवक्तव्या तथानास्तिभावावक्तव्याअवक्तव्या एकस्मिन् वस्तुनिगुणेपर्यायेएकसमयेपरिणममानाइतिज्ञापनार्थं स्यात्अ स्तिनास्तिअवक्तव्यइतिसप्तमोभंग अत्र वक्तव्याभावास्तेस्या त्पदेसंगृहीताइतिअस्तित्वेनअस्तिधर्मानास्तित्वेनन...
युगपद्भयस्वभावत्वेनवक्तुमशक्य...

सहकारीगुणानिभाग तेउपादानकारणछे तेहिजकार्यपणेपरिणमेछे एटले ... नोव्यय अनेकार्यपणानोउत्पाद तथा चलणसहकारीपणे ध्रुवछे एमज नेविषे थिरसहायगुणनु प्रवर्त्तनछे तथाआकाशास्तिकायनेविषेपण प्रवर्त्तन एमजछे वलीपुद्गलमां पूरणगलनादिकगुणनुप्रवर्त्तनछे तेमजजीवद्रव्य नादिकगुणनुप्रवर्त्तनछे अथवावली ... समयें गुणनेविषे कारणपणो नवोनवोउपजेछे एटलेकारणपणानोपण उत्पाद एमजप्रतिसमय कार्यपणोपण नवोनवो उपजेछे एटलेकार्यपणानोपण उत्पाद एमसर्वद्रव्यने विषे सर्वगुणनो कार्यपणो कारणपणो उपजे विणसेछे एम एक स्वरूप प्रथम भेद कह्यो

तथाचसर्वेषांद्रव्याणांपारिणामिकत्वं पूर्वपर्यायव्यय नवप
र्यायोत्पाद एवमप्युत्पादव्ययौ द्रव्यत्वेनध्रुवत्वंइतिद्वितीय

अर्थ ॥ सर्वद्रव्यछेतेपरिणामिकभावेछे तिहांपूर्वपर्यायनो व्यय अनेनवापर्याय त्पाद एउत्पादव्यय समयसमयेछे अनेद्रव्यपणोध्रुवछे ए बीजो भेद॰

आत्मद्रव्यनेविषे स्वधर्मनीअस्तिताछे परधर्मनीनास्तिताछे स्वगुणनोपरिणमवो अ-
रछे अनेतेजगुणपणेनित्यछे तथाद्रव्यपिंडपणेएकछे अनेगुणपर्यायपणेअनेक छे त-
आत्माकारणपणे कार्यपणें समयसमयमांनवानवापणोजेपामेछे तेनवनधर्मछे तोप-
आत्मानोमूलधर्मजेपलटतोनथी तेअनवनधर्मछे इत्यादिकअनेकधर्म परिणतियुक्तछे
तेपद्द्रव्यनेजाणी निरधारीने हेयोपादेयपणे श्रद्धान भासनथाय तेसम्यक्ज्ञान
यक्दर्शनछे एजीवनीअशुद्धता तेपरकर्त्ता परभोक्ता परग्राहकता टालवानाउपा-
साधन तेसाधनकरवे आत्माआत्मापणें मूलधर्मेरहे तेसिद्धपणो तेनीरुचिउप-
णोकरवो एहिजश्रेयछे.

स्यात्अस्ति स्यान्नास्ति स्यात्अवक्तव्यरूपास्त्रय. सकला
देशाः संपूर्णवस्तुधर्मग्राहकत्वात् मूलतः अस्तिभावाअ
स्तित्वेनसंति नास्तित्वेनसंति एवंसप्तभंगाः एवंनित्यत्व
सप्तभंगी अनित्यत्वसप्तभंगी एवंसामान्यधर्माणां विशेष
धर्माणां गुणानांपर्यायाणां प्रत्येकंसप्तभंगी तद्यथा
दिगुणान।

इत्यने विस्रसाप्रयोगअस्तिद्‌गुणत्अवक्तव्य एत्रणभांगा वस्तुनासंपूर्ण रूप-
नागतपणानोव्यय वर्त्तमानपणानाउत्पाद अनेछतिपणेध्रुव अने अनागतकायर्यापेते
रहेताते आसन्नके० नजीकपणोपामे एटलेदूरतानोव्यय अने नजीकतानोउत्पाद
ाअतीतमध्ये दूरतानोउत्पाद अनेनजीकतानोव्यय एरीतेंसर्व द्रव्यनेविषेअतीतव-
मान तथाअनागतपणे परिणतिछे तेपरिणमेजछे एद्रव्यनेविषेस्वकालरूप परिणमन
एउत्पादव्ययनोत्रीजोभेद जाणवो.

इहांकेटलाककालनीअपेक्षालेइने परप्रत्ययपणोकहेछे तेखोटोछे कारणके कालद्र-
जेछेतेपंचास्तिकायनोपर्यायछे अने परिणतितोद्रव्यनोस्वधर्मछे माटेकालतेस्वकाल-
पवस्तुनोपरिणाम तेनोभेदछे अथवाकालनेभिन्नद्रव्यमानियें तोपणकालतेकारणपणे
अनेअतीतअनागतवर्त्तमानरूपपरिणति तेतो जीवादिकद्रव्यनोधर्मछे ते माटेए उ-
ादव्ययपणस्वरूपजछे एत्रीजोभेदथयो.

तथाचसिद्धात्मनिकेवलज्ञानस्ययथार्थज्ञेयज्ञायकत्वात्य
थाज्ञेयाधर्मादिपदार्थाः तथाघटपटादिरूपावापरिणमं
तितथैवज्ञाने भासनात् यस्मिन्समयेघटस्यप्रतिभा

आत्मद्रव्यनेविषे स्वधर्मनीअस्तिताछे परधर्मनीनास्तिताछे स्वगुणनोपरिणमवो अ-
ाछे अनेतेजगुणपणेनित्यछे तथाद्रव्यपिंडपणेएकछे अनेगुणपर्यायपणेअनेक छे त-
ात्माकारणपणे कार्यपणे समयसमयमांनवानवापणोजेपामेछे तेनवनधर्मछे तोप-
ात्मानोमूलधर्मजेपलटतोनथी तेअनवनधर्मछे इत्यादिकअनेकधर्म परिणतियुक्तछे
तेपट्द्रव्यनेजाणी निरधारीने हेयोपादेयपणे श्रद्धान ज्ञासनथाय तेसम्यक्ज्ञान
क्दर्शनछे एजीवनीअशुद्धता तेपरकर्त्ता परनोक्ता परग्राहकता टालवानाउपा-
ाधन तेसाधनकरवे आत्माआत्मापणे मूलधर्मरहे तेसिद्धपणो तेनीरुचिउद्य-
गोकरवो एहिजश्रेयछे.

स्यात्अस्ति स्यान्नास्ति स्यात्अवक्तव्यरूपास्त्रयः सकला
देशाः संपूर्णवस्तुधर्मग्राहकत्वात् मूलतः अस्तिनावाञ्च
स्तित्वेनसंति नास्तित्वेनसंति एवंसप्तनंगाः एवंनित्यत्व
सप्तनंगी अनित्यत्वसप्तनंगी एवंसामान्यधर्माणां विशेष
धर्माणां गुणानांपर्यायाणां प्रत्येकंसप्तनंगी तद्यथा
दिगुणान।

... त्वने विस्त्रसाप्रयोग... स्यात्अवक्तव्य एत्रणनांगा वस्तुनासंपूर्ण रूप-
ागतपणानोव्यय ...नपणानाउ...
रहताते आसन्न... नं एवंसप्त... स्यात् इतिषष्ठः ॥
ाअतीतमध्ये ...तेमज वलीसर्वद्रव्यतथापर्याय ते अगुरुलघुधर्म संयुक्तहोय द्रव्य-
ान तथाअनमुअनंनोछे तेअगुरुलघुसमयेंसमये प्रदेशे तथापर्याये कोइकवारेंवृद्धि
एउत्पादव्ययघटीजाय तेवधुघट्टुथवोछप्रकारेछे १ अनंतनागहानि २ असंख्यातना-
इहांकेटलायातनागहानि ४ संख्यातगुणहानि ५ असंख्यातगुणहानि ६ अनंतगु-
जेछेतेपंचाकिरेंहानि तथा १ अनंतनागवृद्धि २ असंख्यातनागवृद्धि ३ संख्यातना-
वस्तुनोप...ख्यातगुणवृद्धि ५ असंख्यातगुणवृद्धि ६ अनंत गुणवृद्धि एछप्रकारनीवृद्धि
वडेअतीतसर्वप्रदेशे सर्वपर्यायमांथाय एकप्रदेशमां कोइकसमयेंवधेछे कोइकसमयें
छे जेम परमाणुमांवर्णादिक वधेघटेछे तेमअगुरुलघुपणोपण वधेघटेछे हानिनोव्ययछे
वृद्धिनोउत्पादछे अथवावृद्धिनोव्ययछे तोहानिनोउत्पादछे पणअगुरुलघुध्रुवनोध्रुवछे
सर्वद्रव्यनेविषेजाणवो तिहांतत्वार्थटीकामां आकाशद्रव्यनें अधिकारेकह्युंछे नेल-
येंछेयें जिहांअलोकाकाशमध्ये अवगाहकजीवपुद्गलादिकद्रव्यनथीतिहांपण अगु-
घुपर्यायवंतपणो ... तेआकाशनीअनिलाना अवश्यअंगीकारेछे

तत्रअस्तिनास्तिज्ञावाःसर्वेवक्तव्याएवनअवक्त
व्याइतिशंकानिवारणायस्यात्अस्तिअवक्तव्य
इतिपचमोजंग स्यान्नास्तिअवक्तव्यइतिपष्ठ

अर्थ ॥ हवेपाचमोतथा छठोजागोकहेछे तिहांस्यात्अवक्तव्य
तेमूलधर्मेएकलो अवक्तव्यथयो तेसदेहनिवारवाने कह्योजे
स्तुमाअनताअस्तिधर्मछे पणवचनेअगोचरछे अनेअनताधर्मवचनगोचरपणे
सापेक्षतामाटे स्यात्पदयुक्तकरीने एटलेस्यात्अस्तिअवक्तव्य एपाचमो
एमजपाचमानीरीते स्यात्नास्तिअवक्तव्य एछठोजागोजाणवो

अत्रवक्तव्याजावा. स्यात्पदेगृहीता अत्रअस्तिजावावक्तव्या
स्तयाअवक्तव्या तथानास्तिजावावक्तव्याअवक्तव्या एकस्मिन्
वस्तुनिगुणेपर्यायेएकसमयेपरिणममानाइतिज्ञापनार्थं स्यातअ
स्तिनास्तिअवक्तव्यइतिसप्तमोजंग अत्र वक्तव्याजावास्तेस्या
त्पदेसगृहीताइतिअस्तित्वेनअस्तिधर्मानास्तित्वेनना[illegible]
युगपज्जयस्वजावत्वेनवक्तुमशक्य[illegible]

[illegible]
मांहे ए अस्तिनास्तिस्वजाव वखाण्या

नित्यताऽजावेनिरन्वयताकार्यस्यजवति जेधर्मास्तिकायसमये चलनसहकारीछे [illegible]
जवति अनित्यतायाअजावेज्ञायकता. अणप्र
क्रियासजव तथासमस्तस्वजावपर्याय[illegible]धारजूतजव्यदेशा
नाम्बन्धदेत्रजेदरूपाणामेकत्वपिंडीरूपापरत्याग एकस्व
जाव देत्रकालजावानाजिन्नकार्यपरिणामानाजिन्नप्रजान
रूपोनकस्वजाव एकत्वाजावेसामान्याजाव अनेकत्वाजा
वेविशेषधर्माजाव स्वस्वामित्वव्याप्यव्यापकताप्यजाव

अर्थ ॥ एमज सर्वद्रव्यमानित्यता तथाअनित्यताछे एनित्य अनित्यपणा
एकोनथी जोद्रव्यमानित्यतानहोयतो कार्यनोअन्वयकोनेहोय एटलेअनु
अनुक्रमे क्यो एमरह्योजायनही माटेद्रव्यमानित्यतामानवाथीज अनु
अनुक्रमकार्यक्यो एमरहेवायछे माटे जोद्रव्यनेनित्यपणेजमानिये तोगुणनुक्र

आत्मद्रव्यनेविषे स्वधर्मनीअस्तिताछे परधर्मनीनास्तिताछे स्वगुणनोपरिणमनो अ-
छे अनेतेजगुणपणेनित्यछे तथाद्रव्यपिंडरूपणेएकछे अनेगुणपर्यायपणेअनेक छे त-
आत्माकारणपणे कार्यपणे समयसमयमांनवानवापणोजेपामेछे तेनवनधर्मछे तोप-
आत्मानोमूलधर्मजेपलटतोनथी तेअनवनधर्मछे इत्यादिकअनेकधर्म परिणतियुक्तछे
तेषट्द्रव्यनेजाणी निरधारीने हेयोपादेयपणे श्रद्धान नासनथाय तेसम्यक्ज्ञान
सम्यक्दर्शनछे एजीवनीअशुद्धता तेपरकर्त्ता परनोक्ता परग्राहकता टालवानाउपा-
यसाधन तेसाधनकरवे आत्माआत्मापणे मूलधर्मरहे तेसिद्धपणो तेनीरुचितद्य-
नोकरवो एहिजश्रेयछे.

स्यात्अस्ति स्यान्नास्ति स्यात्अवक्तव्यरूपास्त्रयः सकला
देशाः संपूर्णवस्तुधर्मग्राहकत्वात् मूलतः अस्तिनावाअ
स्तित्वेनसंति नास्तित्वेनसंति एवंसप्तनंगाः एवंनित्यत्व
सप्तनंगी अनित्यत्वसप्तनंगी एवंसामान्यधर्माणां विशेष
धर्माणां गुणानांपर्यायाणां प्रत्येकंसप्तनंगी तद्यथा
द्विगुणान।

[illegible] विस्रसाप्रयोग[illegible] अवक्तव्य एत्रणनांगा वस्तुनासंपूर्ण रूप-
[illegible]

काविर्तिन्यूनं एवंसद्[illegible]यमां अनेकस्वनावपणछे. जोवस्तुमां एकपणा-
अर्थ ॥ तथाके० तेमज वलीसर्वद्रव्यनही अनेगुणनो पर्यायनो स्वामी आधारते कोण
हशे अगुरुलघुअनंतोन्ने तेअगुरुत्व क्यांरहे तेमाटेद्रव्यनो एकपणोछे. जोवस्तुमां
पणानमानिये तो द्रव्यतेविरूपरहितथईजाय तेथीगुणनोअनेकपणो शीरीतेद्रव्यने
गामिये माटे द्रव्यमां गुणकार्यनो अनेकपणोपणछे तथास्वस्वामिव्याप्य व्यापक-
केमछेरे जेगुणपर्याय ते स्व के० धनअनेद्रव्यतेतेनोस्वामीछे अथवा द्रव्यतेव्याप्य
गुणपर्यायते व्यापकछे एरीते द्रव्यमां एकस्वनाव तथाअनेकस्वनाव जाणवा.

स्वस्वकार्यनेदेन स्वनावनेदेन अगुरुलघुपर्यायनेदेननेदस्व
नावः अवस्थानाधारताद्यनेदेन अनेदस्वनावः नेदानावेसर्वगु
णपर्यायाणां संकरदोषः गुणगुणीलक्षलक्षणः कार्यकारणताना
शः अनेदानावेस्थानध्वंसः कस्यैतेगुणाःकोवागुणीइत्याद्यनावः
अर्थ ॥ स्वस्वके० पोतपोताना कार्यनेनेदेकरी एटले जीवद्रव्यमां ज्ञानगुण ते

णनानुकार्यकरे अनेदर्शनगुण देखवानुंकार्यकरे तथाचारित्रगुण रतारमणा
कार्यकरे तथापुद्गलद्रव्य ते रूपपणोभिन्नकार्यकरे तथारसपणो गधपणो र
स्पर्शपणो सर्वकार्यभिन्नछे तथास्वभावभेदते अस्तिस्वभावछतिरूपछे नित्यस्वभाव अ
नाशीपणोछे अनित्यपणोते पलटणरूपछे एकपणोतेपिंडरूपछे अनेकपणोते प्रदेश
कछे इत्यादि स्वभावभेद तथाअगुरुलघुपर्याय प्रदेशगुणाविभागें जूदोजूदोछे पोत
नोतुल्यनथी हानिवृद्धिरूपपरिणमनछे इत्यादि प्रकारे द्रव्यमाभेदस्वभावछे

तथा सर्वधर्मनो अवस्थानके० रेहेवो तेनेआधारपणो कार्यनी तुलनाके० स
पणोकेवारें भिन्नपडतोनथी तेमाटेद्रव्यमा अभेदस्वभावछे

जोद्रव्यगुणपर्यायमाभेदस्वभावनहोयतो सर्वसंकरएकपणोथाय तेवारें कार्यनो
केमपडे तेमाटे सर्वद्रव्यगुणपर्यायमा भेदसर्वभावछे जीवतेचेतनालक्षणवंत अ
चेतनारहित एभेदछे अजीवमध्ये जेधर्मास्तिकायद्रव्यते चलणसहकारनेकरेछे प
जाअजीवद्रव्यतेएकार्यकरतानथी एमअधर्मास्तिकाय थिरसहायगुणनेकरेछे आक
अवगाहदाननेकरेछे पुद्गलरूपी आवरणस्कधादिकपरिणमनकरेछे एमसर्वद्रव्यनें
तोजभिन्नभिन्नद्रव्यकहेवायछे इहांकोइकहेशेके जीवअनंतातेतोसरिखाछे तोसर्वनें
एकद्रव्यपणासरतेनकह्यो तेनेउत्तरजेरूपैया सोनारूपापणे अथवा धवलापणे तो
सरिखाछे पणवस्तुनापिंडपणे भिन्नछे तेमाटे सोनेपण भिन्नभिन्नकहियेंछैयें तेमर्
पण भिन्नभिन्नकहियें वलीउत्पादव्ययनोफिरवो सर्वमा तेजरीतनोछे पणपण
एकरीतनोनथी तथाअगुरुलघुनी हानिवृद्धिनो फिरवोपण सर्वद्रव्यमा पोतपोता
तेथीसर्वजीव तथासर्वपरमाणुभिन्नछे एभेदस्वभाव जाणवो

तन्मयतावस्थानाधारतायभेदेन अभेदस्वभाव तथातन्मयता अवस्थानतानो
दछे अनेआधारतानोपण अभेदपणोछे तेअभेदस्वभावछे

तथाभेदनोजो अभावपणोमानियें एटलेवस्तुमाभेदपणो नमानियेंतो सर्वगुण
पर्यायनो सकरके० एकमेकपणो एदोषलागे तोगुणीकोण तथागुणकोण द्रव्यको
गुणपर्यायने केडद्रव्यनो कयोपर्याय एमभेदहेचणथायनही गुण तथागुणी तथा
स्वभावोग्यलक्षण तेनुचिन्ह तथाकारणधर्म तथाकार्यधर्मता एवेजुदापडेनही का
नयाकारणधर्मनो नाशथाय माटेवस्तुमा भेदस्वभावमानवो

तथाजोवस्तुमाअभेदपणोनमानियें तोस्थानध्वसथायछे जेस्थान कोण नेनि
वमा रहेनेकोणछे इत्यादिकनोअनाश्रयथायछे एमविचारता सर्वथाएकपणोमानता
एवी अनेकोगणुण एमउभयापत्तथाय एरीतेंभेदाभेदस्वभावस्तुमा मानवा

परिणामिकत्वेउत्तरोत्तरपर्यायपरिणमनरूपोभव्यस्वभावः त
थातत्वार्थवृत्तौ इहतुभावेद्रव्यंभव्यंभवनमितिगुणपर्यायाश्च
भवनसमवस्थानमात्रकाएवउत्थितासीनोतकुटकजागृतशयि
तपुरुषवत्तदेवच वृत्यंतरव्यक्तिरूपेणोपदिश्यते जायतेअ
स्तिविपरिणमतेवर्द्धते अपक्षीयते विनश्यतीति पिंडातिरिक्त
वृत्यंतरावस्थाप्रकाशतायांतुजायतेइत्युच्यते सव्यापारैश्चभ
वनवृत्तिः अस्तिइत्यनेननिर्व्यापारात्मसत्ताख्यायते भवनवृ
त्तिरुदासीनाअस्तिशब्दस्यनिपातत्वात् विपरिणमतेइत्यनेन
तिरोभूतात्मरूपस्यानुछिन्नतयावृत्तिकस्यरूपांतरेणभवनं य
थाक्षीरंदधिभावेनपरिणमते विकारांतरवृत्याभवनवत्तिष्टते
वृत्यंतरव्यक्तिहेतुभाववृत्तिर्वाविपरिणामःवर्द्धतइत्यनेनतुपच
यरूपःप्रवर्तते यथांकुरोवर्द्धतेउपचयवत्परिणामरूपेणभवन
वृत्तिर्व्यज्यते अपक्षीयते इत्यनेनतुतस्यैवपरिणामस्यापच
यवृत्तिराख्यायते दुर्बलीभवत् पुरुषवत्पुरुषवदपचयरूप
भवनवृत्यंतरव्यक्तिरुच्यते विनश्यति इत्यनेनाविर्भूतभवन
वृत्तिस्तिरोभवनमुच्यते यथाविनष्टोघटः प्रतिविशिष्टसमव
स्थानात्मिकाभवनवृत्तिस्तिरोभूतानत्वभावस्यैवजाता कपाला
द्युत्तरभवनवृत्यंतरक्रमाविछिन्नरूपत्वादित्येवमादिभिराकारैर्द्र
व्याण्येवभवनलक्षणान्यपदिश्यंते त्रिकालमूलावस्थायाअ
परित्यागरूपोऽभव्यस्वभावः भव्यत्वाभावविशेषगुणानाम
प्रवृत्तिः अभव्यत्वाभावेद्रव्यांतरापत्तिः

अर्थ ॥ हवे भव्यस्वभाव तथाअभव्यस्वभावकहेछे जीवअजीवादिक द्रव्यछे तेप-
रिणामिछे समयेसमये नवानवापरिणामें परिणमेछे तिहांपूर्वपर्यायनेविनाशे अने उत्त-
र नवानवापर्यायनेप्रगटवे एवीजे द्रव्यनीपरिणति तेनुंमूलकारणते भव्यस्वभाव
ए तिहांतत्वार्थटीकामध्येकह्योछे इहांद्रव्यानुयोगनेविषे भावधर्मनेविषे एटले
पर्यायनेविषे द्रव्य ते भव्यके० भवनयथो एटलेनवोनीपजवो तेभवन इतिके०

एमवस्तुना गुणपर्यायजेछे तेभवनके० नवोथवारूप समवस्थानमात्रछे एटले
थावारूपछे तिहांदृष्टांतकहेछे जेपुरुष उत्थितके० ऊठ्यो आसीनके०
बेसवुतेपआसनकहियें अथवाउकरूंतेआसनसहितसवु जेमहत्या
यछे तेम तेहज भूत्यंतरके० पूर्वपर्यायनोविनाश अनेउत्तरपर्यायनो उपजवोते भूत्यंत
हियें भूत्यंतरव्यक्तिरूपपणेउपदेशेछे तेजननधर्मनीप्रवृत्तिकहेछे जायतेके०
स्तिके० छतिपणेरहे विपरिणमतेके० वीजापणेपरिणमे वलीसामर्थ्यधर्मेवधे अने
क्षीयतेके० घटे विनश्यतिके० विनाशपामे पिंडके० समुदायपणे तेथी अति
वीजीवृत्तिजे गुणनी प्रवृत्यंतरनी अवस्थाने प्रकाशयवे करीने जे
छेरीजेजननवृत्ति तेसव्यापारछे पणनिर्व्यापारनथी

अस्तिएवचने निर्व्यापार आत्मशक्तिछे तेकहियेंछैयें तेपण जननवृत्तिथी
नछे एटलेजवनवृत्तिने ग्रहणकरतीनथी अस्तिशब्दने निपातपणोछे विपरि
तिरोभूतके० अणप्रगटीजेवस्तु तेमांतद्रूपपणे अनुछिन्नके० विछेदगई
तेरीतें वर्त्ततिआत्मशक्ति तेनोरूपांतरेथवो तेभवनकहियें तिहांदृष्टांत जेम क्षीरते
दधिभावेपरिणमे विकारांतरेथवो तेरीतेरहे एभवनधर्मकहियें जेज्ञानादिपर्यायमा
नतज्ञेय जाणवानीशक्तिछे पणजेज्ञेय जेरीतेंपरिणमे तेरीतेंज्ञानगुणप्रवर्त्ते
प्रवर्त्तन तेप्रतिसमयें विपरिणामपणे परिणमनछे एपणभवनधर्मछे
अन्यपणे व्यक्तिनेहेतुकरणे जेभवांतरें वर्त्तनो तेविपरिणामकहियें तथावली
वधेएवचने उपचयरूपपणेप्रवर्त्ते जेमअंकुरवधेछे तेमवर्णादिक पुद्गलना
वधे एउपचयरूपभवनतावृत्ति व्यज्यतेके० प्रगटकरियेंछैयें,

एमगुणने कार्यांतरपणे परिणमवे द्रव्यमां भवनधर्मछे अपक्षीयते
तुके० वली तेहिजपरिणामनो ऊणोथवो अथवाटलवोकहियें
जेमपुरुषदुर्बलथाय तेमपर्यायनेघटवे द्रव्यप्रमाणादिक तथातेसमये अगुरुलघुपर्या
टवे तेदुर्बलथवु तेरूपजेजननवृत्तिनेअंतरे व्यक्तिके० प्रगटताकहिये तथा
एमकहेवाथी आविर्भूतके० प्रगटथयोजेजननधर्मनुवर्त्तवो तेनो तिरो
विपस्योघट जेमृत्पिंडनेविषे तेचक्रादिकारणे प्रगटथयोजेघट तेनेप्रध्वंसे
एमद्रव्यनेविषे कार्यकरवारूपजेपर्याय तेने तिरोभावें अन्यपणे कार्यकरणरीतें
स्थानजेरहेवु तेमसमयेंतेजननवृत्तिकहियें तथा तिरोभावपणानेअभावें थाउने
दिक उत्तरजनन तेपणेवर्त्तवु एपणभवनधर्मछे एमअनुक्रमेअविछिन्न निरंतररूपे
दि अनेकआकारें द्रव्यतेजननलक्षणकहियें एभव्यस्वभाव जाणवो द्रव्यनेवि
अस्तित्व वस्तुत्व प्रमेयत्व अगुरुलघुत्वादिक धर्मतेभणेकालमा मूलअवस्थाने

गगेके० तजतानथी तेहिजरूपपणेरहे एहवाजेटलाधर्मते अजव्यस्वजावजाणवो जेअ-
क उत्पादव्ययने परिणमने फिरवेफिरे पणजीवनोजीवपणोपलटायनही तेमज अ-
ीवनो अजीवपणो पलटायनही एसर्वअजव्यस्वजावजाणवो.

हवे एवेस्वजाव जोद्रव्यमांनमानियें तोस्योदोषथाय तेकहेछे जोद्रव्यनेविषे जव्य-
णोनमानियें तोद्रव्यनाजेविशेषगुण गतिसहकार स्थितिसहकार अवगाहदान ज्ञाय-
ता वर्णादिजेपंचास्तिकायना विशेषगुण तेनीप्रवृत्तिनथाय अनेप्रवृत्तिविना कार्यनो
रवोनथाय अनेकार्यनेअणकरवे द्रव्यनोव्यर्थपणोथाय तेमाटेजव्यस्वजावछे.

जोद्रव्यनेविषे अजवनरूप अजव्यस्वजावनहोय अनेएकलो जवनस्वजावजहोय
ोनवानवापणेथवे तेद्रव्यपलटीने अन्यद्रव्यथयीजाय तेमाटे द्रव्यत्व सत्य प्रमेयत्वा-
दे धर्मेअजव्यपणोछे तेथीज द्रव्यपलटतोनथी तेमनोतेमजरहेछे एअजव्यस्वजावछे.

वचनगोचरायेधर्मास्तेवक्तव्या इतरेअवक्तव्याः तत्राक्
राः संख्येयाः तत्संनिपाताअसंख्येयाः तद्गोचराजा
वाः जावश्रुतगम्याः अनंतगुणः वक्तव्याजावेश्रुताग्र
हणत्वापत्तिः अवक्तव्यजावे अतीतानागतपर्यायाणां का
रणतायोग्यतारूपाणामजावः सर्वकार्याणां निराधारताप
त्तिश्च सर्वेषांपदार्थानांये विशेषगुणाश्चलन स्थित्यवगाह
सहकारपूर्णगलनचेतनादयस्तेपरमगुणाः शेषाः साधार
णाः साधारणासाधारणगुणास्तेषां तदनुयायिप्रवृत्तिहेतुः
परमस्वजावः इत्यादयः सामान्यस्वजावाः

अर्थ ॥ आत्मानो वीर्यनामागुण तेनाअविजाग जेवीर्यांतराय कर्म्मेआवस्याछे तेज
ीर्यांतरायनेक्षयोपशमें तथाक्षयथवाथी प्रगव्योजेवीर्यधर्म तेनेजापापर्याप्ति नामकर्म-
नेउदयें लीधराणाजे जापावरगणानांपुजल तेशब्दपणेपरिणमे तेशब्दपुजलखंधछे पण
श्रोताजनने ज्ञाननाहेतुछे एटलेजेमांजेगुणनहोय तेगुणनुंकारणपण थायनही एमजे
कहेछे तेमृषाछे केमकेजेनिमित्तकारणहोय तेमांगुणहोयकिंवानपणहोय अने उपादान
कारणमां तेगुणनाकारणतापणे तथा योग्यतापणेनियामकछे तेवचनयोगेंज ग्रहवाय ए-
वाजेवस्तुमांधर्मछे तेनेवक्तव्यधर्मकहियें अनेतेथीइतरके० जूदाजेधर्मास्तिकायद्रव्यमां
अनेकधर्मछे तेवचनमांग्रहवातानथी तेवासर्वधर्म अवक्तव्यकहियें तेवक्तव्यधर्मथी अव-
क्तव्यधर्म अनंतगुणाछे वचनतोसंख्याताछे पणतेवचनोमां एवो सामर्थ्यछे जेअवक्तव्यधर्म

सर्वनो ज्ञायपणोथाय उक्तच अनिलप्पाजेजावा अणतजागोयअणनिलप्पाण थ
प्पसाणतो जागसुएनिवद्धोअ ॥ १ ॥ तत्रके० तिहां अक्षरसंख्याताछे तेअक्षरस
न्निपात संयोगीजाव असंख्याताछे तेअक्षरसन्निपातने ग्रहणाय पवाजे पदार्थ
जाव तेअनंतगुणाछे तेथीअवक्तव्यजाव अनंतगुणाछे जेमतिज्ञान श्रुतज्ञान
जावनो परोक्षप्रमाणेग्राहकछे अवधिज्ञान तेपुद्गलनो प्रत्यक्षप्रमाणेजाणगछे
रमाणुना सर्वपर्यायने जाणेनहीं केटलाकपर्यायनेजाणे
नेकेवलज्ञान एछद्रव्यनासर्वपर्यायने एकसमयमा प्रत्यक्षजाणे माटेजो
पणोनहोय तो श्रुतज्ञानेग्रहणथायनहीं अने जेग्रथाभ्यासउपदेशादिक
तेतोएमनथीमाटेद्रव्यमावक्तव्यपणोछे

अवक्तव्याजावेके० अवक्तव्यपणाने नमानियेंतो अतीतपर्याय तेवस्तु
परंपरामारह्याछे तथा अनागतापर्याय सर्वयोग्यतामारह्याछे
वस्तुमा वर्त्तमानपर्यायनी वर्तिपामियें तेथी अतीतअनागतनो ज्ञानथायनहीं
वक्तव्यस्वजाव अवस्थमानजो अनेवर्त्तमान सर्वकार्य ते निराधारथइजाय
एकसमयमा अनताकारणछे तेअनताकारणना अनताकार्यधर्मछे अनेअनताकार्यना
नताकारणपरंपरानु ज्ञानतेकेवलीनेछे अनेवर्त्तमानकालें कारणधर्मतथाकार्यधर्मथी
नतगुणा कारणकार्यनी योग्यरूपसत्ताछे तेकोइना अविजागनथी पण अविजागी
नादिकगुण तेमा अनता कारण धर्म अनताकार्य धर्म ऊपजवानी
छे ते सर्व अवक्तव्यरूपछे

हवेपरमस्वजावनु स्वरूपकहेछे सर्वजे धर्मास्तिकायादिकपदार्थ तेनाविशेषगुण
धर्मास्तिकायनो चलनसहकारीपणो तथाअधर्मास्तिकायनो स्थितिसहाय आकाश
स्तिकायनो अवगाहक तथापुद्गलद्रव्यनो पूरणगलन जीवद्रव्यनो चेतनालक्षण
द्रव्यना विशेषगुणकह्या एमलक्षणरूप तथाद्रव्यांतरथी जिन्नपाडवानु मूल
परमप्रकृष्टगुणकहियें एप्रधानगुणने अनुयायी बीजाजे साधारणगुण ते गुण
स्तिकायमा पामियें तेनानाम अविनाशीपणो अरूपणो नित्यत्वादिकधर्म
कायने सरिखाछे तेमाटेसाधारणगुण तथापचास्तिकायमा कोइक अस्तिकायमा
यें कोइकमांनपामियें तेगुणने साधारणअसाधारणकहियें तेसर्वगुणनेविषे विशेषगुण
अनुयायिप्रवर्त्तनछे ते प्रवर्त्तननाकारण द्रव्यमा एकपरमस्वजावपणोछे
परिणमने द्रव्यनासर्वगुणमुख्यगुणने अनुगमेजप्रवर्त्ते तेपरमस्वजाव सर्वद्रव्यनेविषे
एटले तेरसामान्यस्वजाव कह्या वली अनेकातजयपताकामाकह्याछे

तथास्तित्व नास्तित्व कर्तृत्व भोगृत्व असर्वगतत्व प्रदेशवत्वादिभावाः पुनः तत्वार्थटीकायांपुनरप्यादिग्रहणंकुर्वन्ज्ञापयत्यत्रानंतधर्मवत्वं तत्राशक्ताः प्रस्तारयंतुसर्वेधर्माः प्रतिपदंप्रवचनत्वेनपुंसायथासंभवमायोजनीयाः क्रियावत्वंपर्यायोपयोगिताप्रदेशाष्टकनिश्चलता एवंप्रकाराः संति भूयांसः अनादिपरिणामिकाभवंतिजीवस्वभावाः धर्मादिभिस्तुसमानाइतिविशेषः

अर्थ ॥ तेमज अस्तिपणो नास्तिपणो कर्त्तापणो भोक्तापणो गुणवंतपणो असर्वव्यापणो प्रदेशवंतपणो इत्यादिअनंतस्वभाववंतद्रव्य छे तेमज तत्वार्थ टीकामध्ये परिणामिकभावनाभेद वखाणतांकह्योछे पुनरपिआदिशब्दना ग्रहणकरतां एमजणावेछे जे वस्तुअनंतधर्मवंतछे तेसर्वेविस्तारीशकेनही तोपणद्रव्यद्रव्यनेविषे प्रवचनजाणपुरुषे यथासंभवेतेमधर्मजोडवा तथाक्रियावंतपणो जेज्ञानादिकगुण तेलोकालोकजाणवाने प्रतिसमयेंप्रवर्त्तेछे श्रीभाष्यकारें ज्ञानादिगुण तेकरणअने तेजगुणनीप्रवृत्ति तेक्रियाजाणवी तथादेखवोतेकार्य एमधर्मास्तिकायादिकना सर्वेगुण तेत्रणपरिणतियें परिणामीछे माटेपंचास्तिकाय तेअर्थक्रियाकरेछे तेक्रियावंतपणोजाणवो सर्वपर्यायनो उपयोगीपणो एपणजीवस्वभावछे तथाप्रदेशाष्टकनी निश्चलता एपणजीवनोस्वभावछे तिहांधर्मास्ति अने आकाश ए त्रण अस्तिकायनाप्रदेश अनादिअनंतकाल अवस्थितपणेछे पुद्गल चलणपणो सदासर्वदाछे पुद्गलपरमाणु तथा पुद्गलस्कंध तेसंख्यातोकाल अथवाअसंख्यातोकाल एकक्षेत्रेरहेपणपछे अवश्यचलथाय तथाजीवद्रव्यने सकर्म्मा संसारीपणे क्षेत्रथी क्षेत्रांतरगमन भवथी भवांतरगमनरूप चलताछे तेजीवने सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान अने सम्यक्चारित्रने प्रगटवे सर्वपरभावभोगीपणो निवारवे आत्मस्वरूप निराधारण स्वरूपभासन स्वरूपपरिणमने करवे स्वरूपएकत्वें स्वधर्मकर्त्ता स्वधर्मभोक्तापणे सकलपरभावतजवे निरावरण निःसंग निरामय निरूंद्रनिष्कलंक निर्मलस्वीय अनंतज्ञान अनंतदर्शन अनंतचारित्र अरूपी अव्यावाध परमानंदमयी सिद्धात्मा सिद्धक्षेत्रेरह्या तेसादिअनंतकाल स्थिरछे सकलप्रदेशस्थिरछे अनेसंसारीजीव तेनाआठप्रदेश सदासर्वदास्थिरछे तेआठप्रदेश निरावरणे तथा आचारांगनीटीका शैलंगाचार्यकृतना लोकविजयाध्ययनने प्रथमोद्देशके तदनेन पंचदशविधेनापियोगेनात्मा अष्टौप्रदेशान्विहाय तप्तभाजनोदकवद्उद्वर्त्तमानैः सर्वेरेवात्मप्रदेशैरात्मप्रदेशावष्टब्धाकाशस्थं कार्मणशरीरयोग्यं कर्मदलीकं यत्वघ्नाति तत्प्रयोगकर्मेत्युच्यते.

एटले आत्मप्रदेशे कर्मलागतानथी इहांकोइपुछेजेआत्मप्रदेशनिरावरणछे तो लोककेमजाणतानथी तिहांउत्तरजे आत्मद्रव्यनी जेगुणप्रवृत्ति तेसर्वप्रदेशे तोतेमा एआत्मप्रदेश अल्पछे तेथीआत्मप्रदेशमा सर्वगुणनिरावरणछे पण कार्य करता नथी जेमअग्निनुअत्यतसूक्ष्मकणीयुहोय तेमा दाहक पाचक प्रकाशक अल्पतामाटे दाहकादिकार्य करीशकतुनथी

वलीकोइपुछेजे एआत्मप्रदेश ते निरावरण केमरहीशक्या तेनुउत्तर जेच तेनेकर्मलागे पणअचलप्रदेशने कर्मलागेनही एमजगवतीसूत्रेकयुछे जेयइ लइ फदइ घट्टइ सेवधइ एपाठछे तेमाटे जेचलहोयतेवधाय अनेआत्मप्रदेश तो तेथी एआत्मप्रदेशने वधनथी तथाकार्याभ्यासे प्रदेशनेला थाय तेथी तिहातेकार्यकरवाने प्रवर्त्तेछे तथाजेद्रव्यनो जेगुणजेप्रदेशेहोय तेगुणतेप्रदेशमूकी न्यक्षेत्रेजायनही तथाजीवना आत्मप्रदेश सर्वथानिरावरणछे बीजा अनंतमोजाग चेतनासर्वदाउघाडीछे एरीते सतिके० छेथ५ दि २ ा ४ जयतिके० होय अनादिपरिणामिकजावछेते जीवनाजावछे अने सप्रदेशादिक कायप्रमुखनेविषे समानछे एमजाणवो इत्यादिकशेषस्वनावछे

निन्ननिन्नपर्यायप्रवर्त्तनस्वकार्यकरणसहकारजूता पर्यायानुगत परिणामविशेषस्वनावा तेचके १ परिणामिकता २ कर्तृता ३ ज्ञायकता ४ ग्राहकता ५ जोक्तृता ६ रक्षणता ७ व्याप्यव्यापकता ८ आधाराधेयता ९ जन्यजनकता १० अगुरुलघुता ११ विजूतकारणता १२ कारकता १३ प्रजुता १४ जावुकता १५ अजावुकता १६ स्वकार्यता १७ सप्रदेशता १८ गतिस्वनावता १९ स्थितिस्वनावता २० अवगाहकस्वनावता २१ अखण्डता २२ अचलता २३ असगता २४ अक्रियता २५ सक्रियता इत्यादिस्वीयोपकरणप्रवृत्तिनैमित्तिका उक्तचसमतो आरोपोपचारेण यद्यदपेक्षते तन्नवस्तुधर्म उपाधितानवनात् नचोपाधिवस्तुसत्ताइति

अर्थ ॥ हवेविशेषस्वनावकहेछे निन्ननिन्नजेपर्यायछे तेनुकार्यकारणपणे जेप्र तेना सहकारभूत जेपर्यायानुगतपरिणामि एवाजेस्वनाव तेविशेषस्वनावकहियें अनेकनेदछे ते श्रीहरिजद्रसूरिकृत वार्तिकसमुच्चयग्रथमाकह्याछे ते कहेछे

-१ सर्वद्रव्यने पोतानागुण समयसमयमां कार्यकरवेप्रवर्त्ते ते भिन्नभिन्न परिणामे
-णमे तेसर्वपोतानागुण तेने कारणीकठे तेपरिणामिकपणोकहियें २ तत्रकर्तृत्वं जीव-
-ान्येषां तिहांआत्माकर्त्ताठे एटलेकर्त्तापणो जीवद्रव्यनेविषेठेअप्पाकत्ताविकत्ताय
-े उत्तराध्ययनवचनात् ३ ज्ञायकता जाणपणानीशक्ति जीवनेविषेठे ज्ञानलक्षणजी-
तेमाटेगिन्हईकांईएणंइतिआवश्यकनिर्युक्तिवचनात् ४ ग्राहकशक्तिपणजीवनेठे गृ-
-तीतिक्रियानोकर्त्ता जीवठे ५ जोक्ताशक्तिपण जीवमांठे जोकुणइ सोजुंजइ यःक-
सएवजोक्ता इतिवचनात् १ रक्षणता २ व्यापकता ३ आधाराधेयता ४ जन्यजन-
-ा तत्वार्थवृत्तिमध्येठे तथा अगुरुलघुता विजुता करणता कार्यता कारकता ए श-
-जीव्याख्या श्रीविशेषावश्यकेंठे जावुकता तथा अजावुकताशक्ति तेश्रीहरिजद्रसू-
कृतजावुकनामे प्रकरणमध्येकहिठे.

एमकेटलीकशक्तिजैननातर्कग्रंथोजे अनेकांतजयपताका सम्मतिप्रमुखमांठे तथाऊ-
प्रचयशक्ति अनेतिर्यक्प्रचयशक्ति उंघशक्ति समुचितशक्ति एसर्वसंमतिग्रंथनेविषेठे
-ाजेछिगुणीआत्मामाने तेसर्वधर्मशक्तिरूपजमानेठे तेणेदानादिकलब्धि अव्याबाध
-प्रमुख शक्तिमानीठे इहांव्याख्यांतरे जेगुणकरणठे तेनेकर्त्तादिकपणो तेसामर्थ्यठे
-णवोदेखवो तेकार्यठे केटलीकशक्तिजीवमांजठे अनेकेटलीक पंचास्तिकायमध्येठे त-
-देवसेनकृत नयचक्रमध्ये जीवनेअचेतनस्वजाव मूर्तस्वजाव तथापुद्गलपरमाणुने चे-
-स्वजाव अमूर्तस्वजावकह्या तेअसत्ठे एतोआरोपपणेकोइककहे तेकथनमात्रजाण-
पणएवातठतीमांनथी जेधर्मआरोपें तथाउपचारेंगवेषाय तेवस्तुनोधर्मनथी उपाधी-
-थायठे तेमाटेजेउपाधि तेवस्तुनीसत्तानथी एमधारवुं.

धर्मास्तिकायेअमूर्ताचेतनाक्रियगतिसहायादयोगुणाः अधर्मा
स्तिकाये अमूर्त्ताचेतनाक्रियस्थितिसहकारादयोगुणाःआकाशा
स्तिकाये अमूर्ताचेतनाक्रियावगाहनादयोगुणाः पुद्गलास्तिकाये
मूर्ताचेतनसक्रियपूर्णगलनादयोवर्णगंधरसस्पर्शादयोगुणाः जी
वास्तिकायेज्ञानदर्शनचारित्रवीर्या व्याबाधामूर्त्तागुरुलघुअनव
गाहादयोगुणाः एवंप्रतिद्रव्यंगुणानामनंतत्वंज्ञेयं ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायना गुण चार १ अरूपी २ अचेतन ३ अक्रिय ४ गतिसहाय
-त्यादिअनंतगुणठे अधर्मास्तिकायनागुण चार १ अरूपी २ अचेतन ३ अक्रिय ४ स्थि-
-तसहाय इत्यादिअनंतगुणठे आकाशास्तिकायनागुणचार १ अरूपी २ अचेतन ३ अ-

क्रिय ४ अवगाहनादिक अनंतगुणछे पुद्गलास्तिकायनागुण चार छे १ रूपी २ ... ३ सक्रिय ४ पूर्णगलन १ वर्ण २ गंध ३ रस ४ स्पर्श इत्यादिकगुणअनंताछे ... कायनेविषे १ ज्ञान २ दर्शन ३ चारित्र ४ वीर्य ५ अव्याबाध ६ अरूपी ७ ... ८ अनवगाहादिकअनंतगुणछे एरीते द्रव्यनेविषे अनंतागुणजाणवा

पर्यायाः षोढा द्रव्यपर्यायाअसंख्येयप्रदेशसिद्धत्वादय १ द्रव्य व्यंजनपर्याया द्रव्याणाविशेषगुणाश्चेतनादयश्चलणसहायादय श्च २ गुणपर्याया गुणा विभागादयः ३ गुणव्यंजनपर्यायाज्ञा यकादय कार्यरूपा मतिज्ञानादय ज्ञानस्यचक्षुर्दर्शनादयो द र्शनस्य क्षमामार्दवादय चारित्रस्यावर्णागंधारसास्पर्शादयोमूर्त स्यइत्यादि ४ स्वभावपर्यायाअगुरुलघुविकारा तेचद्वादशप्र कारा षट्गुणहानिवृद्धिरूपा अवाग्गोचरा एतेपंचपर्यायास र्वद्रव्येषु विभावपर्याया जीवेनरनारकादय पुद्गलेद्व्यणुकतो नंताणुकपर्यतास्कंधा

अर्थ ॥ हवेनयज्ञानकरवानो अधिकारकहेछे तिहाद्रव्यास्तिकनयनामूलभेद शुद्धद्रव्यास्तिक २ ... देवले ... तीमाद्रव्य ... स्याछे ते ... तेस ... तेमाटेछ

हवेपर्यायना ८ भेद कहेछे तिहा प्रथम १ जेद्रव्यनेविषे एकत्वपणे रह्या जे जीव असंख्याताप्रदेश तथाआकाशना अनंताप्रदेश एद्रव्यपर्यायकहियें २ ... सकत्वादिक तथाद्रव्यनोव्यंजकके० प्रगटपणोजेमानेछे तेद्रव्यव्यंजनपर्यायकहि ...

द्रव्यनोविशेषगुण जेअन्यद्रव्यमानथी तेनेविशेषगुणकहियें ते... अने धर्मास्तिकायमाचलणसहकार तथा अधर्मास्तिकायमाथिरसहकार अवगाहदान पुद्गलमा पूरणगलणरूप एसर्वेस्वद्रव्यनीभिन्नताने प्रगटकरे छे एधर्मनेद्रव्यव्यंजन पर्यायकहियें

३ एकगुणना अविभाग अनंताछे तेनोपिंडपणो तेगुणपर्यायकहिये ४ ... र्यायतेज्ञाननो जाणगपणो तथाचारित्रनो थिरतापणो इत्यादिक अथवा ... दांतर ज्ञाननाभेद जे मतिज्ञानादिक पांच तथादर्शनगुणना चक्षुदर्शनादिक चारित्रगुणना क्षमादिकभेद पुद्गलनोरूपीगुण तेनाभेदवर्ण गंध रस स्पर्श ... अरूपीगुणना अवर्णे अगंधे अरसे अफासे इत्यादिकचारजाणवा ते गुण ...

स्वजावपर्याय ते वस्तुनोकोइकस्वजावज एवोछे तेअगुरुलघुपणे छे छ प्रकारनीवृद्धि छप्रकारनी हानी एवीरीतें बारप्रकारें परिणमेछे इहांकोइप्रेरकनो योगनथी वस्तुनेमूर्मेनोहेतुछे एनोस्वरूपपूरूं वचनगोचरनथी अनुजवगम्यनथी केमकेश्रीगणांगसूत्रनी कामध्येश्रुतज्ञानवृद्धिना सातअंगछे तिहांप्रथम सूत्रअंग वीजुं निर्युक्तिअंग ३ जाअंग ४ चूर्णिवालोसूत्रादि सर्वनाअर्थकहेछे ५ टीकाव्याख्यानिरंतर एपांचअंगतो रूपछे तथाछठोअंगपरंपरारूपछे तथासातमुंअंगअनुजव एसातेकारणे विनयसहिणतां सुणतांथकांसाचाअर्थ पामिने आत्मानुंज्ञाननिर्मलथाय श्रीजगवतिसूत्रे गाथा छोखलुपढमो बीउनियुत्तिमिसिउंजणीउं तइयोअनिरवसेसो एसविहिहोइअणु- एपांच पर्यायकह्या तेसर्वद्रव्यमध्येछे.

६ विजागपर्याय तेजीव तथापुद्गलमध्येजछे तेविजावपर्यायजीवने नरनारकीपणुं पाते तथा पुद्गलनो द्व्यणुकत्र्युणुकादिकखंधनो मिलवुंअनंताणुकपर्यंत अनंतपुद्गलधरूप ते विजागपर्याय कहियें.

मेर्वाद्यनादिनित्यपर्यायाः चरमशरीरत्रिजागन्यूनावगाहनादयः सादिनित्यपर्यायाः सादिसांतपर्यायाजवशरीराध्यवसायादयः अनादिसांतपर्यायाजव्यत्वादयः तथाचनिक्षेपाः सहजरूपावस्तुनः पर्यायाःएवंचत्वारोवथ्थुपजायाइतिजाष्यवचनात्नामयुक्तेप्रति वस्तुनिनिक्षेपचतुष्टयंयुक्तमउक्तंचानुयोगद्वारेजथ्थयजंजाणिज्जा निरकेवंनिरकवेनिरवसेसं जथ्थयनोजाणिज्जा चउक्कयंनिरकवेतथ्थ तत्रनामनिक्षेपः स्थापनानिक्षेपः द्रव्यनिक्षेपः जावनिक्षेपः तत्रनामनिक्षेपोद्विविधः सहजः सांकेतिकश्च स्थापनाऽपिद्विविधा सहजाआरोपजाच द्रव्यनिक्षेपोद्विविधः आगमतोनोआगमतश्च तत्रआगमतः तदर्थज्ञानानुपयुक्तः नोआगमतोज्ञशरीर जव्यशरीर तद्व्यतिरिक्तजेदात्रिधाजावनिक्षेपोद्विविधः आगमतो नोआगमतश्चतद्ज्ञानोपयुक्तः तद्गुणमयश्च वस्तुस्वधर्मयुक्तं तत्रनिक्षेपावस्तुनः स्वपर्यायाधर्मजेदाः

अर्थ ॥ पुद्गलनुंमेरुप्रमुख तेअनादिनित्यपर्यायछेजीवनीसिद्धावस्था सिद्धावगाहनाकतेसादिनित्यपर्यायछे तथाजावअनेशरीर तथाअध्यवसाय एत्रणप्रकारनायोगस्थाजे वीर्यनाक्षयोपशमथीउपना तेमांकपायस्थान जेचेतनानोक्षयोपशम कपायनाउद-

यथीमिथ्या अनेसयमस्थानजे चारित्रनो क्षयोपशमपरिणामी जेचेतनादिकगुण
अध्यवसायस्थानक तेसादिसांतपर्यायछे मनयोग्यताधर्म ते
तेअनादिसातछे जेसिद्धत्वपणोप्रगटे जव्यत्वपर्यायनोविनाशछे तेमाटे अनादि
छे पणअतयवासहितछे माटेअनादिसांतपर्यायछे एमपर्यायअनेकजाणवा

तथावस्तुमा सहजना जेचारनिक्षेपाछेतेपणवस्तुनास्वपर्यायछे तेश्रीवि...
जाष्यमध्येकह्योछे चत्वारोवत्थुपज्जाया एवचनछे तेमाटेस्वपर्यायकहियें वळी श्री
गद्धारसूत्रमाकह्योछे जिह्वाजेवस्तुना जेटलानिक्षेपाजाणियें तिहा तेवस्तुना ...
क्षेपाकरियें कदाचितअधतानिक्षेपा जासनमानआवे तोपण १ नाम २ थापना
३ जाव एचारनिक्षेपातो अवश्यकरवा तेमांनामनिक्षेपानाजेदछे

१ सहजनाम २ साकेतिकनाम तेकोइकनोकरयोनाम तथास्थापनानाजेदछे
स्थापना तेवस्तुनीअवगाहनारूप २ आरोपस्थापना ते आरोपथी थयी माटेद्रव्य...
पे आरोपजाकहियें एयेद्रव्यनिक्षेपानाजेदछे तेकहेछे १ आगमथीद्रव्यनिक्षेपो
जेपुरुषना स्वरूपनाजाणपणो द्रमणांतेउपयोगेंनथी ...द्रव्यनिक्षेपजेवस्तु
हितजे पणद्रमणातेपणेवरततानथी तेहनाजणजेदछे १ ज्ञशरीरजेहनाहता
पाम्या तेथीनेजुशरीर जेकपजदेवना शरीरनीजक्ति श्रीजम्बूद्वीपपन्नतीमाहे १...
रीरते द्रमणांनो गुणमयनथी पणगुणमयथशे जेम अयमतामुनी पजयशी...
३ तद्व्यतिरिक्त जेतेगुणेवर्त्तेछे पणतेउपयोगे द्रमणावरततानथी

जावनिक्षेपानाजेद १ आगमथी जावनिक्षेपो तेआगमना अर्थनोजाण
पयोगेंवर्त्ते २ नोआगमथी जावनिक्षेपो तेजेपणेजवर्त्तेछे तेजरूपछे ...तिनि...

एचारनिक्षेपामा पहेलात्रणनिक्षेपा तेकारणरूपछे अनेचोथोजावनिक्षेपो
एछे तेजावनिक्षेपाने निपजावता पहेलात्रणनिक्षेपा प्रमाणछे नहीं...
जावरहितनिक्षेपा द्रव्यनयछे एकजावनिक्षेपो तेजावसयछे जावनिक्षेपाने
...द्रव्यनीप्रवृत्ति ते निष्फळछे एमश्री आचारागनीटीकामा खोर्याविजया ...
...तेवमीयेनेयें फलमेवगुण फलगुण फलचक्रियाजवतिनस्याश्रियाया
...चारित्र ...ज्ञानचारित्र ...क्रियासिद्धि ...
...यथीरहितमनविना जेक्रियाकरवी तयकी संसारिकसुख थाय ते

ा एपाठठे माटेनावनिक्षेपाना कारणविना पेहेलात्रणेनिक्षेपा निःफलठे निक्षे-
ा मूलगीवस्तुनापर्यायठे द्रव्यनोस्वधर्मजठे.

नयास्तुपदार्थज्ञानेज्ञानांशाः तत्रानंतधर्मात्मकेवस्तुन्येकधर्मोन्नयनंज्ञाननयः तथारत्नाकरे नीयतेयेनश्रुताख्यप्रमाणविषयीकृतस्यार्थस्यांशस्तदितरांशौदासीन्यतः सप्रतिपत्तुरभिप्रायविशेषोनयः स्वाभिप्रेतादंशादितरांशापलापीपुनर्नयाभासः सव्याससमासाभ्यांद्विप्रकारः व्यासतोनेकविकल्पः समासतोद्विभेदः द्रव्यार्थिकः पर्यायार्थिकःतत्रद्रव्यार्थिकश्चतुर्धा १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्रभेदात् पर्यायार्थिकस्त्रिधा १ शब्द २ समभिरूढ ३ एवंभूतभेदात्.

अर्थ ॥ जेनयठे तेपदार्थनाज्ञानने विषे ज्ञानना अंशठे तिहांनयनुंलक्षणकहेठे अनंतध-
नक जेवस्तु एटलेजीवादिक एक पदार्थमां अनंताधर्मठे तेनोजेएकधर्मगवेष्योतोपण
यके० वीजाअनंताधर्म तेमांरह्याठे तेनोउछेदनही अनेग्रहणपणनही एकधर्मनीमुख्य-
रवी तेनयकहियें तेनयना व्यासके० विस्तारथी अनेकभेदठे अने समासके० संक्षे-
विभेदठे १ द्रव्यार्थिक २ पर्यायार्थिक तेरत्नाकरावतारिकाग्रंथथी लखियेंठैयें द्रवतिद्रो-
ति अद्रुद्रवत् तांस्तान्पर्यायानितिद्रव्यंतदेवार्थःसोऽस्तियस्यविषयत्वेन सद्रव्यार्थिकः
भिवर्त्तमानपर्यायनेद्रवेठे अनेआगामिककालेंद्रवसे तथा अतीतकालेंद्रवतोहतो ते
यकहियें तेजठेअर्थप्रयोजनविषयपणेजेने ते द्रव्यार्थिककहियें एटलेपर्यायतेजन्य
द्रव्यतेजनककह्योतथाद्रव्यतेध्रुवअनेपर्यायते उत्पादविनाशरूपठे उक्तंच.

र्यतिउत्पादविनाशौप्राप्नोतीतिपर्यायः सएवार्थः सअस्तियस्यासौपर्यायार्थिकः जे उ-
नाविणशवानो परिके० नवानवापणे एतिके० पामेतेजअर्थप्रयोजन तेने पर्यायार्थि-
हीयें तेद्रव्यार्थिकपर्यायार्थिक एवेधर्मने द्रव्यतथापर्यायकहियें.

इहांकोइकपुठेजे त्रीजोगुणार्थिककेमकहेतानथी तेवलीरत्नाकरावतारिकामध्ये कह्योठे
स्यपर्यायेएवांतर्भूतत्वात् तेनपर्यायार्थिकेनैवतत् संग्रहात्.

जेगुणतेपर्यायनेविषे अंतर्भूतठे तेपर्यायार्थिकमध्येजसंग्रह्योठे तेपर्याय वेभेदेठे एक
भावि वीजोक्रमभावि तेमांसहभावितेगुणठे तेपर्यायनेविषे अंतर्भूतठे तिहांद्रव्य-
ायथी व्यतिरिक्तसामान्यविशेष एवेधर्मठे माटेसामान्यविशेष वेनयवत्ताकेमकहे-
ाथी एमकोइपुठेतेनेउत्तर.

जे द्रव्यपर्यायाभ्यां व्यतिरिक्तयो सामान्यविशेषयोरप्रसिद्धेः तथाहि
सामान्यमुक्तमूर्ध्वतासामान्य तिर्यक्सामान्यच तत्रोर्ध्वसामान्यद्रव्यमेव ति
न्यतु प्रतिव्यक्तिसदृशपरिणामलक्षणव्यजनपर्यायएव एपाठथी ऊर्ध्वसामान्य
नोधर्मछे अनेतिर्यक्सामान्यते पर्यायधर्मछे
तर्जनतिनेताभ्यामधिकनयानकाश

विशेषपणेअनेकरीते वर्तवानोलक्षणछे तेपर्यायनेविषे अंतर्भावछे तेमाटे
अवकाशनथी एवेनयमध्येज अंतर्भावछे तेमांवली द्रव्यार्थिकना चारभेदछे १ नैगम
ह्म ३ व्यवहार ४ ऋजूसूत्र तथापर्यायार्थिकना त्रणभेदछे १ शब्द २ समभिरूढ ३

विकल्पातरेऋजुसूत्रस्यपर्यायार्थिकताप्यस्ति सनैगमस्त्रिप्रकार
आरोपाशसकल्पभेदात् विशेषावश्यकेतूपचारस्यभिन्नग्रहणात्
चतुर्विध नएकेगमाआशयविशेषायस्यसनैगम तत्रचतु प्रकार
आरोपः द्रव्यारोपगुणारोप कालारोपकारणाद्यारोपभेदात् तत्र
गुणेद्रव्यारोप पंचास्तिकायवर्तनागुणस्यकालस्यद्रव्यकथनए
तद्गुणेद्रव्यारोप १ ज्ञानमेवात्मा अत्रद्रव्येगुणारोप २ वर्त
मानकालेअतीतकालारोप अद्यदीपोत्सवेवीरनिर्वाणं वर्तमानेअ
नागतकालारोप अद्यैवपद्मनाभ्ने निर्वाण एवपट्भेदा कारणेक्र
यारोप बाह्यक्रियायाधर्मत्व धर्मकारणस्यधर्मत्वेनकथनं संकल्पो
द्विविध स्वपरिणामरूप कार्यातरपरिणामश्च अंशोपिद्विविध
भिन्नोभिन्नश्चेत्यादिशतभेदोनैगम

॥ वलीविकल्पातरे ऋजुसूत्रते पर्यायार्थिकमा पणकह्योछे केमके
तेमानैगमनात्रणभेदछे १ आरोप २ अंश ३ संकल्प तथाविशे
उपचारपणेकहेछे नथीएकगमो अभिप्रायजेनो तेने
नयना चारभेदछे तेमध्ये आरोपना चारप्रकार
रोप ४ कारणाद्यारोप
द्रव्यपणोमानवो तेद्रव्या
ने कालद्रव्यकरियोछाव्यो
वपेद्रव्यारोप अनेद्रव्यनेविषे गुणनोआरोपकरवो जेम
गमननि सद्दानने आत्माकह्यो तेगुणनोआरोपकर्यो मा

जेमश्रीवीरनिर्वाणथयातेने तोघणोकालगयोछे पणआजदीवालीनादीवसेंवीरनो
र्वाणछे एमकहेवुं एवर्त्तमानमां अतीतनो आरोपकर्यो अथवा आजश्रीपद्मनाभप्रभुनो
र्वाणछे एमकहेवुं तेमवर्त्तमाननेविषे अनागतकालनोआरोपछे एवीरीतें वलीअतीत-
भेदछे तथाएवीजरीतेअनागतनावेभेदछे अनेवर्त्तमानना वेभेदरूपरकह्या तेसर्व
। कालारोपना भेदजाणवा.

वलीकारणविषे कार्यनोआरोपकरवो तेकारणचारछे १ उपादानकारण २ निमित्त-
रण ३ असाधारणकारण ४ अपेक्षाकारण तेमांबाह्यद्रव्यक्रिया ते साध्यसापेक्षवा-
ने धर्मनुंनिमित्तकारणछे तोपणएनेधर्मकारणकहियें तेमजश्रीतीर्थंकर मोक्षनुंकार-
तेथी तेने तारयाणं कह्यो तेकारणनेविषे कर्त्तापणानोआरोपकर्यो एम आरोपता
कप्रकारेंछे तेकारणाद्यारोप वलीसंकल्प नैगमनावेभेदछे १ स्वपरिणामरूपजेवीर्य
नानो जेनवोनवो क्षयोपशमतेलेवो वीजोकार्यांतरे नवेनवेकार्ये नवोनवोउपयोग
१ ते एवेभेदथया तथाअंशनैगमनापणवेभेदछे १ भिन्नांशतेजूदोअंशस्कंधादिकनो
गो अभिन्नांश ते जे आत्मानाप्रदेश तथागुणनाअविभाग इत्यादिक एसर्वेनैगम-
नाभेदजाणवा एटलेनैगमनयकह्यो.

सामान्यवस्तुसत्तासंग्राहकसंग्रहः सद्विविधसामान्यसंग्रहोविशे
षसंग्रहश्च सामान्यसंग्रहोद्विविधःमूलतउत्तरतश्चामूलतोस्तित्वा
दिभेदतः षड्विधः उत्तरतोजातिसमुदायभेदरूपःजातितः गवि
गोत्वं घटेघटत्वं वनस्पतौ वनस्पतित्वं समुदयतोसहकारात्मकेव
नेसहकारवनं मनुष्यसमूहेमनुष्यवृंदइत्यादिसमुदायरूपः अथ
द्रव्यमितिसामान्यसंग्रहः जीवइतिविशेषसंग्रहः तथाविशेषाव
श्यके संगहणंसंगिन्हइसंगिन्हंतेवतेणजंभेया तोसंगहोसंगिहि
यपिंडियत्थंवउजास्स संग्रहणंसामान्यरूपतयासर्ववस्तुनामाक्रोड
नंसंग्रहःअथवासामान्यरूपतयासर्वंगृन्हातीतिसंग्रहःअथवासर्वे
पिभेदाः सामान्यरूपतयासंगृह्यंतेअनेनेतिसंग्रहः अथवासंगृही
तंपिंडितंतदेवार्थोभिधेयंयस्यतत्संगृहीतपिंडितार्थंएवंभूतंवचो
यस्यसंग्रहस्येतिसंग्रहीतपिंडितं तत्किमुच्यतेइत्याह संगहीय
मागहीयं संपिंडियमेगजाइमाणीयं ॥ संगहीयमणुगमोवा वइरे

गोपिंमियभणियं ॥१॥ सामान्याभिमुख्येनग्रहणंसंगृहीतसंग्रह उच्यते पिण्डितंत्वेकजातिमानित मभिधीयतेपिण्डितसंग्रह अ सर्वव्यक्तिष्वनुगतस्यसामान्यस्यप्रतिपादनमनुगमसंग्रहोभिधी यते व्यतिरेकस्तुतदितरधर्मनिषेधात्ग्राह्यधर्मसंग्रहकारक व्य तिरेकसंग्रहोभण्यतेयथाजीवोजीवइतिनिषेधे जीवसंग्रह एवम ताः अत १ संग्रह २ पिण्डितार्थ ३ अनुगम ४ व्यतिरेकभेदाच तुर्विध अथवास्वसत्ताख्यमहासामान्यंसंगृण्हाति इतरस्तुगोत्वा दिकमवांतरसामान्यंपिण्डितार्थमभिधीयते महासत्तारूप अवांतर सत्तारूपं एगंनिच्चंनिरवयवमक्रिय सव्वगंचसामन्नं एततूमाहासा मान्य गविगोत्वादिकमवांतरसामान्यमितिसंग्रह ॥

अर्थ ॥ हवेसंग्रहनयकहेछे सामान्ये मूलसर्वद्रव्यव्यापक नित्यत्वादिक रह्याजेधर्म तेनोजेसंग्रहकरे तेसंग्रहकहियें तेनावेभेदछे १ सामान्यसंग्रह २ ग्रह पडीसामान्यसंग्रहना बेभेदछे १ मूलसामान्यसंग्रह २ उत्तरसाम मूलसामान्यसंग्रहना अस्तित्वादिकछभेदछे तेपूर्वेकह्याछे तथाउत्तरसामान्यना १ जातिसामान्य २ समुदायसामान्य तिहांगायनासमुदायमा गोत्वरूपजाति समुदायमाघटत्वपणो अनेवनस्पतिनेविषे वनस्पतिपणो तेजातिसामान्यथी पानासमूहनेविष अननकहे तथा मनुष्यना समूहमा माव्य पउत्तरसामान्य तेचक्षुदर्शन तथाअचक्षुदर्शनने ग्राहीकछे धिदर्शन तथाकेवलदर्शनथी ग्रहनायछे अथवा १ सामान्यसंग्रह २ विशेषसंग्रह द्रव्यनासमुदायने द्रव्यकहुंएसामान्यसंग्रह इहांसर्वनोग्रहणथयोछे अनेजीव व्यरही अजीवद्रव्यथी जूदोभेदपाड्यो एविशेषसंग्रह एविशेषसंग्रहनो विस्तार पाविशेषावश्यकथी संग्रहनयना चारभेद तेलखियेंछेये मूलपाठमा

संग्रहणके० एकठो एकवचनमध्ये एकअध्यवसाय उपयोगमा समकाळेंग्र मान्यरूपपणे सर्ववस्तुनो आक्रोरूण ग्रहणकरवो तेसंग्रहकहियें सर्व संग्रहकरे तेसंग्रहकहियें अथवाजेयकीसर्वभेद सामान्यपणे ग्रहिय तेने हियें अथवासंगृहीत पिंडितके० जेवचनथी समुदायअर्थग्रहनाय छेनाचारभेदछे १ संगृहीतसंग्रह २ पिंडितसंग्रह ३ अनुगमसंग्रह ४ व्यतिरेकसंग्रह

१ सामान्यपणे वेचणविना ग्रहणथाय एवोजेउपयोग अथवा एकुवचन दरोधर्म कोइएकवस्तुनेविषेहोय तेनेसंगृहितसंग्रहकहियें

१ अनेएकजातिमाटे एकपणोमानिने तेएकमध्ये सर्वनोग्रहणथायजेमएगेआयाएगे
न्ने इत्यादिवस्तुअनंतिछे पणजातिएकमाटेग्रहवायछे तेवीजोपिंमितसंग्रहकहियें.

२ जेअनेकजीवरूप अनेकव्यक्तिछे तेसर्वमांपामियें जेम सत्चित्मयोआत्मा एटले
जीव तथासर्वप्रदेश सर्वगुण तेजीवनालक्षणछे एनेअनुगमसंग्रहकहियें.

३ तथाजेनेनाकहेवे तेथीइतरनो सर्वसंग्रहपणेज्ञानथायतेजेमअजीवछेतेवारें जे जी-
नहीतेअजीवकहिये एटलेकोइकजीवछे एमव्यतिरेक वचनेछेस्यो तथाउपयोगें जी-
ग्रहणथायछे तेव्यतिरेकसंग्रहकहियें.

अथवासंग्रहनयवेन्नेदेंकहेवायछे १ महासत्तारूप २ अवांतरसत्तारूप एरीतेंपणसंग्रह-
रूपकह्योछे सवतिन्नणिएणज म्हासवन्नाणुप्पवत्तएबुद्धि तोसव्वंसत्तमत्तंनत्नीतदंतरं-
व ॥ १ ॥ यद्यस्मात्सदित्येवंन्नणीते सर्वन्निन्नुवनत्रयांतर्गतवस्तुनिबुद्धिरनुप्रवर्तते
वतिनहितत् किमपिवस्तुअस्तियत् सदित्युक्तेजगतिबुद्धौनप्रतिन्नासते तस्मात्सर्वं-
मात्रं नपुनःअर्थांतरं तत्श्रुतसामर्थ्यात् यत्संग्रहेन संगृह्यते तेनपरिणमनरूप-
देवसंग्रहस्येति एटलेत्रणेन्नुवनमां एहवीवस्तुकोइनथीजे संग्रहनयनेग्रहणमांआव-
थी जेजेवस्तुछेतेसर्व संग्रहनयमां ग्रहवाणीजछे एसंग्रहनयकह्यो.

संग्रहगृहीतवस्तुन्नेदांतरेण विन्नजनंव्यवहरणंप्रवर्तनंवाव्यवहा
रःसद्विविधःशुद्धोशुद्धश्च शुद्धोद्विविधः वस्तुगतव्यवहारः धर्मा
स्तिकायादिद्रव्याणां स्वस्वचलनसहकारादिजीवस्यलोकालोका
दिज्ञानादिरूपः स्वसंपूर्णपरमात्मन्नावसाधनरूपो गुणसाधका
वस्थारूपः गुणश्रेण्यारोहादिसाधनशुद्धव्यवहारः अशुद्धोपिद्वि
विधः सद्भूतासद्भूतन्नेदात् सद्भूतव्यवहारो ज्ञानादिगुणः परस्प
रंन्निन्नः असद्भूतव्यवहारः कषायात्मादि मनुष्योहं देवोहं सो
पिद्विविधः संश्लेषिताशुद्धव्यवहारःशरीरंममअहंशरीरी असं
श्लेषितासद्भूतव्यवहारः पुत्रकलत्रादि तौचउपचरितानुपचरि
तव्यवहारन्नेदात्द्विविधौ तथाचविशेषावश्यके व्यवहरणंव्यव
हारः एसतेणव्यवहार एवसामान्नंव्यवहारपरोवजउविसर्जते
णव्यवहारःव्यवहरणंव्यवहारः व्यवहरतिसइतिवाव्यवहारः वि
शेषतोव्यवह्रियते निराक्रियते सामान्यंतेनेतिव्यवहारः लोकव्य

हेजव्यएअनागतजावि माटेकहेतानथी एतोवर्तमान सर्वगुणनी ठति आवरणदोषे प्रवर्ततिनथी तेथीतिरोजावीपणामाटे सग्रहनयें कहियें केवलज्ञानादिगुण ठतावर्त्ते ठे तेमाटेसिद्धकहियेंठेयें

अनेजेवस्तु तेनामादिकपर्यायसहितवर्त्ते ठे माटेनामादि नाजेदठे तथानामादिक त्रणनिक्षेपातोद्रव्यठे अनेजावतेजावठे जावनी वेंचणकरियें तेमाटेठे पणवस्तुमां सहज चारनिक्षेपाते कार्यनाकर्त्ताजठे एऋजुसूत्रनावेजेद दिगबरकहेठे १ सूक्ष्मऋजुसूत्र २ र्तमानकालनो एकसमयतेने सूक्ष्मऋजुसूत्रकहियें अनेजेबहुकालिते पकालापेक्षीजावठे तथाएजावनयठे अनेयोगावलबीपणो तेनाग्रहे कद्रव्यमध्येगणेठेएऋजुसूत्रनयकह्यो

शपआक्रोशेशपनमाव्हानमितिशब्द शपतीतिवाआव्हानयतीति शब्द शप्यनेआहूयते वस्तुअनेनेतिशब्द तस्यशब्दस्य योवा च्योर्थस्तत्परिग्रहात्तत्प्रधानत्वात्नयशब्द यथाकृतकत्वादिस्त्या दिकपंचम्यंत शब्दोपिहेतु अर्थरूपकृतकत्वमनित्यत्वगमकत्वा न्मुख्यतयाहेतुरुच्यतेउपचारवस्तुतद्वाचककृतकत्वशब्दोहेतुरभि धीयते एवमिहापिशब्दवाच्यार्थपरिग्रहाउपचारेणनयोपिशब्द व्यपदिश्यतेइतिजाव यथाऋजुसूत्रनयस्याजीष्ट प्रत्युत्पन्न वर्त मान तथैवइत्यसौशब्दनय यद्यस्मात्पृथुबुध्नोदरकलितमून्न य जलाहरणादिक्रियाक्षम प्रसिद्धघटरूप जावघटमेवेत्त्यम ननुशेषान्नामस्थापनाद्रव्यरूपान्त्रीनूघटानितिशब्दार्थप्रधानो ह्येपनय चेष्टालक्षणश्चघट शब्दार्थोघटचेष्टाया घटतेइतिघट अनो जलाहरणादिचेष्टांकुर्वन्घट अतश्चतुरोपिनामादिघटा वन् ऋजुसूत्राद्विशेषितनतरवस्तुइच्छति असौशब्दार्थोपपत्तेर्जाव टस्यैवाननाज्युपगमादिति अथवाऋजुसूत्रात् शब्दनय विशे तन्न ऋजुसूत्रेसामान्येनघटोजिप्रेत शब्देनतुसद्भावादिजिरने धर्मेर्गनिप्रेनइति तेचमतजगा पूर्वेउक्ताइति ॥

अर्थ ॥ हवेशब्दनयनु स्वरूपकहियेंठेयें शपतिके० बोलावे तेनेशब्दकहि [illegible] वस्तुजेनेशब्दकहियें तेशब्देंजेवाच्यअर्थ तेने ग्रहे

यमां तेपणशब्दनयकहियें जेमकृतकतेजेकस्यो तेनो हेतुजेधर्मते जेवस्तुमांहोय ते
ाय एटलेशब्दनुंकारणतो वस्तुनोधर्मथयो जेमजलाहरणधर्मजेमांछे तेनेघटकहि-
ां एमइहांपण शब्देंवाच्यअर्थग्रहेतेमाटेतेनयनोनामपण शब्दकहेवायजेमऋजुसूत्र-
ो वर्त्तमान कालनाधर्मइष्टछे तेमशब्दादिकनयने पण वर्त्तमाननानाधर्मजइष्टछे.
ेमकेपेटेपृथुके० पहोलो बुध्नके० घोल संकोचितउदरकलितयुक्त जलाहरणक्रिया-
मर्थ प्रसिद्धघटरूप भावघट तेनेजघटइछेछे पण शेप नामस्थापना अनेद्रव्यरूप
घटने एशब्दनयघटमानेनही घटशब्दनाअर्थने तेसंकेतनेजघटकहे घटधातुतेचे-
ाचीछे अतःकारणात्के० एकारणपणामाटे एशब्दनयते चेष्टाकर्त्ताने जघटकहे एटले
सूत्रनय चारनिक्षेपासंयुक्तने पण घटमाने अनेशब्दनयते भावघटनेजघटमाने ए-
ाविशेपपणोछे शब्दनाअर्थनी जिहांउपपत्तिहोय तेनेजतेवस्तुपणेकहे एटलेऋजुसू-
यें सामान्यघटगवेष्यो अनेशब्दनयें सद्भाव जे अस्तिधर्म तथाअसद्भाव जेनास्ति-
 तेसर्वसंयुक्तवस्तुने वस्तुपणेंकहे.
एटले वस्तुने शब्देंबोलावतां सातभांगेबोलाववो माटेएससभंगीजेटलाज शब्दन-
भेदजाणवा तेससभंगीनो स्वरूपपूर्वेकह्युंछे एशब्दादिकनय वस्तुनापर्यायने अवलं-
ो वस्तुनाभावधर्मनाग्राहकछे तेमाटेवस्तुना भावनिक्षेपा एनयेंमुख्यछे ध्रुरनाचारन-
ां नामादिक त्रणनिक्षेपामुख्यछे एशब्दनयनुंस्वरूपकह्युं.

गाथा ॥ जंजंसण्णंभासइ ॥ तंतंचियसमभिरोहइजम्हा सणंत
रथ्थविमुहो तउनउंसमभिरूढोत्ति ॥ १ ॥ यांयांसंज्ञांघटादिल
क्षणांभाषते वदतितांतामेवयस्मात्संज्ञांतरार्थविमुखः समभिरू
ढोनयःनानार्थनामाएवभाषते यदिएकपर्यायमपेक्ष्यसर्वपर्यायवा
चकत्वं तथाएकपर्यायाणांसंकरःपर्यायसंकरेचवस्तुसंकरोभवत्ये
वेतिमाभूत्संकरदोषः अतःपर्यायांतरानपेक्षएवसमभिरूढनयइति ॥

अर्थ ॥ हवेसमभिरूढनयनी व्याख्याकहियेंछेयें जेशब्दनयतेइंद्र शक्र पुरंदर इत्या-
कसर्वइंद्रनानामभेदछे पणएकइंद्रपर्यायवंत इंद्रदेखी तेनासर्वनामकहे उक्तंचविशे-
श्यके एकस्मिन्नपिइंद्रादिकेवस्तुनियावत् इंद्रनशक्रनपुरदारणादयोर्याघटंते तद्रूशे-
शक्रादिवहुपर्यायमपितद्वस्तुशब्दनयोमन्यतेसमभिरूढवस्तुनेवमंस्यतेइत्यनयोर्भेदः
 जे एकपर्यायप्रगटपणे अने शेपपर्यायने अणप्रगटवे शब्दनय तेटलासर्वनामबोलावे
 समभिरूढनयतेनबोलावे एटलोशब्दनय तथा समभिरूढनयमां भेदछे माटे हवे
मभिरूढनय कहेछे.

घटकुंजादिकमां जेसंज्ञानो वाच्यअर्थदेखाय तेजसंज्ञाकहे जेमासज्ञा विमुखछे तेनेसमजिरूढनयकहिये जोएकसज्ञामध्ये सर्वनामातरमानियें थाय तेवारेंपर्यायनो जेदपणोरहेनही अनेजेपर्यायांतरहोय ततोभेदपणो यातरनो जेदपणोजरह्यो तेमाटेलिंगादिजेदने सापेक्षपणे वस्तु मजिरूढनयवखाण्यो एनयमांपण जेदज्ञाननी मुख्यताछे

एवजहसदथ्थो संतोजूर्ठतदन्नहाजूर्ठ ॥ तेणेवंजूअनर्ठ सद्दथ परोविशेशेण ॥ १ ॥ एवंयथाघटचेष्टायामित्यादिरूपेणशब्दा र्थोव्यवस्थित तद्दत्तितयैवयोवर्त्तते घटादिकोर्थ सएवसन्भूतो विद्यमान तदन्नहाजुर्ठत्तिवस्तुतदन्यथाशब्दार्थोल्लघनेनवर्त्तते सतत्वतोघटाद्यर्थोपिनजवति किजूतोविद्यमान येनैवमन्यते तेन कारणेनशब्दनयसमजिरूढनयाज्यासकाशादेवजूतनयो विशे षशब्दार्थनयतत्पर अयहियोपिन्मस्तकारूढ जलाहरणादिक्रि यानिमित्तघटमानमेव चेष्टमानमेव घटमन्यते नतुग्रहकोणादिव्य वस्थितविशेषतःशब्दार्थतत्परोयमिति वेजणमत्थेणच वजण णोजयविशेशे इजहघम्सद्दचेष्ठा वयातहातपितेणेवा॥१॥व्यज्यते अर्थोनेनेतिव्यजनवाचकशब्दोघटादिस्तचेष्टावताएतद्वाच्येनार्थे नविशिनष्टिसएवघटःशब्दोयश्चेष्टावतमर्थंप्रतिपादयति नान्यश्च त्येवशब्दमर्थेननैयत्येव्यवस्थापयतीत्यर्थ तथार्थमप्युक्तलक्षण मजिहितरूपेणव्यजनेनविशेपयतिचेष्टापिसैवया घटशब्देनवा च्यत्वेनप्रसिद्धायोपिन्मस्तकारूढस्यजलाहरणादिक्रियारूपानतु स्थानतरणक्रियात्मिका इत्येवमर्थ शब्देननैयत्येस्थापयतीत्यर्थ इत्येवमुजयं विशेपयतिशब्दार्थोनार्थं शब्देननैयत्येस्थापयती त्यर्थ एतदेवाहयदायोपिन्मस्तकारूढचेष्टावानर्थो घटशब्देनो च्यतेसघटलक्षणोर्थ सचतद्वाचकोघटशब्द अन्यदातुवस्त्वतर स्येवतच्चेष्टाजावादघटत्व घटध्वनेश्चावाचकत्वमित्येवमुजयविशे पक एवंजूतनयइति ॥

र्थ ॥ हवेएवजूतनयनोस्वरूपकहियेछेये एवके०जेमघटचेष्टावाची इत्या

ब्दनयनोअर्थकह्योछे एरीतेजेघटादिकअर्थवर्त्ते ते एवंके० एमज जेविद्यमानपणे श-
ब्दनाअर्थने ठेकांणीनेवर्त्ते तेतेशब्दनोवाच्यनथी अने शब्दार्थपणोजेमांनपामिये ते व-
स्तुतेरूपेनही माटेजोशब्दार्थमांथी एकपर्यायपण ओछोहोयतो एवंभूतनयतेने तेपणो
कहेनही तेमाटेशब्दनयथी तथासमभिरूढनयथी एवंभूतनयतेविशेषांतरछे.

एएवंभूतनयने स्त्रीनेमस्तकेचढ्यो पाणीआणवानी क्रियानोनिमित्त मार्गेआववाप-
णानी चेष्टाकरतोहोय तेनेघटमाने पणघरनेखूंणे रह्योजेघट तेनेघटकरीमानेनही केम-
केते चेष्टाने अणकरतोछेतेमाटे. जेथकीअर्थने व्यंजीयेके०प्रगटकरियें तेनेव्यंजनकहियें
व्यंजनतेवाचकशब्दछे तेअर्थनेकहेछेक्रियावंतथको तेनेजतेवस्तुकहे बीजानेनकहे अ-
र्थतेहिजअर्थेकह्युं जेशब्द तेकह्यानेरूपेंविशेषथाय जेमचेष्टाघटशब्दवाचेप्रसिद्धछे यो-
षितके०स्त्रीनेमाथेपाणीभाववो तेघट तथास्थानकेरह्यो अथवातरणक्रियाकरताने एवं-
भूतनयघटकहेनही एशब्दअर्थ तथाअर्थेशब्दनेथापेछे एतुंएरहस्यछे जेस्त्रीनेमस्तके
चढ्यो चेष्टावंतअर्थ तेघटशब्देबोलावे तेथीअन्यथा होने तेघणेबोलावेनही जेम नाना-
र्थकेवली जे ज्ञानादिकगुणेसमानछे तेने समभिरूढ नय अरिहंतकहे पण एवंभूत-
नयतो समोसरणादि अतिशयसंपदासहित तथाकेवलीतेइंद्रादिकेंपूजतां शुक्होयतेनेज
अरिहंतकहे तेविनानकहे वाच्यवाचकनी पूरणतानेकहे एस्वरूपे एवंभूतनयजाणवो.

एसातेनयनाभेद ते विशेषावश्यकने अनुसारेकह्या तेमांनिगमनादशभेद संग्रहना
भेद अथवाबारकह्या व्यवहारनाभेदआठ अथवाचउदकह्या ऋजुसूत्रनाचार अथवा
कह्या शब्दनासातभेदकह्या समभिरूढनाबेभेद अनेएवंभूतनो एकभेदकह्यो एरीते
विनाभेदकह्या वलीनयचक्रमां नयनाभेद सातसोकह्याछे तेपणजाणवा.

एवमेवस्याद्वादरत्नाकरात्पुनर्लक्षणतउच्यते नीयतेयेनश्रुताख्य
प्रामाण्यविषयीकृतस्यार्थस्यशस्तादितरांशौदासीन्यतः संप्रतिप
त्तुरभिप्रायविशेषोनयःस्वाभिप्रेतादंशादपरांशापलापीपुनर्नयाभा
सःससमासतःद्विभेदः द्रव्यार्थिकःपर्यायार्थिकश्च आद्योनैगम
संग्रह व्यवहारऋजुसूत्रभेदाच्चतुर्धा केचितऋजुसूत्रंपर्यायार्थिकं व
दंति तेचचेतनांशलक्षणविकल्पस्यऋजुसूत्रग्रहणान्श्रीवीरशासने
मुख्यतःपरिणतिचक्रस्यैवभावधर्मत्वेनांगीकारात् तेषांऋजुसूत्रः
द्रव्यनयेएवधर्मयोर्धर्मिणोर्धर्मधर्मिणोश्च प्रधानोपसर्जनभावे
पसंकल्पांशादिभावेनानेकगमग्रहणात्मकोनैगमः सन्चैतन्यमा

त्मनीतिधर्मयो गुणपर्यायवत्द्रव्यमितिधर्मधर्मिणो क्षणमेको
सुखीविषयासक्तोजीवइतिधर्मधर्मिणो सूक्ष्मनिगोदीजीवसिद्ध
समानसत्ताक अयोगी नोसंसारीतिअंशग्राहीनैगम धर्मधर्मादी
नामेकातिकपार्थक्यानिसंधिनैगमान्यास

अर्थ ॥ हवेस्याद्वादरत्नाकरथी नयस्वरूपलखियेंछेयें नीयतेके० पमाडीयें जेयकीश्रुत ज्ञान स्वरूपप्रमाणे विषयेकीधो जेपदार्थनोअंश तेअंशथी इतरके० बीजोजे अंशतेथकी उदासीपणोतेनेपण्निवर्जवावालानोजेअभिप्रायविशेष तेनेनयकहियेएटले वस्तुनाअंश नेग्रहेअनेअन्यथी उदासीनपणो तेनयकहिये एकअंशनेमुख्यकरीने बीजा अंशनेउवेखे तेनयाभ्यासकहियें तेनयनावेन्नेदछे एकद्रव्यार्थिक बीजोपर्यायार्थिक तेमाद्रव्यार्थिक ना १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्र एचारन्नेदछे केटलाक आचार्यते ऋजुसूत्र ने विकल्परूपमाटे नावनयगवेषेछे तेरीते द्रव्यार्थिकना त्रणन्नेदछे

हवेनैगमनयनु स्वरूपकहेछे जेधर्मनेप्रधानपणे अथवागौणपणे अथवा धर्मीनेप्र धानपणे अथवा गौणपणे तथाधर्मधर्मीएवेउने प्रधानपणे तथागौणपणे जेगवेषणाए टलेधर्मोनी प्राधान्यता तेवारेपर्यायोनी प्रधानताथयी अनेजिहांधर्मीनोप्रधानपणो तिहांद्रव्यनोप्रधानपणो तेमजगौणपणो तथाधर्मधर्मीनो प्रधानगौणपणो एटलेद्रव्यपर्यायनो गौणप्रधानपणानी गवेषणारूप ज्ञानोपयोग तेनैगमनयजाणवो तेनावी धने नैगमबोधकहिये तेनाउदाहरण कहेछे

सत्के०छतापणे चैतन्यके०जाणपणो एवेधर्ममध्ये एकधर्मपक्षमुख्यपणेगणे अनेबी जानेगौणपणे नगवेषे एरीतें नैगमनयजाणवो इहाचैतन्यनामेजे व्यजन पर्यायतेनेप्र धानपणेगणे केमकेचैतन्यपणो तेविशेषगुणछे अने सत्नामाव्यजनपर्यायछे तेसर्व द्रव्यसाधारणछे तेमाटेतेने गौणपणेलेखवे एनैगमनोप्रथमन्नेदकह्यो

तथावलीवस्तुपर्यायवत्द्रव्य एमबोलवुते धर्मिनोनैगमछे इहापर्यायवत्द्रव्य एवस्तुछे इहाद्रव्यनोमुख्यपणो वलीवस्तुनेपर्यायवतकहेवु ते वस्तुनोगौणपणो अनेपर्याय नोमुख्यपणो इहाउनयगोचरपणामाटे एनैगमनोबीजोन्नेदकह्यो

क्षणमेक सुखीविषयासक्तोजीवइतिधर्मधर्मिणोरिति इहाविषयासक्तजीवास्य जेध र्मिना मुख्यताना विशेषपणाथी सुखलक्षणधर्मनीप्रधानता तेविशेषणपणेकरीने धर्म धर्मिने आश्रयने एत्रीजोनैगम जेवारेधर्म तथाधर्मिएबेने अवलवे ग्रहणकरे तेवारे पूर्णवस्तुनोग्रहणथयो तेवारेएज्ञाननेप्रमाणकह्यो तिहाउत्तरद्रव्यपर्यायतेबेहुनेप्रधानपणे अनुनवतो जेज्ञानप्रमाणथाय इहाबेपदनेविषे एकनीगौणता बीजानीमुख्यताछेते

ज्ञानथायछेतेमाटे नयकहियें तथावलीसूक्ष्मनिगोदिजीव तेसमानसत्तावंतछे अथवा अयोगीकेवलीजिनतेने संसारीकहेवुं तेअंशनैगम.

हवेनैगमाभ्यासकहेछे वस्तुमांधर्मअनेकछे तेएकांतेमाने पणएकबीजाने सापेक्षपणेनमाने एटलेएकधर्मनेमाने अनेबीजाधर्मनेनमाने तेनैगमाभ्यासकहियें एदुर्नय जाणवो केमके अन्यनयनेगवेषेनही माटेजेमआत्मानेविषे सत्वतथाचैतन्य एधर्मभिन्नभिन्नछे तेमांचैतन्यपणोनमाने ते नैगमाभ्यासकहियें एटलेनैगमनयकह्यो.

यथात्मनिसत्वचैतन्येपरस्परंभिन्ने सामान्यमात्रग्राहीसत्ता परामर्शरूपसंग्रहः सपरापरभेदात्द्विविधः तत्रशुद्धद्रव्य सन्मात्रग्राहकःपरसंग्रहः चेतनालक्षणोजीवइत्यपरसंग्रहः सत्ताद्वैतंस्वीकुर्वाणः सकलविशेषान्निराचक्षाणः संग्रहाभासः संग्रहस्यैकत्वेन एगेआयाइत्यनभिज्ञानात् सत्ताद्वैतएवआत्माततःसर्वविशेषाणांतदितराणांजीवाजीवादि द्रव्याणामदर्शनात् द्रव्यत्वादिनावांतरसामान्यानिमन्वानस्तद्भेदेपुगजनिमीलिकामवलंबमान.परापरसंग्रहः धर्माधर्माकाशपुद्गलजीवद्रव्याणामैक्यं द्रव्यत्वादिभेदादित्यादिद्रव्यत्वादिकंप्रतिजानानस्तद् विशेषान्निन्हुवानस्तदाभासः यथाद्रव्यमेवतत्वं तत्वपर्यायाणामग्रहणाद्विपर्यासइतिसंग्रहः

अर्थ ॥ हवेसंग्रहनयकहेछे सामान्यमात्र समस्तविशेषरहित सत्यद्रव्यत्वादिकने ग्रहेवानोछेस्वभावजेनोते संके० पिंडपणेविशेषराशीनेग्रहे पणव्यक्तपणेनग्रहे स्वजातिनाडीठाजे इष्टअर्थतेने अविरोधेंकरीने विशेषधर्मोने एकरूपपणेजेग्रहणकरवो तेसंग्रह नयकहियें एभावनाछे तेनावेभेदछे १ परसंग्रह २ अपरसंग्रह तेमां अशेषविशेषोदासीनंभजमानंशुद्धद्रव्यं सन्मात्रमभिमन्यमान.परसंग्रहइति जेसमस्तविशेषधर्मस्यापनानीभजनाकरतो एटलेविशेषपणाने अणग्रहतोथको शुद्धद्रव्य सत्तामात्रप्रतेंमाने जेमद्रव्यएपरसंग्रह विश्वएकसत्पणामाटे एमकह्याथी छतापणाना एकपणानुं ज्ञानथायछे एटलेसर्वपदार्थनोएकपणेग्रहणछे तेपरसंग्रहकहियें.

तथाजेसत्तानो अद्वैतस्वीकारे अने द्रव्यांतरभेदनमाने समस्तविशेषपणानेना कहेतोथको जेग्रहणकरे तेअद्वैतवादिवेदांत तथासांख्यदर्शन एपरसंग्रहाभासछे केमके जेभेदधर्म छतादेखायछे तथाद्रव्यांतरपणो तेनेनमाने माटे परसंग्रहाभासकहियें अने जेनतो विशेषसहित सामान्यनेग्रहेछे माटेसंग्रहनयकहियें.

द्रव्यत्वादिनयांतरसामान्यानिमग्नात तद्भेदेषुगजनिमीलिकावलंबमान अपर ह द्रव्यजे जीवअजीवादिक जेअवांतरसामान्यनेमानतो अनेजीवनेविषे अति विशेषजेद जव्य अजव्यसम्यक्तमिथ्यात्वी नरनारकादिजेजेद तेनेगजनिमीलिका स्ताइयेंनगवेषवो तेअपरसंग्रहकहियें अनेद्रव्यने सामान्यपणेमाने ... णामिकतादिक धर्मनेनमाने तेअपरसंग्रहाजासकहियें एसंग्रहनयनुस्वरूपकह्युं

संग्रहणेचगोचरीकृतानामर्थानाविधिपूर्वकमवहरणं येनाभिसंधि नाक्रियतेसव्यवहार यथायत्सत्तत्द्रव्यंपर्यायश्चेत्यादिय पुन रपरमार्थिकद्रव्यपर्यायप्रविजागमाजिप्रैतिसव्यवहाराजास चा र्वाकदर्शनमितिव्यवहारदुर्नय

अर्थ ॥ हवेव्यवहारनयकहेठे संग्रहनयेंग्रह्याजे वस्तुनासत्वादिकधर्म तेनेजगुण वेहेंचे जिन्नजिन्नगवेषे तथापदार्थनीगुणप्रवृत्ति तेनेजमुख्यपणेगवेषे तेव्यवहारनयक जेमद्रव्यठेतेनाजीवपुद्गलादिकपर्यायना क्रमजावी तथासहजावी एरीतेंवेजेदठे ते लीजीवबेप्रकारें १ सिद्धना २ ससारी तेमजपुद्गलनाबेजेद परमाणुतथास्कंध इत्या कार्यजेदें जिन्नमाने तथाक्रमजावीपर्यायनाबेजेद एकक्रियारूप बीजोअक्रियारूप वेहेंचणजे सामर्थ्यादिकगुणजेदेंपके तेसर्वे व्यवहारनयजाणवो अने जेपरमार्थविना द्र पर्यायनोविजागकरे ते व्यवहाराजासजाणवो

जेकल्पनाकरीजेदवेंचे तेचार्वाकमतप्रमुख एव्यवहारनोदुर्नयठे जेमचार्वाकम पणें ठतोजीवपणो लोकप्रत्यक्षमां दृष्टिगोचर नथी आवतो ते माटे जीव नथी ए हे अनेजगत्मांपचभूतादिकवस्तुनथी एमकल्पनाकरी थुललोकनेकुमार्गेप्रवर्त्तावे व्यवहारदुर्नयकहियें एव्यवहारनयनुस्वरूपकह्यु

ऋजुवर्तमानक्षणस्थायिपर्यायमात्रप्राधान्यत सूत्रयतुअजिप्राय ऋजुसूत्र ज्ञानोपयुक्त ज्ञानीदर्शनोपयुक्त दर्शनी कषायोपयुक्त कषायीसमतोपयुक्त सामायकीवर्तमानापलापीतदाजास यथातथागतमतइति ॥

अर्थ ॥ हवेऋजुसूत्रनयकहेठे ऋजुके० सरलपणेअतीतअनागतने अणगवे अनेवर्त्तमानसमयवर्त्तता जेपदार्थनापर्यायमात्र तेने प्रधानपणे सूत्रके० गवेषे ते ऋ जुसूत्रनयकहियें तेज्ञाननेउपयोगें वर्ततानें ज्ञानीकहे दर्शनपयोगें वर्तताने दर्श नी कहे कषायपणेवर्ततांजीवने कषायीकहे समतानेउपयोगेंवर्त्तताजीवने सामायकी कहे इहांकोइपुठेजे उपरकह्यामुजबतो ऋजुसूत्र तथा शब्दनय एबेएकजथायठे तेने

' {

त्तरकहेठे जेविशेषावश्यकमांकह्युंठे कारणंयावत् ऋजुसूत्रः एटलेज्ञाननेकारणपणे वर्ततो तेऋजुसूत्रग्रहेठे अनेजेजाणपणारूप कार्यपणेथाय तेशब्दनयकहियेंएफेरठे.

वर्तमानकालनेपण ग्रहण न करे तेऋजुसूत्राभासकहियें जेठताभावनेअठताकहे अथवाविपरीतकहे जेमजीवनेअजीवकहे अजीवनेजीवकहे इत्यादिक ते गत के० बौद्धनोमतठे जेठतोसदासर्वदावर्ततो जीवादिद्रव्य तेनापर्यायने पलटवे सर्वथाद्रव्यने विनासिकमाने तेनेऋजुसूत्रनयाभासाभिप्रायजाणवो एऋजुसूत्रनयकह्यो.

एकपर्यायप्राग्भावेनतिरोभाविपर्यायग्राहकशब्दनयः कालादि भेदेनध्वनेरर्थभेदंप्रतिपाद्यमानः शब्दः जलाहरणादिक्रियासमर्थ एवघटः नमृत्पिंडादो तत्वार्थवृत्तोशब्दवशादर्थप्रतिपत्तिः तत्का र्यधर्मेवर्त्तमानवस्तुतथामन्वानः शब्दनयः शब्दानुरूपंअर्थपरि णतं द्रव्यमिठतित्रिकालत्रिलिंगत्रिवचनप्रत्ययप्रकृतिभिः सम न्वितमर्थमिठति तद्भेदेतस्यतमेवसमर्थप्रमाणस्तदाभासः

अर्थ ॥ हवेशब्दनयकहेठे जेवस्तुनाएकपर्यायने प्रगटदेखवे बीजाशब्दवाचकपर्यायने तिरोभावें अणप्रगटवेंपणतेपर्यायनेग्रहे अथवाकालत्रण वचनत्रण लिंगत्रण तेनेभेदें शब्दनोभेदपडे तेनेदेंजअर्थनेकहे अथवा जलाहरणादि समर्थनेघटकहे तथाकुंभादिक चिन्हपर्यायजेटलाठे तेटलानो अर्थवर्ततोनदेखाय तोपण तेनेनाम कहीबोलावे एम जेमां कार्यनोसामर्थ्यवंतपणोठे तेनेग्रहे पण माटीना पिंडने घट कहेनही तेशब्दनयकहियें अनेजे संग्रह तथानैगमनयवालोकहे ते सत्तायोग्यता अंशग्राहकठे तथातत्वार्थटीकामध्ये शब्दवशथीअर्थपडिवर्जवो तेशब्देंबोलावतोहोय जे अर्थतेवस्तुमां धर्मपणेप्रगटदेखाय तेनेज तेवस्तुमाने एनयने शब्दानुजायी अर्थेपरिणमतिजेवस्तु तेनेवस्तुकहेठे काललिंगादिभेदें अर्थनोभेदठे ते भेद तेम ते धर्मवस्तु माने तेशब्दनयकहियें अनेतेअर्थविना तेवस्तुमध्ये तेपणोवर्ततो देखातो नथी तेनेते वस्तुपणेसमर्थनकरे तेशब्दाभासकहिजे एटलेशब्दनयकह्यो.

एकार्थावलंविपर्यायशब्देपुनिरुक्तिभेदेनभिन्नमर्थं समभिरोहन्स मभिरूढः इंदनादिंद्रः शकनाछक्रः पुरदारणात् पुरंदरःइत्यादि पुयर्यापर्यायध्वनिनामाभिधेयनानात्वमेवकदीकुर्वाणस्तदाभासः यथाइंद्रःशक्रःपुरंदर इत्यादिभिन्नाभिधेये

अर्थ ॥ हवेसमभिरूढनयकहेछे जेएकपदार्थनेअभिलवी जेटलासरिखानाम जापर्यायनामथया तेपर्यायनामजेटलाहोय तेटलानिरुक्तिव्युत्पत्तिभिन्नहोय ७७ पणभेदहोय तेअर्थने श के० सम्यक्प्रकारें आरोहतो ८८ ५८ ८ ९ र तेसमभिरूढनयकहिये जेमइन्द्रादिधातु परमैश्वर्यनेअर्थछे तेपरमऐश्वर्यवान हिये तथाशकनकहेतानमिनिशक्तियुक्तने शक्रकहिये पुर के० देत्यने दूरे के० तेपुरंदर अनेशचिजेइन्द्राणी तेनोपतिस्वामी तेशचीपतिकहिये ७१ ते तेमाटेजेदेवलोकनोधणीछे तेनेइंद्रएवेनामें बोलावेछे बीजानामादिकइन्द्रने बोलावे जेटलापर्यायनामछे तेनाजेअर्थथाय तेसर्वनेभिन्नभिन्नअर्थकहेछे पण नजाणेते समभिरूढाभासकहिये एटलेसमभिरूढनयकह्यो

एवंभिन्नशब्दवाच्यतत्वाच्छब्दानास्वप्रवृत्तिनिमित्तभूतक्रियावि शिष्टमर्थवाच्यत्वेनाभ्युपगच्छन्नेवंभूत यथाइंदनमनुभवतिं शक्रनाटक शब्दवाच्यतयाप्रत्यक्षस्तदाभास यथा विशिष्ट चेष्टाशून्य घटाख्यवस्तुन घटशब्दवाच्यं घटशब्दप्रवृत्ति निभूतार्थशून्यत्वात पटवदित्यादि

अर्थ ॥ हवेएवंभूतनयकहेछे शब्दनीप्रवृत्तिनो निमित्तभूतजेक्रिया तेविशिष्ट जेअर्थ तेनेवाच्यजेधर्म तेनेजेपरिणतनोहोय एटलेतेकारणकार्यधर्मसहिततेनेएवं कहिये यथा तेअर्थमहित तेइन्द्रशक्ररूप सिंहासनेबेशेतेशक्र शचि के० इन्द्राणी तेनो भरतार पनिकहे एटलेजेशब्दना जेटलापर्याय तेसर्वतेमापदो ग्नानाम नामकहियावाले अनेतेपर्यायपदोवनोदेखेनहीतेपर्यायनीनाकहे जिहांसुधीएक नाभिहितपुरी समभिरूढनयकहिये अने सर्वेवचनपर्यायनेपदोचे तेवारेएवंभूत कहिये तेइन्द्रादिनानामनेदनो भेदछेमाटेपदार्थनीभिन्नताकहे तेएवंभूतनयानाम कहेतेवस्तुनभिन्न जेम हाथी घोडाभिन्नभिन्नछे तेमभिन्नपणोमाने जेमघ घटनाभेद घटथी पट भिन्न छे तेमइन्द्रपणाथी पुरंदरपणो भिन्नमाने तेएवंभूतनय तेकहेवाशे एटलेएवंभूतनयकह्या एसातेसातनयनी व्याख्या कही

अथ आद्यनयचतुष्टयमभिधे पदार्थप्ररूपणाप्रवणत्वान अर्थ नयनामतत्वसामान्यरूपानया शब्दादयो भिधनया श ब्दवाच्यार्थगोचरताशेषाभिन्नभेदवाणवचनसिद्धिनिष्ठत वस्तुनामसमानलिंगाना समानवचनानांशब्दाना इंद्रशक्रपुरं

रादीनांवाच्यं नावार्थमेवाभिन्नमभ्युपैति नजातुचित्भिन्नवचनं वाशब्दंस्त्रीदाराः तथाआपोजलमितिसमभिरूढवस्तुप्रत्ययंश ब्दनिवेशादिंशक्रादीनांपर्यायशब्दत्वंनप्रतिजानीते अत्यंतभि न्नप्रवृत्तिनिमित्तत्वादभिन्नार्थत्वमेवानुमन्यंते घटशक्रादिशब्दा नामिवेति एवंभूतःपुनर्यथासद्भाववस्तुवचनगोचरं आपूवती तिचेष्टाविशिष्टएवार्थोघटशब्दवाच्यःचित्रालेख्यतोपयोगपरिणत श्चचित्रकारः चेष्टारहितस्तिष्ठन्घटोनघटःतद्ब्दार्थरहितत्वात् कूटशब्दवाच्यार्थवन्नापिभुंजानः सयानोवाचित्रकाराभिधाना भिधेयश्चित्रज्ञानोपयोगपरिणतिशून्यत्वाद्गोपालवदेवमभेदभेदा र्थवाचिनो नेकैकशब्दवाच्यार्थावलंबिनश्चशब्दप्रधानार्थोपसर्ज नाछब्दनयाइतितत्वार्थवृत्तौ एतेपुनैगमः सामान्यविशेषोभय ग्राहक व्यवहारविशेषग्राहकः द्रव्यार्थावलंबिऋजुसूत्रविशेषग्रा हकएव एतेचत्वारः द्रव्यनयाः शब्दादयः पर्यायार्थिकविशेषाव लंबीभावनयाश्चेति शब्दादयोनामस्थापनाद्रव्यनिक्षेपादवस्तुत याजानाति परस्परसापेक्षाःसम्यक्दर्शनिप्रतिनयंभेदानांशतं ते नसप्तशतंनयानामितिअनयोगधारोक्तत्वातज्ञेयं.

अर्थ ॥ एसातनयमां आद्यनाचारनय जेछे तेअविशुद्धछे शामाटे केजे पदार्थ केº द्र- य तेनेसामान्यपणेकहेवाना अधिकारीछे एनयनुं किहांएकअर्थनय एपणनामछे तेअर्थ- ब्देद्रव्यलेवुं तथाशब्दादिकत्रणनयते शुद्धनयछे केमके शब्दनाअर्थनी एनेमुख्यता पेहेलानयते भेदपणेवचननेवांछेछे अनेशब्दादिकनयते लिंगादिके अभेदवचने अभेद हे तथाभिन्नवचनने भिन्नार्थकहीमाने अनेसमभिरूढते भिन्नशब्दतेनेवस्तुपर्यायन ाने तथाएवंभूतते भिन्नगोचरपर्यायने भिन्नमाने जेचेष्टाकरतोहोय तेनेघटकहे पण ुणेपड्योघटकहेनही चित्रामकरतोहोय तथातेजउपयोगेंवर्ततोहोय तेनेचित्रकार हेपणतेजचित्रकारसुतोहोय अथवाखावावेठोहोय तेनेचित्रकारनकहे केमकेतेउप- ोगेंरहितछे माटेएनयतेशब्द तथाअर्थनेअभेदपणेमानेछे अनेअर्थथीशून्यशब्दते ाणनथी अनेशब्दप्रधान अर्थतेद्रव्यने गौणपणेवर्तता शब्दादिकत्रणनयछे एम त- ार्थटीकामध्येकह्योछे.

एसातनयनेविषे पेहेलोनैगमनयते सामान्यविशेषवेहुनेमानेछे सग्रहनय ते न्यनेमानेछे व्यवहारनयविशेषनेमानेछेअने द्रव्यार्थावलवीछे ... पर्यायार्थिक हकछे एचारतेद्रव्यनयछे अनेपाछला शब्दादिकत्रणनयते पर्यायार्थिक नानयछे तथाशब्दादिकनयते नामस्थापनाद्रव्य एपेहेलात्रणनिक्षेपाने नेछे तिन्हसद्दनयाणअवत्थू एअनुयोगद्वारसूत्रनुवचनछे एसातेनयपरस्पर ग्रहेते समकेतिजाणवा अनेजो एनय परस्परविरोधीहोय तोमिथ्यात्वी जाणवा याएकेकानयना सोसोभेदथायछे एमसातेनयनामली सातसोभेदथायछे कार श्रीअनुयोगद्वारसूत्रथीकह्योछे

पूर्वपूर्वनय प्रचुरगोचर परास्तुपरिमितविषया सन्मात्रगोचरात् मग्राहात्नैगमोभावाभावभूमित्वाद्भूरिविषय वर्त्तमानविषया ऋजुसूत्राद्यवहारस्त्रिकालविषयत्वात्बहुविषयकालादिभेदेनभि न्नार्थोपदर्शनात् भिन्नाद्दजुसूत्रविपरीतत्वान्महार्थ प्रतिपर्यायमश ब्दमर्थभेदमभीप्सित समभिरूढाछब्दप्रभूतविषयः प्रतिक्रिया भिन्नमर्थप्रतिजानात्एवभूतात् समभिरूढ महानूगोचर नयवा क्यमपिस्वविषयेप्रवर्त्तमानविधिप्रतिषेधाभ्यांसप्तभंगीमनुनजति अनग्राहीनैगम सत्ताग्राहीसग्रह गुणप्रवृत्तिलोकप्रवृत्तिग्राही व्यवहार कारणपरिणामग्राहीऋजुसूत्र व्यक्तकार्यग्राहीशब्द प र्यायानरभिन्नकार्यग्राही समभिरूढ तत्परिणामनसुख्यकार्यग्राही एवभूत इत्याद्यनेकरूपोनयप्रचार जावतियावयणप्पहा ॥ तावनियाचेवहूतिनयवाया ॥ इतिवचनात् उक्तोनयाविचार

अर्थ ॥ एप्रकारे पूर्वेपूर्वलोजेनैगम नय तेनो विस्तारघणोजाणवो अने परलोनयनेनो परिमितविषयछे एटले थोडोविषयछे ... वनिमनाने सग्रहनयग्रहे अनेनैगमते भावाभाव अथवा सरूपपणे अछता नेग्रहे अथवासामान्यविशेष वेधर्मनेग्रहे तेमाटेनैगमनोविषयघणोछे तथा सन्मात्र सामान्यविशेष वेहुनेग्रहेछे अनेव्यवहारते सत्एकविशेषनेज ग्रहे एनर्थी व्यवहारनयनो विषयथोडोछे अने व्यवहारनयथी संग्रहनय ते थ

ऋजुसूत्रनय ते वर्त्तमानविशेषधर्मनो ग्राहकछे अनेव्यवहारथी ऋजुसूत्रनयते काल-
यनोग्राहकछे तेमाटेव्यवहार बहुविषयीछे अने व्यवहारथी ऋजुसूत्रअल्पविषयीछे
जुसूत्रनयते वर्त्तमानकालग्रहे अनेशब्दनयकालादि वचनलिंगथी वेहेंचताअर्थनेग्रहे
ने ऋजुसूत्रनयतेवचनलिंगने भिन्नपाडतोनथी तेमाटे ऋजुसूत्रथी शब्दनयअल्पवि-
ीछे ऋजुसूत्रबहुविषयीछे अनेशब्दनय सर्वपर्यायनो एकपर्यायनेग्रहताग्रहे अनेस-
भिरूढतेजेधर्मव्यक्त तेवाचकपर्यायनेग्रहे तेमाटे शब्दनयथी समभिरूढनय ते अ-
विषयीछे केमके समभिरूढते पर्यायनोसर्वकालगवेष्योछे अने एवंभूतनयते प्रति-
यें क्रियाभेदें भिन्नार्थपणो मानतोअल्पविषयीछे तेमाटे एवंभूतथी समभिरूढव-
वेषयीजाणवो अने एवंभूत अल्पविषयी जाणवो.

जेनयवचनछे तेपोतानानयने स्वरूपेंअस्तिछे अनेपरनयनास्वरूपनी तेमांनास्तिछे ए-
र्वनयनी विधिप्रतिषेधेंकरीने सप्तभंगीऊपजे पणनयनीजेसप्तभंगी ते विकलादेशी
होय अनेजेसकलादेशीसप्तभंगी तेप्रमाणछेपणनयनीसप्तभंगीनऊपजे.

उक्तंच रत्नाकरावतारिकायां विकलादेशस्वभावाहिनयसप्तभंगीवस्त्वंशमात्रप्ररूप-
त्वात् सकलादेशस्वभावनुंप्रमाणसप्तभंगी संपूर्णवस्तुस्वरूपप्ररूपकत्वात्एवचनछे एट-
यथायोग्यपणेनयनोअधिकार कह्यो.

सकलनयग्राहकंप्रमाणं प्रमाताआत्माप्रत्यक्षादिप्रमाणसिद्धः
चैतन्यस्वरूपः परणामीकर्त्तासाक्षात्भोक्तास्वदेहपरिमाणः प्र
तिक्षेत्रभिन्नत्वेनैवपंचकारणसामग्रीतः सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र
साधनात्साधयतेसिद्धिः स्वपरव्यवसायिज्ञानंप्रमाणं तद्द्वि
धप्रत्यक्षपरोक्षभेदात्स्पष्टंप्रत्यक्षापरोक्षमन्यत् अथवाआत्मोप
योगताइंद्रियद्वाराप्रवर्त्तनेनयत्ज्ञानंतत्प्रत्यक्षं अवधिमनपर्यायौ
देशप्रत्यक्षो केवलज्ञानंतुसकलप्रत्यक्षंमतिश्रुतेपरोक्षे तच्चतु
र्विधं अनुमानोपमानागमार्थापत्तिभेदात् लिंगपरामर्शोनुमानं
लिंगंचाविनाभूतवस्तुकंनियतंज्ञेयंयथागिरिगुहिगदोव्योमावलं
विधूमलेखांदृष्ट्वाअनुमानंकरोति पर्वतोवन्हिमान्धूमवत्वात् य
त्रधूमस्तत्राग्निः यथामहानसं एवंपंचावयवशुद्धं अनुमानं य
थार्थज्ञानकारणं सदृश्यावलंबनेनाज्ञानवस्तुनोयत्ज्ञानंउपमान

ज्ञानं यथागोस्तथागवयः गोसादृश्येनअदृष्टगवयाकारज्ञानं उपमानज्ञानं यथार्थोपदेष्टापुरुषआप्त सदउत्कृष्टतोवीतराग सर्वज्ञएव आप्तोक्तवाक्यआगम रागद्वेषाज्ञानज्ञयादि दोषर हितत्वात् अर्हत वाक्यआगम तदनुयायिपूर्वापरविरुद्धमि थ्यात्वासंयमकषायज्रातिरहितं स्याद्वादोपेतंवाक्य अन्येषाशि ष्टानामपिवाक्यआगम लिंगग्रहणाद्ज्ञेयज्ञानोपकारकअर्थाप त्तिप्रमाण यथापीनोदेवदत्तोदिवानजुंक्ते तदाअर्थाद्रात्रौभुंकेएव इत्यादिप्रमाणपरिपाटीगृहीतजीवाजीवस्वरूप सम्यक्ज्ञानीउच्यते

अर्थ ॥ हवेप्रमाणनु स्वरूपकहेछे सर्वेनयना स्वरूपने ग्रहणकरनारो तथा मिनो जाणगपणोछेजेमा एहवुजेज्ञानतेने प्रमाणकहियें जेप्रमाणतेमापवानुनामछे ण जगतनासर्वप्रमेयने मापवानुप्रमाण तेज्ञानछे अनेतेप्रमाणनो प ठ छे तेप्रत्यक्षादिप्रमाणे सिद्ध के०ठहेरव्योछे चेतन्यस्वरूपपरिणामीछे वलीनवनवधर्मे स्पादव्ययपणे परिणमेछे तेमाटेपरिणामिकछेतथाकर्त्ताछे तथाजोक्ताछे जजोक्ताहोय जोक्तापणाविना सुखमयीकहेवायनही तेचेतन्यसत्ता णछे प्रतिक्षेत्रके०प्रत्येकें शरीरजिन्नपणामाटे जिन्नजीवछे तेजीवपाचकारणनी पामीने सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान सम्यक्चारित्रनेसाधवाथी सपूर्णअविनाशी नि कलंकअसहाय अप्रयास स्वगुणनिरावरण स्वकार्यप्रवृत्ति अक्षर एवीसिद्धता नि पन्नतानीपजे एजसाधनमार्गछे.

स्वशब्देंकरीआत्मा परशब्देंपरद्रव्य स्वआत्माथीजिन्न अनतापरजीवधर्मादिक नाव्यवसायीव्यवछेदकजेज्ञान तेनेप्रमाणकहियें तेनामूलजेदवेछे एकप्रत्यक्ष बीजो रोक्ष तिहास्पष्टज्ञानते प्रत्यक्षकहिये तेथीइतरके०बीजोजे अस्पष्टज्ञानते परोक्ष. अथवा आत्माना उपयोगथी इंद्रियनीप्रवृत्तिविना जे ज्ञान ते प्रत्यक्षकहियें तेना दछे एकदेशप्रत्यक्ष बीजोसर्वप्रत्यक्ष तेमाअवधिज्ञान तथामनपर्यवज्ञान ते देश क्षछे केमके अवधिज्ञान एकपुद्गलपरमाणुने द्रव्येंतथाक्षेत्रें अने कालें टलाकपर्यायनेदेखे तथामनपर्यवज्ञानी मननापर्यायने प्रत्यक्षजाणे पण व जाणे माटेएज्ञानने देशप्रत्यक्षकहियें कारणके देशथीवस्तुनेजाणे पण स णेमाटे अने केवलज्ञान ते जीवतथाअजीवरूपीतथाअरूपीसर्वलोकालोकना सना सर्वजावने प्रत्यक्षपणेजाणे माटे सर्वप्रत्यक्षकहियें

तथा मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान ए बे अस्पष्टज्ञान छे माटे परोक्ष छे ते परोक्षप्रमाणना चा-
र भेद छे १ अनुमानप्रमाण २ उपमानप्रमाण ३ आगमप्रमाण ४ अर्थापत्तिप्रमाण नि-
श्चित चिन्हे करीने जे पदार्थने ओळखवुं तेने लिंग कहियें तेपरामर्शे के० संज्ञाळखवाथी जे ज्ञान
थाय तेने अनुमानज्ञान कहियें लिंग ते जे विना ते वस्तु होय ज नही ते ते वस्तुनुं लिंग जा-
णवु ते लिंगने देखवाथी वस्तुनो निर्धार करवो ते अनुमानप्रमाण जाणवो.

जेम गिरिगुहिरने विषे आकाशावलंबी धूमनी रेषा देखीने अनुमान करे जे ए पर्वत अ-
ग्निवंत छे ए पक्ष तथा साध्य कह्यो जे पक्ष ते पर्वत अने साध्य ते अग्निवंतपणो साधवो ते
हेतु जे धूमवंतपणा माटे एटले जिहां धूम होय तिहां अग्नि अवश्य होय ज आकाशने पो-
हचती जे धूमरेषा ते अग्नि विना होय नही तिहां दृष्टांत कहे छे.

जेम महानस के० रसोडआए ते रसोडाने विषे धूम तथा अग्निने जोया दीठा तेमाटे इहां
आ अमुक पर्वतने विषे धूम छे तो तिहां निश्चेथी अग्नि छे ज एह वी व्याप्ति निर्धारीने ज्ञान करवो
पंचावयवे शुद्ध अनुमानप्रमाण कहियें ते अनुमानप्रमाण मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञाननुं
कारण छे ते अनुमाने जे यथार्थज्ञान थाय तेने मान के० प्रमाण कहियें अने जे अयथार्थ-
ज्ञान थाय ते प्रमाण नही.

तथा सरिखावलंबीपणे अजाणी वस्तुनो जे जाणपणो थाय जेम गो के० बलद तेम ग-
वय के० गवो ए गो सरिखो गवयनुं ज्ञान थयुं ते उपमानप्रमाण कहियें.

यथार्थ ज्ञावनो उपदेशक जे पुरुष ते आप्त कहियें ते उत्कृष्ट आप्त वीतराग रागद्वेषरहि-
त सर्वज्ञ केवलज्ञानी ते आप्तनो कह्यो जे वचन तेने आगम कहियें जे राग द्वेष तथा अज्ञान
दोषे आगोपाछो अधिको ओछो बोलाय छे ते आगम नही अने राग द्वेष तथ अज्ञान र-
हित जे अरिहंत तेनुं वचन ते आगमप्रमाण जाणवो.

तथा वळी ते अरिहंतना वचनने अनुजायी पूर्वापर अविरोधि मिथ्यात्व असंयम क-
षायथी रहित ते भ्रांति विना स्याद्वादे युक्त तथा जे साधक ते साधक बाधक ते बाधक हे-
य ते हेय उपादेय ते उपादेय इत्यादिक वहेंचणसहित जे होय तेनो कह्यो ते आगम प्र-
माण जाणवो उक्तंच सुत्तं गणहररइयं तहेव पत्तयबुधरइयंच ॥ सुअकेवलीना रहियं अ-
भिन्नदशपुव्विणा रइयं ॥ १ ॥ इत्यादिक सदुपयोगी भवभीरु जगतजीवोना उपकारी ए-
हवा श्रुतआम्नायधर जे श्रुतने अनुसारें कहे तेनो वचन पण प्रमाण मानवुं.

तथा कोइक फलरूप लिंगे करीने जे अजाण्या पदार्थनो निर्धार करियें ते अर्थापत्तिप्र-
माण कहियें जेम देवदत्तनो पीन के० पुष्टशरीर छे पण ते देवदत्त दिवसनो जमतो नथी ते वा-
त अर्थापत्तिथी जाणीयें जे रात्रें जमतो हशे माटे पुष्टशरीर छे एम अर्थापत्तिप्रमाण जाणवो
ए प्रमाण ते जाते अनुमाननो अंश छे तेमाटे श्रीअनुयोगद्वारमां प्रथम कह्यो नथी.

इहांदर्शनांतरी जे प्रमाणमानेछे पणतेसत्यनथी जेमठनकारनाइं
ऊपनो जेज्ञान तेनेनैयायिक प्रत्यक्षप्रमाणकहेछे अने नरअलनेइंद्रियरहि
नानदमयीमानेछे तेवारें इंद्रियरहितज्ञानते अप्रमाणथायछे इत्यादि
तेमाटेतेप्रमाणनही तथाचार्वाकमतवाला मात्र एकइंद्रियप्रत्यक्षनेज
एमदर्शनांतरीना अनेकविकल्पटालीने सर्वनयनिक्षेप सप्तभंगी ७
जीव तथाअजीवनो जे सम्यकज्ञान तेने सम्यक्ज्ञानीकहियें ज्ञानगुण

तत्वार्थश्रध्धानंसम्यग्दर्शनं यथार्थहेयोपादेयपरीक्षायुक्तज्ञाने
नसम्यग्ज्ञानस्वरूपरमणपरपरित्यागरूपंचारित्रंएतत्रत्नत्रयीरू
पमोक्षमार्गसाधनात्साध्यसिध्धि॰ इत्यनेनात्मन स्वीयस्वरूपस
म्यक्ज्ञानंज्ञानप्रकर्षएवात्मलाभ ज्ञानदर्शनोपयोगलक्षणएवा
त्मा छद्मस्थानाचप्रथमदर्शनोपयोग केवलीनाप्रथमज्ञानोपयो
ग पश्चाद्दर्शनोपयोगसहकारीकर्तृत्वप्रयोगात् उपयोगसहका
रेणैवशेषगुणाना प्रवृत्त्यभ्युपगमात् इत्येवस्वतत्वज्ञानकरणे
स्वरूपोपादनं तथास्वरूपरमणध्यानैकत्वेनैवसिध्धि

अर्थ ॥ हवे श्रीवीतरागना आगमथी जाण्यो जे वस्तुस्वरूप तेने ६५
धारकरवो तेसम्यक्दर्शनकहिये तिहांतत्वार्थनेविषेकह्योछे के जे तत्वा
क्दर्शन उक्तंच उत्तराध्ययने जीवाजीवायबधो ॥ अपुन्नपावसनोतहा ॥ सवरो
रामुक्खो ॥ सतिएतिहियानव ॥ १ ॥ तिहियाणतुभावाण सदभावेउवएसण
वेणसद्दहतस्स ॥ समत्तंतिवियाहिय ॥२॥ इत्यादिकदशरुचीथी सर्वजाणवु जे
जीवादिपदार्थनो श्रद्धाननिर्धार ते सम्यक्दर्शनकहियें अनेजेसम्यक्दर्शनते
सछे तथाजेहेयतेतजवायोग्य अने उपादेयते ग्रहणकरवायोग्य एहवी
जेजाणपणो तेसम्यक्ज्ञानछे जेमाहेयोपयोग सकोच अकरणवुद्धीनथी ५०८
उपयोगें एहवीचिंतवणाथायजेहवे किवारेकरु एविनाकेमचाले एहवी जेबुद्धी
तेसवेदनज्ञानछे तेथीसवरकार्यथाय एवोनिर्धारनथी

तथास्वरूपरमण परभावरागद्वेष हिंसादिकनोत्याग तेचारित्रकहियें
रूप परिणामते मोक्षमार्गछे एमार्गनेसाधवाथी साध्य जे परमअव्याबाधपद तेनी
ध्धिनिष्पत्तिथाय जेआत्मानोपोतानुरूप तेयथार्थज्ञानछे तथा चेतनालक्षण तेन
पणोछे अने ज्ञाननोप्रकर्ष बहुलपणोते आत्मानेलाभछे ज्ञानतथादर्शननो

समयमांहे सिद्धनेश्रव्यये प्रथमदर्शनोपयोग पछेज्ञानोपयोगहे अनेकेवलीने प्रथम
उपयोग पछे दर्शनोपयोगहे तेमज जीवनांगुणधर्मनो केवलीनेज्ञानोपयोग तेरा-
ग तेमाटे प्रथमज्ञानोपयोगकह्यो.
अनेमहत्वार्थीनिरनृंताहि तेजमहनोनिमज्ने एकगुणनेसाधक्के अनेवीतगुणनो
योगमहत्कांदरणीने महज्ञानेज्ञानोपयोग विशेषधर्मनेजाणे तेज्ञानगांविशेषने सा-
मान्यआधारनेदेहे तेमहिम्नजाणेहहुं विशेषनेजा सामान्यरहेवाथा अनेसामा-
न्यनां सामान्यनेविशेषना जनसहे ना महिम्नजाणेमाटेसनंदेहरवीयनोज्ञान
नीतिमानरनुहननरनु ने नीरूपधर्मनां रूपाहानरे भेजाणंग्मार पछे सम्यनेवानरे
पत्नांतरनानार तेरमनवी यानजी पत्नमानार परहेलनिर्द्धहान निर्धनाचित्र
। निर्धनपणांसार तेज ।। सिद्धिरे घोंवा निपरे अविजान जाणवे.

ततःप्रथमसमये   ग्रंथिभेदं कृत्वा शुक्लध्यानज्ञानीक्षायोपश
म   स्वरूपंचारित्र ध्यानपरिणामेनक्षपकश्रेणीपरिपाटीकृत्वाघातिकर्म
क्षय   अथातकेवलज्ञानदर्शन.   योगनिरोधात   अयोगीभाव
मापन्न   अघातिकर्मक्षयानंतरंसमयएवात्पर्यवसन्याएकांतिका
त्यंतमनाबाधनिरुपाधिनिधिरूपं   चस्थिानंतशाविनाशिसंपूर्णा
त्मशक्तिप्रागभावलक्षणंसुखमनुभवन् सिध्यति सायनंतंकालंति
ष्टतपरमात्माइति   एतत्कार्यं   सर्वभव्यानां

अर्थ ॥ तेप्रथमग्रंथिभेदकरीने शुक्लश्रद्धावान तथाशुद्धज्ञानीजेजीव ते प्रथमत्रण
कर्मोनो क्षयोपशमकरीने पाम्यांजेचारित्र तेध्यानेंएकत्वथईने क्षपकश्रेणीमांडी च्य-
मेघातिकर्म क्षयकरीने केवलदर्शनपामे पछेएसयोगीगुणें जघन्यथी अंतर्मुहूर्त उ-
त्कृष्टो आठवर्षऊणापूर्वकोडीरहीने कोइककेवलीसमुद्घात करे कोइककेवलीस-
मुद्घातनकरे पणआवर्जिकरण सर्वकेवलीकरे ते आवर्जिकरणनुंस्वरूपकहेछे इहां
आत्मप्रदेशे रह्याजेकर्मदल तेंपहेलांवचेछे पछेउदीरणाथायछे पछेभोगवीनिर्जरेछे ति-
हां केवलीने जिवारेंतेरमेंगुणठाणें अल्पायुरहे तिवारेंआवर्जिकरणकरेछे तेआत्मप्रदे-
शगतकर्मदलनें प्रतिसमयें असंख्यातगुणनिर्जराकरवीछे तेटलादलने आत्मवीर्येंकरीने
उचलायमानकरीमूके एवुजेवीर्यनुंप्रवर्तन तेआवर्जिकरणकहियें एमकरतां त्रणकर्म-
स्थितनांस्थानो समुद्घातकरे नहीका नकरे तेमाटे आवर्जिकरण सर्वकेवलीकरे पछे
तेरमागुणठाणानेअंते योगनोरोधकरीने अयोगी अशरीरी अणाहारीअप्रकंप घनीकृ-

तथ्यात्मप्रदेशीथको पांचलघुअक्षरजेटलोकाल अयोगीगुणठाणेरहिने
कृतिविद्यमान तथाअविद्यमान स्तिबुकसंक्रमे सत्ताथीखपावी
रहितथयी तेहिजसमये आकाश प्रदेशनी वीजीश्रेणीने अणफरसतोथको
कृतकृत्य संपूर्णगुणप्राग्भावी पूर्णपरमात्मा परमानंदी अनंतकेवलज्ञानमयी
दर्शनमयी अरूपीसिद्धथाय उक्तंच उत्तराध्ययने कहिंपडिहयासिद्धा ॥ क
यठिया ॥ कहिंवोहिंचइत्ताण ॥ कत्थंगंतुणसिज्झई अलोएपडिहयसिद्धा
पयठिया ॥ इहंवोंदंचइत्ताण तत्थगंतूण सिज्झइ ॥ इत्यादि तेसिद्ध एकांतिक
तिक अनाबाध निरुपाधि निरुपचरित अनायास अविनाशी संपूर्ण आत्मस्व
रूपसुखप्रते अनुभवे अव्याबाधसुखते प्रदेशेप्रदेशे अनंतोछे उक्तंच
कस्ससुहोराशि ॥ सव्वआपज्जियजहवज्जा ॥ सोणंतवगोभइयो ॥ सव्वागासेनमाइ
इतिवचनात् एरीतेपरमानंदसुख भोगवतारहेछे सादिअनंतकालपर्यंत
तोएहिजकार्य सर्वभव्यने करवो तेकार्यनोपुष्टकारण श्रुताभ्यासछे तेश्रुत
माटे एद्रव्यानुयोग नयस्वरूप लेशथीकह्यो तेजाणपणो जेगुरुनीपरंपराथी
गुर्वादिकनी परंपरानेसंभारुछु

काव्य

गछेश्रीकोटिकाख्येविगेदखरतरेज्ञानपात्रामहांत सूरिश्रीजैनच
द्रा गुरुतरगणभृत्शिष्यमुख्याविनीता ॥ श्रीमत्पुण्याल
धाना सुमतिजलनिधिपाठका साधुरंगा ॥ तच्छिष्या पाठकेंद्रा
श्रुतरसरसिकाराजसारामुनींद्रा ॥ १ ॥

तच्चरणांबुजसेवालीना श्रीज्ञानधर्मधरा ॥
॥ २ ॥ नयचक्रलेशमेतत्तेषांशिष्येणदेवचंद्रेण ॥ स्वपरावबोधनार्थं
ध्यर्थं ॥ ३ ॥ शोधयतुसुधिय कृपापरा शुद्धतत्त्वरसिकाश्चपठंतु ॥ साधनेनहठ
सत्सुखा परममंगलभावमश्नुते ॥ ४ ॥ इतिश्रीनयचक्रविवरणसमाप्तम् ॥

दोहा

सूक्ष्मबोधविणुभविकने ॥ नहोयेतत्त्वप्रतीत ॥ तत्त्वालंबनज्ञानविण ॥
मभीत ॥ १ ॥ तत्त्वतेआत्मस्वरूपछे ॥ शुद्धधर्मपणतेह ॥ परभावानुगचेतना ॥
हछेएह ॥ २ ॥ तजीपरपरिणतिरमणता ॥ भजनिजभावविशुद्ध ॥
परमानंदप्रसिद्ध ॥ ३ ॥ स्याद्वादगुणपरिणमन ॥ रमतासमतासंग ॥

ंकल्परसरंग ॥ ४ ॥ मोक्षसाधनतणुमूलते ॥ सम्यक्दर्शनज्ञान ॥ वस्तुधर्मअव-
विणु ॥ तुसखंम्रणसमान ॥ ५ ॥ आत्मबोधविणुजेक्रिया ॥ तेतो बालकचाल ॥
र्थनीवृत्तिमें ॥ लेजोवचनसंजाल ॥६॥ रत्नत्रयीविणुसाधना ॥ निःफलकहीसदीव॥
विजयअध्ययनमें ॥ धरोउत्तमजीव ॥ ७ ॥ इंद्रिविषयआसंसना ॥ करताजेमु-
लंग ॥ खूतातेजवपंकमें ॥ जाखेआचारंग ॥ ८ ॥ इमजाणीनाणीगुणी ॥ नकरेपुज्ञ-
ास ॥ शुद्धात्मगुणमेंरमे ॥ तेपामेसिद्धिविलास ॥ ९ ॥ सत्यारथनयज्ञानविनुं ॥ न-
सम्यक्ज्ञान ॥ सत्यज्ञानविणुदेशना ॥ नकहेश्रीजिन जाण ॥ १० ॥ स्यादवाद-
गुरु ॥ तसुरसरसियाशीस ॥ योगमिलेतोनीपजे ॥ पूरणसिद्धजगीस ॥ ११ ॥ व-
श्रोतायोगथी ॥ श्रुतअनुजवरसपीन ॥ ध्यानध्येयनी एकता ॥ करताशिवसुखलीन
२ ॥ इमजाणी शासनरुची ॥ करजोश्रुतअभ्यास ॥ पामीचारित्रसंपदा ॥ लेहेसो-
विलास ॥ १३ ॥ दीपचंद्रगुरुराजने ॥ सुपसायेंउल्लास ॥ देवचंद्रजवीहितजणी ॥
योग्रंथप्रकाश ॥ १४॥ सुणसेजणसेजेजविक ॥ एहग्रंथमनरंग ॥ ज्ञानक्रियाअ-
सतां ॥ लहेसे तत्वतरंग ॥१५॥ द्वादशसारनयचक्रछे ॥ मल्लवादिकृतवृद्ध॥ सप्तशति-
वाचना ॥ कीधीतिहांप्रसिद्ध ॥ १६ ॥ अल्पमतिनाचित्तमें ॥ नावेतेविस्तार ॥ सु-
थूलनयजेदनो ॥ जाप्योअल्पविचार ॥ १७ ॥ खरतरमुनिपतिगच्छपति ॥ श्रीजिन-
सूरिस ॥ तासशीसपाठकप्रवर ॥ पुन्य प्रधानसुनीस ॥ १८ ॥ तसुविनयीपाठक-
र ॥ सुमतिसागरसुसहाय ॥ साधुरंगगुणरत्ननिधि ॥ राजसारउवज्झाय ॥१९॥ पा-
ज्ञानधर्मगुणी ॥ पाठकश्रीदीपचंद ॥ ताससीसदेवचंदकृत ॥ जणतांपरमानंद॥२०॥
तिश्रीनयचक्रविवरणंसमाप्तं ॥

॥ इतिश्रीपंमित देवचंदजीकृत नयचक्रसार

बालावबोधसहितः संपूर्णः ॥

॥ श्रीगौतमगुरुभ्योनम ॥

॥ श्रीआनदघनकृत चतुर्विंशति जिनस्तवन बालावबोध सहित॥

दोहा

चिदानद आनंदमय, चिदरूपिअविकार ॥ सिध्दबुध्दसुविशुध्द, तुम परमाधार ॥ १ ॥ तुजकृपाबलतायीकरूं, भापाभापारूप ॥ तमनाजिनवचीसनी, आनंदघनरसकूप ॥ २ ॥ राजरीध्दि जेम देखीने, डमक मनआश ॥ बुध्दि रीध्दिविण हु डमक, अरथराजरीध्दिरास ॥ ३॥ आशय आनंदघनतणो, अतिगभीर उदार ॥ बालक बाहु पसारिनि, कहे ऊदधि विस्तार ॥ ४ ॥ तेममनोरथमुजमने, बुध्दिविण किमथाय॥ गुरू कृपाथी गहननग, पंगु पार लघाय ॥५॥ भीभापाभापातणी, एवुं कहिदेय ॥ पीस्यानुं शु पीसवु, पीस्येगणनलेय ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री ऋषभ जिनस्तवन ॥

॥ रागमारू ॥ करमपरिक्षा करण कुमर चल्योरे ॥ ए देशी ॥

ऋषभ जिनेश्वर प्रितममाहरोरे॥ ओर न चाहुरे कत॥
रीझ्यो साहेब सग न परिहरेरे ॥ भागेसादिअनत ॥ ऋषभ० ॥१

अर्थ ॥ शुद्धचेतना श्रद्धासखीने पोताना घरनु वृत्तात कहेछे हे सखि स्वामिनु वृत्तात साभल, मारा स्वामिनु वृत्तात साभलवाथी, मारा घरनु सर्व तु पोतानीमेले समजी जईश जे स्त्रीने पति कथनमा होय तेने बीजातो होयज मारो प्रितम के० भर्त्तार ऋषभ जिनेश्वर के०प्रथम तीर्थंकर, रागद्वेष रहितनो भर्त्तार पामवाथी हु रागद्वेषयुक्त परिणतिवाला बीजा देवोनी कत के० पणे चाहना करती नथी मारा भर्त्तारनो एवो स्वभावछे के, माराविना बीजा ते रजन थतो नथी अर्थात् ज्यारथी ते मारीसाथे रीझ्यो छे त्यारथी, अत्यार ते साहेबके०स्वामिए मारा सगनो त्याग कर्यो नथी अने भविष्यमा त्याग नही, कारणके अभेदस्वरुपे सग थयो छे मारा स्वामिना सगनो सिद्धातमा अनत भागो वर्णवेलो छे शुद्ध स्वभाव प्रगट्यो त्यारथी सादि अने ते स्वभा

त्रें अक्षय, माटे अनंत, अथवा वीतरागपणे प्रतीत कर्यो ते सादि अने ते स्वजाव रूपताजावि तन्मयिजाव आचरणहेतुरूपे थयो ते अनंत. ए प्रमाणे मारो ज-मने तजवानो नथी. ॥ १ ॥

प्रीत सगाईरे जगमां सहु करे रे ॥ प्रीत सगाई न कोय ॥
प्रीतसगाईरे निरूपाधिक कहीरे॥ सोपाधिक धन खोय ॥ ऋषज० ॥२॥

अर्थ ॥ प्रीति बे प्रकारनी छे. लोकोत्तरप्रीति अने लौकिकप्रीति. जगतमां सर्व ज्यो प्रीति वधारवामाटे पुत्रपुत्रीनो सगपणसंबंध अन्योअन्यवच्चे करेछे, परंतु ते प्री-ी रीतितरफ विचारकरतां मने जासे छे के, हे श्रद्धा, मारा जर्त्तारनी प्रीति एवा पण संबंधवाली नथी. मारा जर्त्तारनी प्रीतिमां स्वजावनो मेलाप होवाथी, ते निरु-धिक प्रीति छे अने सिद्धांतमां पण प्रीतिनी रीतिने उपाधिरहित वर्णवेली छे, तेथी श्रद्धा! जेविजावीहोय अने स्वजावि ऋषजपरमात्मासाथे उपाधियुक्त प्रीतिकरवा तो होय ते ऋषजजिननी प्रीतिरूप स्वजावनी प्राप्तिसंबंधी परमधनने खोवेछे अ-त् आत्मगुणनो नाश करेछे ॥ २ ॥

कोइ कंत कारण काष्ट जक्षण करेरे ॥ मलशुं कंतने धाय ॥
ए मेलो कहिये नवि संजवेरे॥ मेलो ठाम न ठाय ॥ ऋषज० ॥३॥

अर्थ ॥ वली सोपाधिक प्रीतिनुं दृष्टांत आपी, निरुपाधिक प्रीति दृढ करेछे. हे श्र-! कोइ स्त्री पतिना मरण पछी पतिने मलवावास्ते काष्टजक्षण के० सति थायछे. वली लाएक मतवादी, निरंजन परमात्माने मलवासारू पंचाग्नि तपेछे, जंपापात करेछे, तीमां समाध करेछे, एम धारीने के, दोमीने कंतने मलीए; परंतु एवां कष्टो करवा-निरंजन परमात्मानी साथे मेलाप थवो ते त्रणे कालमां संजवतो नथी. वली अमुक तमां तुं जाजे अने हुं पण अग्निमां जस्मथइ तेज स्थानके आवीश एम मेलोठाम-ायके० निश्चये कदापि तेज स्थान प्राप्त थतुंज नथी. वली तेनी जेम पंचाग्नि प्रमुखथी ण थाय ते पण बालमरणछे तेथी तेवा मरणथी सिद्धस्थानक प्राप्त थाय नहि. ॥३॥

कोइ पतिरंजन अतिघणो तप करेरे ॥ पतिरंजन तनताप ॥
ते पतिरंजन में नविचित्त धर्युंरे ॥ रंजन धातु मेलाप ॥ रीषज० ॥४॥

अर्थ ॥ वली हे श्रद्धा ! मारा पतिने मलवावास्ते, कोइ क्रियारुचि जीव मारा पतिने नके०राजी करवावास्ते अत्यंत तप करे छे, तेवी एकांत तपस्याथी मारो पति राजी ा नथी, तेवी तपस्याथीतो मात्र शरीर सूकायछे. तेथी मात्र तपस्यारूप बाह्यकर-ए मारा पतिने राजी करवा एवु में मारा चित्तमां ठराव्युं नहि. कारणके मारा पतिने

रंजन करवानी रीत धातुना मेलाप जेवीछे अर्थात् तेवी प्रकृतिवालो थइ तन्मा त्यारे ते राजी थाय ॥ ४ ॥

कोइ कहे लीलारे ललख अलखतणीरे ॥ लख पूरे मनआश॥
दोषरहितने लीला नवि घटेरे ॥ लीलादोषविलास ॥ऋषभ०॥५॥

अर्थ ॥ वली कोइ जगत्कर्त्ता ईश्वरवादी एम कहेछे के अलखके०परमेश्वरनी ललखके०जाणीशकाय तेवी नथी ते परमेश्वरे पोतानी शक्तिथी लीलानी माया रची तेनुज नाम सर्वजगत्नु घटनविघटनरूप लीलानु ललख, एम परमेश्वर जगतना जीवोनी लाखोगमे आशा पुरेछे हे श्रद्धा! आवु कथन थी, कारणके रागादिदोष सहित होय ते अलख कहेवाय नही ने परमेश्वर कही ते लीला करेछे एम कहेवु ते वाजबी नथी, कारणके लीला ते मान दो के०तरंग छे, तेथी रागद्वेषविना लीलानो विलास न होय ॥ ५ ॥

चित्तप्रसन्नेरे पूजन फल कह्युरे ॥पूजा अखंडित एह॥
कपट रहित थइ आतम अरपणारे ॥ आनदघन पदरेह ॥ ऋषभ०॥

अर्थ ॥ तेथी हे श्रद्धा ! तप, संयम, नियम, व्रतपालन ए तारी लीला छ, सयमादिक विनापण तु लाखोना मननी आशानो पूरणहार छो एवा वचनो ते परमेश्वरनु पूजन नथी, परंतु चित्तनी प्रसन्नता के० आल्हादपणु तेनी सफलता छे अक्षत तंदुल, धूप, दीप, नैवेद्य, केशर, बरास, पुष्प विना सामग्री संपूर्ण होय छतापि चित्तनी प्रसन्नता के०शुभभावनो अभाव होय तो एक पूजा नही शुभ भाव तेज अखंड पूजा छे माटे हे सखि! जे पद के०मुक्तिपद पामवानी अभिलाषा राखतो होय ते मारा ऋषभ भर्त्तारसाथे कपटरहित के०बहिरात्मपणानो त्याग करी अतरात्मवत थइ स्थिर स्वभावे स्वरूपने पोताना आत्मामा चिंतवे ए प्रमाणे जे प्राणी ऋषभ परमात्माने अर्पण करे ते आनंद के०ज्ञानानंदनु पद जे मुक्तिपद तेनी रेह के०रेखा लाप प्राप्त करे. ते सिद्ध थाय ॥ ५ ॥ इति ऋषभजिनस्तवन

॥ अथ श्रीअजितजिनस्तवन ॥

॥ राग आशावरी॥ मारु मन मोह्युरे श्रीविमलाचलेरे ॥ ए देशी॥

पथमो निहालुरे बीजा जिनतणोरे ॥ अजित अजित गुणधाम ॥
जे तें जित्यारे तेणे हुं जीतियोरे ॥ पुरुष किस्युं मुजनाम ॥ पथ०॥

अर्थ ॥ आनदघन सुमतिने कहेछे हे सुमति! बीजा अजितनाथनो पथ के०

र्त्तना ते हुं यूथभ्रष्ट मृगनी जेम जोउंछुं. अर्थात् जे मार्गे प्रवर्त्तना अजितजिन निर्वा-
द पाम्या ते मार्गनी शोध करूंछुं. ते अजितनाथ, भव्यजीवो विना बीजा प्राणी
थी प्राप्त न थइ शके तेवा अनंतज्ञानदर्शनादि गुणोना धामछे. ते अजितनाथ जग-
ने आनंदघन कहेछे के. हे प्रभु ! राग. द्वेष. मोह प्रमुख जे शत्रुउने तमे जीत्या,
रागरूपादिके मने जीती लीधोछे. तेथी हे परमात्मा ! मारुं नाम पुरुष केम कहे-
? धर्मविना धर्मी केम थइ शके. जेम तमे पुरुषत्वधर्मे रागादिने जीत्या तेम हुं
त्यो होत तो हुं पण पुरुष कहेवात ॥ १ ॥

चर्म नयण करी मारग जोवतोरे ॥ भूल्यो सयल संसार ॥
जेणे नयणे करी मारग जोइएरे ॥ नयण ते दीव्य विचार ॥पंथ०॥२॥

अर्थ ॥ हे परमेश्वर! चर्मनयण के०बाह्यदृष्टिएकरी तमारो मार्ग, आत्मस्वरूप रूप,
राग परिणतिये परिणामेलो, परमात्मधर्मे धर्मित तेने, जोतां समस्त संसार भू-
ं भमेछे अर्थात् बोध. नैयायिक, सांख्य, वैशेषिक, वेदांती प्रमुख एकांतवादी, म-
मत्वी सर्व तमारा मार्गथी दूर भम्या करेछे. हे भगवंत ! जे नेत्रथी, शुद्ध स्याद्-
परमामृतमय जैनदर्शन. आत्मस्वरूप साक्षात्कार करवाने असाधारण कारणरूप
ारो मार्ग देखी शकिये, तेतो दीव्य के०ज्ञानरूप चक्षुज विचारके०जाणवी अ-
् अजितनाथ प्रभुनो मार्ग ज्ञान चक्षुथीज जोवाय ॥ २ ॥

पुरुष परंपर अनुभव जोवतांरे ॥ अंधोअंधपुलाय ॥
वस्तु विचारेरे जो आगमें करीरे ॥ चरण धरण नही ठाय ॥ पंथ० ॥३॥

अर्थ ॥ हे सुमति ! पुरुषोनी परंपरा के०श्रेणी– अहिं सुधर्मास्वामि, प्रभवस्वामि
ादि संबंध कथन नथी, परंतु गछोना भेद करनारा, मतममत्वी, परभवनी बी-
ी नही करनारा एवा गछ स्थापी परंपरा स्थापनारा पुरुषोने अनुभव के०विचार
ी जोतां अंधोअंध पुलाय ए दृष्टांत साक्षात् संभवेछे. जेमके सुयगडांग सूत्रना प्र-
श्रुतस्कंधना बीजा अध्ययनमां कह्युं छे के "अंधोअध पहंनित्ता पुरमद्धा न ग-
" आंधलो आंधलाने ग्रामांतरे पहोचाडी शके नही, तेम अहिं पण ज्ञान नेत्र
पुरुष परंपरा जेथी मार्ग पामी शकाय ते बे कारणो विद्यमान नथी अने आगम
सेद्धांत तेनाथी वस्तु के०तत्वविचारणा करीए छीए तो जे रीते अजितनाथ प्र-
ी, ते मार्गमां संपूर्ण प्रवर्त्तवु तो दूर रह्युं, परंतु चरण के०पग मुकवु अर्थात् पग मात्र
वुं ते पण कठिन छे. ॥ ३ ॥

तर्कविचारेंरे वाद परंपरारे ॥ पार न पहोंचे कोय ॥ अभि
मते वस्तु वस्तुगतें कहेरे ॥ ते विरलाजगजोय ॥ पंथ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली हे सुमति ! तर्कथी मार्गने विचारु तु तो एक तर्करूप प
पर बीजु कथन, एम कथन परपरा एटले वादपरपरा चाली आवेछे
चारता मारो जन्म विति जाय तोपण पार पामी शकु नही हतो शु
वादी बीजो कोइपण पार पामे नही, माटे हे सुमति ! अभिमते के०
वस्तुके०पदार्थ ते जैनमार्गी सिद्धात, तेने विषे गत के०जेम छे, तेमज कहे,
अक्षर पण हिनाधिक न कहे, तेवा प्राणी जगतमा विरलाज तु जोयके०देखी
यशोविजय उपाध्यायजी कहेछे के " शुद्ध नापकनी बलिहारी " ॥ ४ ॥

वस्तुविचारेंरे दीव्य नयन तणोरे ॥ विरह पड्यो निरधार ॥
तरतमजोगेरे तरतम वासनारे ॥ वासित बोध आधार ॥ पंथ० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ माटे जेथी वस्तुना यथार्थ स्वरूपनो विचार करीशकु एवा ज्ञानरू
तो रागादिकथी निरधार के०निश्चयपूर्वक विरह के०अतर पड्यु, अर्थात् मारु
ज्ञानरूप नेत्र फूटी गयु वली बीजीरीते वस्तुके०तत्वविचारे विचारीएतो
यनके०केवलज्ञानीविना शुद्धमार्ग पामी शकीए नही अने केवलज्ञानीनो
विरह पड्यो, माटे हे सुमति ! शुद्ध कथन करनार केवलज्ञानी प्रमुख मार्ग
कारणनो तो अभाव थयो अर्थात् नि सदेह योग प्राप्त नही थवाथी मार्ग
केवीरीते ? तेथी ज्ञाननी तरतमतानो योग प्राप्त थवाथी वासना के०श्रद्धा
थइ परतु सदेह रहित न थइ, तो एवी श्रद्धाए वासितके०सुगधित बोध
ननो मारे आधार छे ॥ ५ ॥

काललब्धि लही पंथ निहालशुरे ॥ ए आशा अविलब ॥
ते जन जीवेरे जिनजी जाणजोरे ॥ आनदघनमतअब ॥ पंथ० ॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त सर्व वात विचारी सुमति सहित आनदघन विलखो थइने वि
करेछे हे प्रभु ! परिपाक काल पामीने अर्थात् चरमावर्त्तन भवस्थितिनो प
एवी कालरूप लब्धि पामीने पथ के०तमारो मार्ग निहालशु के०जोइशु आ
तमारो मार्ग हाथ आववानो कोइ उपाय नथी तेथी हे परमेश्वर ! का-
आशारे०मननी तेवी स्थिरता तेने अविलबके०ग्रहण करीने ए जनके०आ
लना पुरुष जीवेके०जीवता रहेछे अर्थात् निराधार छता कालक्षेप करेछे एवी
कालगामी जीवोनी व्यवस्था हे प्रभु ! तमे जाणजो के०ध्यानमा लेजो हे प्रभु !

ा छो ? आनंदके०ज्ञानानंद तेना घन के०समूह अर्थात् केवल ज्ञान आपनार जे
ह स्याद्वाद मत तेना अंब के०आम्रवृक्ष छो. ॥ ६ ॥ इति अजितजिनस्तवन ॥

॥ अथ श्री संभवजिनस्तवन ॥

॥ राग रामगिरि ॥ रातडी रमीने क्यांथी आवीयारे ॥ ए देशी ॥

संभवदेव ते धूर सेवो सवेरे ॥ लही प्रभु सेवन भेद ॥ सेवन
कारण पेहेली भूमिकारे ॥ अभय अद्वेष अखेद ॥ संभव० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे सुमतिवंत थवाथी निजस्वरूपानुयायी पुष्टालंबन परम कारणरूप
जा संभव परमेश्वरनुं सेवन तेज परमेश्वर पासे मागतां, पोते तेमज सर्वने उपदेश
पतां विनति करतो कहेछे. हे भव्य प्राणीयो ! संभवनाथ प्रभुने धूरके०प्रथम
ो; कारणके आत्मानुं अनंतकालथी आवरण पामेलुं आत्मस्वरूप. तेनो भास, प्र-
ा ए परमात्मानी सेवा कर्याविना थायज नही तेमज थशे पण नही अर्थात् जे जे
व्य प्राणीयोए पोताना आत्मस्वरूपने भूतकालमां उलख्युं छे. वर्त्तमानमां उलखेछे
ने भविष्यमां उलखशे ते सर्व प्रथमथी प्रभुना स्वरूपनुं सेवन करवानुं फल छे.
ईं अजकुलगत केशरी सिंहनुं दृष्टांत विचारवुं. वली जेम सुवर्ण अने माटी खाणमां
नादि मिश्र छे तेम आत्मा संसारमां अनादिथी कर्म साथे मिश्र छे. ते आत्मा प्र-
ा संभवदेवथी पोतानुं एकत्व जाणी. जड स्वभावथी पोतानुं स्वरूप भिन्न जाणी, पोते
थी भिन्न थाय. तेथी अनादि कालथी भूलेला आत्माने स्वरूपनी प्राप्तिनुं असाधारण
रण धूरथीज संभवतुं नथी. माटे हे सुमति ! शुद्ध आत्म प्रवर्तिये परमेश्वरने
रूपे सेवननुं रहस्य पामीने, प्रभुसेवनना कारणनी प्रथम भूमिका के० पायो ल-
मां लेवो; तेज सेवनारूप कार्यना कारक छे. तेना त्रण प्रकार छे. १ अभयपणुं २
द्वेषपणुं ३ अखेदपणुं. मजबुत पायाविना जेम बांधकाम टकी शके नही तेम आ त्रण
विना प्रभुसेवनरूप मकान स्थिर थइ शके नही ॥ १ ॥

भयचंचलता होजे परणामनी ॥ द्वेष अरोचक भाव ॥ खेद
प्रवर्तिहो करतां थाकीयेरे ॥ दोष अबोध लखाव ॥ संभव० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ प्रथम अभयनुं लक्षण कहेछे. संभवजिननुं चिंतवन करतां ते चिंतवनथी
रिणाम चलायमान थइ अन्य चिंतवनमां मन प्रवर्त्ते. इत्यादि परिणामनी चंचलता,
स्थिरपणुं ते भय, ते सर्व पलटावी एकाग्र स्वरूपनुं चिंतवन ते अभय. हवे अद्वे-
ुं लक्षण कहेछे. संभवदेवनुं सेवन स्तवन, स्वरूप चिंतवन चित्तमां रुचे नही एवो
अरोचक भाव ते द्वेष अने तेज सेवन प्रमुख चित्तमां रुडां लागे ते अद्वेष. हवे

अखेदनु लक्षण कहेछे सज्जनप्रभुना स्वरूप चिंतवन प्रमुख प्रवृत्तिमा अवर्या
अल्प कालमा मन थाकी जाय, कटाली जाय अने तेथी प्रवृत्तिमा रही शक
खेद अने तेज सेवनादि कार्यमांथी निवृत्ते नही ते अखेद तेथी हे सुमति!
भवदेवनी सेवनामा अभय, अद्वेष अने अखेद छे तेने स्वरूपानुयायी
पण छे अने जेउने तेमा भय, द्वेष अने खेद छे तेउने अबोध के०स्वरूपनु
पण अने दोषनु लखाव के०प्रवर्त्तवु छे. ॥ २ ॥

चरमावर्त्तहो चरम करण तथारे ॥ भवपरिणति परिपाक ॥
दोष टले वली दृष्टी खुले भलीरे ॥ प्रापति प्रवचन वाक ॥ सज्जव०॥

अर्थ ॥ ते दोष दूर करवाना जे कारणो श्रीसज्जननाथ परमात्मा, आ
छे, तेमा पेहेलु कारण तो जीवने ससारमा परिभ्रमण करता अनती उत्सर्पि
वसर्प्पिणि थइ, तेमा छेल्ली उत्सर्प्पिणि अवसर्प्पिणि ससार भ्रमण करव.
रमावर्त्तन अने वीजु कारण अपूर्व करणादि त्रण करणमध्येनु छेल्लु करण
रण तथा के०तेमज त्रीजु कारण भवके०संसारनी गति आगति तेनु जे
परिपाक अर्थात् गत्यागतिनो अभाव ते भवपरिणति परिपाक नामनु कारण
हे सुमति ! आ त्रणे कारण मलताज जीवने भय, द्वेष अने खेदरूप दोष
अने आत्मा अभयी, अद्वेषी अने अखेदी थताज भलीके०स्वरूपानुयायी
दृष्टि के०चक्षु तेनी खुले के०उघडे ते ज्ञान दृष्टि खुलवाथी प्रवचन वाक के०
तना सप्तनयाश्रित वाक्यनी शका रहित प्राप्ति थाय ॥ ३ ॥

परिचय पातिक घातिक साधुशुरे ॥ अकुशल अपचय चेत ॥
ग्रंथ अध्यातम श्रवण मनन करीरे ॥ परिशीलन नय हेत॥सज्जव०॥

अर्थ ॥ ज्यारे प्रवचनामृतनी प्राप्ति थई त्यारे मिथ्यादर्शनीउंथी प्रथम
हतो ते दूर थयो अने आश्रवना रोधनार, सवरना शोधनार, प्राणातिपातादि
हणनार, मोक्षमार्गना साधनार साधुओनो परिचयके० आसेवनरूप सग
अने तेथी आत्मस्वरूप पामवाने विघ्नकारक जे अशुद्ध श्रद्धा तद्रूप अकुशल
अपचय के० नाश करनार चेत के० चित्त थाय अर्थात् आत्मस्वरूपानुयायी
थाय तेवु चित्त थवाथी समतितर्क, तत्वार्थ, अध्यात्म कल्पद्रूम, अध्यात्मसार
व अध्यात्मिक ग्रथोनु श्रवण अने मनन थाय नेगमादि साते नयना भिन्न
हेतुए भिन्न भिन्न कथन होय अने भिन्न हेतुने अभावे भिन्न कथननो
होय, परतु अर्हतो श्रीसज्जननाथ प्रभुना स्वरूपथी पोताना आत्मस्वरूपने

नस्त प्रकारे शीलन के० स्वज्ञावथी मेलववुं ठे तेथी ते नयनो हेतुपार पडे ॥ ४ ॥

कारण जोगेंहो कारज निपजेरे ॥ एमां कोइ न वाद ॥ पण
कारणविण कारज साधियेरे ॥ ते निजमतउनमाद ॥ संज्ञव० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ परमात्माना स्वरूपसाथे पोताना आत्मस्वरूपने मेलववुं तद्रूपकारणने सं-गे पोताना स्वरूपनी सिद्धिरूप कार्य थाय, तेमां कांइ विवाद नथी; परंतु श्रीसंज्ञवदे-व स्वरूपनी सेवाना कारणविना आत्मस्वरूपनी सिद्धतारूप कार्यनी वांठा राखवी ते पानी मतिनी उन्मत्तता ठे, हठग्राहीपणुं ठे अथवा बहिरात्मपणारूप कुमतिनो उ-माद के० चित्त विभ्रमताठे. ॥ ५ ॥

मुग्ध सुगम करी सेवन आदरेरे ॥ सेवन अगम अनूप ॥
देजो कदाचित सेवक याचनारे ॥ आनंदघन रसरूप ॥ संज्ञव० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ संज्ञवदेवनी सेवनारूप कारणने सद्भावे आत्मस्वरूपरूप कार्यनुं निःसंदेह थावीपणुंजठे, पण ते सेवन घणुं डुष्कर ठे. मात्र मुग्ध के० सेवनना असमंजस ज्ञद्रक क ते सेवनने सुगम जाणीने आदरेठे. परंतु अंतरात्माविना ते सेवननुं स्वरूप बीजा इने गम्य नथी. ए सेवन तो परमोत्कृष्ट निरुपमठे. आ ज्ञवे तो पामवुं डुर्लज्ञ ठे; माटे सं-देवने विनति करुंछुं के कदाचित् के० चरमावर्त्तनादि कारणोने मेलापे कोइज्ञवे तमा-सेवक जे हुं पामर तेनी याचनाके० सेवनारूप प्रार्थनाने देजो के० सफल करजो. हे प्रज्ञु आनंदके० ज्ञानानंद तेना घन के० समूह एटले केवलज्ञान केवल दर्शनेकरी डव्यना त गुणादिने जाणवाथी उपन्यो जे आनंद तद्रूप रस ठे रूप के० स्वरूप ते जेनुं ए-गे ॥ ६ ॥ इतिश्री संज्ञवजिनस्तवन.

॥ अथ श्री अज्ञिनंदन जिनस्तवन ॥

॥ राग धनाश्री सिंधुउ ॥ आजनीहेजोरे दीसे नाहलो ॥ ए देशी ॥

अज्ञिनंदनजिन दरशण तरसियें ॥ दरशण डुर्लज्ञ देव ॥ मत
मतज्ञेदेरे जो जइ पूठीयें ॥ सहु थापे अहमेव ॥ अज्ञि० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अज्ञिनंदन प्रज्ञुनुं दर्शन एटले जैनदर्शन तरसियेंके० कोइ रीते मले एवी हना करीए ठीए, परंतु हेप्रज्ञु! तमारुं दर्शन अतिडुर्लज्ञ के० डुःखे पामीशकाय तेवुं ज्ञूतकालमां कोइ वखत पाम्या नथी अने आ जन्ममां पामवानी व्यवस्था आ प्रमाणे जेम कोइ अजाण पुरुष मार्गनी माहितीमाटे बीजानेपुठे, तेरीते जुदाजुदा मतवा-ळे तेमने पुठीए के शुद्ध आत्मस्वरूपनु ज्ञासन करावे तेवु स्वरूपानुयायी दर्शन कयुं? रे तेते मतना धारक सर्वे अहमेव के० निश्चयपूर्वक अमे प्रवृत्ति करीए ठीए तेज शु-

रूदर्शन छे परतु अमारा दर्शनथी स्वरूपनी प्राप्ति थती नथी एम कोइ पहेल

सामान्ये करी दरशण दोहेलूं ॥ निरणय सकलविशेष ॥ मदमें
घेयेरे अंधो केम करे ॥ रविशशिरूप विलेष ॥ अभि० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ माटे हे परमेश्वर ! सामान्यप्रकारे मतमतांतरना भेद ... छेने पूछतां तमारुं जैनदर्शन पामवु दुर्लभ छे वली निरणयके०परमता... तुथायी, अनंताकेवलज्ञानीए कथन करेलु, तदाकारभूते समस्त नयानुगामी विशेषपणे तमारु दर्शन प्रत्यक्षपणे कहेवु ते पण कठिन छे वली ते मतमता... छता तमारु दर्शन नज पामीए, ते उपर दृष्टांत कहेछे जेम कोइ जन्मांध ... यो वली मद्यपान कर्युं, ते प्राणी जेम सूर्यचंद्रना स्वरूपने विशेषपणे जाणी ... तेम जे मिथ्यादर्शने करी अंध छे, वली मतममत्वरुप मदिरापानथी घेरायेल ... चंद्ररूप जैनदर्शनना स्वरुपने विशेषपणे केवी रीते जाणी शके अर्थात् नज ज ...

हेतु विवादेहो चित्तधरि जोईयें ॥ अति दुरगम नयवाद ॥ आगम
वादेहो गुरूगम को नही ॥ ए सबलो विपवाद ॥ अभि० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली हे परमेश्वर! जे साधवा योग्य कार्यनी प्राप्ति करावे एवा हेतु ... णोनो विवाद के० विस्तारपणे कथन तेने मनमा विचारी जोइए छीए दृष्टिए विचारीए छीएतो तमारा दर्शनमा नयोनु वाद के०कथन एवु छे के ... एक नये स्थापीये तेनेज बीजी नये उत्थापी शकाय छे, माटे तमारा दर्शनमा... दनी दुर्गमता छे वली तमारा सिद्धांतना वाद के०कथनथी तो सहेजे तमा... पामी शकीए, परतु तमारा सिद्धांतोना कथननु गुरुगम कोइ नथी अर्थात् ... थी सिद्धांतोनी समज पके एवा गुरु कोइ नथी अथवा गुरुने आधीन रही होयएवा परपरागामी कोइ गुरु आकालमा देखाता नथी, माटे मतमतांतरोना ... हेतु विवादोथी तेमज नयवादोथी अने आगमवादथी तमारा दर्शननी प्राप्ति ... एज सबलो के०अति बलवान, मनमा विपवाद के०उद्वेग छे ॥ ३ ॥

घाति डुगर आडा अतिघणा ॥ तुज दरिशण जगनाथ ॥
धीठाई करी मारग संचरू ॥ सेंगु कोइ न साथ ॥ अभि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ माटे हे जगनाथ ! त्रण जगत्ना स्वामी तमारु दर्शन पामवाने ... करनार पर्वत उपमारूप घातकारक पूर्वोक्त जे कारणो छे तेनाथी पण बीजा घा... छे, माटे केटला कहु,तोपण धीठाइ करी के०तमारा दर्शन पामवाने अंतराय एवा कारणोने नहीं गणता दृगनुयोगे जैनदर्शनना मार्गमा संचरु के० प्रवर्त

रंतु शुद्ध स्याद्वाद मार्गनो प्रवर्त्तावनावालो तेने सेंगू कहीए तेवो कोइ ज्ञाता
तमारो मार्ग देखाडनार साथे नथी के जेना सहायथी मार्गे प्रवर्त्ती शकीए ॥ ४ ॥

दरशण दरशण रटतो जो फरूं ॥ तो रणरोझ समान ॥ जेहने
पिपासाहो अमृत पाननी ॥ केम भांजे विषपान ॥ अभि० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हे अभिनंदन प्रभु! तमारा दर्शननी पूर्वोक्त कारणोथी अप्राप्ति जाणीने, दर्शनीओ परत्वे दर्शन दर्शन एम हे उपगारीओ! शुद्ध आतमस्वरूपानुयायी, पदप्रापक एवुं दर्शन मने बतावो एम रटतो के० बोलतो थको जो के०कोइरीते के०परिभ्रमण करुं, अर्थात् जैनीओ सुधांत सर्व दर्शनना अध्यक्षोने पुछतो पुछतो फरया करुं तेथी कांइ तमारुं दर्शन प्राप्त थाय नहीं, उलटुं जैनदर्शननी शोध करतो देखीने सर्व दर्शनीओ एम कहेके आतो मनुष्याकारे जंगलनुं रोझ छे, अर्थात् मूर्ख शिरोमणि छे. वली सर्व दर्शनीओथी तमारा दर्शननी शोध करतां कोइ महावंचकी नयनो पक्ष ग्रहण करी एवी वात संभलावे के तमारा दर्शननी प्राप्ति थवी तो दूर रही पण उलटा मनमां शंकाना गोटा उत्पन्न करावीदे श्रद्धा भ्रष्ट थइ अन्यमत प्रवर्त्तन करी तमारा दर्शननी निंदा करवा लागी जउं; हुं जेने तमारा दर्शनरूप अमृतपाननी पिपासा के०तृपा छे, तेने अमृतपान तो नही पण तेथी उलटुं भ्रष्ट श्रद्धाथी मिथ्यात्व प्रवर्त्तनरूप झेर अन्यमतियोने थी मारी श्रद्धामां दाखल थाय, तेथी ते विष के०झेरनुं पान मारी अमृतपानपिपासाने केम दूर करी शके? ॥ ५ ॥

तरस न आवेहो मरण जीवनतणो ॥ सीजे जो दरिशण काज ॥
दरिशण दूर्लभ सुलभ कृपायकी ॥ आनंदघन महाराज ॥अभि० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटे हे परमेश्वर! तमारुं जैनदर्शनरूप कार्य जो कोइ रीते सिद्ध थाय मरण जीवननो तरस के०त्रास न रहे अर्थात् ते प्राणी जन्मजरामरणादिकना थी रहित थइ मुक्ति पामे: परंतु तमारुं दर्शन पामवुं दुर्लभ छे. मात्र तमारी कृपा सुलभ छे तेथी हे आनंदघन के०ज्ञानानंदनो अत्यंत जराव तेना महाराज ते आनंद महाराज. तमारी कृपाथी जैनदर्शन पामीए ॥६॥ इति अभिनंदन जिनस्तवन.

॥ अथ श्री सुमति जिनस्तवन ॥

॥ रागवसंत तथा केदारो ॥

ति चरण कज आतम अरपणा ॥ दरपण जेम अविकार ॥ सुज्ञानी ॥
तरपण बहु सम्मत जाणियें ॥ परिसरपण सुविचार ॥ सुज्ञानी ॥ सुमति० १ ॥

अर्थ ॥ सुमतिनाथ जगवंतना चरणकमलमा माग आत्मानु अरपण करवुं निभ्रमपणे परमात्म स्वरूपनु चिंतवन ते आत्मार्पण कहीए ते पापिजनित विकारथी रहित छे जेम आरीसामा जेवु स्वरूप होय तेवुज विपरीत न जासे,तेवीरीते परमात्मा पण निर्विकारी यथातथ्य कान्तिवन्त स्वरूपी होवाथी तेमा आत्मार्पण करवाथी यथार्थ स्वरूप जासे माटे हे प्राणी! बहु के०घणा मतने सम्मत थइ जावता आत्मार्पणनु स्वरूपनो थइ जाय के०बुद्धि तृप्त थाय तेटले सुधी जाणी लेवु पछी परिके०समस्तरीते मतिर्जमा जे आत्मार्पण तेथी सरपण के०निवर्त्तवु तेज सुविचार के०उत्तम ॥१॥

त्रिविध सकल तनुधरगत आतमा ॥ बहिरातम धुरिजेद ॥ सु० ॥
वीजो अंतर आतम तिसरो ॥ परमातम अविछेद ॥सु० ॥ ७

अर्थ ॥ ए प्रमाणे आत्मार्पण संबधी योग्यता बताव्या पछी आत्माना भेद समस्त शरीरधारीउंना शरीरने विषे रहेला आत्माना त्रण प्रकार छे १ बहिरा० अंतरात्मा ३ परमात्मा अहि कोइ पुछेके सिद्ध अनंता छे माटे तेना न कह्या ? उत्तर–जे अनंता सिद्धनु स्वरूप एक छे तेथी परमात्मा साथे अवि अनेद शब्द मुक्यो छे अहीं पेहेलो, बीजो, त्रीजो आत्मा ए प्रमाणे तो मध्यम, उत्कृष्ट त्रण प्रकारना आत्मा थया, परंतु सत्ताभिन्नथी कोइ पुछे तो अनंता जेद थाय ॥ २ ॥

आतम बुद्धे कायादिके ग्रह्यो ॥ बहिरातम अघरूप ॥ सु० ॥ काया
दिकनोहो साखीधर रह्यो ॥ अंतरआतम रूप ॥ सु० ॥ सुमति० ॥

अर्थ ॥ हवे त्रणे आत्मानु स्वरूप कहेछे मलीन बुद्धियें करी शरीरादिकथी बुद्धिपुर्वक ग्रह्यो के०जाणेलो अर्थात् शरीरने सुखे सुखी अने शरीरने दुःखे आदिशब्दें माया, ममता, मिथ्यात्वादिके ग्रह्यो, ते परिणतिये परिणम्यो हुन्त दित जे आत्मा तेने बहिरात्मा कहीए ते आत्मा पापरुप व्यापारवर्तते,अने त्मा कायादि के०शरीर प्रमुखअंगोपांग, भूमि धन कंचनादिनोशाक्षी, निर्ममत्वी आत्मस्वरूपनो ज्ञाता, आत्माने दशमेद्वारे स्थापन करनार इत्या रुपे रहित ते अंतरात्मा कहीए ॥ ३ ॥

ज्ञानानंदेहो पूरण पावनो ॥ वरजित सकल उपाधि ॥ सु० ॥
अतिंद्रियगुणगण मणिआगरू ॥ एमपरमातमसाध ॥ सु० ॥सुमति

र्थ ॥ स्वरूपज्ञानथी प्रगटयो जे आनंद तेना हर्षथी संपूर्ण पवित्र, वली कर्मज-
समस्त उपाधियोथी रहित कारण के उपाधिनो अजाव थया विना ज्ञानादि
क थवानुं नथी. वली अनिंद्रिय गुण के० शब्दादि पांचे इंद्रियोजनित गुणोना
वथी प्रगट थयो जे अनिंद्रिय गुणज्ञान दर्शनादि तेना अनंता समूह तद्रूप म-
णिर्ठना आगर के० उत्पत्तिस्थान. एवा परमात्म स्वरूपने हे सुमति! तुं साध के०
कर. तारा विना ए परमात्मानुं स्वरूप सिद्ध नज थाय. ॥ ४ ॥

बहिरातम तज अंतर आतमा ॥ रूप थई थिर जाव ॥ सु० ॥ परमा
तमनुं हो आतम जाववुं ॥ आतम अरपण दाव ॥ सु० ॥ सुमति० ॥ ५ ॥

र्थ ॥ अहीं कोइ शंका करे के आनंदघने प्रथम सुमति परमेश्वरने चरणे आतम
णा एवुं कह्युं अने पछी आत्मानां त्रण लक्षण कह्यां तेनुं शुं कारण ? उत्तर जे
त्माना चरणमां आत्मार्पणरूप स्तवनानी प्रथम जरूर छे. पछी आत्मानां लक्षण
थी कयो आत्मा परमात्मा स्वरूपमां आत्मार्पण करी शके ते बताववानी जरूर छे.
पूर्वोक्त बहिरात्मपणुं मूकीने अंतरात्मानुं जे स्वरूप तेमां स्थिर जावे थइ, एका-
ए परमात्मानु स्वरूप आत्मामां चिंतववुं, एज आत्मार्पणनो दाव के० उपाय छे. ॥५॥

आतम अरपण वस्तु विचारतां ॥ जरम टले मतिदोष ॥ सु० ॥ परम
पदारथ संपति संपजे ॥ आनंदघनरस पोष ॥ सु० ॥ सुमति० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटे आतम अरपण वस्तु विचारतां के० तत्त्व विचारणा करतां परस्वरूपने
नुं स्वरूप मान्युं हतु तद्रूप बुद्धिनुं दूषण मटीजाय. भ्रमता मटतांज केवलज्ञान
उदर्शनथी उपन्यो जे आनंदनो समूह तद्रूप अनिर्वचनीय रसनी पुष्टता छे जेने
एवो परम पदार्थ जे उत्कृष्ट मोक्षरूप संपत्ति के० संपदा ते संपजे के० प्राप्तथाय ॥
॥ इति सुमति जिनस्तवन ॥

॥ अथ श्रीपद्मप्रजजिन स्तवन ॥

॥ रागमारु तथा सिंधुर्ठ ॥ चांदलीया संदेशो कहेजो मारा कंतने ॥ ए देशी ॥

पद्मप्रजजिन तुज मुज आंतरूरे ॥ केम जांजे जगवंत ॥ करम
विपाकें कारण जोईनेरे ॥ कोई कहे मतिमंत ॥ पद्म० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अहो श्री पद्मप्रज परमेश्वर सिद्धांत अनुसारे तमारी साथे मारे कांइ अं-
नथी. मारे अने तमारे अंतर शानुं होय ? परंतु अन्वय व्यतिरेक लक्षणे मारी
ने तमारी वच्चे बहु अंतर पड्युंछे. माटे हे जगवंत के० ज्ञानवंत ते अंतर केम दूर था-

य, ते आप कहो हे प्रभु ! तमारा अने मारा अंतरनुं कारण, ३
विपाक के० परणमवु, तेना कारण मिथ्यात्व, अविरती, कषाय, योग,
इने कोइ महाबुद्धिवंत ज्ञानीए तमाराथी अंतर पड्यु ते कह्यु के, जे छतां था
अन्वय अने जे अछते जे न होय ते व्यतिरेक अर्थात् कर्मबंधना कारणने
अंतरनो पण अभाव थाय ॥ १ ॥

पयई ठिई अणुभाग प्रदेशथीरे ॥ मूल उत्तर बहुभेद ॥ घाति
अघाति हो बंधूदय उदिरणारे ॥ सत्ताकरम विछेद ॥ पद्म० ॥२

अर्थ॥ हवे अंतर पडवाना कारण विस्तारथी बुद्धिवंत पुरुष कहे छे १ प्रकृ
स्थितिबंध ३ अनुभाग ते रसबंध ४ प्रदेश ते दलनो संचय, एम चार
बंध छे कर्मनी मूलप्रकृति आठ छे उत्तर प्रकृति एकसो अठावन छे ५-
आत्मगुणना घात करनारा कर्म छे अने बीजा चार आत्मगुणना
कर्मना बंध, उदय, उदिरणा, सत्ता इत्यादि विछेद के० भेद छे इत्यादि
उदयी ध्रुवबंधी अध्रुवबंधी, ध्रुवोदयी अध्रुवोदयी, ध्रुवसत्ता अध्रुवसत्ता, तेमज
विपाकि, क्षेत्र विपाकि, जीवविपाकि, पुद्गलविपाकि तेमज देशघाति, सर्वघाति
वर्त्तमान, पुण्यप्रकृति, पापप्रकृति इत्यादि सर्वे कर्मना विछेद छे ॥ २ ॥

कनकोपलवत पयडि पुरुसतणीरे ॥ जोडी अनादि स्वभाव ॥
अन्य संजोगी जिहां लगे आतमारे ॥ संसारी कहेवाय ॥ पद्म० ॥

अर्थ ॥ एरीते कर्मनी पयडि के० प्रकृति ते पुरुस के० जीवनी साथे
लथी मलेली छे संयोग संबंध छे जेम सुवर्ण तथा माटीने खाणमां अनादि
स्वभाविक छे, तेम पुरुष प्रकृतिनो अनादि संबंध स्वभाविक ज छे माटे
आत्मा पुद्गलादिक साथे संयोगी छे त्यांसुधी आ आत्मा संसारी कहेवाय छे

कारणजोगे हो बंधे बंधनेरे ॥ कारण मुगति मूकाय ॥ आश्रव
संवर नाम अनुक्रमेरे ॥ हेयउपादेय सुणाय ॥ पद्म० ॥४॥

अर्थ ॥ आत्मा मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योग, आ कारणोने लीधे
बंध करे छे अने सम्यक्त्व, विरति, अकषाय अने अयोग, आ कारणोने लीधे
छुटे छे एम अनुक्रमे कर्मबंधना कारणोने मेलववा ते आश्रव अने कर्म आव
टके एवा कारणो मेलववा ते संवर तेमां आश्रव ते हेय के० छांडवा योग्य
संवर ते उपादेय के० आदरवा योग्य छे ए प्रमाणे सिद्धांतमां सज्झाय छे ॥४॥

.ुंजन करणे हो अंतर तुज पड्योरे ॥ गुण करणें करी भंग॥ ग्रंथ
.क्तते करी पंमितजने कह्योरे ॥ अंतरभंग सुअंग ॥ पद्म० ॥ ५ ॥

.र्थ ॥ तेथी पंडित पुरुषे आनंदघनने कह्युं के सिद्धांतमां त्रण कारण कह्यां तेमां .ारणथी आत्मा कर्म साथे जोमाय तेने यूंजनकरण कहीए. ते यूंजन करणने हे आनंदघन ! तारे परमेश्वर साथे अंतर पमी गयुं छे. तेथी ज्ञान करणे आ- .रूप जाणीने गुणपणे आचरणा अर्थात् कार्य कारण भावनो अभेद उपचार छे, ज्ञानदर्शन ते आत्मा अने आत्मा ते ज्ञानदर्शन एवा अभिन्न भावे करी हे आ- .न ! पद्मप्रभु सायेना तारा अंतरनुं त्रुटवुं छे. वली पंमितोने आनंदघने पुछ्युं के, .कथन तमारी पोतानी बुद्धिए कहोछो? पंमितोए उत्तर आप्यो के, हे आनंदघन! जैन .ांतना न्यायथी अमे आ वचन कहीए छीए, स्वेछाए कहेता नथी, माटे हे आनं- .न ! परमेश्वरथी तमारुं अंतर भांगवानो रहस्य स्वरूपे एज उत्तम उपाय छे. ॥५॥

तुजमुज अंतर अंतर भाजसेरे ॥ वाजसे मंगलतूर॥ जीव
सरोवर अतिशय वाधसेरे ॥ आनंदघन रसपूर ॥ पद्म० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेथी हे पद्मप्रभु! ज्यारे हुं गुण करणे प्रवर्त्तिश त्यारे तमारुं अने मारुं जे .ता ध्येयरूप अंतर छे ते दूर थशे, अर्थात् भेदनुं अभाविपणुं थशे, अने त्यारेज स्व- प्राप्तिना हर्षना उत्कर्षनुं महाघोष करनारुं अनादि ध्वनिरूप मांगलिक वाजिंत्र .शे. ए रीते आत्मा परमात्म स्वरूप पामे थके आनंदघन के० केवल ज्ञान केवल .नथी अनंताज्ञेय स्वरूपने अवलोकन करवाथी परम आल्हादरूप रस उपजशे . तेना संपूर्ण भरावथी अत्यंत शुष्क एवुं जीवरूप सरोवर अनंत ज्ञानरूप जलथी .द्धि पामशे ॥ ६ ॥ इति पद्मप्रभजिन स्तवन.

॥ अथ श्री सुपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ रागसारंग ॥ मल्हार ॥ ललनानी देशी ॥

श्रीसुपास जिनवंदियें ॥ सुख संपतिने हेतु ॥ ललना ॥
शांत सुधारस जलनिधि ॥ भव सागरमां सेतु ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे सुमतिवंत आनंदघन कुमतिवंत प्राणीउंने आत्म साधनना उपाय क- .नपूर्वक श्रीसुपार्श्व परमेश्वरनी स्तवना करतो कहे छे. हे भव्यो! श्रीसुपार्श्व प्रभुने .दशावर्त्तवंदने वांदो ते अव्याबाध सुख प्राप्तिरूप मोक्षनी संपत्तिना हेतुरूप ए. .न छे. ललना शब्द वाक्य अलंकारे छे. वली ते सुपार्श्वजिन केवा छे ? आत्म स्व-

रूपना अनुजवथी रागद्वेषने अजावे उत्पन्न थयो जे शांतरस तद्रूप अमृत मुद्र छे वली ससार समुद्रनो पार उतरवाने सेतु के०पाज समान छे ॥ १ ॥

सात महाजय टालतो ॥ सप्तम जिनवर देव ॥ ललना ॥
सावधान मनसा करी ॥ धारो जिनपद सेव ॥ ललना ॥ २

अर्थ ॥ वली सुपार्श्वनाथ केवा छे ? वज्र समान इहलोक परलोकादि अथवा काम, क्रोध, लोज, मद, राग, द्वेष, मिथ्यात्व आ सात जयना नाश छे एवा सुपार्श्वजिन के०सामान्य केवलीमा वर प्रधान, स्वस्वरूप कालि श्वरने अहो बहिरात्माउ तमे सावधान थइ एकाग्र तदाकार मन प्रवृत्ति हिरात्मपणु तजी अतरात्मवत थइ जिनेश्वरना चरणकमलनी सेवा अ त ध्याने करो ॥ २ ॥

शिवशंकर जगदीश्वरु ॥ चिदानद जगवान ॥ ललना ॥
जिन अरिहा तीर्थकरु ॥ ज्योतिसरूप असमान ॥ ललना ॥ श्रीसु०॥

अर्थ ॥ आनदघननु एवु कथन साजलीने, शिव, शकर, अलख, योगी, विरचि रुषीकेश इत्यादी अन्य सर्वना उपासको आनदघनने पूछवा ला नदघन! अमारा सर्वना देवोना सेवनने उत्थापी एक सुपार्श्वनाथनु सेव करो छो तेनु शु कारण ? शु उपरना सर्व अजिधाननी सत्ता तेनामा छे ? घन कहे छे के, हा शिव के०कर्म उपद्रव निवारक, शकर के०सुखना कर्ता श्वर के०जगतना परमेश्वर, चिदानद के०ज्ञानानदी, जगवान के०महा ऐश्वर्यवतजिन के० राग द्वेषना जीतनार,अरिहा के० इन्द्रादि सर्वनी द्रव्य तथा पूजा योग्य तथा कर्मरूप शत्रुने हणनार, तीर्थंकरु के०गणधर प्रमुख साधु, श्रावक, श्राविकारूप चतुर्विध सघना स्थापन करनार एम सर्व सत्ता छे तेनी तुलना करी शके एवु ज्योतिस्वरूप पण अन्यमा नथी ॥ ३ ॥

अलख निरजन वछलू ॥ सकलजतु विशराम ॥ ललना ॥ अजय
दान दाता सदा ॥ पूरण आतमराम ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली ते प्रजु अलख के०बहिरात्माथी जाणी शकाय नही तेवा छे निरजन के० कर्मरूप लेपरहित छे, वछलू के० सर्व प्राणीना हित करनार छे त्रस थावर सर्वजीव जव अटवीमा जमता थका कर्मजनित प्रचड तापथी अर्थात् जन्म जरा मरण आधि व्याधि अने उपाधियी दुःखी थयेलाउने वि के०शाताना धाम छे, वली मरणथी बचावनार तेथी निरतर अजयदानना

अर्थात् जन्म मरणना टालणहार छे. वली ज्ञानादिगुणे जरपूर होवाथी आतम- के० आत्म स्वरूपमां रमण करनार पण तेज छे. ॥४॥

वीतराग मद कल्पना ॥ रति अरति जय सोग ॥ ललना ॥ निद्रा तंद्रा डुरंदशा ॥ रहित अवाधित योग ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली राग द्वेष रहित छे तेथी वीतराग छे. वलीमद के० अभिमान, क- ा के० संकल्प विकल्प, रति के०रागनो उत्कर्ष, अरति के० द्वेषनो उत्कर्ष, जय, के०शोक कल्पांत, निद्रा,तंद्रा के०आलस, पूर्वोक्त सर्व दूषणोथी रहित छे. वली योग, वचनयोग अने काययोगनुं वाधकपणुं, तेनाथी पण प्रजु अबाधित छे. ॥५॥

परम पुरुष परमातमा ॥ परमेश्वर परधान ॥ ललना ॥ परम पदारथ परमेष्ठी ॥ परमदेव परमान ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जगतने विषे जेटला पुरुष छे तेमां उत्कृष्ट पुरुषत्व धर्मयुक्त पुरुष एज छे । परम उत्कृष्ट आत्मा पण एज छे. वली परमेश्वर के० सर्व मनुष्य शिरोमणि, जगतना नायक छे, तेमज त्रण जगतमां सर्वोत्कृष्ट वस्तु पण तेज छे, अथवा पद के० मुक्तिपद तेना रहस्य छे. तथा परमइष्ट के० परमोत्कृष्ट वांछित पदार्थ तेज छे, अर्थात् जव्य आत्माउने परम वांछनीक पण एज छे. वली सर्वोत्कृष्ट पण एज छे. हे अन्य देवनी सेवा करनारा प्राणीउं, सर्व देवोमां परम देव- सेववा योग्य आ सुपार्श्वनाथ प्रजुने परमान के० अवधारो. ॥ ६ ॥

विधि विरंचि विश्वंजरू ॥ हृषीकेश जगनाथ ॥ ललना ॥ अघ हर अघमोचन धणी ॥ मुक्ति परमपद साथ ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ए प्रजुनी सेवा करनार शुजबंध करे अने तेनुं नहीं सेवन करनार अशुज बंध अने जे जीवो बंध करे तेवुं जोगवे ते स्वरूपे विधाता पण एज छे. वली संसारी ी अने परमात्मा सत्ताए एकज छे, परंतु श्रेष्ठ स्वरूपनो कर्त्ता होवाथी विरंचि ब्रह्मा पण तेज छे. वली संसारी जीवोने परम आधाररूप होवाथी विश्वंजर पण छे. वली हृषीउं तेनुं ध्यान करता होवाथी हृषीउंना स्वामी पण एज छे. वली तना जीवोने शुद्ध स्वरूपना पोषण करनार होवाथी जगतना नाथ पण तेज छे. । पापना करनारा तथा अनेक कालना पापी प्राणीउंने मुक्त करावनारा पण तेज तेवीजरीते जगतना स्वामी पण तेज छे. वली मुक्ति जे परमपद तेना सार्थवाह अर्थात् आगेवान दोरनार छे. ॥ ७ ॥

एम अनेक अभिधा धरे ॥ अनुभव गम्य विचार ॥ ललना॥
जे जाणे तेहने करे ॥ आनदघन अवतार॥ ललना ॥ श्रीसु०॥७॥

अर्थ ॥ ए प्रमाणे अनेक के० घणी अभिधा के० शक्तिर्डने धारण क० अर्थात् अमर, अजर, अक्षर, अकल, अनादि स्वरूपि, निजयी, अनिद्रि शत्रु, स्वयत्नु, सार्व, अज, अच्युत, अविरुद्ध इत्यादि अनेक नामोना ... ठे. तेथी हे जव्य प्राणीर्ड ! तेनी सेवा करो ते प्रजुना सेवनमा सर्वेनु ... ठे वली अनेक नामोना अर्थ विचारना रहस्यनु चिंतवन अर्थात् दरेक ... त्पत्ति सहित अर्थनु विवेचन अत करणमा करवु ते अनुजव गम्य ... माणे नामोनो विचार, हेतु सहित चिंतवन करवानी जे रीत जाणे ते ... सुपार्श्वनाथ परमेश्वर आनदघन अवतार करे के० परमानंदपणे अवतरण ...

॥ अथश्री चंद्रप्रजजिन स्तवन ॥

॥ राग केदारो ॥ गोडी ॥ कुमरी रोवे आकद करे, मने कोइ मुकावे ॥ ए देशी

देखणदेरे सखी मुने देखणदे ॥ चंडप्रज मुखचंद ॥ स० ॥ उप
शमरसनो कंद ॥ स० ॥ गतकलिमल डुखदंद॥ स० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ शुद्ध चेतन्य धर्मयुक्त शुद्ध चेतना परमेश्वरना मुख प्रमुख ... निपे व्यापि रही ठे ते, परमेश्वरनु मुखारविंद देखवा देती नथी, तेने कर्म उपाधि युक्त आनदघननो आत्मा सुमतिवंत थइ परमेश्वरना मुखनु ... करवा इछा करतो कहे ठे हे सखी ! चंडप्रज परमात्माना मुखरूप चंद्रने ... वादे, कारणके ते प्रजुना मुखनुं अवलोकन तुं तो निरतर कर्या करे ठे अने ... जे जे स्थानके ते मुखावलोकन कर्युं नथी तेनु वर्णन हवे पठी करीश मा... करवानु के, ते मुखरूप चंड जोवादे ते मुखरूप चंड केवो ठे? राग रूपना ... उपशमरस के० शातरसनो कद के० उगतो किसलय ठे वली जेने चारे नि... देवोना इंडो तथा मनुष्यना इंड जे चक्रवर्ती प्रमुख सेवता होवाथी ते ... कलिमल के०पाप तथा डुःखोनादद के०समुदाय गत के०नाश पाम्या ठे ... सखि ! मारा पण पाप अने डुःखसमुदाय दूर थाय ॥ १ ॥

सुहमनिगोद न देखियो ॥ स० ॥ बादर अतिहि विशेष ॥ स० ॥
पुढवि आउ न लेखीयो ॥ स० ॥ तेउ वाउ न लेश ॥ स० ॥ २॥

अर्थ ॥ हे सखी ! अव्यवहार राशी सूक्ष्म निगोदमा चंडप्रजुना मुखनु ...

नहीं; कारण के सूक्ष्म निगोदे रूपनो असंभव, रूपना असंभवथी चक्षुनो असं-
तेथी देखवानो असंभव, माटे हे सखि ! अहिं मने जोवादे. वली बादर नि-
मां तो अत्यंत विशेषपणे मुख दीठुं नथी, कारण के, जो के सूक्ष्म निगोदमां
मुख दीठुं नथी तो पण सिद्धक्षेत्रमां सूक्ष्म निगोद छे अने सिद्ध परमात्मा-
नजीक सूक्ष्म निगोदना जीवो छे अने बादर जीवोनो नजीक वास नथी तेथी
मां तो अति विशेषपणे प्रभुमुख दीठुं नथी. वली पृथ्वीकाय, अप्कायमां पण
दर्शनने अभावे न लह्यो के० जोवामां आव्युं नथी अने जाणवामां पण
युं नथी. वली तेउकाय तथा वाउकायमां पण लेशमात्र दीठुं नथी, कारणके
यना भवमां प्रभुनुं दर्शन करी मरण पामीने जो आवे तो अपर्याप्त अवस्थाये
नुं लेश पण पामे, पण मनुष्य ए बे निकायमां तो मरण पामी आवेज
तेथी ते बे कायमां पण दीठुं नथी. ॥ २ ॥

वनसपति अतिघण दिहा ॥ स० ॥ दीठो नहीं दीदार ॥ स० ॥
बिति चउरिंदी जलखीहा ॥ स० ॥ गतिसन्नी पण धार ॥ स० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हे सखि ! मारो जीव वनस्पति कायमां पण घणो काल रह्यो, तेथी त्यां
चक्षु इंद्रिने अभावे प्रभुना मुखनुं दर्शन थयुं नहीं. हे सखि ! हवे तुं एम क-
के एनो तें एकेंद्रीनांज स्थानको बताव्यां, तो कहुं हुं के बेंद्री अने तेंद्रीने पण
नथी अने चउरिंद्रीने जे चक्षु छे ते पण जलखिहा के० पाणीनी लीक जेम
फल छे, तेम ते चक्षु पण दर्शन कार्यसिद्ध करवा माटे निष्फल छे. जेम पाणीमां
पाडीये पण रहे नहीं तेम आंख छतां दर्शन न थाय तेथी ते आंख प्राप्त थइ
निरर्थक छे. वली संज्ञीपणानी पण के० पांचे गतिमां पण प्रभुमुख दीठुं नथी
हे शुद्ध चेतना सखि ! तुं धार के० अवधारजे, मानजे. ॥ ३ ॥

सुरतिरि निरय निवासमां ॥ स० ॥ मनुज अनारज साथ ॥ स० ॥
अपजाता प्रतिभासमां ॥ स० ॥ चतुर न चढीउं हाथ ॥ स० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली विषयाशक्त थवाथी देवगतिमां अने विवेकना विकलपणाथी
चगतिमां पण प्रभुमुख दीठुं नथी. वली नर्कगतिमां निवासथतां अत्यंत दुःखनी
नाथी संभारवुं पण थयुं नहीं तो देखवुं तो क्यांथीज थाय. वली धर्माधर्मना
नना अभाववाला अनार्य मनुष्यना साथ के०संगमां उत्पन्न थवाथी तेमज अप-
ता के०अपर्याप्ता मनुष्यनी प्रतिभा के०प्रतिबिंब ते पण धर्माधर्म विवेक विकल
थी ते स्थानकमां प्रभुमुख दीठुं नथी,इत्यादि पूर्वोक्त स्थल मात्रमां चतुर के० म-

हानिपुण एवो परमेश्वर मारे हाथ न आव्यो, अर्थात् दर्शननी प्राप्ति न थइ, ए दर्शननी योगवाइ मली ठे तेथी हे सखि ! मने प्रभुमुख जोवा आप ॥ ४ ॥

एम अनेक थल जाणिये ॥ स० ॥ दरिशण विणु जिणदेव ॥ स० ॥
आगमथी मत जाणिये ॥ स० ॥ कीजे निरमलसेव ॥ स० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त तेमज अन्य स्थलो जेवां के कामी, क्रोधी, लोभी, मोही इत्यादि चोरासीलक्ष जीवायोनि फरसतां अनेक स्थलो श्री जिनेश्वर ... नु दर्शन कर्याविना निरर्थक थया, तेथी हे सखि ! प्रभुना मुखनु दर्शन ... वली सुमतिवत आनदघन शुद्धचेतनाने कहेठे के गया जवतो निरर्थक ... आ मनुष्य जन्मा पण शीरीते सेवा करू ? त्यारे शुद्धचेतना उत्तर आपे ... आनदघन ! सिद्धातना वचनथी पूजानुं मत के०स्वरूप जाणीए सिद्धातमा, सुहाए निस्सेसाए अर्थात् हितने माटे, सुखनेमाटे, नि श्रेयसने माटे ... वा ठे एम जाणीने अभय,अद्वेष,अखेदपणे निर्मल जावाकितपूजा करवानी

निरमल साधु भगति लही ॥ स० ॥ योग अवचक होय ॥ स० ॥
किरिया अवचक तिमसही ॥ स० ॥ फल अवंचक जोय ॥ स० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वली निर्मल के०शुद्ध, मुक्ति मार्गना साधनारा साधुर्जनी भक्ति वाकित वात्सल्यपणु प्राप्त थयु तेना सद्भावथी आत्माना ज्ञानादिक ... नही एवा मनवचन कायाना अवंचय योगनी प्रवृत्ति थइ, अने तेम यथार्थ यानु सर्व प्रवर्त्तन अवचक के०अलगाइरूप थाय अने तेम थाय त्यारे ... अवचकपणे प्रवर्त्ते, तेथी सही के० निश्चयथी आत्मस्वरूप अवछेद फल पण ... चक जोय के०हे सखि ! तु देख ॥ ६ ॥

प्रेरक अवसर जिनवरू ॥ स० ॥ मोहनीय क्षय जाय ॥ स० ॥
कामित पूरण सुरतरू ॥ स० ॥आनदघन प्रभु पाय ॥ स० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे समये अवचक फल स्वरूपनी प्राप्ति थाय तेसमये प्रेरक के० कारक, पोताना स्वरूपथी अन्यना स्वरूपने उंलखावनार एवा चद्रप्रभ वर्त्तक ठे अने आत्मा प्रवर्त्तक ठे, एम हे सखि ! स्वरूप तदाकारपणे आत्मा ... थको अचिंतनीय आत्मशक्तिथी मोहनीय कर्मनो क्षय करे माटे केवल ज्ञान ... दर्शननो जे परमानद तेनो घन के०समूह, तेज ठे स्वरूप जेनु एवा जे चद्रप्रभ ... तेना पाय के० चरण ते कामित के० निज स्वरूपाभिलाषी प्राणीर्जना मना... पूरवाने हे सखि ! साक्षात् सुरतरु के० कल्पवृक्ष ठे. ॥ ७ ॥ इति चद्रप्रभस्तवन

॥ अथश्री सुबुद्धि जिन स्तवन ॥

॥ राग केदारो ॥ एम धन्नो धणने परचावे ॥ ए देशी ॥

सुबुद्धि जिणेसर पाय नमिने ॥ शुभकरणी एम कीजेरे ॥
अतिघणो उलट अंग धरीने ॥ प्रह उठी पूजीजेरे ॥ सुबु० ॥१॥

अर्थ ॥ हवे आनंदघन सुबुद्धि जिनना पूजनना भेदपूर्वक स्तवनने करतो थको, प्राणीउने यथातथ्य पूजननुं फल उपदेशे छे. अहो भव्यो ! तमे सुबुद्धि परमेश्वरना चरण कमलने नमिने हवे पछि वर्णवीश तेवी शुभ करणी करो अर्थात् स्व-अनुयायी कर्त्तव्य आचरो, वा, देवगतिदायक शुभ करणी शरु करो, ते शुभ करणी आ प्रमाणे छे. जेम संसारी जीवने विवाह प्रमुख कारणो अति हर्षना स्थानक छे. वा. अपुत्रीयाने पुत्रोत्पत्ति जेम हर्षनुं स्थानक छे, तेम शुभगतिना इच्छनाराने पूजन हर्षनुं स्थानक छे. माटे अत्यंत उल्लास अंगमां धारण करीने, जन्मसां-फल्यने धन्य मानतां अहो भव्यो ! तमे हर्षोत्कर्ष सहित प्रभातमां उठीने अन्य संसारी कामो कर्या पहेलां सुबुद्धि परमेश्वरना चरण कमलने नमस्कार करी, पूजारूप शुभ करणी करो ॥ १ ॥

द्रव्यभावशुचिभाव धरीने ॥ हरखे देहरे जइएरे ॥ दह
तिगपण अहिगम साचवतां ॥ एकमना धुरि थइएरे ॥ सु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जे जे वखते पूजा करवी ते ते वखते प्रथम निर्मल जलथी स्नान करवुं अने वस्त्र परिधान करवा, तेटलीज शुचि के० पवित्रता करवी, एम कर्त्तानी मान्यता छे, पण द्रव्य अने भाव बंनेनी पवित्रता कही छे. ते प्रमाणे द्रव्य भावनी पवित्रताथी साभाभ्रण कोरु रोमरोजी विकस्वर थकां, निस्सिहि प्रमुख दश त्रिक तथा पांच अभिगमन, जे रीते प्रवचन सारोद्धार तथा चैत्यवंदनभाष्य प्रमुख ग्रंथोमां कह्यां छे, ते सर्व रीत साचवतां थकां हर्षभर हैये जिनमंदिर जइए. त्यां जइ प्रथम मात्र पुजा करवाने विषेज मननी एकाग्रता करवी अर्थात् अन्य सर्व कार्यथी प्रकारे मननी निवृत्ति करवी. एवीरीते तन्मयी थइ पूजारूप शुभकरणी करीए ॥२॥

कुसुम न्हवण वर वास सुगंधो ॥ धूप दीप मन साखीरे ॥ अंग
पूजा पण भेद सुणी एम ॥ गुरु मुख आगम भाखीरे ॥ सु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ पूजाना चार भेद छे. १ अंगपूजा २ अग्रपूजा ३ भावपूजा ४ प्रतिपत्ति

पूजा तेमा प्रथम अंगपूजाना पाच भेद छे १ कुसुम ते मोगरो, चवेली, गुलाब प्रमुख २ न्हवण ते गंगाजल प्रमुख ३ वर के० प्रधान चंदन, कस्तुरि, बरास प्रमुख धूप ते अगर, सेल्हारसना दशांग धूप ५ घी तथा सूतरनी वत्तियुक्त दीपक आ सर्व मननी एकाग्रताए सार्थक छे अने ते विना निरर्थक छे आ अंगपूजा पण के० पंच भेदे जेम आगममा कहीछे तेमज गुरुमुखथी श्रवण करी छे ॥ ३ ॥

एहनुं फल होय भेद सुणीजे ॥ अनंतर ने परपररे ॥ आणा
पालण चित्त प्रसन्नी ॥ मुगति सुगति सुरमंदिररे ॥ सु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त अंगपूजानु फल कहे छे तेनु कार्य सिद्धरूप फल बे प्रकारनु छे १ अनंतर २ परपर, ते जेम सिद्धांतमाथी श्रवण कर्युं छे तेज प्रमाणे कहु छु जे १ जामा तदाकार वृत्तिये स्वामि सेवक सबधे प्रवर्त्ते, ते परमेश्वरनी आज्ञा लोपे नहीं चित्त प्रसन्नी के० मननी हर्ष प्रवृत्तिये आज्ञापालनरूप फलनी प्राप्ति थाय छे १ जानु अनंतर के० आंतरा रहित फल जाणवु कारण के जेने प्रभु आज्ञानी प्राप्ति थइ तेने जैनदर्शननु सर्वस्व हस्तगत थयु अने ए रीते आज्ञा सहित पूजन करनारने परपर फल तो मुक्ति तथा सुगति के० उत्तम मनुष्यगति अने सुरमदिर के० देवलोक भुवन प्राप्त थाय तेमा पण नानाधिकपणे मुक्तिज कही छे परतु नवस्थितिनी परिपक्वताना वारपने अनावे तथाविध नाननी निर्मलता न होय तोपण मनुष्य तथा देवनी उत्तम गति पामे ॥ ४ ॥

फूल अक्षत वर धूप पईवो ॥ गंध नैवेद्य फल जल नरीरे ॥ अंग
अग्रपूजा मलि अमविध ॥ नावे नविक शुनगति वरीरे ॥ सु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे अग्रपूजा नामनो बीजो भेद वर्णवे छे पूर्वे पाच भेद अंगपूजाना कह्या ते माथे त्रण भेद अग्रपूजाना कहे छे १ अक्षत ते शुद्ध तंडुल २ नैवेद्य ते साकर प्रमुख ३ फल ते सोपारी प्रमुख एम पूर्वोक्त १ न्हवण २ चदन ३ पुष्प ४ धूप ५ दीप साथे अग्रपूजाना त्रण भेद मेलवता आठ भेद थाय छे ते अंग तथा अग्रपूजा ए नव्यजीव नावसहित करे ते प्राणी शुनगति के० पचम गति जे मुक्ति तेने प्राप्त थाय॥५॥

सत्तर भेद एकविंश प्रकारे ॥ अठोत्तर शत भेदेरे ॥ नावपूजा
बहुविधि निरधारी ॥ दोहग दुरगति छेदेरे ॥ सु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे अंग तथा अग्र पूजाना मली सत्तर भेद बतावे छे १ न्हवण २ विलेपन ३ वस्त्रयुग ४ वासक्षेप ५ पुष्प ६ पुष्पमाला ७ पचवर्ण पुष्प ८ चूर्ण ९ ध्वजा

आजरण ११ पुष्पघर १२ पुष्प पगर १३ अष्टमंगल १४ धूप १५ गीत १६ नृत्य १७ वाजीत्र ए रीते सत्तर ज्ञेदथी, एकवीश प्रकारथी, एकसो आठ ज्ञेदथी अने एक हजार आठ ज्ञेदथी पण पूजा थाय. ए सर्व पूजाना ज्ञेद जाव सहित आचरतां सुगति प्राप्त थाय. हवे त्रीजो पूजानो ज्ञेद ते जावपूजा ठे. जाव शब्दें परमात्माना स्वरूपने ज्ञानादिक बहुविधि के० घणां प्रकारे निरधारी के० ते ते लक्षणे अवधारीने चिंतववुं अर्थात् मनन करवुं. ते त्रीजी पूजानुं फल, डुर्जाग्य जे स्वरूपनी अप्राप्तिरूप कर्म्म संबंधनी चारे डुर्गति तेनो तथा तेना डुःखनो नाश थाय अने पंचम गतिनी प्राप्ति थाय ते रूप ठे ॥ ६ ॥

तुरिय ज्ञेद पडिवत्ती पूजा ॥ उपशम खीण सयोगीरे ॥
चउहा पूजा एम उत्तर ऊयणे ॥ जाषी केवल जोगीरे ॥ सु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवे पूजानो तुरीय के० चोथो ज्ञेद जे पमिवत्ती के० प्रतिपत्ति पूजा तेनुं स्वरूप कहे ठे. प्रतिपत्ति के० अंगीकार करवुं अर्थात् पोताना स्वरूपने अविछिन्नपणे आदरवुं ते प्रतिपत्ति पूजा ठे. ते, अग्यारमा उपशम, बारमा क्षिणमोही अने तेरमा सयोगीकेवली गुणठाणे प्राप्त थाय. ए रीते चार प्रकारनी पूजा, उत्तराध्ययन सूत्रना सम्यक्त पराक्रम नामना अध्ययनमां केवल ज्ञानना जोगी के० धारण करनारा पुरुषोए उपदेशेली ठे. तेथी अहो जव्यो! मत ममत्वमां ग्रस्त थइ, परजवनी बीकने अवगणी, उत्सूत्रना जापण करनारा, परमेश्वरनी पुष्प, धूप प्रमुख पूजामां आरंज बतावे ठे, ते प्रमाणे केवलज्ञानी जो तेवी पूजामां आरंज थाय ठे एम जाणता होत तो सिद्धांतमां तेवी पूजानुं वर्णन नहीं करतां निषेध करत; परंतु तेमणे तो लाज जाणी करवाने उपदेश करेलो ठे. ॥ ७ ॥

एम पूजा बहु ज्ञेद सुणीने ॥ सुखदायक शुजकरणीरे ॥
जाविक जीव करशे ते लेशे ॥ आनंदघन पद धरणीरे ॥ सु० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ माटे हे जव्यो! ए रीते ऊव्य जाव पूजाना घणां ज्ञेद ते सुख के० मुक्तिसुख आपनाररूप शुज करणी अर्थात् आत्माने स्वस्वरूप प्राप्त करावनार कर्त्तव्य श्रवण करीने जे जविक जीव, ऊव्यपूजा तथा जावपूजा करशे ते प्राणी आनंद के० अनिर्वाच्य अतिशय प्रमोदना जरावरूप पद के० मुक्तिपदनी धरणी के० जूमिने प्राप्त करशे ॥ ८ ॥ इति सुबुद्धि जिन स्तवन ॥

॥ अथ श्री शीतलजिन स्तवन ॥

॥ राग धनाश्री ॥ मगलिकमाला गुणह विशाला ॥ ए देशी ॥

शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी ॥ विविध भंगी मन मोहेरे ॥
करुणा कोमलता तीक्ष्णता ॥ उदासीनता सोहेरे ॥ शी० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे शीतलजिन! सामान्य केवलीना स्वामि तमारा स्वरूपमा रमण थई प्रत्यक्ष विरोधाभासी परतु तमारे विषे अविरोधपणे प्रवर्त्तेली, माटे ते मनोहर छे, त्रिभंगी के० त्रण छे प्रकार जेना एवी एक त्रिभंगीने विषे, वली मूल भंगीना भेदोना अर्थ विभेदे भगांतरनी रचना विविध के० नाना प्रकारनी छे, ते भव्य जीवोने मनोहर के० चमत्काररूप छे, परतु मनमा भयानकपणे दुर्धर्ष नथी ते त्रिभंगीनी भंग रचनानु स्वरूप कहे छे १ करुणा ते मननी कोमलता, दयाना परिणाम ते शीतलजिनना स्वभावरूप अहिंसक भावेज परिणम्या छे अहि करुणानो सामान्य अर्थ पण रचनामाज कर्यो छे, ते दोष नथी, कारण के भाष्य निर्युक्तिमा, पोताना शब्दनो अर्थ पोतेज योजनामा करे तेमा दोष नथी एम कहेलु छे. वली तीक्ष्णता ते तीक्ष्णवृत्ति, क्रूरता, दुर्धर्षपणु, आ बीजो भंग छे अने उदासीनवृत्ति ते त्रीजो भंग छे भव्य जीव, काल परिपाक कारण मलता सेहेजे सिद्ध थाय, माटे दया तेमा शानी थाय? वली कर्म पण सेहेजे खपी जाय, माटे कोमलता तथा तीक्ष्णतामा भाव स्व साथे प्रवृत्ति करवी ते उदासीनता, एवी शीतलजिननी मनोहर त्रिभंगी छे॥१

सर्व जंतु हितकरणी करुणा ॥ कर्म विदारण तीक्ष्णरे ॥
हानादान रहित परिणामि ॥ उदासीनता विक्षणरे ॥ शी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे तेज त्रिभंगीनो मतव बतावे छे समस्त सूक्ष्म, बादर, त्रस, संसारी जीवमात्रने हितकारी चिंतवणा ते करुणा नामनो प्रथम भंग जाणवो कर्मनु विदारवु, नाश करवु ते तीक्ष्णता, अहि निर्दयीपणु छे अर्थात् बापडा, रांक कर्म हणे एवी रीते कर्मोनो नाश करवामा दया आवती नथी ते नामनो बीजो भंग हवे त्रीजो भंग उदासीनता, जे उभय विलक्षणी होवाथी परस्पर होय तेनो संभव कहे छे हान के० छोडवायोग्य अने आदान के० ग्रहणयोग्य, तेथी रहित परिणामि अर्थात् छोडवायोग्य वस्तुने छोडवानी इच्छा अने ग्रहण करवायोग्य वस्तुने ग्रहवानी इच्छा नथी, ए रीते इच्छानो निरोध कर्यो छे ते स्व उपयोगे अर्थात् कृत्रिमपणे नही परन्तु स्वभावेज निरोध करेलो छे एम हेय वस्तु छतां स्वभाविकपणे हानादानपणु थयेलु छे. ते उदासीनता रहित

विक्षण के० विचक्षण धारो. अहिं "च" अक्षर पादपूर्त्ति माटे तजी दीधो छे. हवे उदासीनतानुं लक्षण कहे छे. अनादि निजस्वरूपनुं जे ग्रहण ते आदान अने परपरिणतिनो त्याग ते हान. ए बंनेथी रहित परिणामीपणुं छे, केमके मारा अनादि स्वरूपने हुं पाम्यो तेमां शो हर्ष, जेम ज्ञान दर्शन ते आत्मा अने आत्मा ते ज्ञान दर्शन. तेवीज रीते निश्चय नये त्रण कालमां आत्मामां कर्मनो असंभवज छे तेथी शोक पण शुं. ए रीते उदासीनतानो संभव कह्यो ॥ २ ॥

परदुःखछेदन इछा करुणा ॥ तीक्षण परदुःख रीझेरे ॥
उदासीनता उभय विलक्षण ॥ एक ठामें केम सीझेरे ॥ शी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे ए त्रिभंगीने विषे अर्थ भेदथी त्रिभंगी बतावे छे. संसारी जीवोने अनादि कालथी पुद्गलादि जड संबंधथी थयुं जे दुःख, तेने छेदवानी इछा ते करुणा नामनो प्रथम भंग. भगवंत महावीर स्वामि, संगमाना उपसर्गथी पुद्गलोने दुःख पामता देखीने रीझे के० हर्ष पामे अर्थात् ज्ञानी पुरुष एम विचारे के अनादि कालथी ए कर्मो मने दुःख आपता हता, आजे ए दुःख पामे छे एवी विचारणा ते रीझ कहेवाय, ए तीक्ष्णता नामनो बीजो भंग; अने उभय विलक्षण के० ए बंने लक्षणोथी जे जुदीज छे ते उदासीनता नामनो त्रीजो भंग. ते आ प्रमाणे. जेमके पुद्गलसंगी जीवोने दुःखी जोइने विचारे के, तेउनी भवस्थिति परिपक्क थया विना मारी करुणाथी शुं थाय ? वली ए पुद्गलादिक जड वस्तुने बीजाना करेला उपसर्ग प्रमुखथी दुःखी देखीने हुं राजी थयो, परंतु मारुं स्वरूप निश्चयथी एक आनंदोपेतज छे. माटे जड तेने रोकी शके नही, ते उदासीनता. एम त्रणे लक्षण कह्या. ते एक परमेश्वररूप ठाम के० स्थानकमां शीरीते सिद्धथाय? केमके तेना लक्षण भिन्न भिन्न छे, तेथी एक स्थानमां केम पामिये ? तेनो उत्तर आगली गाथामां आपे छे ॥ ३ ॥

अभयदान ते मलक्षय करुणा ॥ तीक्षणता गुणभावेरे ॥
प्रेरण विणु कृत उदासीनता ॥ एम विरोध मति नावेरे ॥ शी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे ते त्रिभंगीनुं शीतल परमेश्वरमां अविरोधिपणे अवतरण करी देखाडे छे कोइ जीवने भय न उपजाववो एवुं अभयदान सर्व जीवने परमेश्वर आपे छे, ते करुणा; ते राग द्वेषरूप मलना क्षयथी थाय छे. हवे सुमति पुछे छे के, तीक्ष्णता अने करुणाने परस्पर विरोधि भाव छे, माटे ज्यां करुणा त्यां तीक्ष्णता केम संभवे ? उत्तर के–परमात्मामां स्वगुण स्वभाव एवोज छे के, कर्मो उपर अति तीक्ष्णता तेमने उत्पन्न थाय. अहिं जीव उपर करुणा अने कर्म उपर तीक्ष्णता होवाथी मतिमां वि-

रोध आवतो नथी वली मतिनो अर्थ सुमति करीए तोपण विरोधिपणु न
बीजो भग हवे त्रीजा भगनु स्वरूप कहे छे प्रेरणा कर्या विना उदासीनता
इष्टनो वियोग अने अनिष्टनो सयोग थाय त्यां उदासीनता थाय, परतु ते उ
प्रेरणाथी थइ कहेवाय, पण परमेश्वरने विषे जे उदासीनता छे ते प्रेरणावि
केमके आत्मधर्मेथी वीतराग परिणति परिणमि परमात्मवृत्तियें स्वभाव प्राप्ति
तेनो शो हर्ष, तेथी प्रेरणाविना उदासीनता छे माटे हे सुमति! शीतल परमे
पूर्वोक्त रीते त्रिभगीनी परस्पर विरोधता आवती नथी ॥ ४ ॥

शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता ॥ निग्रथता संयोगेरे ॥
योगी भोगी वक्ता मौनी ॥ अनुपयोगी उपयोगेरे ॥ शी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे बे भागाना प्रयोगथी त्रीजो भांगो थाय एवी पाच त्रिभगी कहे
१ शक्ति २ व्यक्ति तेमनी साथे "न" जोडवाथी ३ न शक्ति, न व्यक्ति वली १
भुवन प्रभुता २ निग्रथता तेमनी साथे "न" जोडवाथी ३ न त्रिभुवन प्रभुता, न
ग्रंथता एम भागा थाय छे स्वगुणपर्यायने ग्रहवानु सामर्थ्य ते "शक्ति" तेज शक्ति
स्वभावनुं प्रत्यक्ष करवु ते "व्यक्ति" वली स्वगुण ग्रहण करता शक्ति फोरव
शु काम? ते तो आत्माना गुण हता ते आत्मामा प्रगट थया, माटे "नशक्ति"
आत्मा पोताना स्वभावमा रम्यो तेमा प्रत्यक्ष शु कर्युं? ते "नव्यक्ति" ए प्रथम
भंगी वली त्रण जगतना पूज्य तेथी "त्रिभुवन प्रभुता" अने बाह्य अभ्यतर ग्रं
रहित तेथी "निग्रथता" स्वेछाये त्रण जगतना पूज्यपणाना अभावक तेथी "न
भुवन प्रभुता" पासे ओघो मुहपत्ति राखे नही, निग्रंथी थइने फरे नही, तेथी "
निग्रथता" ए बीजी त्रिभगी १ योगी २ भोगी साथे "न" जोडता ३ नयोगी,
भोगी मनवचन कायाना योगना रुधनारा तेथी "योगी" निजगुणना भोक्ता,
"भोगी" सिद्धस्वरूपने चिंतवनारा तेथी "नयोगी" स्वभावे सिद्धगुणना अतर्यामी
"नभोगी" ए त्रीजी त्रिभगी १ वक्ता २ मौनी साथे "न" जोडता ३ नव
नमौनी द्वादशागीना उपदेष्टा, तेथी "वक्ता" आश्रव सबधी वचन न कथन
तेथी 'मौनी" अनता तीर्थंकरे द्वादशागी प्ररूपी तेमनाथी काइपण हिना
यशु, तेथी "नवक्ता" तीर्थप्रवर्तनसमये द्वादशागी वचनवर्गणाए भाषी, तेथी
मौनी" ए चोथी त्रिभगी हवे अनुपयोग उपयोगने सयोगे पाचमी त्रिभगी
छे १ अनुपयोगी २ उपयोगी साथे "न" जोडता ३ नअनुपयोगी, नउपयोगी
योग प्रयुज्या विना अनता पदार्थ केवलज्ञानथी प्रत्यक्ष छे,तेथी "अनुपयोगी"

ज्ञानोपयोगी, केवलदर्शनोपयोगी, तेथी "उपयोगी". सिद्धअवस्थामां केवलज्ञान केवलदर्शन ए बे उपयोगोनो संभव, तेथी "नअनुपयोगी" परंतु उपयोग प्रयुंजवानुं कारण कोइपण वखते पडतुं नथी, तेथी "नउपयोगी" ए पांचमी त्रिभंगी. ॥ ५ ॥

इत्यादिक बहु भंग त्रिभंगी ॥ चमत्कार चित्त देतीरे ॥ अच
रिजकारी चित्रविचित्रा ॥ आनंदघन पद लेतीरे ॥ शी०॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इत्यादि अनेक द्विक संयोगी त्रिभंगीउंना भांगा छे. जेमके १ कामकर्मे २ क्रोधकर्मे. साथे "न" जोडतां ३ नकामकर्मे, नक्रोधकर्मे. स्वरूप ग्रहवानो काम के० अभिलाष तेमां क्रमके० व्यापि रहेवापणुं. मोहादिक शत्रु हणतां क्रोध व्यापि रह्यो छे संज्वलननो लोभ खपावी बारमे गुणठाणे चढ्या त्यारे "नकामी नक्रोधी". अहिं कामक्रोधादि सर्वना त्यागी छे. ए त्रिभंगी थइ तेमज १ सकामी २ निष्कामी ३ नसकामी ननिष्कामी. स्वरूप ग्रहवाने अभिलाषा, तेथी "सकामी". परपरिणतिने नही ग्रहवाथी, "निष्कामी". कामकर्मने त्यागवाथी, "नसकामी" अने पोताना अनंतगुणोमांथी एकपण गुण छंडो न ग्रहण कर्यो, तेथी "ननिष्कामी". इत्यादि अनेक त्रिभंगीउ छे. असंभवपणाने प्राप्त करती थकी चित्तने चमत्कार उपजावनारी छे, केमके चित्र के० नानाप्रकारना विचित्रा के० अनेक भंग तरंगनी त्रिभंगी ते असंभव संभवरूप तेथी अचरिजकारीछे. जेमके करुणा, त्यांज तीक्ष्णता, त्यांज उदासीनता, ए केम संभवे माटे आश्चर्यकारी छे. ए त्रिभंगीउंनी फलप्राप्ति ते ज्ञानानंदना भराव रूप जे मुक्तिपद तेने लेतीके० ग्रहण करनारी छे अर्थात् त्रिभंगीउंना भंग तरंग, केवलज्ञान केवलदर्शनात्मक छे, अथवा एकेक भंग ते पण आनंदघनपदथी व्यापी रहेल छे ॥ ६ ॥ इति शीतलजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीश्रेयांसजिन स्तवन ॥

॥ रागगोडी ॥ अहो मतवाले साजना ॥ ए देशी ॥

श्रीश्रेयांसजिन अंतरजामी ॥ आतमरामी नामीरे ॥ अध्या
तम मत पूरणपामी ॥ सहज मुगतिगति गामीरे ॥ श्रीश्रे० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ श्रीश्रेयांस प्रभुने साक्षीभूत करीने कहेछे. हे सुमति ! केवलज्ञानादि लक्ष्मीवाला श्रेयांस परमात्मा आपणा अंतर के० अंतःकरणना सर्वभेदना जामी के० जाणनार छे. ते सर्वना अंतरजामी तेथीज तेनुं नाम आतमाराम छे. वली जेणे स्वस्वरूप संबंधी संपूर्ण ज्ञान अखंडितपणे प्राप्त करेल छे, तेथी अध्यात्ममतना पूरण पामी छे, वली निःप्रयासे मुक्तिगतिने प्राप्त करनारा छे ॥ १ ॥

सयलसंसारी इंद्रियरामी ॥ मुनिगुण आतमरामीरे ॥
मुख्यपणे जे आतमरामी ॥ ते केवल नि कामीरे ॥ श्रीश्रे० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ सर्व संसारी जीवो, शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श रूप इंद्रियोना सु
जागमा लीनपणे प्रवृत्ति रह्या छे अने सिद्धांत वचनानुसारे आत्मस्वरूपने साधना
मुनिराजो ज्ञानादि आत्मगुणोमा रमी रह्या छे तेथी निश्चयनयने मत मुख्य
गुणगुणीने अनेदस्वरूपे, आत्मस्वरूपमा तद्रूपपणे प्रवृत्ति करनारा जे मुनिराज, तेव
तो नि केवल एक आत्मस्वरूपनी कामना शिवाय अन्य अभिलाप मात्र नथी, तेथ
तेओ निष्कामी छे ॥ २ ॥

निजस्वरूप जे किरिया साधे ॥ तेह अध्यातम लहियेरे ॥ जे
किरिया करी चउगति साधे ॥ ते न अध्यातम कहियेरे ॥ श्रीश्रे० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हे सुमति ! जे प्राणी पोताना आत्मस्वरूपमां रमता थका प्र...
पापनिवर्त्तनरूप क्रियामात्रने सावे ते प्राणी अध्यात्म के० आत्मामा अंतवर्ती
एवु स्वरूप अविछेदकरूप आत्मस्वरूप पामे अर्थात् तेने अध्यात्म लहिये के०
हिए परंतु जे प्राणी निजस्वरूपमा नही रमता क्रियाकरी चारगति सिद्धकरे अ
र्थात् शुभकरणी करी देव तथा मनुष्यनी गति सिद्धकरे अने अशुभ करणी क
नरक तिर्यंचनी गति सिद्ध करे, दृष्टांत के साधुपणामां देव अने मनुष्यनी गति सि
करे अने साधुपणु छता वचक करणी करी अथवा प्राणातिपातादियुक्त करणी करी नरक
तिर्यंचगति सिद्ध करे, ते क्रियाने अध्यात्म स्वरूप अनुयायी क्रिया न कहीए ॥ ३ ॥

नाम अध्यातम ठवण अध्यातम ॥ द्रव्य अध्यातम छंडोरे ॥
जावअध्यातम निजगुण साधे ॥ तो तेहशुं रढ मंडोरे ॥ श्रीश्रे० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अध्यात्मक्रियाना चार प्रकार छे तेमा प्रथम, अध्यात्मशब्दनो मात्र अ
पण न जाणे अने जे पुछे तेने कहे के अमे अध्यात्मी छईए ते नाम अध्यातम बी
अध्यात्म स्वरूपनो अक्षरविन्यास आदि स्वरूप ते स्थापना अध्यात्म त्रीजु, रे
पुरक, कुंनकादि प्राणायामना नेदे बाह्यवृत्तिए एवु ध्यान बतावे के जे मने देखी आ
एम जाणे के तेणे अंतरवृत्तिए आत्मानु स्वरूप प्रत्यक्ष कर्युं देखाय छे, परंतु पोत
कोरानेकोरा होय, ते द्रव्य अध्यात्म आ त्रणे अध्यात्म छांडवा योग्य छे तेथी
छेने तजीयो अने जे आत्मस्वरूपमा रमणतासहित क्रियामा प्रवर्त्तनरूप ...
जाव अध्यात्म ते आत्माना ज्ञान दर्शनादि गुणोने सिद्धकरे, निर्मल करे. माटे ...
जव्यो ! जो तमारे निजगुणनी सिद्धता करवी होय तो जाव अध्यात्मनीज रटना

शब्द अध्यातम अरथ सुणीने ॥ निरविकल्प आदरजोरे ॥
शब्द अध्यातम भजना जाणी ॥ हान ग्रहणमति धरजोरे ॥ श्रीश्रे० ॥५॥

अर्थ ॥ हे भव्यो ! आत्माने अंतवर्ती आत्मस्वरूपमां तदाकारपणे रमणता करवी अध्यात्मशब्दनो अर्थ छे. ते गुरुमुखथी श्रवणकरी, निश्चयनये आत्मानेविषे स्व-तुं निरविकल्पिपणुं अर्थात् अभेदिपणुं छे ते आदरजो के० अवधारजो. वली अ-त्मशब्दना बीजा बे भेद छे. एकमां स्वरूप अध्यात्मीपणुं छे अने बीजामां स्व-अध्यात्मीपणुं नथी. माटे भजना समजजो अर्थात् मात्र नामपण अर्थ रहित अध्यात्मशब्द, स्वरूपनी सिद्धताना अभावने लीधे हान के० छांडवा योग्य छे. तेमां छांडवानी बुद्धि धारजो, अने अर्थ अध्यात्ममां स्वरूपनी सिद्धता होवाथी ग्रहण करवानी बुद्धि धारजो ॥ ५ ॥

अध्यातम जे वस्तु विचारी ॥ बीजा जाण लबासीरे ॥
वस्तुगतें जे वस्तु प्रकासे ॥ आनंदघन मत वासीरे ॥ श्रीश्रे० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटे वस्तु के० आत्मतत्त्वने तदाकार स्वरूपे विचारनारा, लक्ष्य लक्षणना भेद विचारी, तेतो अध्यात्मने ग्रहण करेछे; अने जेउ अध्यात्मस्वरूपथी भिन्न शुन्य हृदय छतां हठ ग्राहीपणे अध्यात्मसतना ममत्वी. मात्र निश्चयनयना वाद नार तेउंतो लबासीके० लबाड छे. जे मुनिराज वस्तु के० सिद्धांतनेविषे गत के० थयेल एवुं वस्तु के० अध्यात्म तत्त्वप्रकासे के० प्रगट करे अर्थात् सिद्धांतमां जेम यात्म स्वरूप कह्युं छे तेमज प्रकासे, ते आनंदघन के० अनंत केवलज्ञानीउंनो जे नयाश्रित मत के० जिनमत, तेनो वासी होय ॥ ६ ॥ इति श्रीश्रेयांसजिनस्तवन.

॥ अथ श्रीवासुपूज्यजिन स्तवन ॥

॥ राग गोडी तथा परज ॥ तुंगीयागिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥

वासुपूज्यजिन त्रिभुवनस्वामी ॥ घननामी परनामीरे ॥
निराकार साकार सचेतन ॥ करम करम फलकामीरे ॥ वासु० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अहो भव्यो ! वासुपूज्य प्रभु त्रणभुवनना पूज्य होवाथी स्वामि छे. वली जे नामी के० घणां नामवालां छे अने जे परमात्माना नामो ते ते परिणामेज परि-मे रह्या छे. हवे संसारी जीवोना बे भेद छे १ बहिरात्मा २ अंतरात्मा. तेमां अंत-मानी अहिं विवक्षा करतां, निराकार ते सामान्य उपयोग अने साकार ते विशेष योग, एवां उपयोग लक्षणसहित चेतन छे ते करम करमफलकामी के० सामान्य

विशेष शुभाशुभ उपयोगे प्रवर्त्ततो चेतन ज्ञानावरणादि कर्मोनो कामी के० अर्थ
व्यापी तेमा शुभ उपयोगे प्रवर्त्ततो चेतन शुभपुण्य प्रकृतिनो कामी के० अविरत
अने अशुभ उपयोगे प्रवर्त्ततो चेतन अशुभ पाप प्रकृतिनो कामी छे ॥ १ ॥

निराकार अभेद सग्राहक ॥ भेदग्राहक साकारोरे ॥
दर्शनज्ञान दुभेद चेतना ॥ वस्तुग्रहण व्यापारोरे ॥ वासु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे निराकारनु लक्षण कहे छे भेदरहित जे संग्रह करनार ते निराकार
दर्शनोपयोग अने जे भिन्न भिन्न स्वरूपनो ग्राहक ते साकार, ज्ञानोपयोग एवी
निराकार अने साकार बे उपयोगना भेदथी चेतनाना पण बे भेद थया एवी
सामान्य विशेष बे उपयोगें जडथी आत्मतत्त्वने भिन्न के० जुदु करी लेवु ते व
पार के० प्रवर्त्तन ते जेनु एवो चेतनावत लक्षणयुक्त अतरात्मा छे ॥ २ ॥

कर्त्ता परिणामी परिणामो ॥ कर्म जे जीवे करीएरे ॥
एक अनेक रूप नयवादे ॥ नियते नर अनुसरीएरे ॥ वासु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ कर्मनु कर्त्तापणु ते परिणामि के० व्यापीने परिणामो के० परिणम
छे, अर्थात् कर्मनु कर्त्तापणु ते परिणामे व्यापि रह्यु छे पण जीवमा नथी कोइ
जीवमा कर्त्तापणु केम नथी, तेने उत्तर के, जे परिणामे प्रवर्त्ते ते कर्मने जीव
जेमके मिथ्यात्वपरिणामे परिणमतो जीव, मिथ्यात्व कर्मप्रकृतिने करे पण
तिने न करे. तेथी कर्त्तापणु परिणाममा छे, पण जीवमा नथी जे करीए ते कर्म
परनामात्र कर्म तो एकज छे, परतु नयवादे के० नय वचन मार्गे तेना अनेक
छे अर्थात् वस्तु तत्त्वे एक नयवचन मार्गे ज्ञानावरणादि कर्म आठ छे ते हे
नर के० मनुष्यो नियतें के० निश्चयथी अनुसरिये के० अवधारो ॥ ३ ॥

दुःखसुखरूप करमफल जाणो ॥ निश्चय एक आनंदोरे ॥
चेतनता परिणाम न चूके ॥ चेतन कहे जिनचदोरे ॥ वासु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हे भव्यो ! दुःखस्वरूप अने सुखस्वरूप एवा बे कर्मना फल छे
व्यवहारनयनी अपेक्षायें छे अने निश्चयनयने मते तो त्रणे कालमा निज
आत्मा कर्त्ता, पर अद्वितीय आनंदमयी छे चेतनाने विषे चैतन्य धर्म ते
पणु छे, ते चेतननानो परिणाम के० परिणमन धर्म ते चेतना कदि मुके नही,
ते बेनो धर्म, गुण छे धर्मथी धर्मीनी ओळखाण थाय, गुणथी गुणीनी ओळखाय
दशा ॥ धर्मी अपने धर्मकुं ॥ न तजे तिनूकाल ॥ आत्मद्रान गुण नव तजे ॥

रेयाकी चाल ॥ १ ॥ माटे धर्मने अन्नावे धर्मीनो अन्नाव अने तेने सद्भावे तेनो सद्भाव, तेथी चेतनता धर्मवंतने श्रीजिनचंद्रे चेतन कह्यो ॥ ४ ॥

परिणामी चेतन परिणामो ॥ ज्ञान करमफल न्नावीरे ॥ ज्ञान
करमफल चेतन कहिये ॥ लेजो तेह मनावीरे ॥ वासु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ माटे चेतना धर्मे परिणामि के० व्यापी रह्यो एवो चेतन जे जीव तेनुं परिणामो के० परिणमन शुं डे, अर्थात् धर्म शुं डे ? ते कहे डे. ज्ञान के० निजस्वरूपज्ञान, जेमके हुं चेतन डुं अने पुफ्लादिकमां रमी रह्योडुं, ते जम डे. हुं अविनाशी डुं, जम विनाशी डे. हुं चैतन्य धर्मी डुं, शास्वत डुं, ते समण पडण विध्वंसन धर्मी डे. तेथी ते ज्ञानस्वरूप आत्मानुं करम के० करवुं ते शुद्ध आत्मस्वरूप प्राप्तिरूप फल तेनो न्नावि के० विचारनारो तेथी ज्ञान के० आत्मज्ञाननुं करम के० करवुं, एवुं तेनुं फल ते स्वरूप प्राप्तिरूप तेने चेतनावंत चेतन कहीए एटले लक्षण सहित चेतन कहीए; केमके सिद्धांतमां स्वरूप प्राप्ति थइ तेनेज लक्षण सहित चेतन कह्यो छे; अने बीजा तो कहेवा मात्र चेतन जाणवा. माटे अहो नव्यो ! ते शुद्ध आत्मस्वरूपने मनावी लेजो के० निरंतर तेनी साथे हेत राखजो, अर्थात् स्वरूपमांज प्रवर्त्तजो. अन्य कांइ पण चिंतवनमां प्रवर्त्तशो नहीं ॥ ५ ॥

आतमज्ञानी श्रमण कहावे ॥ बीजा तो द्रव्य लिंगीरे ॥ वस्तु
गतें जे वस्तु प्रकासे ॥ आनंदघन मति संगीरे ॥ वासु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटे अंतरात्मवंत ज्ञानीने साधु कहीए, कारण के ते शुद्ध आत्मस्वरूपना ज्ञाता डे. जेने आत्मस्वरूप प्रत्यक्ष थइ रह्युं डे तेज श्रमण के० साधु कहेवाय डे. "नाणेणय मुणी होइ" इति वचनात्ः अने बीजा जे स्वरूपज्ञानथी रहित डे, तेंतो मात्र डंघा मुहपत्तिना धारक द्रव्यलिंगी डे. स्वरूप ज्ञानमां न्नावलिंगीपणुं डे. डंघा मुहपत्ति धारण करवामां द्रव्यलिंगीपणुं डे. माटे वस्तुगतें के० आत्मवस्तु जेम डे, तेमज आत्मवस्तु तत्त्वने जे प्रकासे के० प्रगट करे अर्थात् आत्माथी बहार स्वरूपज्ञान नथी परंतु आत्मानी अंदरज स्वरूपज्ञान डे, एवुं जे कहे. ते आनंदघन मति संगी के० चित् आनंदनो समुद्र तेनी मति जे सुमति तेनो संगी के० सहचारी थाय. ॥ ६ ॥ इतिश्री वासुपूज्यजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीविमलजिन स्तवन ॥

॥ राग मल्हार ॥ ईडर आंबा आंबलीरे ॥ ए देशी ॥

दुख दोहग दूरें टल्यारे ॥ सुख संपदशुं भेट॥धींग धणी माथे कियारे॥ कोण गजे नरखेट ॥ विमलजिन ॥ दीठा लोयण आज ॥ मारासिद्धा वं छितकाज ॥ विमलजिन ॥ दीठा० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे सुमति ! विमलनाथ परमात्माना दर्शनथी चारे गतिना दु... नादि कालनुं अज्ञान संबंधी दुर्भाग्य दूर टल्या के० नाश पाम्युं वली प्रभुने नि... हर्षे निरंतर गात्रो थवाथी आत्माने उल्लास प्रगट थवारूप सुख थयुं ते ... शमदम क्षम विचक्षण रुची, प्रभु स्वरूपानुयायी अनुभव संबंधी प्रीत तेथी थती निजस्वरूप संपदा जे रत्नत्रय तेनो भेट के० मेलाप थयो हे सुमति ! दर्शन मात्रथी दुःख दौर्भाग्य दूर थया अने सुखसंपत्तिनी प्राप्ति थई, तो एवा... के० समर्थने माथे धणी कर्या छता, अर्थात् बलवान धणीना सेवकने, खेदनार गालारा अने मारनारा एटले के रातदिवस नुकशान करवाना इलाजमांज मारा एवा मोह कषायादि जे नर, ते पराजय करवाने समर्थ नथी एवा विम... प्रभुने मारा आजे नेत्रोथी दीठा मारो आजनो दिवस कृतार्थ थयो अने ... दर्शनथी मारा मनोवांछित कार्य सिद्ध थया ॥ १ ॥

चरणकमल कमला वसेरे ॥ निरमल थिरपद देख ॥ समल अथिरपद परहरीरे ॥ पंकज पामर पेख ॥ वि० ॥ दी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ आ गाथानो अर्थ अन्वयथी करीए छीए कमला के० लक्ष्मीए पो... निवासनुं स्थान, कमल कादवमां उत्पन्न थएलुं होवाथी समल के० मल सहित एम जाणी तथा ते कमलनी पांखडीओ खरी जती होवाथी अन्य कमलमां नि... करवानी जरुर पडे, एम कमल स्थानकने अस्थिर पण जाणी, वली तेज कमलने पेख के० रांकम्लान पण जाणीने ते कमलरूप स्थानने परिहरि के० तजी दे... अने हे सुमति ! तेणीए निरमल के० कर्मरूप मेलरहित विमलनाथ प्रभुना ... ण के० चरणरूप कमलने थिरपद देख के० स्थिर स्थानक देखीने तेमां निवास, अर्थात् आ जगतनी लक्ष्मी प्रभुना चरणकमलमां निवास करे छे सुख प्राप्ति... मांनो वास अन्यस्थलमां धारे छे, तेओ भूला छे, कारण के विमलनाथ प्रभुना सम्पूर्ण सेवा करवाथी निर्वाणपदादिक समस्त संपदाओ मले छे ॥ २ ॥

मुजमन तुऊपद पंकजे रे ॥ लीनो गुण मकरंद ॥
रंक गणे मंदरधरारे ॥ इंद चंद नागिंद ॥ विमल० ॥ दी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हे प्रजु ! जेम कमलना मकरंद के० पराग उपर भ्रमराउ लीन थई कम-
मां तदाकार थाय तेम मारो मनरूप भ्रमर, अनंत ज्ञानादि गुणयुक्त तमारा चर-
कमलमां लीनो के० तदाकार थई रहेल ठे अने ते हर्षथी एवो उन्मत्त थयो ठे के
दरधरा के०मेरु पर्वतनी सुवर्णमय भूमि वा नंदनवननी अत्यंत रमणीक पृथ्वीने रंक
मान गणे ठे, अर्थात् तमारा चरणकमलनी सेवारूप निवासनी आगल ते वस्तुउ
। गणतीमां ठे ? एम मारो मनरूप भ्रमर जाणे ठे, एटलुंज नही पण देवोना स्वा-
। इंद्र, ताराग्रहनास्वामि चंद्र अने नागेंद्रने पण रांक तुल्य गणे ठे; एवुं मारुं मन
हुं थयुं ठे ॥ ३ ॥

साहेब समरथ तुं धणीरे ॥ पाम्यो परम उदार ॥
मन विसरामी वालहो रे ॥ आतमचो आधार ॥ विमल० ॥ दी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अहो समर्थ साहेब के० प्रजु, तमारा जेवो धणी के० नाथ मने प्राप्त थ-
। तेथी मारा सर्वकर्मरूप शत्रुउ, हवे मने पराजव करी शकशे नही. वली हे प्रजु !
मो संतुष्ट थये पोतानुं परमपद आपो ठो तेथी परम उदार एवा तमे मने प्राप्त
या. वली मारा मनने संसारिक आहट दोहट रूप चिंतानो अतिशय जार होवाथी
ांति नहोती तेथी हे प्रजु ! तमो मलवाथी मनने स्थिरतारूप शांति थइ तेथी
मो मनना विसरामी ठो. हे प्रजु ! तमो मने पूर्ण वहाला ठो एटलुंज नही पण मारा
मात्माने स्वरूपप्राप्तिमाटे परम आधार ठो ॥ ४ ॥

दरिशन दीठे जिन तणो रे ॥ संशय न रहे वेध ॥
दिनकर करजर पसरंता रे ॥ अंधकार प्रतिषेध ॥ वि० ॥ दी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हे सुमति ! विमलनाथ प्रजुने में नेत्रथी निरख्या, ते प्रजुना दर्शननो
जाव एवो ठे के, जाव विशुद्धताए ते प्रजुनुं दर्शन थतांज, जेनी मति एकाग्रताए
दर्शनमां स्थिरता पामी तेने स्वस्वरूपने माटे मनमां संशय के० भ्रांति रहे नही,
एटलुंज नही पण प्रजुनुं अने मारुं स्वरूप एक ठे अने तेमां वेध के० विरोध नथी
एवी मननी निर्दोष स्थिति थइ जाय दृष्टांत के दिन कर के० सूर्यना कर के० किर-
णोनो जर के० समूह जगतमां प्रसरतांज अंधकारनो प्रतिषेध के० निषेध थई जाय
तेज प्रमाणे प्रजुनुं दर्शन थतांज संशय तथा वेध मात्र रहे नही. ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीविमलजिन स्तवन ॥

॥ राग मल्हार ॥ ईडर आंबा आंवलीरे ॥ ए देशी ॥

दुख दोहग दूरे टल्यारे ॥ सुख संपदशुं भेट॥धींग धणी माथे कियारे॥ कोण गंजे नरखेट ॥ विमलजिन ॥ दीठा लोयण आज॥ मारासिझ्या वंछितकाज ॥ विमलजिन ॥ दीठा० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे सुमति ! विमलनाथ परमात्माना दर्शनथी चारे गतिना दुःख नादि कालनु अज्ञान संबंधी दुर्भाग्य दूर टल्या के० नाश पाम्युं वली प्रभुने नि हर्ष निर्भर गात्रो थवाथी आत्माने उल्लास प्रगट थवारुप सुख थयु ते सुख शमदम क्षम विचक्षण रुची, प्रभु स्वरूपानुयायी अनुभव संबंधी प्रीत तेथी थती निजस्वरूप संपदा जे रत्नत्रय तेनो भेट के० मेलाप थयो हे सुमति ! दर्शन मात्रथी दुःख दौर्भाग्य दूर थया अने सुखसंपत्तिनी प्राप्ति थई, तो एवा के० समर्थने माथे धणी कर्या छता, अर्थात् बलवान धणीना सेवकने, रोटला खानारा अने मारनारा एटले के रातदिवस नुकशान करवाना इलाजमां नारा एवा मोह कषायादि जे नर, ते पराजय करवाने समर्थ नथी एवा प्रभुने मारा आजे नेत्रोथी दीठा मारो आजनो दिवस कृतार्थ थयो अने दर्शनथी मारा मनोवांछित कार्य सिद्ध थया ॥ १ ॥

चरणकमल कमला वसेरे ॥ निरमल थिरपद देख ॥
समल अथिरपद परहरीरे ॥ पंकज पामर पेख ॥ वि० ॥ दी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ आ गाथानो अर्थ अन्वयथी करीए छीए कमला के० लक्ष्मीए निवासनुं स्थान, कमल कादवमां उत्पन्न थएलु होवाथी समल के० मल सहित एम जाणी। तथा ते कमलनी पांखडीओ खरी जती होवाथी अन्य कमलमां नि करवानी जरुर पडे एम कमल स्थानकने अस्थिर पण जाणी,वली तेज कमलने पेख के० दरमयान पण जाणीने ते कमलरुप स्थानने परिहरि के० तजी अने हे सुमति ! तेणीए निरमल के० कर्मरुप मेलरहित विमलनाथ प्रभुना रुप के० पाटरुप कमलने थिरपद देख के० स्थिर स्थानक देखीने तेमा निवास अर्थात् आ जगतनी लक्ष्मी प्रभुना चरणकमलमां निवास करे छे सुख प्राप्ति दर्शनो वास अन्यस्थलमां धारे छे, तेओ जूठा छे, कारण के विमलनाथ प्रभुना कमलनी सेवा करवाथी निर्वाणपदादिक समस्त संपदाओ मले छे ॥ २ ॥

सुजमन तुऊपद पंकजे रे ॥ लीनो गुण मकरंद ॥
रंक गणे मंदरधरा रे ॥ इंद चंद नागिंद ॥ विमल० ॥ दी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हे प्रजु! जेम कमलना मकरंद के० पराग उपर ज्रमराउ लीन थई कम-मां तदाकार थाय तेम मारो मनरूप ज्रमर, अनंत ज्ञानादि गुणयुक्त तमारा चर-कमलमां लीनो के० तदाकार थई रहेल ठे अने ते हर्षथी एवो उन्मत्त थयो ठे के रधरा के०मेरु पर्वतनी सुवर्णमय जूमि वा नंदनवननी अत्यंत रमणीक पृथ्वीने रंक मान गणे ठे, अर्थात् तमारा चरणकमलनी सेवारूप निवासनी आगल ते वस्तुउ ो गणतीमां ठे? एम मारो मनरूप भ्रमर जाणे ठे, एटलुंज नही पण देवोना स्वा-ा इंद्र, ताराग्रहनास्वामि चंद्र अने नागेंद्रने पण रांक तुल्य गणे ठे; एवुं मारुं मन ढुं थयुं ठे ॥ ३ ॥

साहेब समरथ तुं धणी रे ॥ पाम्यो परम उदार ॥
मन विसरामी वालहो रे ॥ आतमचो आधार ॥ विमल० ॥ दी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अहो समर्थ साहेब के० प्रजु, तमारा जेवो धणी के० नाथ मने प्राप्त थ-ा तेथी मारा सर्वकर्मरूप शत्रुउ, हवे मने पराजव करी शकशे नही. वली हे प्रजु! मो संतुष्ट थये पोतानुं परमपद आपो ठो तेथी परम उदार एवा तमे मने प्राप्त या. वली मारा मनने संसारिक आहट दोहट रूप चिंतानो अतिशय जार होवाथी ांति नहोती तेथी हे प्रजु! तमो मलवाथी मनने स्थिरतारूप शांति थइ तेथी मो मनना विसरामी ठो. हे प्रजु! तमो मने पूर्ण वहाला ठो एटलुंज नही पण मारा ात्माने स्वरूपप्राप्तिमाटे परम आधार ठो ॥ ४ ॥

दरिशन दीठे जिन तणो रे ॥ संशय न रहे वेध ॥
दिनकर करजर पसरंता रे ॥ अंधकार प्रतिषेध ॥ वि० ॥ दी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हे सुमति! विमलनाथ प्रजुने में नेत्रथी निरख्या. ते प्रजुना दर्शननो ाव एवो ठे के, जाव विशुद्धताए ते प्रजुनुं दर्शन थतांज, जेनी मति एकाग्रताए ा दर्शनमां स्थिरता पामी तेने स्वस्वरूपने माटे मनमां संशय के० ज्रांति रहे नही, एटलुंज नही पण प्रजुनुं अने मारुं स्वरूप एक ठे अने तेमां वेध के० विरोध नथी एवी मननी निर्दोष स्थिति थइ जाय. दृष्टांत के दिन कर के० सूर्यना कर के० किर-णोनो जर के० समूह जगतमां प्रसरतांज अंधकारनो प्रतिषेध के० निषेध थई जाय तेज प्रमाणे प्रजुनुं दर्शन थतांज संशय तथा वेध मात्र रहे नही. ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीविमलजिन स्तवन ॥

॥ राग मल्हार ॥ ईडर आंबा आवलीरे ॥ ए देशी ॥

दुख दोहग दूरें टल्यारे ॥ सुख संपदशुं भेट ॥ धींग धणी माथे कियारे ॥ कोण गंजे नरखेट ॥ विमलजिन ॥ दीठा लोयण आज ॥ मारासिद्या वंछितकाज ॥ विमलजिन ॥ दीठा० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे सुमति ! विमलनाथ परमात्माना दर्शनथी चारे गतिना दुख ... नादि कालनु अज्ञान सबंधी दुर्भाग्य दूर टल्या के० नाश पाम्यु वली प्रभुने दर्शे निर्जर गाढो थवाथी आत्माने उल्लास प्रगट थवारुप सुख थयु ते शमदम दान विचक्षण रुची, प्रभु स्वरूपानुयायी अनुभव सबंधी प्रीत तेथी थती निजस्वरूप संपदा जे रत्नत्रय तेनो भेट के० मेलाप थयो हे सुमति ! दर्शन मात्रथी दुख दोर्भाग्य दूर थया अने सुखसंपत्तिनी प्राप्ति थई, तो एवा धींग के० समर्थने माथे धणी कर्या छता, अर्थात् बलवान धणीना सेवकने, खेटनर के० खानारा अने मारनारा एटले के रातदिवस नुकशान करवाना इलाजमा रहेनारा एवा मोह कषायादि जे नर, ते पराजय करवाने समर्थ नथी एवा विमल प्रभुने मारा आजे नेत्रोथी दीठा मारो आजनो दिवस कृतार्थ थयो अने दर्शनथी मारां मनोवांछित कार्य सिद्ध थया ॥ १ ॥

चरणकमल कमला वसेरे ॥ निरमल थिरपद देख ॥
समल अथिरपद परहरीरे ॥ पंकज पामर पेख ॥ वि० ॥ दी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ आ गाथानो अर्थ अन्वयथी करीए छीए कमला के० लक्ष्मीए ... निवासनु स्थान, कमल कादवमा उत्पन्न थएलु होवाथी समल के० मल सहित एम जाणी तथा ते कमलनी पांखडीओ खरी जती होवाथी अन्य कमलमा ... करवानी जरुर पडे एम कमल स्थानकने अस्थिर पण जाणी, वली तेने ... पेख के० पामरसमान पण जाणीने ते कमलरूप स्थानने परिहरि के० तजी ... अने हे सुमति ! तेणीए निरमल के० कर्मरूप मेलरहित विमलनाथ प्रभुना चरण के० चरणरूप कमलने थिरपद देख के० स्थिर स्थानक देखीने तेमा निवास ... अर्थात् आ जगतनी लक्ष्मी प्रभुना चरणकमलमा निवास करे छे सुख प्राप्ति ... ओने ... अन्यस्थलमा धारे छे, तेओ भूला छे, कारण के विमलनाथ प्रभुना चरणनी सेवा करवाथी निर्वाणपदादिक समस्त संपदाओ मले छे ॥ २ ॥

सुजमन तुऊपद पंकजेरे ॥ लीनो गुण मकरंद ॥
रंक गणे मंदरधरारे ॥ इंद चंद नागिंद ॥ विमल० ॥ दी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हे प्रजु! जेम कमलना मकरंद के० पराग उपर जमराउं लीन थई कमलमां तदाकार थाय तेम मारो मनरूप जमर, अनंत ज्ञानादि गुणयुक्त तमारा चरणकमलमां लीनो के० तदाकार थई रहेल छे अने ते हर्षथी एवो उन्मत्त थयो छे के मंदरधरा के०मेरु पर्वतनी सुवर्णमय जूमि वा नंदनवननी अत्यंत रमणीक पृथ्वीने रंक समान गणे छे, अर्थात् तमारा चरणकमलनी सेवारूप निवासनी आगल ते वस्तुउं शा गणतीमां छे? एम मारो मनरूप भ्रमर जाणे छे, एटलुंज नही पण देवोना स्वामी इंद्र, ताराग्रहनास्वामि चंद्र अने नागेंद्रने पण रांक तुल्य गणे छे; एवुं मारुं मन दृढ थयुं छे ॥ ३ ॥

साहेब समरथ तुं धणीरे ॥ पाम्यो परम उदार ॥
मन विसरामी वालहोरे ॥ आतमचो आधार ॥ विमल० ॥ दी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अहो समर्थ साहेब के० प्रजु, तमारा जेवो धणी के० नाथ मने प्राप्त थयो तेथी मारा सर्वकर्मरूप शत्रुउं, हवे मने पराजव करी शकशे नही. वली हे प्रजु! तमो संतुष्ट थये पोतानुं परमपद आपो छो तेथी परम उदार एवा तमे मने प्राप्त थया. वली मारा मनने संसारिक आहट दोहट रूप चिंतानो अतिशय जार होवाथी शांति नहोती तेथी हे प्रजु! तमो मलवाथी मनने स्थिरतारूप शांति थइ तेथी तमो मनना विसरामी छो. हे प्रजु! तमो मने पूर्ण वहाला छो एटलुंज नही पण मारा आतमाने स्वरूपप्राप्तिमाटे परम आधार छो ॥ ४ ॥

दरिशन दीठे जिन तणोरे ॥ संशय न रहे वेध ॥
दिनकर करजर पसरंतारे ॥ अंधकार प्रतिषेध ॥ वि० ॥ दी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हे सुमति! विमलनाथ प्रजुने में नेत्रथी निरख्या, ते प्रजुना दर्शननो जाव एवो छे के, जाव विशुद्धताए ते प्रजुनुं दर्शन थतांज, जेनी मति एकाग्रताए ते दर्शनमां स्थिरता पामी तेने स्वस्वरूपने माटे मनमां संशय के० भ्रांति रहे नही, एटलुंज नही पण प्रजुनुं अने मारुं स्वरूप एक छे अने तेमां वेध के० विरोध नथी एवी मननी निर्दोष स्थिति थइ जाय दृष्टांत के दिन कर के० सूर्यना कर के० किरणोनो जर के० समूह जगतमां प्रसरतांज अंधकारनो प्रतिषेध के० निषेध थई जाय तेज प्रमाणे प्रजुनुं दर्शन थतांज संशय तथा वेध मात्र रहे नही. ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीविमलजिन स्तवन ॥

॥ राग मल्हार ॥ ईडर आंबा आंबलीरे ॥ ए देशी ॥

डुख दोहग दूरें टल्यारे ॥ सुख संपदशुं जेट॥धींग धणी माथे कियारे॥ कोण गंजे नरखेट ॥ विमलजिन ॥ दीठा लोयण आज ॥ मारासिध्ध्या वंछितकाज ॥ विमलजिन ॥ दीठा० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे सुमति ! विमलनाथ परमात्माना दर्शनथी चारे गतिना ज अनादि कालनु अज्ञान संबंधी डुर्जाग्य दूर टल्या के० नाश पाम्यु वली प्रजुने निरखवाथी हर्षे निर्जर गात्रो थवाथी आत्माने उल्लास प्रगट थवारूप सुख थयु ते शमदम क्षम विचक्षण रुची, प्रजु स्वरूपानुयायी अनुजव संबंधी प्रीत तेथी थती निजस्वरूप संपदा जे रत्नत्रय तेनो जेट के० मेलाप थयो हे सुमति ! दर्शन मात्रथी डुःख दौर्जाग्य दूर थया अने सुखसंपत्तिनी प्राप्ति थई, तो एवा के० समर्थने माथे धणी कर्या उता, अर्थात् बलवान धणीना सेवकने, खेटनर खानारा अने मारनारा एटले के रातदिवस नुकशान करवाना इलाजमाज नारा एवा मोह कषायादि जे नर, ते पराजव करवाने समर्थ नथी एवा वि. प्रजुने मारा आजे नेत्रोथी दीठा मारो आजनो दिवस कृतार्थ थयो अने दर्शनथी मारा मनोवांछित कार्य सिद्ध थया ॥ १ ॥

चरणकमल कमला वसेरे ॥ निरमल थिरपद देख ॥
समल अथिरपद परहरीरे ॥ पंकज पामर पेख ॥ वि० ॥ दी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ आ गाथानो अर्थ अन्वयथी करीए ढीए कमला के० लक्ष्मीए निवासनु स्थान, कमल कादवमा उत्पन्न थएलु होवाथी समल के० मल स एम जाणी तथा ते कमलनी पांखमीउं खरी जती होवाथी अन्य कमलमा नि करवानी जरुर पडे एम कमल स्थानकने अस्थिर पण जाणी,वली तेज कमलने पेख के० रांकसमान पण जाणीने ते कमलरूप स्थानने परिहरि के० तजी अने हे सुमति ! तेणीए निरमल के० कर्मरूप मेलरहित विमलनाथ प्रजुना चरण मल के० पगरूप कमलने थिरपद देख के० स्थिर स्थानक देखीने तेमा नि अर्थात् त्रण जगतनी लक्ष्मी प्रजुना चरणकमलमा निवास करे छे मुग्ध प्राणी लक्ष्मीनो वास अन्यस्थलमा धारे छे, तेउं जूठा छे, कारण के विमलनाथ प्रजुना चरणकमलनी सेवा करवाथी निर्वाणपदादिक समस्त संपदाउं मले छे ॥ २ ॥

मुजमन तुऊपद पंकजेरे ॥ लीनो गुण मकरंद ॥
रंक गणे मंदरधरारे ॥ इंद चंद नागिंद ॥ विमल० ॥ दी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हे प्रभु! जेम कमलना मकरंद के० पराग उपर भ्रमराउ लीन थई कमलमां तदाकार थाय तेम मारो मनरूप भ्रमर, अनंत ज्ञानादि गुणयुक्त तमारा चरणकमलमां लीनो के० तदाकार थई रहेल ठे अने ते हर्षथी एवो उन्मत्त थयो ठे के मंदरधरा के०मेरु पर्वतनी सुवर्णमय भूमि वा नंदनवननी अत्यंत रमणीक पृथ्वीने रंक समान गणे ठे, अर्थात् तमारा चरणकमलनी सेवारूप निवासनी आगल ते वस्तुउ शा गणतीमां ठे? एम मारो मनरूप भ्रमर जाणे ठे, एटलुंज नहीं पण देवोना स्वामी इंद्र, ताराग्रहनास्वामि चंद्र अने नागेंद्रने पण रांक तुल्य गणे ठे; एवुं मारुं मन दृढ थयुं ठे ॥ ३ ॥

साहेब समरथ तुं धणीरे ॥ पाम्यो परम उदार ॥
मन विसरामी वालहोरे ॥ आतमचो आधार ॥ विमल० ॥ दी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अहो समर्थ साहेब के० प्रभु, तमारा जेवो धणी के० नाथ मने प्राप्त थयो तेथी मारा सर्वकर्मरूप शत्रुउ, हवे मने पराजव करी शकशे नही. वली हे प्रभु! तमो संतुष्ट थये पोतानुं परमपद आपो ठो तेथी परम उदार एवा तमे मने प्राप्त थया. वली मारा मनने संसारिक आहट दोहट रूप चिंतानो अतिशय जार होवाथी शांति नहोती तेथी हे प्रभु! तमो मलवाथी मनने स्थिरतारूप शांति थइ तेथी तमो मनना विसरामी ठो. हे प्रभु! तमो मने पूर्ण वहाला ठो एटलुंज नही पण मारा आत्माने स्वरूपप्राप्तिमाटे परम आधार ठो ॥ ४ ॥

दरिशन दीठे जिन तणोरे ॥ संशय न रहे वेध ॥
दिनकर करजर पसरंतारे ॥ अंधकार प्रतिषेध ॥ वि० ॥ दी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हे सुमति! विमलनाथ प्रभुने मे नेत्रथी निरख्या, ते प्रभुना दर्शननो प्रभाव एवो ठे के, जाव विशुद्धताए ते प्रभुनुं दर्शन थतांज, जेनी मति एकाग्रताए ते दर्शनमां स्थिरता पामी तेने स्वस्वरूपने माटे मनमां संशय के० भ्रांति रहे नही, एटलुंज नही पण प्रभुनुं अने मारुं स्वरूप एक ठे अने तेमां वेध के० विरोध नथी एवी मननी निर्दोष स्थिति थइ जाय. दृष्टांत के दिन कर के० सूर्यना कर के० किरणोनो जर के० समूह जगतमां प्रसरतांज अंधकारनो प्रतिषेध के० निषेध थई जाय तेज प्रमाणे प्रभुनुं दर्शन थतांज संशय तथा वेध मात्र रहे नही. ॥ ५ ॥

अमीय भरी मूरति रचीरे॥ उपमा न घटे कोय ॥
शांत सुधारस झीलतीरे ॥ निरखत तृपति न होय ॥ वि० ॥ दी० ॥

अर्थ ॥ परमात्मानी मूर्तिना स्वरूपनु अधिक वर्णन एक मुखे केटलु करी? तोपण अल्पमा घडु कहीश जगतमा अमृतसमान प्रशंसापात्र कोइ वस्तु तेथी नि केवल अमृतमयज जेम कोईए रची होय तेम तमारी मूर्ति स्वजातिए रचायेली छे. जगतमां एवो कोई पदार्थ नथी के जेनी उपमा तमारी मूर्तिने शकाय, तेमज तमारी मूर्तिमां उपमा संबंधी अतिव्याप्ति, अव्याप्ति के असंभव दोष पण नथी वली प्रत्यक्ष के अनुमान प्रमाण पण उपमा संबधमा वीना... दोरतु नथी, अही जे मूर्तिने अमीयभरी कही ते तो मात्र वचन ... उपमा कही छे, परतु प्रभुनी मूर्ति तो राग रूपना अभावथी परम शांतरूप रसमाज झीली रही छे, जाणे मूर्तिमान शांतरस झवतो होय, तेवी मूर्ति छे अमृतोपमा पण घटती नथी, कारण के अमृतथी तो मात्र अंगोपांग अजर... अने प्रभु मूर्तिना शांतरसथी आत्मा जन्ममरणरहित थाय छे तेथी प्रभुनी निरखता निरखतां मारी चक्षुने, दर्शननी इच्छाने अने हृदयनेत्रने तृप्ति थती

एक अरज सेवक तणीरे ॥ अवधारो जिनदेव ॥
कृपा करी मुज दीजीयेरे ॥ आनंदघनपद सेव ॥ वि० ॥ दी० ॥ ८

अर्थ ॥ हवे सुमतिवंत आनंदघन विमलप्रभुने आधीन थइ विनति करे जिनदेव! सामान्य केवलीना स्वामि, हु लाभानंद नामनो तमारो अनुचर, सेवक एक अरज अवधारो के० मानो मारा उपर संपूर्ण कृपा करी मने आपवानी रता हो तो, बीजु तो शु परतु पांच अनुत्तरवासी देवोना सुखनी पण हु राखतो नथी परतु निजस्वरूपथी उत्पन्न थयो जे आनंद, तेनो जे समूह पदने प्राप्त करावनारी एवी तमारा चरणकमलनी सेवा आपो ॥ ८ ॥ इति

॥ अथ श्रीअनंतजिन स्तवन ॥

॥ राग रामगिरि ॥ कडखानि देशी ॥

धार तरवारनी सोहेली दोहेली ॥ चउदमा जिनतणी चरणसेवा ॥
धारपर नाचता देख बाजीगरा ॥ सेवना धारपर रहे न देवा ॥ धा०

अर्थ ॥ आनंदघन आ पचम कालमा जेनदर्शनीओनी जेनदर्शनथी निर... चरणा देखी दुःखी थवाथी तेमज अनंतप्रभु सेवित चारित्रनी पण दुप...

करता देखी महादुःखी थवाथी सुमतिने कहे छे. हे सुमति! तरवारनी तीक्ष्ण
र उपर उघाडे पगे चालवुं ते दोहेलुं छे, पण विचार करतां सेहेलुं छे, परंतु चउ-
ना श्रीअनंतनाथ प्रभुना चरण के० चारित्रनुं सेवन ते दोहेलुं छे. अर्थात् तरवा-
ी धार करतां चारित्रनी धार तीखी छे. जुओ के चोगठामां चारे बाजुए तरवारने
धी ते तरवारोनी धारोनी वचमां गुलांटा खातां खातां निकली जनारा एवा बाजी-
ोने नाचता दीठा छे, परंतु चारित्रनी आसेवनारूप धारा उपर महाशक्तिवंत
ा देवो पण रही शकता नथी, देवताओने व्रतना उदयनोज असंभव तो चारित्र
र्त्तन तो क्यांथीज होय. तेथी तरवारनी धारा सुगम अने चारित्र प्रवर्त्तनरूप
रा विषम छे. ॥ १ ॥

एक कहे सेवियें विविध किरिया करी॥ फल अनेकांत लोचन न देखे॥
फल अनेकांत किरिया करी बापडा ॥ रडवडे चारगतिमांहि लेखे॥ धा०॥२॥

अर्थ ॥ कोइ गणभेदी, समुदायना नायक कहे छे के विविध प्रकारे तपस्या प्रमुख
िरिया के० आचरणा आचरीने परमेश्वरना चारित्रनी सेवना करीए, कारण के चारि
नुं मूल क्रिया छे जेम ढुंढकादि करे छे तेम. ते प्रमाणेबोलनारा प्रवचन रहस्यना अजा-
छे. कारण के नथी जेमां एकांत फल ते अनेकांत फल एवी अनेक क्रियाओनां अनेक
ल छे. जेम क्रिया भिन्न भिन्न तेम तेनां फल पण भिन्न भिन्न उदय पण भिन्न भिन्न
ोगपण भिन्न भिन्न. जेम शालिभद्रना भवमां देवसुख ते संगमाना भवमां दान
वानुं फल तेम. आ सर्वं शुं लोचने नथी जोतां? आ प्रमाणे अनेकांत छे फल जेनां
वी अनेक क्रिया करीने परमार्थशुन्य ते निरर्थक छतां आंधीना रेंटनी जेम चारे
तिमां रडवडे के० परिभ्रमण करे ते लेखे के० न्याये अनेकांत फलवाली गतिनी
मृद्धि थवाथी भवभ्रमण टले नहीं. तेथी आत्मानी सिद्धि पण केम थाय? ए प्र-
ाणे एकांत क्रियाज करवी ते तो आश्रव छे. ॥ २ ॥

गछना भेद बहु नयण निहालतां ॥ तत्त्वनी वात करतां न लाजे ॥
उदर भरणादि निज काज करता थकां॥मोह नडिया कलिकाल राजे ॥धार३॥

अर्थ ॥ गच्छ के० समुदायविशेष, जेम के खरतर, तपा, लोंका प्रमुख गछो; तेम-
ा मतोना भेद ग्रहण करतां, प्रतिभेद पण ग्रहण थाय. तेवा मत मतांतरना बहु
के० घणांभेद प्रतिभेद नयण निहालतां के० तात्त्विक दृष्टियें, हृदयरूप नेत्रें, विचारी
ोतां एम लागेछे के शुं ते निर्लज्जोने आत्मतत्त्वनी वातो करतां शरम नहीं आ-
ती होय? कारणके ममत्व अने तत्त्वनी वातने परस्पर विरोध छे. जेम वृद्धना को-

टरमां अग्नि होय तो वृक्ष नवपल्लव न थाय, तेम आत्मामा ममत्व होय तो
तत्त्वरूप वृक्ष नवपल्लव न थाय तेथी शुद्ध तत्त्वज्ञानी मत ममत्वीने तत्त्वनी
रता देखीने हसे छे. गच्छ भेदीउने जे जे धर्म करणी करवा प्रमुख थाय छे
भरवा निमित्तेज थाय छे तेमज आदि शब्दथी क्रोध, मान, माया, लोभ, राग
उन्नति प्रमुखने अर्थेज थाय छे उत्तम पुरुष तो खारमा कोठक हशे वाली
तो वेशना धारण करनारा जाणवा आ दुषम कलिकालमा मोहनु प्रब
तेथी ससारीउं करता पण गच्छधारीउं उपर तेनु विशेष शासन चाले छे
के, ससारी जीवोमाथी कोइए मोहने गलेथी, कोइए छातीएथी अने कोइए
पकडेल छे अने गच्छधारीएतो मोहने सर्वांगे मस्तक सुधी पकडेल छे ॥ ३ ॥

वचन निरपेक्ष व्यवहार जूठो कह्यो ॥ वचन सापेक्ष व्यवहार सा
वचन निरपेक्ष व्यवहार संसार फल ॥ सांभली आदरी काइ राचो ॥ धार

अर्थ ॥ जे मतवादी होय ते अपेक्षा सहित बोलनारो थायज नहीं तेतो
वादि, निरपेक्षी अर्थात् अपेक्षारहित बोलनारा थाय तेवा अपेक्षा रहित
अत्यत कठिन चारित्रमा प्रवर्त्तन होय तोपण ते व्यवहार जूठो के० आज्ञा
रुद्ध जाणवो तेथी हे भव्यो, बाधायुक्त ते सापेक्ष कहेवाय जेम निश्चय सब्धी
व्यवहारनी बाधा राखे छे तेम, ज्ञान क्रियासहित उत्सर्ग अपवादयुक्त, सापे
चने जे व्यवहार के० चारित्रनु प्रवर्त्तन ते सिद्धान्त अनुयायी व्यवहार छे ते
आज्ञाथी अविरुद्ध तेथी साचु छे तेथी बाधा विनानु अर्थात् अपेक्षा वगरनु
ते निरपेक्ष वचन कहेवाय तेवा वचनवाला एकातवादीउनु चारित्र, ससार
पनारु छे तेथी तेवा एकातवादीउना वचनस्वरूप अभिलापीउने सांभळवा
नथी कदाच सांभळवामा आवी जाय तो आदरवा नही अने कदाच
आवी जाय तो तेमा राचवु नहीं निरपेक्ष वचन जैनमतथी विरुद्धज छे तेवे
वचनो साभली राग करवो नहीं यथा ॥ भापे निरपेक्षक वचन ॥ क्रिया
क्रूर ॥ वाको तप सयम सरव ॥ कर्यो करायो धूर ॥ १ ॥ तेथी एकात क्रिय
एकात पूजापक्षी, एकात भक्तिपक्षी, एकात गुरुपक्षी, इत्यादि वचनना कथन
नाराउं चारगतिमा भटकनारा छे ॥ ४ ॥

देवगुरु धर्मनी शुद्धि कहो केम रहे ॥ केम रहे शुद्ध श्रद्धा न आणो ॥
शुद्ध श्रद्धानविण सर्व क्रिरिया करी ॥ छारपर लींपणो तेह जाणो ॥ धार०

अर्थ ॥ अहो जव्यो ! ते एकांतवादिउंना वचनथी शुद्धदेव, शुद्धगुरु अने शुद्ध
र्मनी परिक्षा केम थइ शके? अर्थात् नज थइ शके; अने शुद्ध देव गुरु धर्मनी
रेक्षाने अजावे शुद्ध देव गुरु उपर श्रद्धा के० प्रतीत ते पण केम रहे. कारण के
ची वस्तुनी उंलखाण विना साची प्रतीत पण न थाय, ए वात आणो के० अंत-
रो; अने शुद्ध श्रद्धा-प्रतीतविना सर्व क्रियानुं प्रवर्त्तन, ते गर के० राख अथवा
तरनी पृथ्वी उपर गण प्रमुखनुं लींपण करवा तुल्य निरर्थक ले ॥ ५ ॥

पाप नहीं कोई उत्सूत्र जापण जिस्यो ॥ धर्म नहीं कोई जगसूत्र सरिखो ॥
सूत्र अनुसार जे जविक किरियाकरे ॥तेहनो शुद्ध चारित्र परखो॥धार०॥६॥

अर्थ ॥ माटे निरपेक्ष उत्सूत्र जापण ले, तेथी सूत्रथी विरुद्ध जापण समान बीजुं
र नथी. सिद्धांतमां उत्सूत्र जापीने महापापी कहेलो ले; अने सूत्रमां जे प्रमाणे
जन होय तेज प्रमाणे जापण करवुं, ते समान तप संयमादिमां पण धर्म नथी. तेथी
त्रने अनुसारे जे जव्यजीव, तप संयमादि क्रिया करे ते चारित्रवंतनुं शुद्ध चारित्र परखो
जाणजो, अर्थात् जेवुं चउदमा तीर्थंकरनुं चारित्र तेवुंज तेनुं चारित्र जाणजो ॥ ६ ॥

एह उपदेशनो सार संक्षेपथी ॥ जे नरा चित्तमें नित्य ध्यावे ॥
ते नरा दीव्य बहुकाल सुख अनुजवी ॥ नियत आनंदघनराज पावे ॥धा० ॥७॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त उपदेशनो सार अर्थात् सूत्र अनुयायी चारित्रनुं प्रवर्त्तन ते संक्षे-
पथी कह्युं. तेने जे जव्यप्राणी निरंतर पोताना चित्तमां धारी राखे. सार ए ले के व-
र्त्तमानना गच्छधारीउं शुद्ध धर्मतत्वनुं स्वरूप पुछतां, हठग्राहीपणुं शिखवे ले, तेथी
तेवा मतवादीउंनो उपदेश अंगीकार न करवो; अने जे जव्य प्राणीउं सूत्र अनुसारे
वर्त्तनारा ले ते दीव्य के० निरूपम देवता संबंधी वा मनोहर मनुष्य संबंधी घणां
पल्योपम अने सागरोपम काल सुधी सातावेदनीना विपाकोदयने अनुजवी के०
जोगवीने नियत के० निश्चयपणे, संदेह रहितपणे परमानंद, अतिंद्रिय आनंद स-
महने पामे अर्थात् मोक्षस्थान पामे ॥ ७ ॥ इति अनंतजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीधर्मजिन स्तवन ॥

॥ राग गोडी सारंग ॥ रसीयानी देशी ॥

धरम जिनेसर गाउं रंगशुं ॥ जंग म पडशो हो प्रीति ॥ जिनेसर ॥
बीजो मनमंदिर आणुं नहीं ॥ ए अम कुलवट रीत ॥ जिनेसर ॥धर्म०॥१॥

अर्थ ॥ आनंदघन शुद्ध चेतनावंत थइ, जावोल्लासें हर्षोत्कर्षवंत थइ, परंतु प्री-

तिना जगनो जय लागवाथी, दीनवचने धर्मनाथ प्रजुनी स्तवना करे ठे हे प्रजु निजस्वरूप प्राप्तिरूप रग के० रागथी वचनद्वाराए स्तवुं ठु, परतु ह
वतो नथी हे शुद्ध चेतना ! ते स्तवनारूप कार्यारच अविछिन्न धाराए पार
तेमा काइपण विघ्न पमशो नहीं धर्मनाथ प्रजुविना बीजा राग द्वेषयुक देवोने
नरूप मदिर के० मेहेलमां लावु नहीं अर्थात् रागादि दोषयुक्त देवोनु ध्यान
करु नहीं, कारण के आत्मधर्मे धर्मित एवा आत्मामात्रना कुलनी वट के०
एज ठे, एज धर्म ठे एज लक्षण के वीतराग विना बीजाने ध्यावे नहि ॥ १ ॥

धरम धरम करतो जग सहु फरे ॥ धरम न जाणेहो मर्म ॥ जि० ॥
जिनेसर चरण ग्रह्या पठी ॥ कोइ न बाधेहो कर्म ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हे शुद्धचेतना ! जगतना प्राणीमात्र धर्म धर्म करता फरे ठे, कोइ
धर्म, कोइ विष्णुधर्म, कोइ सन्यस्तधर्म, कोइ गृहस्थाश्रमधर्म, कोइ तपधर्म, कोइ
एम प्राणीमात्र निरर्थक ज्रमण करी रह्या ठे परतु तेत्रा सर्व प्राणीउ धर्मना
मर्म के० रहस्य ते बिलकुल जाणता नथी अर्थात् आत्मस्वजावरूप धर्म जे
जाव परिणतिनो त्याग करी स्वजाव परिणतिमां रमणता करवी तद्रुप धर्मनु
रहस्य जाण्या विना तेउ धर्म धर्म पोकारे ठे परतु हे शुद्ध चेतना ! धर्मनु
तो धर्म परमेश्वरना चरणकमलमा व्यापेलु ठे, तेथी जे प्राणी बाह्
त्याग करी अतरात्मनत थइ धरम परमेश्वरना चरणकमलमां आत्मस्वरूप
मनने स्थापे ते प्राणी आश्रवद्वारने बध करवाथी कोइपण कर्मनो बध न

प्रवचन अजन जो सद्गुरु करे ॥ देखे परमनिधान ॥ जि० ॥ हृदय
नयण निहाळे जगधणी ॥ महिमा मेरु समान ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे धर्मनाथ प्रजुनु स्वरूप केवीरीते जाणी शकाय ते कहे ठे हे
शुद्ध उपदेशक गुरु जो कृपा करीने, हृदयरूप चक्षुने विषे सिद्धांतरूप अजन
अनादिकालनो मिथ्यात्वरूपी हृदयनेत्रनो रोग दूर थाय ते रोग दूर थवाथी
स्वरूपरूप परमनिधान के० अनाशवंत धन जे अनादिथी गुप्त हतु ते प्रत्यक्ष
पठी ते हृदयरूप नेत्रथी त्रण जगतना स्वामिने ते प्राणी निहाळे के० देखे
स्वजावे पोताना स्वरूपने प्रगट जाणे जे प्राणी पोताना स्वरूपने देखतो थ
हृदयचक्षुथी परमेश्वरना स्वरूपने देखवा शके, अने ते प्राणीनो महिमा
मेरुपर्वतसमान सर्वोत्कृष्ट थाय, अर्थात् निरूपम थाय ॥ ३ ॥

दोस्त दोस्त दोस्त दोसीउं ॥ जेती मननीरे दोस ॥ जि० ॥ प्रेम
प्रतीत विचारो ढूकडी ॥ गुरुगम लेजोरे जोस ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे शुद्ध चेतना आनंदघनने कहेछे के प्रवचन कारण विना परमनिधान
वानो बीजा मत ममत्वीउंए कहेलो सिद्धांत शुं कारण नथी? त्यारे आनंदघन
छे के हुं तो आत्मस्वरूप उंलखवा माटे दोसी दोसीने थाक्यो. मत मात्रने ढुंढि
या. मात्र बाह्य दृष्टिए नही, परंतु तेउंना संकल्पित वेदांत न्यायादिक सिद्धां-
तां उतरवा सारु जेटली मारा मननी दोरु हती अर्थात् विचार बल हतुं तेटले सुधी
क्यो, परंतु स्वरूप प्राप्ति न थइ; अने विचार करतां प्रेम के० स्वरूप अभिलापनो
श्रय तेनाथी धर्म जिनेश्वरनी प्रीत ढुंकडी के० अत्यंत नजीक छे, दूर नथी अर्थात्
त्मामां ज छे; अने नजीक छतां पामता नथी, ते पामवानो उपाय गुरुगम के० गुरु-
बतावेलो मार्ग अंगीकार करवो अर्थात् सूत्र मर्यादाथी गुरु जे मार्ग बतावे ते
ं निजस्वरूपनी धर्म जिनेश्वरनी प्रीत नजीक छे ॥ ४ ॥

एक पखी केम प्रीति वरें पडे ॥ उभय मिल्या हुए संधी ॥ जि० ॥
हुं रागी हुं मोहें फंदिउ ॥ तुं निरागी निरबंध ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ धर्म जिनेश्वरनी साथे प्रीति केम थइ शके? हुं प्रीतिनो अभिलाषी,
प्रीतिना अभिलाषी नथी. कदाच एक पक्षी प्रीत थाय तो पण ते वरे पडे नही
बने नही. विरुद्ध स्वभावनी प्रीत टके नही. प्रभु शुद्ध आत्मस्वरूपी, हुं तेवा स्व-
थी रहित, तेवा वच्चे प्रीति केम बने? प्रीतिनो तो उभय के० बंने समान धर्म-
ा होय तो संधि के० मेलाप थाय. माटे हे जिनेश्वर! हुं तमारी साथे मेलाप क-
इछुं छुं, परंतु मारा परिणाम संबंधमां अंतःकरणथी विचार करतां संधी माटे
अमृत जेटलो तफावत छे. हुं रागी छुं, तमे वीतराग छो. हुं मोह फंदमां फसायेलो
अने तमे तो मोहना बंधनथी रहित छो. तेथी मारो अने तमारो प्रकृतिए मे-
पज नथी, तो प्रीति केम थाय? यथा ॥ प्रकृति मिले तें मन मिले, अनमिलते
मिलात ॥ दूध दहीं तें जमत हे, कांजी तें फट जात ॥ १ ॥ तेथी अगर जो हुं अने
सत्ताए तो एक छइए, परंतु दहींनी खटाश अने कांजीनी खटाश प्रकृतिमां भिन्न
छे, दहींथी डुध जमे, कांजीथी डुध फाटी जाय, तेम मारी सराग प्रकृति, त-
री निराग प्रकृति तेथी प्रीतिरूप डुध जमे नहीं. हुं तो प्रीतिने जमावुं, परंतु तमे
तराग होवाथी प्रीति जमावो नहीं. ॥ ५ ॥

प्रदायवाला छे शुचि के० पवित्र आत्मस्वरूपना ज्ञानना अजिलाषी होवाथी, जव स्वरूपमा प्रवर्त्तवाथी अनुजवना आधार छे,तेवा गुरुथी शात रसनुं स...

शुद्ध आलंबन आदरे ॥ तजी अवर जंजालरे ॥ तामसी
वृत्ति सवि परिहरी ॥ जजे सात्विकी सालरे ॥ शांति० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली ते गुरु केवा होय ? आत्मस्वरूपना अनुजवथी प्रगट थयेल ज्ञानथी सिद्ध स्वरूपनु अवलंबन करनारा छे, अर्थात् स्वस्वरूपमा विद्यमान ... आदिनु ध्यान करनारा छे बीजा आर्त्तरौद्र ध्यान अने मोह तथा रागादि ...रक जंजालोने दूर करी, शुद्ध आलंबनने आदरी रह्या छे वली तामसी ... धादि दुर्गुणो जेथी उत्पन्न थाय तेवा आहार प्रमुख लावी आजीविका करवानुं ...मणे त्याग कर्यो छे, वा हठग्राहीपणे प्राणायामादिकनो त्याग करी शालके० ... सात्विक वृत्ति अंगीकार करी ज्ञानादि गुणथी उपजेली शत्रु मित्रउपर ... धारण करनारा छे ॥ ५ ॥

फल विसंवाद जेमां नहीं ॥ शब्द ते अर्थ संबंधीरे ॥ सकल
नयवाद व्यापी रह्यो ॥ ते शिव साधन संधीरे ॥ शांति० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एवा गुरु उत्सूत्रना जाषण करनारा, अर्थात् विसंवाद के० विरुद्ध होय नही तेवा वचनना बोलनारा होय, जे वचननु फल पण विरुद्ध न होय ... अर्थ पण संबंध युक्त कहेनारा होय जेमना वचनमा नैगमादि साते नयनु ... कथन होय एवा शांतरसना जरेला गुरु ते शिव साधनना हेतु के० मेलाप ...

विधि प्रतिषेध करी आतमा ॥ पदारथ अविरोधरे ॥ ग्रहण
विधि महाजने परिग्रह्यो ॥ इस्यो आगमे बोधरे ॥ शांति० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एवा गुरुना मेलापथी स्वरूप अजिलाषी प्राणी स्वकार्य साधे ते वि... हेछे जेथी आत्मस्वरूप सुखे ग्रहण थाय ते आचरवा योग्य आचरण ते वि... हेवाय, अने जे आत्म स्वरूपने ग्रहण करवामा विघ्न करे एवा जडादि स्वरूप ग्रहण करवा ते प्रतिषेध कहेवाय एवा विधि प्रतिषेधथी आत्मा मुक्तिरूप ... अर्थ कार्यनो अविरोधपणे करनारो थाय एवा ग्रहण करवा योग्य विधिने ... के० महा मुनिराजोए समस्तपणे ग्रहण करेलो छे एम सिद्धांतमा कथन कर... वा सिद्धांतनो एवो बोध छे एम तमे अवधारजो ॥ ७ ॥

दुष्टजनसंगति परिहरी ॥ जजे सुगुरु संतानरे ॥ जोग सामर्थ्य
चित्त जावजे ॥ धरे मुगति निदानरे ॥ शांति० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वली शांतरसना अजिलाषी पुरुष दुष्ट के० क्षुद्र अंत करणवाला, मत मत्वधारी, हठग्राही मनुष्य जेमना वचनथी श्रद्धा ज्रष्ट थाय तेनी संगतनो त्याग करे अने ज्ञानादि उत्तम गुणना धारण करनारा सद्गुरु अने तेमना शिष्य परंपरानुं जजे के० सेवन करे. पठी जोगसामर्थ्य के० मनादि त्रणे योग, स्ववशीजूत ठतां, चित्तने विषे जाव के० आत्मजावने अठेदी, अजेदीपणे जे प्राणी धारण करी राखे ते निदान के० निश्चयपणे मुक्ति प्राप्त करे, कारण के चित्तवृत्तिनो निरोध तेज कर्मक्षयनुं मूल कारण ठे ॥ ८ ॥

मन अपमान चित्त समगणे ॥ समगणे कनक पाषाण रे ॥
वंदक निंदक समगणे ॥ इस्यो होय तुं जाण रे ॥ शांति० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ एवा आत्मस्वजावमां प्रवर्त्तेला पुरुषोनां चित्त केवां होय ते कहेठे. तेमनो कोइ सत्कार,सन्मान करे तेथी ते हर्षवंत न थाय अने कोइ अपमान करे तो खेदवंत न थाय एवी तेमनी चित्तवृत्ति समान होय. वली लोजदशानी मंदता यवाथी तेमनी पासे कोइ सुवर्ण मुके वा कोइ माटी के पठर मुके तोपण बंनेमांथी कोइने हिनाधिकपणे न माने. बंनेने तुल्यमाने. वली कोइ प्रशंसा करी तेमने वंदना करे तो तेना उपर प्रसन्न न थाय वा कोइ तेमनी निंदा करे तो तेना उपर नाराज न थाय. हे जव्य ! ते पुरुष एवा होय एम तुं जाण के० अवधार ॥ ९ ॥

सर्व जगजंतुने समगणे ॥ गणे तृणमणि जावरे ॥ मुक्ति
संसार बेहु समगणे ॥ मुणे जवजलनिधि नावरे ॥ शांति० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वली त्रस थावर समस्त जगतना जंतु के० जीवो जेमके राजा रांक, शत्रु मित्र, स्वजन परजन, इत्यादि सर्वने तुल्य माने, तेमज तृण अने मणि के० चंद्रकांत्यादि मणि प्रमुखने पण तुल्य गणे, कोइने हिनाधिक न गणे वली मुक्ति तथा चार गतिरूप संसारने पण समतुल्य माने आ कथन अप्रमत्तादि सातमा गुणगाणे वर्त्तकने माटे ठे. त्यां मन स्वस्थ वृत्तियें ठे. तेने हिनाधिक कांइ नथी. संसारथी उदासीन वृत्ति गइ अने मोक्ष पामवानी हर्ष वृत्ति पण गइ. मारा पदने हुं पाम्यो तेमां शो हर्ष. ते जव्य संसारसमुद्रमां शांतरसने नाव समान मुणे के० जाणे अथवा जवजलनिधिनो शांतरसरूप नावाए करी मुणे के० पार पामे ॥ १० ॥

प्रदायवाला छे शुचि के० पवित्र आत्मस्वरूपना ज्ञानना अभिलाषी होवा॰
भव स्वरूपमा प्रवर्त्तवाथी अनुभवना आधार छे,तेवा गुरुथी शांत रसनु स्वरूप॰॰

शुद्ध आलंबन आदरे ॥ तजी अवर जंजालरे ॥ तामसी
वृत्ति सवि परिहरी ॥ भजे सात्विकी सालरे ॥ शांति० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली ते गुरु केवा होय ? आत्मस्वरूपना अनुभवथी प्रगट थयेल॰
ज्ञानथी सिद्ध स्वरूपनु अवलंबन करनारा छे, अर्थात् स्वस्वरूपमा विद्यमान ज्ञा॰
नादिनु ध्यान करनारा छे बीजा आर्त्तरौद्र ध्यान अने मोह तथा रागादि॰
रक जंजालोने दूर करी, शुद्ध आलंबनने आदरी रह्या छे वली तामसी के॰
धादि दुर्गुणो जेथी उत्पन्न थाय तेवा आहार प्रमुख खावी आजीविका ॰॰
मणे त्याग कर्यो छे, वा हठग्राहीपणे प्राणायामादिकनो त्याग करी शाख के॰
सात्विक वृत्ति अंगीकार करी ज्ञानादि गुणथी उपजेली शत्रु मित्रउपर समाना॰
धारण करनारा छे ॥ ५ ॥

फल विसवाद जेमा नहीं ॥ शब्द ते अर्थ संबंधीरे ॥ सकल
नयवाद व्यापी रह्यो ॥ ते शिव साधन संधीरे ॥ शांति० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एवा गुरु उत्सूत्रना भाषण करनारा, अर्थात् विसवाद के० विरुद्धता
होय नही तेवा वचनना बोलनारा होय, जे वचननु फल पण विरुद्ध न होय ॰
अर्थ पण संबंध युक्त कहेनारा होय जेमना वचनमा नैगमादि साते नयनु वा
कथन होय एवा शांतरसना भरेला गुरु ते शिव साधनना हेतु के० मेलाप करावना॰

विधि प्रतिषेध करी आतमा ॥ पदारथ अविरोधरे ॥ ग्रहण
विधि महाजने परिग्रह्यो ॥ इस्यो आगमे बोधरे ॥ शांति० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एवा गुरुना मेलापथी स्वरूप अभिलाषी प्राणी स्वकार्य साधे ते॰॰
देखे जेथी आत्मस्वरूप गुणे ग्रहण थाय ते आचरवा योग्य आचरण ते वि॰
हेवाय, अने जे आत्म स्वरूपने ग्रहण करवामा विघ्न करे एवा जडादि स्वरूप
ग्रहण करवा ते प्रतिषेध कहेवाय एवा विधि प्रतिषेधथी आत्मा मुक्तिरूप
अर्थ कार्यनो अविरोधपणे करनारो थाय एवा ग्रहण करवा योग्य विधिने ॰॰
के० महा मुनिराजोए सम्यक्‌पणे ग्रहण करेलो छे एम सिद्धांतमा कथन करे॰
वा सिद्धांतनो एवो बोध छे एम तमे अवधारजो ॥ ७ ॥

दुष्टजनसंगति परिहरी ॥ भजे सुगुरु संतानरे ॥ जोग सामर्थ्य
चित्त भावजे ॥ धरे मुगति निदानरे ॥ शांति० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वली शांतरसना अभिलाषी पुरुष दुष्ट के० क्षुद्र अंतःकरणवाला, मत
मत्सधारी, हठग्राही मनुष्य जेमना वचनथी श्रद्धा भ्रष्ट थाय तेनी संगतनो त्याग
रे अने ज्ञानादि उत्तम गुणना धारण करनारा सद्गुरु अने तेमना शिष्य परंपरानुं
जे के० सेवन करे. पछी जोगसामर्थ्य के० मनादि त्रणे योग, स्ववशीभूत छतां,
त्तने विषे भाव के० आत्मभावने अभेदी, अभेदीपणे जे प्राणी धारण करी राखे ते
दान के० निश्चयपणे मुक्ति प्राप्त करे, कारण के चित्तवृत्तिनो निरोध तेज कर्म-
यनुं मूल कारण छे ॥ ८ ॥

मन अपमान चित्त समगणे ॥ समगणे कनक पाषाण रे ॥
वंदक निंदक समगणे ॥ इस्यो होय तुं जाण रे ॥ शांति० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ एवा आत्मस्वभावमां प्रवर्त्तेला पुरुषोनां चित्त केवां होय ते कहेछे. तेमनो
इ सत्कार,सन्मान करे तेथी ते हर्षवंत न थाय अने कोइ अपमान करे तो खेदवंत
थाय एवी तेमनी चित्तवृत्ति समान होय. वली लोभदशानी मंदता थवाथी तेम-
पासे कोइ सुवर्ण मुके वा कोइ माटी के पथ्थर मुके तोपण बंनेमांथी कोइने हिना-
कपणे न माने. बंनेने तुल्यमाने. वली कोइ प्रशंसा करी तेमने वंदना करे तो ते-
ना उपर प्रसन्न न थाय वा कोइ तेमनी निंदा करे तो तेना उपर नाराज न थाय.
भव्य! ते पुरुष एवा होय एम तुं जाण के० अवधार ॥ ९ ॥

सर्व जगजंतुने समगणे ॥ गणे तृणमणि भावरे ॥ मुक्ति
संसार बेहु समगणे ॥ मुणे भवजलनिधि नावरे ॥ शांति० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वली त्रस थावर समस्त जगतना जंतु के० जीवो जेमके राजा रांक,
त्रु मित्र, स्वजन परजन. इत्यादि सर्वने तुल्य माने, तेमज तृण अने मणि के० चंद्र-
ांत्यादि मणि प्रमुखने पण तुल्य गणेः कोइने हिनाधिक न गणे. वली मुक्ति तथा
र गतिरूप संसारने पण समतुल्य माने आ कथन अप्रमत्तादि सातमा गुणठाणे
वर्त्तकने माटे छे. त्यां मन स्वस्थ वृत्तियें छे. तेने हिनाधिक कांइ नथी. संसारथी
दासीन वृत्ति गइ अने मोक्ष पामवानी हर्ष वृत्ति पण गइ. भाग्य पदने हुं पाम्यो
मां शो हर्ष. ते भव्य संसारसमुद्रमां शांतरसने नाव समान मुणे के० जाणे अ-
वा भवजलनिधिनो शांतरसरूप नावाए करी मुणे के० पार पामे ॥ १० ॥

आपणो आतम जावजे ॥ एक चेतना धाररे ॥ अवर सवि
साथ संयोगथी ॥ एह निज परिकर साररे ॥ शाति० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हे जव्य ! एवु जाण के मारो आत्मा ज्ञानदर्शन स्वजाववंत छे एक तीय स्वरूपमयी चेतनानो आधार के० आश्रय करी रह्यो छे चेतनाने आधारे आधेय छे ए चेतनाविना अवर के० बीजा सर्व पुजल सजग, शरीर पुण्य सयोगजन्य छे. ज्ञानादि गुण समवाय सबधे छे रागद्वेषादि इछादि सर्व धर्म छे. ते आत्मस्वजाव नथी क्षात्यादि धर्म तथा समित्यादिने पोतानो सार प्रधान परिवार जाण ॥ ११ ॥

प्रजु मुखथी एम सांजली ॥ कहे आतमरामरे ॥ ताहरे
दरिशणे निस्तर्यो ॥ मुज सिध्या सवि कामरे ॥ शाति० ॥१२॥

अर्थ ॥ अहो जव्यो ! पूर्वे जे कह्यु ते परमेश्वरे पोताना मुखथी जे ते सिद्धातमाथी में साजल्यु ते प्रजुनी वाणी साजलताज मारो आत्माराम उल्लास पाम्यो ते कहेछे के अहो परमेश्वर ! तमारा दर्शनथी अर्थात् जैन निस्तार पाम्यो अर्थात् शातरसना स्वरूपनो पार पाम्यो कारणे कार्योपचार शातरसना स्वरूप जाणवारूप कारणथी मारा स्वस्वरूपादि सर्व कार्यनी

अहो अहो हु मुजने कहुं ॥ नमो मुज नमो मुजरे ॥ अमित
फलदान दातारनी ॥ जेहनी जेट थइ तुजरे ॥ शाति० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ आनदघन कहेछे के अहो जव्यो ! में परमेश्वरने शातरसनो परमेश्वरे मने उत्तर आप्या, तेथी हु हर्षवंत थइ मारा आत्माने कहुहु मने नमस्कार करो, मारा आत्माने नमस्कार होजो कोइ प्रश्न करे के पोताना त्माने पोतेज नमस्कार करे एम केम घटे ? उत्तर के आत्माने अमित के० हित दानना आपनार श्रीशातिनाथ परमात्मानी जेट के० प्राप्ति थइ तेथी मुज नमोमुज एम कह्यु, परतु रहस्यार्थतो आनदघने श्रीशातिनाथ परमेश्वरने तरसनो प्रश्न करता उत्तर मल्याना हर्षथी ए वचन छे ॥ १३ ॥

शातिसरूप सक्षेपथी ॥ कह्यो निज पर रूपरे ॥ आगम
माहे विस्तर घणो ॥ कह्यो शातिजिन जूपरे ॥ शाति० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ आनदघन कहेछे के अहो जव्यो ! आ स्तवनमा शातरसनु स्वरूपथी के० पोताना स्वरूपने तथा बीजा जव्य जीवोना स्वरूपनी प्रातिनेमाटे

ाने२ रीते संक्षेपथी कह्युं. जो तमे ते रसना विशेष रुचिवंत होनो शांतिनाथ जि-
राजे स्थापित सिद्धांतनेविषे तेनुं विस्तारपणे स्वरूप कह्युंछे त्यांथी अवधारजो ॥१४॥

शांतिसरूप एम जावशे ॥ धरी शुद्ध प्रणिधानरे ॥ आनंद
घनपद पामशे ॥ ते लहेशे बहुमानरे ॥ शांति० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ माटे अहो नव्यो! पूर्वोक्तरीते. रागद्वेष विषय कषायादि रहितपणे अने
णिधान के० मननी एकाग्रताए जे प्राणी शांतरसना स्वरूपने जावशे के० विचारशे,
प्राणी आनंद के० परमानंदनो घन के० समूह ते रूप पद जे मुक्तिपद तेने प्राप्त करशे.
थांत ग्रण जगतना पूज्यपणारूप बहुमान पामशे ॥१५॥ इतिश्री शांतिनाथजिनस्तवन.

॥ अथ श्रीकुंथुजिन स्तवन ॥

॥ राग गुर्जरी ॥ रामकली ॥ अंबर देहो मुरारी हमारो ॥ ए देशी ॥

कुंथुजिन मनडुं किमही न बाजे ॥ कुंथु०॥ जेम जेम जतन
करीने राखुं ॥ तेम तेम अलगुं जाजेहो ॥ कुंथु० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे कुंथुनाथ परमेश्वर! मारा मनने महाकष्टे तमारीसाथे जोडवा चाहुंछुं,
तु जावस्तव संबंधी ध्यानादिकमां कोइपणरीते न बाजे के० जोडातुं नथी. अन्य
ानके जोडाय छे पण तमारी साथे जोडातुं नथी. हे परमेश्वर! जेम जेम मारा म-
ने, प्रयत्न करी कबजे राखवा इछुंछुं, प्राणायामादिके, रेचक पुरक कुंजक इत्यादिके
काग्र करवा ध्यानथी प्रयास करुंछुं तेम तेम हे प्रज्ञु! ए मन तमारी साथे नहीं जो-
तां अलगुं के० दूर थतुं जाय छे ॥ १ ॥

रजनी वासर वस्ति उजाड ॥ गयण पायालें जाय ॥ साप
खायने मुखडुं थोथुं ॥ एह उखाणो न्यायहो ॥ कुं० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ कोइ एम कहेके मननो एवो स्वजावज छे के कोइ स्थानके जाय नहीं
थी परमेश्वरपासे पण जतुं नथी. तेवु बोलनारने आनंदघन उत्तर आपेछे के, हे
ाइ! तेनो तो मने अनुजव छे. ए मन तो जेम रात्रे तेम दिवसे, जेम वस्तिमां तेम
जाडमां, जेम आकाशमां तेम पातालमां, एवी रीते गाम ठाम फरी रह्युं छे ए मननी
ति अप्रतिहत छे, भ्रमणशील छे, एवी चंचल छे के तेनी उपमा आपी शकाय एवो
ाइ जगतमां चंचल पदार्थ नथी वली कोइ कहे के जे फरे ते चरे पण खरो, तेथी
व्द रूप रस गंध स्पर्शनो स्वाद तेने मलतो हशे? उत्तर-ना. तेम पण नथी. दृष्टांत के
म कोइ पुरुषने सर्प खाधो, एवु कहेनारने कोइए पुछ्युं के सापना मुखमां कांइ

ग्रास आव्यो ? उत्तर आप्यो के, सापना मुखमा शु आवे ? तेनु मुखनो खालीज छे ए उखाणो के० दृष्टांत न्याय के० सत्य छे शब्दादिनो स्वाद चेइंद्रियने मल्यो अने मनना मुखमां कांइ आव्यु नहीं ॥ २ ॥

मुगतितणा अभिलाषी तपीया ॥ ज्ञान ने ध्यान अभ्यासें ॥
वयरीकु कांइ एहवु चिंते ॥ नाखे अलवे पासेंहो ॥ कुं० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ए मन महादुष्ट निर्दय छे, केमके मात्र मोक्षनाज अभिलाषी तप करनारा ते मनने साधवा माटे अर्थात् आत्मस्वरूप जाणवामाटे ज्ञान अने अभ्यास करी रह्या छे, तदाकार वृत्तियें स्वरूपचिंतवनमा लीन थइ रह्या छे, एवा मुनिओने पण ए महादुष्ट मन एवु करेछे के, अर्थात् तेना संबधमा एवो विचारे छे के, तेओ अलवे के० नि प्रयासे, विक्षेप विचाररूप उद्यम कर्याविना पास के० जालमा फसाइ पडे दृष्टांत के प्रश्नचन्द्र राजर्षिने सातमी नर्कना दली कवा कराबी दीधां अने अल्प समयमा केवलज्ञान पण उपजावी दीधु माटे ज्यां सुधी मन स्थिर न थाय त्यांसुधी कष्ट क्रिया नवभ्रमणरूप छे ॥ ३ ॥

आगम आगम धरने हाथे ॥ नावे किणविधि आंकु ॥ किहां
कणे जो हठ करी हटकुं ॥ तो व्यालतणी परे वांकु हो ॥ कुं० ॥

अर्थ ॥ कोइ कहे के ज्यांसुधी आगमनी प्रवृत्ति जाणी न होय त्यांसुधी ज साध्य छे उत्तर जे आगम जो मननी स्थिरतानु कारण होय तो नारा जेना हाथमाज आगम छे अने जेओ मन दमन करवा संबधी वांची रह्या छे, तेओनु मन पण स्थिरताथी हे प्रभु ! तमारा चरणकमलोमां पण विधि के० रीते चोटतु नथी सर्व प्रयास निष्फल जाय छे केमके ते मन के० वांकु छे सरल नथी, वक्र छे विना रोक्यु कदाच रही जाय, परतु रोक्यु हेज नहीं एम जाणता छता पण किहा कणे के० कोइ स्थानके ए मनने हठ हटकु के० रोकीजवु, तो जेम सर्पनु गमन रोक्या विना पण वांकु छे तो रोक्या पछी तो तेनी वक्रतानु शुज कहेवु ? तेम ज्यांसुधी ए मनने हटकु नहीं त्यांसुधी ठीक छे, परतु जो रोकीजवु तो सर्पनी जेम वक्र थइने हे प्रभु ! तमारी साथे जोडातु नथी.

जो ठग कहु तो ठगतो न देखु ॥ शाहुकार पण नाही ॥ सर्वमांहि ने सहुथी अलगु ॥ ए अचरिज मनमाहि हो ॥ कुं० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अहो परमेश्वर ! जो हु ए मनने ठगाइ करता देखु तो ठग कहु, परतु ठगाइनी करनारी तो इंद्रियो छे अने मन तो पांचे इंद्रियोनो प्रेरक छे तेनी

ा केम कहुं? वली पांचे इंद्रियो तेना प्रवर्त्तन विना प्रवर्त्ती शकती नथी अर्थात् शब्द ादिकमां प्रवर्त्तवानुं मूलकारण मन छे, तेथी ए मन शाहुकार पण नथी, एटलेके रढ जेवुं महा ठग छे केमके सर्व जे पांचे इंद्रियो तेमां ए नोइंद्रिय मली रह्युं छे, ीभूत थइ रह्युं छे. तेना मेलापविना इंद्रियोथी ठगाइ थायज नही. वली इंद्रियो तपोताना विषय ग्रहण करे ते वखते पोतानो भाग वेहेंची लेतुं नथी, माटे स- ी वेगलुं पण छे. तेथी हे परमेश्वर! मने आश्चर्य लागे छे के सर्वथी भेलुं ते वे- ुं केम कहेवाय? अने सर्वथी वेगलुं ते भेलुं केम कहेवाय? एम परस्पर विरोध ां अविरोधपणे भेलां रह्यां छे. ॥ ५ ॥

जे जे कहुं ते कान न धारे ॥ आपमतें रहे कालुं ॥ सुरनर
पंमित जन समजावे ॥ समजे न मारुं सालुं हो ॥ कुं० ॥६ ॥

अर्थ ॥ वली तेने जे जे हितशिक्षानो उपदेश करुं ते ते तमाम मारां वचनो का- न धरतुं नथी, अर्थात् पोतानी इच्छाए जे जे शुभाशुभ तरंग उपजे छे ते ते प्रमाणे (छे, तेथी ते कालुं के० महा मेलुं छे. आर्त्तरौद्र चिंतवनथी श्याम छे. तेवाने हुंतो शुं ्रजावी शकुं? महा शक्तिवंत देवताउ, सिंह अष्टापद जेवा पशु पक्षीउ पण जेनाथी ा पामे तेवा प्रबल शक्तिवंत मनुष्यो अने शास्त्रना जाणनारा कोविदो पण जेने स- ्ावी शकता नथी. तेथी ए मारी कुमति स्त्रीनो भाइ, मारो सालो छे अने आत्मा उपयोगे प्रवर्त्ते त्यारे पण ए मारी सुमति स्त्रीनो भाइ होवाथी सालोज छे. ॥ ६ ॥

में जाण्युं ए लिंग नपुंसक ॥ सकल मरदने ठेले ॥ बीजीवातें
समरथ छे नर ॥ एहने कोइ न जेलेहो ॥ कुं० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ अहो प्रभु! शास्त्रद्वाराए में जाण्युं के ए मन नपुंसकलिंगे छे. परंतु प्र- क्ष प्रमाणे विचारी जोतां ए मन समस्त मरदोने ठेले के० हगावी नांखे तेवुं छे. पुरु- षधर्म सहित छतां जो मन परवश होय तो पुरुष पण स्त्रीने संयोगे नपुंसक स- न थइ जाय. तेथी ए मन सर्व मरदोमां अग्रगामी छे. जो के तप करवामां, कष्ट ्या साधवामां, सिंहनागादिने दमन करवामां, समुद्रादि जल तरणमां, आकाश मनादि क्रियामां, भूतपिशाचादि वशीकरण क्रियामां पुरुष समर्थ छे, परंतु हे ्रुप्रभु! ए मनने एक भवपरिणति परिपाकी मुनिराज विना बीजो कोइ पण जेले ो जीली शके नही, अर्थात् तेनी गतिने रोकी शके नही, तेने एकाग्र करी शके नहीं॥७॥

मन साध्युं तेणे सघलुं साध्युं ॥ एह वात नहीं खोटी ॥ एम
कहे साध्युं ते नवि मानुं ॥ एक ही वात छे मोटी हो ॥ कुं० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हे प्रभु ! चंचलता मटाडी, एकाग्रताए जे पुरुषे मनने साध्यु के० ९ भूत कर्युं, ते पुरुषे सर्व तपसयमादि कार्य साध्यां केमके ते साधननु अत ते साधवु छे जे प्राणीए मन वश कर्युं तेणे आत्मैश्वर्यनु मूल सिद्ध कर्युं, ए ९ कहेवु खोटु नथी, नि संदेह साचु छे परतु कोइ मारा जेवो मूर्ख, मायावी छना ।। मुखथी एम कहे के मे मारा मनने साध्युं छे, तो तेनु कहेवु हुं मानु नहीं, न करुं, कारण के में मन वश कर्युं एम कहेवु ते वात बहु मोटी छे, ते वात नथी ॥ ८ ॥

मनडुं डुराराध्य तें वश आण्यु ॥ ते आगमथी मति आणु ॥
आनदघन प्रभु माहरु आणो ॥ तो साचु करी जाणुहो ॥ कु० ॥

अर्थ ॥ हे प्रभु ! दु खे साधवा योग्य मन, तमें वश कर्युं ते मन वश करवानी सिद्धांतोथी मारी बुद्धिमां लावु, अर्थात् सिद्धांतथी मनवश करवानी रीत जाणुं परतु मने प्रत्यक्ष नथी तो हे परमानदना समुहरूप प्रभु ! मारु मन जे तमारी जोगातु नथी ते तमारे विषे स्थिरताए, एकाग्रताए प्रवर्त्ते, तो हु साचु ने प्रमाण करु शब्दप्रमाणे तो ए वात प्रमाण ज छे, परतु परमेश्वरे मन वश क ते प्रत्यक्षप्रमाणे प्रमाण त्यारेज करु ॥ए॥ इतिश्रीकुंथुनाथजिन स्तवन

॥ अथ श्रीअरजिन स्तवन ॥

॥ राग परज ॥ मारु ॥ रीषजनो वश रयणायरु ॥ ए देशी ॥

धरम परम अरनाथनो ॥ केम जाणुं भगवंत रे ॥ स्वपर
समय समजावीए ॥ महिमावंत महत रे ॥ ध० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ गाथानो अर्थ अन्वयथी कर्यो छे अहो महत के० महा शक्तिवत, इन्द्रो, असख्याता देवता, चक्रवर्ती, वासुदेव प्रमुख महर्द्धिवतोए जय जय जेनो महिमा वर्णव्यो छे एवा, समवसरणमा बिराजमान थयेला अरनाथ प्रभु तमारा केवलज्ञानथी प्ररूपायेला परमोत्कृष्ट धर्मने हु केवीरीते जाणीशकु ? इ वत ! स्वसमय के० स्वरूपप्राप्ति समय अर्थात् सिद्धांतप्रमाणे वर्त्तता स्वरूप समजावीए के० मने समजावो तेमज तेनाथी अन्य जे समयप्रमाणे प्रवर्तन रूपसिद्धि न पामीए ते परसमय ते पण मने समजावो ॥ १ ॥

शुद्धातम अनुभव सदा ॥ स्वसमय एह विलासरे ॥ परबडी
गहडी जेह पडे ॥ ते परसमय निवासरे ॥ ध० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ परमेश्वर उत्तर आपे ठे. हे आनंदघन! शुद्धनिर्मल स्वरूपवंत, निरुपाधिक त्मतत्वनुं सदा के० निरंतर स्वरूप प्रत्यक्ष करवुं ते अनुजव कहेवाय. जेथकी शुत्म स्वरूपनुं तात्कालिक ज्ञान थाय ते स्वसमय के० मारा स्याद्वाद सिद्धांतनो लास के० बोध जाणवो अने ते शुद्धात्मस्वरूपना अनुजवथी जिन्न यावत् मात्र थन ते मारो समय नही. पर के० बीजा जे कथनमां शुद्धात्म अनुजवीपणुं नथी वा वली के० वट एटले कथननो जेटलो विस्तार ठे अथवा जे कथनमां शुद्धात्म तुजव जेटलो विस्तारयुक्त कथन नथी पण ठांहली के० जे कथनमां आत्म अनुजथी विरुद्ध कथननी ठाया पडे ठे, अर्थात् कोइ जैनमतानुसारे स्वरूपनुं कथन करी छुं ठे, तेमां सर्वथा तो परसमय नथी पण ठाया मात्र ठे एटले कोइक नये आत्म नुजवथी परकथन ठे, तो आनंदघनना आशय प्रमाणे तो ते पण परमेश्वरे परसमय हेल ठे. निज समय नहीं. रहस्य ए ठे के ते विरुद्ध समय के० सिद्धांतनो निवास ० स्थानक ठे. शुद्धात्मस्वरूपना अनुजवथी लेशमात्र जिन्न ते परसमय ठे ॥ २ ॥

तारानक्षत्र ग्रह चंडनी ॥ ज्योति दिनेश मजाररे ॥ ध० ॥ ३ ॥
दर्शन ज्ञान चरण थकी ॥ शक्ति निजातम धाररे ॥ ध० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली आनंदघन कहे ठे के अहो स्वामि! शुद्धात्म अनुजवमां अने ज्ञानर्शन चारित्रमां कांइ नेद ठे के तेउ अनेद ठे? परमात्मा कहे ठे के, जेम तारा, क्षत्र, ग्रह अने चंडमानी ज्योति दिनेश के० सूर्यने विषे अंतर्भूत ठे, तेम केवलान, केवलदर्शन अने क्षायकचारित्र ए त्रणेनी ज्योति ते शुद्धात्मशक्तिना अनुजनी ज्योतिने विषे अंतर्भूत ठे. ते सर्व पोताना आत्मानी अनंतवीर्यरूप जे शक्ति–ामर्थ्यता ते थकी धार के० अवधार. ॥ ३ ॥

जारी पीलो चीकणो ॥ कनक अनेक तरंगरे ॥ पर्याय
दृष्टी न दीजीए ॥ एकज कनक अनंगरे ॥ ध० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली दृष्टांत कहे ठे. सुवर्ण धातुथी कोइ अजाण्यो पुठे के, सात धातुउमां वर्णने शी रीते उलखी शकीए, त्यारे कोइए उत्तर आप्यो के पारादि सर्वथी जे जिनमां जारे होय ते सुवर्ण समजवुं; कोइ बोल्यो के जेनामां पीलाश वधारे होय ते वर्ण; कोइ बोल्यो के जेनामां चिकाश वधारे होय ते सुवर्ण. एवी रीते सुवर्णना अनेक तरंग के० पर्याय ठे परंतु पर्यायो उपर दृष्टि आपवी नहीं, कारण के पर्यायांर संबंधी जे जंग तेथी रहित एवुं अजंग सुवर्ण डव्य ते एकज ठे ॥ ४ ॥

दरशन ज्ञान चरण थकी ॥ अलखसरूप अनेक रे ॥ निर
विकलप रस पीजियें ॥ शुद्ध निरंजन एक रे ॥ ध० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ केवलदर्शनरूप पर्याये एक अलखनुं स्वरूप छे अने केवलज्ञान पर्याये जोइए तोपण एक अलखनुं स्वरूप छे, वली क्षायकचारित्र पर्याये पण एक अलखनुं स्वरूप छे एम बीजापण अजर, अमर, अचल, अकल, इत्यादि अलख के० परमेश्वरना अनेक स्वरूप छे परंतु पर्यायांतर सघली कल्पनाए रहित, द्रव्यार्थिकपणे अभेदवृत्ति चिंतवनरूप, निरविकल्परूप, अमृतरसनु पान करता, शुद्ध निर्मल कर्मअंजन रहित जे परमेश्वर ते एकज छे ऋषभादिथी महावीरपर्यंत सर्व तीर्थंकर सत्ताए भिन्न परंतु रूपे अभिन्न तेम ॥

परमारथ पथ जे कहे ॥ ते रंजे एक तंत रे ॥ व्यव-
हारें लख जे रहे ॥ तेहना भेद अनंत रे ॥ ध० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जे परम के० उत्कृष्ट अर्थ के० कार्यनुं करनार एवो जे पथ के० मार्ग तेने ते एकांत निश्चयनयनाज रागी छे, एटले तेउं लेशमात्र व्यवहार नयना पक्षी नथी, अथवा ए बने पदोना अर्थनो अन्वय आ प्रमाणे करीएतो तीक्ष्ण स्वाप जे एकांत रागी ते परमार्थ पथ कहे एटले उत्कृष्ट मार्ग कहे, पण बीजा न कहे आ वचन निश्चयनुं छे जे प्राणी व्यवहार नयनेज लख के० जाणीने एटले मात्र व्यवहारनेज मुख्य जाणी रह्या छे, ते व्यवहार नयवादीउंना भेद अनंत के० घणा छे ॥ ६ ॥

व्यवहारे लखे दोहिला ॥ काइ आवे हाथ रे ॥ शुद्ध
नय थापना सेवता ॥ नवि रहे दुविधा साथ रे ॥ ध० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे प्राणी व्यवहारना रमीया होय, ते स्थविर गुणठाणा प्रवर्तनारा पणी सेवनादि कष्ट क्रियायी, तप संयमादि व्यवहारने लखे के० शोधीने करे के० महाकष्ट करना प्रवर्त्ते छे, परंतु तेवा व्यवहारने सेवता जन्मारो वही जाय, मात्र व्यवहारनी कष्टाकृत करणी करता लेशमात्र स्वरूपप्राप्तिरूप वस्तु हाथ नथी तेथी शुद्धनयने थापना के० प्रमाण करीने, अर्थात् आत्मा शुद्ध निर्मल सिद्धि रहित एम सेविय के० विचारीए तो, आत्मा शुद्ध स्वरूप रहित छे ए शुद्धनयनुं सामर्थ्य नथी दुविधा के० बे प्रकारनी साथ के० कल्पना न रहे कारण आत्मा थकी कांई शुद्ध आत्मस्वरूपीज छे, ए अरनाथनो धर्म छे, ते धर्मने समजवामां विचारणा न रहे ॥ ७ ॥

एक पखी लखी प्रीतनी ॥ तुम साथे जगनाथरे ॥ कृपा
करीने राखजो ॥ चरणतलें गृही हाथ ॥ ध० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ माटे जो शुद्धात्मस्वरूपी हुं तुं तो तमे शुद्ध आत्मस्वरूपी ज गे, परंतु रागी तमे निरागी, माटे तमारे मारे असमान धर्मीपणुं ठे. तेथी में तमारी साथे क पक्षी प्रीत लखी के० जाणी; अर्थात् तमने तो मारी साथे प्रीति करवानी इ- ज नथी तो पराणे प्रीत शी रीते थाय? तेथी हे जगतना नाथ! तमारी साथे प्रीति थज नहीं. तमे त्रण जगतना पूज्य. हुं निखारी. लोकोक्ति पण एम ठे के वेर, नि- ह अने प्रीति सरखा साथे करीए. मोटानी साथे प्रीति शी? मोटानी तो कृपाज ाइए. दयावंतपणानु तमारुं बिरुद ठे तेथी मारा उपर कृपा करीने तमारा चरण ० पगनी नीचे मारा हाथने राखजो. अहीं परमेश्वर तो मुक्ति पाम्या तेथी तेने च- ानो असंनव अने सेवकना हाथने ग्रहण करवानो पण असंनव, परंतु नक्तिनां वनो ठे, तेथी दुपण नथी नक्त लोकोने ठलंना देवानो स्वनाव ठे. ॥ ७ ॥

चक्री धरम तीरथतणो ॥ तीरथ फल तत सार रे ॥ तीरथ
सेवे ते लहे ॥ आनंदघन निरधार रे ॥ ध० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ अहो परमेश्वर! तमारा समयधर्मनुं शुद्ध आत्मस्वरूपप्राप्तिरूप फल हुं अने तमारा धर्मसमय संबंधी तीर्थनुं आनंदघन प्राप्तिरूप फल आगल वर्णव्युं. धर्मतीर्थ के० चतुर्विध संघना तमे चक्रवर्ती गे तेथी तमारी आज्ञा चतुर्विध सं- मां अखंडपणे वर्त्ते ठे वली तीरथफल के० चतुर्विध संघना तमे फल गे तेमज ती- र शब्द साथे तत शब्द जोडतां, तीर्थना तत्व गे–रहस्यगे तेमज तीर्थमां सार ० प्रधान तमे गे वली तीर्थनुं चक्रवर्तीपणुं, तीर्थनुं फलपणुं, तीर्थनुं तत्वपणुं अने र्थनुं सारपणुं एवुं जे तमारुं तीर्थ, जेने तमारा जेवा नमो तीथ्यस्स एवी वाणीए मस्कार करे ठे, एवा चतुर्विध संघरूप तीर्थने जे प्राणी सेवे ते प्राणी निरधार के० श्चयपूर्वक आनंदघननो समूह पामे॥ए॥ इति श्रीअरजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीमल्लिजिन स्तवन ॥

॥ राग काफी ॥ सेवक केम अवगणीए हो ॥ ए देशी ॥

सेवक केम अवगणीए हो ॥ मल्लिजिन ॥ एह अब शोना सारी ॥
अवर जेहने आदर अतिदीए ॥ तेहने मूल निवारी हो ॥ मल्लि० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे मल्लिनाथ परमेश्वर! अब के० हवे कर्मक्षय करवाथी पाम्या जे केवल

ज्ञान, केवलदर्शन तेनी शोजा सारी के० प्रधान पामीने पोतानी साची सेवाना
चाकर तेनी आवे टाणे केम अवज्ञा करो छो अर्थात् मारी अवज्ञा करवी
अवर के० बीजा मारा जेवा संसारी जीव रागादि परिणतियें ग्रस्त जेने
अत्यत आदर सत्कार करे छे ते आशा दासीने हे प्रजु! तमे मूल के० जडमूल
रण करी अर्थात् निर्लोचता खीलीए उखेडी नाखी दिक्षा लेताज
कर्यो अने ज्यारे वारमे गुणठाणे चड्या त्यारे मुक्तिरूप आशाने पण तजी

ज्ञानसुरूप अनादि तमारुं ॥ ते लीधुं तमे ताणी ॥ जुर्ड
अज्ञान दशा रीसावी ॥ जातां काण न आणीहो ॥ मल्लि० ॥२॥

अर्थ ॥ हे प्रजु! तमारुं ज्ञानस्वरूप अनादि कालथी, मोहथी प्रगटी जे
दशा तेथी आछादित हतु, ते तमे ताणी लीधु अने हे सुमति! तमे जुर्ड
अनादि कालनी क्षीर नीर जेवी सबधवाली अज्ञानदशा नामनी स्त्री ते
परमेश्वरने, आत्मस्वरूप अनुजवीने, असोहामणी लागी तेथी अप्रीतकारिणी
तेने आत्मरूप घरथी जाता जाणी पण काण न आणी एटले तेनी साथे
घरवास हतो ते घर छडीने जेम जंठ सींध गया तेम जाय छे तो जले जाउ
कर्युं, पण तेनी साथे जाषण करवु एटली पण काण के० मर्याद न आणी ॥२॥

निद्रा सुपन जागर उजागरता ॥ तुरिय अवस्था आवी ॥
निद्रा सुपनदशा रीसाणी ॥ जाणी न नाथ मनावीहो ॥ मल्लि० ॥३॥

अर्थ ॥ वली हे परमेश्वर! जव्य अजव्य ससारीजीवोने निद्रा तथा सु
अवस्था छे अने जव्यने जव्यत्वनो परिपाक काल तेरमे गुणठाणे थाय त्यारे
अवस्थानो नाश थाय अने ते जाग्रत अवस्था पामे तथा चउदमा
सिद्धनेविषे उजागर अवस्था होय ए चार अवस्थामा हे प्रजु तमारे तुरिय
चोथी उजागर अवस्था प्राप्त थइ, ते जोइने निद्रागर्जित सुपनअवस्थाए
के अमने प्रजुए दुर्वचन कह्याविनाज अमारी प्रतिपक्षीणीउने मनावी, तेथी
तिरस्कार थयो एम जाणी तेउ रीसाणी तेउने आत्मघरथी जाती देखीने, पण
अनरायकारक तेउने जाणीने हे नाथ! तमे तेउने मनावी नही ॥ ३ ॥

समकित साथे सगाइ कीधी ॥ सपरिवारसुं गाढी ॥ मिथ्या
मति अपराधण जाणी ॥ घरथी बाहिर काढीहो ॥ मल्लि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हे परमेश्वर तमे मिथ्यात्वथी पराङ्मुख थइने उपशम विवेक
परिवार सहित समकित साथे सगाइ गाढी के० दृढपणे कीधी तेम यथार्थ

रूपथी विरुद्ध प्रवर्त्तनारी मोहरायनी पुत्री जे मिथ्यामति तेने आत्मस्वरूप प्राप्तिमां
प्रभावनारी अपराधी जाणीने तमारा आत्मघरथी वहार काढी मुकी अने
ीने फरी घरमां प्रवेश न करवा दीधो ॥ ४ ॥

हास्य अरति रति शोक छुगंछ ॥ भय पामर करसाली ॥
नोकषाय श्रेणीगज चढतां ॥ श्वानतणी गति जालीहो ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली हे प्रभु! नोकषाय जे हास्य, अरति, रति, शोक, छुगंछा अने भय
नोकषाय मोहनी क्रोधादि कषायनी अपेक्षाए पामर के० रांक, परंतु संसाररूप
ीनी वृद्धि करनारी, तेथी करसा के० खेती खेडवानी आली के० पंक्ति जे क्रोधादि
ाय तेनी सदृश माटे नोकषाय, तेउने ज्यारे तमे क्षपकश्रेणिरूप गज के० हाथी
र स्वारी करी त्यारे श्वान के० कुतरानी रीत ग्रहण करनारीने गणी नही. जेम
मार्गे हाथी चालतां हाथी उपर चडेलाने कुतरा पहोंची शके नही, परंतु हाउ
उ करे तेम परमात्मा श्रेणिरूप गजे आरूढ थया, त्यारे हास्यादि छए कुतरानी
हाउ हाउ करता रह्या. ॥ ५ ॥

रागद्वेष अविरतिनी परिणति ॥ ए चरण मोहना योधा ॥ वीत
राग परिणति परिणमता ॥ उठी नाठ्या बोधाहो ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वली भवरूप बीजना अंकुरना उत्पादक राग तथा द्वेष तेमज अविरति-
परिणति, ए त्रणेनुं परिणमन; तेउ त्रणे चारित्रमोहनीयना योधा के० सुभट छे.
रेत्रमां प्रवर्त्तनारा मुनियोने चारित्रथी पाडनारा छे. परंतु हे परमेश्वर! तमे ज्यारे
राग परिणतिने विषे तदाकार प्रवृत्तिए प्रवर्त्या त्यारे तेउए विचार्युं के अमारी
धी वीतरागता घरमां आवी तेथी हवे अमे रही शकीये नही, एम विचारी
ा के० एवुं जाणनारा ते पोतानी मेळेज उठीने नाशी गया. ए प्रमाणे हे प्रभु!
रुं कार्य सेहेजे सिद्ध थयुं. ॥ ६ ॥

वेदोदय कामा परिणामा ॥ काम्यकर सहु त्यागी ॥ निःकामी
करुणारस सागर ॥ अनंत चतुष्कपद पागीहो ॥ मल्लि० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वली हे प्रभु! वेदना उदयथी कामना परिणाम के० अभिलाष एटले पु-
ने स्त्री, स्त्रीने पुरुष, एवो अभिलाष वेदोदयथी थाय. ते वेदना उदयथी कामनो
भिलाष तो दुर रह्यो, परंतु तमे तो काम्यकर के० वांछारूप कर्ममात्रना त्यागी
ा, तो वेदनो सर्वथा अभाव थाय तेमां शुं नवाइ! हे प्रभु! तमे निरभिलाषीपणा-
ने करुणारूप रसना समुद्र छो. निष्कामी विना दयाना परिणामनो अभावज होय.

तेथी तमे अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतचारित्र, अनंतवीर्य ए अनंत
निर्वाणपद तेना पागी के० पदना रंगाणा अर्थात् मोक्षपदमा लीन गे ॥ ३॥

दान विघनवारी सहु जनने ॥ अजयदान पद दाता ॥ लाज
विघन जगविघन निवारक ॥ परम लाज रस मातादो ॥ म० ॥ ७॥

अर्थ ॥ हे प्रजु ! तमे दान सबधी विघन एटले दानांतरायनो नाश
राशि जीवमात्रने अजयपद जे मुक्तिपद तेरूप दानना दातार थया वली
राय कर्मनो नाश करीने तेमज जगतवासी सर्व जीवोना लाजांतरायना दूर
थइने पोते परम के० उत्कृष्ट आत्मरीद्धि सबधीरस ते अव्ययपद प्राप्त थवाथी
थयो जे अतिंडियरस ते रसमा माता के० मग्न थया ॥ ७ ॥

वीर्य विघन पंमित वीर्यें हणी ॥ पूरण पदवी योगी ॥ जोगो
पजोग दोय विघन निवारी ॥ पूरण जोग सुजोगीहो ॥ म० ॥ ए

अर्थ ॥ वली परम आत्मस्वजाव पामवाथी उत्पन्न थयु जे परम
पंमित वीर्यें के० पराक्रमथी वीर्यांतरायनो नाश कर्यो तेथी संपूर्ण पदवी जे
पदवी, ते पाम्या अर्थात् आत्मवीर्य फोरवता आत्मपदवीने निम्न करनार
नाश कर्यो ए योग्य ठे अहीं पदमा योगने बदले योगी शब्द सूत्रकारे
प्राप्त मेलववा माटे लागे ठे योगी शब्दनो अर्थ करीए तो ते पदवीथी सयोग
एम थाय अने आत्माने स्वरूपपदवीनो समवायसबध सजवे पण सयोग
सजवे तेथी योग शब्दनो अर्थ ए पदवीने योग्य ठे एम कर्यो ठे कर्त्तानो
कर्त्ता जाणे वली तमे जोगांतराय, उपजोगांतराय, ए बने अंतरायने
निवारीने सिद्धात्मसबधी आठ गुणरूप जोगना सुजोगी के० उत्तम जोगवनार
थाठो अर्थात् सुजोगने अंतराय करनारा जोगोपजोगांतराय बनेनो नाश

ए अढार दूषण वरजित तनु ॥ मुनिजन वृंदे गाया ॥ अवि
रतिरूपक दोष निरूपण ॥ निरदूषण मन जायाहो ॥ म० ॥ १०॥

अर्थ ॥ हे परमेश्वर ! पूर्वोक्त अढारे दोष रहित तमारु तनु के० शरीर
स्यात प्रदेशरूप आत्मपिंमधारक ठे तेथी तमे मुनिराजोना वृंद के० समूहने
थवा योग्य थया गे अने तेमणे तमने स्तव्या परंतु हे सुमति ! अविरति
निवर्तवु जेने तेनु कथन तो दोष निरूपण ठे अर्थात् अढारे दोषमा प्रवर्त्तवु ते
तो सर्वजीवमात्रमा कहेवाय परंतु प्रजु तो अविरति प्रमुख दूषणोथी रहित
तेथी निरदूषण थया ते मारा मनमा जाया के० सुहाया गम्या ठे ॥ १० ॥

इणविध परखी मन विसरामी ॥ जिनवर गुण जे गावे ॥ दीनबंधु
नी मेहेर नजरथी ॥ आनंदघन पद पावेहो ॥ मल्लि० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ माटे हे सुमति! जे स्वरूपज्ञाता प्राणी होय ते पूर्वोक्त अढार दोष वर्ज-नी विधि के० रीत कही. ते रीते मन वीसरामी के० मनने स्थिरताभावे प्रवर्त्तावी ढार दूषण रहित तेज अरिहंत देवाधिदेव एवी परीक्षा करीने सामान्य केवली-ाां प्रधान एवा मल्लिपरमेश्वरना गुणग्राम—स्तवना करे अथवा मनने विशरामना म एवा मल्लिजिनना गुण वर्णवीने स्तवना करे. ते प्राणी मोहमल्ले हणायेला,निज-रूपे रहित, संसारमां जन्मजरादिथी खिन्न थयेला दीन होवाथी तेमना बंधु के० तासमान निःस्वार्थ सहायना करनार मल्लिपरमेश्वरनी मेहेर के० कृपानजररूप-त्वद दृष्टिथी, अतिंद्रियानंदनो समूह एवुं जे मुक्तिपद ते निःसंदेहपणे पामे ॥११॥

॥ अथ मुनिसुव्रतजिन स्तवन ॥

॥ राग काफी ॥ आघा आम पधारो पूज्य ॥ ए देशी ॥

मुनिसुव्रत जिनराय एक मुज विनति निसुणो ॥ आतमतत्व
क्युं जाण्युं जगतगुरु ॥ एहविचार मुज कहियो ॥ आतमतत्व
जाण्याविण निरमल ॥ चित्तसमाधि नवि लहियो ॥ मुनि० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अहो मुनिसुव्रत जिनराज! आनंदघननी आत्मतत्व संबंधी एक विनति तिशयपणे श्रवण करो. हे त्रण जगतना स्वामि! आत्माथी विसर्जन थयेलुं एवुं ात्मधर्मरूप तत्व तमे केवी रीते जाण्युं? तेनो विचार अनुक्रम विधिए मने कृपा-ीने कहो. केमके आत्मतत्व जाण्याविना अर्थात् पुद्गलादि जडथी आत्माने भिन्न वधारण कर्याविना, काम, क्रोध, लोभ मोहादिना जोरथी मननी समाधि के० स्थि-ाा न पामी शकीए. परंतु अकामी, अक्रोधी, अमानी, अलोभी इत्यादि वृत्तिथी ारमल थइ चित्तवृत्ति निरोधकरी तदाकारे स्वस्वरूपने विषे ज प्रवर्त्तन, ते न पाम्यो. टे आत्मतत्व जे रीते जाणुं ते उपदेश करो ॥ १ ॥

कोइ अबंध आतम तत माने ॥ किरिया करतो दीसे ॥ क्रिया
तणुं फल कहो कोण भोगवे ॥ एम पुछ्युं चितरीसें ॥ मुनि० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ कोइ प्रश्न करे के, सर्व मतोमां आत्मतत्वनुं वर्णन छे, तेथी परमेश्वरने छवानुं शुं कारण छे? उत्तर के मुनिसुव्रत प्रभुविना, बीजाउने जो आत्मतत्वनो निर्णय ाय तो कोइ के० सांख्यादि मतवाला अबंधपणे आत्मतत्व माने छे. तेउ माने छे के

" विगुणो न बध्यते न मुच्यते " गुणविनानो आत्मा त्रणे काल कर्मथी मुकातो नथी निश्चयनयनो मत तो एमज छे, परतु व्यवहार नयनी रहित छे वली वेदाति आत्माने अवध माने छे अने काम तेमने पुछीए के तमे कर्मथी वधाओ छो के केम ? त्यारे तेओ उत्तर आपे छे कर्मथी वधाय एम माने ते कर्मथी वंधाय, परतु आत्मा तो स्वजावेज निर्मळ आत्मा वधातो ज नथी एप्रमाणे वोलनारा वेदाति प्रमुखने पाछा छीए माटे हे शुद्ध चेतना ! में तेओने क्रियामा प्रवर्त्तता देखीने चित्त रीसे रीस आववाथी पुछ्यु के तमे आत्माने तो अवध मानो छो एटले आत्मा शुजाशुज कर्मनो वध करतो नथी, परतु आत्मा आत्मस्वजावे निर्मळ धक छे, एम मानो छो, तो महाकष्टकरी,शुजकरणी करी ते क्रियानु फळ कापणे जोगवे एम मानशो तो तमारो पक्ष छेदाशे,अने क्रियानु फळ आत्मा गवे एम मानशो तो क्रिया करो छो तेनु फळ कोण जोगवशे ? अने जो आत्मा न जोगवे तो क्रिया निरर्थक थइ, असिद्ध थइ, तेथी व्यवहारनयने कार कर्या छता तेने छेदो छो तो हे शुद्ध चेतना ! एवा मतवाळाओने पुछ्या आत्मतत्त्वने केम पामु ? तेथीज परमेश्वरने पुछ्यु ॥ २ ॥

जड चेतन ए आतम एकज ॥ थावर जगम सरिखो ॥ छख सुखशकर दूषण आवे ॥ चित्त विचारीजो परिखो ॥ मुनि०॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली अद्वैतवादीना त्रण पक्ष छे १ अद्वैत २ द्वैताद्वैत ३ विशिष्टाद्वैत शिष्टाद्वैतपक्षी विष्णुना उपासक छे तेओ जड चेतन के० जडयुक्त चेतन एवो एकज छे एम माने छे सर्व शरीरधारीओमा परमात्मा अंशे व्यापी रह्यो छे, छे सर्व गत छे, नित्य छे एवो तेमनो मूल सिद्धात छे जीवात्मा कोइकाले परमात्मा थाय, त्रणेकाल जीवात्मा सेवक अने परमात्मा स्वामि एम तेओ माने छे तेमनी मान्यतानो घणो विस्तार छे वली द्वैताद्वैतपक्षी स्थावर जगममा जेद माने छे तेओ विशिष्टाद्वैतने पुछे छे के,पृथ्वी, अप, तेज, वायु अने वनस्पतिने पृथ्वीना अतर्जामी मानोछो तो थावर जगममा जड सवधीत चेतना एक छे चित् जेद छे त्यारे तेओ कहे छे के थावर जगम सरिखो के० थावर अने जगम जेद छे तो हे शुद्ध चेतना ! में तेओने पुछ्यु के तमारो मत जे तमे स्थाप्यो, चित्त विचारी परिखो के० चित्तमा विचार करी काइ परिक्षा तो करो तमारा मा तमारा कहेवाथी छःख सुख सबधी शकर दूषण प्रवेश करे छे सुखछुःख

र विरोध छे. सुख ते दुःख न थाय अने दुःख ते सुख न थाय. एवा सुख दुःखने
, समान अधिकरणरूप मानी सुखनो कर्ता पण थावर जंगममयी जड चेतन अने
खनो कर्त्ता पण थावर जंगममयी जड चेतन; तेथी थावरनुं करेलुं सुखदुःख जं-
मां प्रवेश थवुं जोइए अने जंगमनुं करेलुं सुख दुःख थावरमां प्रवेश थवुं जोइ-
एम कहेवाथी शंकर दूषण थावर जंगम थाय ॥ ३ ॥

एक कहे नित्यज आतम तत ॥ आतम दरशण लीनो ॥ कृत
विनाश अकृतागम दूषण ॥ नवि देखे मतहीणो ॥ मुनि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली कोइक अद्वैतवादी, तेरापंथी, समयसारीया, वाशिष्टसार ग्रंथी
कहेछे के आत्मा निश्चयथी चारे गतिमां नमतां छतां पोताना स्वरूपदर्शनमां
नो के० व्यापक छे अर्थात् त्रणे काल आत्मा स्वरूपदर्शनथी रहित नथी. तेमने में
शुं के जो आत्मा आत्मस्वरूपमांज लीन होय तो कृत विनाश के० साधेली उत्तम
याना उत्तम फलनो विनाश तेरूप दूषण शुं तमे नथी देखता? अने अकृता-
के० आत्मा आत्मस्वरूपमां लीन होय तो दुष्कृतनो बंध नज थाय अने प्राणी-
दुष्कृतोना फल जोगवता तो देखीए छीए तेथी ते अकृतागमरूप दूषण तेने
हे मतहीणा के० बुद्धिहीन तमे देखता नथी. तमाराज शास्त्रमां कह्युं छे के "कृ-
विना न जोक्तव्यं" तेथी कर्याविना जोगवाय केम? ॥ ४ ॥

सुगतमति रागी कहे वादी ॥ क्षणिक ए आतमजाणो ॥
बंधमोक्ष सुखदुःख न घटे ॥ एह विचार मन आणो ॥ मुनि० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली हे शुद्ध चेतना! बौधमतना रागी, वादी के० पक्षवाला एम कहे
के, यावत् मात्र आत्मा, क्षणेक्षणे जिन्नजिन्न छे एम जाणो के० अवधारो. अर्थात्
गतमां आत्मा मात्र तथा पदार्थ मात्र क्षणिक छे, जे प्रथम क्षणे छे ते बीजी क्षणे
री एवो तेमनो सिद्धांत छे. ते बौधमतवादीने में कह्युं के आत्माने जो क्षणेक्षणे
न्नजिन्न ठरावशो तो बंध के० शुजाशुज कर्म बंध तथा मोक्ष के० कृतकर्मनो
श, तेमज सुकृत्योनुं फल सुख अने दुष्कृत्योनुं फल दुःख, आ चारे प्रकारो क्ष-
क आत्माने न घटे के० संजवता नथी; कारण के जे क्षणे आत्मा बंध करे ते बं-
ता कर्त्ताथी बीजी क्षणनो आत्मा जे जोक्ता छे ते जिन्न छे, तो कर्त्ता आत्मा जिन्न
ने जोक्ता आत्मा जिन्न एम थाय छे. तो तेवीरीते थवुं असंजव छे. तेथी ते असं-
वनो विचार मनमां आणो के० लावो माटे हे शुद्ध चेतना! जे पोतेज आत्मतत्व

पाम्या नथी अने जूल्या फरे छे तेर्जने पुछतां हु आत्मतत्त्व शीरीते जाणु ? अरने विनति करु तु के मारी विनति तत्त्वनी उंलखाण करावचानी अवसरे॥

जूत चतुष्क वरजित आतम तत ॥ सत्ता अलगी न घटे॥
अंध शकट जो नजर न देखे ॥ तुं शुं कीजे शकटे ॥मुनि०॥ ६॥

अर्थ ॥ हे शुद्ध चेतना ! वली नास्तिक मतवादी कहे छे के १ पृथ्वी २ ज तेज ४ वायु आ चार जूत शिवाय आत्मतत्त्वनी सत्ता के० आत्मतत्त्व पण अलगी के० पृथक् न घटे के० संजवतु नथी अहीं आकाश तत्त्वने जुदु नथी, कारण के ज्या ए चार जूत होय त्या आकाश पण होयज तेथी ना तिए चारनुज ग्रहण कर्यु तेर्ज ए जूतचतुष्कमयी आत्मसत्ता मदिरा दृष्टांते छे जेम मदिराना एक एक अगमा केफनी शक्ति नथी, तमाम अगना एक वाथी तेमा केफनी शक्ति आवे छे तेवीजरीते चारे जूतने सयोगे चेतन्य शक्ति गट थाय छे हे नास्तिमति ! आ तमारो मत अयोग्य छे जेम अध के० अ प्राणी शकट के० गाडानी लबाइ, पहोलाइ नजरे देखी शकतो नथी तेने गाडानी रोकवात करवाथी शु समज पडे तेवीरीते ज्यारे गाडा जेवु मोटु दृष्टात आ नजरथी न देखाय तेवाने वीजु दृष्टात शाकामनुं ? जेमके कोइ प्राणी मरण तेना शरीरमा चारे जूतोथी प्रथम आत्मसत्ता प्रगट थइ हती अने चारे जूत थमान छता आत्मसत्ता अलग थाय तेम तो घटतु नथी तो आत्मसत्ता चारे जू तजीने केम चाली गइ तेथी हे शुद्ध चेतना ! तेवाथी आत्मतत्त्व केम उंलखाय।

एम अनेकवादी मत विज्रम ॥ सकट पडीयो न लहे ॥ चित्त
समाध तेमाटे पुछु ॥ तुमविण तत कोइ न कहे ॥ मुनि० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ए प्रमाणे जेनविना वीजा एकातपक्षी सर्व मतवादीना सिद्धातोथी जिन्न कथन सालजता आत्मतत्त्व सबधी विज्रम के० विशेष शका ज्राति तद्रूप के० महाकष्टरूप समुद्रमा डुब्यो छतो अर्थात् ज्रातिमा पड्यो छतो नहीं, परतु हे शुद्ध चेतना! अनेक मतवादीर्जना कथनरूप विज्रममा हु पड्या तेथीज मारा चित्तने समाधि छे अर्थात् तेमना कहेवा मुजब मारु मन प्रवर्तु तेथीज परमेश्वरने पुछु छु के हे प्रजु! तमाराविना वीजा कोइ आत्मतत्त्व कहेवाने समर्थ नथी तेथी तमेज कहो जेथी शुद्धात्मतत्त्व पामीए ॥७॥

वलतु जगगुरु एणी परे जाखें ॥पक्षपात सव छमी॥ राग
रूप मोह परवर्जित ॥ आतमशु रढ मडी॥ मुनि०॥ ८ ॥

अर्थ ॥ मारा प्रश्ननो त्रण जगतना स्वामिए आ प्रमाणे उत्तर आप्यो ते कहुं तुं प्राणी आत्मतत्व जाणवानी चाहना करे ते प्राणी एकांतपक्षी वाद सर्वथा मुकीने द्वेष मोह अने अज्ञाननो पक्ष वर्जे तो ते प्राणी अवश्य आत्मस्वरूप प्राप्तिथी दिवस, सुतां जागतां, उठतां बेसतां, खातां पीतां, कार्यादिकमां प्रवर्त्तता छतां अंतरवृत्ति अर्थात् मनःप्रवृत्ति आत्मस्वरूपमां प्रवर्त्ततां आत्मतत्व यथार्थ जाणे॥८॥

आतमध्यान करे जो कोउ ॥ सो फिर इणमें नावे ॥ वागजाल
बीजुं सहु जाणे ॥ एह तत्व चित्त चावे ॥ मुनि० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ ए रीते जे प्राणी ब्रह्मरंध्र मध्य आसन पुरीने आत्मामां लयलीन थइ कारवृत्तिए शुद्धात्मस्वरूपनुं ध्यान करे ते प्राणी अनेक मतवादीउना विभ्रम स्वरूप जालमां फसे नही. ते प्राणी एक आत्मस्वरूप कथनविना अन्य जे जप पूजा नियमादि कथनमात्रने वागजाल के० वचननी जाल, आत्माने फसवानो जाणे अने आत्मस्वरूपना तत्वनेज पोताना चित्तमां चावे के० चिंतव्याकरे॥ए॥

जेणे विवेकधरी ए पख ग्रहियें ॥ ते ततज्ञानी कहियें ॥
श्री मुनिसुव्रत कृपाकरो तो ॥ आनंदघन पद लहिए ॥ मुनि० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ माटे जे विवेक धरी के० विवेकवंत प्राणी होय ते आत्मध्यान संबंधीपक्ष ण करे अने तेनेज तत्वज्ञानी आत्मतत्वनो वेत्ता कहीए, माटे सिद्ध संपदाना रण करनारा अहो मुनिसुव्रत प्रभु! कृपा करो के० आत्मतत्वनी उलखाण करावो अनादि कालथी जेथी दूर छइए एवा चितामणि सदृश परमानंदना समूहरूप जे मुक्तिपद ते पामीए ॥ १० ॥ इति मुनिसुव्रतजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीनमिजिन स्तवन ॥

॥ राग आशाउरी ॥ धनधन संपति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

षट दरशण जिन अंग भणीजे ॥ न्यासषडंग जो साधेरे ॥
नमिजिनवरना चरण उपासक ॥ षट दरशन आराधेरे ॥ षट० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे शुद्ध चेतना ! पूर्वना स्तवनमां वर्णवेला छए दर्शन जिन के० जिनेरना अंग छे, परमात्मा पोते छए अंगोना धारक छे अने बीजाउ एक एक अंगना रक छे. जैननां वचन सप्तनयाश्रीत छे. बीजाउ एक एक नयना अपेक्षी छे. तेथी न्यने अंग कह्या अने जैन उत्तमांग छे. कर्त्तानो आशय एवो छे के जे अंगोने छेदे जिनेश्वरना उत्थापक छे, कारण तेउ जिनेश्वरना अंग छे. अहीं कोइ प्रश्न करे के

"एगते होइ मिछत्तं" एवो पाठ छे उत्तर के ते सत्य छे, परतु अन्य स्थले जैन सदृश वस्तुप्ररुपणा करी होय ते ते स्थलने सर्वथा असत्य कारण के षट्दर्शन ते जिनेश्वरनां अंग छे एवो पाठ छे तेउने जिनेश्वरना कह्या परंतु दर्शन कहेल नथी तेथी हे शुद्ध चेतना! आ स्तवनमा जेम ठए अगनु न्यास के० स्थापन कर्यु छे तेवी रीते नमि परमेश्वरना धन करनारा, निरममत्वी, समपरिणामि थइ ठए अगोरूप षट्दर्शननु करे कर्त्तानो आशय एवो छे के अन्यदर्शनी सर्व एक एक नयाश्रीत छे, नयें सत्य कहे परतु ज्यासुधी अन्यदर्शनी जैनदर्शननु उत्थापन करे तेना कहे नही त्यांसुधी जैनी पण तेउने दूषणता वचन कहे नही ॥ १ ॥

जिनसुर पादप पाय वखाणुं ॥ साख्य जोग दोय जेदेरे ॥ आतम सत्ता विवरण करता ॥ लहो डुग अंग अखेदे रे ॥ षट० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ ठए मतोमां जे जे मत परमेश्वरना जे जे अग छे ते कहे छे एक बीजो योग के० नैयायिक आ वे दर्शन, ते नमि परमात्माना सुरपादप क० समान उपमा छे जेने एवा पाय के० चरण वखाणु के० व्याख्यान करु छु तेउ परमेश्वरना वे पग छे जेम शरीरनु मडाण पगोथी छे तेम जीवमात्रनु सत्ताथी छे आ बने दर्शनो पण आत्मसत्ताना विवेचन करनारा छे कहे छे के आत्मामात्र पुष्करपत्रवत् निर्लेप छे, लेप तो प्रकृतिने छे इत्यादि स्तारयुक्त कथन छे, परतु सर्व आत्मसत्तानु विवेचन छे नैयायिक पण आत्मा सत्ता तो एकज माने छे, परतु एक जीवात्मा बीजो परमात्मा एम वे जाति माने छे तेमा जीवात्माने मात्र कार्यनुं कारणजूत माने छे अने कर्त्ता माने छे ए प्रमाणे हे शुद्ध चेतना! जेम सत्ता सर्वनु मूल छे तेम पगोनु मूल छे ए प्रमाणे आ वे दर्शन ते परमेश्वरना डुग अंग के० बे चरण के० प्रसन्नचित्तें लहो के० जाणो दर्शनोनु विशेष स्वरूप षड्दर्शन समुच्चय ग्रथोथी जाणवु ॥ २ ॥

जेद अजेद सुगत मीमासक ॥ जिनवर दोय करजारी रे ॥
लोकालोक अवलबन जजिये ॥ गुरु गमथी अवधारी रे ॥ष० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ सुगत के० बौधदर्शन अने मीमासक दर्शन तेमा बौधदर्शन आत्मादि सर्व वस्तुने जेद के० जिन्न माने छे मीमासक आत्मा नित्य अकर्त्ता छे त्रणे काल स्वरूपे अजेद माने छे यथा ॥ एक एवही जूतात्मा, जूतेजूते

तः ॥ एकधा बहुधा चैव, दृश्यते जलचंद्रवत् ॥ १ ॥ वली, एकः सर्वगतो नित्यः वेदे, विगुणो न बध्यते न मुच्यते ॥ इत्यादि; माटे आ बे दर्शन ते परमेश्वरना कर के० बे हाथ छे. जारी के० गंजीर आशयवाला छे माटे गुरुगम के० गुरुए वेल जे रेचक, पूरक, कुंजक संबधी प्रवर्त्तन, तेथी प्रथम तो लोक के० ब्रह्मरंध्रथी नुं बाकीनुं शरीर जेने जूगोल संज्ञा छे ते लोक शब्द छे, तेनुं अवलंबन के० आ-रे आश्रयकरीने, आ बे दर्शनरूप परमेश्वरना बे हाथ तेने अवधारी के० निर्णय ने जजियें के० ध्याइए. तेमज अलोक के० शुन्य माटे खगोल संज्ञा ते ब्रह्मरं-छे तेथी अलोक शब्दे ब्रह्मरंध्रने विषे आत्माने आश्रयकरीने आ बे दर्शनरूप बे नो निर्णयकरी जजीए, ध्याइए.

आ बे दर्शनमां बौद्धदर्शन, जे विद्यमान ते क्षणेक्षणे जिन्नजिन्न छे, एवो तेनो सि-छे. ते प्रमाणे आत्मा प्रमुखने व्यवहार नयथी पर्यायांतर कालथी अवधारीए क्षणेक्षणे जिन्नजिन्न छे ते सत्य छे. मीमांसक वस्तुने अजेद माने छे. ते प्रमाणे य नयनी अपेक्षाए आत्मा प्रमुख सर्ववस्तु पोतपोताना लक्षणथी त्रणे काले द छे ते सत्य छे. ए प्रमाणे आ बे दर्शन ते व्यवहार अने निश्चय नयना अपेक्षी रमेश्वरनुं प्रवर्त्तन निश्चय अने व्यवहार बनेथी छे तेथी बौद्धदर्शननुं व्यवहारथी प्रव-छे तेथी ते वामकर छे अने मीमांसकनुं निश्चयथी प्रवर्त्तन छे तेथी ते दक्षिण कर छे. आशय समजवामां कठिन छे तेथी गंजीर कह्युं. एरीते परमेश्वरनां चार अंग वर्णव्यां.

लोकायतिक कूख जिनवरनी ॥ अंश विचारी जो कीजे रे ॥
तत्वविचार सुधारस धारा ॥ गुरुगमविण केम पीजे रे ॥ पट० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ नमि परमेश्वरनुं कूख के० पेट ते लोकायतिक के० नास्तिकवादी चार्वाक र छे. जीव, पुण्य, पाप, गत्यागति कांइ नथी, एवो नास्तिकनो मत छे. सर्वांशे तो रमेश्वरनुं पेट नथी, पण अंशविचारी जो कीजे के० एक अंश विचारी जोइए तो श्वरनुं ते पेट छे. नास्तिक जेम शुन्यवादी छे, तेम परमेश्वरनुं पेट पण शुन्य छे. । तत्वविचारे जोइए छीए तो सर्व दर्शन वाणीथी वर्णव्या अने वाणी पेटथी न थइ माटे कूख ते पांचे अंगनो खजानो छे. ए कूखथी पांचे दर्शननी उत्पत्ति छे. सुधारसधारा के० अमृतरूप रसनो प्रवाह छे तेथी ए सर्वांग धारानो मेलाप ने पीजे के० रस आस्वादन करीए. निर्ममत्वी गुरुना बतावेला मार्गविना स-दर्शनना मेलापरूप तत्वनो विचार तद्रूप सुधारसनी धारा शीरीते पान करी ए. ममत्वरूप दुर्जन पान करतां ढोली नांखे. एरीते पांच दर्शन वर्णव्या.

जैन जिनेश्वर वर उत्तम अंग ॥ अतरंग वहिरंगेरे ॥ अक्षर न्यास धराआधारक ॥ आराधे धरी सगेरे ॥ षट० ॥ ५॥

अर्थ ॥ जैनदर्शन ते नमि परमेश्वरनु वर के० प्रधान, सर्व अंगोमां उत्तमाग, मस्तक छे, केमके अतरगे जोइए तो जैनदर्शनना अभावे सत्ता न थाय, अने वाह्यागे जोइए तो जैनदर्शन सर्वांशी छे सर्व नयाश्रित वर्त्ती समांग छे परतु जे प्राणी निर्ममत्वी थइ अक्षरन्यास के० एकेक अक्षरनु तेनी धरा के० भूमिका स्थानक अर्थात् आ पहेला अक्षरने रेहेवानु स्थानक जाने रेहेवानु स्थानक एम एकेक अक्षरना आधारक के० आधारभूत थइ करीने रह्या जे अर्थ ते अर्थने सगे धरी के० साथे करीने, सर्वांशी जैन राजेंद० आराधन करे अर्थात् एक अक्षर मात्रनो उछेद करवो ते तो दूर अक्षर आगल पाछल पण न कहेवु एवीरीते जैनदर्शननु आराधन करे ए० परमेश्वरना अग वर्णव्या ॥ ५ ॥

जिनवरमा सघला दरशन छे ॥ दर्शने जिनवर भजनारे ॥ सागरमा सघली तटनी सही ॥तटनीमा सागर भजनारे ॥

अर्थ ॥ ए रीते नमि परमेश्वरमा सर्व दर्शन छे तेथी ए छए दर्शन अग छे एकेका अन्य दर्शनमा सर्वांगी सत्ता न पामीए अर्थात् एकागी मीए तेथी ते अशे जिनवर भजना कहीए जेम समुद्रमा सर्व तटनी के० सही के० निश्चयथी छे, परतु नदीउमा समुद्रनी भजना छे, एटले समुद्रनी पाणी जे नदीमा आवे तेरीते ते नदीमा समुद्र एक देशे सभवे छे ए रीते एमाए जिनवरना ए छए दर्शन अग छे ॥ ६ ॥

जिनस्वरूप थइ जिन आराधे ॥ ते सही जिनवर होवे रे ॥ भृ इलिकाने चटकावे ॥ ते भृगी जग जोवे रे ॥ षट० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ए रीते सर्व दर्शनोना एकज भावरूप जिनेश्वरना - वृत्तिए परमेश्वरनु आराधन करे–ध्यान करे ते प्राणी सही के० निश्चयथी के० केवलज्ञानदर्शनी थाय जेम भृगी के० भमरी उष्णकालमा मदनी० वधवाना वधवाथी अने पोताना काटामा पण विष वधवाथी, काली अथवा रगनी माटीमा पोते खत्र मुकी, गोळीवाळी, एकेक गोळी खावी घर वाळी, इलिका के० घट, तेने काटाथी चटको दइ ते घटने घरमा मुकी, पछी

रनुं मोढुं ढांकी, सत्तरमे दीवसें, चटकाथी ते घरनुं मुख उघाडे. उघाडतांज जे हती ते जमरी थइ उडी जाय. ते लटने जमरी थयेली जगत देखे. ते दृष्टांते जि-रूप थइ जिनने आराधतां पोते जिनवर थाय ते आ प्रमाणे. जिनेश्वरनां वचन णे अंतरात्मवर्ती थइ लटरूप बाह्यात्माने चटको आपी निजस्वरूपमां परिणमन प घरमां रही ध्यानथी प्रवर्त्ततां लटरूप बाह्यात्मा ते जमरीरूप परमात्मा थाय. सर्व जगतने जासन थतां, सिद्धमां गमन ते उमवारूप थाय ॥ ७ ॥

चूरण जाष्य सूत्र निर्युक्ति ॥ वृत्ति परंपर अनुजव रे ॥ समय
पुरुषना अंग कह्या ए ॥ जे ठेदे ते डुरजव रे ॥ षट० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ अहो शुद्ध श्रद्धा ! परमेश्वरना उत्तमांगरूप जैनदर्शन तद्रूप समयपुरुष ६ अंग ठे. १ पूर्वधरकृत त्रुटक पदनी व्याख्या ते चूर्णि २ सूत्रोक्त अर्थ ते जाष्य ३ धरादि कृत वचन मात्र रचना ते सूत्र ४ पूर्वधरकृत पदजंजना ते निर्युक्ति ५ े उपर विस्तारयुक्त टीका ते वृत्ति ६ परंपर अनुजव के० गुरु संप्रदायथी अनु- के० उतरती यथार्थ स्मृतिपूर्वक जिन्न तात्कालिक ज्ञान. आ प्रमाणे समय सिद्धांतरूप पुरुषना पूर्वोक्त चूर्णि प्रमुख ठ अंग ठे. तेने जे प्राणी, परजवनी बीक ं राखतां निर्जय थइ उछेदे, ममत्वरूप रसथी हिनाधिक जापे ते प्राणी डुरजव डुष्ट जवगामी जाणवो ॥ ८ ॥

मुद्रा बीज धारणा अक्षर ॥ न्यास अरथ विनियोगे रे ॥
जे ध्यावे ते नवि वंचीजे ॥ क्रिया अवंचक जोगे रे ॥ षट० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ मुद्रा बीज धारणा अक्षरन्यास ए बधा ध्यानना अंग ठे. ए मुद्रा बीज णादिनो अर्थ के० तात्पर्यार्थ—रहस्य तेनुं विनियोगे के० विशेषपणे विधिनुं ज्ञान. ध्यानना अंगोना रहस्यनुं मने जासन नथी अने कर्त्ताए त्रीजा पदमां जे ध्यावे पद गुंथ्युं ठे तेथी ते ध्याननुंज कथन ठे, परंतु मने जासतुं नथी, कर्त्तानो आ- कर्त्ता जाणे. तेथी जे प्राणी उपशमयुक्त, निर्ममत्वी थइ पूर्वोक्त मुद्रा बीज धा- ादिकें स्तवना विधि ध्यावे अर्थात् एकाग्रचित्तें, तदाकार वृत्तियें, तद्रूप तन्मयी त- शी तदाजिलाषी थइ ध्यान करे, जेने विषय विषयी अजिन्न जासे ते प्राणीनुं स्वरूप रूप चिंतामणि रत्न रागादिथी वा डुष्ट ममत्वी ठगोथी नवंचिजे के० ाइमां जाय नहीं. ते प्राणी अवंचक क्रियानो जोगी थाय शुद्ध सरख स्वजाविक णीनो जोगी थाय. ते मायावी वचनोथी ठगाय नही. अहीं कोइक प्रतमां ध्यावेने

ठेकाणे साधे एवो शब्द छे तेनो अर्थ एवो छे के मुद्रा बीज ...दिके मे
पने साधे ते क्रिया अवचकनो जोगी होय आ पदनु रहस्य कर्त्ता ज...मने मारुं

श्रुत अनुसार विचारी बोलु ॥ सुगुरु तथाविधि न मिले रे॥
किरियाकरी नवि साधी शकीये॥ ए विपवाद चित्त सघले रे ॥ प८०

अर्थ ॥ हे शुद्ध चेतना ! आ कालमा जेवा प्रवर्त्तने मारो कालक्षेप पण तने कहु छु जैनदर्शनना श्रुत के० सिद्धांतनु नैगमादि नयानुयायी कथन, वर्गणाए कहेता अपार छे माटे अनुसार के० ते पाठने समीप राखी विचारी विचारी बोलु छु वली सिद्धांतमा जे प्रमाणे गुरुनु लक्षण कर्युं छे, तेवा श्रद्धायत, ज्ञानी, आत्मार्थी, परोपकारी, निर्मायी, निर्ममत्वी, कथनी करणी समनपानुयायी, जिन प्रवचन विशुद्धजापी तथाविध के० तेवा प्रकारना ... याइ मने मलती नथी तेथी सूत्रमर्यादाए विचारीने बोलु तो पण शु? ... मर्यादामा रहीने साधु सघली क्रिया करी उदयमा आवेला चारित्र ... शकीए के० साधी शकतो नथी, कारण के श्रुतमर्यादाए पण चारित्र साधवु ... ठिन छे. तेथी एक तो ए अने बीजु तथाविध गुरुनो योग न मलवाथी शकु माटे जोके वेषधारी छु, तोपण कोइ पुछे के तमे कोण छो ? त्यारे ... वचने मुखथी कहु छु के हु जैननो छ्मो छु तेथी समस्त चित्तने विषवाद के० उदासीनता लागी रही छे ॥ १० ॥

ते माटे उभा करजोडी ॥ जिनवर आगल कहीएरे ॥ समय
चरण सेवा शुद्ध देजो ॥ जेम आनदघन लहीएरे ॥ प८० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ माटे हे शुद्ध चेतना ! तु, हु अने शुद्धश्रद्धा, आपणे त्रणे पण आगल बे हाथ जोडी उभा थइ विनति करीए के हे प्रभु ! तमारा शासन के० सिद्धांत अनुसार शुद्ध चारित्रनी सेवा के० प्रवर्त्तना अमने आपजो, जेम आनदना समूह पामीए अथवा हे परमेश्वर! अमने चरमावर्तन, ... परिणति परिपाक समये शुद्ध आगमोक्त चारित्रनी सेवा आपजो ... चरणकमलनी सेवा आपजो जेथी आनदघन पद पामीए॥११॥ इति नमि

॥ अथ श्रीनेमनाथजिन स्तवन ॥
॥ राग मारुणी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

अष्ट भवांतर वालहीरे ॥ तुं मुज आतमराम ॥ मनरावाला ॥

मुगति स्त्रीशुं आपणेरे ॥ सगपण कोइ न काम ॥ मन० ॥ १ ॥
घर आवोहो वालिम घर आवो ॥ मारी आशाना विसराम ॥ म० ॥
रथ फेरोहो साजन रथ फेरो ॥ साजन मारा मनोरथ साथ ॥ म० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ नेमनाथ प्रभु राजेमतिनुं पाणिग्रहण करवा तोरणे आव्या त्यारे मृगादि ने संभय देखी तेउने निर्णय करवा सारथिने कह्युं के रथ पाछो फेरवो. ते समयनां मतिनां वचनो नेमनाथजी परत्वे छे. हे परमेश्वर! तमे आठ भवथी मारा वल्लभ आठमांथी एकपण भवमां प्रीतिनी न्यूनता राखी नथी तेथी मारा आत्मानेविषे रमी रह्या छो. अंतःकरणरुप कमलनी पांखडी दीठ रमी रह्या छो. तेथी हे स्वामि! पने मुक्तिस्त्री साथे संबंध करवानुं कांइ पण काम के० जरुर नथी. मुक्ति स्त्रीतो रहित छे, हुं राजकुमरी शोभनरुपा स्त्रीरत्न छुं. जो मारा उपर मुक्तिस्त्रीने लावशो ते स्त्री मारी शोक थशे अने स्त्रीने शोकना दुःख करतां मरणनुं दुःख मोटुं नथी, े तमारे मारी प्रीतिनो नाश करवो होय तो बीजी स्त्री लावो ॥ १ ॥ माटे अहो मि! म्हारा वाला उग्रसेनना घरनेविषे पधारो. अहीं राजेमति अत्यंत रागथी रं- त थयेली पतिना फरवाथी विकल चित्त थतां शुन्य हृदय थइ भवाथी कहे छे. स्वामि! तमे मारी आशाना विसराम के० धाम छो. हे वालेसर! तमे विलंब न ो, कारणके मारी आशारूप वेल त्रुटशे तो फरी संधाशे नहीं, तेथी हे सज्जन! ने पाछो फेरवो अने मारा मनना मनोरथ पूराकरो, केमके तमारा रथने अने ा मनोरथने जेवो साथ छे तेवो साथ फरी मलशे नही ॥ २ ॥

नारीपखो श्यो नेहलोरे ॥ साच कहे जगनाथ ॥ मन० ॥
इश्वर अरधंगे धरीरे ॥ तुं मुज झाले न हाथ ॥ मन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ नारीविना स्नेह नही, जोके स्नेहनो वास अंतःकरणमां छे, परंतु नारी हलता छे, स्नेहरूप फलने उत्पन्न करनारी छे, तेथी नारी साक्षात् मूर्तिमान स्ने- ा छे. जगतना जीवो नारीविना स्नेह मानताज नथी. जो नारीविना स्नेह गणातो य तो महादेव जे सृष्टि संहारकर्त्ता कहेवाय छे ते पण पोताना अर्धांगमां पार्वतीने ा धारण करी राखे छे. तेणे तो न करवा योग्य कार्य कर्युं, तमारे तो तेम करवानुं ी. सगाइ करीने पाणिग्रहण तो सर्व जगत करे छे, तेम तमारे पण करवानुं छे, े तमे मारो हाथ झालो. ॥ ३ ॥

पशुजननी करुणा करीरे ॥ आणी हृदय विचार ॥ मन० ॥
माणसनी करुणा नहीरे ॥ ए कोणघर आचार ॥ मन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हे स्वामि! तमे पशुओनी करुणा संबंधी विचार अंतःकरणमां पशुओनी हिंसा थशे, तेथी धिक्कार छे मारी परणवानी प्रीतिने, कारण वेकी पुण्यहीन प्राणीओनी दया चिंतवी रथ फेरव्यो अने हुं तेओथी पुन्यप्रबल मनुष्यनी दया तमने न आवी आवो विचार ते कोना घरनो जोइ आव्यो जगतमा हीनमां हीन अने अधिकमां अधिक जातिवाला आवु प्रवर्त्तन नथी ॥ ४ ॥

प्रेमकल्पतरू छेदीओ रे ॥ धरीओ जोग धतूर ॥ मन० ॥
चतुराइरो कोण कहोरे ॥ गुरु मलीओ जगसूर ॥ मन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेम कल्पवृक्ष आजव संबंधी मनोवांछक छे तेम हे स्वामि! वृक्ष पण आजव संबंधी वांछाओ पूरनार छे, अर्थात् स्त्रीना सुंदररूप, हावभाव हास्य, तीक्ष्ण कटाक्ष, मनोवांछित षट्रस भोजन, अतर पुष्पादिकनी सुरभि, मनोवांछित प्रेमकल्पतरुने छेदीने हे स्वामि! तमे योगरूप धतूरो धारण कर्यो परंतु क्षुधा पिपासा, शीत उष्ण, दशमशक इत्यादि शरीरनी शातानो विनाश अशाताना कारणरूप होवाथी धतुर प्राय छे माटे हे स्वामि! आवी चतुराई शिखवनारो जगतमा सूर्य जेवो रत्नप्राय तमारे हाथ थयाथी चडी आव्या।

मारुतो एमा क्युंही नही रे ॥ आप विचारो राज ॥ मन० ॥
गजमजामे वेसता रे ॥ किसडी वधशे लाज ॥ मन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हे राजन्! मने तजीने आप जाओ छो तेमां मारी वदनामोशी किंचित् मात्र नथी केमके, तमे पोतानी इच्छाए रथ पाछो फेरव्यो, तेथी में अपराध कर्यो कोइ कहेशे नहीं जेथी मारो त्याग करो छो तेथी चित्तमा विचारजो जे समान राजाओनी सभामा ज्यारे जइने वेसशो त्यारे तमारी किसडी केटली वधशे? कोइक सहु जोवो हशे तेनो तमने जोइनेज मुखे कहेशे के तुं आवी आव्या, एम कहेशे त्यारे तमारी केवी लाज वधशे घणी शरम जेवी वात छे कांइ सगडु नथी तेथी रथ पाछो फेरवो ॥ ६ ॥

प्रेमकरे जगजन सहुरे ॥ निरवाहे ते ओर ॥ मन० ॥
प्रीत करीने छोडीदेवे ॥ तेशुं न चाले जोर ॥ मन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ससारी जीवमात्र रागी छे तेथी प्रीति करवाना अभिलाषी छे मन इन्द्रिय वांछनु कारण छे ए प्रमाणे प्रीति तो करनारा सहु छे, परंतु करेली

ऱवाह करनारा छैए के० जुदाज छे तमे तेवा नथी. तमे प्रीत तो करो छो परंतु ाने नजावतां तमने आवमतुं नथी. यथा ॥ प्रीतरीत अति कठिन हे ॥ समज छे काय ॥ जांग जखंता सोहेली ॥ लेहेरां मुश्किल होय ॥ १ ॥ तेथी हे वल्लज्ञ! मनुष्य प्रथम प्रीत बांधीने पठी ओमी नाखे तेनी साथे शुं जोर चाले? पराणे .त थती नथी ॥ ७ ॥

जो मनमां एहवुं हतुं रे ॥ निसपत करत न जाण ॥ मन० ॥
निसपत करीने छांमता रे ॥ माणस सहुए नुकसाण ॥ मन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जो आपना मनमां प्रथमथीज, तोरणथी रथ फेरवी, मने तजी देवानी ा हती तो निसपत के० मारी साथे संबंध करवो घटतो नहोतो अने हुं पण ंध करत नही. तेथी हवे विचार करो के स्त्रीमात्रनी ज्यांसुधी सगाइ थइ नथी ांसुधी तो दरेक स्त्रीने बंधन नथी, परंतु ज्यारे कोइ पुरुपनी साथे कोइ स्त्रीनो ापण संबंध थाय त्यारे ते पुरुपनी साथेज तेनो संबंध रह्यो. हवे ज्यारे संबंधी ाप स्त्रीने तजी दे त्यारे ते तजायेली स्त्रीने बीजो पुरुप रांधेली हांडली प्राये जाणे ने तेनी साथे कोइ संबंध करवा जाय तो ते पुरुपने बीजाउ कहे के तमने बीजी .इ कन्या मलती नथी, ते कन्याने तो अमुक पुरुपे तजी दीधी छे तेथी विपकन्या ुख डुपणो पण ते कन्या उपर लोको मुके. तेथी संबंध कर्या पठी कन्यानो त्याग ्तां ते कन्याने मोटुं नुकशान छे, प्रगट रीते कलंकित करवा जेवुं छे ॥ ८ ॥

देतां दान संवत्सरी रे ॥ सहु लहे वंछित पोप ॥ मन० ॥
सेवक वंछित नवी लहे रे ॥ ते सेवकनो दोप ॥ मन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ हे स्वामि! तमे रथ फेरवी घेर गया. लोकांतिक देवताए दीक्षानो अव-ार जाणी तमोने विनंति करी. जेथी तमे संवत्सरी दान देवा लाग्या. सर्व प्राणीमा-ला मनोवांछित पूर्ण करवा लाग्या. दाननो वरसाद वरसावतां छतां मारा जेवा ाम सेवक कांइपण वंछीत पामता नथी, तेथी एवी केहेवत थइ के ॥ पेंडा खावे ्का, ज्रूख्या मरे हजूरका ॥ अथवा, घरनां छैयां घंटी चाटे, पाफोसणने आटो ॥ वी वातो तमे साची करी बतावी; पण तेमां तमारो दोप नथी, तमारा सेवकनोज ोप छे. बीजा सर्वने ज्रोगकर्मनो उदय हतो तेथी तेउ तमारी पासेथी ऊव्यादि पा-या अने मारे ज्रोगोपज्रोग कर्मनो असंजव तेथी हुं न पामी, एवी रीते मारा कर्म-ोज दोप छे ॥ ए ॥

सखी कहे ए शामळोरे ॥ हु कहुं लक्षण सेत ॥ मन० ॥
इण लक्षण साची सखीरे ॥ आप विचारे हेत ॥ मन० ॥ १०॥

अर्थ ॥ आजसुधी पुरुषसवधी मारी परिक्षा साची पडी, मात्र तमारी हु बराबर करी शकी नहीं तमारी साथेनी सगाइने वखते मारा सखीओ हतु के तमारो नत्तार अतर अने बहार श्याम छे, में तेओने कह्यु के श्याम छे, परतु अंतरथी ते सेत के० उज्वल, निष्कपटी छे हवे तमे ज्यारे सबध करी मने कुवामा उतारी दोरडु काप्यु, त्यारे सखीओना वर्गनु कह्यु थयु अने मारी परीक्षा खोटी पडी ते हेत के० कारणने असत्य आप विचारी जोजो ॥ १० ॥

रागीसु रागी सहु रे ॥ वैरागीस्यो राग ॥ मन० ॥
रागविना केम दाखवोरे ॥ मुगति सुदरी माग ॥ मन० ॥११॥

अर्थ ॥ हे प्रभु ! हुं सरागणी छु तेथी आपने सरागी थवु योग्य छे जगतमां पयीज नीति छे राग राखे तेनी साथे रागनो संबध थाय, परतु रागरहितनी राग केम थाय? हु रागी तमारा उपर छु तेथी जो तमारामा राग होय तो उपर राग राखो, परतु तमारामां रागज लागतो नथी तेथी मारा उपर करीने राग करो वली मने एक विचार आवे छे के जो तमे रागी नथी तो रागने जे मार्गे मुक्तिस्त्री पामीए तेजो मार्ग जेने मुगति सुदरी मार्ग कहेवाय छे, तन पर्षदामा केम दाखवो के० प्रगट बतावो वो? तेथी जेम अत करणमा होय त्यारे तेम तमारे मुक्तिस्त्री उपर राग छे अने तेणीने सर्व समक्ष लाजनो स्मरो छो जेने अनेक नत्तार छे एवी स्त्रीने इछो छो अने मने परिहरो छो ते पोना घरनो आचार ॥ ११ ॥

एक गुह्य घटतुं नथी रे ॥ सघलो जाणे लोक ॥ मन० ॥
अनेकातिक जोगवो रे ॥ ब्रह्मचारी गतरोग ॥ मन० ॥ १२॥

अर्थ ॥ हे स्वामि ! लोको मने आवी कहे छे के तमारा नर्त्तारनो केडी र मजीने चाल्या गया में कह्यु के तेमनामा कामरूपी रोग नथी अने ते ब्रह्म तेथी गया लोको कहे छे के एक राजेमतिने तज्या तेमा शु ? अनेकातिक र अने ब्रह्मचारी कहेवाय छे तेथी जो आप ब्रह्मचारी नाम धरावता होना कह नु के आनु पर गुह्य आपने घटतु नथी लोको जाणे छे गुह्य शानु ? मांडा

ं ते अनेक जोगवे छे अने निष्कामी, ब्रह्मचारी एवुं नाम धरावो तेथी एवुं गुह्य टित छे.घटित गुह्य तो ते कहेवाय के जेने लोको न जाणी शके. चतुरनी गुप्तवात जाणी शके नही. आपनुं गुप्त तो सर्व लोकोए जाएयुं के अनेकने जोगवोछो तो एकने जोगववामां ब्रह्मचर्यनो शुं जंग थाय छे? जो ब्रह्मचर्यने अखंड तुं एवु धारता होतो अनेकांतने जोगववुं तजीयो. पण तमे तो वे घोडे चडो छो, कांतने जोगवो छो अने ब्रह्मचारी नाम धरावो छो. ॥ १२ ॥

जिण जोणी तमने जोउं रे ॥ तिण जोणी जुउ राज ॥ मन० ॥
एकवार मुजने जुउ रे ॥ तो सीजे मुजकाज ॥ मन० ॥ १३ ॥

र्थ ॥ हे स्वामी जिण जोणी के० जे जोवानी रीते हुं तमने जोउं हुं अर्थात् जे ग दृष्टिए हुं आपने निरखुं छुं. तेज सराग दृष्टिए हे राजन्! मने आप हृदय-नेत्रे जुउ. जो कृपाकरी आप एकज वखत मारा उपर दृष्टि करशो तो मारुं त कार्य सिद्ध थशे ॥ १३ ॥

मोहदशा धरी जावनारे ॥ चित लहे तत्वविचार ॥ मन० ॥
वीतरागता आदरी रे ॥ प्राणनाथ निरधार ॥ मन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ अत्यारसुधी राजेमति सखीउ साथे तथा नेमनाथजी साथे मोहद-री व्यवस्थानां वचनो बोलती हती. हवे चित्तमां मोहदशा धारण कर्या छतां स-विकरीते एकत्वजावना आवी अने तेवाज आशयने प्रसंगे, कर्त्ताए पाछली गामां "एकवार मुजने जुउ" एवुं पद मुक्युं छे तेथी मोहमयी वचनो कह्यां छतां गविकरीते एकत्वजावना आवी एम लागे छे. राजेमति विचारे छे के, मारुं आत्मद्रव्य ा आत्मप्रदेशोने आधारे छे तो मारे तेमनी साथे शुं संबंध छे ? आवो आत्म-नो विचार के० जेद राजेमति पामवाथी पोताना आत्माने कहेछे के हे आत्मा! णनाथ के० प्राणोना नाथ जे नेमनाथ स्वामी तेमणे निरधार के० निश्चयथी वीत-ता आदरी के० ग्रहण करी. तेथी नागे राग तेमने केम जेटी शके, माटे ते कोण ो हुं कोण? एम एकत्वजावना जावना हवा ॥ १४ ॥

सेवक पण ते आदरे रे ॥ तो रहे सेवक माम ॥ मन० ॥
आशय साथे चालीए रे ॥ एहीज रुडुं काम ॥ मन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे राजेमति नीतियुक्त सन्मुख दृष्टिए एकत्वजावना जावे छे. हे आ-। नेमनाथजी साथे स्वामी सेवक संबंध करवो ते योग्य हतो ? तेवा संबंधथी

तारे परवश थवु पडत अने परवश थवु ते स्त्रेग्रानारीने नरकतुल्य छे ३१
तारे प्रथम विचारवी योग्य हती पाछळथी विचार करवाथी शु सिद्धि ? ए
वीतरागता आदरी तो सेवक पण निश्चयथी तेज आदरे अने तेम करे ता०
माम के० महिमा रहे, धर्म स्थिर रहे माटे हे आत्मा ! स्वामिना मननो ज
अभिप्राय जाणी ते प्रमाणे चालीए तो तेज उत्तम काम बने सेवकनो ए ध
छे के पोतानी मरजी प्रमाणे नहीं चालतां स्वामिनी आज्ञाप्रमाणे वर्तवु॥ १५॥

त्रिविध योगधरी आदर्यो रे ॥ नेमनाथ जरतार ॥ मन० ॥
धारण पोषण तारणो रे ॥ नवरस मुगताहार ॥ मन० ॥ १६॥

अर्थ ॥ माटे श्रीनेमनाथ स्वामिए मन वचन काया, त्रिविधथी योग
तेथी मारे पण तेमज करवु ते उत्तम छे मारा मननो वल्लभ श्रीनेमनाथ मात्र
त्मिक गुणोनो आधार छे, वळी गुणोनु पोषण करनारा पण तेज छे तेमन भ
व्यने ससारसमुद्रथी तारनार पण तेज छे वळी तेज मारा स्वामि नवरस
हार छे शृंगार, हास्य, करुणा, रौद्र, वीर, जयानक, बिजत्स, अद्भूत अने शा
नव रस छे तेमा निरूपम आत्मिकस्वरूप ते अद्वितीय शृगार छे
पत्नी जेम पुरुषनो प्रकृतिथी वियोग तेथी अर्तीन्द्रियनो हर्षोत्कर्ष ते परम हास्य
जतुने अजयदान देवानी वृत्ति ते करुणा छे कर्मने विडारवानी वृत्ति ते रौद्र ए
सर्व रसनो विचार यथार्थरीते करवो विशेष लखाण वधवाथी विस्तार कर्यो नथी।

कारणरूपी प्रजु जज्योरे ॥ गण्यो न काज अकाज ॥ मन० ॥
कृपाकरी मुज दीजीए रे ॥ आनंदघन पदराज ॥ मन० ॥ १७॥

अर्थ ॥ हे प्रजु ! में आपनी कारणरूपे सेवा करी अर्थात् मारा मनमा
स्वरूपरूप कारण प्रवर्त्तशे तो मारु आत्मस्वरूपरूपकार्य सिद्ध थशे एवी
तमारु सेवन करता में करवा नहीं करवा योग्य काइ गण्यु नही जेम संसार
ब्दादिनु सेवन ते करणीय अने वैराग्यनु सेवन ते अकरणीय एरीते वनेने
णता मात्र परमेश्वरनु ज सेवन कर्यु माटे हे परमेश्वर ! मारा उपर कृपा करी
सन्न थइ मने आनदघन के० निर्वाणपदरूप राज्य आपो ॥ १७ ॥ इति श्रीने
जिनस्तवन इति श्रीआनदघनजी कृत बावीसी आ बावीस स्तवननो बाळावबो
नसारजीए कृष्णगढमा रही सवत् १८६६ ना जादरवासुद १४ ना रोज
कर्यो ते प्रमाणे आशय लइ छापता जूल थइहोय ते वाचनारे सुधारी वाचवु

। प्रत उपर आनंदघनजीना केला बे स्तवनो हता ते पोतानाज करेला हता अने
उपर ज्ञानविमलसूरिए बालावबोध कर्यो छे. ते हवे पछी राख्या छे ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ राग सारंग ॥ रसीयानी देशी ॥

ध्रुवपदरामीहो स्वामि माहरा ॥ निःकामी गुणराय ॥ सुग्यानी ॥
निजगुण कामीहो पामी तुं धणी ॥ ध्रुव आरामीहो थाय ॥ सु०॥ध्रु०॥१॥

अर्थ ॥ ध्रुव के० निश्चलपद जे सिद्धपणुं तेना रामि के० रमणहार प्रभु ते मारा
मि छे, वली कामकंदर्पना अभिलाष रहित छे तेथी निष्कामी छे. अष्टगुण युक्त
थी गुणराय छे. अव्याबाध सुखना जोगी छे. केवलज्ञान युक्त होवाथी सुज्ञानी छे.
ना गुणना अभिलाषी छे एटले स्वस्वभाव प्रगट थयो तेनाज अर्थी छे. सम्यक्
जीवो तमारा जेवो धणी पामी ध्रुवपद आरामी के० अचल सुखवाला आत्मारामी
. कारणके जे परमात्माने सेवे ते परमात्मा थाय ॥ १ ॥

सर्वव्यापि कहे सर्व जाणंगपणे ॥ परपरिणमन सरूप ॥ सु० ॥
पररूपें करी तत्वपणुं नही ॥ स्वसत्ता चिद्रूप ॥ सु० ॥ ध्रु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हे प्रभु! तमने केटलाएक सर्वव्यापि कहे छे. तमे सर्वज्ञ होवाथी ज्ञान-
पे सर्वव्यापि छो एवी रीते आरोपें घटे छे, परंतु तेउ जो वस्तुधर्मे सर्वव्यापि
तो दोष उपजे छे; केमके जे परमां व्यापे ते परपणे परिणमवुं थाय त्यारेज
र अने परपरिणमन स्वरूप थवाथी परमात्म द्रव्यने अस्थिरस्वभाव तथा अन-
स्वभावरूप दूषणो थाय. वली पररूपें थतां, अन्य द्रव्यरूप थवाथी तत्वपणुं रहे
, माटे पोतानी सत्ताज चिद्रुप ज्ञानस्वरूप छे तेनाथी तत्वपणुं कहेवाय ॥ २ ॥

ज्ञेय अनेक हो ज्ञान अनेकता ॥ जल भाजन रवि जेम ॥ सु० ॥ द्रव्य
एकत्वपणे गुण एकता ॥ निजपद रमताहो खेम ॥ सु० ॥ ध्रु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली ज्ञेय के० सर्वद्रव्य ते अनेक छे तेने ज्ञाने करी जाणे तेथी आत्मानुं
। अनेक छे. ज्ञेयना भेदथी ज्ञानना पण अनेकरूप छे. जेमके सूर्य एक छे तनां
भाजनमां प्रतिबिंब पडतां अनेक जोनारने पृथक् पृथक् देखाय छे, तेमज ज्ञान गु-
वेकरणभूत सर्व आत्मभाववर्त्तु स्थानरूप जे आत्मद्रव्य तेनुं तथा प्रकाशरूप गुणनुं
रूप छे, परंतु पर्यायरूपें अनेकता छे. ज्ञायकरूप कार्य अभेदें ज्ञानगुण एक छे
। अन्योन्य प्रकाश करवाथी ते पृथक् पृथक् लागे छे. एप्रमाणे सर्वगुण पोतपोतानुं
जे द्रव्य तेमां रमतां थकां क्षेम कल्याण छे अर्थात् कोइ गुण पर परिणामी नथी.

परक्षेत्रे गत ज्ञेयने जाणवे ॥ परक्षेत्रे थयुं ज्ञान ॥ सु० ॥
अस्तिपणुं निजक्षेत्रे तमे कह्युं ॥ निर्मलता गुणमान ॥ सु० ॥

अर्थ ॥ स्व अवगाहनाथी पर के० अन्य क्षेत्रे रह्यु जे जीवद्रव्य तथा
तेने मात्र जाणवाथी, ज्ञान परक्षेत्री थयु, परतु जे गुणी होय ते गुणथी
होय तेथी ज्ञान निज क्षेत्रे के० आत्माने विषे व्यापकपणे रह्यु ठे तेथी
अस्तिपणु कह्यु ज्ञानमां स्वजावे निर्मलता ठे तेथी तेमा सर्वद्रव्य ९ ,
ठे परतु ज्ञान क्षेत्रमा ज्ञेय जता नथी अने ज्ञेयमा ज्ञान जतु नथी ॥ ४

ज्ञेय विनाशेहो ज्ञान विनिश्वरु ॥ काल प्रमाणेरे थाय ॥ सु० ॥
स्वकाले करी स्वसत्ता सदा ॥ ते पररीते जाय ॥ सु० ॥ ध्रु० ॥ ५

अर्थ ॥ कोइ कहे के ज्ञेय जे घटपटादि तेना विनाशथी ज्ञान पण वि
अतीत अनागत वर्त्तमानने परावर्त्ते, जे अनागत पर्याय ते वर्त्तमानपणु
वर्त्तमान पर्याय ते अतीतपणु पामे ते सर्व पर्यायनु जासन ज्ञानमा ठे जासन
रीते परिणमे ठे तेथी ज्ञानमध्ये विनाशी धर्म ठे तेने उत्तर के, स्वकाळे कर
उत्पादव्ययरूप परिणमन जोता ज्ञान उत्पादव्ययरूप ठे, तोपण तेनो स
कदापि परसत्तापणु पामतो नथी परानुयायी चाल न ग्रहण करवाथी स्वरूप

परजावे करी परता पामता ॥ स्वसत्ता थिर ठाण ॥ सु० ॥ आत्म
चतुष्कमयी परमा नही ॥ तो केम सहुनोरे जाण ॥ सु० ॥ ध्रु० ॥

अर्थ ॥ वली परजावे करी के० परजावने जाणवाथी ज्ञान ते पर था
परतापणु पामे, परतु ज्ञान स्वसत्तारूप ठे, स्थिर स्थानक ठे माटे स्वसत्तारू
कदापि परपणु पामे नहीं अर्थात् आत्मचतुष्कमयीपणु ते परमा न पामीए
के स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल, स्वजावपणे आत्मानो धर्म होय ते अन्यमा न पा
निरधार कर्यो अहीं कोइ पूठे जे, त्यारे ज्ञान सर्व परद्रव्यनु जाण ठे एम क

अगुरु लघु निज गुणने देखता ॥ द्रव्य सकल देखंत ॥ सु० ॥
साधारण गुणनी साधर्म्यता ॥ दर्पण जलने दृष्टांत ॥ सु० ॥ ध्रु० ॥

अर्थ ॥ तेने उत्तर आपे ठे जीवादि सर्व द्रव्यमा अगुरुलघु धर्म ठ
द्रव्यमा सामान्य ठे जीवमा पण सर्वव्यापि ठे ते पोतानो अगुरुलघुगुण
सर्व द्रव्यने देखे, सर्वने जाणे दर्शनोपयोगे सामान्य जाणे, ज्ञानथ
जाणे साधारण गुणने, नित्यत्वादिकने तथा अगुरुलघुत्वादिकने समान

ने जाणवे सर्वनो जाण थाय. जेम आरसीमां सर्वनुं प्रतिबिंब पमे ठे, पण जेनुं प्रतिबिंब आरसीमां पमे ठे, ते ते वस्तुमां आरसी प्रवेश करती नथी, तेम ते ते तु पण आरसीमां प्रवेश करती नथी. तेवीज रीते जलनुं दृष्टांत पण समजवुं. दृष्टांतो मुजब ज्ञान ज्ञेयमध्ये परिणमतुं नथी अने ज्ञेय ज्ञानमध्ये परिणमतां नथी रीते स्व अवगाहनागत ज्ञानगुण ते आत्मानुं स्वरूप ठे.

श्रीपारसजिन पारसरस समो ॥ पण इहां पारस नाहिं ॥ सु० ॥
पूरण रसीउं हो निजगुण परसनो ॥ आनंदघन मुज मांहि ॥सु०॥ ध्रु०॥ए॥

अर्थ ॥ एवा पार्श्वनाथ जगवान पार्श्वमणि समान ठे. जेम पार्श्वमणिनो स्पर्श ां लोह ते कनक थाय तेम पार्श्वप्रजुना योगथी आत्मारूप सेवक परमात्मा थाय. र्श्वनाथ जगवानमां पार्श्वमणिनो रस नथी परंतु पोताना अनंतज्ञानादि गुणरूप ठे ते अनंतज्ञानादि मारामां पण ठे, पण सत्तारूपे ठे अने परमात्मामां प्रगट ठे ी जगवान पूज्यठे ॥ ए ॥ इति पार्श्वजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तवन ॥

॥ राग धन्याश्री ॥

वीर जिनेश्वर चरणे लागुं ॥ वीरपणुं ते मागुं रे ॥ मिथ्या
मोह तिमिर जय जागुं ॥ जितनगारु वागुं रे ॥ वी० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ श्री महावीर परमात्माना चरणमां नमस्कार करीने हुं क्षायकवीर्यपणुं ागुं हुं जे वीर्यना उल्लासथी मिथ्यात्व के० कुश्रद्धा अने मोह के० मूढता तद्रूप तिमिर के० अंधकारनो जय दूर कर्यो ठे एवा हे प्रजु! तमे शत्रुनो नाश करीने जीत नगारु वगाड्युं तेवुं वीर्य हुं मागुं हुं. जे वीर्यथी हुं पण कर्मशत्रुने जीतुं ॥ १ ॥

ठद्मस्थ वीरय लेश्यासंगे ॥ अभिसंधिज मति अंगे रे ॥
सुक्ष्म थूल क्रियाने रंगे ॥ योगी थयो उमंगे रे ॥ वी० ॥२॥

अर्थ ॥ हे प्रजु! ठद्मस्थवीर्य ते क्षयोपशमवीर्य ते लेश्याए जे परिणम्यो ते अभिसंधिजवीर्य अनेक कर्म ग्रहण करे. जे मतिपूर्वक उपयुक्तवीर्य ते अभिसंधिज वीर्य कहीए. ते सूक्ष्म क्रिया कंपनरूप, स्थूलक्रिया आकुंचनप्रसारणरूप एटले ाव योग तथा द्रव्ययोगरूप. सूक्ष्म तथा स्थूल क्रियाने रंगे योगवंत थयो थको आत्मा संसारमध्ये उमंग पामी रह्यो ठे. आ विचार कम्मपयमी ग्रंथमां ठे ॥ २ ॥

असख्य प्रदेशे वीर्य असंखें ॥ योग असंखित कंखेरे ॥ पुद्गल
गण तेणे ले सुविशेषें ॥ यथाशक्ति मति लेखे रे ॥ वी० ॥ ३॥

अर्थ ॥ आत्माना असख्याता प्रदेश छे एकेका प्रदेशे असख्याता वीर्य छे, एम कम्मपयडीना योगस्थानकमा कह्युं छे एरीते जीवने योग पण असंख्य छे जे क्षयोपशमी वीर्य असख्यातुं छे ते योगरूप छे, तेणे करी जीव पुद्गल समूहने ग्रहण करे छे योगविशेषे, विशेष कर्म ग्रहणे करे जेवी योग यथाशक्ति कर्मनुं दल जीव ग्रहण करे, एम समजवुं ॥ ३ ॥

उत्कृष्टे वीरयने वेसें ॥ योग क्रिया नवि पेसे रे ॥ योगतणी
ध्रुवताने लेसें ॥ आतम शक्ति न खेसे रे ॥ वी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ ज्यां उत्कृष्ट के० अनतवीर्य त्या कर्म न लागे ज्या चलनीय त्या कर्म जे प्रदेशोमा उत्कृष्ट वीर्य होय त्यां योगक्रिया जे कर्म ग्रहणरूप क्रिया ते न शके नहीं आत्माना आठ रूचक प्रदेशोमा कर्मग्रहणरूप योगक्रिया नथी योगनी ध्रुवता के० निश्चलता छे ज्या योगनी निश्चलता त्या आत्मशक्तिने कर्म रुधी शके नहीं, अर्थात् ते प्रदेशे आवरण न थाय ॥ ४ ॥

कामवीर्यवशे जेम जोगी ॥ तेम आतम थयो जोगी रे ॥ सूरपणे
आतम उपयोगी ॥ थाय तेहने अयोगी रे ॥ वी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेम काम के० अजिलाषना वीर्यना वशथी जेम जोगी पुरुष सर्व पर वाळे छे, तेम आत्मा परजावनो जोगी थयो छे अने तेज आत्मा शुरवीर थई स्वरूप विना परजावमा प्रवेश करवो नहीं एवी प्रतिज्ञा धारण करी आत्मोपयोगी थाय तो अयोगीपणुं प्रगट करे एवुं शुरवीरपणुं हे वीरपरमात्मा! तमारुं घणुं उत्कृष्ट

वीरपणुं ते आतम ठाणे ॥ जाण्युं तुमची वाणे रे ॥ ध्यान
विनाणे शक्ति प्रमाणे ॥ निज ध्रुवपद पहिचाणे रे ॥ वी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एवुं वीरपणुं ते आत्मस्थानकमा अर्थात् आत्मामाज छे, एम में तमारी वाणीथीज जाण्युं छे तेवा ध्यानथी, विज्ञानथी तथा शक्तिना प्रमाणथी आत्मानुं मूल वीर्य शूरत्व चिंतवीए तेम तेम आत्मा तेमा रमीने पोतानुं ध्रुव निश्चल परमानंदपद तेने पहिचाने के० ओळखे ॥ ६ ॥

आलंबन साधन जे त्यागे ॥ परपरिणतिने जागे रे ॥ अक्षय
दर्शन ज्ञान वैरागे ॥ आनंदघन प्रजु जागे रे ॥ वी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ परंतु परने अवलंबन करी जे साधन करवुं, तेनो त्याग करवाथी परावलं-
[ब]णुं छंडाय तो परपरिणति भागे के० जाय अने ए प्रमाणे जे करे ते अक्षय अ-
[प्र]पाति क्षायिक केवलदर्शन केवलज्ञान अने वीतरागता के० यथाख्यात चारि-
[त्र]ं लयलीन थयो थको आनंदघन के० परमानंदमय प्रभुता जाग्रत करे ॥ ७ ॥
श्रीमहावीर जिनस्तवन. श्रीज्ञानविमलसूरि तथा पंडित देवचंद्रजीए आ चो-
[वी]ना पाछला बे स्तवनो कर्या छे. ज्ञानविमलसूरिजीए बालावबोध चोवीसे स्त-
[वन] उपर कर्यो छे. देवचंद्रजीए कर्यो नथी. अहीं ज्ञानसारजीनो बालावबोध छाप्यो
अने हवे पछीना तेमनाज बे स्तवनो छापेला छे.

॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ शांतिजिन एक मुज विनति ॥

पासजिन ताहरा रूपनुं ॥ मुज प्रतिभास केम होयरे ॥ तुजमुज
सत्ता एकता ॥ अचल विमल अकल जोयरे ॥ पास० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अहो पार्श्वनाथ प्रभु! तमारा स्वरूपनो मने प्रतिभास के० प्रकर्षे आभास
[री]ते साक्षात्कार केम थाय? विचार करतां तमे अने हुं सत्ताए एक छीए तेथी
[भि]न्न छीए अने भिन्नभावीपणुं थया विना तमारा स्वरूपनो मने प्रतिभास केम
[था]य? वली निश्चयनयथी हुं मारा स्वरूपने विचारुं तो जेम तमे स्वरूपथी त्रणेकाल
[अच]ल छो तेम हुं पण मारा स्वरूपथी चल्यो नथी. वली जेम तमे निर्मल तेम हुं पण
[निश्च]यथी कर्ममल रहित, जेम तमने कालादिके कल्या नथी तेम हुं पण कालादिकथी
[अक]ल हुं, माटे ए त्रणे रीते एकता देखीने अहो पार्श्वप्रभु! तमारुं रूप भिन्नपणे
[ओळ]ख केम करी शकुं? ॥ १ ॥

मुज प्रवचन पक्षथी ॥ निश्चय भेद न कोयरे ॥ व्यवहारे
लखी देखीए ॥ भेद प्रतिभेद बहु लोयरे ॥ पास० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे परमात्मा उत्तर आपे छे. हे आनंदघन! निश्चयनयनी अपेक्षाए तो
[पर]मात्मा अने जीवात्मामां भिन्नभावीपणुं अर्थात् भेद कांइ नथी अने व्यवहार
[नय]नो आश्रय करी जोइए तो अर्थात् हेतुप्रतिहेतुपुर्वक हृदयनेत्रे अवलोकन
[की]ए तो जीवना लोय के० लोकने विषे बहु के० घणां भेद प्रतिभेद थाय. एक दे-
[व]ा एक मनुष्य तेज जीवने नरकपणुं प्राप्त थाय ए रीते भेद प्रतिभेद घणां थाय॥२॥

बंधन मोख नहीं निश्चयें ॥ व्यवहारें भज दोयरे ॥ अखंडित
अबाधित सोय कदा ॥ नित अबाधित सोयरे ॥ पास० ॥ ३

अर्थ ॥ इहां दृष्टांत कहेछे जेमपुद्गल द्रव्यमा घृत उपजवानीशक्ति ... हीकां तृणआहारथी धेनुदुध आपेछे तेदुधमा घृत नीपजवानीशक्ति ... अनुमान प्रमाणें तृणमां घृतशक्तिजाणी पण कहेवायनही माटे तेनेओघशक्ति ... अने जोतृणने दुग्धादिकजावेके० दूध दहीप्रमुखने परिणामें घृतशक्ति ... आपीथकी जनके० लोकना चित्तमा सुहायछे माटे तेने समुचितशक्ति ... नतरकारणमा समुचितशक्ति कहेची अने परपरकारणमा ओघशक्ति कहेवी एवेनाज १ अन्यकारणता २ प्रयोजनता एवेबीजानाम पणकहेछे तेजाणवा ॥ ७ ॥

धरमशक्तिप्राणीनेपूरव ॥ पुद्गलनेआवर्त्तरे ॥ ओघेंसमुचित
जेमवलीकहियें ॥ छेहलेंतेआवर्त्तरे ॥ जिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवे एशक्ति ते आत्मद्रव्यमा फलावेछे जेम प्राणीके० जव्यजीवने के० पहेला अनता पुद्गल परावर्त्तवित्या तेमापण ओघेके० सामान्य धर्मशक्ति जोनकहिये तो छेहेले पुद्गल परावर्त्तते शक्ति आवेनही नासतो विघतेजाव ... वचनात् अने छहेले पुद्गल परावर्त्तधर्मनी समुचितशक्ति कहियें अतएव पुद्गलपरावर्त्तजाव वालकाल कह्युछे अने छहेलो पुद्गल परावर्त्तधर्म ... अचरम परिअट्टेसु कालोजव वालकालमो जणिओ ॥ चरमो उधम्मजुवण ... चित्तजेउत्ति ॥ १ ॥ एयोगनीवीजीवीसीमध्ये कह्युछे ॥ ८ ॥

कारयजेदेशक्तिजेदइम ॥ व्यवहारेंव्यवहरियेरे ॥ निश्चय
नानाकारयकारण ॥ एकरूपतेधरियेंरे ॥ जिन० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ एमएकेकाकार्यनी ओघसमुचितरूप अनेकशक्तिएकद्रव्यनी ... नाजेदेंशक्तिनोजेदथायछे तेव्यवहारनयेंकरी विवहरियें केमके ... वह... णजेदमानेछे अने निश्चयनयथी द्रव्यना नानाप्रकारना कार्यकारण ते एकशक्तिना ... टदयमाधरियें नहीतोसजावजेदेंद्रव्यजेदथाय अनेव्यवहारनयें ते तेकार्य... हायें एकनेअनेक कार्यकारण सजावमानता कोइदोपनथी कारणांतरनी ... जावमाज अतर्जूतछे तेमाटे तेनुपण निष्फलपणु नथाय ... रणकार्यतेमिथ्याछे आदावतेचयन्नास्ति वर्तमानेपितत्तथा इतिवचनात् ... कल्पनारहित शुद्ध अविचलितरूप द्रव्यजछे एम जाणवु एशक्तिरूप द्रव्य ...

गुणपर्यायविगतवहुजेदें ॥ निजनिजजातिवरतेरे ॥ शक्ति
रूपगुणकोइकजापे ॥ तेनहिमारगनिरतेरे ॥ जिन०॥१०॥

अर्थ ॥ हवे व्यक्तिरूपगुणपर्यायवखाणेछे तेगुणपर्यायनीव्यक्तिबहुभेदेके० अने-
कारें निजनिजजाति सहभाविक्रमभावि कल्पनाकृत आपआपणे स्वभावेवर्तेछे को-
दिगंबरानुसारी ते शक्तिरूपनेजगुण भाषेके० कहेछे ते आवीरीतेजे जेम द्रव्यगुण-
यनुं कारण द्रव्यछे तेमगुणपर्यायनुं कारण गुणछे द्रव्यपर्यायद्रव्यनो अन्यथा-
। जेम नरनारकादिक अथवा द्व्यणुक त्र्यणुकादिक गुणपर्याय गुणनो अन्यथा-
। नही जेममतिश्रुतादिक विशेष अथवा भवस्थसिद्धादि केवलज्ञानविशेष एम
द्रव्य बीजोगुण एजातिशाश्वत अने पर्यायथी अशाश्वत एम आव्युं एम कहेछे
नेरतेके० रुडेमार्गे नही केमके एकल्पना शास्त्रथी तथा युक्तियें मिलेनही ॥ १० ॥

पर्यायथीगुणभिन्नभाषीउं ॥ संमतिग्रंथेव्यक्तिरे ॥ जेहनो
भेदविवक्षावशथी ॥ तेकेमकहियेंशक्तिरे ॥ जिन०॥११॥

अर्थ ॥ तेहनेउत्तरकहेछे जेपर्यायथकीगुणते भिन्नके० जूदोभाष्योनथी एमसंमति ग्रं-
'विषे व्यक्तिके० प्रगटअक्षरेकह्युंछे गाथा ॥ परिगमणंपज्जाउं अणेगकरणे गुणत्ति-
ठा ॥ तहविणगुणत्तिभणइ पज्जवणयदेशणाजह्मा ॥१॥ अर्थ ॥ जेम क्रमभाविपणुं
यनुंलक्षणछे तेमअनेकपणुंकरवुं तेपणपर्यायनुंलक्षणछे द्रव्यतो एकजछे अनेज्ञान-
नादिकभेदकरेछे तेपर्यायछे पणगुणनकहियें केमके द्रव्यपर्यायनीदेशना भगवंतनीछे
द्रव्यगुणनीदेशनानथी इतिगाथार्थ ॥ इहांकोइपुछे जे एरीतेंजो गुणते पर्यायथीभि-
थी तोद्रव्यगुणपर्याय एत्रणनांनाम किमकह्योछो तेमनेकहेवुंजे विवक्षाके०
नयनीकल्पना तेहथीजेम तेलस्यधारा इहां ते लने धारा भिन्नकहीदेखाड्या पण
अनेतेलनीधारा भिन्ननथी तेमसहभावी क्रमभावी कहीनें गुणपर्याय भिन्नकही-
ड्या पणपरमार्थेभिन्ननथी एरीतें जेहनोभेद उपचरितछे तेहनेंशक्तिकेमकहियें
उपचरित गायदूजेनही तेम उपचरित गुण तेपणशक्तिधरेंनही ॥ ११ ॥

जोगुणत्रीजोहोएपदारथ ॥ तोत्रीजोनयलहीयेंरे ॥ द्रव्या
रथपर्यायारथनय ॥ दोइजसूत्रेकहीयेंरे ॥ जिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेजेगुणनेपर्यायथीभिन्नमानेछे तेहनेदूषणआपेछे के जोगुणएहवोत्रीजोपदा-
व्यपर्यायथी जूदोभावहोय तोनयपणत्रीजो लहीयेंके०पामियें पणतेतो किहांकह्यान-
सूत्रमांहेतो १ द्रव्यार्थ२ पर्यायार्थएबेहुजनयकह्याछे अनेजोगुण होय तोत्रीजोगुणार्थ-
रणकह्योजोइयें उक्तंचसंमतौ दोउणणयाभगवया दव्वठियपज्जवठियाणिपया ॥ जइ-
गुणोविहुंतो गुणठियणउविजुज्जंतो ॥१॥ जंचपुण भगवया तेसुसुत्तेसुगोयमाईणं ॥ प-
सणाणीयया वागरियातेणपज्जाया ॥२॥ रूपादिकनें गुणकहीनें सूत्रेबोलाव्यानथी प-

अर्थ ॥ इहां दृष्टांत कहेछे जेमपुद्गल द्रव्यमां घृत उपजवानीशक्ति
हीकां तृणआहारथी धेनुदुध आपेछे तेदुधमा घृत
अनुमान प्रमाणें तृणमा घृतशक्तिजाणी पण कहेवायनही माटे तेनेउंघशक्ति
अने जोतृणने दुग्धादिकजावेके० दूध दहीप्रमुखने परिणामे घृतशक्ति
जावीथकी जनके० लोकना चित्तमा सुहायछे माटे तेने समुचितशक्ति कहि
नंतरकारणमा समुचितशक्ति कहेवी अने परपरकारणमा उंघशक्ति कहेवी
एवेनाज १ अन्यकारणता २ प्रयोजनता एवेबीजानाम पणकहेछे तेजाणवा॥

धरमशक्तिप्राणीनेपूरव ॥ पुद्गलनेआवर्त्तरे ॥ उंघसमुचित
जेमवलीकहियें ॥ छेहलेतेआवर्त्तरे ॥ जिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवे एशक्ति ते आत्मद्रव्यमा फलावेछे जेम प्राणीके० जव्यजीवने
के० पहेला अनता पुद्गल परावर्त्तविरया तेमापण उंघेके० सामान्ये धर्मशक्ति
जोनकहियें तो छेहेले पुद्गल परावर्त्तते शक्ति आवेनही नासतो विद्यतेजाव
वचनात् अने छहेले पुद्गल परावर्त्तधर्मनी समुचितशक्ति कहियें अतएव
ज्ञलपरावर्त्तजाव बालकाल कह्युछे अने छहेलो पुद्गल परावर्तधर्म यौवनकाल
अचरम परिअट्टेसु कालोजव बालकालमो जणिउं ॥ चरमो उधम्मजुवण
चित्तजेउत्ति ॥ १ ॥ एयोगनीबीजीवीसीमध्ये कह्युछे ॥ ८ ॥

कारयजेदेशक्तिजेदइम ॥ व्यवहारेव्यवहरियेरे ॥ निश्चय
नानाकारयकारण ॥ एकरूपतेधरियेरे ॥ जिन० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ एमएकेकाकार्यनी उंघसमुचितरूप अनेकशक्तिएकद्रव्यनीपा
नाजेदेशक्तिनोजेदथायछे तेव्यवहारनयेंकरी विवहरियें केमके व्यवह
णजेदमानेछे अने निश्चयनयथी द्रव्यना नानाप्रकारना कार्यकारण ते एकशक्ति
हृदयमाधरियें नहीतोखजावजेदेंद्रव्यजेदथाय अनेव्यवहारनयें ते
हायें एकनेअनेक कार्यकारण स्वजावमानता कोइदोषनथी
जावमाज अतर्जूतछे तेमाटे तेनुपण निष्फलपणु नथाय
रणकार्यतेमिथ्याछे आदावतेचयन्नास्ति वर्तमानेपितत्तथा इतिवचनात्
कल्पनारहित शुद्ध अविचलितरूप द्रव्यजछे एम जाणवु एशक्तिरूप

गुणपर्यायविगतबहुजेदें ॥ निजनिजजातिवरतेरे ॥ शक्ति
रूपगुणकोइकजापे ॥ तेनहिमारगनिरतेरे ॥ जिन०॥१०॥

अर्थ ॥ हवे व्यक्तिरूपगुणपर्यायवखाणेछे तेगुणपर्यायनीव्यक्तिबहुभेदेंके० अने-कारें निजनिजजाति सहभाविक्रमभावि कल्पनाकृत आपआपणे स्वभावेवर्तेछे को-दिगंबरानुसारी ते शक्तिरूपनेजगुण भाषेके० कहेछे ते आवीरीतेजे जेम द्रव्यगुण-यनुं कारण द्रव्यछे तेमगुणपर्यायनुं कारण गुणछे द्रव्यपर्यायद्रव्यनो अन्यथा-। जेम नरनारकादिक अथवा द्व्यणुक त्र्यणुकादिक गुणपर्याय गुणनो अन्यथा-। नही जेममतिश्रुतादिक विशेष अथवा भवस्थसिद्धादि केवलज्ञानविशेष एम द्रव्य बीजोगुण एजातिशाश्वत अने पर्यायथी अशाश्वत एम आव्युं एम कहेछे नेरतेके० रुडेमार्गे नही केमके एकल्पना शास्त्रथी तथा युक्तियें मिलेनही ॥ १० ॥

पर्यायथीगुणभिन्नभाषीउं ॥ संमतिग्रंथेव्यक्तिरे ॥ जेहनो
भेदविवक्षावशथी ॥ तेकेमकहियेंशक्तिरे ॥ जिन०॥११॥

अर्थ ॥ तेहनेउत्तरकहेछे जेपर्यायथकीगुणते भिन्नके० जूदोभाष्योनथी एमसंमति ग्रं-विषे व्यक्तिके० प्रगटअक्षरेकह्युंछे गाथा ॥ परिगमणंपज्जाउं अणेगकरणं गुणत्ति-हा ॥ तहविणगुणत्तिभणइ पज्जवणयदेशणाजह्मा ॥१॥ अर्थ ॥ जेम क्रमभाविपणुं यनुंलक्षणछे तेमअनेकपणुंकरवुं तेपणपर्यायनुंलक्षणछे द्रव्यतो एकजछे अनेज्ञान-नादिकभेदकरेछे तेपर्यायछे पणगुणनकहियें केमके द्रव्यपर्यायनीदेशना भगवंतनीछे द्रव्यगुणनीदेशनानथी इतिगाथार्थ ॥ इहांकोइपुछे जे एरीतेंजो गुणते पर्यायथीभि-थी नोद्रव्यगुणपर्याय एत्रणनांनाम किमकह्योछो तेमनेकहेवुंजे विवक्षाके० नयनीकल्पना तेहथीजेम तैलस्यधारा इहां ते बने धारा भिन्नकहीदेखाड्या पण अनेतेलनीधारा भिन्ननथी तेमसहभावी क्रमभावी कहीनें गुणपर्याय भिन्नकही-ड्या पणपरमार्थेंभिन्ननथी एरीतें जेहनोभेद उपचरितछे तेहनेंशक्तिकेमकहियें उपचरित गायदूजेनही तेम उपचरित गुण तेपणशक्तिधरेंनही ॥ ११ ॥

जोगुणत्रीजोहोएपदारथ ॥ तोत्रीजोनयलहीयेंरे ॥ द्रव्या
स्थपर्यायारथनय ॥ दोइजसूत्रेकहीयेंरे ॥ जिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेजेगुणनेपर्यायथीभिन्नमानेछे तेहनेदूषणआपेछे के जोगुणएहवोत्रीजोपदा-व्यपर्यायथी जूदोभावहोय तोनयपणत्रीजो लहीयेंके०पामियें पणतेतो किहांकह्यान-सूत्रमांहेतो १ द्रव्यार्थ२ पर्यायार्थएवेहुजनयकह्याछे अनेजोगुण होय तोत्रीजोगुणार्थ-नयकह्योजोइयें उक्तंचसंमतौ दोउणणयाभगवया दव्वट्ठियपज्जवट्ठियाणियया ॥ जइ-गुणोविहुंतो गुणट्ठियणउविजुजंतो ॥१॥ जंचपुण भगवया तेसुसुत्तेसुगोयमाईणं ॥ प-सणाणीयया वागरियातेणपज्जाया ॥२॥ रूपादिकनें गुणकहीनें सूत्रेबोलाव्यानथी प-

एवन्नपज्जवा गधपज्जवा इत्यादिकपर्यायशब्दे बोलाव्या छे तेमाटेपर्याय कहियें। गुण कहियें नही अने एगगुणकालए इत्यादिकठामें जे गुण शब्दछेते गणितशा सिद्धपर्यायविशेषसरयावाचीछे पणतेवचनगुणास्तिकनयविषयवाचीनथीउक्तचसमति ये जपइअन्निसमए एगगुणोदसगुणोअणतगुणो ॥ रूवाइपरिणामो जन्नइतम्हागुण सेसो ॥१॥ गुणसद्दमतरेणावि तणुपज्जवविसेससखाण ॥ सिज्झइ नवरसखाणे॥ धम्मोणय गुणोत्ति ॥ २ ॥ जहदससुदसगुणमिय ॥ एगमिदसत्तण समचेव ॥ हियमिविगुणसद्दे तहेवइयपिदठव ॥ ३ ॥ एम गुण ते परमार्थ दृष्टियें पर्याय जिन्न नथी तो तेने द्रव्यनी परें शक्तिरूप केवी रीतें कहियें ॥ १२ ॥

जोगुणदलपर्यवनुहोवे ॥ तोद्रव्यैंसुंकीजेरे ॥ गुणपर्याय
पटंतर केवल ॥ गुणपर्याय कहीजेरे ॥ जिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेजेपर्यायनु दलतेगुणछे माटे गुणनेजेशक्तिरूपकहेछे तेहने दूषणआपे जोगुणपर्यायनु दलके० उपादानकारणहोय तोद्रव्यसुकीजे द्रव्यनोकाम गुणेजकीध माटे १ गुण २ पर्याय एबेजपदार्थकहो पणत्रीजोद्रव्यपदार्थनहोय कोइकहेसे द्रव्यपर्याय तथागुणपर्यायरूपकार्यजिन्न छे तेमाटे एकद्रव्य बीजुगुणरूप कारणजि कल्पियें एम कहेछे तेजूठो छे केमके कार्यमाकारणशब्दनोप्रवेश छे तेथीकारणज कार्यजेद सिद्धथाय अनेकार्यजेदसिद्धथयोहोय तो कारणजेद सिद्धथाय नहिका न्योन्याश्रय नामेदूषणउपजेमाटे गुणपर्याय जे कहियें ते [illegible] नो जे पटतर जे दकल्पनारूप तेथीजकेवलसजवेछे [illegible] र्याय ए प्र नामकहियें छेयें [illegible]

एक अनेकरूपथी [illegible]
राधेयादिक जावें ॥ [illegible]

अर्थ ॥ एणीपरेके० ए रीतें माहोमाहे जेदजाव विचारो एनो जेद मनमा लावो केमके

द्रव्य आ[illegible]
दिक [illegible]

अर्थ ॥ हवे तेहीज रूपादिकते [illegible]

रूपरेंरह्याछे एमआधाराधेयभावें द्रव्यथी गुणपर्यायने भेदछे तथारूपादिकगुणप-
। एकेक इंद्रियनो गोचरके०विषयछे जेम रूपते चक्षुरिंद्रियेंज जणायछे तथारसते
नेंद्रियेंजजणाय इत्यादिक अने घटादिकद्रव्यछेते चक्षुइंद्रिय अनेस्पर्शइंद्रिय एदो
॥ वेंद्रियेंकरीजणायछे एनैयायिकमत अनुसरीनेकह्युं अनेस्वमते गंधादिकपर्यायते
इंद्रियादिकेंपण द्रव्यप्रत्यक्षछे नहीकां कुसुमगंधुंतुं इत्यादिक ज्ञानने भ्रांतिपणोथा-
तेजाणवुं एमएकअनेक इंद्रियग्राहकपणे द्रव्यथी गुणपर्यायने भेदजाणवुं अने
पर्यायने मांहोमांहेंभेदते स्वभावी क्रमभावीपणेथाय एकल्पनाथीजभाववुं ॥ १५ ॥

संज्ञा संख्या लक्षणथी पण ॥ भेद एहोनो जाणीरे ॥ सुजश
कारणी सुभमति धारो ॥ दुरमति वेलि कृपाणीरे ॥ जिन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ तथासंज्ञाके० नाम तेथीद्रव्यनोभेद एटलेनामभेदेंभेद तेमांवली एकद्रव्य
नथीभेद बीजोगुणनामथीभेद त्रीजोपर्यायनामथीभेद तथासंख्यातेएकबेत्रणनीग-
। तेथीभेद एटलेद्रव्यछे गुणअनेकछे पर्यायअनेकछे अनेलक्षणथीभेदतेनअनेक
यिगमन द्रव्यलक्षण नएकथीअन्यने भिन्नकरण तेगुणलक्षण परिगमनसर्वतोव्या-
तेपर्यायलक्षण एमद्रव्यगुणपर्याय एहोनोमाहोमांहेभेदजाणीने उत्तमयशनीकर-
ते भलीमतिनेधारो तेकहेवीछे जेदुरमतिके० द्रव्यारूतपक्षनीमाठीमतितेरूपणीजेवे-
तेहनेविषे कृपाणीके०कोहाडीसमानछे एढालमां द्रव्यगुणपर्यायनोभेददेखाड्यो ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ शालिभद्र भोगी रह्यो ॥ एदेशी ॥

एकांतेजोभाषियेंजी ॥ द्रव्यादिकनोरेभेद ॥ तोपरद्रव्यपरेंहुएजी ॥
गुणगुणीभावउछेदरे ॥ भविका ॥ धारोगुरुउपदेश ॥ १ ॥ ए आंकणी

अर्थ ॥ हवेजेद्रव्यमां एकांतेभेदमानेछे तेनेअभेदपक्ष अनुसरीने दूषणदीयेछेद्रव्या-
दि के० द्रव्यगुणपर्यायनोजो एकांतेभेदभाषियें तो परद्रव्यनीपरें स्वद्रव्यने विषे पण
गुणी भावनो उछेदथयीजाय जेमजीवद्रव्यना गुणज्ञानादिकछे तेनोगुणी जीवद्रव्य
पुद्गलद्रव्यनागुणरूपादिकछे तेनोगुणी पुद्गलद्रव्यछे ए व्यवस्थाशास्त्रप्रसिद्धछे ते-
भेदमानतां तेलोपाय जीवद्रव्यने पुद्गलगुणथी जेम भेदछे तेमपोतानागुणपर्यायपणने-
तोअमुकद्रव्यनो अमुकगुण अथवा अमुकगुणनोअमुकगुणी ए व्यवहारछे तेनो
लोपथयीजाय माटेद्रव्यगुणपर्यायनो अभेदजसंभवे एहवो अभेदनयनागुणनो उप-
छे तेने हेभव्यप्राणीतुमेधारो आदरो जेमआत्मद्रव्यशुद्धथाय ॥ १ ॥

द्रव्येंगुणपर्यायनोजी ॥ छेअजेदसंबंध ॥ जिन्नतेहजो
कहियेंजी ॥ तोअनवस्थावंधरे ॥ ज० ॥ धा० ॥२॥

अर्थ ॥ वली अभेद ऊपरयुक्ति कहेछे द्रव्यनेविषे गुणपर्यायनो जे समवते अभेदजछे केमके जो द्रव्यनेविषे गुणपर्यायनो समवायनामे संबंधने जिन्नकहियें तो अनवस्थादोषतु बंधनथाय जेथी गुणगुणीथीअलगो समवायसंबंधकहियेंतो तेसमवायनेपण अनेरोसंबंधजोइयें वली ते संबंधने पण अनेरो संबंध जोइयें एमकरतां कि हांपण ठहेराव न थाय अने जोसमवायनो स्वरूप संबंधनेज अभिन्न मानियें तो गुणगुणीने स्वरूप संबंध मानता सुविघटेछे जे फोकटनवा संबंध मानोछो ॥ २ ॥

सुवर्णकुण्डलादिकहुवेंजी ॥ घटरक्तादिकजाव ॥ एव्यव
हारनसंजवेजी ॥ जोनअजेदस्वजावरे ॥ ज० ॥ धा० ॥३॥

अर्थ ॥ वलीजेअभेदनमाने तेहनेबाधककहेछे जे सुवर्णके० सोनुतेकुण्डलथयु वली घटप्रथमश्यामहतो तेहिजरातोवर्णथयो एहवोसर्वलोकनोजे अनुभवसिद्धव्यवहार तेजोद्रव्यादिकगुणने अभेदस्वजावनहोयतो तेव्यवहारपणघटेनहि ॥ ३ ॥

खंधदेशजेदेंहुएजी ॥ वमणीगुरुतारेखंध ॥ प्रदेशगु
रुतापरिणमेंजी ॥ खंधअजेदसंबंधरे ॥ ज० ॥ धा० ॥४॥

अर्थ ॥ वलीजेअभेदनहीमाने तेहनेवीजुबाधककहेछेजे खंधके० अवयवी अने देशतेअवयव एहोनेजोभेदेंजमानियें तो वमणोभार खंधमाहेंथवोजोइयें जेमाटे तो ततुनोजेपटछे ते सोततुआमाजेटलोभार तेटलोजभार तेनापटमापण थायछे तथा जेकोइनयानैयायिक एमकहेछे जे अवयवनाभारथी अवयवीनो भार अत्यतहीनछे तोतेहनेमते द्विप्रदेशादिकखंधमाहे किहांपणउत्कृष्टगुरुता नथवीजोइयें माटेद्विप्रदेशादिकखंधते एकप्रदेशादिकनीअपेक्षायें अवयवीछे अनेपरमाणुमाहेजो उत्कृष्टगुरुत्वमानियें तोरूपादिकविशेषपण परमाणुमाहेमानवाजोइयें अनेद्विप्रदेशादिकमा मानवाजोइयें अनेभेदनयनो वचनमानियेंतो प्रदेशनोभार तेहिजखंधभारपणे परिणमे जेमतंतुरूपपटरूपपणे परिणमे तेवारेंगुरुतावृद्धीनोदोषकह्योतेनलागे ॥ ४ ॥

जिन्नद्रव्यपर्यायनेजी ॥ जवनादिकनेरेएक ॥ जांपेकिम
दाखेनहीजी ॥ एकद्रव्यमाविवेकरे ॥ ज० ॥ धा० ॥५॥

अर्थ ॥ वलीजेद्रव्यादिकने अभेदनथीमानता तेहनेउलजोआपेछे जिन्नद्रव्यने पाषाण काष्ट पृथ्वी जलादिकतेनोपर्यायजेजवनादिक घरप्रमुख तेहनेतुएककहेछे

कघरइत्यादिक लोकव्यवहारछे तोएकद्रव्यमां द्रव्यगुणपर्यायनोअभेदहोय एहवो विक शावास्तेनथीकहेतो माटेजेआत्मद्रव्य तेहिजआत्मगुण अनेतेहिजआत्मप- य एहवो व्यवहारअनादिसिद्धछे ॥ ५ ॥

गुणपर्यायअभेदथीजी ॥ द्रव्यनियतव्यवहार ॥ परिणति
जेहेएकताजी ॥ तेणेतेएकप्रकाररे ॥ भवि० ॥ धा० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वलीजीवद्रव्य अजीवद्रव्यइत्यादिक जे नियतके० व्यवस्थासहितव्यवहार यछे तेगुणपर्यायनाअभेदथीथायछे जेमज्ञानादिकगुणपर्यायथी अभिन्नतेजीवद्रव्य नेरूपादिक गुणपर्यायथी अभिन्नतेअजीवद्रव्य नहीकांद्रव्यसामान्यथी गुणपर्यायनी शेपसंज्ञानथाय १ द्रव्य २ गुण ३ पर्याय एत्रणनामछे पणस्वजाति त्रणनेएकत्वप- णामछे माटेएत्रणेनोएकप्रकारकहियें जेमआत्मद्रव्य ज्ञानादिकगुण तथातेहना- र्याय एसर्वेएकजआत्माकहियें तथा जेम १ रत्न २ कांति ३ ज्वरापहारशक्ति ए णेनेएकजपरिणामछे तेमद्रव्यगुणपर्यायनेपण जाणवुं ॥ ६ ॥

जोअभेदनहीएहनेंजी ॥ तोकारयकिमहोय ॥ अछतिवस्तु
ननीपजेजी ॥ शशविपाणपरेंजोयरे ॥ भ० ॥ धा० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीजेअभेदनमाने तेहनेदोषदेखाडेछे जोएद्रव्यगुणपर्यायने अभेदनथी कारणकार्यनेपण अभेदनहोवोजोइयें तोमृत्तिकादिक कारणथी घटादिकार्यकेम पजे अनेकारणमांहेकार्यनीशक्तिहोय तोजकार्यनीपजे पणकारणमांहे अछतिकार्यव- तुनीपरिणतिनीपजेनही जेम शशविपाण शशलानाशिंगडा माटेजोकारणमांहे कार्य- सत्तामानियेंतो अभेदसहेजेजआव्यो ॥ ७ ॥

द्रव्यरूपछतिकार्यनीजी ॥ तिरोभावनीशक्ति ॥ आविर्भावें
नीपजेजी ॥ गुणपर्यायनीव्यक्तिरे ॥ भ० ॥ धा० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवेजोकारणमांहे कार्यउपनाअगाउ जोकार्यनीसत्ताछे तोकार्यदर्शनकेमथ- नथी एहवीशंकाकरनारने उत्तरआपेछे जे कार्यउपनोनथी तेवारेंकारणमांहे कार्य- द्रव्यरूपेंतिरोभावनीशक्तिछे तेथीकार्यजणातुंनथी पणसामग्रीमले तेवारें गुणपर्या- नीव्यक्तिथीआविर्भावके० प्रगटभावथायछे तेथीकार्यदेखायछे तिरोभाव तथाआ र्भावपणे दर्शनादर्शन नियामककार्यनापर्यायविशेपजजाणवा तेथीआविर्भाव ने- तव्असत्विकल्पेंदूपणहोयनही केमके अनुभवनेअनुसारेंपर्यायकल्पियें ॥ ८ ॥

नैयायिकजापेंइस्युजी ॥ जिमअछतानुरेज्ञान ॥ होवेविषय
अतीतनुजी ॥ तिमकार्यसहिनाणरे ॥ जo ॥ धाo ॥ ए ॥

अर्थ ॥ इहांनैयायिकएहवुकहेछे के जेमअतीतविषयजे घटादिकअछताछे ते नुजेमज्ञानहोय तेमघटादिककार्यमृत्तिकादिकदलथकीपण अछताजछे सामग्रीमिलवि पजसे अछतानीज्ञप्तिहोयतो अछतानीउत्पत्तिकेमनहोय घटनुकारणदंडादिकअमेकहि येंछैयें तिहांलाघवछे तुमारेमतेघटाजिव्यक्तिनु ७का।.५ कारणकहेवु ।।१९, वीजुअजिव्यक्तिनुकारणचक्षुप्रमुखछे पणदंडादिकनथी माटेजेदपक्षजघटेछे ॥ ए ॥

तेमिथ्यानहीसर्वथाजी ॥ अछतोविषयअतीत ॥ पर्यायारथ
तेनहीजी ॥ ड्व्यारथछेनित्यरे ॥ जo ॥ धाo ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेनैयायिकमतनेडुपवेछे जे अछतानीउत्पत्तिहोयएमकहेछे तेमत मिथ्या केमके अतीतविषयघटादिक सर्वथाअछतोनथी तेपर्यायार्थथीनथी अनेड्व्यार्थथी त्यछे जेम नष्टघटपणमृत्तिकारूपेंछे जोसर्वथानहोयतो शशलानाशृगपरेंथाय ॥१०

अछतोजापेज्ञाननेजी ॥ जोस्वजावेसंसार ॥ कहेतोज्ञाना
कारतोजी ॥ जीपेयोगाचाररे ॥ जo ॥ धाo ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेसर्वथाअछतोअर्थज्ञानमाहेजासेछे एहवुकहेछे तेहनेबाधकदेखाडे जोज्ञाननेस्वजावें अतीतघटप्रमुखनोअछतोअर्थजासेछे एहवुमानीयेंतो सर्वसंसारज्ञा नाकारज छे वाह्यआकारअनादिअविद्यावासनायेंअछताजजासेछे जेमस्वप्नमाहे अछ तापदार्थजासेछे एहवोवाह्याकाररहितशुद्धज्ञानते बुद्धनेजहोय एमकहेतो योगाचा रनामेत्रीजोबोधजजीपे तेमाटेअछतानुज्ञान नहोय ॥ ११ ॥

हवणाजाण्योअरथतेजी ॥ एमअतीतजेंजणाय ॥ वर्त्तमान
पर्यायथीजी ॥ वर्त्तमानतायायरे ॥ जo ॥ धाo ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जोछतानुज्ञाननहोय तोहमणामेंअतीतघटजाण्यो एमकेमकहेवायछे तेअ तीतघटमेंहमणाजाण्यो एमजेजणायछे तिहांड्व्यथीछताअतीतघटनेविषे वर्त्तमानज्ञ आकाररूपपर्यायथी हमणाअतीतघटजाण्योजायछे अथवा नैगमनयथीअतीतने वि वर्त्तमानतानोआरोपकरियेंछैयें माटेसर्वथाअछतिवस्तुनोज्ञाननथाय ॥ १२ ॥

धर्मिअछतेधर्मनोजी ॥ अछतेकालसुहाय ॥ सर्वकालनिर्जे
यपणेजी ॥ तोशशशृंगजणायरे ॥ जo ॥ धाo ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ धर्मिंअतीतघटअछते धर्मघटत्वअछतेकालें घटनेअन्नावकालेंन्नासेछे अथ-ाधर्मिंअतीतघटअछते धर्मज्ञेयाकारअछतेकालेंन्नासेछे एरीतेंजोतुजनेचित्तमांहे सुज्ञा-ा तो सर्वअतीत अनागत वर्त्तमानकालेंनिर्न्नयपणे अदृष्टशंकारहितपणे शशशृंगप-ाजाएयुंजोइयें एमतो नथी ॥ १३ ॥

तेमाटेअछतातणोजी ॥ बोधनजनमनहोय ॥ कारयकारण
नेसहीजी ॥ ठेअन्नेदइमजोयरे ॥ न्न० ॥ धा० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेअछताअर्थनोबोधनहोय तथाजन्मपणनहोय एमनिर्द्धारकार्यकारण-ोअन्नेदछे तेदृष्टांते द्रव्यगुणपर्यायनोपण अन्नेदछे एमसद्दहवुं एन्नेदपक्षनीढालउपरें अन्नेदपक्षनीढालकही केमकेन्नेदनयपक्षनो अन्निमानते अन्नेदनयटाले ॥ १४ ॥

न्नेदंन्नणेनैयायिकोजी ॥ सांख्यअन्नेदप्रकाश ॥ जैनउन्नय
विस्ताररतोजी ॥ पामेंसुजशविलासरे ॥ न्न० ॥ धा० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेएवेहुनयनास्वामीदेखाडीने स्थितपक्षकहेछे जेन्नेदनयतेनैयायिकन्नापेछे ोरीते असत्कार्यवादीदेखायछे तथासांख्यमततेअन्नेदनयप्रकाशेछे अनेजेनते वेहुन-स्याद्वादेंकरीविस्ताररतोथको न्नलायशनोविलासपामे केमके पक्षपातिवेहुनय मांहो-ाहे वसतां स्थितपक्ष अपक्षपातितेस्याद्वादिनोजदीपेछे उक्तंच ॥ अन्योन्य प-क्षप्रतिपक्षन्नावात् यथापरेमत्सरिणः प्रवादाः ॥ नयानशेषानविशेषमिछन्नपक्षपाती समयस्तथाते ॥ १ ॥ यएवदोषा.क्किलनित्यवादे विनाशिवादेपिसमास्तएव ॥ परस्पर-ध्वंसिपुकंटकेषु जयत्यधृष्यंजिनशासनंते ॥ १५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ रागआसाउरी ॥ नंदनकुं त्रिसला हुलरावे ॥ ए देशी ॥

न्नेदअन्नेदउन्नयकिममानो ॥ जिहांविरोधनिरधारोरे ॥ एक
ठामेंकहोकिमकरीरहेवे ॥ आतपनेअंधारोरे ॥ श्रुतधर्मेमन
दृढकरीराखो ॥ जिमशिवसुखफलचाखोरे ॥ १ ॥ ए आंकणी

अर्थ ॥ हवेन्नेदान्नेदनोविरोध आशंकीनेटालेछे इहांकोइपरवादी कहेछेजे द्रव्यादि-कनेविषे १ न्नेद २ अन्नेद एवेहुधर्म किममानोछो जिहांविरोधनाने निरधारोछो के-मकेजिहांन्नेदहोय तिहांअन्नेदनहोय अने जिहांअन्नेदहोय तिहांन्नेदनहोय एचिहुं न्नावान्नावरूपें विरोधीछे तोवेहुविरोधी एकठामेंरहेनही जेमआतपहोय तिहांअंधारो हिनही अनेजिहां अंधकारहोय तिहांआतपरहेनही तेमन्नेदान्नेदपण एकत्रनहोय

नैयायिकभापेइस्युजी ॥ जिमअछतानुरेज्ञान ॥ होवेविषय अतीतनुजी ॥ तिमकार्यसहिनाणरे ॥ भ० ॥ धा० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ इहांनैयायिकएहवुकहेछे के जेमअतीतविषयजे घटादिकअछताछे ते नुजेमज्ञानहोय तेमघटादिककार्यमृत्तिकादिकदलथकीपण अछताजछे सामग्रीमि पजसे अछतानीज्ञप्तिहोयतो अछतानीउत्पत्तिकेमनहोय घटनुकारणदंडादिकश्रम येछेयें तिहांलाघवछे तुमारेमतेघटाभिव्यक्तिनु द ॰ कारणकहेवुतिहां बीजुअभिव्यक्तिनुकारणचक्षुप्रमुखछे पणदंडादिकनथी मारेजेदपक्षजघटेछे ॥ ९॥

तेमिथ्यानहीसर्वथाजी ॥ अछतोविषयअतीत ॥ पर्यायारथ तेनहीजी ॥ द्रव्यारथछेनित्यरे ॥ भ० ॥ धा० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेनैयायिकमतनेदुषवेछे जे अछतानीउत्पत्तिहोयएमकहेछे तेमत मि केमके अतीतविषयघटादिक सर्वथाअछतोनथी तेपर्यायार्थथीनथी अनेद्रव्यार्थ त्यछे जेम नष्टघटपणमृत्तिकारूपेछे जोसर्वथानहोयतो शशलानाशृंगपरेथाय ॥

अछतोभापेज्ञाननेजी ॥ जोस्वभावेससार ॥ ॰॰तोज्ञाना कारतोजी ॥ जीपेयोगाचाररे ॥ भ॰ [illegible] ११ ॥

अर्थ ॥ जेसर्वथाअछतोअर्थज्ञान [illegible] हुछे तेहनेया [illegible]
जोज्ञाननेस्वभावें अतीतघटप्रमुखनोअ [illegible] तुमानीयें [illegible]
नाकारज छे बाह्यआकारअनादिअविद्या [illegible] नासेछे [illegible] हे
तापदार्थजासेछे एहनोनाह्याकाररहितशु [illegible] होय
रनामेश्रीजोनोधजजीपे तेमाटेअछतानुज्ञान [illegible] ॥

हवणाजाणयोअरथतेजी ॥ एम [illegible]
पर्यायथीजी ॥ वर्त्तमानताथायरे ॥ [illegible]

अर्थ ॥ जोछतानुज्ञाननहोय तो [illegible]
तीतघटमेंहमणाजाणयो एमजेजणायछे [illegible]
आकाररूपपर्यायथी [illegible]
वर्तमानतानोआरोपकरियेछेयें [illegible]

धर्मिअछतेधर्मनोजी ॥ अ [illegible]
यपणेजी ॥ [illegible]

अर्थ ॥ धर्मिअनीनघटअछते धर्मघटत्वअछतेकालें घटनेअजावकालेंजासेछे अथ-
धर्मिअनीनघटअछते धर्मछायाकारअछतेकालेंजासेछे एरीतेंजोतुजनेचित्तमांहे सुद्रा-
नो नयेअतीन अनागत वर्तमानकालेंनिर्जयपणे असद्ध्रंकाररहितपणे शशशृंगप-
जाणवुंजोइयें एमनो नथी ॥ १३ ॥

तेमाटेअछतानणोजी ॥ बोधनजनमनहोय ॥ कारयकारण
नेनहीजी ॥ तेअभेदहमजोयरे ॥ ज० ॥ धा० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेअछतानाअर्थनोबोधनहोय नथाजन्मपणनहोय एमनिरधारकार्यकारण-
अभेदछे तेहष्टांते द्रव्यगुणपर्यायनोपण अभेदछे एमसर्दहवुं एभेदपक्षनीढालउपरें
भेदपक्षनीढालकही केमकेभेदनयपक्षनो अभिमानते अभेदनयटाले ॥ १४ ॥

भेदजणनैयायिकोजी ॥ सांख्यअभेदप्रकाश ॥ जैनउनय
विस्तारतोजी ॥ पामेसुजशविलासरे ॥ ज० ॥ धा० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेएवेहुनयनास्वामीदेखाडीने स्थितपक्षकहेछे जेभेदनयतेनैयायिकजापेछे
धीतें असत्कार्यवादीदेखायछे तथासांख्यमततेअभेदनयप्रकाशेछे अनेजैनते बेहुन-
स्याद्वादेकरीविस्तारतोथको जजायशनोविलासपामे केमके पक्षपातिवेहुनय मांहो-
मांहे घसतां स्थितपक्ष अपक्षपातितेस्याद्वादिनोजदीपेछे उक्तंच ॥ अन्योन्य प-
प्रतिपक्षजावात् यथापरेमत्सरिणः प्रवादाः ॥ नयानशेपानविशेपमिछन्नपक्षपाती
समयस्त ने ॥ १ ॥ यएवदोपाः किलनित्यवादे विनाशिवादेपिसमास्तएव ॥ परस्पर-
ध्वंसि ध्यधृष्यंजिनशासनंते ॥ १५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ नंदनकुं त्रिसला हुलरावे ॥ ए देशी ॥

ममानो ॥ जिहांविरोधनिरधारोरे ॥ एक
करीरहेवे ॥ आतपनेअंधारोरे ॥ श्रुतधर्ममन
राखो ॥ जिमशिवसुखफलचाखोरे ॥ १ ॥ ए आंकणी

॥ हवेभेदाभेदनोविरोध आशंकीनेटालेछे इहांकोइपरवादी कहेछेजे द्रव्यादि-
तविपे १ भेद २ अभेद धर्म किममानोछो जिहांविरोधतानें निरधारोछो ते
जिहांभेदहोय तिहांअभेदनहोय अने जिहांअभेद तिहांभेदनहोय
भावाभावरूपें विरोधीछे तोबेहुविरोधी एकठामेंरहेजे खे आतपहोय शपणे पण अनेक
नही अनेजिहां अंधकारहोय तिहांआतपरहे खेत्रादिक परयाय

सत्र्विशेषेनिरूपाणे उक्त्व पुरिसंमिपुरिसस्तो जम्माइमरणकालपज्जंतो ॥ तस्सउवा हिंसा पज्जायंतेरावन्नुदियस्स ॥ १ ॥ इतिसंमतिग्रंथे ॥ ५ ॥

धर्मभेदजोअनुभवजागे ॥ धर्मिभेदनवीकहियेंरे ॥ भिन्न
धर्मनेंएकजधर्मी ॥ अन्यचेतनपणलहियेंरे ॥ श्रुत० ॥६॥

अर्थ ॥ जिहांभेदहोय तिहांअभेद होयजनही केमके भेदव्याप्यवृत्तिछे एहवी प्राचीननैयायिकनी शंकाछे तेटालेछे जे श्यामोनरक्त. इहां श्यामत्व रक्तत्वधर्म-भेदनो अनुभवजागेछे पणधर्मिजे घटपदार्थ तेनोभेद जाणतोनथी माटेएमजो कहियेंतो अन्यचेतननो भेद जाणेछे तेपण अन्यअचेतनत्व धर्मनोजभेदछे पणजकचे-तन द्रव्यनोभेदनथी एरीतें अव्यवस्थाथाय धर्मिने प्रतियोगिपणे उल्लेखनो बिंदु सर्वगोछे अनेप्रत्यक्ष सिद्धअर्थ बाधकतो अवतरेजनही ॥ ६ ॥

भेदाभेदनिहांपणकहनां ॥ विजयजैनमतपावेरे ॥ भिन्नरूप
मांरूपअ [illegible] ॥ जगअभेदपणआवेरे ॥ श्रुत० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेहु [illegible] भेदकहेतां जैननो मत विजयपामेछे माटे भि-न्नरूपजे जीवअ [illegible] द्रव्यत्वपदार्थत्वादिक तेथीजगतमां पण अभेदपणोआवे [illegible] अव्यापकपणुंकह्युं ॥ ७ ॥

भेदनोभेदअभेदजतहनो ॥ रूपांतरसंयुतनोरे ॥ रूपां
तरथीभेदजतेहनो ॥ मूलहेतुनयसतनोरे ॥ श्रुत० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीएहिजविवरीदेखाडेछे के जेहनोभेदतेहनोज रूपांतरसहितनो अभेद होय जेम थास कोस कुसूल घटादिकनोभेदछे अनेतेजमृद्द्रव्य विशिष्टअनर्प्पित पर्यायनो अभेदछे वलीतेनोज रूपांतरथी भेदथाय जेम थास कोस कुसूलादिक पर्यायविशिष्टमृद्द्रव्यपणें तेनोज भेदथाय एरीतेंभेदनेअभेदजेछे तेशैकडागमेनयनो मूलहेतुछे सातनयनाजे सातसेंनयभेदछे तेएरीतेंद्रव्यपर्यायनी अर्प्पणाअनर्पणायें थाय तेशतारनयचक्राध्ययनमां पूर्वेहता अनेहमणा द्वादशसारनयचक्रमां विधिर्विधिवि-धिरित्यादिरीतें एकएकनयमां बारबारभेद उपजवाकह्याछे ॥ ८ ॥

खेत्रकालभावादिकयोगें ॥ थायभंगनीकोडीरे ॥ संखेपे
एकठामेंकहीयें ॥ सप्तभंगनीजोडीरे ॥ श्रुत० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ जेमद्रव्यादिक विशेषणे भंगथाय तेमज खेत्रादिकविशेषणे पण अनेक भंगथाय जेमघटद्रव्यने स्वकरीविवक्षिये तेवारे खेत्रादिकघट परथाय एमप्रत्येकें

सप्तजंगीपण फोडोगमेनीपजे १ घट स्यादस्त्येव २ स्यान्नास्त्येव ३ स्यादव
४ स्यादस्त्येवनास्त्येव ५ स्यादस्त्येवस्यादवक्तव्यएव ६ . . . .
७ स्यादस्त्येवस्यादनास्त्येव स्यादवक्तव्यएवइतिप्रयोग तथापि लोकप्रसिद्धने
ना्टि पर्यायेपितघटने तेनेजसप्तेवडीने स्वरूपेअस्तित्व पररूपेनास्तित्व
देखाडेवे १ स्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल स्वजावनी अपेक्षाये घटछे अने २ परद्रव्य
परकाल परजावनी अपेक्षाये घटनथी ३ तथाएकवारें वेपर्याय एकशब्दें
रूपें नकहेवायमाटे उजयविवक्षाये अवाच्यछे ४ एकअंशस्वरूपे अनेएकअंश
विवक्षिये तेवारें छेनेनथी ५ एकअंशस्वरूपे तथाएकअंश युगपत् उजयरूपें
क्षिये तेवारेंछे अनेअवाच्य ६ एकअंशपररूपे अनेएकअंशयुगपत् उजयरूप वि
क्षिये तेवारेंनथी अनेअवाच्य ७ एकअंश स्वरूपे तथाएकअंश पररूपे अनेएकअंश
गपत् उजयरूपे विवक्षिये तेवारें छे नथी अने अवाच्य ॥ ए ॥

पर्यायार्थजिन्नवस्तुछे ॥ द्रव्यारथेंअजिन्नोरे॥ क्रमेउजय
नयजोअर्पिजे ॥ तोजिन्ननेअजिन्नोरे ॥ श्रुत० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेनेदानेदमा सप्तजंगी जोडियेंछेयें १ पर्यायार्थनयथी सर्ववस्तु
गुणपर्यायनादनों पथग्नित्पणे निन्नछे २ द्रव्यार्थनयथी कथंचित्अजिन्नछे
...नाने गुणपर्याय तेथ्याविन्नाव तयातिरोनावेंछे ३ अनुक्रमें जो द्रव्यार्थिक
पर्यायार्थिक वेहुनय अर्पियें तोकथचित् निन्न तथाकथचित् अनिन्नकहिय॥

जोएकदाउजयनयग्रहियें ॥ तोअवाच्यतेलहियेरे ॥ एके
शब्देएकवारें ॥ दोयअर्थनवीकहियेरे ॥ श्रुत० ॥११॥

अर्थ ॥ ४ जोएकवारेंज बेहुनयना अर्थविवक्षियेंतो तेअवाच्यकहियें
...एकवखतें बेअर्थकहवानानानथी संकेतिकशब्दपण एकजसंकेतित
...शब्दपणएकोक्ति यद्यपि ...
...अनेवेनयनाअर्थ मुख्यपणेतो निन्नोक्तिज कहेवा ...
... नथी ॥११॥

...अवक्तव्यनउजय ॥ उजयविवक्षामांहिरे ॥ जिन्नअजि
...वस्तुनेकहियें ॥ स्याद्वादनेमांहि ॥ श्रुत० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ ५ ...पर्यायार्थिकअवक्तव्यपणाते ... नयार्पणाथकि
वस्तु ... कथंचित ... ॥ १२ ॥

द्रव्यारथनेभजनयग्रह्याथी ॥ अभिन्नतेहअवाचोरे ॥ क्रमयुग
पत्नयभजनयग्रह्याथी ॥ भिन्नअभिन्नअवाचोरे ॥ श्रुत० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ ६ प्रथमद्रव्यार्थ कल्पनापणछे अनेएकदाभजनय अर्पणाकरियें तेवारें कथंचित् अभिन्नअवक्तव्य एमकहियें ७ अनुक्रमें वेहुनयनी प्रथमअर्पणाकरियें पछेवेहुनयनी एकवारेंअर्पणाकरियें तेवारेंकथंचित् भिन्नअभिन्न अवक्तव्यएम कहियें ए एकभेदाभेद पर्यायमां सप्तभंगी जोडी तेमजसर्वत्रजोडवी इहांशिष्यपुछेके जिहांवेनयनाजविषयनी विचारणाहोय तिहांएकेक गौणमुख्यभावें सप्तभंगी थाछे पण जिहांप्रदेश प्रस्थकादिविचारें तो सात छ पांच प्रमुखनयना भिन्नभिन्नविचारहोय तिहांअधिकभंगथाय तेवारेंसप्तभंगीनो नियमकेमरहे तेनेगुरुकहेछे के तिहांपणएकनयार्थ मुख्यपणेविधि बीजासर्वनो निषेधलेइ प्रत्येकें अनेकसप्तभंगीकरियें अमेतोएमजाणियेंछेयेंजे सर्वनयार्थ प्रतिपादकता पर्यायाधिकरणवाक्य प्रमाणवाक्य एलक्षणलेइने तेवेठामें स्यात्कारलंवित सकलनयार्थसमूहालंबन एभंगेपण निषेधनथी तेमाटे व्यंजनपर्यायने ठेकाणे वेभंगेपण अर्थसिद्धि संमतिग्रंथनेविषे देखाडीछे तद्गाथा ॥ एवसत्तविअप्पो वयणपहोहोइअत्थपज्जाए ॥ वंजणपज्जाएण सविअप्पोनिव्विअप्पोअ ॥ १ ॥ एगाथानोअर्थ एवंपूर्वोक्तप्रकारें सप्तविकल्प सप्तप्रकारवचनपथ सप्तभंगीरूप वचनमार्ग तेअर्थपर्याय तेअस्तित्व नास्तित्वादिकनेविषे होय व्यंजनपर्यायजेघटकुंभादि शब्दवाच्यता तेहनेविषे सविकल्प विधिरूप निर्विकल्प निषेधरूप एवेभांगाहोय पण अवक्तव्यादि भंगनहोय केमके अवक्तव्य शब्दविषय कहियेंतो विरोधथाय अथवा सविकल्पशब्द समभिरूढनयमते अनेनिर्विकल्पशब्द एवंभूतनयनीमते एमवेभंगजाणवा अर्थनये प्रथमचारजे अर्थनय छे तेतो व्यंजनपर्याय मानेनही तेमाटे तेनयनीइहां प्रवृत्तिनथी अधिकुं अनेकांतव्यवस्थायीमाणवुं तदेवमेकत्र विषये प्रतिक्षमनेकनयविप्रतिपत्तिस्थलेस्यात् कारलांछिततावन्नयार्थप्रकारकसमूहालंबनबोधजनकएकएवभंगएष्टव्योव्यंजनपर्याय स्थले भंगद्वयवत् यदिचसर्वत्रसप्तभंगीनियमएवाश्वासास्तदाचालनीयन्यायेनतावन्नयार्थनिषेधबोधको द्वितीयोभंग स्तन्मूलकाश्चान्येतावत्कोटिका. पंचभंगाश्चकल्पनीयाइत्यमेव निराकांक्षसकलभंगप्रतिपत्तिनिर्वाहादितियुक्तंपश्यामः एविचार स्याद्वाद पंडितें सूक्ष्मबुद्धीयें चित्तमांधारवो.

सप्तभंगएदढअभ्यासी ॥ जेपरमारथदेखेरे ॥ जशकिरति
जगवाधेतेहनी ॥ जैनभावेंतसलेखेरे ॥ श्रुत० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवेएनोफलितार्थकहेछे एकह्याजेसातभांगा ते दढअभ्यासें सकलादेशी

सप्तजंगीपण स्मोडोगमेनीपजे १ घट स्यादस्त्येव २ स्यान्नास्त्येव ३ स्यादवा
४ स्यादस्त्येवनास्त्येव ५ स्यादस्त्येवस्यादवक्तव्यएव ६ स्यादनास्त्येवस्यादवक्त
७ स्यादस्त्येवस्यादनास्त्येव स्यादवक्तव्यएवइतिप्रयोग तथापि लोकप्रसिद्धने कं
वादि पर्यायार्पितघटछे तेनेजसत्रैवडीने स्वरूपेअस्तित्व पररूपेंनास्तित्व देइनेसत
देखाडेछे १ स्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल स्वजावनी अपेक्षायें घटछे अने २
परकाल परजावनी अपेक्षायें घटनथी ३ तथाएकवारें बेपर्याय एकश
रूपे नकहेवायमाटे उजयविवक्षायें अवाच्यछे ४ एकअशस्वरूपे अनेएकअश
निरक्षियें तेवारें छेनेनथी ५ एकअशस्वरूपे तथाएकअश युगपत् उजयरूपें
क्षिये तेवारेंछे अनेअवाच्य ६ एकअशपररूपे अनेएकअशयुगपत् उजयरूपें
येंतेवारेंनथी अनेअवाच्य ७ एकअश स्वरूपे तथाएकअश पररूपें
गपत् उजयरूपें निरक्षिये तेवारें छे नथी अने अवाच्य ॥ ९ ॥

पर्यायारथजिन्नवस्तुछे ॥ द्रव्यारथेअजिन्नोरे॥ क्रमेउजय
नयजोअर्पिजे ॥ तोजिन्नअजिन्नोरे ॥ श्रुत० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेनेदाजेदमा सप्तजंगी जोमियेंछेयें १ पर्यायार्थनयथी सर्ववस्तु
गुणपर्यायजेदाणें कथचित्पणे जिन्नछे २ द्रव्यार्थनयथी कथचित्अजिन्नजछे
द्रव्यनाजे गुणपर्याय तेथ्याविर्जाव तथातिरोजावेंछे ३ अनुक्रमें जो द्रव्यार्थ
पर्यायार्थिक एवेहुनय अर्पिये तोकथचित् जिन्न तथाकथचित् अजिन्नकहियें॥

जोएकदाउजयनयथ्रहिये ॥ तोअवाच्यतेलहियेरे ॥ एके
शब्देएकजवारें ॥ दोयअर्थनवीकहियेरे ॥ श्रुत० ॥११॥

अर्थ ॥ ४ जोएकवारेंज बेहुनयना अर्थनिरक्षियेंतो तेअवाच्यजहियें
शब्दें एकवारमेते बेअर्थकहाजातानथी सकेतिकशब्दपण एकजस
बेरूप स्पष्टकही शकीयेंनही जेमपुष्पदन्तादिक शब्दपणएकोक्ति
शक्ति कहीशकेनही अनेबेनयनाअर्थ मुख्यपणेतो निन्नोक्तिज कहेवा
युक्ति शास्त्रानन्यी जाणवी ॥११॥

पर्यायारथस्वपनउत्तर ॥ उजयविवक्षासहिरे ॥ जिन्नअवा
च्यवस्तुनेकहियें ॥ स्यात्कारनेवहिरे ॥ श्रुत० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ ५ जेनाप्रथमपर्यायार्थस्वनापणछे पछेएकदाउजय नयार्पणाकरियें
वस्तुने जिन्नअवाच्य कथचित् एमकहियें ॥ १२ ॥

द्रव्यारथनेंदनयग्रह्याथी ॥ अभिन्नतेहअवाचोरे ॥ क्रमयुग
पतनयदनयग्रह्याथी ॥ भिन्नअभिन्नअवाचोरे ॥ श्रुत० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ ६ प्रथमद्रव्यार्थ कल्पनापणछे अनेएकदाउभयनय अर्पणाकरियें ते-रें कथंचित् अभिन्नअवक्तव्य एमकहियें ७ अनुक्रमें बेहुनयनी प्रथमअर्पणाक-रियें पछेबेहुनयनी एकवारेंअर्पणाकरियें तेवारेंकथंचित् भिन्नअभिन्न अवक्तव्यएम कहियें ए एकभेदाभेद पर्यायमां सप्तभंगी जोडी तेमजसर्वत्रजोडवी इहांशिष्यपुछे-के जिहांबेनयनाजविषयनी विचारणाहोय तिहांएकेक गौणमुख्यभावें सप्तभंगी थाउं पण जिहांप्रदेश प्रस्थकादिविचारें तो सात ठ पांच प्रमुखनयना भिन्नभिन्नवि-चारहोय तिहांअधिकभंगथाय तेवारेंसप्तभंगीनो नियमकेमरहे तेनेगुरुकहेछे के जिहांपणएकनयार्थ मुख्यपणेविधि बीजासर्वनो निषेधलेइ प्रत्येकें अनेकसप्तभंगीक-रियें अमेतोएमजाणियेंछेयेंजे सर्वनयार्थ प्रतिपादकता पर्यायाधिकरणवाक्य प्रमाण वाक्य एकलक्षणलेइने तेबेहमें स्यात्कारलंबित सकलनयार्थसमूहालंबन एभंगेपण निषेधनयी तेमाटे व्यंजनपर्यायने ठेकाणे बेभंगेपण अर्थसिद्धि संमतिग्रंथनेविषे कहीछे तथाया ॥ एवसत्तविअप्पो वयणपहोहोइअथपज्जाए ॥ वंजणपज्जाए-ए सविअप्पोनिविअप्पोअ ॥ १ ॥ एगाथानोअर्थ एवंपूर्वोक्तप्रकारें सप्तविकल्प तिप्रकारवचनपथ सप्तभंगीरूप वचनमार्ग तेअर्थपर्याय तेअस्तित्व नास्तित्वादिकने विषे होय व्यंजनपर्यायजेघटकुंभादि शब्दवाच्यता तेहनेविषे सविकल्प विधिरूप नि-र्विकल्प निषेधरूप एबेभांगाहोय पण अवक्तव्यादि भंगनहोय केमके अवक्तव्य श-ब्दविषय कहियेंतो विरोधथाय अथवा सविकल्पशब्द समभिरूढनयमते अनेनिर्वि-कल्पशब्द एवंभूतनयनीमते एमबेभंगजाणवा अर्थनये प्रथमचारजे अर्थनय छे तेनो व्यंजनपर्याय मानेनही तेमाटे तेनयनीइहां प्रवृत्तिनथी अधिकं अनेकांतविवस्थायी एवं तदेवमेकत्रविषये प्रतिरूमनेकनयविप्रतिपत्तिस्थलेस्यात् कारलांछिततावन्नयार्थ-प्रकारकसमूहालंबनबोधजनकएकएवभंगएष्टव्योव्यंजनपर्याय स्थले भंगद्वयवत् यत्किं-चित्सप्तभंगीनियमएवाश्वासास्तदाचालनीयन्यायेनतावन्नयार्थनिषेधबोधको द्वितीयो-भंग स्तन्मूलकाश्चान्येतावत्कोटिका. पंचभंगाश्चकल्पनीयाइत्ययमेव निराकांक्षसकलभंग-प्रतिपत्तिनिर्वाहादितियुक्तंपश्यामः एविचार स्याद्वाद पंडितें सूक्ष्मबुद्धीयें चिंतनाधारवो.

सप्तभंगएहअभ्यासी ॥ जेपरमारथदेखेरे ॥ जशकिरति
जगवाधेतेहनी ॥ जैनभावतमलेखेरे ॥ श्रुत० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवेएनोफलितार्थकहेछे एकहाजेसातभांगा छे तेअभ्यासें सकप्रादेशी

विकलादेशी नयसप्तभंगप्रमाण सप्तभंगइत्यादि भेदे घणोअभ्यासकरी जीवाजीवादि
परमार्थसमजे देखे तेहनीजशकीर्त्तिवधे केमके स्याद्वादपरिज्ञानेज जैनने तत्त्वानु
यश छे अने जैनभावपण तेप्राणीनोज लेखेजाणवो केमके निश्चनयथी सम्यक्
द्वाद परिज्ञानजछे उक्तंचसमतो चरणकरणपहाणा ससमयपरमसयमुक्वावारा
चरणकरणस्ससार नठ्यसुद्धनयाणन्ति ॥ १ ॥ एचोथीढालमा भेदाभेदलाडो
सप्तभंगीनु स्थापनकर्यु ॥ १४ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ आदिजिणंदमयाकरो ॥ ए देशी ॥

एकअरथत्रयरूपछे ॥ देख्योभलेप्रमाणेरे ॥ मुख्यवृत्तिउपचारथी ॥
नयवादिपणजाणेरे ॥ १ ॥ ग्यानदृष्टीजगदेखिये ॥ ए आंकणी

अर्थ ॥ हवेनयप्रमाण विवेककरेछे एकअर्थ जे घटपटादिक जीवअजीवादि
त्रयरूपके० द्रव्यगुणपर्यायरूपछे केमके घटादिक मृत्तिकादिरूपेद्रव्य अनेघटादि
सजातीयद्रव्य पर्यायरूपरसात्मकपणेगुण एमजीवादिकमा जाणवो एहवेप्रमाणे स्या
द्वादवचनेदेख्यु जेमाटे प्रमाणेसप्तभंगात्मके त्रयरूपपणो मुख्यरीतेजाणिये केमके न
यवादीजे एकांशवादीतेपण मुख्यवृत्ति अनेउपचारें एकअर्थनेविषे त्रयरूपपणा
यद्यपि नयवादिने एकांशवचने शक्तिएकज अर्थकहियें तोपणलक्षणारूप उपचारें
जाअर्थपणजाणे पणएकदावृत्तिरूयनहोय एपणततनथी जेमगंगाया मत्स्यघोषौ इ
दिस्थलें एमवेवृत्तिपणमानीछे इहांपणमुख्य अमुख्यपणे अनंतधर्मात्मिक वस्तुना
वाने प्रयोजने एकनयशब्दनी वेवृत्तिमानता विरोधनथी अथवानयात्मक शास्त्रे
कवाक्य रूयेंपणएअर्थ जणावियें अथवाएकबोधशब्दे एकबोधअर्थे एमअनेक
जाणवा एरीतें ज्ञानदृष्टीयें जगतनाभाव देखीयें एअर्थकह्यो तेहिजस्पष्टपणे
थानेआगलीगाथाकहेछे ॥ १ ॥

मुख्यवृत्तिद्रव्यारथो ॥ तासअभेदवखाणेरे ॥ भेद
परस्परएहनो ॥ तेउपचारेजाणेरे ॥ ग्यान० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ मुख्यवृत्तिके० शक्तिशब्दार्थ केहेतो जे द्रव्यार्थनयते तासके० तेनए
द्रव्यगुणपर्यायने अभेदवखाणेछे केमके गुणपर्याय अभिन्न एवो मृद्द्रव्यादिक
निषेघटादिपदनी शक्तिछे पणएनो परस्परके० माहोमाहेभेदछे तेउपचारेंके० मुख्य
जाणे माटे द्रव्यभिन्न कंबुग्रीवादिक पर्यायनेविषे घटादिकपदनी लक्षणामानेछे
मुख्यार्थसबंधे तथाविधव्यवहार प्रयोजनं अनुसरीये तिहांलक्षणाप्रवृत्ति उपचार

मुख्यवृत्तिथकोलेखवे ॥ पर्यायारथभेदेंरे ॥ उपचारें
अनुभववलें ॥ मानेतेदअभेदेंरे ॥ ग्यान० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एमपर्यायार्थनयनीमुख्यवृत्तिकरीने सर्वद्रव्यनागुणपर्यायभेदेंलेखवे केमके एन-
मेतेमृदादिपदनो द्रव्यअर्थ अनेरूपादिपदनोगुणज घटादिकपदनो कंबुग्रीवादिपर्याय-
तथाउपचारें लक्षणायेंकरी अनुभवनेवलेकरी ते अभेदेमाने जेमघटादिमृद्द्रव्यादि
भिन्नजछे एप्रतीतें घटादिपदनी मृदादिकद्रव्यनेविषे लक्षणामानियें एपरमार्थ छे.

दोयधर्मनयजेग्रहे ॥ मुख्यअमुख्यप्रकारोरे ॥ तेअनुसारें
कल्पियें ॥ तासवृत्तिउपचारोरे ॥ ग्यान० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ भेदअभेदप्रमुख बहुधर्मते द्रव्यार्थिक अथवापर्यायार्थिकनय जेग्रहे कहाख्य-
माणेधारे मुख्यअमुख्यप्रकारें साक्षात्संकेतें तथाव्यवहितसंकेतें तेअनुसारें तासके०
नयनीवृत्ति अनेतेनयनो उपचारकल्पियें दृष्टांतजेम गंगापदनो साक्षात् संकेतते प्र-
वाहरूपअर्थनेविषेछे तेमाटेप्रवाहेशक्ति तथागंगानेतीरे जेगंगासंकेतकरवो ते व्यव-
हित संकेतछे तेमाटे उपचारछे तेमज द्रव्यार्थिकनयनो साक्षात्संकेतते अभेदछे अ-
शक्तिनाभेदें व्यवहितसंकेतछे तेथीउपचारछे एमपर्यायार्थिकनयनापण शक्तितथाउ-
चार तेभेदअभेदने विषेजोडवा ॥ ४ ॥

भिन्नविषयनयग्यानमां ॥ जोसर्वथानभासेरे ॥ तोस्वतंत्र
भावेंरहे ॥ मिथ्यादृष्टिपासेरे ॥ ग्यान० ॥ ५ ॥ ॥

अर्थ ॥ कोइकहेछेजे एकनयते एकजविषयने ग्रहे पणवीजानयनो विषयग्रहेनहीते-
भेदूषवेछे जोनयज्ञानमां भिन्नविषयके० नयांतरनो मुख्यार्थ ते सर्वथाके० अमुख्य-
पेपण नभासे तो स्वतंत्रभावें सर्वथानयांतर विमुख्यपणें मिथ्यादृष्टिपासेरहे एटले
नयथाय पण सुनय थाय नही एम जाणवुं ॥ ५ ॥

एहविशेषावश्यकें ॥ संमतिमांपणधारोरे ॥ एमनयथी
सविसंभवे ॥ भेदअभेदुपचारोरे ॥ ग्यान० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एअर्थविशेषावश्यके तथासंमतिग्रंथमांछे एमधारो यतः दोहिंविणएहिं-
णीअं सत्थमूलएणतहविमिछत्तं ॥ जंसविसयप्पहाण तणेणअणुणनिरवरके १ स्वार्थग्राही
तरांशाप्रतिक्षेपीसुनयइतिसुनयलक्षणं स्वार्थग्राहीइतरांशप्रतिक्षेपीदुर्नयइतिदुर्नयलक्ष-
णं एम नयविचारथी भेदअभेद ग्राह्य व्यवहारसंभवे नयानयसंकेतविशेषथी
हकवृत्तिविशेषरूप उपचारपण संभवे तेमाटेभेदअभेद तेमुख्यपणे प्रत्येकनयविषय

अर्थ ॥ हवेकर्मोपाधिरहित नित्यशुद्धपर्यायार्थिक पांचमोभेद कहेछे ते जेम [illegible]
जतुके० संसारीजीवना पर्याय सिद्धनाजीवो सरिखाकहियें जो. [illegible]
तोपणतेनी विवक्षानकरियें अनेज्ञानदर्शन चारित्रादिक शुद्धपर्यायनीज [illegible]

पर्यायअरथअनित्यअशुद्धो ॥ सापेक्षकर्मोपाधिरे ॥ समा
रवासिजीवने ॥ जेमजनममरणद्व्याधिरे ॥ बहु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेकर्मोपाधि सापेक्ष अनित्य अशुद्ध पर्यायार्थिक [illegible]
ससारवासीजीवने जन्ममरणनीव्याधिछे एमकहियें इहाजन्मादिक
कर्मसयोगेछे तेअनित्य अशुद्धछे तेथीज जन्मादिपर्यायनो नाशकरवानेअर्थे
जीवप्रवृत्तेछे एरीतेंद्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक नयकह्या ॥ ६ ॥

बहुमानग्राहिकह्योनैगम ॥ भेदतसछेतीनरे ॥ वर्त्त
मानारोपकरवा ॥ भूतअर्थेलीनरे ॥ बहु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवे नैगमनयकहेछे सामान्यविशेषज्ञानरूप बहुमानके० घणाप्रमाण
ग्राही नैगमनयकहियें नैकेर्मानैर्मिनोतीतिनिगम ककारलोपान्नैगमइतिव्युत्पत्ति
गमनयना त्रणभेदछे तेमांप्रथमनैगमभूतार्थ वर्त्तमाननो आरोपकरवाने तत्पर

भूतनैगमकह्योपहेलो ॥ दीवालीदिनआजरे ॥ यथा
स्वामीवीरजिनवर ॥ लहिउंशिवपुरराजरे ॥ बहु० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेमाप्रथमभेदनु उदाहरण देखाडेछे जेमआज दीवालीना दिवसनेविषे
श्रीमहावीरस्वामी शिवपुरनुराज्यपाम्या इहाअतीत दिवालीनादिननेविषे वर्त्त
दिवालीना दीवसनो आरोपकरियेंछैयेंएमवर्त्तमान दिवसनेविषे भूतदिवसनो
करियें देवागमनादिक महोटाकल्याण भाजनरन प्रतीतप्रयोजननेअर्थे
घोप इहागगानातटनेविषे गगानोआरोपकरियें शैत्यपावनत्वादि प्रत्यायन
नभणी तोपघटमानछे जो वीरसिद्धिगमननो अन्वय भक्तिनेवास्तेप्रतीतिकरा [illegible]
एअलकारनाजाण पंडितहोय तेविचारजो ॥ ८ ॥

भूतवतकहेभाविनैगम ॥ भाविजेमजिनसिद्धरे ॥ सिद्ध
वतछेवर्त्तमाने ॥ काइसिद्धअसिद्धरे ॥ बहु० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ भावीनु भूतवदुपचारकरे एबीजोनैगमनोभेद जेम जिननेसिद्ध
छेयें केमके केवलीनेसिद्धपणो अवश्यभावीछे माटे काइकसिद्ध अने काइकअ
वर्त्तमानकहे तेवर्त्तमान नैगमकहियें ॥ ९ ॥

आपीयेंजिमभक्तपचियें ॥ वर्त्तमानारोपरे ॥ करेकिरिया
भूतलेइ ॥ भूतवचनविलोपरे ॥ बहु० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेम भक्तके० रसोइरांधिते एमकहियें इहां रसोइना केटलाकअवयव नीपयाछे अनेकेटलाक साध्यमानछे पणपूर्वापरभूतावयव क्रियासंतान एकबुद्धीयें आरोपियें तेने वर्त्तमानकहियेंछेयें एआरोप सामग्री महिमायें कोइअवयवनी भूत क्रियालेइ पचतिएछेकाणे अपाक्षीत् एप्रयोगनथीकरता जेनैयायिकादिक तेएमकहेछे चरमक्रियाध्वंस अनेअतीत प्रत्ययविषय तेहनेकिंचित्पक्कं किंचित्पच्यते एवुं कहेतो एप्रयोगनथवोजोइयें तेमाटे एवर्त्तमानारोप नैगमनयनोभेदज भलोजाणवो॥१०॥

संग्रहेनयसंग्रहो ॥ तेद्विविधओघविशेषरे ॥ द्रव्यसवि
अविरोधियाजेम ॥ तथाजीवअशेषरे ॥ बहु० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेसंग्रहेते संग्रहनयकहियें तेना एकओघ बीजोविशेष ए बेभेदछे तेमां एक ओघके० सामान्यसंग्रह अनेबीजो विशेषसंग्रह एबेभेदजाणवा द्रव्याणिसर्वाणिअविरोधीनि एप्रथमभेदनुं उदाहरण तथाजीवाःसर्वेअविरोधिनः एबीजाभेदनुं उदाहरण सर्वेद्रव्यनेएकपणे बोलाववुंते सामान्यसंग्रह अने तेमांवली एकजीवद्रव्यने जूदो करी सर्वजीवने एकजीवद्रव्य कहिबोलाववुं तेविशेषसंग्रह ॥ ११ ॥

व्यवहारसंग्रहविषयभेदक ॥ तेमजद्विविधप्रसिद्धरे ॥ द्रव्य
जीवाजीवभाषें ॥ जीवभवियासिद्धरे ॥ बहु० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेसंग्रहनयनो विषय तेनाभेदनोदेखाडनार तेव्यवहारनयकहियें तेना तेमज संग्रहनयनीपरें द्विविधके० बेभेदछे १ सामान्यसंग्रहभेदकव्यवहार २ विशेषसंग्रहभेदकव्यवहार एरीते बेभेदजाणवा द्रव्यजीवाजीवो एसामान्यसंग्रहभेदव्यवहार अने जीवाःसंसारिणः सिद्धाश्च एविशेषसंग्रहभेदकव्यवहार एमउत्तरोत्तरविवक्षायें सामान्य विशेषपणुंभाववुं ॥ १२ ॥

वर्त्ततोऋजुसूत्रभाषें ॥ अयनिजअनुकूलरे ॥ क्षणिकपर्याय
कहेसुषिम ॥ मनुष्यादिकस्थूलरे ॥ बहु० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ ऋजुसूत्रनयते वर्त्तमानें वर्त्ततो अर्थभाषे पणअतीत अनागत अर्थने न माने अनेवर्त्तमानेपण निजअनुकूलके० पोताना कामनोअर्थमाने पणपरकीयमाने नही ते ऋजुसूत्रनय बेभेदेंकहेवो १ सूक्ष्मऋजुसूत्र ते क्षणिकपर्याय जेउत्पादव्यय तेनेमाने अनेबीजोस्थूल ऋजुसूत्रते मनुष्यादिपर्यायमाने एटलेमनुष्यतीर्यंचादिक भवनापर्या-

यमहे पणकालत्रयवर्ति पर्यायमानेनही अनेजे व्यवहारनयते तेत्रणेकालना प
तेमाटे स्थूलरुजुसूत्र तथाव्यवहारनयने सकरदोपनजाणवो ॥ १३ ॥

शब्दप्रकृतिप्रत्ययादिक ॥ सिद्धमानेशब्दरे ॥ समजिरूढ
विजिन्नअर्थक ॥ कहेजिन्नजशब्दरे ॥ बहु० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जेशब्दनयते प्रकृतिप्रत्ययादिक व्याकरणव्युत्पत्तिथी सि॰
लिंगवचनादिजेदें अर्थनोजेदमाने जेम तट तटी तट एत्रणलिंगजेदें अर्थजे॰
आप जल इहांएकवचन बहुवचनजेदें अर्थजेदमाने अनेरुजुसूत्रनयने
एमकहेजे कालजेदें अर्थजेदतुमानेछे तोलिंगादिजेदें जेदकानथीमानतो
समजिरूढनय एमकहेजे जिन्नशब्दते जिन्नार्थकजहोय माटे एनयते
कहेजे तुलिंगादिजेदे अर्थजेदमानेछे तोशब्दजेदें अर्थजेदकेममानतोनथी
घटशब्दार्थजिन्न अनेकुंजशब्दार्थजिन्न एमएमाने एवेशब्दनु एकार्थपणु
नयनी वासनाथकी प्रसिद्धछे ॥ १४ ॥

क्रियापरिणतअर्थमाने ॥ सर्वएवंजूतरे ॥ नवेनयना
जेदएणीपरें ॥ अठावीसप्रजूतरे ॥ बहु० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेएवंजूतनयते सर्वअर्थक्रियाने परिणतक्रियावेलायें माने
मानेनही जेमछत्रचामरादिके शोजे परपदामावेठा चामरढलावे तेवारेज तेने
माने पण स्नानादिकवेलायें तेअर्थविना राजानकहियें एरीतेनवेनयना
तेप्रजूतके॰ घणाथया १० द्रव्यार्थिकना ६ पर्यायार्थिकना ३ नैगमना २ संग्र॰
व्यवहारना २ रुजुसूत्रना १ शब्दनो १ समजिरूढनो १ एवंजूतनो ॥ १५ ॥

नवेनयएमकह्याउपनय ॥ तीनकहियेसाररे ॥ साचमोश्रुत
अरथपरखी ॥ लहोजशविस्ताररे ॥ बहु० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एमनवेनयकह्या हवेत्रणउपनय ते दिगंबरप्रक्रियायेंकहियेछेयें एमा॰
श्रुतनोअर्थ परखीकरीने बहुश्रुतपणाना यशनोविस्तारपामो ॥ १६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ चऊउपनुसाररे ॥ एदेशी ॥

सद्भूतव्यवहार ॥ जेदप्रथमतिहां ॥ धर्मधर्मिनाजेदथीए ॥ १ ॥
शुद्धअशुद्धजेद ॥ शुद्धअशुद्धना ॥ तेहअरथनाजेदथीए ॥ २ ॥

अर्थ ॥ नयसमीपंतेउपनयकहिये तेमासद्भूतव्यवहारते उपनयनोप्रथमजेदछे

ने धर्मिना भेददेखाडवाथी होय ॥ १ ॥ तेहनावलीवेभेदछे एकशुद्ध बीजोअशुद्ध मांपेहेलो शुद्धधर्मधर्मिनाभेदथी शुद्धसद्भूत व्यवहारथाय अनेबीजोअशुद्ध धर्मधर्मिभेदथी अशुद्धसद्भूत व्यवहारथाय इहांसद्भूततो एटलाटेजे एकद्रव्यजछे अने भिन्नद्रव्यसंयोगादि अपेक्षानथी तथा व्यवहार ते माटेजे भेददेखाडेछे ॥ २ ॥

जेमजगकेवलज्ञान ॥ आतमद्रव्यनुं ॥ मइनाणादिकतेहनुंए ॥३॥
गुणपर्यायस्वभाव ॥ कारकरतन्मनो ॥ अरथभेदछेएहनोए ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेमजगतमां आत्मद्रव्यनुं केवलज्ञान षष्ठीयें प्रयोगकरियें तेशुद्धसद्भूतव्यहारथयो तथामतिज्ञानादिकते आत्मद्रव्यनागुणछे एमवोलावियें तेअशुद्ध सद्भूतव्यहारथयो ॥३॥ गुणगुणीनो पर्यायपर्यायवंतनो स्वभाव स्वभाववंतनोकारक अने तन्मके० कारकी तेहनोजे एकद्रव्यानुगत भेदबोलावियें तेसर्वउपनयनो अर्थ जाणवो घटरूपं घटस्यरक्तता घटस्यस्वभावः मृदाघटोनिष्पादित इत्यादिप्रयोगजाणवा. ॥ ४ ॥

असद्भूतव्यवहार ॥ परपरिणतिभलें ॥ द्रव्यादिकउपचारथीए ॥ ५ ॥
द्रव्येंद्रव्यउपचार ॥ पुद्गलजीवने ॥ जिमकहियेंजिमआगमेंए ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ परद्रव्यनी परिणति भलेंथके जेद्रव्यादिकने नवविधोपचारथी कहियें ते असद्भूत व्यवहारजाणवो ॥५॥ तेनवविधोपचारमां पहेलो द्रव्येद्रव्यनोउपचार कहेछे जिमजिनआगममां क्षीरनीरनेन्यायें जीवतेपुद्गलसाथें मिल्योछे माटे जीवनेपुद्गल कहियें एजीवद्रव्यें पुद्गलद्रव्यनो उपचार तेद्रव्येद्रव्योपचार पहेलोभेदथयो ॥ ६ ॥

कालीलेस्याभाव ॥ श्यामगुणेंभली ॥ गुणउपचारगुणेंकह्योए ॥ ७ ॥
पर्यायेंपर्याय ॥ उपचारेंवली ॥ हयगयखंधयथाकह्याए ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेभावलेश्यातेआत्मानो अरूपीगुणछे तेनेजे कृष्णनीलादिक कालीलेश्या कहियेंछयें तेकृष्णादि पुद्गलद्रव्यनागुणनो उपचार करियेंछयें एआत्मगुणे पुद्गलगुणनो उपचारजाणवो एरीतें गुणेंगुणोपचारथयुं ॥ ७ ॥ वलीपर्यायें पर्यायोपचारते हयके० घोडा गयके० हाथी रथप्रमुख आत्मद्रव्यना असमानजातीय द्रव्यपर्याय तेने खंध कहियेंछयें तेआत्मपर्यायउपरें पुद्गलपर्यायजेस्कंध तेनोउपचारकरीने कहियेंछयें एपर्यायेंपर्यायोपचारनो त्रीजोभेदथयो ॥ ८ ॥

द्रव्येंगुणउपचार ॥ वलीपर्यायनो ॥ गौरदेहहुंबोलतांए ॥९॥ गुणें
द्रव्यउपचार ॥ पर्यायद्रव्यनुं ॥ गौरदेहजिमआतमाए ॥ १० ॥

अर्थ ॥ द्रव्येगुणोपचारः चोथोभेदकहेछे ते हुंगौरवर्णनुं एमबोलतांहुंनेआत्माद्रव्य

अनेजे गोरतेपुद्गलनो उज्वलतापणो उपचर्युं एचोथोजेद हवेपाचमुं द्रव्यनोउप चार ते जेमहुंदेहएमबोले तेमा हुंतेआत्मद्रव्य अनेदेहतो पुद्गलद्रव्यनो समान जातीय द्रव्यपर्यायउपचार्युं एपाचमोजेदथयो ॥ ९ ॥ गुणेद्रव्योपचार जेम यठे तेआत्मा एमगोरपणो उद्देसीने आत्मविधानकरियें एटलेए गोरतारूप उपरें आत्मद्रव्यनो उपचार तेगुणेद्रव्योपचार उठोजेदथयो तथापर्यायें ते जेम देहनेआत्माकहियें इहां देहरूप पुद्गलपर्यायनेविषे आत्मद्रव्यनो कर्यो एसातमोजेदथयो ॥ १० ॥

गुणपज्जवउपचार ॥ गुणनोपज्जवे ॥ जिममतितनुतनुमतिगुणेए ॥
असद्भूतव्यवहार ॥ एमउपचारथी ॥ एहत्रिविधद्वेसाजलोए ॥

अर्थ ॥ गुणेपर्यायोपचार. तेजेममतिज्ञानते शरीरजन्यठे तेमाटे इहामतिज्ञानरूप आत्मगुणनेविषे शरीररूप पुद्गलपर्यायनो उपचारकर्यो भेदथयो हवे पर्यायेगुणोपचार ते पूर्वप्रयोगनेज अन्यथाकरियें तेआवीरीतें रत्ते मतिज्ञानरूप गुणजठे तोइहा शरीररूप पर्यायनेविषे मतिज्ञानरूप गुणना चारकरायठे एनवमोजेद ॥ ११ ॥ एमउपचारथी असद्भूतव्यवहार नवप्रकारनाथ हवेएना त्रणजेदठेतेकहियेंठेयें तेसाजलो ॥ १२ ॥

असद्भूतनिजजाति ॥ जिमपरमाणुउं ॥ बहुप्रदेशीजाषियेंए ॥१३॥
तेहविजातिजाणो ॥ जिममूरतमति ॥ मूरतद्रव्येंउपनीए ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एकस्वजाति असद्भूतव्यवहार ते जेमपरमाणु ते बहुप्रदेशीथवानी जाति माटे बहुप्रदेशीकहियें ॥ १३ ॥ तथा जेम मतिके० मतिज्ञानने मूर्तिमत कहियें मूर्त विषयालोकनमस्कारादिकथी उपनोतेमाटे इहामतिज्ञानते आत्मगुण तेनेविषे मूर्त जे पुद्गलगुण तेनेउपचर्यु तेनेविजातीय असद्भूत व्यवहारजाणो एवीजोजेद ॥ १४ ॥

असद्भूतदोउजात ॥ जीवअजीवने ॥ विषयग्यानजिमजाषियेंए ॥१५॥
उपचरितासद्भूत ॥ करियेउपचारो ॥ जेहएकउपचारथीए ॥१६॥

अर्थ ॥ दोउजातिके० बेजाति तेस्वजाति अने विजातियें असद्भूत व्यवहार संबध कहियें जेमजीवाजीव विषयज्ञानकहियें इहाजीवतेज्ञाननी स्वजातिठे अने जीवते ज्ञाननोविजातिठे एवेनोविषयविषयीजाव नामे उपचरित संबंधठे तेस्वजाति विजातिनामे असद्भूतकहियें स्वजातीयाशेकिंनायसद्भूतइतिचेत् विजातीयांशेविशि संबंधस्योपचरितस्यैवानुजावादितिग्रहाण एत्रणजेदकह्या ॥ १५ ॥ जेएकउपचार बीजोउपचारकर्यो तेउपचरित असद्भूत व्यवहारकहियें ॥ १६ ॥

तेहस्वजातिजाणोरे ॥ हुंपुत्रादिक ॥ पुत्रादिकछेमाहराए ॥१७॥ विजा
तिथीतेजाणोरे ॥ वस्त्रादिकमुज ॥ गढदेशादिकउभयथीए ॥ १८ ॥
उपनयभाष्याएम ॥ अध्यात्मनय ॥ कहीपरिज्ञाजशलहोए ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ तेस्वजाति उपचरित असद्भूत व्यवहारजाणो संबंधीकल्पनं जेहुंपुत्रादिक हुंमारा एवु जेपुत्रादिकनेविषेकहेवुं तेपुत्रादिकने उपचस्याछे ते आत्मानो भेदाभेसंबंध उपचरियेंछेयें जेपुत्रादिकते शरीरआत्मपर्यायरूपें स्वजातिछे पणकल्पितछे नतो स्वशरीरजन्य मत्कुणादिकने पुत्रकेमनकहियें ॥ १७ ॥ तथाविजाति उपचरि असद्भूत व्यवहारते कहियेंजे आवस्त्रादिक माहराछे इहांवस्त्रादिक पुद्गलनापर्यायें मादिभेदें कल्पितछे नहीतो वल्कलादिक शरीराछादक तेनेवस्त्रकेमनकहियें तेवितिमां स्वसंबंध उपचरियेंछेयें तेमज माहरागढदेश प्रमुखछे एमकहेतांथकां स्वजा विजात्युपचरित असद्भूत व्यवहार कहियें केमके गढदेशादिकतो जीवअजीवउय समुदायरूपछे ॥ १८ ॥ एरीतेंउपनयकह्या हवे आगलीढालमां अध्यात्मनयकहिएमांगुणदोष परिज्ञानो यशपामो ॥ १९ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ जाचातुजविणघडीरेछमास ॥ एदेशी ॥

दोयमूलनयभाषीयारे ॥ निश्चयनेव्यवहार ॥ निश्चयद्विविधकह्युरे ॥
शुद्धअशुद्धप्रकाररे ॥ प्राणीपरखोआगमभाव ॥१॥ एआंकणी

अर्थ ॥ हवेप्रथम अध्यात्मभाषायेंतो मूलबेजनयकह्याछे एकनिश्चयनय अनेबीजो व्यवहारनय तेमां निश्चयनयनाबली बेभेदछे एकशुद्धनिश्चयनय अनेबीजो अशुद्धनिश्चयनय हेप्राणी ! आगमना भावपरखीनेग्रहो ॥ १ ॥

जीवकेवलादिकयथारे ॥ शुद्धविषयनिरुपाधि ॥ मइनाणा
दिकआतमारे ॥ अशुद्धतेहसोपाधिरे ॥ प्राणी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जीवते केवलज्ञानादिरूपछे माटेजे कर्मोपाधिरहित केवलज्ञानादिक शुद्धगुणविषयलेइ आत्माने अभेददेखाडियें तेशुद्धनिश्चय नयकहियें अने जे मतिज्ञानादिक अशुद्धगुणने आत्माकहियें तेअशुद्धनिश्चयनय सोपाधिकछे एटले जेनिश्चयनयते अभेददेखाडे अनेजेव्यवहारनयते भेददेखाडे ॥ २ ॥

दोइभेदव्यवहारनाजी ॥ सद्भूतासद्भूत ॥ एकविषय
सद्भूतछेजी ॥ परविषयासद्भूतरे ॥ प्राणी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली व्यवहारनयना वेजेदछे एकसद्भूतव्यवहार बीजोअसद्भूतव्यवहार विषयके० एकद्रव्याश्रिततेसद्भूतव्यवहार अनेजे परविषयते असद्भूतव्यवहार ॥

उपचरितानुपचरितथीजी ॥ पहेलोदोयप्रकार ॥ सोपाधिक
गुणगुणीजेदरे ॥ जेअनिमित्तउपचाररे ॥ प्राणी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तेमा पहेलोजे सद्भूतव्यवहारते बेप्रकारेंछे एकउपचरित सद्भूतव्य बीजो अनुपचरित सद्भूतव्यवहार ते जे सोपाधिकगुणगुणीनो जेददेखाडे स्यमतिज्ञान एउपाधि तेहिजइहा उपचरित प्रथमजेदछे ॥ ४ ॥

निरुपाधिकगुणगुणीजेदरे ॥ अनुपचरितसद्भूत ॥ केवल
ज्ञानादिकगुणारे ॥ आतमनाअद्भूतरे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तथानिरुपाधिक गुणगुणीजेद बीजोजेदजाणवो ... हाउपाधिरहितपणो तेहिज निरुपचरितपणु जाणवु ॥ ५ ॥

असद्भूतव्यवहारनाजी ॥ एमजजेदछेदोय ॥ प्रथमअस
श्लेपितयोगेंजी ॥ देवदत्तधनजोयरे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वलीएजरीतें असद्भूतव्यवहारनापण वेजेदछे एकउपचरित असद्भूत व्यवहार बीजोअनुपचरित असद्भूतव्यवहार तेमाप्रथमजेदते असश्लेपित योगें कल्पित संबंधेहोय जेम देवदत्तनुधन इहाधनते देवदत्तनेसंबंध स्वस्वामीजावरूप तेमाटेउपचारथयो तथादेवदत्त अनेधनतेजाते वेहुएकद्रव्यनथी तेमाटे ... जावनाकरवी तेउपचरित असद्भूत व्यवहार जाणवो ॥ ६ ॥

संश्लेपितयोगेवीजोरे ॥ जेमआतमनुदेह ॥ नयउपनय
नयचक्रमारे ॥ कह्यामूलनयएहरे ॥ प्राणी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ बीजोजेद सश्लेपितयोगें कर्मसंबंधेजजाणवो ते जेमआत्मानुशरीर आतयादेहनासंबंध तेधनसंबंधनीपरें कल्पितनथी विपरीतजावनायें निवर्त्तेनहीं जीवरहे तेमाटे एअनुपचरित अनेजिन्नविषयमाटे असद्भूतजाणवो एरीतेंनयतथा उपनय एवेमूलनयसहित तेदिगंबर देवसेनकृत नयचक्रमा कह्याछे ॥ ७ ॥

विपयजेदयद्यपिनहीरे ॥ इहाअमारेथूल ॥ उलटी
परिजापाइसीरे ॥ तोपणदाजेमूलरे ॥ प्राणी० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ इहायद्यपिअमारे श्वेतांवरने थूलके० महोटो विषयजेदके० अर्थनो नथी तोपणमूलके० प्रथमथी उलटीके० विपरीतपरिजापानी शैलीकरीतेदाजेछे ...

रेवे यद्यपि न जवति हानिः परकीयां चरतिरासन्नेडाद्यां ॥ असमंजसं तु दृष्ट्वा तथा-
१ फेरिखिद्यते चेतः इतिवचनात् ॥ ७ ॥

तत्वार्थेनयसातछेरे ॥ आदेशांतरपंच ॥ अंतरजा
वितउद्धरीरे ॥ नवनोकिस्योप्रपंचरे ॥ प्राणी० ॥ ए ॥

: अर्थ ॥ हवेतेथोटीकनी उलटीपरिजापाठे ते देखामीयेंठेयें तत्वार्थसूत्रें सातनय
ह्याठे अने आदेशांतरके० मतांतर तेथीपांचनयकह्याठे सप्तमूलनयाः पंचेत्यादेशांतरं
सूत्रें एटले १ शब्द २ समजिरूढ ३ एवंजूत एत्रणनयने एकशब्द एवेनामें संग्र-
यें तो पहेलानैगमादिक चारनयसाथें मेलवनां पांचनयकहियें तेवलीएकेकना सो-
जेदहोय तिहांपण ७०० तथा ५०० जेदथाय एरीतें वेमतकह्याठे तथोक्तमावश्यके
क्किोयसयविहो सत्तणयसयाहवंतिएलेव ॥ अणोविहुआएसो पंचेव सयानयाणंतु ॥१॥
वीगाजनीरीत मूकीने अंतर्जावित सातनयमां जेल्याजे द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक
उद्धरी अलगाकाढीने नवनयकह्या एस्योप्रपंच हेचतुरमनुष्योतमे विचारीजुर्ज ॥ए॥

पज्जयथ्थद्रव्यारथोरे ॥ जोतुमेअलगादीठ ॥ अप्पियण
प्पियजेदथीरे ॥ केमइग्यारनइठरे ॥ प्राणी० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ एमकरतां पर्यायार्थ तथाद्रव्यार्थ एवेनयजोतुमे अलगादीठा अनेनवनय
ह्या तोअर्पित नयाअनर्पित एवेनयअलगाकरीने इग्यारनयकेमकह्यानहीं ॥ १० ॥

संग्रहव्यवहारादिकेरे ॥ जोतुमेजेलोतेह ॥ आदिअंतनय
थोकमांजी ॥ केमनवीजेलोएहरे ॥ प्राणी० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवेजो एमकहेसोजे अर्पितानर्पितसिद्धेइत्यादि एटले तत्वार्थसूत्रादिकमां
अर्पितानर्पित नयकह्यांठे तेअर्पितके० विशेषकहियें अने अनर्पितके० सामान्यक-
ियें जे अनर्पितते संग्रहनयमांजह्ने अने अर्पितते व्यवहारादिक विशेषनयमां जले
ते जूदागीरीतेकहियें तो अर्पितनार्पित एवेनयजो जूदानथीकहेना तो आदिअंत-
० पहेला तथापाठलनयना थोकमां द्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक एवेनयकेमन-
जेलना जेथकीसुधीरीतें मूलनयसातजकहेवाय तेसर्वसुविधियेंरहे ॥ ११ ॥

पज्जवनयतिअअंतमारे ॥ प्रथमद्रव्यनयचार ॥ जिनजद्रा
दिकजापियारे ॥ महाजाप्यसुविचाररे ॥ प्राणी० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेसातनयमध्ये द्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक एवेनय जेल्यानी आचार्य
त प्रक्रियादेखाडेठे जे अंतमांके० ठहेलाजे शब्द समजिरूढ अनेएवंजूतरूप एत्रण

नयते पर्यायनयकहियें अनेप्रथमनाचारनय जे नैगम संग्रह व्यवहार ...
तेद्रव्यार्थिकनयकहियें एरीतें जिनजद्रगणीक्षमाश्रमण प्रमुखसिद्धांतवादि
ते श्रीविशेषावश्यकना महाजाष्यमध्ये निर्धारिंकहेठे ॥ १२ ॥

सिद्धसेनमुखएमकहेरे ॥ प्रथमद्रव्यनयतीन ॥ तसऋजु
सूत्रनसजवेरे ॥ द्रव्यावश्यकलीनरे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेसिद्धसेन तथामल्लवादीप्रमुख तर्कवादीआचार्य एमकहेठे के
नाअणनयजे १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार एत्रणते द्रव्यनयकहियें अने १ ऋ
२ शब्द ३ समजिरूढ ४ एवंजूत एचारनय पर्यायार्थिककहियें द्रव्यार्थिकम
पर्याया खलु कल्पिता ॥ सत्यतेष्वन्वयिद्रव्य कुण्डलादिपुहेमवत् ॥ १ ॥
द्रव्य पर्यायेत्योस्ति नोपृथक् ॥ यैतैरर्थक्रिया दृष्टा नित्य कुत्रोपयुज्यते ॥ २
द्रव्यार्थपर्यायार्थनयलक्षणात् अतीत अनागत पर्यायप्रतिक्षेपीऋजुसूत्र ...
यमन्यमान कथद्रव्यार्थिक स्यादित्येतेषामाशय तेआचार्यनेमते ऋजुसूत्रनय
वश्यकनेविषे लीननसजवे तथाच उज्जुसुअस्सएगे ...
इतिअनुयोगद्वारसूत्रविरोध वर्त्तमानपर्यायाधारस्यद्रव्याशपूर्वापरपरि...
ऊर्ध्वतासामान्यद्रव्याशसादृश्यास्तित्वरूपतिर्यक्सामान्यद्रव्याश ...
तो ऋजुसूत्रने पर्यायार्थिकनयकहेतां एसूत्रकेममिले तेमाटेक्षणिकद्रव्यवादी
जुसूत्र तद्वर्तमानपर्यायापन्न द्रव्यादि स्थुलऋजुसूत्रतें द्रव्यनयकहेवो एमसि
दीकहेठे अनुपयोगद्रव्याशमेव सूत्रपरिजापितमादायोक्तसूत्रतार्किकमततेनोप
यमित्यस्मादेकपरिशीलित पथा ॥ १३ ॥

इमअतरजाविततणोरे ॥ केमअखगोळपदेश ॥ पाचयकी
जेमसातमारे ॥ विषयजेदनहीलेशरे ॥ प्राणी० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥इमके० एरीतेअतरजावितके० माहेजेल्याजे द्रव्यार्थिक त ...
तेनो अखगोळपदेश केमकस्यो कदाचितजो इमकहेसोजे मतातरे पाचनयक
तेमाथेनयजल्यायका सातनयकहेता जेमअखगोळपदेशठे तेमअमारे द्रव्यार्थि...
र्यिकनो अखगोळपदेशठे तेनोउत्तरजे शब्द समजिरूढ तथाएवंजूतने जेमा...
तेमद्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिकने सातनयथी जिन्न विषय देखाडी जेमत्रपन...
सङ्गायेंसग्रही पांचनयकह्याठे पणविषयजिन्नठे पणइहातो विषयजिन्ननथी केम
व्यार्थिकना दशजेददेखाड्या तेसर्वेशुद्धाशुद्धसग्रहादिक नयमाआवेठे त...
यार्थिकना ठनेददेखाड्या तेसवे उपचरितानुपरित व्यवहार शुद्धाशुद्ध ...

टेकमांआवे जोगोवलिवर्दन्यायें विषयजेदें जिन्ननयकहियें तोस्यादस्त्येव स्यान्नास्त्येव इत्यादिक सप्तजंगीमांकोसोरीतें अर्पितानर्पित सत्वासत्व ग्राहक नय जिन्नजिन्नकरतां सातमूलनयप्रक्रियाजांजे एपंक्तितेविचारवुं ॥ १४ ॥

संग्रहनेव्यवहारथीरे ॥ नैगमकिहांएकजिन्न ॥ तेणेते
अलगोतेहथीरे ॥ एतोदोयअजिन्नरे ॥ प्राणी० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ इहांजो विषयजेदनेनयजेदकहेसो तो सामान्यनैगमसंग्रहनयमांअने विशेष नैगमव्यवहारनयमांजेलतांवाकीठनयजथयीजासेएहवी शिष्यनीआशंकाटालवाने अर्थेकहेठेकेयद्यपि संग्रहनय तथाव्यवहारनयमांहेज सामान्यविशेषपर्यायेंनैगमनय मलेठे तोपणकिहांएकप्रदेशादिदृष्टांतस्थानेजिन्नथायठे उक्तंच ठन्हंतहयचउन्हं पंच न्हेहोतहयहोइजणिज्जा ॥ तम्मयसोयपएतो सोचेवणचेवसत्तन्हं ॥ इत्यादिक तेमाटे केहांएक जिन्नविषयपणाथी नैगमनयजिन्नकह्युं पणइहांतो द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकवे नयनो नैगमादिकनयथी अजिन्नविषयठे तोतेने अलगाकरीने नवजेद शीरीतेकहियें

इमकरताएपामिएरे ॥ सर्वविजक्तविजाग ॥ जीवादिक
परेंकोनहीरे ॥ इहांप्रयोजनलागरे ॥ प्राणी० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एमकरतां नवनयदेखामतां तो विजक्तनो विजागथाय एटले वहेंच्यानुं वहेंचवुंथाय जोतमारे वहेंचणकरवीहोयतो तेवारें जीवाद्विधाः संसारिणःसिद्धाःसंसारिणः पृथ्वीकायिकादि षट्जेदाः सिद्धा.पंचदशजेदाः एमज नयाद्विधाः द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक जेदात् द्रव्यार्थिकास्त्रिधाः नैगमादिजेदात् ऋजुसूत्रादिजेदाच्चतुर्धापर्यायार्थिकः एमकह्युंठे पणनवनया एमएकवाक्यनो विजागकीधो तेसर्वथा मिथ्याजाणवो नहीतो जीवसंसारी सिद्धा. इत्यादि विजागवाक्यपण थवापामे इवेकोइकहेसेजे जीवाजीवौतत्वं एमकहेतां अनेरातत्वआव्या तोपणसात अथवानवतत्व जेमकहियें तेमजद्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकौ नयौ एमकहेतांथकां अनेरानय सर्वआवेठे तोपण अमे स्वप्रक्रियायें नवनयकहिसुं एमकहेतेनेकहियेंजे तिहांप्रयोजनजेदें जिन्नजिन्न तत्व व्यवहारमात्र साध्यठे तेतेमजसंजवे अने इहां इतरव्यावृत्तिसाध्यठे तिहांहेतु कोटि अनपेक्षित जेदप्रवेशें वैयर्थ्यदोषहोय तत्वप्रक्रियायें एप्रयोजनठे जीव अजीव एवेमुख्यज्ञेयपदार्थजणीकहेवा अनेबंध मोक्ष एवे मुख्यहेयउपादेयठे तेमाटे बंधकारण जेआश्रव ते हेयके० ठांमवुं अनेमोक्षमुख्य पुरुषार्थठे तेनावेकारण एक संवर बीजोनिर्जराकहेवा एसाततत्वकहेवानी प्रयोजनप्रक्रियापुण्यपापरूप शुजाशुजबंध जेदविगति अलगाकरी एजप्रक्रियानवतत्वकथननीजाणवी ॥ १६ ॥

भिन्नप्रयोजनविणकह्यारे ॥ सातमूलनयसूत्र ॥ तेणेअधिकुं
केमत्रापीयेरे ॥ राखीयेंनिजघरसूत्ररे ॥ प्राणी० ॥ १७ ॥

अथ ॥ मादेश्हांड्व्यार्थिक पर्यायार्थिकना भिन्नोपदेशनु कोइप्रयोजन
सत्तमूलनयापणना एहवुसूत्रेंकह्युछे तेउल्लंघीने नवनयकहियें तो आपणा
मरहें तेमाटे नवनया एमकहेतोथको देवसेननामा बोटिकतेउत्सूत्रनाषीउ

दशनेदादिकपणइहारे ॥ उपलक्षणकरीजाण ॥ नहीतो
कहोअतरनवेरे ॥ प्रदेशार्थकुणठाणरे ॥ प्राणी० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ इहा नयचक्रग्रंथमा दिगंबरें ड्व्यार्थिकादिक दशनेदादिककह्या
लक्षणेकरीजाणो नहीतो प्रदेशार्थ नयकयास्थानकेंआवे तेविचारजो उक्तं
ठयाए पएसठयाए इत्यादि तथाकर्मोपाधीसापेक्ष जीवनावग्राहक
कह्यो तेम जीवसयोगसापेक्ष पुजलनावग्राहकनयपण भिन्नकह्योजोइयें
तो अनतानेदथाय तथाप्रस्थकादि दृष्टाते नैगमादिकना अशुद्ध अशुद्धतर
शुद्धतर शुद्धतमादिनेद किहासंग्रह्याजाय उपचारछे तेमाटे उपनयकहियें
द्धातथाय एअनुयोगद्वारसूत्रे तेनयनानेद देखाड्याछे ॥ १८ ॥

उपनयपणअलगानहीरे ॥ जेव्यवहारसमाय ॥ नहीतोनेद
प्रमाणनोरे ॥ उपप्रमाणपणथायरे ॥ प्राणी० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ वलीएहिजवातदृढेछे जेउपनयकह्या तेपण व्यवहार नैगमादि
लगानथी उक्तच तत्वार्थसूत्रे उपचारबहुलोविस्तृतार्थो लौकिकप्रायोव्यवहार
करतां नयनानेदनेजो उपनयकरीमानसो तो स्वपरव्यवसायि ज्ञानप्रमाण
लक्षित ज्ञानरूपप्रमाणनो एकदेश मतिज्ञानादिक अथवा देशअवग्रहादिक
प्रमाणपण केमनथीकहेता तस्मात्नय उपनय एबोटिकनीप्रक्रिया शिष्यबुद्धि
नमात्रजाणवी ॥ १९ ॥

व्यवहारनेनिश्चययकीरे ॥ स्योउपचारविशेष ॥ मुख्य
वृत्तिजोएकनीरे ॥ तोउपचारविशेषरे ॥ प्राणी० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ व्यवहारनेविषे उपचारछे अनेनिश्चयनयमा उपचारनथी ५
वारें एकनयनी मुख्यवृत्तिकहियें तेवारें बीजानयनी उपचारवृत्तिआवे अनय
स्येव एनयवाक्यें अस्तित्वग्राहक निश्चयनयेंअस्तित्वधर्म मुख्यवृत्तिलेना कालादि
अनेदवृत्युपचारे अस्तित्वसबध सकलधर्मलेताज सकलादेशरूप नयवाक्य था

करग्रंथेप्रसिद्धछे स्वस्वार्थ सत्यपणानो अभिमानतो सर्वनयने मांहोमांहेछेज अने
ग्रथीसत्यपणुंतो सम्यक्दर्शनयोगेंजछे ॥ २० ॥

तेणेएजाण्येजाण्युंरे ॥ आदरियेंनिरधार ॥ तत्वअरथ
निश्चयग्रहेरे ॥ जिनअभिमतव्यवहाररे ॥ प्राणी० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेनिश्चय तथाव्यवहारनुंलक्षण जाण्येके० विशेषावश्यकें कह्युंछे तेरी-
निरधारीने आदरो तत्वार्थग्राहीनयोनिश्चयः लोकाभिमतार्थग्राहीव्यवहारः जेतत्व-
र्थते युक्तिसिद्धअर्थ जाणवो अनेजेलोकाभिमतते व्यवहारप्रसिद्धछे तेयद्यपि प्रमा-
तत्वार्थग्राहीछे तथापि प्रमाणस्य सकलतत्वार्थग्राही निश्चयनयः जछे एटले एकदे-
तत्वार्थग्राही व्यवहार एभेदनिश्चें व्यवहारमांजाणवो अनेनिश्चयनयनी विषयता अ-
व्यवहारनयनीविषयताते अनुभवसिद्धभिन्नछे अत्राज्ञाननयनिष्ट जेमसविकल्पकता-
टप्रकारी इत्यादिक अन्यवादिभिन्न मानेछे एमहृदयमां विचारवुं ॥ २१ ॥

अभ्यंतरतावाह्यनेरे ॥ जेवहुविगतिअभेद ॥ निरमलपरि
णतिद्रव्यनीरे ॥ एसवीनिश्चयभेदरे ॥ प्राणी० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेवाह्यअर्थने उपचारें अभ्यंतरपणुं करियें तेनिश्चयनयनो अर्थजाणवो यथा
माधिर्नंदनंधैर्यं दंभोलिःसमताशची ॥ ज्ञानंमहाविमानंच वासवश्रीरियंपुनः ॥ १ ॥
यादि पुंडरीकाध्ययनाद्यर्थोप्येवंभावनीयः जेघणीव्यक्तिनो अभेददेखाडियें तेपण
श्चयनयार्थ जाणवो जेम एगेआया इत्यादिसूत्रं वेदांतदर्शनपण शुद्धसंग्रहनयादे-
रूप शुद्धनिश्चयनयार्थ एमसंमतिग्रंथेंकह्युंछे तथाद्रव्यनीजे निर्मलपरिणति वाह्य नि-
क्ष परिणाम तेपणनिश्चयनयनोअर्थजाणवो जेम आयासामाइए आयासामाइअस्स-
छे एमजेजेरीतें लोकातिक्रांत अर्थपामियें तेते निश्चयनयनो अर्थभेदथाय अने ते-
लोकोत्तरार्थ भावनाआवे ॥ २२ ॥

जेहभेदछेविगतिनोरें ॥ जेउत्कटपर्याय ॥ कार्यनिमित्त
अभिन्नतारे ॥ एव्यवहारउपायरे ॥ प्राणी० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ जेव्यक्तिनो भेददेखाडियें जेम अनेकानिद्रव्याणि अनेकजीवा इत्यादिरीतें
वहारनयनोअर्थ तथा उत्कटपर्याय जाणियें तेपणव्यवहारनयनोअर्थ अतएव ति-
पणएणंपंचवन्ने भमरेववहारणएणंकालवणे इत्यादि सिद्धांतेंप्रसिद्धछे तथा कार्यने
मित्तके० कारण एवेहुने अभिन्नपणुंकहियें तेपणव्यवहारनयनो उपायछे जेमआयु-
तं इत्यादिककहियें एमजगिरिर्दह्यते कुंभिकास्रवति इत्यादिक व्यवहारभापा
रूपें कहियेंछेयें ॥ २३ ॥

एमवहुविपयनिराकरीरे ॥ करतातससकोच ॥ केवलबाल
बोधवारे ॥ देवसेनआलोचेरे ॥ प्राणी० ॥ २४ ॥

अर्थ॥एहवानिश्चयनय तथाव्यवहारनयनाघणाअर्थ तेनेनिराकरीके० टालीने सकोचकरतां थोमोजेदरेखाफतां नयचक्रग्रंथनोकर्त्ताजे देवसेनआदि ... लोच ते पोतासरिखा केटलाक बालकनेज बोधज्ञानोदेवायछे ... आलोच देखातोनथी अनेजे शुद्धनयार्थतेत्तोश्वेतावर संप्रदायना शुद्धनयनाग्रंथ अभ्यासथीज जणाय एवाअर्थछे ॥ २४ ॥

एमवहुविधनयजंगसुरे ॥ एकत्रिविधपयग्थ ॥ परखोहरपो
हैयरूलेरे ॥ सुजशलहीपरमछरे ॥ प्राणी० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ एप्रक्रियामापणअशुद्धटालीने जेयुक्तिसिद्धअर्थछे ते उपपादुन तेमा रीतें वहुप्रकारनयेजगे एकजअर्थ त्रिविधके० द्रव्यगुणपर्यायरूप परखो स्वसमय समयनु अंतरजाणीने हृदयनेविषे हर्षो परमार्थज्ञानयशपामीने ॥ २५ ॥

॥ ढालनवमी ॥

॥ इमधन्नोधणनेपरचावे ॥ एदेशी ॥

एकअरथतिहुलक्षणे ॥ जेमसद्दितकहेजिनराज
रे ॥ तेमसद्दहणामनधारता ॥ सीजेसघलासुज
काजरे ॥ जिनवाणीप्राणीसाजलो ॥ एआंकणी ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेएकजअर्थ जीवपुद्गलादिक तथाघटपटादिक ते जेम उत्पाद व्यय ध्रुव एत्रणलक्षणेकरी सहित एमश्रीजिनराजकहेछे उपन्नेवा विगमेइवा ध्रुवेइवा ए त्रिप दीयेंकरीने तेमज सद्दहणामनमाधरता सर्वकार्यसीजे एत्रिपदीने सर्वअर्थव्यापक धारवु तेजिनशासनार्थ पणकेटलाएक एकनित्यज केटलाएकएकअनित्यज एमनैया यिकादिककहेछे तेरीतिनथी केमके नित्यैकात अनित्यैकात पक्षतोलोकयुक्तियीविरु रोधछे माटे दीपथीमाफीने आकाशसुधी जेटलापदार्थछेतेमा उत्पाद व्यय ध्रुव ... लक्षणमानवु तेहिजप्रमाणछे उक्तंच श्रीहेमाचार्यैं आदीपमाव्योमसमस्वभावं ... दसुद्रानतिभेदवस्तु ॥ तन्नित्यमेवैकमनित्यमन्यदितित्वदाज्ञाद्विपताप्रलाप ॥ ... एजिनेश्वरनी वाणी हेप्राणीतुमेसाजलो ॥ १ ॥

उत्पादव्ययध्रुवपणे ॥ छेसमयसमयपरिणामरे ॥ षटद्रव्य
तणोप्रत्यक्षथी ॥ नविरोधतणोएठामरे ॥ जिन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेएहिजभाव विवरीनेकहेछे १ उत्पाद २ व्यय ३ ध्रुवएलक्षणे षटद्र-
नो समयसमय परिणामछे इहांकोइकहेसेजे जिहांउत्पादव्यय तिहांध्रुवपणो नजो-
अनेजिहांध्रुवपणो तिहांउत्पादव्यय नजोइयें एहवोविरोधछे तोत्रणलक्षण एक-
नेकेमहोय जेम छाया तथाआतप एकठामेनहोयतेम ए त्रणलक्षपण एकठामे न-
ाजोइयें तेनेकहियेंजे शीत उष्ण स्पर्श जल तथा अनलके० अग्निनेविषे परस्परें
हारेंरहीगछे तेने एकठामें उपसंहारे विरोधकहियें पण इहांतोत्रणलक्षण सर्व-
कठाज प्रत्यक्षथीदेखायछे परस्परपरिहारेंकिहांयें प्रत्यक्षसिद्धनथी तोए विरोधनो
न केमहोय अनादिकालनी एकांतवासनायें मोहितजीव तेहनोविरोधजाणेछे
परमार्थे विचारीजोतां विरोधनथी समनियततायें प्रत्ययजविरोधभंजकछे ॥ २ ॥

घटमुकुटसुवर्णहअर्थिया ॥ व्ययउत्पतिथितिपेखंतरे ॥
निजरूपेंहोवेहेमथी ॥ दुखहर्षउपेक्षावंतरे ॥ जिन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेहिजदेखाडेछे जे एकहेमद्रव्यनेविषे घटाकारेंनाश अनेमुकुटाकारेंउत्प-
तथाहेमाकारेंस्थिति एत्रणलक्षण प्रगटदेखायछे केमके हेमघटभांजी नेहेममुकुट
यछे तेथी हेमघटार्थ दुखवंतथायछे माटेघटाकारें हेमव्ययसत्यछे अने हेममुकु-
र्थि हर्षवंतथायछे तेमाटेहेमोत्पत्ति मुकुटाकारेंसत्यछे अनेहेममात्रार्थ तेकालेंनसुख-
नदुःखवंतथायछे स्थितिपरिणामेंरहेछे तेथी हेमसामान्यस्थिति सत्यछे एमसर्वत्र
पादव्यय स्थितिपर्याय द्रव्यरूपेंजाणवा इहांउत्पादव्यय भागेंभिन्नद्रव्य अनेस्थि-
भांगे भिन्नद्रव्य कोइदेखातुंनथी केमके घटमुकुटाद्याकारें स्पर्शि हेमद्रव्यछेनही
एकध्रुवहोय ध्रुवतानीप्रतितिपणछे माटेतद्भावाव्ययंनित्यं एलक्षण परिणामे ध्रुवअने
रिणामेंअध्रुव एसर्वेभाववुं ॥ ३ ॥

घटव्ययतेउतपत्तिमुकुटनी॥ ध्रुवताकंचननीएकरे ॥ दलएकें
वर्त्तेंएकदा ॥ निजकार्यशकतिअनेकरे ॥ जिन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेउत्पादव्यय ध्रुवनो अभेदसंबंध भेददेखाडेछे हेमनाघटनोजेव्यय तेहि-
हेममुकुटनीउत्पत्ति एककारणजन्यछे तेमाटे विभागपर्यायोत्पत्ति संतानछे तेथीज
टनाश व्यवहारसंभवेछे तेमाटे पण उत्तरपर्यायउत्पत्ति तेपूर्वपर्यायनो नाश जाणवो
निकंचननी ध्रुवतापणतेहिजछे केमके प्रतित्यपर्यायोत्पदें एकसंतानपणुं तेहिजद्रव्य-
क्षण ध्रौव्यछे एत्रणलक्षण एकदलें एकदावर्त्तेछे एमअभिन्नपणे पण शोक प्रमोद
ध्यस्थरूप अनेककार्यदेखीने तत्कारणशक्तिरूपें अनेकपणे भिन्नतापणो जाणवो
सामान्यरूपें ध्रौव्य अनेविशेषरूपें उत्पादव्यय एममानतांपण विरोधनथी व्यव-

हारतोसर्वत्र स्याद्वादार्थानु प्रवेशोजहोय विशेषपरतापण व्युत्पत्तिविशेषजहोय एव स्याडुत्पद्यते स्यान्नश्यति स्याद्ध्रुवं एमजवाक्यप्रयोगकरियेउत्पन्नेवा इत्यादि शब्दोनिवस्थायासच स्यादव्दसमानार्थं अतएव कृष्ण सर्प ५ल।।केम तुशब्देलहीये केमके सर्पने पृष्टावच्छेदेश्यामताछे पण उदरावच्छेदे श्यामतानथी सर्पमात्रे कृष्णतानथी शेषनाग शुक्लकहेवायछे तेमाटे निशेषणविशेष्यनि स्यातशब्दप्रयोगछे तोत्रिपदि महावाक्यपणे स्यात्कारनीजजनासजवे ॥ ४ ॥

बहुकारयकारणएकजो ॥ कहियेतेद्रव्यस्वजावरे ॥ तो
कारणजेदाजावथी ॥ होयकारयजेदाजावरे ॥ जिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेजोएमकहियेंजे हेमद्रव्यएकज अविकृतछे अनेजेविकार अनेशोकादिककार्यत्रय जननेकशक्ति स्वजावतेछे तेमाटे तेथी छे तोकारणनाजेदविना कार्यनोजेद केमथाय श्रेष्टसाधनते प्रमोदजनक अने साधनते शोकजनक तदुजयजिन्नते माध्यस्थजनक एत्रिविधकार्य ते एकस्वरूप होय शक्तिपण दृष्टांतानुसारे कल्पियेंछेये नहीतो अग्निसमीपे जलदाह इत्यादिककल्पता पण कोणनिषेधकछे तस्मात् शक्तिजेद कारणजेद अवश्यअनुसरवो अने जननेकशक्तिशब्दज एकरूपानेकरूप स्याद्वादसूचवेछे ॥ ५ ॥

शोकादिकजननेवासना ॥ जेदेकोईबोलेबुध्दरे ॥ तसमन
मकारनीजिन्नता ॥ विणनिमित्तजेदकिमशुध्दरे ॥ जिन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ शोकादि० बौधमतवादि एमकहेछे जे तुनानोमन्नोतमननीयरें यजयरदाते क्षणिकस्वलक्षणनेध्रुवतातोछेजनही हेमयीशोकादिक कार्यहोयछे जिन्नशोकनी जिन्नवासनाछे तेमाटे जेमएकजवस्तुवासनाजेदे कोनेअनिष्ट जेमनेदारीप्रमुख मनुष्यनेइष्टछे तथाकरजजेवट तेनेअनिष्टछे पणतिहां तेमइहांपणनाणनु तेबौद्धने निमित्तजेदविना वासनारूप मनस्कारनीजिन्नता कयाय माटे शोकादिकनु उपादान जेमजिन्नजिन्नछे तेम निमित्तपणजिन्न नन्तु एकवस्तुनीप्रमातृनेदे इष्टानिष्टताछे तिहांपण एकद्रव्यना इष्टानिष्टपर्यायन क्तिरूपपर्यायनेदकहेवाज ॥ ६ ॥

जोनिमित्तजेदविणज्ञानथी ॥ शक्तिसंकल्पविकल्परे ॥ तो
बाह्यवस्तुनालोपथी ॥ नघटेतुजघटपटजल्परे ॥ जिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जो योगाचारमतवादि बौद्ध कहेछेजे निमित्तकारणनाजेदविनाज

ग्रोपजनितज्ञानस्वन्नावथी शोकप्रमोदादिक संकल्पविकल्पहोयछे तो घटपटादिक मित्तविनाज वासनाविशेषे घटपटाद्याकार ज्ञानहोवुंजोइयें तेथी वाह्यवस्तु सर्व पाए अनेनिःकारण तत्तदाकारज्ञानपण संज्ञवेनही अंतरवहिराकारविरोधें वाह्या- र मिथ्याकहियें तोचित्रवस्तुविषय नीलपीताद्याकार ज्ञानपण मिथ्या थयीजाय त- सुखाद्याकार नीलाद्याकारपण विरूद्धथाय तेथीसर्व शून्यज्ञानवादि माध्यमिकवौ- गो मतआवीजाय उक्तंच किंस्यात्सा चित्रतैः कस्यांनस्यात्तस्यामतावपि ॥ यदीदंस्व- यर्थानां रोचतेतत्रकोवयं ॥ १ ॥ तेशून्यवादपण प्रमाणसिध्यसिद्धि व्याहतछे तेमाटे नियशुद्धस्याद्वादज वीतरागप्रणीत आदरवो ॥ ७ ॥

घटनाशमुकुटउतपत्तिनो ॥ घटएकजरूपेंहेतरे ॥ एकांत
न्नेदनीवासना ॥ नैयायिकपणकेमदेतरे ॥ जिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ एमशोकादि कार्यत्रयनेन्नेदें उत्पादव्ययध्रौव्य एत्रणलक्षण वस्तुमांसाध्या । तेअविजक्तछे द्रव्यपणेअन्निन्नछे अतएव हेमघटनाशाजिन्न हेममुकुटोत्पत्तिनेविषे नघटावय विन्नागादिकहेतुछे अतएवच महापटनाशाजिन्न खंडपटोत्पत्तिप्रतिएकादि तुसंयोगापमहेतुछे खंरूपटें महापटनाशने हेतुताकल्पियें तोमहागौरवथाय एमजा- णी एलाघवप्रियनैयायिक नाशोत्पत्तिना एकांतन्नेदनीवासना केमदीयेछे तेहनुंमतछे कल्पनागौरवंयत्र तंपक्षंनसहामहे ॥ कल्पनालाघवंयत्र तंपक्षंतुसहामहे ॥ ८ ॥

दुग्धव्रतदधीजिमेनही ॥ नवीदूधदधीव्रतखायरे ॥ नवीदोइ
अगोरसव्रतजिमे ॥ तेणेतियलक्षणजगयायरे ॥ जिन० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ जेदधिद्रव्यते दुग्धद्रव्यनही केमके जेहनेदूधनुंव्रतछेएटलेदूधजजिमवुं ए- वीप्रतिज्ञारूपछे तो तेदहीजिमेनही माटे दूधपरिणामतेहिजदधि एमजोअन्नेदक- यें तोदधिजिमतां दुग्धव्रतन्नंगथवोनजोइयें एमाटे जे दूध तेदधिद्रव्यनही अने परिणामीछे माटे अन्नेदकहियें तो दूधजिमतां दधिव्रतन्नंग नथवोजोइयेंअने जेहने धिखावानुंव्रतछेतेपण दूधजिमतोनथी तथाअगोरसजजिमवुं एहवोव्रतवंत होय ते य तथादहीवेहुजिमेनहीएमगोरसपणे वेनेअन्नेदछे इहांदविषणे उत्पत्तिअने दुग्ध- नाशतथागोरसध्रुवपणोप्रत्यक्षसिद्धछे एदृष्टांते सर्वजगद्वृत्तिन्नावने लक्षणत्रययुक्त- । कहेवुं श्लोक पयोव्रतोनदध्यत्तिनपयोत्तिदधिव्रतः ॥अगोरसव्रतोनोन्ने तस्मात्वस्तु- यात्मकं ॥१॥ जे अन्वयिरूप अनेव्यतिरेकरूप द्रव्यपर्यायथी सिद्धांत अविरोधेंसर्वत्र वतारीने त्रणलक्षणकहेवा केटलाएकन्नाव व्यतिरेकीज अने केटलाएकन्नावअन्व- ज एरीतेंजे दर्शनीकहेछे तिहांअनेरान्नावस्याद्वादव्युत्पत्तीयें देखाडवा वीजुंवस्तुनी

सत्ता त्रणलक्षणरूपजछे उत्पादव्यय ध्रुव्ययुक्त सदितितत्वार्थ वचनात् तोतव
तेहजत्रिलक्षणसाक्षात्छे तथारूपें सद्व्यवहार साध्यअनुमान

उत्पन्नघटेंनिजद्रव्यना ॥ उत्पत्तिनाशकेमहोयरे ॥ सुणध्रु
वतामापदेखाजलिया ॥ तेअनुगमशक्तिहोयरे ॥ जिन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेयावत्काल एकेकवस्तुमा त्रिणत्रिणलक्षणादिक केवीरीतेंहोय
धारेछे उत्पत्तियथीछेजेहनी एहवोजेघट तेनेविषे द्वितीयादिलक्षण सद्रव्यसत्र
पोत्तरपर्यायोत्पत्ति तेहिजपूर्वपर्यायनाश तेतुमेपूवेथाप्योछे एहवोशिष्येंप्रश्नपुछ्यो
गुरुकहेछे प्रथमक्षणेंथयाजे उत्पत्तिनाश ते ध्रुवतामाजल्या अने अनुगमकेट
तेशक्तिसदाछे अवतेपण आद्यक्षणे उपलक्षणेथयीने आगलक्षणे
पहिये जेम उत्पन्नोघट नष्टोघट सर्वप्रयोगात् इदानींउत्पन्ननष्ट एमकहियें
एतत्क्षणविशिष्टता उत्पत्तिनाशनेजाणिये तेद्वितीयादिक्षणेनथी तेमाटे द्विती
क्षणे इदानींउत्पन्न इत्यादिप्रयोगनथाय घटके० इहाद्रव्यार्थदेशे मृद्रव्यपणेंतु
उत्पत्तिनाशधरता सामान्यरूपेंकहियें तत्प्रतियोगिता तेविशेषरूपेंकहियें ॥ १० ॥

उत्पत्तिनाशनेअनुगमें ॥ भूतादिकप्रत्ययजानरे ॥ पर्याया
रथथीमविघटे ॥ तेमानेसमयप्रमाणरे ॥ जिन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ निश्चैनयथी कज्जमाणेकडे एवचनअनुसरीने उत्पद्यमानते
हियें पणव्यवहारनयथी उत्पद्यते उत्पन्न उत्पस्यतेनश्यतिनष्टनंक्ष्यति एविन
प्रयप्रयोगछे तेप्रतिक्षण पर्यायोत्पत्तिनाशनयवादी जे ऋजुसूत्रनय तेणेंअनुगत
व्यवहारनयछे तेहनेंकहियें केमके ऋजुसूत्रनय समयप्रमाण वस्तुमानेछे तिहां
पांपना वर्त्तमान उत्पत्तिनाश गिणतीयें तेलेइने उत्पद्यते नश्यतिकहियें अने
लेइ उत्पन्नोनष्ट एमकहियें वली अनागतनेलेइ उत्पत्स्यतेनंक्ष्यति एमकहियें
स्यामर्थ्याज्जन्यप्रयोगेंमनाने ॥ ११ ॥

जोतुजउत्पत्तिविशिष्टनो ॥ व्यवहारनाशनोइष्टरे ॥ व्यवहारें
उत्पत्तिआदरो ॥ नोपदेखाअगतिविशिष्टरे ॥ जिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जो उत्पत्तिआरम्भ नाशनेविषे भूतादिकप्रत्ययनकहियें अने न
नोअर्थ नाश ने उत्पत्ति एवेलेह तदुत्पत्तिकालप्रयनो अन्वयसनयनो कहियें
केतलानंसमयें नष्ट एप्रयोगनहोय केमके तेकालेंनाशोत्पत्तितु अनीतन
व्यवहारनोनो समर्थनकरोतो नोव्यवहारें उत्पत्तिक्षणसंबंध मात्रकहो तिहा

वंसनाकालनावथी कालत्रयनोअन्वय समर्थनकरो अनेजोएमविचारसोजेघटने
मानत्वादिकें जेमघटवर्त्तमानत्वादि व्यवहारनहोय अने पटधर्मवर्त्तमानत्वादिकें
वर्त्तमानत्वादिकव्यवहारनहोय तेमनाशोरत्ति वर्तमानत्वादिकें नाशवर्तमानत्वा-
व्यवहारनहोय तोक्रियानिष्टा परिणामरूप वर्त्तमानत्वने अतीतत्वलेइ नश्यतिनष्टः
द्यतेउत्पन्नः एविनक्ति व्यवहारसमर्थन करो अतएव क्रियाकाल निष्टाकालयोग-
विवक्षायें उत्पद्यमानं उत्पन्नं विगछद्विगतं एसिद्धांतिक प्रयोगसंनवे अनेपरमतें
र्नो ध्वस्तोघटः एआद्यक्षणे व्यवहारसर्वथा घटेनही पण अमारेनयनेदेसंनवे उ-
व संमतो स्वाधिकरणक्षणत्वव्यापकस्वाधिकरणक्षणध्वंसाधिकरणताकत्वं अनुत्पन्नं ॥
पज्जमाणकालं उप्पणंति विगयंविगछंतं॥नेदवियपन्नवंतो तिकालविसयंविसेसेई ॥१॥

उत्पत्तिनहीजोआगलें ॥ तोअनुत्पन्नतेथायरे ॥ जिमनाश
विनाअविनष्टछे ॥ पहेलातुजकेमसुहायरे ॥ जिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ आगलेंके० द्वितीयादिक्षणेजो उत्पत्तिनही तोघटादिक द्वितीयादिकक्षणे
नुत्पन्नथाय जेमध्वंसथयापहेला नाशविना अविनष्टकहियेंछेयें तोएतर्कतुजने केम-
तुंनथी तेमाटेप्रतिक्षणोत्पाद नाशपरिणामद्वारें मानवा द्रव्यार्थदेशेंद्वितीयादि-
णे जोउत्पत्ति व्यवहारकहियें तोनाशव्यवहारपण होवोजोइयें तथाक्षणांतरनावें
तीयादिक्षणे उत्पत्ति पामीजोइयें जोअकल्पित अनुत्पन्नता होयनही तोपणप्रति-
णे उत्पत्तिविना परमार्थथी अनुत्पन्नताथवी जोइयें ॥ १३ ॥

एणेनावेंनासिउं ॥ संमतिमांहेएनावरे ॥ संघयणादिक
नवनावथी ॥ सीजंताकेवलजायरे ॥ जिन० ॥ १४ ॥
तेसिद्धपणेवलीउपजे ॥ केवलनावेंछेतेहरे ॥ व्ययउत्पत्ति
अनुगमथीसदा ॥ शिवमांतियलक्षणएहरे ॥ जिन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एमपरिणामथी सर्वद्रव्यने त्रिलक्षणयोग समर्थिउं एजअनिप्रायें संमति
थमां एनावनाष्योछे जेसंघयणादिक नवनावथीसीजतां मोक्षसमयें केवलज्ञानजाय
नस्थ केवलज्ञानपर्यायें नाशथाय एअर्थतोसिद्धपणे सिद्धकेवलज्ञानपणे उपजे तेही-
केवलज्ञानपणे नावेंछे ध्रुवछे एमोक्षगमनसमयजे व्ययउत्पत्तिथया तत्परिणतसिद्ध-
व्यानुगसथी शिवमां मोक्षमां त्रणलक्षणहोय जेसंघयणाइया नवछकेवल विसेपप-
ाया ॥ तेसिझमाणसमए णहोइविगयंतउंहोइ ॥ १ ॥ सद्धत्तणेणयपुणो उप्पणोएस-
उपज्जाउं केवलनावंतुपडुच्च केवलंदाइअंसुत्ते ॥ २ ॥ एनावलेइने केवलनाणेडुवि-

हेपन्नते नवद्धकेवलनाणेय सिद्धकेवलनाणेय इत्यादिसूत्रे उपदेशछे एत्रणलक्षण लव्यवहारनय सिद्धनेश्राव्यु पणसूक्ष्मनयनाव्यु केमके सूक्ष्मऋजुसूत्रादिकनय समयप्रतें उत्पादव्ययमानेछे तेलेइने तथा द्रव्यार्थदेशनो अनुगमलेइने वलज्ञानमां त्रैलक्षणकहियें तेजसूक्ष्मकहेवाय एमविचारीने पक्षांतरकहेछे।

जेज्ञेयाकारेंपरिणमे ॥ ज्ञानादिकनिजपर्यायरें ॥ व्यतिरेके तेथीसिद्धने ॥ तियलक्षणइमपणथायरे ॥ जिन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जेज्ञानादिकके० केवलज्ञान केवलदर्शन तेपोतानापर्याय मानादिक विषयाकारें परिणमे व्यतिरेकेंके० प्रतिक्षणेअन्योन्यपणे तेथीपणत्रणलक्षणथाय तेआवीरीतेंजे प्रथमादिसमये वर्त्तमानाकारछे तेहनो यादिक्षणेनाश अतीताकारेंउत्पादआकारेंजावें अनेकेवलज्ञान केवलदर्शनजावें केवलमात्रजावें ध्रुवछे एमजावना करवी ॥ १६ ॥

इमजेपर्यायेंपरिणमे ॥ क्षणसवधेंपणजावरें ॥ तेथीतिय लक्षणसजवे ॥ नहीतोतेथायअजावरे ॥ जिन० ॥१७॥

अर्थ ॥ एमजेज्ञेय दृश्याकारसवदे केवलनेत्रैलक्षण कह्यु हवेनिराकारजे वीर्यादिकजाव तेने तथा सिद्धादिक शुद्धद्रव्यने कालनासवधथी त्रणलक्षण एमजेजाव क्षणसवधेपण पर्यायथीपरिणमे एप्रथमपदार्थ तेथीत्रणलक्षण सजवे द्वितीयक्षणेजाव अने आद्यक्षणे सवधपरिणामें नाशपाम्यो अनेद्वितीयक्षणे परिणामे उपनो वलीक्षणसवधमात्रे ध्रुवछे तेकालसवधथी त्रणलक्षणसजवे नहीतो तेवस्तुनो अजावथयीजाय उत्पादव्यय ध्रुवयोग्यज जावलक्षणछे अनेतेरहित शविषाणादिक तेअजावरूपछे ॥ १७ ॥

निजपरपर्यायेएकदा ॥ बहुसंवधेबहुरूपरे ॥ उत्पत्तिनाश एमसजवे ॥ नियमेतिहांध्रौव्यसरूपरे ॥ जिन० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ एमपोतानापर्यायें जीव तथापुद्गलने अनेपरपर्यायें आकाश काय अधर्मास्तिकायएत्रणद्रव्यने एककाले बहुके० घणासवधे बहुप्रकारें उत्पत्ति शसजवे जेटलास्तपर्याय तेटला उत्पत्तिनाशहोय तेथी तिहांध्रौव्यस्वरूपपण निरधारछे पूर्वापरपर्यांनुगतआधाराशतावन्मात्रहोय तेनति यमीपग दवियसमद्दुआविहोंतिछ ॥ उप्पायसमाविगमा

द्विविधप्रयोगजवीससा ॥ उत्पादप्रथमअविशुद्धरे ॥ तेनियमें समुदयवादनो ॥ यतनेसंयोगजसिद्धरे ॥ जिन० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ उत्पाद द्विविधकं० बेप्रकारेंछे एकप्रयोगज बीजोवीससाके० स्वभावजनित तेमां पहेलो उत्पादते व्यवहारनोछे तेमाटेअविशुद्धकहियें तेनिर्धार समुदयवादनो उत्पत्तिकरी अवयवनेसंयोगें सिद्धकहियें अत्रसंमतिगाथा ॥ उप्पाउदुविअप्पो पउ-गजणीउंअवीस्ससाचेव ॥ तत्थयपउगजणीउं ॥ समुदयवाउअपरिसुद्धो ॥ १९ ॥

सहजेंथायतेवीस्रसा ॥ समुदयएकत्वप्रकाररे ॥ समुदय
अचेतनखंधनो ॥ वलीसचित्तमिसनिरधाररे ॥ जिन० ॥२०॥

अर्थ ॥ अनेजे सहजें यत्नविनाउत्पादथाय तेविश्रसा उत्पादकहियें तेएकसमुदयजनित अनेबीजोएकत्विक उक्तंच साहाविउवीसमुदय कउवएगत्तिउव्वहोज्जाहिं ॥ समुदयजनित विश्रसाउत्पाद तेअचेतनस्कंध अभ्रादिकनो तथासचित्तमिश्रशरीरादिकनो निरधारजाणवो ॥ २० ॥

संयोगविनाएकत्वनो ॥ तेद्रव्यविभागेंसिद्धरे ॥ जिमखंध
विभागेंअणुपणुं ॥ वलीकर्मविभागेंसिद्धरे ॥ जिन० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ संयोगविनाजे विश्रसाउत्पाद तेएकत्विकजाणवो तेद्रव्यविभागें सिद्धके० प्रत्यक्षजाणवो जेमद्विप्रदेशादिक स्कंधविभागें अणुपणुंके० परमाणुद्रव्यनो उत्पाद थाय तथाजेमजीवने कर्मविभागें सिद्धपर्यायनो उत्पादथाय अनेअवयवनासंयोगेज द्रव्यनीउत्पत्तिहोय पणविभागेंनहोय एहवुंजे नैयायिकादिक कहेछे तेनेमतें एकत्वादिविभागें खंडपटोत्पत्तिकेमघटे प्रतिबंधकाभावसहित अवस्थित अवयवनासंयोगने हेतुकल्पतां महागौरवहोय तेमाटेकिहांएकसंयोग किहांएकविभागें द्रव्योत्पादकमानो तोविभागज परमाणुउत्पादपणे एपणअर्थसिद्धथयो एसंमतिमांसूचव्युंछे तदुक्तं अतरसंयोगाहि केइदवियस्सावितिउप्पायं ॥ उप्पायथ्थाकुशलाविभागजायणइथ्थंति॥१॥ अणुपहिंदव्वेआ रद्धेतिअणुअंतिववएसो ॥ तत्तोअपुणविभत्तो अणुत्तिजाउअणुहोइ ॥

विणखंधहेतुसंयोगजे ॥ परसंयोगेंउत्पादरे ॥ वलीजेहिण
हिणपर्यायथी ॥ तेएकत्वजअविवादरे ॥ जिन० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेमपरमाणुनो उत्पादएकत्वजछे तेमजजेनासंयोगें बंधनीपजेनही एहवो धर्मास्तिकायादिकनो जीवपुद्गलादिकना संयोग तद्वारें जेसंयुक्त द्रव्योत्पादअसंयुक्ता अवस्थाविनाशपूर्वक तथाऋजुसूत्रनयाभिमतजे क्षणिक पर्याय तेप्रथमद्वितीयसमयादि द्रव्यव्यवहारहेतुतद्वारें जेउत्पाद तेसर्वेएकत्वउत्पाद अविवादपणेजाणवो इहांकोइविवादनथी ॥ २२ ॥

परप्रत्ययधर्मादिकतणो ॥ नियमेभाष्योउत्पादरे ॥ निजप्रत्यय
पणतेद्विजकह्यो ॥ जाणीअंतरंगनयवादरे ॥ जिन० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायादिकनो उत्पाद ते नियमेपरप्रत्यय ... जीवपुद्गलादिकना निमित्तेंजभाष्युछे तेउजयजनित ... माटेतेने निजप्रत्ययपणेकह्यो अतरनयवाद के० निश्चेंव्यवहारजाणीने एअर्थ साउअणति न्हंपरपच्चउनियमा एसंमतिनीगाथामध्ये अकारप्रश्लेपे बीजोअर्थ ... कस्योछे तेअनुसरीने लख्योछे ॥ २३ ॥

द्विविधनाशपणजाणीयें ॥ एकरूपातरपरिणामरे ॥ अर्थांतर
गमनभावनगमनवली ॥ बीजोप्रकारअभिरामरे ॥जिन०॥२४॥

अर्थ ॥ परिणामोह्यर्थांतरगमननचसर्वथाव्यवस्थानं ॥ नचसर्वथाविनाश मस्तद्विदामिष्ट ॥सत्पर्यायेणविनाश प्राडुर्भावोसताचपर्ययत ॥ द्रव्याणापरि क खलुपर्यवनयस्य एवचन समति तथाप्रज्ञापनावृत्तिमा कह्युछे कथचि पामे पणसर्वथाविणसेनही तेद्रव्यार्थकनयनो परिणामकह्यो ... उत्तर असत्पर्यायेंउपजे तेपयायार्थिकनयनो परिणामकह्यो एअभिप्रायेंजोता पातरपरिणाम विनाशअनेएकअर्थांतरगमनविनाशएरीतेंविनाशना बेभे

अधारानेउद्योतता ॥ रूपातरनोपरिणामरे ॥ अणुनेअणु
अतरसंक्रमे ॥ अर्थांतरगतिनोठामरे ॥ जिन० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ तिहाअंधारो अनेउद्योतता तेयरस्थित द्रव्यनो रूपातरपरिणामें शजाणनो अने अणुके० परमाणु तेजेवारेंअणुअतरसक्रमे तेवारे द्विप्रदेशा यापछे तिहापरमाणुपर्यायमूलगोटल्यो अनेस्कधपर्यायउपनो तेणेकरीने रूप नाशनो ठामजाणनो ॥ २५ ॥

अणुनेवेयद्यपिखंधता ॥ रूपांतरअणुसंवधरे ॥ संयोग
विभागादिकयकी ॥ तोएणेएभेदप्रवधरे ॥ जिन० ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ यद्यपि अणुनेअणुसनचे खधताछे तेरूपातर परिणामजछे ... भागादिकरूपें द्रव्यविनाश द्विविधनुजछे एउपलक्षणजाणवु केमके ... गेंन जेमपर्यायोत्पादविभागथाय तेमद्रव्यनाशविभागेंज पर्यायनाशविभागद्वार मुख्यविनाग अनेअर्थांतरगमन एवेप्रकार व्यवहारियें पहेलोततुपर्यंत पटनाश बीजोघटोत्पत्तियें मृदुपिंडादिकनो नाश उक्तचसमतौ विगमस्सविएसविहा भागीयनिमोउडविअप्पो ॥ समुदयविभागमित्त अठतरभावगमणच ॥ ...

ध्रुवभावथूलऋजुसूत्रनो ॥ पर्यायसमयअनुसाररे ॥ संग्रहनो
तेहत्रिकालनो ॥ निजद्रव्यजातिनिरधाररे ॥ जिन० ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ ध्रुवभावपण स्थूलतथासूक्ष्मभेदें बेप्रकारनोछे, तेमां पहेलो स्थूलते ऋजुसूत्रनयने अनुसारे मनुष्यादिकपर्याय समयप्रमाणजाणवो, अनेबीजो सूक्ष्मते संग्रहनयसम्मत तेत्रिकालव्यापकजाणवो पणजीवपुद्गलादिक निजद्रव्यजातीते जेमआत्मद्रव्ये गुणपर्यायनुं आतमद्रव्यानुगमजध्रौव्य तेसामान्याधिकरणत्वे नान्वयानुगमज ध्रौव्य अनेपुद्गलद्रव्यें गुणपर्यायनुं पुद्गलद्रव्यानुगमज ध्रौव्य एमपोतपोतानी जातियें निरधारजाणवो ॥ २७ ॥

सविअर्थसमयमांभाषिया ॥ एमविधत्रिलक्षणशीलरे ॥ जे
भावेएहनीभावना ॥ तेपावेसुखजशलीलरे ॥ जिन० ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ एरीतें समयके० सिद्धांतमां सर्वअर्थविविधप्रकारें त्रिलक्षणके० उत्पादव्ययध्रौव्य, तत्शील तत्स्वभावभाष्याछे; माटेजेपुरुषपदार्थमां एत्रणलक्षणस्वभावनी भावना भावे तेप्राणीविस्ताररुची सम्यक्त्व अवगाहीने अंतरंगसुख अने प्रभाविकपणानो जश तेनीलीलाप्रतेंपामे ॥ २८ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

आजनहेजोरेदिसेनाहलो ॥ एदेशी ॥

भिन्नअभिन्नतिविहतियलक्षणो ॥ भाषिउइममेंअत्थ ॥ भेद
द्रव्यगुणपजवनाहवे ॥ भाषीजेंपरमत्थ ॥ १ ॥ समकित
सुधोरेइणीपरेंआदरो ॥ समकितविणसविधंध ॥ समकेत
विणजेरेहठमारगेंपड्या ॥ तेसविजातिरेअंध ॥ सम० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ एरीते भिन्नतथाअभिन्न अनेत्रिविध त्रीयलक्षणे अछके० एकअर्थ ते एक अर्थछे एवुंजेपहेलां बीजाढालमां ढाररूपेंकह्युंहतुं तेमेंविस्तारीने आगलाढालेंकह्युं. हवे द्रव्यगुणपर्यायनाजे परमार्थेभेदछे तेविस्तारीनेभाषुतुं ॥ १ ॥ एरीतें द्रव्यगुणपर्याय पदार्थविचारीने विस्ताररुची सम्यक्त्वनेआदरो-जोकदाचित् तादृशधारणाशक्तिनहोय तो एद्रव्यगुणपर्यायनाजे विचार तेनेजभावथीसद्दहे, तथाज्ञानवंतनोरागीहोय, तेनेपण योग्यतायें द्रव्यसम्यक्त्वहोय एवेप्रकारछे तेसम्यक्त्ववंतनी दानदयादिक तथायोगीक्रिया तेपणसर्वसफलहोय. उक्तंच ॥ किंसेकायांदाणाइं आउएयं भिचेवसद्दहाउं ॥ हुंति- अरियाउएआउ विहुजह्मामोक्कफलाउंपराउंअ ॥ १ ॥ माटेसम्यक्त्वविना तेसर्वक्रिया

परप्रत्ययधर्मादिकतणो ॥ नियमेजाण्योउत्पादरे ॥ निजप्रत्यय
पणतेद्विजकह्यो ॥ जाणीअंतरंगनयवादरे ॥ जिन० ॥ ७३ ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायादिकनो उत्पाद ते नियमेंपरप्रत्यय ... एत जीवपुद्गलादिकना निमित्तेजजाण्युछे तेउजयजनित ... माटेतेने निजप्रत्ययपणेकह्यो अंतरनयवाद के० निश्चयव्यवहारजाणीने अर्थ साडअणति ... परपच्चउनियमा एसमतिनीगाथामध्ये अकारप्रश्लेषे बीजोअर्थ ... कह्योछे तेअनुसरीने लख्योछे ॥ ७३ ॥

द्विविधनाशपणजाणीयें ॥ एकरूपांतरपरिणामरे ॥ अर्थांतर
गमनजावनगमनवली ॥ बीजोप्रकारअजिरामरे ॥जिन०॥७४॥

अर्थ ॥ परिणामोह्यर्थांतरगमननचसर्वथाव्यवस्थान ॥ नचसर्वथाविनाश मस्तद्विदामिष्ट ॥सत्पर्यायेणविनाश प्रादुर्जावोसताचपर्ययत ॥ ... क खलुपर्यवनयस्य एवचन समति तथाप्रज्ञापनावृत्तिमां कह्युछे ... पामे पणसर्वथानिणसेनही तेद्रव्यार्थकनयनो परिणामकह्यो ... उत्तर असत्पर्यायेंउपजे तेपर्यायार्थिकनयनो परिणामकह्यो एअजिप्रायेंनाना पातरपरिणाम विनाशअनेएकअर्थांतरगमनविनाशएरीतेंविनाशना वेनेदजाण

अधारानेउद्योतता ॥ रूपांतरनोपरिणामरे ॥ अणुनेअणु
अंतरसक्रमे ॥ अर्थांतरगतिनोठामरे ॥ जिन० ॥ ७५ ॥

अर्थ ॥ तिहांअंधारो अनेउद्योतता तेअवस्थित द्रव्यनो रूपांतरपरिणामें ... शजाणवो अने अणुके० परमाणु तेजेवारेंअणुअंतरसक्रमे तेवारें द्विप्रदेशा ... यायछे तिहांपरमाणुपर्यायमूलगोटल्यो अनेस्कधपर्यायउपनो तेणेकरीने रूप नाशनो गमजाणवो ॥ ७५ ॥

अणुनेछेयद्यपिसंधता ॥ रूपांतरअणुसंबंधरे ॥ संयोग
विजागादिकथकी ॥ तोएणेएनेदप्रबंधरे ॥ जिन० ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ यद्यपि अणुनेअणुसंबंधे सधताछे तेरूपांतर परिणामजछे ... जागादिकरूपें द्रव्यविनाश द्विविधनुछे एउपलक्षणजाणवु केमके ... गेंज जेमपर्यायोत्पाद विजागथाय तेमद्रव्यनाशविजागेंज पर्यायनाशविजागहोय मुदयविजाग अनेअर्थांतरगमन एवेप्रकार व्यवहारियें पहेलोततुपर्यंत पटनाश बीजोघटोत्पत्तियें मृत्पिंडादिकनो नाश उक्तंचसमतो विगमस्सविएसविहा जाणीयमिसोउद्दविअप्पो ॥ समुदयविजागमित्त अछतरजावगमणंच ॥ १ ॥ ३१ ॥

ध्रुवभावथुलऋजुसूत्रनो ॥ पर्यायसमयअनुसाररे ॥ संग्रहनो
तेहत्रिकालनो ॥ निजद्रव्यजातिनिरधाररे ॥ जिन० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ ध्रुवभावपण स्थूलतथासूक्ष्मभेदें बेप्रकारनोछे, तेमां पहेलो स्थूलते ऋजुसूत्रने अनुसारे मनुष्यादिकपर्याय समयप्रमाणजाणवो, अनेबीजो सूक्ष्मते संग्रहनयसम्मत तेत्रिकालव्यापकजाणवो पणजीवपुद्गलादिक निजद्रव्यजातीते जेमआत्मद्रव्ये गुणपर्यायनुं आत्मद्रव्यानुगमजध्रोव्य तेसामान्याधिकरणत्वे नान्वयानुगमज ध्रो- अनेपुद्गलद्रव्ये गुणपर्यायनुं पुद्गलद्रव्यानुगमज ध्रोव्य एमपोतपोतानी जातियें धारजाणवो ॥ १७ ॥

सविअर्थसमयमांभाषिया ॥ एमविधत्रिलक्षणशीलरे॥ जे
भावेएहनीभावना ॥ तेपावेसुखजशलीलरे ॥ जिन० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ एरीतें समयके० सिद्धांतमां सर्वअर्थविविधप्रकारें त्रिलक्षणके० उत्पादव्य- व्य, तत्शील तत्स्वभाव भाष्याछे; माटेजेपुरुषपदार्थमां एत्रणलक्षणस्वभावनी भाव- भावे तेप्राणीविस्ताररुची सम्यक्त्व अवगाहीने अंतरंगसुख अने प्रभाविकपणानो । तेनीलीलाप्रतेंपामे ॥ १८ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

आजनहेजोरेदिसेनाहलो ॥ एदेशी ॥

भिन्नअभिन्नतिविहतियलक्षणो ॥ भाषिउंइममेंअत्थ ॥ भेद
द्रव्यगुणपज्जवनाहवे ॥ भाषीजेंपरमत्थ ॥ १ ॥ समकित
सुधेरेइणीपरेंआदरो ॥ समकितविणसविधंध ॥ समकेत
विणजेरेहठमारगेंपड्या ॥ तेसविजातिरेअंध ॥ सम० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ एरीते भिन्नतथाअभिन्न अनेत्रिविध त्रीयलक्षणे अच्छके० एकअर्थ ते एक र्थछे एवुंजेपहेलां बीजाढालमां द्वाररूपेंकह्युंहतुं तेमेंविस्तारीने आगलाढालेंकह्युं. द्रव्यगुणपर्यायनाजे परमार्थेंभेदछे तेविस्तारीनेभाषुछुं ॥ १ ॥ एरीतें द्रव्यगुणपर्याय मार्थविचारीने विस्ताररुची सम्यक्त्वनेआदरो- जोकदाचित् तादृशधारणाशक्तिनहोय ने एद्रव्यगुणपर्यायनाजे विचार तेनेजभावथीसद्दहे, तथाज्ञानवंततनोरागीहोय, तेने- योग्यतायें द्रव्यसम्यक्त्वहोय एवेप्रकारछे तेसम्यक्त्ववंतनी दानदयादिक तथायोग्री- या तेपणसर्वसफलहोय. उक्तंच॥ विसेकायांदाणाइं आउएयं मिचेवसहलाउं॥ हुंति- रियाउएआउं विहुजह्मामोक्कफलाउपराउंअ ॥ १ ॥ मादेसम्यक्त्वविना तेसर्वक्रिया

परप्रत्ययधर्मादिकतणो ॥ नियमेजाप्योउत्पादरे ॥ निजप्रत्यय
पणतेद्विजकह्यो ॥ जाणीअंतरंगनयवादरे ॥ जिन० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायादिकनो उत्पाद ते नियमेंपरप्रत्यय स्त्रोपष्टम्यगला ... एत जीवपुद्गलादिकना निमित्तेंजजाप्युछे तेउजयजनित ... माटेतेने निजप्रत्ययपणेकह्यो अतरनयवाद के० निश्चेव्यवहारजाणीने एअर्थ साइअणति न्हपरपच्चउनियमा एसंमतिनीगाथामध्ये अकारप्रश्लेपे बीजोअर्थ कर्योछे तेअनुसरीने लख्योछे ॥ २३ ॥

द्विविधनाशपणजाणीयें ॥ एकरूपातरपरिणामरे ॥ अर्थांतर
गमनञावनगमनवली ॥ बीजोप्रकारअजिरामरे ॥जिन०॥२४॥

अर्थ ॥ परिणामोह्यर्थांतरगमननचसर्वथाव्यवस्थानं ॥ नचसर्वथाविनाश ... मस्तद्विदामिष्ट.॥सत्पर्यायेणविनाश प्राडुर्जावोसताचपर्ययत ॥ ... क ग्नजुपर्यवनयस्य एवचन समति तथाप्रज्ञापनावृत्तिमा कह्युछे कथ... पामे पणसर्वथाविणसेनही तेद्रव्यार्थकनयनो परिणामकह्यो ... उत्तर असत्पर्यायेंउपजे तेपयायार्थिकनयनो परिणामकह्यो एअजिप्रायेंजोता पांतरपरिणाम विनाशअनेएकअर्थांतरगमनविनाशएरीतेंविनाशना वेनेद ...

अधारानेउद्योतता ॥ रूपांतरनोपरिणामरे ॥ अणुनेअणु
अतरसंक्रमे ॥ अर्थांतरगतिनोठामरे ॥ जिन० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ तिहांअधारो अनेउद्योतता तेअनस्थित द्रव्यनो रूपातरपरिणाम ... शजाणनो अने अणुके० परमाणु तेजेवारेंअणुअतरसक्रमे तेवारें ... थायछे तिहांपरमाणुपर्यायमूलगोटल्यो अनेस्कधपर्यायउपनो तेणेकरीने रूप नाशनो ठामजाणजो ॥ २५ ॥

अणुनेंयद्यपिखंधता ॥ रूपांतरअणुसंबंधरे ॥ सयोग
विजागादिकथकी ॥ तोएणेएजेदप्रबंधरे ॥ जिन० ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ यद्यपि अणुनेअणुसग्ये खधताछे तेरूपातर परिणामजछे ... जागादिकरूपें द्रव्यविनाश द्विविधनुजछे पणपलक्षणजाणवु केमके द्रव्योत्पादवि... गेंज जेमपर्यायोत्पादविजागथाय तेमद्रव्यनाशविजागेंज पर्यायनाशविजागद्रोग ... मुदयविजाग अनेअर्थांतरगमन एवेप्रकार व्यवहारियें पहेलोसततुपर्यंत पटनाश बीजोनरोत्पत्तियें मृडुपिंडादिकनो नाश उक्तचसमतौ विगमस्सविपसविहा ... जाणीयनिमोछडुविअप्पो ॥ समुदयविजागमित्त अठतरजावगमणच ॥ १ ॥ ...

ध्रुवभावथुलरुजुसूत्रनो ॥ पर्यायसमयअनुसाररे ॥ संग्रहनो
तेहत्रिकालनो ॥ निजद्रव्यजातिनिरधाररे ॥ जिन० ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ ध्रुवभावपण स्थूलतथासूक्ष्मभेदें बेप्रकारनोछे, तेमां पहेलो स्थूलते ऋजुसू-त्रनयने अनुसारे मनुष्यादिकपर्याय समयप्रमाणजाणवो, अनेवीजो सूक्ष्मते संग्रहनय-सम्मत तेत्रिकालव्यापकजाणवो पणजीवपुद्गलादिक निजद्रव्यजातीते जेमआत्मद्र-व्य गुणपर्यायनुं आत्मद्रव्यानुगमजध्रौव्य तेसामान्याधिकरणत्वे नान्वयानुगमज ध्रौ-व्य अनेपुद्गलद्रव्यें गुणपर्यायनुं पुद्गलद्रव्यानुगमज ध्रौव्य एमपोतपोतानी जातियें निरधारजाणवो ॥ २७ ॥

सविअर्थसमयमांभाषिया ॥ एमविधत्रिलक्षणशीलरे ॥ जे
भावेएहनीभावना ॥ तेपावेसुखजशलीलरे ॥ जिन० ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ एरीतें समयके० सिद्धांतमां सर्वअर्थविविधप्रकारें त्रिलक्षणके० उत्पादव्य-यध्रौव्य, तत्शील तत्स्वभावभाष्याछे;माटेजेपुरुषपदार्थमां एत्रणलक्षणस्वभावनी भाव-ना भावे तेप्राणीविस्ताररुची सम्यक्त्व अवगाहीने अंतरंगसुख अने प्रभाविकपणानो जश तेनीलीलाप्रतेंपामे ॥ २८ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

आजनहेजोरेदिसेनाहलो ॥ एदेशी ॥

भिन्नअभिन्नतिविहतियलक्षणो ॥ भाषिउंइममेंअत्थ ॥ भेद
द्रव्यगुणपजवनाहवे ॥ भाषीजेंपरमत्थ ॥ १ ॥ समकित
सुधोरेइणीपरेंआदरो ॥ समकितविणसविधंध ॥ समकेत
विणजेरेहठमारगेंपड्या ॥ तेसविजातिरेअंध ॥ सम० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ एरीते भिन्नतथाअभिन्न अनेत्रिविध त्रीयलक्षणे अत्थके० एकअर्थ ते एक पदार्थछे एवुंजेपहेलां बीजाढालमां द्वाररूपेंकह्युंहतुं तेमेंविस्तारीने आगलाढालेंकह्युं. हवे द्रव्यगुणपर्यायनाजे परमार्थेभेदछे तेविस्तारीनेभाषुछुं ॥ १ ॥ एरीतें द्रव्यगुणपर्याय पदार्थविचारीने विस्ताररुची सम्यक्त्वनेआदरो-जोकदाचित् तादृशधारणाशक्तिनहोय तो एद्रव्यगुणपर्यायनाजे विचार तेनेजभावथीसद्दहे, तथाज्ञानवंतनोरागीहोय, तेने-पणयोग्यतायें द्रव्यसम्यक्त्वहोय एवेप्रकारछे तेसम्यक्त्ववंतनी दानदयादिक तथाओकी-क्रिया तेपणसर्वसफलहोय उक्तंच॥विंसेकायांदाणाइं आउएयं मिचेवसद्दलाउं॥ हुंति-कियाउंएआउं विहुजह्यामोरकफलाउंपराउंश्य ॥ १ ॥ माटेसम्यक्त्वविना तेसर्वक्रिया

धधके० क्लेशरूपजाणवी, अनेसम्यक्त्वविनाजेअगीतार्थ
निवेशें इवकदाग्रहमार्गे पड्याठे, तेसर्वंजातिअंधसरिखा जाणवा,
तोपणजलुनहोय ॥ उक्तच ॥ सुदरबुद्धीइकय बहुअपिणसुदरंहोइ ॥
र्यायनेदपरिज्ञानेकरीने सूधुसम्यक्त्वआदरो, एहितोपदेशठे ॥ २ ॥

धर्मअधर्महगगनसमयवली ॥ पुफलजीवजएह ॥ षट्द्रव्य
कह्यांरेश्रीजिनशासने ॥ जासनआदिनठेह ॥ सम० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ धर्मके० धर्मास्तिकाय अनेअधर्मके० अधर्मास्तिकाय तथागगनके०
शास्तिकाय तथासमयके० कालद्रव्य तथाअद्धासमय जेहनु
पुफलास्तिकाय अनेजीवके० जीवास्तिकाय ॥ एषट्द्रव्यश्रीजिनशासननेविषे
जेनोद्रव्यजाति तथापर्यायप्रवाहें आदितथा ठेहके०
बाकीपाचद्रव्यते अस्तिकायकहियें अस्तय प्रदेशास्ते कायतेशब्दायते इति
एरीतंप्रदेशनोसबधठे, माटेअस्तिकायकहियें अनेकालद्रव्यने
अस्तिकायनकहियें, केमके जे एकसमयते बीजासमयने मिलेनहीमाटे
धर्माधर्माकाशाद्येकैकमत परत्रिकमनतकालविनास्तिकाया जीवमृतेचाप्यकर्तृ
दिकसाधर्म्य वैधर्म्यप्रशमइत्यादिक महाग्रथथी जाणवु ॥ ३ ॥

गतिपरिणामीरेपुफलजीवने ॥ जपनेजलजेमहोय ॥ तासअ
पेक्षारेकारणलोकमा ॥ धरमद्रव्यठेरेसोय ॥ सम० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तेमाप्रथम धर्मास्तिकायद्रव्यनु लक्षणकहेठे गतिपरिणामीजे पुफल
जीवद्रव्य ते लोकके० चतुर्दशरज्वात्मक आकाशखडतेमाठे तेनुजेअपेक्षाकार
णमव्यापाररहित अनिकरणरूप उदासीनताकारण जेमगगनादि
के० मत्स्यतेनेजेम जलअपेक्षाकारणठे तेहनीपरेंअपेक्षाकारणते धर्मास्तिकाय
जाणवु, स्यलेझपक्रिया व्याकुलतयाचेष्टाहेतिखाजावादेव नजवति ननु
गत्यपेक्षाकारणेमानाजाव इतिचेन्न ॥
निरूरन्यर्थात्यकारणेनेतरासिलकारणान्यथासिद्धिप्रसंगादितिदिग् ॥ ४ ॥

थितिपरिणामीरेपुफलजीवनी ॥ थितिनोहेतुअधर्म ॥ सनि
साधारणगतिथितिहेतुता ॥ दोयद्रव्यनोरेधर्म ॥ सम० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेअधर्मास्तिकायद्रव्यनु लक्षणकहेठे तेस्थितिपरिणामीनेपुफलजी
वद्रव्य तेहनीस्थितिनोहेतुके० अपेक्षाकारणजेद्रव्य तेअधर्मास्तिकायजाणवु

रिणत सर्वद्रव्यनुंजे एकद्रव्यलाघवें कारणसिद्धहोय तेएवेद्रव्यजाणवा, तेथी ज
देगत्यपेक्षाकारण जलादिद्रव्यनेविषे धर्मास्तिकायादिक द्रव्यलक्षणनी अति व्या-
होय एमगतितथास्थितिना हेतुतानोधर्म सर्वसाधारणपणें वेहुद्रव्यनोछे ॥ ५ ॥

सदेजऊर्ध्वगतिगामीमुक्तने ॥ विनाधर्मप्रतिवंध ॥ गगनेअ-
नंतेरेकहीयेंनविटळे ॥ फिरवारसनोरेधंध ॥ सम० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेधर्मास्तिकायनेविषे प्रमाणकहेछे. जोगतिनेविषे धर्मास्तिकायनो प्रति
के० नियमनहोय तोसहज ऊर्ध्वगतिगामीजे मुक्तके० सिद्धजीव तेएकसमयें लोका-
ाय. एहवेंस्वभावें अनंतगगनेजता हजीलगें फिरवानारसनो धंधटलेनही, केमके अ
लोकाकाशप्रमाणें एक अलोकाकाशछे, तेमांलोकाकाशने गतिहेतुपणुंछे, तेथीअलो
ां सिद्धगतिनहोयएमतो कहुंजायनही,पणधर्मास्तिकायविना लोकाकाश व्यवस्थाज-
ोय धर्मास्तिकायविशिष्टाकाशएवहि लोकाकाशस्तस्यच गतिहेतुत्वेघटादावपि तंकवि-
टाकाशसत्वेनेवहेतुतास्यादितिनकिंचिदेतत् वीजुं अन्यस्वभावपणे कल्पितआकाशने
ावांतर कल्पनाते अयुक्तछे ॥ माटेगतिनिवंधप्रमुख धर्मास्तियकाद्रव्य अवश्यमानवुं

जोथितिहेतुअधर्मनभाषीये ॥ तोनित्यथितिकोइगण ? ॥ गतिवि
णहोवेरेपुद्गलजंतुनी ॥ संभालोजिनवाण ॥ सम० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवे अधर्मास्तिकायनेविषे प्रमाणदेखाडेछे. जोसवेंजीवपुद्गलने साधारण
तिहेतुत्व अधर्मास्तिकायद्रव्य नकहियेंतो किंतुधर्मास्तिकायाभावप्रयुक्त गत्यभा-
आलोकेस्थित्यभाव एमकहियेंतो अलोकाकाशें कोइकस्थाने गतिविना पुद्गलजी-
द्रव्यनी नित्यस्थितिपामिजोइयें. वीजुंगतिस्थिति स्वतंत्र पर्यायरूपछे, जेमगुरुत्व ल-
त्व एकने एकाभावरूप कहेतां विशेपग्राहक प्रमाणनथी, तेमाटेकार्यभेदें अपेक्षाका-
ा द्रव्यभेद अवश्यमानवो. धर्मास्तिकायाभावप्रयुक्तगत्यभावें स्थित्यभावकही,अधर्मा-
तकाये अपलपियें,तो अधर्मास्तिकायाभावप्रयुक्त स्थित्यभावेगत्यभावकही धर्मास्ति-
ायनोपण अपलापथाय, जेमनिरंतर गतिस्वभावें द्रव्यनकहेवोजोइयें तोनिरंतर स्थि-
स्वभावेंपण केमकहीयें ? तेमाटेश्रीजिनवाणीनो परमार्थ सांभलीने धर्मास्तिकाय
धर्मास्तिकाय एवेद्रव्य असंकीर्णस्वभावेमानवा ॥ ७ ॥

सर्वद्रव्यनेरेजेदीयेसर्वदा ॥ साधारणअवकाश ॥ लोक
अलोकप्रकारेभापिउं ॥ तेहद्रव्यआकाश ॥ सम० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवे आकाशद्रव्यनुं लक्षणकहेछे. सर्वद्रव्यनेजे सर्वदासाधारण अवकाश-

अर्थ ॥ हवेजोगमकहेशोजे सूत्रेंकालप्रदेशकह्योछे तेहनेअनुसारें कालाणुकहियें तवेंजीवाजीवनापर्यायरूपजकालकह्योछे तेमांविरोधनथी तोद्रव्यकालपण केमक-ह्यो माटेकालने द्रव्यत्ववचन तथालोकाकाश प्रदेशप्रमाणअणुवचन एसर्व उप-चारेंजोडीयें मुख्यवृत्तियेते पर्यायरूपकालज सूत्रसंमतछे, अतएव ॥ कालश्चेत्येके ॥ इहांएकवचनते सर्वसंमतत्वाजानवुंचव्यो ॥ १८ ॥

पर्यायेंजेमभाष्योद्रव्यनो ॥ संख्यारथउपचार ॥ अप्रदेश
तारेयोजनकारणें ॥ तेमअणुतानोरेसार ॥ सम० ॥१९॥

अर्थ ॥ हवे उपचारप्रकारज देखाडेछे ॥ षड्द्रव्याणि ॥ एसंख्यापूरणनेअर्थे जेमप-र्यायरूप कालनेविषे द्रव्यपणानोउपचार भगवत्यादिकनेविषे करियेंछेयें, तेमसूत्रे का-लद्रव्यने अप्रदेशताकहियेंछेयें, तथाकालपरमाणुपण कह्याछे, तेयोजननेकारणें लोका-काशप्रदेशस्थ पुद्गलाणुनेविषेज, योगशास्त्रनाअंतरश्लोकमां कालाणुनो उपचारकस्योछे, कालाणवो. मुख्यकालइत्यस्यचानादिकालीनाप्रदेशत्वव्यवहारनियामकोपचारविषयइ-त्यर्थः ॥ अतएव मनुष्यक्षेत्रमात्रवृत्तिकालद्रव्यंयेवर्णयंतितेषामपिमनुष्यक्षेत्रावच्छिन्नाका-शेकालद्रव्योपचारएवशरणमितिदिङ्मात्रमेतत् ॥ १९ ॥

वर्णगंधरसफासादिकगुणे ॥ लखियेंपुद्गलभेद ॥ सहज
चेतनारेगुणथीजाणियें॥जीवअरूपअवेद ॥ सम०॥२०॥

अर्थ ॥ हवेपुद्गल तथाजीवद्रव्य संक्षेपेकहेछे. जेवर्ण, गंध, रस, स्पर्शादिकगुणे पुद्ग-लद्रव्यनो अन्यद्रव्यथीभेदलखियें, तेपुद्गलद्रव्य; अनेजीवद्रव्य — ते सहज चेतनागुणछे. लक्षणेजसर्व अचेतनद्रव्यथी भिन्नछे. ते व्यवहारनयथी रूप तथावेदसहितपणेछे अनेनिश्चयनयथी रूपतयावेदरहितछे. उक्तंच ॥ अरसमरूवरसगंध अवन्नचेयणागुणम-सद्दं ॥ जाणअलिंगगहणं जीवमणीदिट्ठसंठाणं ॥ १ ॥ २० ॥

एमएभांख्यारेसंखेपेंकरी ॥ द्रव्यतणाषट्भेद ॥ विस्तारेतेजा
णिश्रुतथकी ॥ सुजशलहोगतखेद ॥ सम० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ एरीतें द्रव्यनासंक्षेपथी छभेदभांख्याछे तेविस्तारें श्रुतके० सिद्धांतथकी जाणीने खेदरहितथका प्रवचनदाक्षिणपणानो सुजशके० सुबोध तेपामो ॥ २१ ॥

॥ सोवनगिरिभूपणत्रिसलानंदनए ॥ देशी ॥

॥ ढाल इग्यारमो ॥

हवेभेदगुणनाभापीजे ॥ तिहांअस्तिताकहियेंजी ॥ सद्भूत
तावस्तुताजाति ॥ व्यक्तिरूपतालहियेंजी ॥ द्रव्यभावद

॥ ढाल बारमी ॥

॥ जीहोसजवनामसोहामणोएदेशी ॥

जीहोचेतनभावतेचेतना ॥ लालाउलटअचेतनभाव ॥ जीहोचेतनता विणजीवने ॥ लालाथाएकर्मअभाव ॥ चतुरनरधारोअर्थविचार ॥ १ ॥

अर्थ ॥ जेहथी चेतनपणानो व्यवहारथाय,तेचेतनस्वभाव, अनेतेथीउलटो अचेतनस्वभाव जोजीवने चेतनस्वभाव नकहियें,तोरागद्वेष चेतनारूपकारणविना ज्ञानावरणादिकर्मनो अभावथाय,उक्तच॥ स्नेहाभ्यक्तशरीरस्य रेणुनाश्लिष्यतेयथा॥ गात्रं रागद्वेषक्लिन्नस्य कर्मबंधोभवत्येव॥इति माटेहेचतुरपुरुषोएरीतें अर्थविचारीनेधारो॥१॥

जीहोजोचेतनतासर्वथा ॥ लालाविनाअचेतनभाव ॥ जीहोध्यान ध्येयगुरुशिष्यनी ॥ लालासीखपशुद्धस्वभाव ॥ चतु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जोजीवने सर्वथा चेतनस्वभावजकहियें अनेअचेतनस्वभावनकहियें तो अचेतनकर्मनो कर्मद्रव्योपश्लेष जनितचेतनाविकारविना शुद्धसिद्धसदृशपणुथाय तेवारें ध्यानध्येय तथा गुरुशिष्यनीशीखपतीपदे, एरीतेंसर्वशास्त्रव्यवहार फोकट थई जाय, शुद्धने अविद्यानिवृत्तिपणे स्योउपकारथाय ? तेमाटे॥ अचलगणायवापूरितिरं अचेतनआत्मा एमपणकोइकरीतें कहियें ॥ २ ॥

जीहोमूर्त्तभावमूरतीधरे ॥ लालाउलटअमूर्त्तस्वभाव ॥ जीहोजोमूर्त्ततानजीवने ॥ लालातोससारअभाव ॥ चतु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ मूर्त्तिके० रूप,रस,गंध,स्पर्शादिसन्निवेशते जेहथीधरियें तेमूर्त्तस्वभावकहियें अनेतेहथीजे विपरीत तेअमूर्त्तस्वभावजाणवो, जोजीवनें कोइकरीतें मूर्त्ततास्वभाव नहोयतो, शरीरादिसंबंधविना गत्यंतरसक्रमविना ससारनो अभावथाय ॥ ३ ॥

जीहोअमूर्त्तताविणसर्वथा ॥ लालामोक्षघटेनहीतास ॥ जीहोएकप्रदेशस्वभावता ॥ लालाअखंडघनिवास ॥ चतु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अनेजो लोकव्यवहारें मूर्त्तस्वभावज आत्मानेमानीयें, तोमूर्त्तहैं तेम अमूर्त्तनहोय, तेथीमोक्षघटेनही माटेमूर्त्तमचलितजीवनेपण अंतरंग अमूर्त्तभावमानवो वलीएकप्रदेशस्वभाव तेहनेंकहियेंजे एकरूपपरिणति अखंडाकार वस्तु सन्निवेश तेहनो निवासके० भाजनपणुं तेएकप्रदेशस्वभाव जाणवो ॥ ४ ॥

जीहोअनेकप्रदेशस्वभावता ॥ लालाभिन्नप्रदेशस्वभाव॥ जीहोजोनहीएकप्रदेशता ॥ लालाभेदहुएबहुभाव ॥ चतु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अने अनेकप्रदेशस्वभाव तेहनेकहियें जेभिन्नप्रदेशयोगे तथा भि
कल्पनायें अनेकप्रदेश व्यवहारयोग्यपणुंहोय. हवे जोएकप्रदेशस्वभाव नहोय
संख्याता प्रदेशादियोगें बहुवचनप्रवृत्ति एकधर्मास्तिकायछे, तेमाटे एव्यवहारन
घणाधर्मास्तिकायछे. इत्यादिक थवुंजोइयें ॥ ५ ॥

जीहोकेमसकंपनि:कंपता ॥ लालाजोनअनेकप्रदेश ॥ जीहो
अणुसंगतिपणकेमघटे ? ॥ लालादेशसकलआदेश ॥च० ॥६॥

अर्थ ॥ जो अनेकप्रदेशस्वभाव द्रव्यनेकहियेंतो घटादिक अवयवी देशथीस
तथादेशथीनिःकंप देखियेंछेयें तेकेममले, अनेअवयवकंपे पणअवयवीनि:कंप एमको
यैंतो चलतिएप्रयोग केमथाय? प्रदेशवृत्तिकंपनो जेमपरंपरासंबंधछे; तेमदेशवृत्ति कंप
भावनोपण परंपरासंबंधछे, तेमाटेदेशथीचलेछे अनेदेशथी नथीचलतो, एअस्खलित
व्यवहारेंअनेकप्रदेशस्वभाव मानवो. तथाअनेकप्रदेशस्वभाव नमानियेंतो,आकाशादि
द्रव्यें अणुसंगतिके० परमाणुसंयोग केमघटे ? ॥ ६ ॥

जीहोदेशसकलभेदेंद्विधा ॥ लालादीठीजगमांवृत्ति ॥ जी
होप्रत्येकेंउपणतिहां ॥ लालाबोलेसंमतिवृत्ति ॥ चतु० ॥७॥

अर्थ ॥ वलीएहिजयुक्ति विस्तारीदेखाडेछे. एकवृत्तिदेशथीछे; जेमकुंडलबदरनें; इहां-
कुंडलतो कानमांपहेर्याछे; तेकानतोइंद्रनो एकदेशछे. पणइंद्रकहिवोलायछे,तथाबीजी
वृत्ति सर्वथीछे. जेमसामान्यवस्त्ररूपनी एटलेजामो सर्वअंगमांपहेर्योछे तेदेवदत्त ए स-
र्वथीजाणवी. तिहांप्रत्येकेंदूषण संमतिग्रंथनी वृत्तिबोलेछे. परमाणुने आकाशादिकें दे-
शवृत्तिमानतां आकाशादिकनाप्रदेश अनिछतापणआवे अनेसर्वथी वृत्तिमानतां पर-
माणु आकाशादिप्रमाण थइजाय, तथाउभयाभावेंतो परमाणुने अवृत्तिपणुंथाय; या-
द्विशेषाभावस्यसामान्यभावनियतत्वादित्यादि ॥ ७ ॥

जीहोभावस्वभावहअन्यथा ॥ लालाछेविभाववरूव्याधि ॥ जीहो
एविणनघटेजीवने ॥ लालाअनियतकर्मउपाधि ॥ चतु० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ स्वभावथी जेअन्यथाभाव तेविभावस्वभावकहियें,तेमहाव्याधिरूपछे. ए वि-
स्वभाव मान्याविना जीवने अनियतके० नानाप्रकारना देशकालादिविपाकी क-
धि नलागवाजोइयें, उपाधिसंबंध योग्यतायें अनादिविभावस्वभावः ॥ ८ ॥

जीहोशुद्धस्वभावकेवलपणुं ॥ लालाउपाधिकजअशुद्ध ॥ जीहोवि
णशुद्धतानमुक्तिछे ॥ लालालेपनविगरअशुद्ध ॥ चतु० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ केवलपणुके० उपाधिजावरहितांतरजाव परिणमनते शुद्धस्वजाव, अने उपाधिजनित बहिर्जाव परिणमन योग्यताते अशुद्धस्वजावछे जोशुद्धस्वजाव न मानियें,तो मुक्तिघटेनही, अनेजोअशुद्धस्वजाव नमानियें,तो कर्मनोलेपघटेनही शुद्धस्वजावनेकदापि अशुद्धतानहोय,अने अशुद्धस्वजावने पठीपणशुद्धता नहोय ए दातादिक मतनेनिराकरी उजयस्वजावमाने, जेथकीकोइदूषणनहोय ॥ ए ॥

जीहोनियमितएकस्वजावजे ॥ लालाउपचरियेंपरठाण ॥ जीहोतेउ
पचरितस्वजावछे ॥ लालाएविणकेमपरनाण? ॥ चतु० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ नियमितजे एकस्थाने निरधार्योजे एकस्वजाव अनेपरस्थानकें उपचरिये तेउपचरित स्वजावहोय,तेउपचरितस्वजाव नमानियें,तो स्वपरव्यवसायी ज्ञानवडे परमा केमकहियें? जेमाटे ज्ञानने स्वविषयत्व तो अनुपचरितछे,पणपरविषयत्व ते पर पेक्षायें प्रतीयमानपणे तथापरनिरूपित सबधपणेउपचरितछे ॥ १० ॥

जीहोकर्मजसहजवेजेदते ॥ लालामूर्तअचेतनजाव ॥ जी
होप्रथमजीवनीसिद्धने ॥ लालाअपरपरज्ञस्वजाव ॥ चतु० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ तेउपचरित स्वजाव बेप्रकारेंछे, एककर्मजनित,बीजोस्वजावजनित, तिहां प्रथमपचे जीवने मूर्तपणु अनेअचेतनपणुजे कहियेंछेयें, तिहांशोर्वाहीक परीने व्यापारछे, तेकर्मजनितछे, माटेकर्मतेहीज उपचरितस्वजावछे,हवेजीवने अपरके०बीजो सहजउपचरित स्वजाव तेसिद्धने परज्ञपणु तिहांकोइ कर्मोपाधिछेनही तउक्तमार रसूत्रे ॥ अकम्मस्सववहारोणविज्जइ कम्मुणाउवाहिजायतत्ति ॥ ११ ॥

जीहोदशेविशेषस्वजावए ॥ लालासर्वएकवीससंजाव ॥ जी
होसविहुंपुजलजीवने ॥ लालापन्नरजेदछेकाल ॥ चतु० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ पदशेविशेषस्वजाव नियतद्रव्यवृत्तिमाटे, एमध्ये पूर्वोक्तइग्यार सामान्य स्वजाव जेलियें, तेवारें सर्वमिलिने एकवीस स्वजावथाय, तेपुजलतथाजीवने दशविध स्वजावहोय तेएकवीसमाथी ठकाढिये तेवारें कालद्रव्यने पन्नरस्वजावथाय, ठस्व जावनानाम आगलीगाथामा कहेशे ॥ १२ ॥

जीहोबहुप्रदेशचितमूर्त्तता ॥ लालाविजावशुद्धअशुद्ध ॥ जीहो
टाडीआदिममंजूआ ॥ लालामोखधर्ममुलवुद्ध ॥ चतु० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ १ बहुप्रदेशके० अनेकप्रदेशस्वजाव २ चित्के० चेतनस्वजाव ३ मूर्त स्वजाव ४ विजावस्वजाव ५ शुद्धस्वजाव ६ अशुद्धस्वजाव, एठस्वजावकाढीयें, ता

की पन्नरस्वन्नाव कालद्रव्यनेथाय, वली १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आ-
शास्तिकाय एत्रणद्रव्यने आदिमके० पहेलो अनेकप्रदेशस्वन्नाव तेणेसंयुक्तकरियें
ने वीजापांचटालियें तेवारेंसोलस्वन्नावथाय. ॥ एकविंशतिन्नावाःस्यु,र्जीवपुजलयोर्म-
ः, धर्मादीनांपोडशस्युः, कालेपंचदशास्मृताः ॥ १३ ॥

जीहोप्रमाणनयतेअधिगमें ॥ लालाजाणीएहस्वन्नाव ॥ जीहोसुय
शविवुधजिनसंगतें ॥ लालाधरोचित्तशुन्नन्नाव ॥ चतु० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एएकवीस स्वन्नावते प्रमाणनयने अधिगमेके० ज्ञानेजाणीने सुयशके० शो
न अनुयोग परिज्ञान यशवंतजे विवुधके० पंमितजन तेहनीसंगतकरी सर्वशंकादो-
ालीचित्तमांहें शुन्नन्नावधरो ॥ १४ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ वीराचंदला ॥ ए देशी ॥

स्वद्रव्यादिकग्राहकेंरे ॥ अस्तिस्वन्नाववखाण ॥ परद्रव्यादि
कग्राहकेंरे ॥ नास्तिस्वन्नावमनआणोरे ॥ चतुरविचारियें ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेस्वन्नावनो अधिगम तेनयेंकरीदेखाडेछे, १ जेअस्तित्वस्वन्नाव द्रव्यनोछे,
वद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनयें वखाणियें; अने जे २ नास्तिस्वन्नावछे तेपरद्रव्यादि-
हक द्रव्यार्थिकनयेंवखाणियें; उक्तंच ॥ सर्वमस्तिस्वरूपेण पररूपेणनास्तिच ॥ १ ॥

उत्पादव्ययगौणतारे ॥ सत्ताग्राहकनित्य ॥ कोइकपर्या
यार्थिकेंरे ॥ जाणोस्वन्नावअनित्योरे ॥ चतु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ ३ उत्पादव्ययगौणत्वें अनेसत्ताग्राहक द्रव्यार्थिकनयें नित्यस्वन्नावकहियें
था ४ कोइकरीतें पर्यायार्थिकनयेंकरी उत्पादव्यय ग्राहकहोय, तेणेकरीने द्रव्यने-
पे अनित्यस्वन्नावजाणो ॥ २ ॥

न्नेदकल्पनारहितथीरे ॥ धारोएकस्वन्नाव ॥ अन्वय
द्रव्यार्थिकनयेंरे ॥ अनेकद्रव्यस्वन्नावोरे ॥ चतु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ५ न्नेदकल्पनानी अपेक्षारहित शुद्धद्रव्यार्थिकनयें एकस्वन्नावजाणो तथा
अन्वयद्रव्यार्थिकनयेंकरी अनेकस्वन्नावजाणो, कालान्वयेसत्ताग्राहको देशान्वयेचा-
यिग्राहकोनयः प्रवर्त्तते ॥ ३ ॥

सद्भूतव्यवहारथीरे ॥ गुणगुणादिकन्नेद ॥ न्नेदक
ल्पनारहितथीरे ॥ जाणोतासअन्नेदोरे ॥ चतु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ ३ सद्भूतव्यवहारनयथी गुणगुणी, पर्यायपर्यायीनो भेदस्वभाव अने भेदनीकल्पनारहित शुद्धद्रव्यार्थिकनयथी अभेदस्वभावजाणवो, नस्यांतर्निर्गीर्णत्वेनग्रहस्तत्रैकस्वभावो यथाघटोयमिति [illegible] ग्रहस्तत्राभेदस्वभावो यथानीलोघटइति सा [illegible] भेद प्रयोजनत्वेतुतेयदृच्छानिमित्तकत्वेनस्वभावभेदसाधके ॥ इतिपरमार्थ ॥ ४

परमभावग्राहकनेरे ॥ भव्यअभव्यपरिणाम ॥ शु
द्धअशुद्धहलेहथीरे ॥ चेतनआतमरामोरे ॥ चतु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे ९ भव्यस्वभाव अने १० अभव्यस्वभाव [illegible] कनयें जाणवा भव्यताते स्वभावनिरूपितछे,अनेअभव्यता तेअपरमस्वभावनी रनावनी साधारणछे, तेमाटेइहां अस्ति नास्ति स्वभावनीपरें स्वपरद्रव्यादिक नय एवंप्रवृत्तिनहोय शुद्धाशुद्धपणा संमुग्धजे परमभाव ग्राहकनय तेणेकरीने रमारामने ११ चेतनस्वभाव कहियें ॥ ५ ॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ चेतनकर्मनोकर्म ॥ परम
भावग्राहकनयेंरे ॥ तेहअचेतनधर्मोरे ॥ चतु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी ज्ञानावरणादिककर्म तथानोकर्मते [illegible] पणु तेहनेचेतनकहियें चेतनसयोगकृतपर्यायतिहांछे तेमाटे "इदशरीरमारक्षा [illegible] तीत्यादिव्यवहार अनपगमयति घृतदहतीतिवत्"अने परमभावग्राहकनयें [illegible] कर्मने १२ अचेतनस्वभावकहियें, जेम घृतअनुष्णस्वभाव ॥ ६ ॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ जीवअचेतनधर्म ॥ परम
भावग्राहकनयेंरे ॥ मूरतकर्मनोकर्मोरे ॥ चतु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी जीवने १२ अचेतन स्वभावकहियें [illegible] प्रमचेतनोयमित्यादि" व्यवहारछे,"एतेनमानजानामीतिप्रतीत्या [illegible] वेदानिनामनात्मा सद्भूतव्यवहारनयग्राह्येणाचेतनस्वभावेनैवतदुपपत्ते" [illegible] हनयें कर्मनोकर्मने मूर्तस्वभावकहियें ॥ ७ ॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ जीवमूरतपणहोय ॥ परम
भावग्रहवतिनारे ॥ द्रव्यअमूर्ततजोयरे ॥ चतु० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी जीवने १३ मूर्तस्वभावपणकहियें [illegible] [illegible] अमुंया मानस्यामि॥व्यवहारछे,एसभावंजे 'रत्नो [illegible]

ादिवचनछे. तथापरमजावग्राहकनयें पुजलद्रव्यविना वीजांसर्वद्रव्यने १४ अमू-
स्वजाव कहियें ॥ ८ ॥

उपचारेंपणपुजलीरे ॥ नहीअमूर्त्तस्वजाव ॥ उपचरि
येंअनुगमवसेंरे ॥ व्यवहारेंजेहजावोरे ॥ चतु० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ चेतननासंयोगे देहादिकने विषे जेमचेतनत्व उपचरियेंछेयें, तेमअमूर्त्तउप-
रतानथी.तेमाटेअसद्भूतव्यवहारथीपण पुजलने अमूर्त्तस्वजावनकहियें. प्रत्यासत्तिदोषे
मूर्त्तत्व तिहांकेमउपचरिते उपचरित कहेछे अनुगमवसे० एकसंबंधदोषे जेहजावव्य-
हरियें. तेउपचरियें पणसर्वधर्मनो उपचारनहोय. तथाच आरोपेसतिनिमित्तानुसरणं
तुनिमित्तमस्तीत्यारोपइतिन्यायोनाश्रयणीयइतिजावः ॥ ए ॥

एजावेंसंमतिजणिउरे ॥ अनुगतअर्थअशेष ॥ जलपयजे
मनविन्नजीयेरे ॥ यावत्अंत्यविशेषोरे ॥ चतु० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ एजावेंके० एअन्निप्रायें संमतिग्रंथमांकह्युंछे जे, अनुगतके० अत्यंतसंबंध
शेषके० सर्वअर्थ जलपयजेमके० खीरनीरनीपरें विन्नजेनही, पृथक्करहेनही किहां?
कि अंत्यविशेषतायें अंत्यविशेषे शुद्धपुजलजीवलक्षणे विन्नजीयें ॥ यथा उदारिकादि
गेणानिष्पन्नाछरीरादेर्ज्ञानघनासंख्येयप्रदेशआत्माजिन्नइति अत्रगाथा ॥ अनुन्नाणुग-
यणं इमवतंवत्तिविन्नयणमजुत्तं ॥ जहदुद्धपाणियाणं जावंतविशेषपज्जाया ॥ १० ॥

अनन्निभूतजिहांमूर्त्ततारे ॥ अमूर्त्ततातिहांनाहिं ॥ जिहांअ
न्निभूतअमूर्त्ततारे ॥ मूर्त्तिअनंत्यतेमांहिरे ॥ चतु० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ एमकहेतांमूर्त्तता जोपुजलद्रव्य विन्नजक अंत्यविशेषछे, तोतेनोउपचार आ-
नद्रव्यें केमहोय, अनेजोते अंत्यविशेषनहीतो, अन्योन्यानुगमे अमूर्त्ततानो उपचार
जलद्रव्ये केमनहोय, एहवीशंका कोइकनेहोयछे, तेटालवानेकहेछे; जिहांपुजल द्रव्य-
र्त्तता अन्निभूतनथी, किंतुउद्भूतछे, तिहांअमूर्त्तता स्वजावनहोय, तेमाटेअमूर्त्तता
पुजलद्रव्यनो अंत्यविशेष, अनेजिहांआत्मद्रव्य कर्मनहोय, तिहांअमूर्त्तता अन्निभू
ोछे, तिहांमूर्त्तता अनंत्य अनुगमजनित साधारणधर्मरूपहोय. तथाचान्योन्यानुगमा
शेषेपिक्वचिद्वकिंचित्केनचित्कथंचिदन्निभूयतइतियथागमव्यवहारमाश्रयणीयं ॥११॥

पुजलनेएकवीसमोरे ॥ एमतोजावविमुत्त ॥ तेणेंअसद्भू
तहनयेंरे ॥ परोक्षअणुअमूर्त्तोरे ॥ चतु० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जो उपचारेंपण अमूर्त्तस्वजाव पुजलनेनहोय एमकहेवाय,तो एकवीसमो जाव

अर्थ ॥ ७ सद्भूतव्यवहारनयथी गुणगुणी, पर्यायपर्यायीनो भेद, अने भेदनीकल्पनारहित शुद्धद्रव्यार्थिकनयथी अभेदस्वभावजाणवो, नस्यातर्निगीर्णत्वेनग्रहस्तत्रैकस्वभावो यथाघटोयमिति ... ग्रहस्तत्राभेदस्वभावो यथानीलोघटइति सारोपासाध्यवसानयोर्निरूढलार्थमर ... भेद प्रयोजनत्वेतुतेयदृच्छानिमित्तकत्वेनस्वभावभेदसाधके ॥ इतिपरमार्थ ॥ ४

परमभावग्राहकनेरे ॥ भव्यअभव्यपरिणाम ॥ शु
द्धअशुद्धतेदथीरे ॥ चेतनआतमरामोरे ॥ चतु० ॥ ५॥

अर्थ ॥ हवे ९ भव्यस्वभाव अने १० अभव्यस्वभाव ... कनयें जाणवा भव्यताते स्वभावनिरूपितछे,अनेअभव्यता तेउरयञस्वभावनी ... रभावनी साधारणछे, तेमाटेइहा अस्ति नास्ति स्वभावनीपरें ... नय पयेप्रवृत्तिनहोय शुद्धाशुद्धरूपणा समुग्धजे परमभाव ग्राहकनय तेणेकरीने रमारामने ११ चेतनस्वभाव कहियें ॥ ५ ॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ चेतनकर्मनोकर्म ॥ परम
भावग्राहकनयेरे ॥ तेहअचेतनधर्मोरे ॥ चतु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी ज्ञानावरणादिककर्म तथानोकर्मते मनवचन... पणु तेहनेचेतनकहियें चेतनसयोगकृतपर्यायतिहाछे तेमाटे "इदशरीरमात्मवत्... सीत्यादिव्यवहार अतएवजनति घृतंदहतीतिवत् "अने परमभावग्राहकनयें तेहने कर्मने १२ अचेतनस्वभावकहियें, जेम घृतअनुष्णस्वभाव ॥ ६ ॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ जीवअचेतनधर्म ॥ परम
भावग्राहकनयेरे ॥ मूरतकर्मनोकर्मोरे ॥ चतु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी जीवने १२ अचेतन स्वभावकहियें ... यमचेतनोयमित्यादि" व्यवहारछे,"एतेनमांनजानामीतिप्रतीत्या निवर्तुपादान... वेदांतिनामपास्ता सद्भूतव्यवहारनयग्राह्येणाचेतनस्वभावेनैवतदुपपत्ते " ... इहनयें कर्मनोकर्मने मूर्त्तस्वभावकहियें ॥ ७ ॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ जीवमूरतपणहोय ॥ परम
भावपुद्गलविनारे ॥ द्रव्यअमूर्त्ततुजोयरे ॥ चतु० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी जीवने १३ मूर्त्तस्वभावपणकहियें अतएव ... रमाटइयते. अमुयारमानपश्यामि॥एव्यवहारछे, एस्वभावेजे ...

स्यादिवचनाठे. तथापरमभावग्राहकनयें पुद्गलद्रव्यविना बीजांसर्वद्रव्यने १४ अमूर्त्त स्वभाव कहियें ॥ ८ ॥

उपचारेंपणपुद्गलीरे ॥ नहीअमूर्त्तस्वभाव ॥ उपचरि
येंअनुगमवसेंरे ॥ व्यवहारेंजेहभावोरे ॥ चतु० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ चेतननासंयोगे देहादिकने विषे जेमचेतनत्व उपचरियेंछेयें, तेमअमूर्त्तउपरतानथी,तेमाटेअसद्भूतव्यवहारथीपण पुद्गलने अमूर्त्तस्वभावनकहियें. प्रत्यासत्तिदोषे मूर्त्तत्व तिहांकेमउपचरिते उपचरित कहेछे. अनुगमवसे० एकसंबंधदोषे जेहभावव्यहरियें, तेउपचरियें पणसर्वधर्मनो उपचारनहोय. तथाच आरोपेसतिनिमित्तानुसरणं तुनिमित्तमस्तीत्यारोपइतिन्यायोनाश्रयणीयइतिभावः ॥ ९ ॥

एभावेंसंमतिभणिउरे ॥ अनुगतअर्थअशेष ॥ जलपयजे
मनविभंजीयेरे ॥ यावत्अंत्यविशेषोरे ॥ चतु० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ एभावेंके० एअभिप्रायें संमतिग्रंथमांकह्युंछे जे, अनुगतके० अत्यंतसंबंध शेषके० सर्वअर्थ जलपयजेमके० खीरनीरनीपरें विभंजेनही, पृथक्करहेनही किहां? के अंत्यविशेषतायें अंत्यविशेषे शुद्धपुद्गलजीवलक्षणे विभंजीयें ॥ यथा उदारिकादि गेणानिष्पन्नाछरीरादेर्ज्ञानघनासंख्येयप्रदेशआत्माभिन्नइति अत्रगाथा ॥ अनुन्नाणुगणं इमवतंवत्तिविभयणमजुत्तं ॥ जहदुद्धपाणियाणं जावंतविशेषपज्जाया ॥ १० ॥

अनभिभूतजिहांमूर्त्ततारे ॥ अमूर्त्ततातिहांनाहिं ॥ जिहांअ
भिभूतअमूर्त्ततारे ॥ मूर्त्तिअनंत्यतेमांहिरे ॥ चतु० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ एमकहेतांमूर्त्तता जोपुद्गलद्रव्य विभंजक अंत्यविशेषछे, तोतेनोउपचार आ नद्रव्यें केमहोय, अनेजोते अंत्यविशेषनहीतो, अन्योन्यानुगमे अमूर्त्ततानो उपचार द्गलद्रव्ये केमनहोय, एहवीशंका कोइकनेहोयछे, तेटालवानेकहेछे; जिहांपुद्गल द्रव्यमूर्त्तता अभिभूतनथी, किंतुउद्भूतछे, तिहांअमूर्त्तता स्वभावनहोय, तेमाटेअमूर्त्तता पुद्गलद्रव्यनो अंत्यविशेष, अनेजिहांआत्मद्रव्य कर्मनहोय, तिहांअमूर्त्तता अभिभूतछे, तिहांमूर्त्तता अनंत्य अनुगमजनित साधारणधर्मरूपहोय. तथाचान्योन्यानुगमा विशेषेपिकचिदेवकिंचित्केनचित्कथंचिदभिभूयतइतियथागमव्यवहारमाश्रयणीयं ॥ ११ ॥

पुद्गलनेएकवीसमोरे ॥ एमतोभावविहुत्त ॥ तेणेंअसद्भू
तहनयेंरे ॥ परोक्षअणुअअमूर्त्तोरे ॥ चतु० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जो उपचारेंपण अमूर्त्तस्वभाव पुद्गलनेनहोय एमकहेनाय,नो एकवीसमो भाव

लोपाय, तेवारें "एकविंशतिजावाःस्युर्जीवपुजलयोर्मता" एवचनव्याघातथी तथाय, तेटालवानेअर्थे असद्भूतव्यवहारनयें परोक्षते पुजलपरमाणुछे, व्यवहारिकप्रत्यक्षागोचरत्वममूर्त्तत्वं परमाणो जाकस्वीक्रियतइत्यर्थ ॥ १२ ॥

कालपुजलाणुतणोरे ॥ एकप्रदेशस्वजाव ॥ परमनयेपर
द्रव्यनेरे ॥ जेदकलपनाअजावोरे ॥ चतु० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ कालाणुने तथापुजलाणुने परमजावग्राहकनयें १५ दे... एमकालतथापुजल एवेद्रव्यटालीने परद्रव्य जेबीजाचारद्रव्य तेहने जेदकल्प... शुद्धद्रव्यार्थिकनयें एकप्रदेशस्वजावकहियें ॥ १३ ॥

जेदकल्पनायुतनयेंरे ॥ अनेकप्रदेशस्वजाव ॥ अणुविण
पुजलअणुतणुरे ॥ उपचारेतेहजावोरे ॥ चतु० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ अनेजेदकल्पनानी सापेक्षायें जेशुद्धद्रव्यार्थिकनयें अणुके... णुविना सर्वद्रव्यने १६अनेकप्रदेशस्वजावकहियें, अने पुजलपरमाणुनेपण थवानीयोग्यताछे, तेमाटे उपचारें तेहनेपण अनेकप्रदेशस्व... यें,... ते उपचारकारणनथी, तेमाटे तेहनेसर्वथा एस्वजावनथी ॥ १४ ॥

शुद्धाशुद्धद्रव्यार्थिकेरे ॥ जाणोविजावस्वजाव ॥ शुद्धेशुद्ध
स्वजावछेरे ॥ अशुद्धेअशुद्धस्वजावोरे ॥ चतु० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ शुद्धाशुद्धद्रव्यार्थिनये समुच्चे १७ विजावस्वजावछे तथा शु... यें १८ शुद्धस्वजावजाणो अनेअशुद्धद्रव्यार्थिकनयें १९ अशुद्धस्वजावजाणवो ॥ १५ ॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ छेउपचरितस्वजाव ॥ एस्वजाव
नययोजनारे ॥ कीजेमनधरीजावोरे ॥ चतु० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी २० उपचरितस्वजावछे एजावचित्तमांधरीने जावनयनी योजनाकरियें ॥ १६ ॥

अनुपचरितनिजजावजेरे ॥ तेतोगुणकहेवाय ॥ एकद्रव्या
श्रितगुणकह्यारे ॥ उजयाश्रितपज्जाउरे ॥ चतु० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ एदिगवरप्रक्रिया किहांकिहांस्वसमयेंपण उपस्कृतकरीछे, तेदेखाडेछे स्वजावते गुणपर्यायथीजिन्न नविवक्षियें, जेमाटे जेअनुपचरितजाव यजजाणवो, अनेजेउपचरितते पर्यायजजाणवो जेम द्रव्याश्रिततेगुण

ततेपर्यायकह्याछे. तथोक्तमुत्तराध्ययनेषु॥गुणाणुमासर्ठदव्वं एगदव्वस्सियागुणा ॥लक्ख-
णंपज्जवाणंतु उन्नर्ठअस्सिआनवेत्ति ॥ १ ॥ १७ ॥

स्वन्नावन्नेदसहितकह्यारे ॥ एमएगुणहप्रकार ॥ हवेन्नेद
पज्जायनारे ॥ सुणयोसुयशन्नंन्नारोरे ॥ चतु० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ यदिचस्वद्रव्यादिग्राहकेणास्तिस्वन्नावः परद्रव्यादिग्राहकेणनास्तिस्वन्नाव
ग्रुपगम्यते तदोन्नयोरपि द्रव्यार्थिकविषयत्वात्सप्तन्नंग्यामाद्यद्वितीययोर्न्नंगयोर्द्रव्या
कपर्यायार्थिकाश्रयेण प्रक्रियान्नज्येतेत्याद्यत्रबहुविचारणीयं ॥ स्वन्नाव० एमएस्वन्ना
वेदसहितगुणना प्रकारकह्या. हवेआगलीढालमां पर्यायनान्नेदकहुंछुं. तेहनेसुपशना
हार एहवाश्रोतापुरुषो तमेसांन्नलो ॥ १० ॥

॥ ढाल चउदमो ॥

॥ ठोडोसीमंधरसामीश्रा ॥ तेमुफमिछामिडुक्कमंमी ॥ एदेशी ॥

सुणोन्नेदपज्जायनारे ॥ तेदोयप्रकार ॥ व्यंजनअर्थवेन्नेद
थी ॥ संक्षेपेंसार ॥ श्रीजिनवाणीआदरो ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेपर्यायना न्नेदसांन्नलो. तेपर्यायनान्नेद संक्षेपथी बेप्रकारनाछे एकव्यं
जनपर्याय, बीजोअर्थपर्याय, एसंक्षेपेकह्या ॥ १ ॥

अनुगतकालकलितकह्यो ॥ व्यंजनपर्याय ॥ वर्त्तमानसु
षिमतिहां ॥ अर्थहपज्जाय ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेजेहनो त्रिकालस्पर्शिपर्याय तेतेनोव्यंजन पर्यायकहियें. जेमघटादिकने मृ-
दादिपर्याय तेहमां सूक्ष्मवर्त्तमानकालवर्त्ति ते अर्थपर्यायछे जेमघटनेतत्तत्क्षणवर्त्तिपर्या-
ते अर्थपर्याय ॥ २ ॥

द्रव्यगुणेविहुंन्नेदथी ॥ वलीशुद्ध अशुद्ध ॥ शुद्धद्रव्यव्यं
जनतिहां ॥ चेतननेसिद्ध ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेप्रत्येकें एकेकवेबेप्रकारें एकद्रव्यपर्याय बीजोगुणपर्याय न्नेदथीजाणवा न-
ववली शुद्ध अनेअशुद्धन्नेदथी बेबेप्रकारेंजाणवा तेमांशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायते चे-
नद्रव्यने केवलज्ञानना न्नावथी सिद्धपर्याय जाणवो ॥ ३ ॥

अशुद्धद्रव्यव्यंजनबहु ॥ मनुजादिकन्नेद ॥ गुणथीव्यं
जनएमद्विधा ॥ केवलमइन्नेद ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेअशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्याय तेमनुष्य, देवता, नारकी, तीर्यंच
जाणवो, केमके तेद्रव्यजेद पुद्गलसंयोग जनिततेछे एमज शुद्धगुणपर्यायते केवल
दिरूप अने अशुद्धगुणव्यंजनपर्यायते मतिज्ञानादिरूप जाणवा ॥ ४ ॥

ऋजुसूत्रादेशेंकरी ॥ क्षणपरिणतएह ॥ कह्योअर्थ
पज्जायए ॥ अभ्यंतरजेद ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एमऋजुसूत्रादेशे क्षणपरिणतजे अभ्यंतरपर्याय तेशुद्धार्थपर्याय अने
इथी अल्पकालवर्त्तिपर्याय तेतेहथीअल्पविवक्षायें अशुद्ध अर्थपर्यायकहेवा॥५॥

पुरुषशब्दजेमपुरुषने ॥ व्यंजनपर्याय ॥ संम
तिग्रथेअर्थथी ॥ बालादिकहाय ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इहांसूत्रवचन समतिग्रथदेखाडेछे, जेम पुरुषशब्दवाच्य जेजन्म
कालपर्यंत एकअनुगतपर्याय तेपुरुषनोव्यंजनपर्यायकहियें, एसमतिग्रंथेकह्युंछे बा
लतरुणादि पर्यायते अर्थपर्यायकह्याछे एमसर्वत्रफलावीलेवु अत्रगाथा॥ पुरिस
रिससद्दो जम्माइमरणकालपज्जतो ॥ तस्सउबालाईया पज्जवजेयाबहुविगप्पा ॥

षट्गुणहाणीवुद्धीथी ॥ जेमअगुरुलहुत्त ॥ पजव
तेमदिणजेदथी ॥ केवलपणेवुत्त ॥ श्रीजिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेकेवलज्ञानादिकते शुद्धगुणव्यंजनपर्यायहोय, तिहांअर्थपर्यायनथी. ए
कोइक दिक्पटाचार्यनी शकाटालेछे "जे षट्गुणहानिवृद्धिलक्षणागुरुलघुपर्याया
र्थपर्याया " एजेमकह्युंछे, तेमक्षणजेदथी केवलज्ञानपर्यायपण जिन्नजिन्न देखाडेछे।
तेमादेऋजुसूत्रादेशें शुद्धगुणनापण अर्थपर्यायमानवा ॥ ७ ॥

शुद्धद्रव्यव्यंजनअणु ॥ पुद्गलपर्याय ॥ अगुरुद्ध्यणु
कादिकगुणा ॥ निजगुणपर्याय ॥ श्रीजिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ पुद्गलद्रव्यनो शुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायते अणुके० परमाणुजाणवो,
तेपरमाणुनोकेवारें नाशनथी, तेमाटेतथा द्व्यणुकादिकद्रव्यते पुद्गलद्रव्यना अशु
द्धव्यंजनपर्याय संयोगजनितछे, तेमाटे एमगुणाके० पुद्गलद्रव्यना शुद्धगुणव्यंजन
तथाअशुद्धगुणव्यंजनपर्यायते पोतपोताना गुणाश्रितजाणवा, जेपरमाणुगुण
व्यंजनपर्याय अनेस्कंधदेशादिगुणते अशुद्धगुणव्यंजनपर्याय ॥ ८ ॥

सूक्ष्मअर्थपर्यायते ॥ धर्मादिकएम ॥ निजपरप्र
त्ययथीलहो ॥ गंम्हिहप्रेम ॥ श्रीजिन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायादिकना शुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायजछे, एहवोजे हवकरेछे, तेह
हियें, जे ऋजुसूत्रादेशें क्षणपरिणतिरूप अर्थपर्यायपण केवलज्ञानादिकनीपरें ह
ीने तिहांपणकेमनथीमानता? ॥ ए ॥

जेमआकृतिधर्मादिकनी ॥ व्यंजनछेशुद्ध ॥ लोकद्रव्य
संयोगथी ॥ तेमजाणीअशुद्ध ॥ श्रीजिन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ तेधर्मास्तिकायादिकमां अपेक्षायें अशुद्धपर्यायपणहोय, नहीतोपरमाणु
त विश्रामेंपुद्गलद्रव्यपण नहोय, एहवें अभिप्रायेंकहेछे, जेधर्मास्तिकायादिकनी
कृति लोकाकाशमान संस्थानरूपते शुद्धद्रव्यव्यंजन पर्यायकहियें, परनिरपेक्षप
माटे, तेमजलोकवर्त्ति द्रव्यसंयोगरूप अशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायकहियें, पणतेह
परापेक्षपणे कहेतायका अनेकांतिकने विरोधनथी ॥ १० ॥

संयोगेआकृतिपरें ॥ पज्जायकहेवाय ॥ उत्तराध्य
यनेभाषिया ॥ लक्षणपज्जाय ॥ श्रीजिन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेआकृतिते पर्यायहशे, अने संयोगपर्यायनहोय, एहवीआशंकाटालेछे.
संयोगतेपण आकृतिनीपरें पर्यायकहेवायछे, केमके पर्यायनांलक्षण भेदरूप श्री
उत्तराध्ययनसूत्रें एरीतेकह्यांछे ॥ ११ ॥

एकतपृथकततेमवली ॥ संख्यासंठाण ॥ वलीसंयोग
विभागए ॥ मनमांतुंआण ॥ श्रीजिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ उक्तंच ॥ एगत्तंचपुहुत्तंच संखासंठाणमेवय ॥ संयोगायविभागाय पज्जवा
णुलक्खणं ॥१॥ एगाथातुंमनमांआण,एमदिगंबरनयचक्रनाकर्त्तादेवसेननेकहेछे॥१२॥

उपचारीनयशुद्धते ॥ जोपरसंयोग ॥ असद्भूतम
नुजादिका ॥ तोनयशुद्धयोग ॥ श्रीजिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेजोएमकहेशोजे धर्मास्तिकायादिकने परद्रव्यसंयोगछे, तेउपचरित प-
र्यायकहियें, पणअशुद्धपर्यायनकहियें, द्रव्यान्ययात्वहेतुनेविषेज अशुद्धत्व व्यवहारछे,
प्रतीतो तेमाटे मनुष्यादिकपर्यायपण अशुद्धनकह्यो. असद्भूतव्यवहारनयग्राह्य माटे
सद्भूत कह्यो ॥ १३ ॥

धर्मादिकपरपज्जायें ॥ विसमाइएम ॥ अशुद्धताअ
विशेषथी ॥ जिअपुग्गलजेम ॥ श्रीजिन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ द्वितनुकादिक पर्यायनीपरें एद्रव्यजनकअनयवसंघातनयेव्र जनपर्यायपणुज कहेतां रुडुलागे तस्माद ज्ञानपेक्षा वश्रेय " तेहिजदेखाडेछे धर्मादिकने परपर्यायें एटलेस्वपर्यायथी ताएमजाणवी, केमके परापेक्षायें जेमजीवद्रव्य पुद्गलद्रव्यने

एमजसजातिविजातिथी ॥ द्रव्येंपज्जाय ॥ गुणेस्व
भावविभावथी ॥ एचारकहाय ॥ श्रीजिन०॥१५॥

अर्थ ॥ हवे प्रकारांतरे चारप्रकारनापर्याय नयचक्रमाकह्याछे, तेदेखाडेछे जातीयद्रव्यपर्याय,तथाविजातीयद्रव्यपर्याय,वलीस्वभावगुणपर्याय,अनेवि एरीतेंचारभेद पर्यायनाकहेवा ॥ १५ ॥

द्व्यणुकमनुजेकेवलीवली ॥ मतिमुखदिठंत ॥ एप्रायि
कजेणेद्रव्यथी ॥ अणुपज्जवसंत ॥ श्रीजिन ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवेउदाहरणदेखाडेछे द्विप्रदेशादिकस्कंधते स्वजातीय तथा द्रव्यबेमिलीएकद्रव्यउपनु, तेमाटे मनुजादिपर्यायते विजातीय यें, केमके तेबेद्रव्यमली परस्पर भिन्नजातीय द्रव्यपर्यायउपनो, तेमाटे तथाके ते कर्मरहितपणामाटे स्वभावगुणपर्यायकहियें अनेमतिज्ञानादिकते विभावगुणपर्यायजाणवा एरीते एचारभेदपण प्रायिकजाणवा केमके पर्यायते एचारमाहेन अतरजवें पर्यायपणुतेहने विभागजाति शास्त्रेकह्युंछे, मतो ॥ अणुदुअणुएहिंदव्वे आरंद्धुअणुअतिअणुतिववएसो ॥ ततोअपुणवि णुचिजाउअणुहोइ ॥ इत्यादिक ॥ १६ ॥

गुणविकारपज्जवकही ॥ द्रव्यादिकभंत ॥ शुजा
णेमनमाहेते ॥ देवसेनमहंत ॥ श्रीजिन॥ १७॥

अर्थ ॥ "गुणविकारा पर्याया " एमकहीने तेहनाभेदनेअधिकारें तेपर्याय द्रव्यपर्याय २ गुणपर्याय इत्यादिककहेतोयको नयचक्रनोकर्त्ता जे देवसेनदिगं मनमाहेशुजाणेछे? अर्थात् पूर्वापरविरोधजाणपणथी कांइजाणतोनथी तेमाटे द्रव्य जकहेवा, पणगुणपर्याय जूदानकहेवा एपरमार्थछे॥ १७ ॥

इमद्रव्यादिकपरखीया ॥ राखीगुरुआण ॥ उवेखी
बहुतनुमति॥ अवगणीअजाण श्री० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ एरीतें द्रव्यगुणपर्यायते स्वरूपलक्षण नेदादिकेंकरीने परख्या, गुरुआणाके०
गुरुपरंपरानी आज्ञाराखीने तथाघणा तनुमतिके० तुच्छबुद्धिनाधणी तेहनेउवेखीने, अ-
ाणजेहठकदाग्रही तेहनेअवगणी–निराकरीने द्रव्यादिकनीपरीक्षामेंकरी ॥ १८ ॥

जेहिनदिनएमजावशे ॥ द्रव्यादिविचार ॥ तेलहेशेज

शसंपदा ॥सुखसघलांसार ॥ श्रीजिन० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ जे एअर्थदिनदिनप्रतें द्रव्यगुणपर्याय विचाररूपजावशे, तेप्राणी यशनीसं-
दाप्रतें पामशे तथा सघलांसुखप्रतें सारके० निश्चेंपामशे. एगुरुनोउपदेश प्रमाणकरजो

दोहा

गुरुश्रुतअनुजववलथकी ॥ कह्योद्रव्यअनुयोग ॥

एहसारजिनवचननो ॥ एहपरमपदजोग ॥ १ ॥

अर्थ ॥ गुरुउपदेश, श्रुतशास्त्राज्यास, अनुजववल, अने सामर्थ्ययोग तेंहथीए द्र-
व्यानु योगकह्यो. एसर्वजिनराजनां वचननोसारछे. एजपरमपदके० मोक्षतेहनोजोगछे,
मके एद्रव्यादिकविचारें शुक्लध्यानसंपदायें मोक्षपामियें ॥ १ ॥

मध्यमकिरियारतहुए ॥ बालकमानेलिंग ॥

पोमशकेंजाप्युंधरे ॥ उत्तमज्ञानसुरंग ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एद्रव्यानुयोगमां जे रंगधरे, तेहनेजपंडितकहियें, एहवुं अनियुक्तसाखेंसम
छे. पोमशकवचनंचेदं ॥ बालःपश्यतिलिंगं मध्यमबुद्धिर्विचारयतिवृत्तं ॥ आगमत
त्त्वंतुबुधः परीक्षते सर्वयत्नेन ॥ २ ॥

नाणरहितजेशुजक्रिया ॥ क्रियारहितशुजनाण ॥

योगदृष्टिसमुच्चयकह्यो ॥ अंतरखजुआजाण ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ज्ञानरहितजे शुजक्रिया अनेक्रियारहित जे शुजज्ञान तेनेयोगदृष्टिसमुच्चय
मां खजुआ अनेसूर्यजेटलो आंतरोकह्योछे ॥ ३ ॥

खजुआसमीक्रियाकही ॥ नाणजाणसमजोय ॥

कलियुगएहपटंतरो ॥ विरलाबुजेकोय ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तात्त्विकःपक्षपातश्च जावशून्याचयाक्रिया ॥ अनयोरंतरंज्ञेयं जानुखद्योतयो-
रिव ॥ इत्यादिकयोगदृष्टिसमुच्चयें कह्युंछे ॥ ४ ॥

क्रियामात्रकृतकर्मखय ॥ दद्दुरचुन्नसमान ॥

ग्यानकिउंउपदेशपदें ॥ तासगारसमजाण ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ मंकुयकुरुकप्पो किश्याजाणिउंकउंकिलेसाण ॥ तछुरुगुनरणो तंचआणाए ॥ १ ॥ इत्युपदेशरहस्ये एतदर्थसंग्रह ॥ ५ ॥

मिथ्यात्वादिककर्मथिति ॥ अकरणनियमेंजाय ॥
अप्रतिपातिज्ञानगुण ॥ महानिशीथहमाय ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेज्ञानते सम्यग्दर्शनसहितजआवे तेपाम्यापछि मिथ्यात्वमा थावे, एककोडाकोडी सागरोपम " उपरांतकर्मबंध जीव नकरे अर्थ॰ .नोते ॰ नात् " एअनिप्रायें नंदिषेणनेअधिकारें महानिशीथे ज्ञानगुण अप्रतिपाति उत्तराध्ययनेप्युक्त ॥ सूइजहासमुत्ता णणस्सईकयवरमिपडिआवि ॥ ॥ विणदु णणस्सइगउविससारे ॥ १ ॥ ६ ॥

ध्यानवतहकेवली ॥ उच्यादिकअहिनाण ॥ वह
त्कल्पनाजाप्यमा ॥ सरिपाजाप्याजाण ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वृहत्कल्पगाथाचेय ॥ किंगीयछोकेवली चउविहेजाणणेयकहणेय ॥ रागदोसे अणंतकायसवज्जाणवा ॥ १ ॥ ७ ॥

नाणपरमगुणजीवनो ॥ नाणजवार्णवपोत ॥
मिथ्यामतितमजेदवा ॥ नाणमहाउद्योत ॥ ८ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ होमतवाखेसाजना ॥ एदेशीठे ॥

नाणसहितजेहमुनीवरा ॥ क्रियावंतमहंतोरे ॥ तेमृगपतिजेमपाखरिया ॥ गुणनोनअंतोरे ॥ श्रीजिनशासनसेविये ॥ १ ॥ एआंकणीठे ॥ ज्ञानि॰ जेपणज्ञानविहीनारे ॥ तेपणमारगमाकह्या ॥ ज्ञानीगुरुपदलीनारे ॥ ॥ २ ॥ नाणरहितहितपरिहरी ॥ अज्ञानजहठरातारे ॥ कपटक्रियाकरतापति नहुयेनिजमतिमातारे ॥ श्रीजिन॰ ॥ ३ ॥ कपटनजाणेरेआपणो ॥ पर खोलेरे ॥ गुणनिधि गुरुयकीजादेरा ॥ विरउंनिजमुखेबोलेरे ॥ श्रीजिन॰ ॥ ४ ॥ हिरवकपरेंचालता ॥ अतरआकरीकातीरे ॥ तेहनेजेहजलाकहे ॥ मतिनवीजाणठ तीरे ॥ श्रीजिन॰ ॥ ५ ॥ बहुविधबाह्यक्रियाकरें ॥ ज्ञानरहितजेहटोलेंरे ॥ मध्यधदेखता ॥ तेतोपडिआठेजोलेंरे ॥ श्रीजिन॰ ॥ ६ ॥ निजउत्कर्षथीहर्षिया ॥ निजअवगुणनवीदाखेरे ॥ ज्ञानजलधीगुणअवगणी ॥ अवगुणनहुजांपेरे ॥ जिन॰ ॥ ७ ॥ गुणप्रियआगेंअनुटता ॥ जेगुणअल्पशोजापेरे ॥ मायाशल्यमनराखेरे ॥ श्रीजिन॰॥ ८ ॥ ज्ञानरहितजेपहवा ॥

शिथलपरेंपरिहरु॥ गच्छाचारनेजोरेंरे ॥श्रीजिन०॥ ए॥ एनवमीगाथानोअर्थ॥ गच्छा-
चवनंचेदं ॥ अगीअठकुसीलेहिं संगंतिविहेणवोसिरे॥ मुक्कमग्गस्सिममेविग्घं पहंमि-
गेजहाइति॥ ज्ञानीवचनविपअमृतछे॥ उलटीमूरखवाणीरे॥आगमवचनएआदरी॥
नमहोनविप्राणीरे ॥ श्रीजिन० ॥१०॥ अर्थ ॥ गीयछस्सवयणेणं विसंहालाहलंपिवे
अगीयछस्सवयणेणं अमयंपिनघुट्टए ॥ १ ॥ इत्यादिवचनशास्त्रेंछे, तेमाटे हेधर्मार्थि
प्राणी ज्ञानपक्षदृढआदरो, केमकेहमणाज्ञानपक्षनोदृढाधिकारछे॥ १०॥ चरणक-
गुणहीणका ॥ज्ञानप्रधानआदरियेंरे॥ एम किरयागुणअजयसी ॥ इछायोगथीतरियें
श्रीजिन० ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ कर्तुमिछोःश्रुतार्थस्यज्ञानिनोपिप्रमादिनः॥ कालाद्विवि-
योग इतीछायोगलक्षणं ॥ ललितविस्तारादौग्रंथे ॥११॥ चरणपतितवलीश्रावको ॥
मर्मावलीजेहोरे॥ तेहनेज्ञानप्रधानछे ॥ मुनिनेछेगुणगेहोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १२ ॥
स्यकमांहेनापिछे ॥ तेणेगहीज्ञानप्रधानोरे ॥ आचरणापयचालतां ॥ लेश्येजश
मानोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ अत्रआवश्यकगाथा ॥ दंसणपक्खोसावय च-
नछेयमंदधम्मेय ॥ दंसणचरित्तपक्खो समणपरलोगकंखं मि॥ १३ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ समरीसारदाए वरदायकदेवी॥ एदेशी ॥

आतमअर्थिनेअर्थप्राकृतवाणी ॥ एमएमेंकीधीहीयडेउलटआणी ॥ मिथ्यादृष्टिने-
मांमतिमुझाणी ॥ सम्यग्दृष्टीनेलागेसाकरवाणी ॥ १ ॥ गुरूपासेंशीखीअर्थएहना-
णी ॥ तेहनेएदेजो,जेहनीमतिनवीकाणी ॥ लघुनेनयदेताहोएअर्थनीहाणी॥ योगदृ-
समुञ्चयएहवीरीतिवखाणी ॥ २ ॥ सामान्यमजाणोएतोजिनब्रह्माणी॥ जलीपरेंसंजा-
स्तरयणनीखाणी ॥ एशुजगतिमाता,छुरमतिवेलिकृपाणी॥ एशिवसुखसुरतरुफल-
स्वादनिशाणी ॥३॥ एहनेसुपसायेंउजाजोमीपाणी ॥ सेवेनर,किन्नर,विद्याधर, पवि-
णी ॥ एअमियदृष्टीथीजेहेनीमतिसीचाणी ॥ तेमांहेउल्लसेसुरुचिवेली करमाणी॥४॥
नावएहनाजाणेकेवलनाणी ॥ संखेपेएतोगुरुमुखथीकहेवाणी ॥ एहथीसंजारीजि-
णश्रेणीउसुहाणी ॥ वचनानुष्टानेसमापत्तिपरमाणी ॥ ५ ॥ एहथीसवीजाएपापश्रे-
वजाणी ॥ गुणश्रेणीचढतांलहेमुक्तिपटराणी॥घनघातिकर्मनेपीलीयेंजेमतेलघाणी ॥
लगुणएहथीपामियाबहुनविप्राणी ॥ ६ ॥ खलजनजोएहमांरूपवरेयांनिमानी ॥
णसज्जनथीएहनीख्यातिमचाणी ॥ गुणमणिरयणायरजगउत्तमगुणखाणी ॥ जहा-
वेगुणीसज्जननेसंघअनंतकल्याणी ॥ ७ ॥

॥ ढाल सतरमी ॥

॥ देशीहमचडीनीत्रे ॥

तपगछनंदनसुरुतरुप्रगट्यो ॥ हीरविजयसूरींदो ॥ सकलसूरिमांजेसोजागी तारामांचदोरे ॥ हमचडी० ॥ १ ॥ तासपाटविजयसेनसूरीश्वर ॥ शा... शाहीसजामांजेयशपाम्यो ॥ विजयवतगुणजरिर्जरे ॥ हम० ॥ २ ॥ तासपाटे देवसूरिसर ॥ महिमावतनिरीहो ॥ तासपाटेविजयसिंहसूरिसर ॥ ... होरे ॥ हम० ॥ ३ ॥ तेगुरुनाउत्तमउद्यमथी ॥ गीतारथगुणवाध्यो ॥ तस तपेअनुसारें ॥ ज्ञानयोगएसाध्योरे ॥ हम० ॥ ४ ॥ जशउद्यमउत्तममारगनो ॥ जावयीलहिये ॥ जसमहिमामहिमांयेविदीतो ॥ तसगुणकेमनगहियेरे ॥ हम० श्रीकल्याणविजयवरवाचक ॥ हीरविजयगुरुसीसो ॥ उदयाजशगुण सतनिगावे रकिन्नरनिसदीसोरे ॥ हम० ॥ ६ ॥ गुरुश्रीलाजविजयवरपंडित ॥ ताससी... श्रुतव्याकरणादिकबहुग्रथें ॥ नित्येंजशमतिलागीरे ॥ हम० ॥ ७ ॥ श्रीगुरुजित तससीसो ॥ महिमावतमहंतो ॥ श्रीनयविजयविबुधगुरुन्राता ॥ ... ॥ हम० ॥ ८ ॥ जेगुरस्वपरसमयअन्यासें ॥ बहुउपायकरी कासी ॥ ... चिसुरजिता ॥ मुझमतिशुजगुणनासीरे ॥ हम० ॥ ए ॥ ... चिंतामणीमेंलहिउं ॥ तसगुणगाइशकुकेमसघला ॥ गावानेगहगहिउंरे ॥ हम० तेगुरुनीजक्तिशुजशक्ति वाणीएहप्रकाशी ॥ कवियशविजयजणेपमजणयो ॥ ... नवहुअन्यासीरे ॥ हम० ॥ ११ ॥

॥ कलश ॥

एमद्रव्यगुणपर्यायेंकरीजेह ... ।पारगुणससारमा... तेपहजापीसुजनमधुकर रमणसुरनरपंजरी ॥ श्रीनयविजयबुधचरणसेवक जशवि... धजयकरी ॥ १ ॥ सर्वगाथा २७५ ॥ इयमुचितपदार्थोल्लापनश्रव्यशोजा बुधजनमे... वनापुष्पवाटी ॥ अनुदिनमितपत्नध्यानपुष्पैरुदारैर्जयतुचरणपूजा जैनरागदेव...

॥ इतिउपाध्यायश्रीयशोविजयगणिकृतद्रव्यगुण पर्यायनोरासबालावबोधसहितसमाप्त ॥

॥ श्रीपार्श्वनाथाय नमः ॥

श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत आठ दृष्टिनी सझाय बालावबोध सहित ॥

ऐंद्रश्रेणिनतंपार्श्वं, श्रीशंखेश्वरनामकं ।लिखा
मियोगदृष्टिस्वाध्यायार्थं लोकभाषया ॥ १ ॥

अर्थ ॥ इंद्रना समुदाय, श्रेणिपरंपरा, जेने नम्याछे, एवा श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथने न-
स्कार करीने, यम, नियम, प्राणायामादि अष्टांगयोग जेमां छे, एवा पातंजलिआदिकृत
शास्त्रमां प्रवेश करीशकाय तेवो श्रीहरिभद्रसूरिरचित श्रीयोगदृष्टिसमुच्चय
छे, तेना भाव ग्रहण करी, सकल तार्किकशिरोमणि वाचकराज श्रीयशोविजयजी
ध्याये योगदृष्टिनी सझाय रचेली छे, तेनो भावार्थसूचक बालावबोध गुर्जरी भा-
षां लखीए छीए.

प्रथम योग शब्द एटले शुं ? योग एटले चंचलता. त्रण प्रकारना योग ते मन,
न, कायानायोग तथा अष्टांगयोग अने ज्ञान दर्शनादि योग; अथवा जेजे वस्तु-
। योग युजन करीए, तेपण योग कहेवाय. एम योगना बहु प्रकार छे. अहींआ-
पातंजलादि ग्रंथानुयायी त्रण योग वर्णवेला छे. तेनां नाम. १ इच्छायोग २ शास्त्र-
ग ३ सामर्थ्यप्रतिज्ञायोग.

१ तथाविध ज्ञानावरणादि कर्मना क्षयोपशम विशेषथी श्रुतज्ञाननो अर्थ लई,
ज्ञानी इच्छावालो छतां, प्रमादथी धर्म व्यापारमां विकल अने अंतःकरणमां सूत्रा
इच्छकपणुं होय, पण यथार्थ बोध न होय, ते इच्छायोग कहीए

२ यथार्थस्वरूपे विकथादिनो त्याग करवो तथा अप्रमादि, धर्मव्यापारवंत, श्र-
वंत, तीव्रबोधथी अवितथ्य वचननुं भाषण करवुं, तथाविध मोहना अपगमथी
यप्रतीतवत, तथा कालादि विकलपणानी बाधाए अतिचारादिदोषने जाणता छतां
मा प्रकारे टाली न शकाय, ते शास्त्रयोग कहीए.

३ शास्त्रमां बतावेला उपायोने अतिक्रमिने अधिकशक्तिथी धर्मव्यापार योग था-
वो ते सामर्थ्य प्रतिज्ञा योग कहीए. सिद्धिपद प्राप्तिनां कारणो आ योगमां बहु छे,
तुं अतिक्रमण करे नहीं; शास्त्र थकीज सर्व अर्थ जाणे. सामर्थ्य प्रतिज्ञा योगथी,
सर्वज्ञपदप्राप्ति, सिद्धिपदसौख्यप्राप्ति, सकलप्रवचनपरिज्ञाप्राप्ति इत्यादि सर्वनो
क्षात् लाभ छे. सामर्थ्य योगना पण बे भेद छे १ धर्मसंन्यास २ योगसंन्यास.

धर्मसंन्यास ते मोहादिकक्षयोपशमरूप ते अने योगसंन्यास ते कायोत्सर्गकरणादिरूप ते आ बे प्रकारना सामर्थ्ययोग जाणवा. त्यां प्रथम धर्मसंन्यास सामर्थ्य योग प्रथमनी बीजे अपूर्व करणे होय. पहेलुं यथाप्रवृत्ति करणनी संज्ञा छे, तेथी अतिक्रान्त थयां सामर्थ्य योगनो बीजे अपूर्व करणे छे ग्रंथिभेदनुं निबंधन छे तेथी प्रथमनो त्याग कर्यो. उक्तं च. ॥ जागंठीतापढमं, गंठीसमइक्कमोअपुव्वंतु ॥ अनियट्टिकरणंपुण, सम्मत्तपुरक्खडे जीवे ॥ १ ॥ इति वचनात्

अपूर्व करण ते आत्मवीर्य शुभ परिणाम, अनादिकाळे अपूर्व अपूर्व उत्तरोत्तर परिणाम धर्म स्थानकने विषे होय ते धर्म संन्यास, बीजे अपूर्वकरणे करवाथी सम्यग् दर्शन, शमसंवेगादि लिंगरूप, आत्मपरिणाम. उक्तं. ॥ उवसमसंवेगनिव्वेअ, अणुकंपात्थिक्कलक्खणं ॥ पंचवि. सम्मत्तं, सम्मत्तलक्खणं ॥ इति ॥ तथा तत्वार्थे ॥ “ तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनं ” त्यार पछी यथाविध कर्म स्थितिने बे थी नव पल्योपम सागरोपम अतिक्रमे त्यारे प्रथम धर्म संन्यास सामर्थ्य योग होय. उक्तं च ॥ सम्मत्तंमि उलद्धे, कम्माणंपल्लपुहुत्तगंठिए ॥ जीवस्सक्खयउवसमं, पडिवज्जइ देसविरइं ॥ सम्मत्तंमिउलद्धे, पलियपहुत्तेणसावओहुज्जा ॥ चरणोवसमखयाणं सागरसंखंतरा हुंति ॥ आमाटे स्थिति भेद उपर जेम जेम वधे, तेम तेम आगळथी करण थकी ऊंचे वीर्योल्लासे शुभ स्थानक भजन ते सर्व धर्म संन्यास सामर्थ्य योग कहीए. आ पारमार्थिक तात्विक कहीए कोइक वेळाए प्रव्रज्या प्रतिपत्तिकाळे अतात्विक कारणके प्रव्रज्या सन्मुखता छे परंतु प्रव्रज्या आदरी नथी. माटे त्यां तत्वथी पण विशेष होय अने धर्मसंन्यास सामर्थ्य अधिकारी पण विरला होय. एम ए सिद्धान्तमां कह्युं छे

प्रव्रज्याधिकारी. आर्यदेशोत्पन्न, विशिष्ट जातिवंत, कुलवंत, क्षीणकर्मप्राय, सद्बुद्धि प्रपंच प्राप्त. क्षीण होय अने मनुष्यपणानो निमित्त दुर्लभ छे, मरण छे, विषय दुःखोनो हेतु छे, संयोग वियोग निमित्त छे. अने प्रतिक्षण मरण एवा दारुण विपाकवाळा संसारनुं अनेक प्रकारे निर्गुणपणुं जाणीने तेनाथी विरक्त होय, अल्प कषायी, अल्प हास्यादिवंत अल्पवेदोदयी, कृतज्ञ, विनीत, पूर्वावस्थामां राजामात्यादि बहुजनमान्य, अद्रोही, सुंदर अंगवंत, श्रद्धावंत, आराधक, ज्ञानयोगनो आराधक इत्यादि गुणोपेत मनुष्यने धर्मसंन्यास योग जाणवो.

योग संन्यास सामर्थ्य योग पारमार्थिक तात्विकरूपे- केवळज्ञानी

इत्यादि सर्वगुण क्षयोपशमपणे जेने उत्पन्न थया होय तेने, यावत् केवलज्ञान लाभ
ा शीलसुधी तथा तेज लाभ वेलाये शैलेसी अवस्थागत योग निरुंधन काले व-
ा होय, तेने होय.
त्रण योगमां प्रथम योग, चरमा कहेवाय छे अने ते जव्य मिथ्यादृष्टिने पण होय;
ाो योग सम्यग्दृष्टि, देशविरति प्रमुखने होय अने त्रीजो योग, दीक्षानी स-
त्र एवा जवविरक्त तथा अप्रमत्त यावत् अयोगी अवस्थावालासुधी पण होय. तेनो
ोप अधिकार योगदृष्टि समुच्चय ग्रंथथी जाणवो. अहीं लेशमात्रलख्यो छे.
ानुं दर्शन ते सामान्यमात्र ज्ञानावरणीयना क्षयोपशमे जाणवुं अने दृष्टि ते इहा-
विचारणाए अवधारवुं. दृष्टिनुं स्वरूप हवे कहीए छीए.

॥ ढाल पेहेली ॥

॥ चतुर सनेही मोहना ॥ एदेशी ॥

शिवसुखकारण उपदिशी ॥ योगतणी अडदिठीरे ॥ तेगुण
थुणीजिनवीरनो ॥ करशुं धर्मनी पुठीरे ॥ वीरजिनेसर देशना ॥ १ ॥

अर्थ ॥ शिवके० निरूपद्रव, अव्याबाध सुख तेना कारण के० हेतुवास्ते श्रीवीर
परमात्माए, योगनी आठ दृष्टि उपदेशी छे, ते श्रीवीरनागुणस्तवीने अमे धर्मनी पुष्टि
करशुं. श्रीवीर परमात्मा केवा छे ? यतः ॥ विदारयतियत्कर्म, तपसाचविराजते ॥ तपो
वीर्येण युक्तश्च तस्माद्वीर इतिस्मृतः ॥ १ ॥ वली धर्म केवो छे ? यथा ॥ दुर्गति प्रप-
तत्प्राणिधारणा धर्म उच्यते ॥ संयमादिदशविधः, सर्वज्ञोक्तो विमुक्तये ॥ १ ॥ अ-
था, अपरजाव व्यतिरिक्त, केवल वस्तु स्वजावपणुं, तेपण निरावरणपणे तथा सादि
अपर्यवसानपणे ते धर्म छे. एवी सामान्यपणे श्रीवीरनी देशना के० वाणी छे. ॥ १ ॥

सघन अघन दिनरयणिमां ॥ बालविकलने अनेरारे ॥ अर्थ
जुए जेम जुजुआ ॥ तेम ओघनजरनाफेरारे ॥ वीर० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेम सघन के० मेघ सहित दिवस अने अघन के० मेघ रहित दिवस,
ा दिवस तेम रात्रि अर्थात् मेघयुक्त दिवस रात्रि अने मेघ रहित दिवस रात्रि;
दिवसो अने रात्रिओमां पण जेद छे अने ते जेदने देखनाराओमां पण कोइ बाल-
ि, कोइ विकलदृष्टि अने अनेरा के० कोइ तरुण, वृद्ध, रोगी इत्यादि अनेक जेद
तेओ जेजे पदार्थने जुए तेमां ज्ञानावरणादि कर्मविचित्रताये सामान्य विशेषादिमां
ेक रीते फेरपडे; जूदाजूदा जाव देखे. ते सर्वओघ दृष्टिछे. ओघदृष्टि बहु जातनी छे॥२॥

धर्मसंन्यास ते मोहादिक्षयोपशमरूप छे अने योगसन्यास ते कायोत्सर्गकरणादिरूप छे आ बे प्रकारना सामर्थ्ययोग समस्त लाजप्रा छे,धर्म सन्यास सामर्थ्य योग प्रयमथी बीजे अपूर्व करणे होय एटले के र्य करणे यथाप्रवृत्ति करणनी सज्ञा छे, तेथी अधिकृत धर्म सामर्थ्य योग न बीजे अपूर्व करणे ते ग्रथिजेदनु निबधन छे तेथी प्रयमनो त्याग करी बीजु यत ॥ जागठीतापढम, गठीसमइक्कमेजवेबीअ ॥ अनिअहिकरणपुण, जीवे ॥ १ ॥ इति वचनात्

अपूर्व करण ते आत्मवीर्य शुज परिणाम, अनादिकाले अपूर्व अपूर्व ज तर परिणाम धर्म स्यानकने विषे होय ते धर्म सन्यास, बीजे अपूर्वकरणे थायी सम्यग् दर्शन,शमसवेगादि लिगरूप,आत्मपरिणाम यत । नुकपास्तिक्यलक्षणे ॥पचजि. सम्यक्, सम्यक्त्वमुपलक्ष्यते ॥इति "तत्वार्थश्रद्धान सम्यग्दर्शनं" त्यार पछी तथाविध कर्म स्थितिने छेदी सागरोपम अतिक्रमे त्यारे प्रथम धर्म सन्यास सामर्थ्य योग होय यत ॥ सुडुनेर्ज, करकघणरूढगूढगठिव ॥ जीवस्सकम्मजणिर्ज, घणरागदोस परिण सम्मत्तमिलक्ऊे, पलियपहुत्तेणसावर्जहुज्जा ॥ चरणोपसमखयाण, ॥२॥माटे स्यिति नेद उपर जेम जेम वधे, तेम तेम आयुंजी करण थकी यीयोंल्लासें गुण स्यानक जजन ते सर्व धर्म सन्यास सामर्थ्य योग कहीए, पारमार्थिक तात्विक कहीए कोइक वेलाए प्रव्रज्या प्रतिपत्तिकाले अतात्विक कारणके प्रव्रज्या सन्मुखतो छे परतु प्रव्रज्या आदरी नयी, माटे त्या ज्ञान पत्ति विशेष होय अने धर्मसन्यास सामर्थ्य अधिकारी नव विरक्त होय ऐ निश्चातमा कयु छे

प्रव्रज्याधिकारी, आर्यदेशोत्पन्न, विशिष्ट जातिवत, कुलमर्यादावत, अशुभ लबुद्धि प्रपच प्राय क्षीण होय अने मनुष्यपणानां निमित्त दुर्लज छे, संसा छे, विषय दुःखौघहेतु छे, संयोग वियोग मिलित छे, शरीर प्रतिक्षणे मरण एवा दारुण विपाकवाला ससारनु अनेक प्रकारे निर्गुणपणु जाणीने सहज रथी विरम्यो होय, अल्प कषायी, अल्प हास्यादिवत अल्पवेदोदयी, कृतज्ञ, परवासमा राजामात्यादि बहुजनमान्य, अद्रोही, सुदर अगवत, श्रद्धावत, आराधक, ज्ञानयोगनो आराधक इत्यादि गुणोपेत मनुष्यने धर्मसन्यास योग जाणवो

योग सन्यास सामर्थ्य योग पारमार्थिक तात्विकपणे, क्षपकश्रेणिगत योगी

त्यादि सर्वगुण क्षयोपशमपणे जेने उत्पन्न थया होय तेने, यावत् केवलज्ञान लाभ
ा शीखसुधी तथा तेज लाभ वेलाये शैलेसी अवस्थागत योग निरुंधन काले व-
ा होय, तेने होय.
अण योगमां प्रथम योग. चरमा कहेवाय ठे अने ते नव्य मिथ्यादृष्टिने पण होय;
ो योग सम्यग्दृष्टि, देशविरति प्रमुखने होय अने त्रीजो योग, दीक्षानी स-
व एवा नवविरक्त तथा अप्रमत्त यावत् अयोगी अवस्थावालासुधी पण होय. तेनो
ाप अधिकार योगदृष्टि समुच्चय ग्रंथथी जाणवो. अहीं लेशमात्रलख्यो ठे.
नुं दर्शन ते सामान्यमात्र ज्ञानावरणीयना क्षयापशमे जाणवुं अने दृष्टि ते इहा-
विचारणाए अवधारवुं. दृष्टिनुं स्वरूप हवे कहीए ठीए.

॥ ढाल पेहेली ॥

॥ चतुर सनेही मोहना ॥ एदेशी ॥

शिवसुखकारण उपदिशी ॥ योगतणी अमदिठीरे ॥ तेगुण
थुणीजिनवीरनो ॥ करशुं धर्मनी पुठीरे ॥ वीरजिनेसर देशना ॥ १ ॥

अर्थ ॥ शिवके० निरूपद्रव, अव्यावाध सुख तेना कारण के० हेतुवास्ते श्रीवीर
मात्माए, योगनी आठ दृष्टि उपदेशी ठे, ते श्रीवीरनागुणस्तवीने अमे धर्मनी पुष्टि
शुं. श्रीवीर परमात्मा केवा ठे? यतः ॥ विदारयतियत्कर्म, तपसाचविराजते ॥ तपो
र्यण युक्तश्च तस्माद्वीर इतिस्मृतः ॥ १ ॥ वली धर्म केवो ठे? यथा ॥ डुर्गति प्रप-
प्राणिधारणा धर्म उच्यते ॥ संयमादिदशविधः, सर्वज्ञोक्तो विमुक्तये ॥ १ ॥ अ-
ा, अपरजाव व्यतिरिक्त, केवल वस्तु स्वजावपणुं, तेपण निरावरणपणे तथा सादि
र्यवसानपणे ते धर्म ठे. एवी सामान्यपणे श्रीवीरनी देशना के० वाणी ठे. ॥ १ ॥

सघन अघन दिनरयणिमां ॥ बालविकलने अनेरारे ॥ अर्थ
जुए जेम जुजुआ ॥ तेम उंघनजरनाफेरारे ॥ वीर० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेम सघन के० मेघ सहित दिवस अने अघन के० मेघ रहित दिवस,
ा दिवस तेम रात्रि अर्थात् मेघयुक्त दिवस रात्रि अने मेघ रहित दिवस रात्रि;
दिवसो अने रात्रिउमां पण नेद ठे अने ते नेदने देखनाराउमां पण कोइ बाल-
ि, कोइ विकलदृष्टि अने अनेरा के० कोइ तरुण, वृद्ध, रोगी इत्यादि अनेक नेद
तेउ जेजे पदार्थने जुए तेमां ज्ञानावरणादि कर्मविचित्रताये सामान्य विशेषादिमां
नेक रीते फेरपके; जूदाजूदा नाव देखे. ते सर्वउंघ दृष्टिठे. उंघदृष्टि वहु जातनी ठे॥२॥

दर्शन जे थयांजुजुआ ॥ ते ओघनजरनेफेरेरे ॥ भेदथिरा
दिकदृष्टिमा ॥ समकितदृष्टिनेहेरेरे ॥ वीर० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ओघ नजरना फेरने अनुसारे षट् दर्शनना भेद जुदाजुदा थया ते दृष्टिनो अहीं अधिकार नथी अहींयातो योगनी आठ दृष्टिनो अधिकार छे, यत तारा बलादीसा, स्थिराकाता प्रभापरा ॥ नामानि योगदृष्टीना, लक्षणं तु ॥ १ ॥ ते आठ दृष्टिमा बोध–ज्ञान प्रकाश केवो होय ? ते कहे छे, यथा ॥ तृणगोमयकाष्ठाग्निकणदीपोपमप्रभा ॥ तारार्कचन्द्रभा रत्नसदृशी दृष्टिरष्टधा ॥ २ ॥ योगदृष्टि समुच्चये आवमा प्रथमनी चार दृष्टिसुधी मिथ्यादृष्टी, अने पाछली दृष्टि ग्रंथिभेदथी होय, अर्थात् थिरादृष्टिथी सम्यक्त्व छे अने ते दृष्टिने पण निरुद्ध घटे छे, परंतु आठेने योगदृष्टि केम कही ? तेनो एनो उत्तर ए छे चारदृष्टिमा सत्संगनो योग छे, तेमापण बीजा ध्यान करे छे तेथी तेउने पण दृष्टि कही

दर्शन सकलनानयग्रहे ॥ आपरहेनिज भावेरे ॥ हित
करीजननेसंजीवनी ॥ चारोतेह चरावेरे ॥ वीर० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे थिरादिक दृष्टिवंत प्राणी समस्त छए दर्शनना नयग्रहण करे, ए रूपणु राखे अने जगत् पोताना स्वभावमा स्यात् नित्यानित्यपणे वर्ते छे ते प्रवर्त्ते शुद्ध दृष्टिनो भंग करे नहीं भव्य जनने हितकारी शुद्धोपदेशरूप संजीवनी औषधीनो चारो चरावीने आपस्वरूप प्रगट करावे ते उपर उपनयसुक्त दृष्टांत, कोइ नगरमा कुलवान मनुष्य रहे छे तेने बे स्त्री छे एक प्रौढ, सुशील, विनीत बीजी वक्र छे वक्र स्त्री पोताना पतिसाथे कामक्रीडा करी दिवसे वृषभ बनावी निशाथी पतिने वृषभ बनावी खेतरमा मुके छे प्रौढ स्त्री स्वामिना प्रेमने लीधे स्वामिपासे रही, चारापाणीथी सार संभाल करे छे केटलाएक दिवसे विद्या- धरनी ते रस्तेथी विमानमा बेसी जता, वृषभने देखीने विद्याधरे पोतानी स्त्रीने कहे, आ स्त्री जे वृषभनी सेवा करे छे, ते तेनी प्रौढ पति छे अने ते वृषभनी नानी स्त्रीए पोताना पतिने वृषभ करेलो छे एवु चमत्कारिक वृत्तान्त सांभली विद्याधरनी स्त्रीए कह्यु, के एवो काइ योग छे, के जेथी आ वृषभ, पुरुष थाय ? विद्याधरे कह्यु वड समीपे जे औषधी छे, ते जो आ वृषभने चरावे तो ते पुरुष थइ जाय विद्याधरनी चाल्यो गयो प्रौढ स्त्रीए ते विद्याधरनी सर्व वात सांभळी अने ते वृक्ष नीचेथी प्रयत्न करी ते वटनी आसपासनी सर्व औषधी ग्रहण करीने तेनो चारो चराव्यो तेथी वृषभ पुरुष थयो प्रौढ स्त्रीनी सेवा भक्ति पतिए जाणी आ

ाय आप्रमाणे छे. पुरुष ते आत्मा; जेणे वृषन्न बनाव्यो ते अशुद्ध चेतना स्त्री; सेवाजक्ति करी ते शुद्ध चेतना स्त्री; विद्याधर ते गुरु; विद्याधरनी स्त्री ते दया-धर्मकरणी; वड ते मनुष्यगति; संजीवनी चारो ते सम्यग् दृष्टिपणुं, इत्यादि स-सामग्रीवंतने संजीवनीचारो चरावी यथास्थित नर्त्तार कर्यो. तेवी रीते शुद्ध नाने अनुवर्त्ततो सर्व गुणनुं नाजन थाय. एप्रमाणे थिरादिक चार दृष्टिनो धणी जीवने हितकारी उपदेश आपे ॥ ४ ॥

दृष्टिथिरादिक चारमां ॥ मुगति प्रयाणनन्नाजेरे ॥ रयणि
शयनजेमश्रमहरे ॥ सुरनरसुखतेमछाजेरे ॥ वीर० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ थिरादिक चार दृष्टिमां मुक्तिनुं प्रयाण के० गमन रोकाय नही, कारणके ष्टिवंत प्राणी प्रायः प्रतिपाति न होय. जेम वांछित नगरे प्रयाण करतां, वचमां विश्राम लइए अने तेथी जेम श्रम के० थाक दुर थाय अने इछित नगरे सुखेथी चाय तेम सम्यग् दृष्टिप्राणीने मुक्ति जतां वचमां सुवाहु कुंवर तथा श्रीपाला जेम देव मनुष्यना नव करवा पडे, परंतु मुक्ति पुरे अवश्य पहोंचाय ॥ ५ ॥

एह प्रसंगथी में कह्युं ॥ प्रथमदृष्टि हवे कहीएरे ॥ जिहां
मित्रातिहां बोधजे ॥ ते तृण अगनिसोलहीएरे ॥ वीर० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त सर्व प्रसंगथी कह्युं, ते योगदृष्टि तथा ओघदृष्टि सामान्य रीते सर्व ारी जीवनी वर्णवी. दृष्टि के० देखवुं, जाणवुं ते ज्ञानावरणीयना क्षयोपशम आश्री पण तेनो अहीं अधिकार नथी. अहीं तो मित्रादि आठ दृष्टिनो अधिकार छे, तेमां म मित्रा दृष्टिनां लक्षण, क्रिया तथा बोध कहीए छीए. सत् श्रद्धावंतना संगथी त् प्रवृत्ति नही करतां, सत् प्रवृत्ति करवी; अने ज्ञाननो बोध होय, तेथी ते दृष्टि वाय. ज्यां मित्रादृष्टि होय त्यां मिथ्यात्व दर्शननी मंद स्थिति तथा मंद रस होय । तृणना अग्नि सरखो अल्प बोध होय ॥ ६ ॥

व्रतपणइहांयमसंपजे ॥ खेदनहींशुनकाजेरे ॥ द्वेष
नहीं वली अवरशुं ॥ एहगुणअंगविराजेरे ॥ वीर० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टिने विषे पांचयम प्राप्त थाय. १ अहिंसा २ सत्य ३ अस्तेय ४ ब्र-ार्य ५ अपरिग्रह, आ पांच यम छे. वली शुन्न कार्य जेमके दान, दया, देवगुरुनी नक्ति ादिमां खेद वा आलस न थाय. वली बीजा दर्शनीओना तथा प्रकारना देखीने । न उपजे. एप्रमाणे सत् प्रवृत्तिनागुण, असत् प्रवृत्तिनुं निवारण करवाथी प्रगटे. ांच महाव्रत ते पांच यम छे. २ शौच संतोषादि पांच नियम छे. ३ योग, पद्म इ-

स्यादि आसन ४ पवननु रुधन ते प्राणायाम ५ इंद्रियोने विषयोमां
प्रत्याहार ६ शुद्ध वस्तुनो यथार्थ निरधार ते धारणा ७ ध्येयनुज चिंतवन
८ ध्येयनो तन्मयपणे अनुजव ते समाधि ए अष्टांग योग प्रवृत्ति ठे ॥ ७ ॥

योगनांबीज इहाग्रहे ॥ जिनवरशुद्धप्रणामोरे ॥ जावा
चारजसेवना ॥ जवउद्वेगसुठामोरे ॥ वीर० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वली बीजी पण अष्टांगयोग प्रवृत्ति ठे १ अद्वेष २ जिज्ञासा ३ शुश्रू
श्रवण ५ बोध ६ मीमांसा ६ परिशुद्धि ८ अप्रतिपत्ति इत्यादि योगना बी
मां ग्रहण करे नाम, स्थापना, द्रव्य अने जाव एवा चार निक्षेपे जिने
प्रणाम करे सूत्रोक्त प्रवृत्तिए प्रवर्त्तनारा, पचाचारने यथार्थ पालनारा
पक एवा जावाचार्यनी सेवना करे अने जवोद्वेग के० संसारथी उदासी
मोक्षप्राप्ति करावे ठे, एम जाणे ॥ ८ ॥

द्रव्य अजिग्रह पालवा ॥ उंपधप्रमुखने दानेरे ॥ आदर
आगम आसरी ॥ लिखनादिक बहुमानेरे ॥ वीर० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ ग्रथिनेदविना जाव अजिग्रह होय नहीं, तेथी द्रव्यअजिग्रह
पाले, अर्थात् औषध, वस्त्र, पात्र प्रमुख देवाना अजिग्रह आदर-सत्कार
विधिने अनुसारे साधु-मुनिराजने उचित होय ते आपे तथा बहुमान पूर्वक
लखाववा प्रमुख उद्यम करावे ॥ ए ॥

लेखन पूजन आपवु ॥ श्रुतवाचना उद्ग्राहोरे ॥ जाव
विस्तार सझायथी ॥ चिंतनजावनचाहोरे ॥ वीर० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ सिद्धांत लखाववामां तथा वीतरागना बिंबोना पूजनमां द्रव्यादि
आपवाने सावधान होय, वली सन्मार्ग प्ररुपक श्रुत के० सिद्धांतनी वाचनानो
ग्राही के० योग मेलववा उद्यम करे, वली स्वाध्याय ते वाचना प्रमुख पांच
करी जाव विस्तार के० जाव आस्थादिकना कारणो वधारे, अने तेनु चिंतवन
जावनानी चाहना करे ॥ १० ॥

बीजकथाजलीसाजली ॥ रोमांचितहुवे देहरे ॥ एह
अवंचकयोगथी ॥ लहीए धरम सनेहरे ॥ वीर० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ संवेग जावनी यथास्थितता, शम, संवेग, सत्प्रवृत्तिलक्षण रूप श्रद्धा,
परोपकारकरण, उ खितानुकंपा, सत्शीलानुचरण, औदार्य, धैर्य, गांभीर्य

।० योगांग कथा श्रवण करीने हर्षोत्कर्षयुक्त रोमांचित शरीर थाय. एवा प्रशस्त (संयोग मलवाथी, सदभ्यास करवा करावनानां साधन मलवाथी योगनुं अवंचक- तेने प्राप्त थाय. तेथी ते प्राणी विपक्रिया वांछे नहीं, क्रिया निष्फल करे नहीं, तें चक योग समजवो. ते अवंचक योग पामीने परमोत्कृष्ट धर्मस्नेह पामे. मनस विचारे, के आ लाभ दुष्कर पणे पाम्यो हुं ॥ ११ ॥

सद्गुरुयोगेंवंदनक्रिया ॥ तेहथीफलहोयजेहोरे ॥ योग
क्रियाफलभेदथी ॥ त्रिविध अवंचकएहोरे ॥ वीर० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ उत्तम गुरुनो योग पामीने वंदन क्रिया व्यवहारविधिपूर्वक साचवे, तेथी फल थाय ते आ प्रमाणे छे. मनने विशुरूपणे प्रवर्त्तावबुं ते योग अवंचक कहिए । वचन अने कायाने निरवद्यपणे प्रवर्त्तावबां ते क्रिया अवंचक कहिए. ते प्र- णे करवाथी मिथ्यात्व तथा विषय कषायादिकनी हीनताए शुभगति प्रमुख फल ।, ते फल अवंचक कहीए. आ त्रणप्रकारना अवंचक योग ते प्राणीने होय. य- रे आ त्रण अवंचक योग साधुने उद्देशीने होय, परंतु अवक्र सामायिकें तथा अ- प्रयुक्त भावसमाधिपणे द्रव्यथी ए होय छे ॥ १२ ॥

चाहेचकोरतेचंदने ॥ मधुकरमालतीभोगीरे ॥ तेमभवि
सहजगुणेहोये ॥ उत्तमनिमित्तसंयोगीरे ॥ वीर० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जेम चकोर पक्षी चंद्रनी चाहना करे अने जेम भ्रमर मालतीनां पुष्पनो गी होय तेम आ भव्य प्राणीने यद्यपि मोहनो क्षयोपशम नथी, तथापि उत्तम के० ान जे शुभ निमित्तो तेनो संगी थाय, एवो सहज गुण होय ॥ १३ ॥

एह अवंचक योगते ॥ प्रगटे चरमावर्त्ते रे ॥ साधुने
सिद्धदशासमुं ॥ वीजनुं चित्त प्रवर्त्तेरे ॥ वीर० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एवा अवंचक योग ज्यारे चरम पुद्गल परावर्त्त संसार बाकी रहे, त्यारे उपजे. पण केटलाएक प्राणी जे क्रियायोगी होय तेउने होय, अने साधुउने तो सिद्ध वस्था समान परमानंद आपनार होय. आ मित्रादृष्टिमां वर्त्तना प्राणीने, वीज जे गना अंग, समता औदार्य प्रमुख, ते ग्रहण करवाने प्रयत्नवालुं चित्त होय ॥ १४ ॥

करणअपूर्वनानिकटथी ॥ जे पेहेलुं गुणठाणुंरे ॥ मुख्य
पणेतेइहांहोये ॥ सुयशविलासनुंठाणुंरे ॥ वीर० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ अहिं वेला यथाप्रवृत्ति करणना निकट के० समीपपणाथी स्थिति तथा र-

समां मंदपणे मिथ्यात्वगुणठाणे ते प्रवर्त्ते वली शिवराजराजर्षिप्रमुखनी पूर्वे व
हती, तेवी मुख्यपणे अहीं होय. वली ते उत्तम यशना विलासनु टाणुंके०
साराशके अजव्य, दुर्जव्य, बहुपुजलपरावर्त्तनवाला शठ, हठकदाग्रही,
वेशी, गुरु आशातनावालाने आ दृष्टि न होय ॥ १५ ॥ इतिप्रथम मित्राद्दृ

॥ ढाल बीजी ॥

॥ मनमोहनमेरे ॥ एदेशी ॥

दर्शनताराहृष्टिमां ॥ मनमोहनमेरे॥ गोमयअग्निसमान ॥ म० ॥
शौचसतोषने तपजलुं ॥ म० ॥ सजाय ईश्वरध्यान ॥म०॥ १॥

अर्थ ॥ हवेताराहृष्टिनोविचार कहेछे मित्राहृष्टि करता ताराहृष्टिमां मिथ्यात्व
मंद होय तथा बोध केवोहोय ते कहे छे मिथ्यात्व विशेष मद होय अने
के० ठाणानी अग्नि समान होय जेम ठाणानो अग्नि धीमे धीमे वधे, तेम
जाय, अर्थात् कांइक कार्यसाधक थाय तेथी शौच के० मननिर्मल रहे
प्राप्तवस्तुथी विशेष तृष्णा न राखे, इछानुरुधनकरे सजायके०
करेअने ईश्वरध्यानके० परमात्मानु ध्यानकरे आत्महित चिंतवे अने
अकार्य सेवीश तो डुर्गति पामीश ॥ १ ॥

नियमपचइहासपजे ॥ म० ॥ नहीं किरिआउद्वेग ॥ म० ॥
जिज्ञासागुणतत्वनी ॥ म० ॥ पणनहीनिजहठटेग ॥ म० ॥ २॥

अर्थ ॥ आदृष्टिमा पूर्वोक्त पांचनियम उपजे मोटी क्रियामा अखेदपणे
परलोकहितार्थं कामकरता उद्वेग न पामे वली तत्त्वगुणके० शुद्धगुण
जिज्ञासाके० चाहनाहोय, तथा करण, करावण, अनुमोदनरुप निर्विकारपणु होय
पोताना हठकदाग्रहनो टेक विशेषपणे नज होय ॥ २ ॥

एहदृष्टिहोयवरतता ॥ म० ॥ योगकथाबहुप्रेम ॥ म० ॥
अनुचिततेहनआचरे ॥ म० ॥ वाल्योवलेजेमहेम ॥ म० ॥ ३॥

अर्थ ॥ आदृष्टिमा वर्त्ततो प्राणी अष्टांग योगादिकनी कथामा बहुप्रेम
योगशुद्धि, क्रियाशुद्धिमा प्रवर्त्ती फलशुद्धि करे अर्थात् जेथकी परलोक सबध
हित थाय तेवु अनुचित कार्य करेनहीं वली ते प्राणीने कोइ हितशिक्षाम
तेनी साथे सुवर्ण जेमवाल्यु, वले तेनीजेमसरलताराखे ॥ ३ ॥

विनयअधिकगुणीनोकरे ॥ म० ॥ देखेनिजगुणहाण ॥ म० ॥
त्रासधरे जवजयथकी ॥ म० ॥ जवमानेदु खखाण ॥ म० ॥ ४॥

अर्थ ॥ पोतार्थी अधिकगुणवंतनो विनयकरे अने पोतेविशेष गुणीहोयतोतां पोतामां नना मावे, अर्थात् अहंकृति वा निजउत्कर्ष नकरे. वली चतुर्गतिरूप संसारने दुः नी खाणदेखीने तेना नयथी त्रास पामे. यतः ॥ जम्म दुक्खं जराडुक्खं, रोगाणि णाणिय ॥ अहोदुःखेहु संसारे. जथ्थर्यार्कि संतिजंतुणो ॥ ४ ॥

शास्त्रघणांमतिथोमडी ॥ म० ॥ शिष्टकहेतेप्रमाण ॥ म० ॥
सुयगलहेएजावथी ॥ म० ॥ नकरेजूठमफाण ॥ म० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ शास्त्र घणांछे अने पोतानी मति के० बुद्धि अल्पछे, माटे शिष्ट महानगुरु हे ते वचन प्रमाणकरे. सम्यग् रीतेमन, वचन, कायाए कारण,करावण अनुमतिरुपे विकारीपणुं होय. तेप्रमाणे विशिष्ट जावना जावतो थको सुयशके० निर्मल कीर्त्तिपामे. अछतागुणोनो जुठो के० असत्य मफाण के० आमंबर करे नही. शुजयोग कथामां ।ति राखे ॥ ५ ॥ इति तारादृष्टि विचार.

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ प्रथम गोवालतणे जवे जीरे ॥ ए देशी ॥

त्रीजीदृष्टिवलाकहीजी॥ काष्टअग्निसमबोध ॥ क्षेपनहीआसनसधेजी॥
श्रवणसमीहासोधरे ॥ जिनजी ॥ धनधनतुजउपदेश ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे वला नामनी त्रीजीदृष्टि वर्णवेछे. आदृष्टिमां सुखासने बेठेलानीजेम स्थिरचित्तहोय. देववंदन, गुरुवंदन,आवश्यकादि कार्य अनुकूलपणे करे,यद्यपिमिथ्याद नछे तोपण मिथ्यात्वनी बहुजमंदताहोय, अर्थात् मिथ्यात्वीउना भ्रान्तिरुप चमत्का रिक ज्ञान देखीने चपलपरिणामवालो नथाय. आदृष्टिमां शास्त्रश्रवणथी काष्टना अग्नि सरखो दृढबोध होय. वली क्रियाउनुं अन्योन्य मिश्रणकरवुं तेक्षेपदोष कहेवाय, ते क्षेप दोष नहोय, पर्यंकासनादि योगासनने साधे. सिद्धांत श्रवण करवानी समीहाके० ।नइच्छाकरे. तेवी इच्छाने सोधके० साधे हे,जिनजी! तमारा उपदेशने धन्य छे, एवो स्कार करे, अने पोताना आत्माने धन्य माने ॥ १ ॥

तरुणसुखीस्त्रीपरिवर्योजी ॥ जेमचाहेसुरगीत ॥ सांजलवा
तेमतत्त्वनेजी ॥ एदृष्टिसुविनीतरे ॥ जिन० ॥ धन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेम कोई तरुण के० युवान पुरुष धनाढ्य सुखी होय, वली सुंदर स्त्रीए युक्त होय, ते जेम देवगांधर्वनां गीत–गायन श्रवण करवानी चाहना करे, तेवीरीते आ दृष्टिवंत प्राणी तत्त्व ज्ञान श्रवण करवानी चाहना करे. तेवीज रीते वली आ दृ- ष्टिवाला विनयवंत पण होय ॥ २ ॥

जनो संग्रह करे, परंतु ए चारे दृष्टि ए अवेद्य पद ठे अर्थात् सूक्ष्म
जेम पक्षीनी ठाया पाणीमां पमतां पाणी पण तेवीज प्रवृत्ति करे, तेवी रीते
दृष्टिमां पण तेवीज प्रवृत्ति होय, सूक्ष्म तत्त्व बोध न होय ते अवेद्य पद
ठे अवेद्य पद एटले ज्यां अतर मुहूर्त्त प्रमाण मात्रमां दर्शन मोहनीयनो
रूप ग्रंथि नेद करे,एवु आत्मानु पंडित वीर्य स्फुरे नहीं ते पद सम

थिरादिक चार दृष्टिमां वेद्य संवेद्य पद ठे. वेद्य के० जे सूक्ष्म बोध, सम
ठे, अर्थात् मिथ्यात्व क्षय ठतां यद्यपि ठेल्ली पाप प्रवृत्ति नरकादि गमन रू
दिकनी जेम तप्तलोहपदस्पर्शप्रवृत्ति सरखी होय, परंतु ते वेद्य संवेद्य-
बोध सहित आत्म पंमित वीर्यनुं स्फुरण मिथ्यात्वादिकना क्षयथी होय ॥

वेद्यबंधशिवहेतुठेजी ॥ सवेदनतसनाण ॥ नय
निदेपेंअतिनलुंजी ॥ वेद्यसंवेद्यप्रमाण ॥ मन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेथी वेद्य पदनो बंध ते शिवके० मोक्षनो हेतु ठे, संवेदन पद ते
ठे नैगमादि सप्तनय, नामादि चारनिक्षेपा, स्यादस्ति आदि सात नंग
एटले सरखा पाठ, इत्यादिकथी अति निर्मल एवु वेद्य संवेद्य पद प्रमाण

तेपदग्रंथिविन्नेदथीजी ॥ ठेहेलीपापप्रवृत्ति ॥ तप्तलोह
पदधृतिसमीजी ॥ तिहांहोयअंतनिवृत्ति ॥ मन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ते वेद्य संवेद्य पद, दर्शन मोह नाशथी ग्रंथिनेदें उपजे, तेथी
अतत्त्ववासना मटे संसारमां ठेल्ली पाप प्रवृत्ति, ते अग्निनीए तप्त एवा लोह
माडवाना धैर्य समान अनर्थनीकरनारी एवी पाप प्रवृत्ति लागे अते ए
पण अहीं निवृत्ति थाय ए वेद्य संवेद्य पदनु लक्षण जाणवु ॥ ७ ॥

एहथकीविपरीतठेजी ॥ पदतेअवेद्यसवेद्य ॥ नवा
निनंदीजीवनेजी ॥ तेहोयवज्रअनेद्य ॥ मन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वेद्य संवेद्य पदथी विपरीत लक्षणवालु पद ते अवेद्य संवेद्य, ते
थ्यात्व होय अने सूक्ष्म बोध न होय, आ चार दृष्टिमां दर्शनमोहनीयनो
शम, ग्रंथि नेद न होय तेथी नवानिनंदीके० संसारना सुखमा अतिशय
प्राणीने अवेद्य संवेद्य पद होय वज्रनी जेवु एअनेद्य ठे अनादि कालथी ठे

लोनीकृपणदयामणोजी ॥ मायीमच्छरठाण ॥ नवा
निनंदीनयनर्योजी ॥ अफलआरंनअयाण ॥ मन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ लोजी के० सर्वत्र याचक, धनछतां अजोगी, कृपण के० द्रव्यादिक न आ
र, तुच्छ प्रकृतिवालो, दयामणो के० सर्वनुं अहित इच्छनार, मायी के० कपटी,
स्वार्थ साधक, मछर के० परसुखे दुःखी, जवाजिनंदी, जयजयोंके० सहुथी जय
तो रेहेनार अने अयाण के० अज्ञान, आ आठ दोपवाला अर्थात् आ आठ दोष
मां विद्यमान छे ते प्राणी धर्मनो आरंज करे, ते जो सत्य होय तो पण कुशला
नी जेम तेनुं निष्फल थाय ॥ ए ॥

ऐहवा अवगुणवंतनुंजी ॥ पदछे अवेद्य कठोर ॥ साधु
संग आगमतणोजी ॥ तेजीत्यो धुरंधोर ॥ मन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त दोपवालांने अवेद्य पद कठोर के० बहुज आकरूं होय छे, तेथी ते
ीने ग्रंथिनेद न थाय, त्यां सुधी तेने सूक्ष्मबोध पण न थाय. परंतु साधुनो संग
सिद्धांतनुं श्रवण, आ वेहेतु मलवाथी ते धुर के० प्रथम धोर के० महामोहनीय
जयमेलवे ॥ १० ॥

ते जीते सहजें टलेजी ॥ विषमकुतर्कप्रकार ॥ दूर
निकटहाथीहणेजी ॥ जेमऐवछरविचार ॥ मन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ ते मोहनीयने जीतवाथी विपम के० आकरा माठा तत्त्वना विचाररूप
र्क सेहेजे टली जाय. जेम वे वछर के० अज्ञानी, मूर्ख हता, तेछने हाथी उपर
ला मावते कह्युं के तमे दूर रहो, नहीं तो हाथी तमने मारी नांखशे. ते सांजली ते
वछरे विचार कर्यो के हाथी प्राप्त थयेलाने हणे छे के अप्राप्तने हणे छे? जो प्रा-
हणे छे, तो मावतने हणे अने अप्राप्तने हणे तो आवनारने हणे छे, एवो विचार
छे, तेटलामां हाथी आव्यो, अने ते बंनेने हणी नांख्या. आवा कुतर्कवाला
ार सहेजे टली जाय ॥ ११ ॥

हुंपाम्योसंशयनहींजी ॥ मूरख करे ऐ विचार ॥ आलसु
आगुरुशिष्यनोजी ॥ ते तोवचनप्रकार ॥ मन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हुं तत्त्वज्ञान पाम्यो छुं, तेमां कांइ संशय नथी, एवा विचार मूर्ख होय
करे. जेम आलसु गुरु अने आलसु शिष्य बंनेने परस्पर अनेक वचनना वाद
ं स्वाध्यायमां आवीशक्या नहीं, तेनी जेम ते वावत समजवी ॥ १२ ॥

धीजेतेपति आववुंजी ॥ आपमतें अनुमान ॥ आगम
ने अनुमानथीजी ॥ साचुंलदे सुज्ञान ॥ मन० ॥ १३ ॥

सामग्री ते द्रव्य योगनुं घर ठे ते अशठ पक्ति तथा अमायीनेज होय मुनिने कघडा प्रमुखनो अभ्यास नज होय ॥ २२ ॥

अभिनिवेशसघलोत्यजीजी ॥ चारलहीजेणेदृष्टी ॥ ते
लेशेहवेपंचमीजी ॥ सुयशअमृतघनदृष्टि ॥ मन० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ अभिनिवेश के० कदाग्रह, मात्सर्य इत्यादि सर्व दोष तजीने जेणे चारदृष्टिर्ठ प्राप्तकरी ते प्राणी पांचमी थिरादृष्टि पामे. ते दृष्टि केवी ठे? सर्व प्रवर्त्तनारा उत्तम यशरूप अमृतने वधारवाने घन के० मेघनी वृष्टि समान तम स्वामीना पन्नरसे तापसना पारणानी जेम वृद्धि करनार ठे आचार ... भेद नही परतु सत्संगति अने सदाचार प्रवृत्ति होय ॥ इति दीप्रा ...

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ धन धन सम्प्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

दृष्टिथिरामांहेदर्शननित्ये ॥ रतनप्रजासमजाणोरे ॥
भ्रातिनहीवलीबोधतेसूक्ष्म ॥ प्रत्याहारवखाणोरे ॥ १ ॥
एगुणवीरतणोनविसारूं ॥ संजारूंदिनरातरे ॥ पशु
टालीसुररूपकरेजे ॥ समकितने अवदातरे ॥ए गुण० ॥ २॥

अर्थ ॥ हवे पाचमी थिरादृष्टि कहे ठे थिरा दृष्टिमा ग्रथिभेद थवाथी दर्शन नित्य होय बोध ते रत्ननी कान्ति समान होय भ्रान्ति लेशमात्र न होय स्वार्थरूप सूक्ष्म बोधनु यथार्थ ज्ञान होय अज्ञान अने मिथ्यात्वना पुद्गलो दाता होय ते ठेदाय सरल बुद्धि होय सर्व इन्द्रियार्थ विषयोना रूधन रूप प्रत्याहार प्रगट थाय ॥ १ ॥ आवो मोटो श्रीमहावीर स्वामीनो गुण हु चित्तथी विसारु नहीं दिनरात निरतर सभारू, कारणके मारा इन्द्रियार्थ गुणो विषयार्थ हता, पशु हता, तेने टालीने सुररूप के० तत्त्वबोधवंत कर्या दर्शन मोहना विनाशथी सम्यक् गुण प्रगट थयो ॥ २ ॥

बालधुलिघरलीलासरखी ॥ भवचेष्टाइहांजासेरे ॥ रिद्धि
सिद्धिसविघटमापेसे ॥ अष्टमहासिद्धिपासेरे ॥ ए गुण० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ जेम बालकोए करेली धुलिना गृहनी लीला परमार्थे गृहरूप सत्य नथी तेम आ दृष्टिमा वर्त्तता प्राणीने ससारनी सर्व चेष्टा,पुद्गल विलास तेवा ... थात् सत्य लागता नथी आवीरीते ससारनी अनित्यता जाणवाथी अतरगनी ...

ऊ तेना घटमांज प्रगट थाय. संतोषरूप महासुखोत्पादक गुण प्रगटे. अष्ट मसिद्धि तेनी पासेज रहे. समस्त लब्धिनी सिद्धि ते योगरूप कल्पवृक्षनां कुसुम स माने ॥ ३ ॥

अहीं अष्ट महासिद्धिनुं वर्णन करे छे. १ महिमा के० शरीरादिकने मेरू पर्वत तां पण मोटां करवानी शक्ति. २ लघिमा के० शरीरादिकने वायु करतां पण लघु वानी शक्ति. ३ गरिमा के० तेउने वज्र थकी पण अत्यंत नारे करवानी शक्ति. ाप्ति के० नूमिए रह्यावतां अंगुलने मेरूना शिखरे पहोंचाडवानी शक्ति. ५ प्रान्य के० पाणीने विषे पण पृथ्वीनी जेम गमनादि करवानी शक्ति. ६ ईशिता के० ोक्य रीद्धि करण तथा तीर्थंकरादि रीद्धि विकुर्वण शक्ति. ७ वशिता के० सर्व जीवश करवानी शक्ति. ८ अप्रतिघात के० पर्वतमां पण प्रवेश करवानी शक्ति.वलि उपरांत अंतर्धान, अदृश्य करण, नानारूप करण इत्यादि अनेक चमत्कारिक के प्रगट थाय.

विषयविकारेंनइंद्रियजोमे ॥ तेइहांप्रत्याहारोरे ॥ केवल
ज्योतितेतत्त्वप्रकाशे ॥ शेषउपायअसारोरे ॥ ए गुण० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ शब्दादि त्रेवीश विषयना वसे बावन विकारोमां इंद्रियोने जोडे नहीं. ात् आसक्त न करे ते रूप जे प्रत्याहार गुण ते आ दृष्टिमां उपजे. ते प्राणीनी ति मात्र तत्त्व रहस्यनेज प्रकाश करे, अर्थात् ते तत्त्वज्ञाननेज साररूप माने अने े संसारना बीजा सर्व उपाय के० प्रपंचने असार माने ॥ ४ ॥

शीतलचंदनथीपणउपन्यो ॥ अग्निदहेजेमवननेरे ॥ धर्म
जनितपणनोगइहांतेम ॥ लागेअनिष्टतेमनरे ॥ ए गुण० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ ते उपर दृष्टांत कहे छे. जेम बावना चंदन अत्यंत शीतल छतां तेमांथी उ थयेलो अग्नि वनना सर्व वृक्षने बाले छे, तेम न्यायसंपन्न वैजवथी तथा एकीव्रतादिकथी गृहस्थ धर्मनी सेवना करे छे, तोपण ते प्राणीने ते नोगादिकनी ना मनमां अनिष्ट लागे. अवसर प्राप्त थतां नोगादिकनो त्याग करवामां लेग वार लगाडे नहीं. गृहस्थावासने पाश समान माने ॥ ५ ॥

अंशेहोयइहांअविनाशी ॥ पुजलजालतमासीरे ॥ चिदा
नंदघनसुयशविलासी ॥ केमहोयजगनोआशीरे ॥ ए गुण० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टिमां अंशे के० थोडे नागे अविनाशी थाय. जेम जेम आश्रवना ा न्यून थाय, तेम तेम आत्मा निरावरणी थाय. पुजलनी सर्व रचनाने बाजीग-

सामग्री ते द्रव्य योगनुज घर छे. ते अशठ पंडित तथा अमायीनेज होय मुनिने कषडा प्रमुखनो अभ्यास नज होय ॥ २२ ॥

अभिनिवेशसघलोत्यजीजी ॥ चारलहीजेणेदृष्टी ॥ ते
लेशेहवेपंचमीजी ॥ सुयशअमृतघनदृष्टि ॥ मन० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ अभिनिवेश के० कदाग्रह, मात्सर्य इत्यादि सर्व दोष तजीने चारदृष्टिने प्राप्तकरी ते प्राणी पांचमी थिरादृष्टि पामे ते दृष्टि केवी छे? सर्व प्रवर्त्तनारा उत्तम यशरूप अमृतने वधारवाने घन के० मेघनी वृष्टि समान तम स्वामीना पद्मरसे तापसना पारणानी जेम वृद्धि करनार छे आचार भेद नहीं परंतु सत्संगति अने सदाचार प्रवृत्ति होय ॥ इति दीक्षा

॥ ढाल पाचमी ॥

॥ धन धन संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

दृष्टिथिरामांहेदर्शननित्ये ॥ रतनप्रजासमजाणोरे ॥
भ्रांतिनहीवलीबोधतेसूक्ष्म ॥ प्रत्याहारवखाणोरे ॥ १ ॥
एगुणवीरतणोनविसारू ॥ संभारूंदिनराततरे ॥ पशु
टालीसुररूपकरेजे ॥ समकितने अवदाततरे ॥ए गुण० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे पाचमी थिरादृष्टि कहे छे थिरा दृष्टिमा ग्रंथिभेद थवाथी दर्शन नित्य होय बोध ते रत्ननी कान्ति समान होय भ्रान्ति लेशमात्र न होय स्वार्थरूप सूक्ष्म बोधनु यथार्थ ज्ञान होय. अज्ञान अने मिथ्यात्वना पुद्गल दाता होय ते छेदाय सरल बुद्धि होय. सर्व इन्द्रियार्थ विषयोना रूंधन रूप हार प्रगट थाय ॥ १ ॥ आवो मोटो श्रीमहावीर स्वामीनो गुण हु विसरी नहीं, दिनरात निरंतर संभारू, कारणके मारा इन्द्रियार्थ गुणो विषयार्थ हता, पशु हता, तेने टालीने सुररूप के० तत्त्वबोधवंत कर्या दर्शन मोहना विनाशथी गुण प्रगट थयो ॥ २ ॥

बालधुलिघरलीलासरखी ॥ भवचेष्टाइहाजासेरे ॥ रिद्धि
सिद्धिसविघटमापेमे ॥ अष्टमहासिद्धिपासेरे ॥ एगुण० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ जेम बालकोए करेली धुलिना घरनी लीला परमार्थ ग्रहरूप सत्य तेम आ दृष्टिमा वर्त्तता प्राणीने संसारनी सर्व चेष्टा,पुद्गल विलास ते पांतु सत्य लागता नथी आवीरीते संसारनी अनित्यता जाणवाथी अनरगती

द्धि तेना घटमांज प्रगट थाय. संतोपरूप महासुखोत्पादक गुण प्रगटे. अष्ट महासिद्धि तेनी पासेज रहे. समस्त लब्धिनी सिद्धि ते योगरूप कल्पवृक्षनां कुसुम एम माने ॥ ३ ॥

अहीं अष्ट महासिद्धिनुं वर्णन करे छे. १ महिमा के० शरीरादिकने मेरू पर्वत तां पण मोटां करवानी शक्ति. २ लघिमा के० शरीरादिकने वायु करतां पण लघु वानी शक्ति. ३ गरिमा के० तेउने वज्र थकी पण अत्यंत जारे करवानी शक्ति. प्राप्ति के० नूमिए रह्याछतां अंगुलने मेरूना शिखरे पहोंचाडवानी शक्ति. ५ प्राम्य के० पाणीने विपे पण पृथ्वीनी जेम गमनादि करवानी शक्ति. ६ ईशिता के० लोक्य रीद्धि करण तथा तीर्थंश्वरादि रीद्धि विकुर्वण शक्ति. ७ वशिता के० सर्व जीव वश करवानी शक्ति. ८ अप्रतिघात के० पर्वतमां पण प्रवेश करवानी शक्ति.वलि उपरांत अंतर्धान, अदृश्य करण, नानारूप करण इत्यादि अनेक चमत्कारिक के प्रगट थाय.

विपयविकारेंनइंद्रियजोमे ॥ तेइहांप्रत्याहारोरे ॥ केवल
ज्योतितेतत्त्वप्रकाशे ॥ शेपउपायअसारोरे ॥ ए गुण० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ शब्दादि त्रेवीश विपयना वसे बावन विकारोमां इंद्रियोने जोडे नहीं. र्थात् आसक्त न करे ते रूप जे प्रत्याहार गुण ते आ दृष्टिमां उपजे. ते प्राणीनी ति मात्र तत्त्व रहस्यनेज प्रकाश करे, अर्थात् ते तत्त्वज्ञाननेज साररूप माने अने संसारना बीजा सर्व उपाय के० प्रपंचने असार माने ॥ ४ ॥

शीतलचंदनथीपणउपन्यो ॥ अग्निदहेजेमवननेरे ॥ धर्म
जनितपणनोगइहांतेम ॥ लागेअनिष्टतेमननेरे ॥ ए गुण० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ ते उपर दृष्टांत कहे छे. जेम बावना चंदन अत्यंत शीतल छतां तेमांथी उत्पन्न थयेलो अग्नि वनना सर्व वृक्षने बाले छे, तेम न्यायसंपन्न वैजवथी तथा एकव्रतादिकथी गृहस्थ धर्मनी सेवना करे छे, तोपण ते प्राणीने ते जोगादिकनी ना मनसां अनिष्ट लागे. अवसर प्राप्त थतां जोगादिकनो त्याग करवामां लेशमात्र वार लगाडे नहीं. गृहस्थावासने पाश समान माने ॥ ५ ॥

अंशेहोयइहांअविनाशी ॥ पुद्गलजालतमासीरे ॥ चिदा
नंदघनसुयशविलासी ॥ केमहोयजगनोआशीरे ॥ ए गुण० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टिमां अंशे के० थोडे जागे अविनाशी थाय. जेम जेम आश्रवना न्यून थाय, तेम तेम आत्मा निरावरणी थाय. पुद्गलनी सर्व रचनाने बाजीग-

रनी धाजी जेवी जाणे ते प्राणी ज्ञाननो जे आनद तेना समूहने प्राप्त उत्तम यश तेना विलासमां रमणता करनारो थाय, अने तेथी त्रण भुवनमां कोइ पण वस्तुनी तेने आशा न होय, मात्र सहज स्वरूपनो विलासी दर्शनमोहनीना क्षयोपशमे वा उपशमे आ दृष्टि होय.

॥ ढाल ठठी ॥

॥ जोलीडा हंसारे विषयन राचियें ॥ एदेशी ॥

अचपलरोगरहितनिठुरनहिं ॥ अल्पहोयदोयनीति ॥
गंधतेसारोरेकान्तिप्रसन्नता ॥ सुस्वरप्रथमप्रवृत्ति ॥ १ ॥
धनधनशासनश्रीजीनवरतणु ॥

अर्थ ॥ वली ते प्राणी इन्द्रियार्थना चपलपणा रहित होय सम्यक्त्वथी तेनु स्थिर होय वली रोग रहित शरीर होय तेनु हृदय कठण न होय, होय. लघुनीति तथा वडीनीति वने शरीरमा अल्प होय शरीरनो गंध सुगं शरीरनी कान्ति पण सुदर होय वचन पण प्रसन्नतावाला होय मधुर स्वर प्रमाणे आदृष्टिमां प्रवर्त्तन होय ॥ १ ॥ एवु श्रीवीतरागनु शासन के० वचन ते धन्य के० प्रसशनीय ठे

धीरप्रजावीरे आगलेंयोगथी ॥ मित्रादिकयुतचित्त ॥ लाज
इष्टनोरेरूअधृष्यता ॥ जनप्रियताहोयनित्य ॥ धन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ आगले कालें योगथी धैर्यताना गुण विशेषरीते जावे जेम वधे,तेम योग थाय १ मैत्री २ प्रमोद ३ कारुण्य ४ माध्यस्थ, आ चार चित्त थाय इष्ट जे ज्ञानादि तेनो लाज थाय रूडु अधृष्यता के० एकलपणु हायपणु वाठे जनप्रिय के० लोकप्रियपणु निरतर होय मैत्री प्रमुख चार धर्मध्याननी पुष्टि करे ठे यद्यपि ध्याननी एकाग्रता मुहूर्त्त मात्र होय ठे, पण ननी जावना बहुकाल सुधी रहे ठे वली बहुकाल सुधी ज्ञाननु चिंतवन ठे मैंध्यान कहेवाय तेथी मैत्री प्रमुख जावना ते धर्मध्याननु रसायण ठे जेम णथी जर्जरित शरीर दृढ थाय तेम जावनारूप रसायणथी ध्यान दृढ थाय विशेष स्वरूप जवजावना ग्रथ तथा योगशास्त्र प्रमुख ग्रथथी जाणवु ॥ २ ॥

नाशदोषनोरे तृपतिपरमलहे ॥ समताउचितसयोग ॥ नाश
वयरनोरे बुद्धिऋतंजरा ॥ एनिष्पन्नहयोग ॥ धन० ॥ ३ ॥

र्थ ॥ क्षुधादि आठ दोष तथा रागद्वेष, कामक्रोध, मदहर्ष, तेनो नाश करे. अतत्त्व बुद्धिने तजवाथी, प्रकृष्ट रुचिमार्गे, तत्त्व श्रद्धानादिकमां तृप्ति पामे. राधजन उपर पण क्रोधनी मंदता होय अने तेनुं प्रतिकूल न चिंतवे, समता होय. तत्त्वमार्गरूप धर्म व्यापारनो संयोगी होय. वेर विरोधनो नाश करनार पाप प्रवृत्ति थइजतां पश्चात्ताप करे. तेनी बुद्धि एवी होय के शतंभरा के० सेंकमो गोनी आजीविकाने लाभकारी होय, इत्यादि योग आठ दोष गयाथी स्वाभा- ीते उपजे ॥ ३ ॥

चिन्हयोगनारे जेपरग्रंथमां ॥ योगाचारयदिठ ॥ पंचमदृष्टी
थकीतेजोडीए ॥ एहवातेहगरिठ ॥ धन० ॥ ४ ॥

र्थ ॥ वली योगनां चिन्ह के० लक्षणो ब्रह्मचर्यादि कृतप्रतिज्ञा निर्वाह, अपाय करणादि जे पातंजलादि योगाचार्ये सर्वांगे दीठां छे, ते सर्व पंचम दृष्टिमां होय, त् पूर्वनी चार दृष्टिथी अधिक गुणेयुक्त गरिष्ट बुद्धि होय. तेज कारणथी मोहनो पशम जे ग्रंथिभेद ते अहीं कह्यो छे ॥ इति थिरा दृष्टि विचार ॥ ४ ॥

छठीदिठिरेहवेकांताकहुं ॥ तिहांताराभप्रकाश ॥ तत्त्व
मिमांसारेदृढहोयेधारणा ॥ नहींअन्यश्रुतवास ॥ धन० ॥ ५ ॥

र्थ ॥ हवे छठी कांतानामा दृष्टि कहीये छीए. आ दृष्टिमां आकाशना तारा स- तत्त्वज्ञाननो प्रकाश होय जेम तारानो अभाव थतो नथी, तेम ते ज्ञाननो अ- थतो नथी. तत्वनीज विचारणा होय तत्त्वउपर दृढ के० निबिड धारणा होय, गत्त्वप्रणीत श्रुतशास्त्रनी लेश मात्र वासना न होय ॥ ५ ॥

मनमहिलानुंरे वाहलाउपरें ॥ वीजांकामकरंत ॥ तेम
श्रुतधर्मेरे एहमांमनधरे ॥ ज्ञानाक्षेपकवंत ॥ धन० ॥६॥

र्थ ॥ जेम पतिव्रता स्त्रीनुं मन पोताना वहाला स्वामी उपर, बीजा सर्वकाम करतां छतां, जोडायेलुंज होय तेम कांता दृष्टिवालो प्राणी जो के संसारमां थको सर्वकार्य करे, तोपण तेनुं मन तो अर्हत्प्रणीत धर्ममांज जोडायेलुं होय. रनां कार्यो उपर आसक्ति न होय अने ते सम्यग् ज्ञाननोज आक्षेपक के० आ- वालो होय ॥ ६ ॥

एहवेज्ञानेरे विघननिवारणा ॥ भोगनहीं भवहेत ॥
नविगुणदोषन विषयस्वरूपथी ॥ मनगुण अवगुणखेत ॥ धन०

अर्थ ॥ एवा ज्ञानथी धर्मनां विघ्नकारक कारणोनुं निवारण करे वली मारनी जेम परने शासन प्रभावनादि कारणो मेलवी आपे ते प्राणी यद्यपि भोगवे छे तथापि ते, तेने संसारना हेतु थता नथी कारण के ते प्राणीने एवी विचारणा होय छे के संसारना विषयो गुणरूप नथी, तेम दो५७५ ते विषयादिकने विषे मन जोडवु ते अवगुणनु क्षेत्र छे, एम जाणी तेमां परोवेज नहीं ॥ ७ ॥

मायापाणीरे जाणीतेहने ॥ लंघीजायअडोल ॥ साचु
जाणीरे तेवीतोरहे ॥ नचलेमामाडोल ॥ धन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ ते प्राणी मायारूप पाणीना विविध तरगना विलास देखीने त॰ उलघी जाय, अर्थात् तेमां प्रवेश करे नही. वली सम्यग् ज्ञान तथा अडोल होवाथी भव प्रपचमा फसातो नथी आत्मस्वरूपनु ज्ञान साचु यथी प्रपचथी बीतो रहे ससारमां अविद्याना मायायुक्त प्रपंचोथी क्षोभ पामे नहीं यद परिव्राजक अने सुलसाना दृष्टांतनी जेम चले नहीं ॥ ८ ॥

भोगतत्वनेरे एमजयनविटले ॥ जूठाजाणेरे भोग ॥ तेऐ
दृष्टिरे भवसायरतरे ॥ लहेवली सुयशसंयोग ॥ धन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ जे ससारना भोगने तात्विक जाणे तेने ससारनो भय टले नहीं दृढनिश्चय थवाथी इंद्रियोना भोगने जूठा के० भाठा जाणे छे एवा ... प्रपच थये छे परतु मोक्षपथ मलतो नथी एवु जे प्राणी जाणे छे, ते प्राणी आ वर्त्ततो थको भवसमुद्रनो पार पामे छे, अर्थात् कर्मरहित थइ, सुयश मेलवी अक्षय सुखना विलासनो सयोग प्राप्त करे ॥ इति छठी कांता दृष्टिविचार ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥
॥ ए छिंडी किहां राखी ॥ ए देशी ॥

अर्कप्रभासम बोधप्रभामां ॥ ध्यानप्रीयाएदिट्ठी ॥
तत्त्वतणी प्रतिपत्ति इहांवली ॥ रोगनही सुखपुट्ठीरे ॥
भविरावीरवचन चित्तधरीए ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे प्रभा नामा सातमी दृष्टि कहीए छीए, आ दृष्टिमा पाम्या सूर्यनी प्रभा सरखो होय अर्थात् अर्कप्रभा के० सूर्यनो प्रकाश जेम अ... करे तेम आ दृष्टिवत प्राणी अज्ञाननो नाश करे प्रशानवाहितादि गुण उ॰

धर छे. ते आदृष्टिवंतने होय छे. आ दृष्टिमां ध्यान प्रिय होय. आ दृष्टि ध्यानप्रिया वाली ते प्राणी ध्यानमांज वर्त्ततो रहे. तत्त्वनी प्रतिपत्ति के० चारित्रादिक रत्न नी आदरणा होय. बाह्य अभ्यंतरना शरीरना रोग, उपाधि के असमाधि तेने न य अने सुखनी पुष्टि होय ॥ १ ॥ अहो भव्यो! एवा श्रीवीरप्रभुनां वचनने मनमां वपणे ग्रहण करो.

सघलुं परवश तेदुःखलक्षण ॥ निजवश तेसुखलहीए ॥ ए
दृष्टे आतमगुण प्रगटे ॥ कहोसुखतेकुण कहीएरे ॥ भवि० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जे पर पुद्गलादिकने वशवर्तीपणुं तेज दुःखनुं लक्षण छे. अने पोताना त्मस्वभावमांज वर्त्तवु ते सुखनुं लक्षण छे एवीरीते आदृष्टिमां आत्मगुणथी पर- नंद सुख प्रगट थाय ते सुखना स्वरूप ने ज्ञानीविना बीजो कोण कहीशके? अ- त् बीजाथी कहीशकाय नहीं ॥ २ ॥

नागरसुखपामरनवजाणे ॥ वल्लभसुखनकुमारी ॥ अनु
भववणतेमध्यानतणुं सुख ॥ कोणजाणेनरनारीरे ॥ भवि० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ जेम नगरना रेहेनारा चतुर पुरुषोना सुखनो विलास गामडानो रेहेनार मर के० गरीब जाणी शके नहीं तथा जेम कुंवारी कन्या सुंदर भर्त्तारयुक्त वल्ल- ना सुखने जाणी शके नहीं तेम आत्माना अनुभव ज्ञानविना ध्याननुं सुख वहि- सा एवा स्त्री अथवा पुरुष कोण जाणी शके? अर्थात् जाणी शके नहीं ॥ ३ ॥

एहदृष्टिमां निर्मलबोधे ॥ ध्यानसदाहोयसाचुं ॥ दूषण
रहितनिरंतर ज्योति ॥ रत्नतेदीपे जाचुंरे ॥ भवि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टिवंत प्राणीने निर्मल बोधनो प्रकाश थवाथी निरंतर धर्म ध्यान ॥ शुक्ल ध्यान साचांज होय. ध्याननो विचार, आवश्यक निर्युक्ति तथा ध्यान श- नी वृत्तिथी अवधारवो. जेम दूषण रहित, निर्मल जात्यवंत रत्ननी ज्योति निरं- विशेष प्रकाश आपे तेम ध्यानमां लीन प्राणी कर्मउपाधिने अभावे विशेषपणे त्मप्रकाशथी दीपे ॥ ४ ॥

विषभागक्षय, शांतवाहिता ॥ शिवमारगध्रुवनाम ॥ कहे
असंगक्रियाइहांयोगी ॥ विमलसुयशपरिणामरे ॥ भवि० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टिनुं लक्षण कहे छे विष भाग के० "रागद्वेष, अहंकृति, कामेछादि- ना क्षयथी मोक्ष' एवो बोधनो मत छे "अपराधी उपर प्रशांत वाहिता के० निरंतर

शांतपणुं ते मोक्ष" एवो सांख्यनो मत छे "ज्यां उत्पाद के विनाश नहीं अने
होय ते मोक्ष" एम जेमिनीयनो मत छे, अने आ दृष्टिवंत ए सर्व पदार्थ
वयी अलित क्रियायुक्त उत्तम यशरूप आत्म गुणना परिणाम सहित,
हितपणे शुद्ध ते मोक्ष एवा परिणामवालो होय छे ॥५॥ इति सातमी

॥ ढाल आठमी ॥

॥ तुज साथे नहीं बोलुं मारा वाहाला ॥ ए देशी ॥

दृष्टि आठमी सारसमाधि ॥ नामपरातसजाणुजी ॥
आपस्वभावेप्रवृत्तिपुरण ॥ शशिसम बोधवखाणुजी ॥
निरतिचारपदएहमायोगी ॥ कहीयेनहिअतिचारीजी ॥
आरोहेआरुढेगिरिने ॥ तेमएहनीगतिन्यारीजी ॥ १ ॥

अर्थ ॥ भव्य लोकना आत्मस्वभाव ज्यां अक्षयपणे वर्ते छे, एवी आठ
सार कें० प्रधान आत्म समाधिरूप छे तेनु नाम परा छे आ दृष्टिमां पोताना
स्वभावमा पूर्ण प्रवर्त्तन होय वली बोध प्रकाश, संपूर्ण चंद्रमा सरखो नि
तराहितादि गुणयुक्त होय आ दृष्टिमां प्रवर्त्ततो योगी निरतिचार पदे प्रवर्त
पण वगत अतिचार पदमा वर्त्ते नहीं १ अतिक्रम २ व्यतिक्रम ३ अतिचार,
प्रणे दोषना प्रकारमा आवे नहीं, तो पछी अनाचारनी प्रवृत्ति होयज क्यांथी
मुनिराज उपशम, क्षपक श्रेणिरूप गिरि के० पर्वत उपर आरोहे कें० चडे,
परिणाम धाराए आत्माना पडित वीर्यना विलासे तेपण गुण श्रेणिने आरो
रोहे माटे तेनी गति ते जगतिथी न्यारी छे ॥ १ ॥

चंदनगंधसमानक्षिमाइहां ॥ वासकने, नगवेषेजी ॥
आसंगेवर्जितवलीएहमा ॥ किरियानिजगुणलेखेजी ॥
शिक्षायी जेमरतननियोजन ॥ दृष्टिभिन्नतेमएहोजी ॥
तासनियोगे करण अपूरव ॥ लहेमुनिकेवलगेहोजी ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वली शरीरादिकनो गंध चंदन समान सहजथी होय, तेम
हजथी चंदन समान शीतल होय क्षमादिक धर्मपण सहजथी होय वली
मना सहजथी होय के बीजा कोइ द्रव्यनी अपेक्षा न करे, केमके तेने
गुण प्रा[illegible] थया होय ते परना गुणनी प्राप्ति राखे नहीं वली आ दृष्टिमा मुम
संगना न होय समिति गुप्ति प्रमुख मूलोत्तर गुणोनो अभ्यास तेथी सर्व क्रि
आत्माना गुणने मेले थाय जे क्रियाने अनुसरतो होय ते क्रिया एवी हाय

ने साधे. जेम क्षारादि शतपुटादि शिक्षाना योगे रत्नी जातिने तादृशस्थाने
ए, रत्नी तो एकज जाति छे परंतु जेम जेम पुट देता जइए तेम तेम जोवा-
नी दृष्टिमां भिन्नभिन्न ते रत्न देखाय, तेम आ दृष्टिमां भिन्न भिन्न दृष्टिवंत होय,
छद्मस्थनुं ज्ञान एक सरखुं न होय, तेथी ते कारणथी आ दृष्टांत छे ते ध्यानमां
ते प्रमाणे अपूर्व करणादि गुणस्थानकना करण साधतो अनुक्रमे आदृष्टिमां व-
मुनिराज केवल ज्ञाननुं रह पामे ॥ २ ॥

क्षीणदोष सर्वज्ञमहामुनि ॥ सर्वलब्धिफलभोगीजी ॥
परउपगार करीशिवसुखते ॥ पामे योग अयोगीजी ॥
सर्वशत्रुक्षय सर्वव्याधिलय ॥ पूरणसर्वसमीहाजी ॥
सर्वअरथयोगेंसुखतेहथी ॥ अनंतगुणनिरीहाजी ॥ ३ ॥

र्थ ॥ आ दृष्टिवंत प्राणी सर्व दोषने क्षय करे; वली ते महामुनिराज सर्वज्ञ के-
ानवंत थाय; समस्त लब्धिनां फलनो भोगी थाय; भव्य प्राणीउने चारित्र धर्म
तां तेउने अत्यंत उपगारी थाय; पोते मोक्ष सुख पामे; सयोगि गुणठाणे वर्ती
गि गुणठाणे अयोगि पद लइ सिद्धि पामे; सर्व कर्मरूप शत्रुउनो क्षय करतां
दि सर्व व्याधियोनोपण नाश करे. एप्रमाणे सर्व समीहा के० वांछाउ पूर्ण थवा-
ख्वल आत्मस्वरूपमां लीन थयोथको एकरूपता पामे. सर्व अर्थना योगथी
सुखे तृप्तिवंत रहे, तेथी निरीहा के० निस्पृहपणे प्रगट थया जे अनंतगुण तेनुं
वाध सुख वधतां वधतां पूर्ण आत्मानंदी थाय ॥ ३ ॥

एअडदिठी कहीसंक्षेपे ॥ योगशास्त्रसंकेतेजी ॥
कुलयोगीनेप्रवृत्तचक्रजे ॥ तेहतणेहितहेतेंजी ॥
योगीकुलेजायातसधर्मे ॥ अनुगततेकुलयोगीजी ॥
अद्वेषीगुरुदेवद्विजप्रिय ॥ दयावंतउपयोगीजी ॥४॥

र्थ ॥ आ आठ दृष्टि भव्य प्राणीउना उपकारने अर्थे योगशास्त्र, अध्यात्म ग्रंथ
के उपमितिभवप्रपंच, भवभावना वृत्ति, पातंजल शास्त्र तथा प्रवचन प्रबोधा-
थोने अनुसारे संक्षेपथी कही छे. योगी बे प्रकारना छे. १ कुलयोगी २ प्रवृत्त
योगी तेउ पोताना चित्तमां अहंकारथी एम माने छे के अमेपण योगी छीए
तेउना हितने अर्थे आ दृष्टियो कही छे. हवे ते योगीउनां लक्षण बतावे छे. जे
ना कुलमां जन्म्या होय तथा जेना धर्माचार रूढिमार्गने

विषे हिम, शरीरनेविषेरोग, वननेविषेअग्नि,दिवसनेविषेरात्री,ग्रंथनेविषे मूर्खता खनेविषे क्लेश, तेउपद्रवनाकरताछे, तेमधर्मनेविषेकपट तेदु खकर्त्ताछे ॥ ११ ॥

अतएवनयोधर्त्तुमूल्योत्तरगुणानलं ॥ युक्तासुश्राद्धतातस्य
नतुदंजेनजीवनं ॥ १२ ॥ परिहर्तुनयोलिंगमप्यलंदढरा
गवान् ॥ सविझपाक्षिक सस्यान्निर्दंज साधुसेवक ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ एहिजहेतुमाटे मूलगुणपचमहाव्रत अनेउत्तरगुण करवानें ... वाने जेप्राणी समर्थनहोय, तेणेश्रावकनाव्रतपालवा तेयुक्तजछे तेरुडुनथी ॥ १२ ॥ हवेजेप्राणी व्रतनेमूकवाने समर्थनथी केमके जेनेव्रतउपर ह गलाग्यो होय तेमूकीशकेनहीं तोतेनेसविझपक्ष अंगीकारकरवो श्रेष्ठछे, केमक जीसाधुनी सेवनाकरवाथी घणोगुणथायछे ॥ १३ ॥

निर्दंजस्यावसन्नस्याप्यस्यशुद्धार्थजापिणः ॥ निर्जरायतनादत्ते
स्वल्पापिगुणरागिणः ॥१४॥ व्रतजारासहत्वंयेविदतोप्यात्मन
स्फुटं ॥ दंजाद्यतित्वमाख्यांतितेषांनामापिपाप्मने ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ निष्कपटीहोय, शुद्धसिद्धांतना अर्थनाजापकहोय, तेगुणेकरीने उत्र प्रसुप्तसाधु जो थोडीपणजतना करेछे, तोपण तेगुणनारागीपणाथी वर्ततायका झरायायछे ॥ १४ ॥ व्रतनोजारनथीउपरुतो ... रमाने प्रगटरीते कपटेकरीने यतिपणुवरावेछे, संयमीपणु स्थापेछे, तेलिगोतु पण पापथाय तोतेनीसेवनातो, पापकारीथायज तेमाशुकेहेवु ? ॥ १५ ॥

कुर्वते ये न यतना सम्यगालोचितामपि॥तैरहो यतिनाम्नैव
दाम्भिकैर्वंच्यते जगत् ॥ १६ ॥ धर्मातिख्यातिलोजेन प्रछा
दितनिजाश्रव ॥तृणायमन्यते विश्व हीनोपि धूर्तकैतव ॥१७॥

अर्थ ॥ जेजिगीजलीरीतें द्रव्यक्षेत्रकालजावजोइने यतनथीकरता, तेढ्रिगी वेनामेकरीनेकपटीयइ लोकनेठगताफरेछे॥ १६॥जेहीनाचारीथको कपटनोधर गींहोय थनेतेयतिधर्मीछे एवीप्रसिद्धियइ, कोइ तेनालोजेकरीने पोताना नेढांक्याहोय एहवाजे यतिते समग्रजगतने तृणतुल्यजाणेछे, ॥ १७ ॥

आत्मोत्कर्षा ततोदंजा त्परेषा चापवादत ॥ बध्नाति कठिन
कर्म्म बाधकं योगजन्मन ॥१८॥ आत्मार्थिना ततस्त्याज्यो दं
जोऽनर्थनिबंधनं॥शुद्धिः स्यादृजुभूतस्येत्यागमे प्रतिपादित ॥१९॥

अर्थ॥ पोतानाआत्मानी वक्राइकरे, घणुंकपटधरे, अनेपारकाअवरणवादबोले तेणे करीने कठिणकर्मबांधेछे, तेवापुरुषो ते योगिनाजन्मने बाधककरनाराछे; तेशुद्धचारित्रने पामीशकेनही ॥ १८ ॥ माटेअनर्थनुंकारणजेकपट तेनेधर्मार्थिप्राणीयें तजवुं, केमके आत्मानीशुद्धितो सरलताथावेंथायछे, एवुंआगमनेविषेकह्युंछे ॥ १९ ॥

जैनैर्नानुमतंकिंचिन्निषिद्धंवानसर्वथा ॥ कार्यंभाव्यमदंभेने
त्येषाज्ञापारमेश्वरी ॥ २० ॥ अध्यात्मरतचित्तानांदंभःस्वल्पो
पिनोचितः ॥ छिद्रलेशोपिपोतस्यसिंधुंलंघयतामिव ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ तीर्थंकरेंएकांते आज्ञापणनथीकरी, तेमसर्वथा निषेधपणनथीकीधो, पो पणजेकार्यकरवुं तेकपटरहितकरवुं एहिजपरमेश्वरनी आज्ञाछे ॥ २० ॥ जेम हाणमां छिद्रनो लेशहोयतेपण समुद्र तरवामांयोग्यनथी, तेम अध्यात्मनेविषेनुं जेनुं नरंगायुछे, तेनेजगपण कपटकरवुं तेयोग्यनथी ॥ २१ ॥

दंभलेशोपि मल्ल्यादेः स्त्रीत्वानर्थनिबंधनं ॥
अतस्तत्परिहाराय यतितव्यं महात्मना ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेम मल्लिनाथजीने कपटनोलेशपण स्त्रीवेदनोकारणिकथयो, माटे महान् रूपे कपटतजवाने घणोयत्न करवो ॥ २२ ॥ इति श्रीअध्यात्मसार ग्रंथनेविषे दंभ- त्यागनामा त्रीजोअधिकार समाप्तथयो ॥

तदेवं निर्दंभाचरणपटुता चेतसि भवस्वरूपं संचिंत्य क्षण
मपि समाधाय सुधिया ॥ इयं चिंताऽध्यात्मप्रसरसरसी
तीरलहरी सतां वैराग्यादिप्रियपवनपीना सुखकृते ॥ १ ॥

अर्थ ॥ एटलामाटे निर्दंभआचरणकरवाने हे चेतन! तुं सावधानथा ! आत्मस्वरू- नुं चिंतनकर! केमके क्षणमात्रपण सद्बुद्धिहृदयमांधरीने आत्मस्वरूपनीचिंता करवी हिज आत्मदिशारूप सरोवरनीलहरीछे तेशीतलताकरेएवीछे, एहिजसज्जन लोकने राग्यदिशारूप पवनपूर्णपुष्टताकारीछे, माटेते आत्मिकसुखने अर्थेसाधवी ॥ १ ॥

इतः कामौर्वाग्निर्ज्वलति परितोदुःसह इतः पतंति ग्रावा
णो विषयगिरिकूटाद्विघटिताः ॥इतःक्रोधावर्तोविकृतितटिनी
संगमकृतः समुद्रे संसारे तदिह न भयं कस्य भवति ॥२॥

अर्थ ॥ एकतरफकामरूप वडवानलनो अग्निबलीरह्योछे, तेदुःखेसहनथाय एवोछे.

अने एकतरफ पचप्रकारनाविषयरूप पर्वत, तेनृणीपडनाजे उन्मादरूपपग, नयंकर, वली एकतरफ विकारद्विगारूपनदीना सगमकी श्रो रनाथावर्तपडनार, एहर आसंसारसमुद्रतेनेविषे कहो कयाठेकाणे प्राणीनेनयनथी? सर्वत्रनयनवर्त्ते ॥

प्रिया ज्वाला यत्रोरुमति रतिसंतापतरला कटाक्षान् धूमौघान् कुवलयदलश्यामलरुचीन् ॥ अथागान्यगारा कृतबहुविराश्च विषया दहंत्यस्मिन्वह्नौ नवत्रपुषि शर्म क्व सुलन ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ नेससारनेविषे रतिनासतापेकरीने तरला कें० चपल एवी जे प्रियाश्रो वर्ते कटुकज्वालावर्त्तेठे, वली नीलकमलदलना सरखी जेनीकांतिठे पहनानना कोणमांथीजेजोवु तेजनामकटाक्ष तेरूपधूम्रना समूहवालेठे, तथास्त्रीनाश्रग तहर रासमानठे, जेअंगवके घणाप्रकारना विकारप्रगटथायठे तेमाटेससाररूप अग्निमा रह्या जे प्राणीतेने नवमापणसुखनथी तेमजशरीरमा पणकइजसुखनथी ॥ ३ ॥

गले दत्वा पाशं तनयवनितास्नेहघटितं निपीड्यते यत्र प्रकृतिकृपण प्राणिपशव ॥ नितांत इ खार्त्ता विषमविषयैर्घातिकनटैर्नव सूनास्थानं तदहह महासाध्वसकरं ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेनागलानेविषे पुत्र तथा स्त्रीरूपस्नेहनोफासो नखायोठे, मा पञ्चातुखजावनाधणी तेअतिशयपणे पीडापामेठे आकराविषयरूपने सुजट तेणेकरीनेससारते खाटकीनुंस्थानकठे, ... तेकेव ...

अविद्यायां रात्रौ चरति वहतो मूर्ध्नि विषमं कषायव्यालौघं क्षिपति विषयास्थीनि च गले ॥ महादोषान् दतान् प्रकटयति वक्रस्मरमुखो न विश्वासार्होयं नवति नवनक्तचर इति ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अज्ञानदिशारूप रात्रिनोचालनार जेनामाथाउपर विषमकषायरूप समूहरह्योठे, जेनागलानेविषे विषयरूपहाडकांबाध्यांठे, जेमहोटादोषरूप रेठे, जेनुमुख कामनीचेष्टाकरेठे, ... पीर ... वान

जना लब्ध्वा धर्म्मद्रविणलवभिक्षां कथमपि प्रयातोवामाक्षीस्तनविषमदुर्गस्थितिकृत ॥ विलुप्यते यस्यां कुसुमशरभिल्लेन बलिना नवाटव्यां नास्यामुचितमसहायस्य गमनं ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ ... लवलेशनेपाम्योठे, तेणेभिक्षामागवाने एकठ

ुनही, केमके नवाटवीनेविषे वलवत्तरजीव एवोजेकाम तेस्त्रीनास्तनरूप विषयीको-
मांरहीने तेप्राणीमात्रना धर्मरूपधनने लुटीलीयेछे, माटे सहायविना ते प्राणीयें
कलुं विचरवुं (चालवुं) योग्य नथी ॥ ६ ॥

धनं मे गेहं मे मम सुतकलत्रादिकमतो विपर्यासादासादि-
तविततदुखा अपि मुहुः ॥ जना यस्मिन् मिथ्यासुखमद-
भृतः कूटघटनामयोयं संसार स्तदिह न विवेकी प्रसजति ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ धन. घर. पुत्र, ने स्त्रीआदि सर्ववस्तु मारी छे, एवाविपर्यासपणाथी विशेषप्र-
रूढ दुखछे, माटे जेप्राणीवारंवार सुखनेमदेभर्याथका सुखमानेछे, ते फोकट छे. ए
संसारतो केवल कपटरचनायें भर्योछे तेनेविषे विवेकीप्राणीयें प्रीति करवीनही॥७॥

प्रियास्नेहोयस्मिन्निगडसदृशो यामिकभटोपमः स्वीयो-
वर्गोधनमभिनवं बंधनमिव ॥ महामेध्यापूर्णं व्यसनबिल
संसर्गविषमं भवः कारागेहं तदिह न रतिः क्वापि विदुषां ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ स्त्रीनोस्नेहतेवेडीसमानछे, वीजासगासंबंधीलोकते पोरियातसमानछे. धन-
संपत्तिते नवाबंधनसरखीछे, अने महा अमेध्येंकरीसहितछे; सातप्रकारना व्यसनरूप
बिलेंसहितछे, टुंकामांकहियेंतोआसंसारते बंदिखानाजेवोछे माटेपंडितलोकने ए वस्तु-
हेली एके वस्तुउपर रति के० मरजी थती नथी ॥ ८ ॥

महाक्रोधोगृध्रोऽनुपरतिशृगाली च चपला ॥ स्मरोलूकोयत्र
प्रकटकटुशब्दः प्रचरति ॥ प्रदीप्तः शोकाग्नि स्ततमपयशोभ-
स्म परितः श्मशानं संसारस्तदतिरमणीयत्वमिह किं ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ जेपंडितलोकते आसंसारने स्मशानसरखोकहेछे. केमके स्मशानमांरहेछे गा-
बीजो सर्वसंसारमांछे तेकहीवताबेछे, जेमस्मशानमां गिधपक्षीछे तेमसंसारमां म
क्रोधते गीधपक्षीछे; अरतिरूपचपलचपल शियालणीछे, घुवडपक्षीरूप कामछे तेप्रगट-
। कटुवाशब्दथी वदनकरेछे; देदीप्यमान शोकरूपी अग्निप्रज्वलेछे. निरंतर अपजश-
र राख छे; माटे संसारते स्मशान छे एमां रमणीक चीज कोइ नथी ॥ ९ ॥

धनाशा यत्रायाप्यति विषयमूर्छा प्रणयिनी विलासोनारीणां
गुरुविकृतये यत्सुमरसः ॥ फलास्वादोयस्य प्रसरनरकव्या-
धिनिवह स्तदास्था नो युक्ता भव विपतरावत्र सुधिया ॥ १० ॥

अर्थ ॥ धननीजेइच्छा तेअतिशयविषयरूप विषममूर्छानी विस्तारनारीछे वीरे विलास ते महाविकारकारी कुसमनोरसछे जेनाफलनोस्वाद विस्तारपामतोनर्केनी ना समूहतुल्यथाय, एवुससाररूप विषयवृक्षछे, एनीहेठल विश्रामकरवोयुक्तनथी।

क्वचित् प्राज्यं राज्यं क्वचन धनलेशोप्यसुलज्ञ क्वचि ज्ञातिस्फाति
क्वचिदपि च नीचत्वकुयश ॥ क्वचिल्लावण्यश्रीरतिशयवती-
क्वापि न वपु स्वरूप वैषम्यं रतिकरमिद कस्य नु ज्ञवे ॥११॥

अर्थ ॥ कोइनेतोविस्तारवालुराज्यछे, कोइनेधननोलेशपण दोहेलोछे, कोनी ज्ञातिछे, कोइनीनीचजातिछे,कोइनेअपयशछे,कोइनेलावण्यलीलानी लक्ष्मीघणीछे, इनुशरीरपण रुडु नथी, एवुसंसारनुस्वरूपविषमछे तेकोनेरतिकारीथाय? ॥११॥

इहोद्दाम काम· खनति परिपंथी गुणमही मविश्राम पार्श्वे
स्थितकुपरिणामस्य कलह ॥ बिलात्यंत क्रामन्मदफणभृ-
ता पामरमत वदाम किनाम प्रकटज्ञवधामस्थितिसुख ॥ १२॥

अर्थ ॥ इहाउद्दामकामदिशाछे, तेजपरिपंथीके० शत्रुछे, तेगुणरूपजे मही ... नेखणेछे अनेपासेरह्योजे कुपरिणामते विश्रामलीधाविना निरतर क्लेशकरेछे, खरडाया एवाजेप्राणी तेअष्टमदरूपसर्प तेणेकरीयुक्तछे एवुपामरलोकने ... आ ससाररूप जे घर तेनु शु सुख कहियें? ॥ १२ ॥

तृषार्त्ता खिद्यंते विषयविवशा यत्र ज्ञविन कराल क्रोधार्का-
द्भमसरसि शोष गतवति ॥ स्मरस्वेदक्लेदग्लपितगुण
मेदस्यनुदिन ज्ञवग्रीष्मे जीष्मे किमिह शरणं तापहरण ॥ १३॥

अर्थ ॥ ससारनेविषे प्राणीमात्र पुद्गलनी तृष्णारूपतरसेकरीने पीडायाछे विषयनीआशायेंकरी परवशथयाछे, एहवाप्राणीयो विकरालक्रोधेंकरीपीडायल ... तेमनेमाटे शमतारूपसरोवरतो सुकाइगयुछे, अनेकामदिशारूपजे परिस्वेद तेनी ... नला तेणेकरीनिरन्तर गुणमेदा ग्वरडायछे ज्या एहवोविकरालमणो आससाररूप ... छे, त्या तेना तापने हरे एवो कोइ नथी ॥ १३ ॥

पिना माता भ्राता प्यजिलषितसिद्धावज्ञिमतो गुणग्रामज्ञाता
न खलु धनदाता च धनवान् ॥ जना स्वार्थस्फातावनिशमवना
नाथमनृन प्रमाता क स्यातात्रिह ज्ञवमुखस्याश्च रसिक ॥ ॥

अर्थ ॥ आसंसारनेविषे पितामातानेभ्राताके० जाइआदी तेसर्वेचिंतितअर्थनी अ-
लापापुरे त्यांलगीअभिमतके० संमतकरीमाने, तथागुणनासमूहनोजाण एहवोधन-
तप्राणीहोयतेपण कृपणपणेकरीने गुणीजनने धनदेइशकेनही, एम सर्वप्राणीपोता-
स्वार्थसाधनकरवाने सावधानपणेवर्त्तेछे, पणपरमार्थथी वेगला वसेछे, एवाभवसुखना
सियाजेजीवतेहना स्वरूपने केहेवाने कोण समर्थ थइ शके!॥ १३ ॥

पणेः पाणिग्रहात्यहह महति स्वार्थ इह यान् त्यजत्युच्चैर्लोक
स्तृणवदघृणस्तानपरथा ॥ विषं स्वांते वक्त्रेऽमृतमिति च विश्वा
सहतिकृद्भवादित्युद्वेगोयदि न गदितैःकिं तदधिकैः ॥ १५ ॥

अर्थ॥एमस्वार्थने वशथइने प्राणी चंडालनो हाथपकडी चालेछे! अहोइतिआश्चर्य!
स्वार्थपणुंतेएहवुंछे. वलीजेउत्तमकुलथी उपजेलातेइनेतजेछे अने तरणाजेवोनिर्लज्ज
इने हैयामांतो झेरभर्युंहोय पण मोढे अमृतजेवुंमीठुंबोलेछे. एवा अनेक प्रपंच स्वार्थ-
टेप्राणीकरेछे, नेविश्वासघातीथायछे. एवाप्राणीआसंसारमांवसेछे,तेजोइनेपण आसं-
ारथी जेनुंमनउद्वेगपामतुंनथी तेने घणुं शुं कहिये?॥ १५ ॥

दृशां प्रांतैः कांतैः कलयति मुदं कोपकलितैरमीभिः खिन्नः
स्यादघनधननिधीनामपि गुणी ॥ उपायैस्तुत्याद्यैरपनय-
ति रोषं कथमपीत्यहो मोहस्येयं भवभवनवैषम्यघटना ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ स्त्रीनीदृष्टिना प्रांतके० खुणातेमनोहरछे, माटेतेनाजोवाथी हर्षउपजेछे, अने
ीनीकोपयुक्तदृष्टिखरावछे माटेतेदेखीनेखेदउपजेछे,तथाघणाधनवालापुरुषने गुणीज-
ोस्तुतिआदिकरीरीजवेछे, ने कष्टसहीनेतेमनोरोषउतारेछे, एसघलुंमोहथकीथायछे
टे जुओमोहरूपीराजानुं केवुंविषमतापणुंछे केजेतजवायोग्यछे तेनो आदरकरावेछे
ने जेनोआदरकरवोजोइये तेनोत्याग करावेछे? ॥ १६ ॥

प्रिया प्रेक्षा पुत्रोविनय इह पुत्री गुणरति र्विवेकाख्यस्तातः
परिणतिरनिंद्या च जननी ॥ विशुद्धस्य स्वस्य स्फुरतिहि कु-
टुंबं स्फुटमिदं भवे तन्नोदृष्टं तदपि बत संयोगसुखधीः ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ जीवनेतत्त्वविचारणाकरवीतेस्त्रीछे, विनयकरवोतेपुत्रछे, गुणनेविषेजेरतिकरवी-
पुत्रीछे, स्याद्वादपणेस्वपरविवेचनकरवुंतेपिताछे,अनिंद्याजेपारकीनिंदातजवीतेआत्मा-
ी माताछे, एवुंजेअंतरंगकुटुंबछे,तेतोजेवारें आत्माशुद्धथाय तेवारेंप्रगटरीतेंपेदाथाय,
पतेनेजेपुरुषसंयोगीसुखमां मग्नथइरह्योछे तेतोक्यारेपणदेखतोनथी. ॥ १७ ॥

पुरा प्रेमारम्भे तदनु तदविच्छेदघटने तदुच्छेदे दुःखान्यथ कठिनचेता विषहते ॥ विपाकादापाकाहितकलशवत्तापबहुलाजनोयस्मिन्नस्मिन्कचिदपि सुखं हंत न भवे ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ प्रथमप्रेमकरताडुःखछे, तेपछीतेनेनिश्चलपणेराखवाने पणघणुदुःखछे, ते प्रेमपात्रनो विछेदथाय, मरणथाय अथवाप्रेमत्रुटे त्यारेसकठोरमारे दुःखछे, तेसहनकरवाने छातीघणीकठणराखवीपडे, नींभाडानापाकनेविषे आरोपितकर्या जे घट तेनासरखीतापनी बहुलताछे ज्या तोएवोजे आससाररूप नींभाडोतिहां काइज नथी समग्र दुःखमयजछे ॥ १८ ॥

मृगाक्षी दृग्बाणै रिहहि निहतंधर्म्मकटकं विच्छिन्नाहृदेशा इह च बहुलैरागरुधिरै ॥ भ्रमंत्यूर्ध्वं क्रूरा व्यसनगतगृधाश्च तदियं महामोहक्षोणीरमणरणभूमि खलु भव ॥ १९ ॥

अर्थ॥ आससारनेविषे धर्मराजाना कटकनेतोमृगनयनीना दृष्टिरूपीबाणे हण्युं, रागदिशारूपरुधीरवडे लोपाइगयाछे हृदयप्रदेशजेनाते उपर अनेकप्रकारना तनसबधीकष्टरूपीगीधपक्षीयो भमीरह्याछे, एवो महामोहरूप क्षोणीरमण जे राजा तेनी रणभूमीसमान आ ससार छे ॥ १९ ॥

हसति क्रीडति क्षणमथच खिद्यति बहुधा रुदति कदति क्षणमपि विवादविदधते ॥ पलायते मोदं दधति परिनृत्यति विवशा भवे मोहोन्मादं कमपि तनुभाज परिगता ॥ २० ॥

अर्थ ॥ क्षणमाहसे, क्षणमाक्रीडाकरे (रमे), क्षणमाखेदकरे, क्षणमाबहुप्रकारे रोवेछे, क्षणमाविलापकरे, क्षणमाअनेकप्रकारनो विवादकरे, क्षणमानासीजाए, पछे हर्षयुक्त थइ नाचनाचाकरे, इत्यादीउन्मादससारनेविषे देहधारीप्राणीयोकरेछे, ते सर्व मोहने आधीनथका करेछे ॥ २० ॥

अपूर्णा विद्येव प्रकटखलमैत्रीव कुनय प्रणालीवा स्थाने विधववनितायौवनमिव ॥ अनिष्पन्नाते पत्यौ मृगदृशश्च स्नेहलहरी भवक्रीडाव्रीडा दहति हृदय तात्त्विकदृशा ॥२१॥

अर्थ ॥ असपूर्णविद्याजेमपडितने, तेमज खलमाणसनीमित्राइ, तेमज अन्यायनी प्रणालिका एटलेअन्यायनोमार्ग, तथा विधवास्त्रीनुयौवन, तथा

आगलस्त्रीनास्नेहनीलहरी तेजेमखेदनीपात्रथायछे तेमजसंसारनीक्रीडा जेलज्ञामणीछे
तेथी तत्त्वदर्शीप्राणीदुःखपामेछे ॥ २१ ॥

प्रभाते संजाते भवति वितथा स्वापकल्पना द्विचंद्रज्ञानं वा
तिमिरविरहे निर्म्मलदृशां ॥ तथा मिथ्यारूपं स्फुरति विदि
ते तत्त्वविषये भवोयं साधूनामुपरतविकल्पः स्थिरधियां ॥२२॥

अर्थ ॥ जेम प्रभातसमयस्वप्ननीरचना निष्फलथइजायछे, जेमकोइनीआंखमां जा-
लआवीहोय तेहनेआकाशमां वेचंद्रमाजासे पणनिर्मलदृष्टिथितां वेचंद्रमानुं भ्रांति-
ज्ञानमटीजायछे, तेमसंसारथीन्याराहृह्या, एहवाजेस्थिरबुद्धिवाला तत्त्वज्ञानसमजेला-
साधु तेने आ संसार ते मिथ्यारूपजासेछे ॥ २२ ॥

प्रियावाणीवीणाशयनतनुसंवाधनसुखे र्भवोयं पीयूषेर्घ
टितइति पूर्वं मतिरभूत् ॥ अकस्मादस्माकं परिकलितत
त्त्वोपनिषदामिदानीमेतस्मिन्न रतिरपितु स्वात्मनि रतिः ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ स्त्रीनीवाणीयेंकरीने तथा विणानादेकरीने शय्यायेंकरीने वलीशरीरनेचो-
ळवुं चापवुंतेणेकरीने जे सुखउपजेछे, ते अमृतेकरीनेघुटेलुंहोयतेवुंछे. एवुंपूर्वेवालकालें
लागतुंहतुं, पण हवेसहसात्कारेंअमने तत्त्वदिशानारहस्यनी परिकलनाथइ जाणपणुं
थयुं, तेथी संसारनेविषे तत्त्वरुचिवर्त्तति नथी, पण आत्मतत्त्वमां रुचिथइ छे ॥ २३ ॥

दधानाः काठिन्यं निरवधिकमाविद्यकभवप्रपंचाः पांचाली
कुचकलशवन्नातिरतिदाः ॥ गलत्यज्ञानाभ्रे प्रसृमररुचावा
त्मनि विधौ चिदानंदस्यंदः सहजइति तेभ्योस्तु विरतिः ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ संसारनासमस्तप्रपंच तेअतिशयकठिणताने धरताथकाछे, माटे मुजने का-
ष्ठनेपाषाणनी पुतलीनास्तननीपेरे रतिकारीनथीलागता. केमके अज्ञाननुंवादल ग-
लीगयुंछे अनेआत्मिकज्ञानरूप चंद्रोदयथयो तेथीसहजचिदानंदरसनी शीतलता प्र-
गटी तेणेकरी विषयतापनी अरतिमटीगइ ॥ २४ ॥

भवे या राज्यश्रीर्गजतुरगगोसंग्रहकृता न सा ज्ञानध्यानप्र
शमजनिता किंस्वमनसि॥ वहिर्याः प्रेयस्यः किमु मनसि ता ना
त्मरतय स्ततः स्वाधीनं कस्त्यजति सुखमित्यत्य परं ॥२५॥

अर्थ ॥ संसारनेविषे हाथी, घोडा, वलद, प्रमुखजेराजलक्ष्मीछे,

नथी ? अर्थात् ते ज्ञानहाथी, ध्यानघोडा, समतातेजलद, ...
मनवके श्राह्यसाथें प्रेमकरेछे तोपोतानाआत्मासाथे रतिकेमकरतोनथी ? आसिक्त...
जीने पौद्गलिकसुखने कोणइच्छे ? एवोमूर्खकोणहोय ? ॥ २५ ॥

पराधीनं शर्म्म क्षयि विषयकांक्षौघमलिनं भवे भीतेः स्थानं त
दपिकुमतिस्तत्र रमते॥बुधास्तु स्वाधीने दक्षयिणि करणौत्सुक्य
रहिते निलीनास्तिष्ठंति प्रगलितभयाध्यात्मिकसुखे ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ पौद्गलिकसुखकेवुंछे ? एकतोपराधीनछे, स्वभावेक्षयथवावाळुंछे,
वांछनावडेमलिनछे, एमससारनेविषेभयनांस्थानघणाछे, तेवताकुमतिनाधणी ...
रमेछे अनेपंडितलोकजेछे तेस्वाधीनसुखमारमेछे तेसुखकेवुंछे, ...
नही, इंद्रियोनीउत्सुकतायेंरहितछे जेप्राणीआत्मज्ञानमा लयपाम्यायकाछे...
कलभयदिशा रहितथका परमानंदनेविषे मग्नपणेरहेछे ॥ २६ ॥

तदेतद्भाषंते जगदभयदानं खलु भवस्वरूपानुध्यानं शमसु
खनिधानं कृतधियः ॥ स्थिरीभूते ह्यस्मिन्विधुकिरणकर्पूरवि
मला यशः श्रीः प्रौढा स्याज्जिनसमयतत्वस्थितिविदां ॥२७॥

अर्थ ॥ आजगत्प्रत्येपंडितलोक एमकहेछे, जेपोतानाआत्मभावना ...
नतेज शमताना सुखनुंकारणछे, अनेजगत्नेअभयदाननुं देवावाळुंछे जेएकारका...
वेंबुद्धिकरीछे तेनेआत्मस्वरूपज्ञान स्थिरथयेथके चंद्रकिरणकर्पूरसरीखी ...
शायशीतेप्रौढपणे विस्तारपामे, एवातत्त्वज्ञानी तेजिनेश्वरप्रणीत सि...
र्यादायेंवर्त्ते ॥ २७ ॥ इतिभवस्वरूपचिंताधिकार चतुर्थ समाप्त ॥

इतिश्रीनयविजयगणिशिष्य श्रीयशोविजयेन विरचिते अध्यात्मसा
रप्रकरणे प्रथम प्रबंध ॥ १ ॥ सर्वश्लोक १०२ तेमां पेहलाना
२४ बीजाना २९ त्रीजाना २२ तथा चोथाअधिकारना ॥ २७ ॥

भवस्वरूपविज्ञाना द्वेषान्नैर्गुण्यदृष्टिजात् ॥ तदिच्छोच्छेदरू
प भाग् वैराग्यमुपजायते॥१॥ सिद्ध्या विषयसौख्यस्य वैराग्य
वर्णयंति ये ॥ मतं न युज्यते तेषां यावदर्थाप्रसिद्धितः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ भवनुंस्वरूपजाणवायकी ससारउपरद्वेषथवायकी ...
थकी शीघ्रपणे ससारना उच्छेदनोवैराग्य आत्मानेविषे प्रगटथाय ॥ १ ॥

।सिद्धि-निष्पत्ति-प्राप्तितेवडे जेवैराग्यनुंवर्णनकरेछे, तेनुंमत घटमान नथी. जिहांसुधी र्थिके० द्रव्यछेतिहांसुधीविषयछे, एवीप्रसिद्धिछे. "अर्थसत्वेविषयसत्वं" ॥ इति. ॥२॥

अप्राप्तत्वभ्रमाद्भुच्चै रवाप्तेष्वप्यनंतशः ॥ कामभोगेषु मूढानां
समीहा नोपशाम्यति ॥ ३ ॥ विषयैः क्षीयते कामो नेंधनैरिव
पावकः ॥ प्रत्युत प्रोल्लसच्छक्ति र्भूय एवोपवर्द्धते ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेएमजाणेछे, जेहुंकोइकाले संसारनेविषेआव्योजनथी, जोअनंतिवारविष- सेव्याछे, तेछतांआविषयनथीपाम्यो,एवोभ्रमजेनेउपजेछे,एवाजेकामभोगनेविषे मुंझा- रह्याछे, तेनीअभिलाषानोनाशथतोजनथी ॥३॥ जेमइंधनथीअग्निघटेनही, पणउलटी द्धिजपामे, तेमविषयसेवतां कामभोगपण कदापिक्षयपामेनही, उलटी शक्तिउल्लास- मतीजाये; वारंवारवधतीजजाए ॥ ४ ॥

सौम्यत्व मिव सिंहानां पन्नगानामिव क्षमा ॥ विषयेषु प्रवृत्ता
णां वैराग्यं खलु दुर्लभं ॥ ५ ॥ अकृत्वा विषयत्यागं योवैराग्यं
दिधीर्षति अपथ्यमपरित्यज्य स रोगोछेदमिछति ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमसिंहनेसोमपणुंनथी, सर्पनेजेमशमतानथी तेमविषयमां जेप्रवर्त्या तेमने राग्यदोहिलोछे, पण सुगमनथी ॥ ५ ॥ जेविषयनोत्यागकर्याविना चित्तमां वैराग्यनी रणाकरेछे, तेकुपथ्यतज्याविना रोगटालवानी इछा करे एवुं छे ॥ ६ ॥

न चित्ते विषयासक्ते वैराग्यं स्थातुमप्यलं ॥ अयोघन इवोत्तप्ते
निपतन्बिंदुरंभसः ॥७॥ यदींदुः स्यात् कुहूरात्रौ फलं यद्वव
केशिनी ॥ तदा विषयसंसर्गिचित्ते वैराग्यसंक्रमः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेम लोढानो घण तप्योहोय तेपाणीनाबिंदुने शोषीजायछे, तेमजेनुंचित्त षयासक्तछे, तेनाहृदयमां वैराग्यरहीशकतो नथी ॥ ७ ॥ जो अमासनीरात्रीयें चंद्र गे. अने जोवांझीयावृक्षने फलआवे; तोविषयीजीवना हृदयमां वैराग्यसंक्रमे ॥८॥

भवहेतुषु तद्रूषा द्विषये ष्वप्रवृत्तितः ॥ वैराग्यं स्यान्निराबाधं
भवनैर्गुण्यदर्शनात् ॥ ९ ॥ चतुर्थेपि गुणस्थाने नन्वेवं तन्
प्रसज्यते ॥ युक्तं खलु प्रमातॄणां भवनैर्गुण्यदर्शनं ॥ १० ॥

अर्थ ॥ भवनी वृद्धिनाहेतुउपरजेनेद्वेषहोय विषयनेविषे जेनीप्रवृत्तिनहोय तेप्र तीने संसारनीनिर्गुणताना चिंतनथकी निराबाधपणे वैराग्यउपजे ॥ ९

ठाणानेविषेपण सम्यक्त्ववंत ज्ञातापुरुषनिश्चयनयपणे संसारनीनिर्गुणतान जुश्र तेने वैराग्यनीप्राप्तिथायछे, तेयुक्तजछे ॥ १० ॥

सत्यचारित्रमोहस्य महीमा कोप्ययं खलु ॥ यदन्यहेतुयोगे पि फलायोगोत्र दृश्यते॥११॥दशाविशेषे तत्रापि नचेद ना स्ति सर्वथा ॥ स्वव्यापारहतासंग तथा च स्तवत्रापित ॥१२॥

अर्थ ॥ चारित्र मोहनीनोमहीमा साचोजछे, केमके निर्श्चयकी हेतु फलनु अयोग्यपणु तेथकी जोवामा आवेछे ॥११॥ सम्यक्त्वनीदशाविशेषेंकरीने थेगुणठाणेपण सर्वथावैराग्यनजहोय, एमनजाणवु, तिहांपणपोताना आत्मिक स्व वनी रमणताये कुसगपणुहणायछे, ए अर्थ वीतरागस्तोत्रनेविषे श्रीहेम लोछे, माटे चोथे गुणठाणे वैराग्यपणु होय॥ १२॥

यदा मरुन्नरेंद्रश्रीस्त्वया नाथोपभुज्यते ॥यत्र तत्र रतिर्नाम विरक्तत्वं तदापि ते॥१३ ॥जवेछा यस्य विछिन्ना प्रवृत्ति कर्म्म जावजा ॥ रतिस्तस्य विरक्तस्य सर्वत्र शुजवेद्यत ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जे काळें देवताना राजानी लक्ष्मी हेनाथ' तमेजोगवी तिहांपण निहांनिहां मोहिनीउपजेते तमेकरीनथी, त्यापणतमेविरक्तपणुजकरयुछे पणरगायानथी॥ माटे जवनीइछाजेहनेविछेदथायछे, तेनेजेअवश्यवेदवायोग्य जावकर्मनी जेविरक्तआत्मानेरतिपणुछे तेसर्वत्र शुजवेदनीजवत्तेछे ॥ १४ ॥

अतश्चाक्षेपकज्ञानात् कांताया जोगसन्निधौ ॥ न शुद्धिप्रदयो यस्माधरिजद्रमिद वच ॥ १५ ॥ मायाजस्तत्त्वत पश्यन्नु द्विग्नस्ततोद्रुत॥ तन्मध्ये न प्रयात्येव यथा व्याघातवर्जित ॥१६॥

अर्थ ॥ एहिजकारणमाटे स्वरूपज्ञाननाअभ्यासेंकरी अथवा अन्यवस्तुयेंकरी वस्तुनुपुरवु तेक्षेपककेवाय,तेक्षेपकपणुजेनेनथी, तेनुनामअक्षेपककहियें, ए ज्ञानवंत निश्चेजावनुग्रहणकरनारो ते पुरुषजोकांता जेस्त्रीतेनाजोगनेसन्मुख प्रा होय, तोपणतेहनी शुद्धिनोप्रकर्षरीते क्षयनथाय, एटले ज्ञानशुद्धिते कर्मक्षयनु णछे एयुहरिजद्रसूरीनुवचनछे ॥ १५ ॥ परमार्थदिशायकी सर्वससारने इन्द्र मान देखतोयकोश्यनुद्वेगदिशामावर्त्ते, जेहनेकामजोगमा उद्वेगनथी, ने रागद्वे ते तेयेकरीतेमा तन्मयपणुंनकरे, तेनिरविघ्नपणे यथायोग्येंमोक्षेजजायछे॥१६॥

भोगान् स्वरूपतः पश्यंस्तथा मायादिकोपमान ॥ भुंजानोपि ह्यसंगः सन्प्रयात्येव परं पदं ॥ १७ ॥ भोगतत्त्वस्य तु पुनर्न भवोदधिलंघनं ॥ मायोदकदृढावेशस्तेन यातीह कुपथा ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ जेप्राणी शब्दादिकभोगने परमार्थदिशायें भोगोथको इंद्रजालसमानजाणेते पयादिकने भोगवतोपण तेमाहेंपातोनथी. तेनिश्चयपरमपदजे मोक्षतेनेपामेछे ॥ १७ ॥ निजेनवाभिनंदीप्राणी तेसंसारना भोगनेज तत्त्वकरीमानेछे, तेप्राणीसंसारसमुद्रने लंघीनशके केमके मायारूपउदकनाआवेशे तेप्राणीकुपंथनेविषेजायछे ॥ १८ ॥

स तत्रैव भवोद्विग्नो यथा तिष्ठत्यसंशयं ॥ मोक्षमार्गेपि हि तथा भोगजंबालमोहितः ॥ १९ ॥ धर्मशक्तिं न हंत्यत्र भोगयोगवलीयसी ॥ हंति दीपापहोवायुर्ज्वलंतं न दवानलं ॥ २० ॥

अर्थ ॥ तेप्राणीभोगनो जंबालके० कादवमछतेणेमोहितथयोथको मोक्षमार्गना साथनेविषेपण भवोद्विग्नपणेनिश्चयथकीरहेछे ॥ १९ ॥ धर्मनिसामर्थताने कामभोगनो योग हणीशकतोनथी. केमके धर्मनीसामर्थता घणीबलवत्तरछे दीपकसमान अल्प होयतेनेतोकदापि वायुसमानविषयथोलवीनाखे, पणजाज्वल्यमान दावानलसमान जेम धर्मनी वासना तेने वायुनटीशकतो नथी ॥ २० ॥

वध्यते वाढमासक्तो यथा श्लेष्मणि मक्षिका ॥ शुष्कगोलवद् श्लिष्टो विषयेभ्यो न बध्यते ॥ २१ ॥ बहुदोषनिरोधार्थमनिवृत्तिरपि क्वचित् ॥ निवृत्तिरिव नो दुष्टा योगानुभवशालिनां ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेम श्लेष्मनेविषे माखीलेपाइ फसाइजायछे, तेम विषयनेविषे गाढापणे आसक्तथतां प्राणीबंधाइजायछे. सुकीमृत्तिकानागोलामाजेम माखीफसातीनथी तेम आसक्तिरहितउदासीन एवाजेजीव तेविषयनेविषे बंधातानथी ॥ २१ ॥ जेम रोग ने टालवाने औषधोनीजरूरछे, तेमघणादूषणनो रोधकरवानेअर्थे कचित्अनिवृत्तिपणुं ए दुष्टनथी. जेमकामभोगनी त्यागबुद्धिदुष्टनथी,तेमअनुभवजोगेकरीने सहित जेवर्त्ते तेनिकचित्मात्र अनिवृत्तिछे. तेपण निवृत्तिनीपरेज दुष्टनथी ॥ २२ ॥

यस्मिन्निषेव्यमाणेपि यस्याशुद्धिः कदाचिन ॥ तेनैव तस्य शुद्धिः स्यात् कदाचिदिति हि श्रुतिः ॥ २३ ॥ विषयाणां ततोबंधजनने नियमोस्ति न ॥ अज्ञानिनां ततो बंधो ज्ञानिनां तु न कर्हिचित् ॥ २४ ॥

प्रथमकह्योतेविषयादिकनेनपामग्राथकीससारथी उद्वेगपामवानु ॥५॥ खगर्जितवैराग्यकहियें ॥२॥ देहसबधी मनसबधी जेखेदतेथीउपज्यु, जेद्रा पककेंवृद्धिकारीनथाय, आत्मानीपुष्टिकर्त्तानथाय, केमके तेप्राणीपोताने खावायोग्य धनादिकवस्तुनेपामीने तापसादिपणुंछोडीने पाछुगृहस्थपणुअंगीकारकरे

दुखाद्विरक्ता प्रागेव व्रतिप्रत्यागते पद ॥ अधीराश्च सग्रामे प्रविशतो वनादिक ॥ ३ ॥ शुष्कतर्कादिक किंचि द्वैद्यकादिक मप्यहो ॥ पठंति ते शमनदी नतु सिद्धातपद्धतिं ॥४॥

अर्थ ॥ दु खथकीजेवैराग्यपामेछे, तेतोप्रथमथीज पाछाग्रहस्थावासनीइच्छा दु खटलेतो घरेजइये, जेमअधीरपुरुष जेकायरते सग्रामनेविषे जतोथको मानराइवेसवानीइच्छाकरेछे, तेहनीपरें ॥ ३ ॥ प्राणीयोवादविवाद ग्रंथत्नणेछे,आजीविकानेअर्थे वैद्यकप्रमुखना ग्रथत्नणेछे,पण शमतारसनीनदी सिद्धातनी जेपद्धति तेजणतानथी ॥ ४ ॥

ग्रथपल्लववोधेन गर्वोष्माण च बिभ्रति ॥ तत्त्वात नैव गच्छति प्रशमामृतनिर्झर ॥ ५ ॥ वेषमात्रभृतोप्येते गृहस्थान्नातिशेरते ॥ नपूर्वोत्थायिनोयस्मा न्नापि पश्चान्निपातिन ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जे शमताअमृतना झरणनेपाम्यानथी, तेग्रथनापल्लवमात्रकेंकरीने गर्वनीगरमीनेधरीनेज वर्त्तेछे,पणतत्त्वना रहस्यने पामताजनथी ॥ ५ ॥ धुनावेषमात्रेकरीने पोतानु जीवितव्यपणुराखेछे, तेपणगृहस्थतुल्यजछे, पण न्यारानथी, जेपेआगलउच्छाह धस्योनथी, जेगुणपामिने पडवाइ पण केमकेजे गुणपामीने तजेतेतोपडवाइकेहेवाय, पणएतोकोइवारें पडवाजे छे तेनोगुणनेपाम्याजनथी ॥ ६ ॥

गृहेन्नमात्रदौर्लभ्यं लभ्यते मोदका व्रते ॥ वैराग्यस्यायमर्थोहि दु खगर्भस्य लक्षणं ॥ ७ ॥ कुशास्त्राभ्याससभुतभवनैर्गुण्यदर्शनात्॥मोहगर्भं तु वैराग्यं मत बालतपस्विना ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ अहोघरमातो पुरुअन्नपणनथीमलतु, नेदीक्षालीधायकी तोआहारतेमांहेदीक्षामांखवामा शुडु खछे? एवुजाणीने जेदीक्षालियेछे,तेनुनाम दु खगर्भितजाणवु ॥ ७ ॥ एरीतप्रथम दु खगर्भितवैरागपणुदेखाडयु, हवेमोहगर्भित वै

कुशास्त्रनाअभ्यासथी प्रगटयुंजेसंसारनुं निर्गुणीपणुं तेथीमोहगर्भित वैराग्य छे. तेबालतपस्वी प्रमुखजाणवा ॥ ८ ॥

सिद्धांत मुपजीव्यापि ये विरुद्धार्थभाषिणः ॥ तेषामप्येतदेवे ष्टं कुर्वता मपि दुष्करं ॥९॥ संसारमोचकादीना मिवैतेषां न तात्त्विकाः॥शुभोपि परिणामोय ज्ञातानज्ञान रुचिस्थितिः ॥१०॥

अर्थ ॥ जेसिद्धांतनुंउपजीवन करीनेपण सूत्रविरोधि अर्थकेहेछे, तेप्राणीजो दुष्कर कीकरेछे तोपणतेनेएहोजजाणवो ॥ ९ ॥ संसारना दुःखथीमूकाववाना हेतुथीजे लमानते घोडाप्रमुखने दुःखीदेखी तेनेदुःखथी छोडववाने दयाभावेकरीमारीना , तेपणशुभपरिणामनी बुद्धिराखेछे तेछतांपरमार्थेपापजछे, तेमसोहगर्भितने परमा- डेनही. जोएनो परिणामशुभहोय तोपणपरमार्थे ज्ञाननीरुचिथायनही ॥ १० ॥

अमीषां प्रशमोप्युक्तै दोषपोषाय केवलं ॥ अंतर्निलीनविषम ज्वरानुभवसन्निभः ॥ ११ ॥ कुशास्त्रार्थेषु दक्षत्वं शास्त्रा र्थेषु विपर्ययः ॥ स्वछंदता कुतर्कश्च गुणवत्संस्तवोज्झनं ॥१२॥

अर्थ ॥ जेमअंतरंगमां लीनथइरह्यो एह्वोहाडवेदीज्वर दुःखदाइथायछे,तेमएनेपण प्रशमादिकगुण थाय. तेपण घणुंकरीने केवलदूषणभणीजथाय, पणगुणभणी नहीज- य. केमकेअंतरंग मिथ्यात्वगयाविना वैराग्यतेदुःखदाइछे ॥ ११ ॥ कुशास्त्रनाअर्थने रे डाह्याथाय, नेशास्त्रनाविपरीत अर्थकरे, स्वछंदपणेवर्ते, कोइसायेक्षमाराखेनही, गुणीनी प्रशंसानकरे ॥ १२ ॥

आत्मोत्पर्कः परद्रोहः कलहो दंभजीवनं ॥ आश्रवाछादनं श क्त्युल्लंघनेन क्रियादरः ॥ १३ ॥ गुणानुरागवैधुर्य मुपकारस्य विस्मृतिः ॥ अनुबंधाद्यचिंता च प्रणिधानस्य विच्युतिः ॥१४॥

अर्थ ॥ जेपोतानीमोटाइकरे. पारकोद्रोहकरे, क्लेशकजीआकरे, कपटराखे, पोतानां र ढांके.पोतानुंसामर्थ्य उलंघीने क्रियानोउद्यमकरे,तेआर्त्तध्यानी केहेवाय ॥१३॥ वली गुणीपुरुषोनो रागीनहोय बीजानाकरेलाउपकारने विसरी जाय, तीव्रकर्मबंधनी चि सहितवर्त्ते, अनेशुभअध्यात्मना अध्यवसाय रहितपणेवर्त्ते ॥ १४ ॥

श्रद्धा मृदुत्वमौद्धत्य माधुर्य्यमविवेकिता वैराग्यस्य द्वितीयस्य स्मृतेयं लक्षणावली ॥१५॥ ज्ञानगर्भं तु वैराग्यं सम्यक् तत्त्व परिछिदः॥स्याद्वादिनः शिवोपायस्पर्शिन स्तत्त्वदर्शिनः ॥

अर्थ ॥ श्रद्धा, मृदुता, उद्धतता, मधुरता, अविवेकतापणु एमोहगर्भित परपराजाणवी॥२५॥एरीतेमोहगर्भितवैराग्यनु स्वरूपकह्यु हवे पकहेछे जेसम्यक्त्वेतत्वनीओलखाणकरे, स्याद्वादद्दष्टियेवर्त्ते,मोहनुचितनकरे उपायनेफरसे, अनेतत्त्वदिशा देखवानोअर्थीथाय, तेज्ञानगर्भितवैराग्यजाणवो॥

मीमांसा मासला यस्य स्वपरागमगोचरा ॥ बुद्धि स्यात्तस्य वैराग्यं ज्ञानगर्भ मुदंचति ॥१७॥ न स्वान्यशास्त्रव्यापारे प्राधान्य यस्य कर्मणि ॥ नासो निश्चयसंशुद्धं सार प्राप्नोति कर्म्मण ॥ १८॥

अर्थ ॥ जेहनोविचार पुष्टकारीहोय अनेस्वसिद्धात तथापरसिद्धांतसवनीबुद्धिहोय, तेने वैराग्यनीवातकहियें, अनेएवानेज ज्ञानगर्भित वैराग्यप्रगट थाय॥ जेनेस्वशास्त्र परशास्त्रना व्यापारनु प्राधान्यपणुनथी, तेमज कियानेविषेपण तानथी, तेनिश्चैयकीकियानु निर्मलसारभूतजेफल तेनेस्यारेपणपामेनही॥१८॥

सम्यक्त्वमौनयो· सूत्रे गतप्रत्यागते यत ॥ नियमोदर्शित स्तस्मात् सारं सम्यक्त्वमेव हि ॥ १९ ॥ अनाश्रवफलं ज्ञान मव्युत्थानमनाश्रव ॥ सम्यक्त्वं तद्व्यक्तिरित्येकत्वविनिश्चय ॥ २० ॥

अर्थ ॥ जेसम्यक्त्वतेमौनचारित्रकहियें,अनेचारित्रते मौनसमकितकहियें, चारांगमध्ये गतप्रत्यागककरीने कह्युछे ॥ जंसम्मंतिपासहा तंमोण तेमाटे नियामकतापणुंजाणवु॥सिद्धांतिचरणरहिया दसरणहियानसिज्झति त् तेमाटेसम्यक्त्वतेते सारभूतजाणवु॥१९॥ आश्रवनोत्याग तेज्ञाननुफल, श्रवनुफल तेअव्युत्थान एटलेविषयमा उजमाल नथाय, विषयनोत्यागीहोय निश्चयसम्यक्त्वतकहिये कारकसम्यक्त्वीनी एवीदष्टिहोय, एटलामाटे निश्चयन तिके० प्रीतितेशुद्धचारित्रवतनेजहोय ॥ २० ॥

बहिर्निर्वृत्तिमात्र स्या च्चारित्र्या द्व्यावहारिकात् ॥ अत प्रवृत्ति सार तु सम्यक् प्रज्ञानमेवहि ॥२१॥ एकाते नहि षट्काय श्रद्धानेपि न शुद्धता ॥ संपूर्णपर्ययालाभाद्द यन्न याथात्म्यनिश्चय ॥

अर्थ ॥ बाह्यथीधन, कण, कचन, कामिनीप्रमुख बाह्यवस्तुनोजे त्यागीथाय हारचारित्रना पालवाथी तेप्राणीव्यवहार दष्टियेंजचालेछे अनेजेने सम्यग्ज्ञाननी प्रवृत्तिहोय, तेहनेजअतरग प्रवृत्तिनो सारकहियें ॥ २१ ॥ समस्ततत्त्व नारहितथका एकातेछकायनीरक्षानी श्रद्धाकरताथका सम्यक्त्वनीशुद्धता

संपूर्णनयनीअपेक्षायें द्रव्यार्थिकपर्यायार्थिकनयना लाजविना यथार्थपणानोलाज-
ोजथाय, माटेशुद्धनयनी अपेक्षायेंवर्त्तवुं ॥ २२ ॥

यावंतः पर्यया वाचां यावंतश्चार्थपर्ययाः ॥ सांप्रतानागतातीतास्तावद्द्रव्यं किलैककं ॥ २३ ॥ स्यात्सर्वमयमित्येव युक्तं स्वपरपर्ययैः ॥ अनुवृत्तिकृतं स्वत्वं परत्वं व्यतिरेकजं ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ जेमजगत्मां वर्त्तमान, अनागत, तथाअतीतकालना जेटलाशब्दपर्याय वचन
छे, तथापदार्थनाजेटला अर्थपर्यायछे, ते सर्वपर्यायनिश्चेंथी एकजद्रव्यछे ॥ २३ ॥ जे-
ंके० पदार्थते सर्वस्वपरपपर्यायमयीहोय. तेआवीरीतेंजे, अनुवृत्तिसहजचारी गुणप-
ोत्वंके० स्वपणुंजाणवुं अने परपणुते व्यतिरेकपणेकरीजाणवुं ॥ २४ ॥

ये नाम परपर्यायाः स्वास्तित्वयोगतोमताः ॥ स्वकीया अप्यमी त्याहुः स्वपर्यायविशेषणात् ॥२५॥ अतादात्म्येपि संबंधो व्यवहारोपयोगतः ॥ तेषां सत्वं धनस्येव व्यज्यते सूक्ष्मया धिया ॥२६॥

अर्थ ॥ जेटलापरपर्यायछे, तेसर्वेपोतानीआस्तिक्यताना अजोगथीजाणवा. तेयद्यपि
ानाछे, तोपणगतभावेंछे. अनेपोतानापर्यायतो सामान्यतापणेछे ॥ २५ ॥ परपर्याय
पणतादात्म्यभावेंनथी तोपण व्यवहारनयना जोगथीतेहनो संबंधछे. जेमधननोध
अनेधनते जूदाजूदाछे, तोपणसूक्ष्म बुद्धियेंविचारतां तेमनोसंबंधजणायछे ॥ २६ ॥

पर्यायाः स्युर्मुनेर्ज्ञानदृष्टिचारित्रगोचराः ॥ यथा भिन्ना अपि तथोपयोगाद्वस्तुनोह्यमी ॥ २७ ॥ नोचेदभावसंबंधान्वेषणे का गतिर्भवेत् ॥ आधारप्रतियोगित्वे द्विष्टे न हि पृथग् द्वयोः ॥२८॥

अर्थ ॥ तेमअभिन्नपणे ज्ञाननातथा चारित्रसंबंधीपर्याय मुनिनेपण होय; जोपण
अभिन्नछे, तोपणउपयोगपणेविचारतां निश्चयनयपोतपोतानाजछे, पणव्यवहारेंएक
ात्मानाछे, एमकेहेवाय ॥ २७ ॥ एमजोनकहियें अने अभावनासंबंधथी गवेषणाक
येंतो केवीगतिथाय ? आधारांतरनिरूपकतानेभावें विचारतां, "द्विष्टेविनष्टेद्व्यात्,"
टले पृथक्भावताना द्रूपकरवाथी विणसेअने तेवेहुथीआत्माभिन्ननथी ॥ २८ ॥

स्वान्यपर्यायसंश्लेषात् सूत्रेप्येवं निदर्शितं ॥ सर्वमेकं विदन्वेद सर्वं ज्ञानं तथैककं ॥ २९ ॥ आसक्तिपाटवाभ्यासस्वकार्यादिभिराश्रयन् ॥ पर्यायमेकमप्यर्थं वेत्ति भावाद् बुधोऽखिलं ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ स्वपर्यायअने परपर्यायना संबंधथी सूत्रनेविषे पणएमदेखाड्युंछे, के सघ

लुएकताजावें जाणता, "एनेआया," इत्यादिक सघलुज्ञानते सन्देहनकरी, माटेचित्तनीआसक्तिये अने बुद्धिनीपाटवताये अन्यासकरवाथी पोताना कनेआश्रयताथकी पर्यायना एकअर्थनेजाणीनेपण बुधजेपंडित तेसर्वजाणनेनारो गजाणइ सेसवजाणइ" इतिरचनात् ॥३०॥

अंतरा केवलज्ञान प्रतिव्यक्ति र्न यद्यपि ॥ क्वापि ग्रहणमेकांश द्वार चातिप्रसक्तिमत् ॥ ३१ ॥ अनेकातागमश्र द्धा तथाप्यस्ख लिता सदा ॥ सम्यग्दृशस्तयैव स्यात् सपूर्णार्थविवेचन ॥३२॥

अर्थ ॥ यद्यपिकेवलज्ञाननेविषे तोकाइपणप्रतिव्यक्तिनथी, तोपणकोइठेकाणे अंशनुज ग्रहणकरवुंछे, नेकोइस्थानकें सर्वांशग्रहणकीधोछे ॥ ३१ ॥ गमनी श्रद्धातेअस्खलितपणें सदाप्रवर्त्तेछे, माटेअनेकांतपणुअंगीकारकरताउ म्यक्त्वछे, तथाउत्सर्गअपवाद, निश्चव्यवहारतेनासपूर्णअर्थनोनिश्चयथायछे ॥

आगमार्थोपनयनाद् ज्ञानं प्राज्ञस्य सर्वगं ॥ कार्यादिर्व्यवहा रस्तु नियतोल्लेखशेखर ॥३३॥ तदेकातेन य कश्चिद्विरकस्या पि कुग्रह ॥शास्त्रार्थबाधनात्सोयं जैनाज्ञासस्य पापकृत् ॥३४॥

अर्थ ॥ आगमनाअर्थनु उपनयनजेथापवु तेथकीप्राज्ञजे बुद्धिवंत तेनुं ... र्वव्यापकपणेप्रवर्त्ते, कार्यादिकजेव्यवहारछे, तेतोनिश्चयपणें ... श्रेष्ठरूपकरवाने जेमआलेखकरे तेसरिखाव्यवहारछे, ... श्चयनयछे ॥ ३३ ॥ तेमाटेएकातनय अंगीकारकरीनेप्रवर्त्तनारा ... कहिये, तोवीजामात्र नामधरावनारहोय तेनीतोशीवार्त्ता ? एकनयशास्त्र नोबाधककरता जाणवो तेजोपण जैनाज्ञासछे तोपण पापकारी जाणवो ॥३४॥

उत्सर्गे चापवादेपि व्यवहारेथ निश्चये ॥ ज्ञाने कर्म्मणि वा य चेन्न तदा ज्ञानगर्जता ॥ ३५ ॥ स्वागमेन्यागमार्थाना शत स्येव पराध्यके ॥ तावताप्यबुधत्व चेन्न तदाज्ञानगर्जता ॥३६॥

अर्थ ॥ उत्सर्गमार्गमा, अपवादमार्गमा व्यवहारमार्गमा, निश्चयमार्गमा, ... यनेविषे अनेकियानयनेविषे जोकदाग्रहनथी, तोतेनेज्ञानगर्जितपणुछे, ... पणछे ॥ ३५ ॥ स्वसिद्धांतनाजाणवाथी अन्यशास्त्रनु जाणवुते तेमाजसमाइ जेमपरार्ध्यनाम उत्कृष्टगणितछे, तेमासोनुगणितपण समाइजायछे, अनेतेनु नपामिनेपण जोअज्ञानपणुंरहेतो, तेनेज्ञानगर्जिताविलक्षणनथी एमजाणवु ॥ ३६

नयेषु सार्थसत्येषु मोघेषु परचालने ॥ माध्यस्थ्यं यदि नायातं न तदा ज्ञानगर्भता ॥३७॥ आज्ञयागमिकार्थानां यौक्तिकानां च युक्तितः ॥ न स्थाने योजकत्वं चे न्न तदा ज्ञानगर्भता ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ पोतपोताना स्वार्थनेविषे सघला नयसत्यछे, नेपरमार्थनी चालनानेविषे नि-लछे, अनेतेनयना विवादमांजो मध्यस्थना न आवी तोतेनेज्ञानगर्भताछेजनही॥३७॥ प्राज्ञायाह्यअर्थने आज्ञायें ग्रहेनही, आगमप्रमाणेग्रहवायोग्यने आगमें ग्रहे नही, नेयुक्तिग्राह्यनेयुक्तिवडेग्रहेनही, एमसहुने पोतपोतानेठेकाणे जोडीजाणेनही,तोतेने नगर्भिता मूलथीजनथी एमजाणवुं ॥ ३८ ॥

गीतार्थस्यैव वैराग्यं ज्ञानगर्भं ततः स्थितं ॥ उपचारादगीतस्या प्यभीष्टं तस्य निष्ठया ॥ ३९॥ सूक्ष्मेक्षिका च माध्यस्थ्यं सर्वत्र हितचिंतनं ॥ क्रियायामादरोभूयान् धर्मे लोकस्य योजनं ॥ ४० ॥

अर्थ ॥ उपरकह्या मुजवतो गीतार्थनेज ज्ञानगर्भितवैराग्यछे, पणअज्ञानीनेनथी, गठस्युं. तोपणतेनाउपचारथकी अगीतार्थने पणगीतार्थनीनिष्ठायें ज्ञानगर्भितवै ग्यछे ॥ ३९ ॥ तेमाटेसूक्ष्मदृष्टियें मध्यस्थपणुं अंगीकारकरीने अनेपरदूषण तजीने- वुं, सर्वजगत्नाजीवनुं हितचिंतववु, मैत्रीभावधरवो, क्रियानेविषेघणो आदरकरवो, योगधरवो, अनेधर्ममार्गमां लोकनेजोडवा, एहिजश्रेष्ठछे ॥ ४० ॥

चेष्टा परस्य वृत्तांते मूकांधबधिरोपमा ॥ उत्साहः स्वगुणाभ्यासे दुःस्थस्येव धनार्जने ॥ ४१ ॥ मदनोन्मादवमनं मदसंमर्द मर्दनं ॥ असूयातंतुविच्छेदः समतामृतमज्जनं ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ मुगाने तथाआंधलाने अनेबेहराने बोलवामां देखवामां अनेसांभलवामां गादिकपारकावृत्तांतनेविषे जेणेचेष्टातजीछे; अनेपोताना गुणनाअभ्यास करवामां जे त्साहवंतछे; जेमदरिद्रीधनकमाववानो उद्यमीहोयतेनीपरें उजमालथकोवर्त्ते ॥ ४१ ॥ मनाउन्मादनुं वमनकरनारा,मदनासमूहने टालनारा, ईर्षारूपतंतुनातोडनारा, अने मतारूपअमृत कुंडमांमज्जनकरनारा ॥ ४२ ॥

स्वभावान्नैव चलनं चिदानंदमयात्सदा ॥ वैराग्यस्य तृतीयस्य स्मृतेयं लक्षणावली ॥ ४३ ॥ ज्ञानगर्भमिहादेयं द्वयोस्तुस्वो पमर्दतः ॥ उपयोगः कदाचित् स्या न्निजाध्यात्मप्रसादतः॥४४॥

अर्थ ॥ तथा चिदानंदमयपणाना स्वजावथी सर्वदा चलायमाननही कवंत जेहोय एत्रीजा ज्ञानगर्जित वैराग्यनागुणनी लक्षणावलीकही ॥ ४३ ज्ञानगर्जितवैराग्यतेग्रहवायोग्यछे, अने मोहगर्जितवैराग्य तथा दु... उपमर्दनकरीने पोतानाअध्यात्मजावनाप्रसादथकी कदाचित् ज्ञान... पयोगथाय ॥ ४४ ॥ इतिश्रीवैराग्यजेदाधिकार षष्ठ समाप्त ॥

विषयेषु गुणेषु च द्विधा जुवि वैराग्यमिदं प्रवर्त्तते ॥
अपरं प्रथमं प्रकीर्तितं परमध्यात्मबुधैर्द्वितीयकं ॥ १ ॥

अर्थ ॥ पृथ्वीनेविषे विषयमांअने गुणमांएवेबुप्रकारे वैराग्यप्रवर्त्तेछे राग्यतो अमुख्यपणेकह्योछे बीजोअध्यात्मजावयुक्तगुणवैराग्यतेमुख्यपणेजाणवो

विषयानुपलंजगोचरा अपि चानुश्रविकाविकारिणः ॥
न जवंति विरक्तचेतसा विषधारेव सुधासु मज्जता ॥२॥

अर्थ ॥ जेविषयवैराग्यछेते, प्राप्तिगोचरपणे वर्त्तेछे, पणनिश्चेथी इ... दिकनेविषे आसक्तिकरेनही जेविरक्तचित्तवालाते अविकारीथकाजहोय ध्यात्मरूप अमृतधारानेविषे मज्जनकरताहोय, तेहनेविषनीधाराछुकरनारछे तेहनेकाइविषनीधारापीमा करीशकतीनथी ॥ २ ॥

सुविशालरसालमंजरी विचरत्कोकिलकाकलीजरैः
किमु माद्यति योगिना मनो निजृतानाहतनादसादरं ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ जेयोगीश्वर अनहदनादेसहितछे, तेनेयोगमार्गेकरीने सर्व देहमां "अर्हंपद" अथवा "सोहं"पद अथवाॐकारध्वनि मनमांधरेछे, तेनोब्रह्मद्वारेजेनाद तेनुनाम अनहदनाद कहियें, तेणेकरीजेयुक्तछे तोतेवायोगीश्वरनुमन ... घती आंबानीमंजरीनेविषे विचरतीजे कोकिला तेना मनोहर थशे ? अर्थात्नहीजथशे ॥३॥

रमणीमृडुपाणिकंकणक्कणनाकर्णनपूर्णघूर्णना ॥ अ
नुजूतनटीस्फुटीकृत प्रियसंगीतरता न योगिन ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ स्त्रीनासुकोमल हाथमारह्याजेकंकण तेनोशब्दसांजलीने पूर्णपणे घु... लोचन तेनीअनुजवनदिशारूप नाटककरनारीस्त्रीयें प्रियकारीसंगीतरच ... तेमां योगीश्वरनुमन रंगायनही, एटलेलोजायनही ॥ ४ ॥

स्खलनाय न शुद्धचेतसां ललनापंचमचारुघोलना ॥
यदियं समतापदावली मधुरालापरते न रोचते ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ स्त्रीनीपंचमरागनी घोलनाते समतापदनीश्रेणिना मधुरआलापनी ... गुरूचेतनावंत जोगीनेरुचेनही, एटलेगुरूचेतनावंतने खलनाकारीन... ।

सततंक्षयि शुक्रशोणितप्रभवं रूपमपि प्रियं नहि ॥
अविनाशिनिसर्गनिर्म्मलप्रथमानस्वकरूपदर्शिनः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ अविनाशी सहजनिर्मल अनेविस्तारपामतुं एहवुंजे पोतानुं ... नार योगीश्वरतेनेतोजेनुं निरंतर शीलक्षयथायछे अनेवीर्यनथि... आदिकनुं रूपते प्रियकारीलागतुंनथी ॥ ६ ॥

परदृश्यमपायसंकुलं विषयो यत्खलु चर्मचक्षुषः ॥
न हि रूपमिदं मुदे यथा निरपायानुभवैकगोचरं ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेवोनिरपाय के० जेहनोनाशनथी एहवोअनुभवदृ... ो रूपते परपदार्थके० बीजानेजोवायोग्यछे, तथानाशवंतने... ्वो जेरूप तेजोवाथकीतेनोजेरसते निश्चयनययकी हर्षकारी...

रतिविभ्रमहास्यचेष्टिते ललनानामिह मोदते ...।
सुकृताङ्घिपविप्लवमीषु नो विरतानां प्रसरंति दृ...

अर्थ ॥ रतिसुखनेदेखीने तथास्त्रीनानेत्रविभ्रमनी चेष्टा... ी तेघणोहर्षपामेछे, पणए विभ्रमविलासादिकनो सुकृ... माटेयोगीश्वरनी दृष्टिलेमांरमतीनथी ॥ ८ ॥

न मुदे मृगनाभिमल्लिकालवलीचंदनचंद्र...
उषां निरुपाधिबाधित स्मरशीलेन सुगंधि...

अर्थ ॥ कस्तुरी, मालतीनापुष्प, लवलीके०एलची... ृतखोकोने मग्नकरतीनथी; तेमनेतो निरुपाधिक ... ...थी- ...ेज मग्नपणुवर्तेछे, पणरूपादिकनेविषेमग्नतापणुं ...

उपयोगमुपेति यच्चिरं हरते यन्नविना...
खलु शीलसौरभा दपरस्मिन्निह युज्यं...

अर्थ॥ जे घणाकालसुधी उपयोगमांआवे, ... नथी. एवीजेशीलसुगंधीतेनेमूकी योगी...

मधुरैर्न रसैरधीरता क्व च नाध्यात्मसुधालिहां सतां ॥ अ
रसैः कुसुमैरिवालीनां प्रसरत्पद्मपरागमोदिना ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेम विकस्वरयता जे कमल तेना स्वाद सुगधयुक्त र॰ ... ते निरस कुसुमलपरगतिपामेनही, तेम अध्यात्मरूप अमृतरसनाजोगी ... थीजाशर्करादिक मधुररसनी अधीरजताउपजतीनथी, गृधतापण करेनही ॥११॥

विषमायतिभिर्नु किं रसैः स्फुटमायातसुखैर्विकारिभिः ॥
नवमे नवमे रसे मनो यदि मग्नं सततविकारिणि ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जे आगल कडवा विपाकआपे एवामधुररसेंशुसारु ? वली ... इन्द्रि स्त्रीविपयादिक सुखपाम्याअनेतेपाळांजतारहे तेथीविक्रियाप्रगटे ... शुसारुं? जोसदायअविकारी एवोपूर्णनवमोजेशांतरस तेनेविषे मनमग्न, तो ... एवारसेंशुफायदोथाय ! अर्थात्काइजनही ॥१२॥

मधुरं रसमाप्य निःपतेद्रसनातोरसलोभिना जलं ॥ परि
भाव्य विपाकसाध्वसं विरतानां तु ततोऽक्षिगोर्जलं ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ एकअचरत जुवो,के रसना लालचीजेप्राणी तेमधुररसने जोइने ... खाधानीवात सांभलीने केहेछेके, मारामुखमांपाणीभरायछे एटलेजीभमांथी ... अनेसर्वविरतिजे मुनिराजते मासादिकमधुररसखाये आगलमाठाविपाकम... नाजयनेविचारी बेउआंखेपाणीआणेछे, एटलेआरसमाथी आसुपाडेछे ॥ १३ ॥

इह ये गुणपुष्पपूरिते धृतिपत्नीमुपगुह्य शेरते ॥ विमले सु
विकल्पतल्पके क्व बहिःस्पर्शरता भवन्तु ते ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ ज्ञानचरणकरणादिकजे गुणतेरूपफुलेंपुरीएवी निर्मलजे सुविक॰ ... कुशलतारूपशय्या तेहनेविषे संतोषरूपस्त्रीने आलिंगन देइनेसुएछे, तेमनु ... ते बाह्यस्त्रीना स्पर्शविषेरतकेमथाय ? ॥ १४ ॥

हृदि निर्वृतिमेव बिभ्रतां न मुदे चंदनलेपनाविधिः ॥
विमलत्वमुपेयुषां सदा सलिलस्नानकलापि निष्फला ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हृदयनेविषे निवृत्ति सुखनेधरनारा जेप्राणी तेनेशरीरनाचंदनना ... विधि तेहर्षआपतीनथी तथासदैवनिर्मलजातने धरताजेप्राणी तेनेजलस्नान ... तेनिष्फलजाणवी ॥ १५ ॥

गणयंति जनुः स्वमर्थवत्सुरतोल्लाससुखेन जोगिनः ॥
मदनाहिविषोग्रमूर्छनामयतुल्यं तु तदेव योगिनः ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जोगीप्राणीस्त्रीसाथे विलाससंजोगना सुखेकरी जन्मारोसफलमानेछे. अ योगीश्वरपुरुषतोमदनजेकाम तेनीचेष्टानेसर्पनाविषनी आकरीमूर्छातुल्यमानेछे॥१६॥

तदिमे विषयाः किलैहिका न मुदे केपि विरक्तचेतसां ॥ पर
लोकसुखेपि निःस्पृहाः परमानंदरसालसा अमी ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ वेरागीजीवने आजवमांक्षणिकसुखआपे एवाजेविषय तेनिश्चययकीकांइप पैकारीनथी. केमकेत्यागीप्राणीतोपरलोक जेस्वर्गादिकनांसुख तेनेविषेपण निस्पृहः तेतोमात्रमोक्षसुखनाजअभिलापीछे ॥ १७ ॥

मदनमोहविवादमत्सर ज्वरबाधाविधुराः सुरा अपि॥ विष
मिश्रितपायसान्नवत् सुखमेतेष्वपि नेति रम्यतां ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ गर्वअज्ञानविषादअने मत्सरतेरूपज्वरनी पीडायेंरहितएवाजे देवतातेहना पयादिकसुख तेपणविषमिश्रितदूधपाकनाभोजननीपरें मनोहरकारीनथी ॥ १८ ॥

रमणीविरहेण वन्हिना बहुबाष्पानिलदीपितेन यत् ॥ त्रिद
शैर्दिवि दुःखमाप्यते घटते तत्र कथं सुखस्थितिः ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ केमके स्त्रीनावियोगरूपअग्नि तेआंसुरूप वायरेकरी देदीप्यमानथयो एहवे शोकरूपअग्नि प्रगट्यो,तेथी स्वर्गनादेवतानेपण पीडाथायछे, तेवारेंस्वर्गमांदेवताने सुखनीस्थितिछे एहवुं केमकहेवाय? ॥ १९ ॥

प्रथमानविमानसंपदां च्यवनस्यापि दिवोविचिंतनात् ॥
हृदयं न हि यद्विदीर्यते द्युसदां तत्कुलिशाणुनिर्मितं ॥२०॥

अर्थ ॥ जेने विमानसंपदामोटीछे, एवादेवनानेपण च्यवनवेलायेंजे दुःखप्रगटेछे, दुःखथीदेवतानुं हृदयमात्रफाटतुंनथी, तेनुंकारणजे तेमनोहृदयतेवज्रनापरमाणुयें- थी उत्पन्नकरेलुंछे, तेथीघणुंकठणछे; माटेजफाटतुंनथी ॥ २०॥

विषयेषु रतिः शिवार्थिनां न गतिष्वस्ति किलाखिलास्वपि ॥
घननंदनचंदनार्थिनो गिरिभूमिष्विवरद्रुमेष्विव ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ जेमनिविड नंदनवनना चंदननाविलेपनआशाने पर्वतनीभूमियें अथवा

बीजाकोइपणग्रहेंदरतिथातीनथी, तेममोक्षार्थिने विषयउपर प्रीतियतीनथी,
घ्य तथा स्वर्गप्रमुख समग्रगतिनेविषे पण प्रीतियतीनथी ॥ २१ ॥

इति शुद्धमति स्थिरीकृता ऽपरवैराग्यरसस्य योगिन ॥
स्वगुणेषु वितृष्णतावहं परवैराग्यमपि प्रवर्त्तते ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ एमविचारी शुद्धबुद्धिस्थिरकरीने जेनेबीजावैराग्यनो गुणप्रगट्योछे,
योगीने आत्मगुणनेवधारे एवीवितृष्णाना आगमरूप परमवैराग्यप्रगटथाय ॥२२॥

विपुलर्द्धिपुलाकचारण प्रबलाशीविषमुख्यलब्धय ॥
न मदाय विरक्तचेतसा मनुपगोपनता पलालवत् ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ विपुललब्धि, पुलाकलब्धि, चारणलब्धि, महोटीआशीविषलब्धि,
अनेक लब्धिओजोपणउपजे, तोपण तेवैरागीमुनीने अहंकारजणीथायनहीं,
मुक्तिसुखविना पलालना पुंजरूपतेमानेछे ॥ २३ ॥

कलितातिशयोपि कोपि नो विबुधानां मदकृद्गुणव्रज ॥ अ
धिक न विदत्यमी यतो निजभावे समुदंचति स्वत ॥२४॥

अर्थ ॥ पंडितते कोइ मोटाअतिशयादिगुणना समूह ... तह
अनेतेथीकाइ अधिकतापणनगणे, मात्रपोताना शुद्धस्वभावमाज आनंदपामे

हृदये न शिवेपि लुब्धता सदनुष्ठानमसंगमंगति ॥
पुरुषस्य दशेयमिष्यते सहजानंदतरंगसंगता॥२५॥

अर्थ ॥ पोतानाहृदयनेविषे मुक्तिसुखउपरपण लुब्धतानथी,
सहेजानंदना कल्लोलने मलतीअसंगानुष्ठानरूपपुरुषनी जेदशातेने वांछे,

इति यस्य महामतिर्भवे दिह वैराग्यविलासभृन्मन ॥ उ
पयति वरितुमुच्चकै स्तमुदारप्रकृतिं यश श्रिय ॥२६॥

अर्थ ॥ वैराग्यविलासीपुरुषने एवीबुद्धिउपजेछे, तेनेवाउदारप्रकृतिवाळाने
जेलक्ष्मी तेहपैंपरीने वरवानेइच्छेछे इतिश्रीवैराग्य विषयाधिकार सप्तम

निर्ममस्यैव वैराग्यं स्थिरत्वमवगाहते ॥ परित्यजेत्तत प्राज्ञो
ममतामत्यनर्थदां ॥ १॥ विषये किं परित्यक्तै र्जागर्ति ममता
यदि ॥ त्यागात्कंचुकमात्रस्य भुजगो नहि निर्विष ॥ २ ॥

अर्थ ॥ ममतारहितप्राणीनेज वैराग्यस्थीरपणेरहेछे, तेमाटे बुद्धिवतप्राणं

नयकजे ममतातेनेतजवी ॥ १ ॥ जेमसर्पकांचली काढवाथी विषरहितयतोनथी, जेनेममता जागेछे तेविषयने त्यागकरे, तोपण त्यागीथतोनथी ॥ ४ ॥

कष्टेन हि गुणग्रामं प्रगुणीकुरुते मुनिः ॥ ममता राक्षसी सर्वं भक्षयत्येकहेलया ॥ ३ ॥ जंतुकांतं पशूकृत्य जागविद्यो षधिबलात् ॥ उपायैर्बहुभिः पत्नी ममता क्रीडयत्यहो ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेगुणसमूहनेमुनिराज घणाकष्टेकरीप्रगटकरेछे, तेने ममतारूपराक्षसी एक ळीयेंखाइजायछे ॥ ३ ॥ केवुंआश्चर्यछेके स्त्रियाराज्यनीपेरे ममतारूपस्त्री ते जीवरू धणीने पशुजेमर्कट तेरूपेंकरीने शीघ्रपणेअज्ञानरूप जडीबुटीनाबलथकी घणेंप्र नचावीने रमाडेछे ॥ ४ ॥

एकः परभवे याति जायते चैकएव हि ॥ ममतोद्रेकतः सर्वं संबंधं कल्पयत्यथ ॥ ५ ॥ व्याप्नोति महतींभूमिं वटबीजाद्यथा वटः ॥ तथैकममताबीजा त्प्रपंचस्यापि कल्पना ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एकलुंचेतन परभवेजायछे अनेएकलुंज आभवेंआवेछे, पणममताने वश थ रलादेवीनीपरें मिथ्यासगपण न्यातजातवगेरेनी कल्पनाकरेछे ॥ ५ ॥ जेम एक ना बीजथकी घणीधरतीयें वडव्यापीनेविस्तारपामेछे.तेमएकममताना बीजथकी प्र प्रपंचनी कल्पनाउठेछे ॥ ६ ॥

माता पिता मे भ्राता मे भगिनी वल्लभा च मे ॥ पुत्राःसुता मे मित्राणि ज्ञातयः संस्तुताश्च मे ॥ ७ ॥ इत्येवं ममताव्याधिं वर्द्धमानं प्रतिक्षणं ॥ जनःशक्नोति नोछेत्तुं विना ज्ञानमहौषधं ॥८॥

अर्थ ॥ मातापिता. भाइ. बेन. स्त्री. एसर्वेमाहरांछे; पुत्र. पुत्री. मित्र,एपणमाहरांछे; ाति परिचित एमाहरांछे ॥ ७ ॥ एप्रकारेंममतारूपरोग दिवसेंदिवसें वधतोजायछे, मिटाडवाने कोइपणज्ञानरूप औषधविना समर्थथातोनथी ॥ ८ ॥

ममत्वेनैव निःशंक मारंभादौ प्रवर्त्तते ॥ कालाकालसमुद्यायी धनलोभेन धावति ॥९॥ स्वयं येषां च पोषाय खिद्यते ममता वशः ॥ इहामुत्र च ते न स्यु स्त्राणाय शरणाय वा ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेमवेलाकवेलाउठीने विप्रवेमात्मानोज्जु जेवानेगरो. तेनीपरेंएक ममतायेंक नेनिःशंकपणे आरंभमांप्रवर्त्तेछे. मनपणेतपरें धननेलोभेकरीदोडेछे ॥ ९॥ परभवमां कुटुंब शरणआधारनथी, तोपणकुटुंबनेपोषवानी ममतामां खेदपामेछे ॥ १० ॥

टलेममता तरतनाशपामे आत्मज्ञानीथायत्र ममनाकिहाठेकाणेरहे? ॥ २० ॥
मीपुरुष स्त्रीनोअर्थीथयो, तेस्त्रीपाम्याविना कोइपणठेकाणे रतिनपामे, तेमज
पुरुषपण तत्वपाम्याविना क्यायरतिनपामे ॥ २४ ॥

अत एव हि जिज्ञासा विष्टजति ममत्वधी ॥ विचित्रानि
नयाक्रान्त सभ्रान्त इव लक्ष्यते ॥७५॥ घृतो योगो न ममता
हृता न समताऽऽदृता॥न च जिज्ञासितं तत्व गत जन्म निर
र्थकम् ॥ ७६ ॥ जिज्ञासा च विवेकश्च ममतानाशकावुभौ ॥
अतस्ताभ्या निगृह्णीया देनामध्यात्मवैरिणीं ॥ ७७ ॥

अर्थ ॥ एकारणमाटे तत्वजाणवानी इच्छायेकरी ममतानीबुद्धिजेपदार्थ
प्राणी विचित्रप्रकारनी नय, गम, भग, रचनायें व्याप्योथको ससारना
ने सभ्रातजाणे, पटलेइद्रजालवत्जाणे ॥ ७५ ॥ जेणेजोगपणधर्योनहीं,
पण हणीनही, तथा समतापणआदरीनही, वलीशास्त्रजाणवानी इच्छापणनही
नरजन्मनिष्फलगयो, एमजाणवु ॥ ७६ ॥ एकजाणवानी इच्छा अनेवीवेक
ममताने नाशकरनाराछे तेमाटेएवेहुयकी ममतानो निग्रहकरवो कारणके
अध्यात्मनी दुश्मनछे ॥ ७७ ॥ इतिममता त्यागाधिकार अष्टमसमाप्त ॥

त्यक्तायां ममतायां च समता प्रथते स्वत ॥ स्फटिके गलितो
पाधौ यथा निर्मलतागुण ॥१॥ प्रियाप्रियत्वयोर्यार्थे व्यवहार
स्य कल्पना निश्चयात्तव्युदासेन स्तैमित्ये समतोच्यते ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेसमता आववानो अधिकारकहेछे जेमस्फटिकनेविषे उपाधि
निर्मलतापणुप्रघटे, तेमजेवारें ममतानोत्यागथाय तेवारेंपोतानीमेळे
नरे ॥ १ ॥ ससारनेविषेपोताने अर्थेकोइकामपडे तेवारें एमजाणेके
तेछे,अनेआदुश्मनछे,पणएसर्व व्यवहारकल्पनाछे निश्चयथकीतो ते
अर्थ ॥ यस्यपणुपामे, तेवारेंज तेसमतावत केहेवाय ॥ २ ॥

अनेजो रूपतः पुस स्तेष्वेवार्थेषु रज्यत ॥ निश्चयात्किचि दि
जेलक्षर्वेसत्तु ष्टं वा नैव विद्यते॥३॥एकस्य विषयो य स्यात्स्वाभिप्रा
स्त्रीने मेंतेपण न ॥ अन्यस्य द्वेष्यतामेति स एव मतिभेदत ॥४॥
यदि जोली कल्पनावालोतो जेनेविषेद्वेषलावे तेनेजविषे पोतान
अर्थ ॥ मम लाकर्म निश्चयथकीविचारे, तोएमाकाइ इष्टनथी, तेमअनि

॥ एकविषयजे एककार्यछे तेएकजणने पोतानीरुचियेंपुष्टकारीछे अनेबीजानेतेथीज उपजेछे. एमतिकल्पनानाजेदछे. एमजाणवुं ॥ ४ ॥

विकल्पकल्पितं तस्मा द्द्वयमेतन्न तात्त्विकं ॥ विकल्पोपरमे
तस्य द्वित्वादिवदुपक्षयः ॥५॥ स्वप्रयोजनसंसिद्धिः स्वायत्ता
भासते यदा ॥ बहिरर्थेषु संकल्पसमुत्थानं तदा हतं ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इष्टअनिष्ट ए विकल्पनीकल्पनाथकीछे;एवेनेजरागद्वेषजाणवा. पणएमांकांइ थी जोमनथीविकल्पजाय. तोरागद्वेष एवेहुदूरथाय ॥५॥ पोताना प्रयोजननी- द्ध जेवारेंपोताने स्वाधीनथाय, तेवारेंबाह्यरना अर्थसंकल्पनो उठावनाशपामे ॥६॥

लब्धे स्वभावे कंठस्थस्वर्णन्यायाद्भ्रमक्षये ॥ रागद्वेषानुप
स्थाने समता स्यादनाहता॥७॥जगज्जीवेषु नो भाति द्वैविध्यं
कर्मनिर्मितं॥यदा शुद्धनयस्थित्या तदा साम्यमनाहतं ॥८॥

अर्थ ॥ जेमकंठउपररहेलुं सुवर्ण साक्षात्देखायछे. तेमस्वाभाविकगुण पामेथकेवि- कभ्रमणादूरजाय तेवारें रागद्वेषउठीदूरथाय अनेसमताविशेषेवधे ॥ ७ ॥ जग- जीवनेविषे कर्मनुंविचित्रपणुंछे, माटेतेविभावपणुं सारुंनरतुंकेहेवानीरीतें जेवारेंन , तेवारेंशुद्धनयमां रह्योथको प्रबलसमतानेपामे ॥ ८ ॥

स्वगुणेभ्योपि कौटस्थ्या देकत्वाध्यवसायतः ॥ आत्मारामं म
नो यस्य तस्य साम्यमनुत्तरं॥९॥समतापरिपाके स्या द्विषय
ग्रहशून्यता॥यया विशदयोगानां वासीचंदनतुल्यता ॥१०॥

र्थ ॥ पोतानागुणथकी पोतानोआत्मासाक्षीकरीने पोतानाएकशुद्धअध्यवसाय- आत्मानेविषे जेनुंमनरमेछे, तेनीसमताअनुत्तरकहियें ॥ ९ ॥ एमजेनेपाकीसम- तेनुंविषयरूपघरसुनुंथयुं; एमजेमुनिनेनिर्मल समतायोगप्रगट्यो, तेमुनिनेवांस- कोइछेदे अथवा चंदनेकरीकोइपूजेतो वेहुतुल्यछे. ॥ १० ॥

किं स्तुमः समतां साधो या स्वार्थप्रगुणीकृता ॥ वैराणि नित्य
वैराणा मपि हंत्युपतस्थुषां ॥ ११ ॥ किं दानेन तपोभिर्वा यमैश्च
नियमैश्च किं ॥ एकैव समता सेव्या तरिः संसारवारिधौ ॥ १२॥

र्थ ॥ एवा साधुनीसमतानां शुंवखाणकरियें ? जेणेपोतानाआत्मानी सिद्धिकर- मताआदरी, एहवामुनितें समतारूपघरमांरहेतायका आजवनातथा आगला-

कइकजवतेसर्व जवनानेरजावने टालीनारछे, जेमनित्यपासेजसताथका
जरीके० विलासीतेमनावैरपण शमीजायछे, तेहनीपरेजाणवु ॥ ११ ॥ कार्य
करवाथीशुंथाय? तथाघणीतपस्यायेपण शुंथाय? वलीमौनधारी अती
नकीधेशुंथाय? अने व्रतधारणकरेपणशुंथाय? मात्रएकसमताजे संसाररूपसमुद्र
नौकाजेवीछे, तेनुजसेवनकरवुतेहिजश्रेष्ठछे ॥ १२ ॥

दूरे स्वर्गसुखं मुक्तिपदवी सा दवीयसी ॥ मन संनिहित दृ
स्पष्टं तु समतासुखं ॥ १३ ॥ द्रशो स्मरविष शुष्येत् क्रोधताप
क्षय व्रजेत्॥औद्धत्यमलनाश स्यात् शमतामृतमज्जनात्॥१४॥

अर्थ ॥ देवलोकनासुखतोदूरछे वलीमोक्षपदवीतेतोमोटीछे,
तेवारे मननीपासे प्रगटपणेदेखीयें एवींसमतानुसुखते शुंखोटुछे? ॥ १३ ॥
अमृतकुंडमा स्नानकरवानाप्रजावथी आखयकी कदर्परूपदर्पनु विपसोपाइनार
धरूपताप नाशपामेछे, उद्धताइरूपी मेल तेपणदूरकरेछे ॥ १४ ॥

जरामरणदावाग्निज्वालिते जवकानने ॥ सुखाय समतैके
व पीयूषघनवृष्टिवत् ॥१५॥ आश्रित्य समतामेका निर्वृता
जरतादय ॥नहि कष्ट मनुष्ठानमजूत्तेषा तु किंचन ॥१६॥

अर्थ ॥ जन्म,जरा,मरण,रूप दावानलेंकरीबलतुएवु संसाररूपवनखंड
जेसुखछे, तेअमृतनावरसादसरखुजाणवु ॥ १५ ॥ चित्रशालीमध्ये
लंवता जरतराजाआदि आठपाट केवलपामिने सिद्धथया, पण तेमने
पण करवीपडीनहीं, एहवीएसमताछे ॥ १६ ॥

अर्गला नरकद्वारे मोक्षमार्गस्य दीपिका ॥ समता गुणरत्ना
ना संग्रहे रोहणावनि ॥१७॥मोहाच्छादितनेत्राणा मात्मरूपम
पश्यता ॥ दिव्यांजनशलाकेव समता दोषनाशकृत् ॥ १८ ॥

क्षणं चेतः समाकृष्य समता यदि सेव्यते ॥ स्यात्तदा सुखम
प्यस्य यद्वक्तुं नैव पार्यते॥१९॥कुमारी न यथा वेत्ति सुखं दयित
भोगजं ॥ न जानाति तथा लोको योगिनां समतासुखं ॥ २० ॥

अर्थ ॥ जेप्राणी एकक्षणमात्र मननेखेंचीने समतानेसेवे, तेप्राणीने एहवुंसुख
टे, जेहनोसुखेकहेताथकां पारआवेनही ॥ १९ ॥ जेमकुमारिका भरतारनासुखने
णतीनथी, तेम लोकोपणमुनिराजनी समतानासुखने जाणतानथी ॥ २० ॥

नतिस्तुत्यादिकाशंका शरस्तीव्रः स्वमर्म्मभृत् ॥ समतावर्मगुप्ता
नां नार्त्तिकृत्सोपि जायते ॥ २१ ॥ प्रचितान्यपि कर्म्माणि जन्मनां
कोटिकोटिभिः॥तमांसीव प्रभा भानोः क्षिणोति समता क्षणात् ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेणेसमतानुं बख्तरपेख्युंछे, तेनेनमस्कार, स्तुति, पूजा, लाभ, परद्रव्यनी
आदिरूप जेपोतानाज मर्मनेलागनारा एहवाजेतीक्ष्णबाणो तेपीडाकरीशकतानथी.
२१ ॥ जेमसूर्यकिरणप्रकाशथी अंधकारनाशपामेछे, तेमकोटिकोटि भवना प्राणीनां
विकसंचितजे पापकर्मछेते, समतावडे एकक्षणमांनाशपामेछे ॥ २२ ॥

अन्यलिंगादिसिद्धाना माधारः समतैवहि ॥ रत्नत्रयफलप्राप्ते
र्यथा स्याद्भावजैनता ॥ २३ ॥ ज्ञानसाफल्यमेषैव नयस्थानाव
तारिणः ॥ चंदनं वह्निनेव स्यात् कुग्रहेणतु भस्म तत् ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ जेअन्यलिंगीसिद्धथया तेपण द्रव्यथी मोक्षफलसाधतायका रत्नत्रयनाफ-
लीप्राप्तिवडे भावथीजैनपणुंपाम्या; माटेतेअन्यलिंगीओनेपण समताते एकआधार-
नहति ॥२३॥ जोनयस्थानके उतारीजोइयेंतो, एसमताजज्ञाननुंफलछे; नेजेमज्ञान-
भवनाप शमेछे. तेमसमतारूपचंदनेकरी भवतापशमीजायछे; पणकुग्रहके० कदाग्र-
ग्रज्ञानरूप अग्निवडेतो समतारूपचंदनबली भस्मथायछे ॥ २४ ॥

चारित्रपुरुषप्राणाः समताख्या गता यदि ॥ जनानुधावनावेश
स्तदा तन्मरणोत्सवः ॥ २५ ॥ संत्यज्य समतामेकां स्याद्यत्कष्ट
मनुष्ठितं ॥ तदीप्सितकरं नैव बीजमुप्तमिवोषरे ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ आसंसाररूपगामनेविषे सर्वलोक क्रयविक्रयकरता दोडादोडकरेछे,तेशुंछे ?
कहेछे; केजेवारेंचारित्ररूपीपुरुष मरणपाम्यो. तेवारें समतारूपीप्राणपण उतरया;
थी तेनामृतकार्यनोउत्सव पायरणाल्लानसूतक वगेरे करवानेजाणियेंएलोको दोडा-

दोडकरेठे एमसमजवु ॥ २५ ॥ जेमउखरक्षेत्रमा बीजवाव्यु तेफळदेनहीं, समतानेछोडी जेप्राणीकष्टक्रियाकरेठे, तेनेरूकुफल आगलमललुनथी ॥ २६ ॥

उपाय. समतैवेका मुक्तेरन्यः क्रियाभर ॥ तत्तत्पुरुषभेदेन तस्या एव प्रसिध्ये ॥ २७ ॥ दिङ्मात्रदर्शने शास्त्रव्यापार स्यात दूरगः ॥ अस्या स्वानुभवः पारं सामर्थ्यास्योवगाहते ॥२८॥

अर्थ ॥ मुक्तिनोउपायतो एकसमताछे,बाकीक्रियाकष्ट सर्वेआमबरछे, ते, करी एटलेतपजप सर्वेसमतानी प्रसिद्धिछे,पुरुषभेदते गृहस्थ अने मुनिने शीळ टले क्रियाकरवामा गृहस्थ तथा मुनिनो व्यवहारजुदोछे, पणतेवेभनीक्रिया वखाणवी, एवीशास्त्रनीआज्ञाछे ॥२७॥ शास्त्रनाउपदेशतो जेमकोइआगळीए ताबे, पणपोतेकाइसाथेआवेनहीं, तेमदिशिमात्रने बतावेएवाछे, पण पोतानाअनुभवमांलाभी पोतानेसामर्थ्येकरी पयअवगाहे,तेजनवा

परस्मात् परमेषा यन्निगूढं तत्वमात्मन ॥ तदध्यात्मप्रसादेन कार्योस्यामेव निर्भर ॥२९॥

अर्थ ॥ परपुद्गलादिक वस्तुतेआत्मानानथी, अने देखवाथी ऊठे, आत्मानेविषेआत्मतत्त्व गुप्तछे माटेअध्यात्मने प्रसादेकरी समतानो सकरवो ॥ २९ ॥ इतिसमताधिकार नवम समाप्त ॥

परिशुध्दमनुष्ठानं जायते समतान्वयात् ॥ कतकक्षोदसंक्रातेः कलुषं सलिलं यथा ॥१॥ विषं गरलोऽननुष्ठान तध्देतुर मृत पर ॥ गुरुसेवाद्यनुष्ठान मिति पचविध जगु. ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेम कतकफलना चूर्णनेयोगें कोहलुपाणिनिर्मलथाय, तेम शुद्धअनुष्ठानप्रगटथायछे ॥ १ ॥ विषानुष्ठान, गरलानुष्ठान, अनानुष्ठान, सुष्ठान ने अमृतानुष्ठान एपाचअनुष्ठान गुरुसेवादिक करणीमाकह्याछे ॥ २ ॥

आहारोपधिपूजार्द्धि प्रभृत्याशसया कृत ॥ शीघ्र सच्चित्तहत्वा द्विषानुष्ठानमुच्यते॥३॥स्थावर जगम चापि तत्क्षण भक्षित विषं॥यथा हति तथेदं सच्चित्तमैहिकभोगत ॥४॥

अर्थ ॥ मिष्टान्नभोजननीलालचें, वस्त्रनीलालचे, पूजानीलालचे, जेनप जप कष्टक्रियाकरे, तेक्रियापोताना शुभचित्तनीहणनारीछे एनुनाम विष

णवुं ॥३॥ स्थावरविषते सोमलजाणवुं, अनेजंगमविषसर्पादिकनुंजाणवुं; एवेउमां-
एकविपखाधाथी तरतमरेछे, तेमजोगाभिलाषेंक्रियाकरवी तेशुजचित्तनेहणेछे ॥४॥

दिव्यज्ञोगाभिलाषेण कालांतरपरिक्षयात्॥ स्वादिष्टफल
संपूर्त्तेर्गरानुष्टानमुच्यते ॥५॥यथा कुडव्यसंयोगजनितं ग
रसंज्ञितं ॥ विषं कालांतरे हंति तथेदमपि तत्त्वतः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेदेवेंद्रादिकना सुखपरजवें पामवानीइछाकरीनेतपस्याकरेतेप्राणीकालां
नरकगतिपामे. कष्टकरीने अणदीठांफलनीवांछाकरे तेनेगरलानुष्टानकेहेवुं ॥ ५ ॥
खंगडीचूर्णप्रमुखनिर्बलद्रव्यने संयोगेंप्रगटथतुंविष तेगरलनामाविषकहियें,ते घणा
दस कष्टपमाडीमारेछे, तेमएपणतत्त्वथी नर्कफलनीप्राप्तिकरेछे ॥ ६ ॥

निषेधध्यानयोरेव विचित्रानर्थदायिनोः ॥ सर्वत्रैवानिदान
त्वं जिनेंडैः प्रतिपादितं ॥ ७ ॥ प्रणिधानाद्यज्ञावेन कर्म्मा
नध्यवसायिनः॥ संमूर्छिमप्रवृत्त्याज्ञमननुष्टानमुच्यते ॥८ ॥

अर्थ ॥ अनेकप्रकारें महाअनर्थउपजावे एवांएपूर्वोक्तबेअनुष्टाननो निषेधकरवाने
स्ततीर्थंकरें नियाणुंवर्जवानुंकह्युंछे ॥ ७ ॥ प्रणिधानादिकनेअज्ञावें कर्मजेक्रियातेमां
ध्यवसायरहितके० शून्यपणेसंमूर्छिमनीपरें शून्यमननी प्रवृत्तियें अथवा देखादेखी-
जे क्रियाकरे तेअन्योन्यानुष्टानकहियें ॥ ८ ॥

उंघसंज्ञात्र सामान्यं ज्ञानरूपानिबंधनं॥ लोकसंज्ञा च नि
र्दोषसूत्रमार्गानपेक्षणी ॥ ए ॥ न लोकं नापि सूत्रं नो गुरु
वाचमपेक्षते॥अनध्यवसितं किंचित्कुरुते चौघसंज्ञया ॥१०॥

अर्थ ॥ इहांसामान्यप्रकारें ज्ञानरूपनुंकारणनगवेषे, तेउंघसंज्ञा प्रवाहरूपकहियें.
॥ निर्दोषसूत्रनामार्गनीअपेक्षाविना लोकदेखादेखीयें क्रियाकरे अथवा उपयोग
यथकाजेक्रियाकरे, तेअन्योन्यानुष्ठानछे॥ए॥एटलेलोकनीरीतविना अने सूत्रनी तथा
नावचननीअपेक्षाविना उपयोगशून्यपणे जेकांइकरवुं तेनुंनाम उंघसंज्ञाछे ॥ १० ॥

शुध्दस्यान्वेषणे तीर्थोच्छेदः स्यादिति वादिनां ॥ लोकाचारादर
श्रध्दा लोकसंज्ञेति गीयते ॥ ११ ॥ शिक्षितादिपदोपेतमप्या
वश्यकमुच्यते॥डव्यतो भावनिर्मुक्तमशुध्दस्य तु का कथा ॥१२॥

अर्थ ॥ जोअत्यंतशुद्धमार्ग खोलवाजइयें,तो तीर्थनोउच्छेदथाय. माटेलोकना आ-
रउपरआदर श्रद्धाकरवी, जेमचालेतेम चालवादीजे, एहवांवचनबोलता जेलौकिक

आचारेंप्रवर्त्तें तेनुनाम लोकसंज्ञाछे ॥११॥ अनेशिक्षाग्रहण, आसेवन, तथा प- दार्थें सहित नावशून्यपणेजे आवश्यककरे तेपण द्रव्यआवश्यक कहुछे, गोजेद्र- व्यज करेतेनी तोशीवातकहियें ? ॥ १२ ॥

तीर्थोछेदनिया हंता विशुद्धस्यैव चादरे ॥ सूत्रक्रियाविलोप स्याद्गतानुगतिकत्वत ॥१३॥ धर्म्मोद्यतेन कर्त्तव्य कृत वहुनि रेव चेत्॥तदा मिथ्यादृशा धर्मो न त्याज्य स्यात्कदाचन॥१४॥

अर्थ ॥ जेतीर्थनोउछेदथाय, तेनाजयथी अशुद्धक्रियानेविपे ... गतानुगतिकपणें आदरकरता काइपरमार्थ जाणेनही, अनेज्ञानक्रियानो नाशकरे जेधर्मनाअर्थीयइने एमकहेशो केजेघणाजन करेतेआपणेपण करवु, तो मिथ्यात्वधर्मनापण घणासेवनारछे, माटेतेपण कोइकालेछडाशेनही, एमछलु ॥ १४ ॥

तस्माद्गतानुगत्या यत् क्रियते सूत्रवर्जित ॥ ओघतो लोकतो वा तदननुष्ठानमेव हि॥१५॥ अकामनिर्जराकत्व कायक्लेशा दिहोदितं॥सकामनिर्जरा तु स्यात् सोपयोगप्रवृत्तित ॥१६॥

अर्थ ॥ माटेसूत्रनीशैलीरहितपणे गतानुगतिकपणे ओघसंज्ञायें अथवा लोकसंज्ञायें जेकरवु तेनेअन्योन्यानुष्ठानकेहेवु ॥१५॥ जेअज्ञानपणे कायकष्टकरे, तेनेअकामनिर्ज- राकहेवी, अने उपयोगसहित ज्ञानक्रियाकरवी तेनुनामसकामनिर्जराछे ॥ १६ ॥

सदनुष्ठानरागेण तद्धेतुर्मार्गगामिना ॥ एतच्च चरमावर्त्ते नो नोगादेर्विना नवेत् ॥ १७ ॥ धर्मयौवनकालोय नववालद शापरा॥अत्र स्यात्सक्रियारागो न्यत्र चासत्क्रियादर ॥१८॥

अर्थ ॥ मार्गानुसारीपुरुष शुद्धक्रियानुष्ठाननेरागेकरी जेकरेते तद्धेतुअनुष्ठान था- य तेजेवारेंछेल्लुंपुद्गलपरावर्त्तरहे, तेवारेंजेक्रियाकरे तेअनउपयोगेनकरे, अनु- ष्ठानपणतेवारेंजहोय ॥१७॥ छेल्लेपुद्गलपरावर्त्तेजेवारें तद्धेतुअनुष्ठानप्रगटे, तेवारेंधर्म- यौवनकाल प्रगटथो, अनेससारमावालदिशाइति,तेमटिगइ, एमजाणवु एथशुभ- क्रियानोरागउपजेछे, अनेपूर्वनात्रणअनुष्ठानेअशुद्धक्रियानोआदरउपजेछे ॥ १८ ॥

नोगरागाद् यथा यूनो वालक्रीमाऽखिला ह्रिये ॥ धर्म्मयूनस्त- या धर्म्म रागेणासक्रियाह्रये ॥ १९ ॥ चतुर्थ चरमावर्त्ते तस्मा द्धर्म्मानुरागत ॥ अनुष्ठान विनिर्दिष्टं वीजादिकमसगत ॥२०॥

अर्थ ॥ जेमयुवान्पुरुष नोगनोविलासी थायछे, नेबालक्रीडाथी लजवायछे, तेम यौवन कालवंतपुरुष धर्मनारागेंकरी शुद्धक्रियाथी लजवायछे ॥ १९ ॥ तेमाटे धर्मनाअनुरागथी चरमपुद्गलपरावर्त्तेंजवली तद्धेतुनामेंचोथुंअनुष्टानकह्युंछे, पणवी दिकजेसमकित तेतो असंगके० अप्राप्तछे ॥ २० ॥

बीजं चेह जनान् दृष्ट्वा शुद्धानुष्टानकारिणः ॥ बहुमानप्रशंसा-
भ्यां चिकीर्षा शुद्धगोचरा ॥ २१ ॥ तस्या एवानुबंधश्चाकलंकः
कीर्त्यतेंऽकुरः॥तद्धेत्वन्वेषणा चित्रा स्कंधकल्पा च वर्ण्यतां॥२२॥

अर्थ ॥ इहांसमकीतरूपबीज तो तेवारेंथाय,के जेवारें शुद्धक्रियाकरतांप्राणीने देखीने बहुमानप्रशंसाकरे, अनेआगमविधिरागेंपोतेपण ज्ञानेशुद्धविधिगोचरहोय. तेवारेंसम कितउपजेछे ॥ २१ ॥ एतद्धेतुअनुष्टाननोअनुबंधजे शुद्धप्रणमनते कलंकरहितअंकुर कहियें, अने तद्धेतुअनुष्टाननी खोलकरवी तेनानाप्रकारनो स्कंधकहियें ॥ २२ ॥

प्रवृत्तिस्तेषु चित्रा च पत्रादिसदृशी मता ॥ पुष्पं च गुरुयो
गादि हेतुसंपत्तिलक्षणं ॥ २३ ॥ नावधर्म्मस्य संपत्तिर्या च
सद्देशनादिना॥फलं तदत्र विज्ञेयं नियमान्मोक्षसाधकं ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ तेमध्येप्रवर्त्तवुंतेरूप विचित्रप्रकारनापानडा जाणवां, अने सद्गुरुना योगवडे स्वर्गादिकनीसुखसंपदापामवी तेरूप फुलजाणवां ॥ २३ ॥ जेवारेंगुरुपासे देशनासांनलीने भावधर्मरूप संपदापामे तेफलकहियें; तेफलमोक्षसाधनरूपछे, एमजाणवु ॥ २४ ॥

सहजो नावधर्मो हि शुद्धचंदनगंधवत् ॥ एतद्गर्नमनुष्टा
नममृतं संप्रचक्ष्यते॥२५॥जैनीमाज्ञां पुरस्कृत्य प्रवृत्तं चि
त्तशुद्धितः ॥ संवेगगर्नमत्यंतममृतं तद्विदो विदुः ॥ २६ ॥

अर्थ ॥सहजस्वानाविकजे नावधर्मछे, तेतोचंदननी सुगंधसमानछे. तेसहितजेअनुष्टान क्रियाकरवी तेनुंनाम अमृतानुष्टानछे ॥ २५ ॥ प्रभुनीआज्ञावडे मनशुद्धियेंप्रवर्त्ते तेनेअत्यंतपणे संवेगगुणेसहितहोय तेनेगणधरादिक अमृतानुष्टानकहेछे ॥ २६ ॥

शास्त्रार्थालोचनं सम्यक् प्रणिधानं च कर्म्मणि ॥ कालाद्यंगा
विपर्यासोमृतानुष्टानलक्षणं ॥२७॥द्वयं हि सदनुष्टानं त्रयम
त्रासदेवच ॥ तत्रापि चरमं श्रेष्ठं मोहोग्रविषनाशनात् ॥२८॥

अर्थ ॥ नलीरीतेंशास्त्रना अर्थविचारें, क्रियामध्येवीर्येउल्लासधरे, पंचमकालना

करशे, तेथकीताहरे शुत्रगाक्रयत्रानोठे ? जेमचन्द्रमानिर्मलठे, पणतेनाउदयथी
जीवो अथवाचोरलोकोने अरतिउपजेठे, अनेजगत्नाबीजाजीवोने
ठे, पणतेथीचन्द्रमाने गुणअथवा अवगुणकांईजयतांनथी ॥ २ ॥

रुचितमाकलयन्ननुपस्थितं स्वमनसैव हि शोचति मानव ॥
उपनते स्मयमानमुख: पुनर्जवति तत्र परस्य किमुच्यता ॥३॥

अर्थ ॥ रुडीवस्तुमनमांचितवी मनोरथकीधो, अनेतेमनोरथ निपनोनही,
तेप्राणीपोतानामनमा शोक धरेठे, अनेजेवारें तेधारेलीवस्तुमलेठे, तेवारें
एहर्षशोकनोकर्त्ता आत्माने एकमनजठे, तो बीजायेंमहारुसारुनरसुकल्लु

चरणयोगघटान्प्रविलोठयन् शमरसं सकल विकिरत्यध ॥
चपल एप मन कपिरुच्चके रसवणिग् विदधातु मुनिस्तु किं ॥४॥

अर्थ ॥ मन माकमाजेवुठे केमकेतेचारित्रना योगरूपघृतनाघमाने
तथासमतारूपीअमृतरसनाघमाने ढोलीनाखेठे, एवुएचपल मनते
तेनी आगल मुनिरूप रसवाणीउपनो करनार वाणीयोनिचारोशुकरे ? ॥ ४ ॥

सततकुट्टितसयमजूतलोत्थितरजोनिकरै प्रथयस्तम ॥
अतिदृढश्च मनस्तुरगोगुणैरपि नियन्त्रित एप नतिष्ठति ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीमुनियेंचारित्रेंकरी कर्मरूपीधूलने दाबीनाखीहती, पणमनरूपी
यें नित्यकुदीकुदीने सयमरूपजूमीनुतलियु उखेड्यु, तेथीकलुपतारूप
हनासमूहेंकरी अज्ञानरूपअधकारथयो, एवोअतिआकरो एमनरूपघोडोठे,
पीदोरडेवधायोठतो तोफानकरेठे, पणसमोरहेतोनथी ॥ ५ ॥

जिनवचोघनसारमलिम्लुच कुसुमसायकपावकदीपक ॥
अहह कोपि मन पवनो वली शुज्रमतिद्रुमसततिजगकृत् ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एककौतुकजुवोके मनरूपीवायुमहाबलवान्ठे केमके रुडीबुद्धिरूपा
जागीनाखेठे तथा जिनवचनरूप घरासनोचोरठे, वली कदर्परूपअग्निनोदीपावनार

चरणगोपुरजंगपर स्फुरत्समयवोधतरूनपि पातयन् ॥ भ्रमति
यद्यतिमत्तमनोगज क्व कुशल शिवराजपथे तदा ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीमनरूपहाथीठे, तेचारित्ररूपनगरना दरवाजा जागतोयको भ्रमतो है

ंतनावोधरूपीवृक्षनेपण पाकतोथकोजमेछे. एवोमदोन्मत्त मनरूपीहाथी दोडादोड रेछे, तेवारेंसाधुने मोक्षमार्गंजतां कुशलतातेक्यांथीहोय? ॥ ७ ॥

व्रततरून्प्रगुणीकुरुते जनो दहति दुष्टमनोदहनः पुनः ॥
ननु परिश्रम एष विशेषवान् क्व भविता सुगुणे पवनोदये ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेसाधुछे तेव्रतरूपीवृक्षों फलीवाकीने चेतनज्ञानअमृतरसवडे सींचीनेनव-व्रवकरेछे; पणदुष्ट मनरूपजेअग्नितें वली बाकीनेबालीनांखेछे; तोरूमागुणरूपवाकीमां गुरूपवायरानेउदयें मुनिनीमेहनततेकेमकरीने सफलथाय? ॥ ८ ॥

अनिगृहीतमना विदधत्परां न वपुषा वचसा च शुभक्रियां ॥
गुणमुपैति विराधनयाऽनया वत दुरंतभवभ्रममंचति ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ एकमननो निग्रहकस्याविना वचनेतथाकायायें जेटलीशुभक्रियाकरे तेउप-गशून्यतायें अविधियेंकरे, अनेतेअविधिनोकरनारो तोअवश्यसूत्रनेविषेविराधकपणनोवि-धककह्योछे; माटेतेगुणनकरे. जेमनशून्य मने क्रियाकरनारो तेविराधकछे, माटेशुन्य-क्रियाकरतो विराधकपणे संसारनेविषेघणा भवभमशे ॥ ९ ॥

अनिगृहीतमनाः कुविकल्पतो नरकमृच्छति तंडुलमत्स्यवत् ॥
इयमभक्षणजा नहि जीर्णताऽनुपनतार्थविकल्पकदर्थना ॥ १० ॥

अर्थ ॥ मनवशकिधाविनाजे तपजपकरे, वलिमनमां कुविकल्पघणाथाय तेथीतेतंडुल-मच्छनीपरें नरकेंपरूे. एकुविकल्पकरतोथको जो उपवासकरे, तपकरे, तेथीतेनेमात्रअजी-र्णथाय; केमकेअणपाम्याअर्थनो विकल्पकरे, तेनीकदर्थनाअजीर्णनुंकारणछे ॥ १० ॥

मनसि लोलतरे विपरीततां वचननेत्रकरेंगितगोपना ॥
व्रजति धूर्त्ततया ह्यनयाखिलं निविमृदंभपरेर्मुषितं जगत् ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जोमनचपलछे तो, वचनगुप्तिकरेतथानेत्रनेगोपवे इंगितआकारचेष्टाविना-कायोत्सर्गकरे, तेसर्वविपरीतजाणवुं. तेसर्वधुर्त्तपणानेपामे अनेएवीरीतेंधुर्त्तपणे कपटक्रि-यानाकरनारा तेमोटाचोरछे, तेजगत्नेलुटनाराछे ॥ ११ ॥

मनसएव ततः परिशोधनं नियमतोविदधीत महामतिः ॥
इदमभेषजसंवननं मुनेः परपुमर्थरतस्य शिवश्रियः ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेमननेभलिरीतें निश्चययकी शोधनकरे, तेजपंक्तिननेमनोशुद्धिरूपचूर्ण-छे; अनेपरमपुरुषार्थनेविषे राताजेमुनि तेनेमुक्तिस्त्रीने वशकरवानुं औषधछे ॥ १२ ॥

प्रवचनाब्जविलासरविप्रना प्रगमनीरतरंगतरंगिणी ॥
हृदयशुद्धिरुदीर्णमदज्वरप्रसरनाशविधौ परमौषध ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ सिद्धांतरूपकमलने विकसितकरवाने मनशुद्धिते सूर्यकांतिरूपछे, उपशम रूप जलकल्लोलवधारवाने मनशुद्धितेनदीरूपछे, वलीप्रसरतोथको एहवो मदरूपनेना प तेनेटालवाने मनशुद्धितेपरमसुदर जडीबुटीनु औषधछे ॥ १३ ॥

अनुनवामृतकुंमनुत्तरव्रतमरालविलासपयोजिनी ॥
सकलकर्मकलंकविनाशिनी मनस एव हि शुद्धिरुदाहृता ॥१४॥

अर्थ ॥ वलीमनशुद्धि अनुजवनो मोटोअमृतकुंडछे, तथाचारित्ररूपहंसने रमवाने कमलिनीछे, अनेसर्वकर्मकलंक हरवाने अग्निसमान मनशुद्धिनेकहीछे ॥ १४ ॥

प्रथमतो व्यवहारनयस्थितोऽशुनविकल्पनिवृत्तिपरो नवेत् ॥
शुनविकल्पमयव्रतसेवया हरति कंटक एव हि कंटकं ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ प्रथमथी व्यवहारनयेरह्यो एहवोजेपुरुषते अशुनविकल्पनी निवृत्ति जेना थकी थाय तेनेविषे तत्परथइने शुनविकल्पमयजेव्रत तेनीसेवाकरे, तेथीअशुनपणुटली जाय जेमकांटाथकी कांटोनीकलीजायछे तेनीपरें ॥ १५ ॥

विषमधीत्य पदानि शनैः शनैर्हरति मंत्रपदावधि मांत्रिकः ॥
नवति देशनिवृत्तिरपि स्फुटा गुणकरी प्रथमं मनसस्तथा ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जेममंत्रवादीपुरुष मंत्रपदसमाप्तिसुधी मंत्रनाशब्द धीमेधीमे मनमा नणे, पण सर्पना विषनेटाले, तेमजेदेशथी निवृत्तिकरेतेपणप्रगटपणेप्रथम मनने गुणकारीथाय॥१६॥

स्फुटमसद्विषयव्यवसायतो लगति यत्र मनोऽधिकसौष्ठवात् ॥
प्रतिकृतिं पदमात्मवदेव वा तदवलंबनमत्र शुनं मतं ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ जेदेखताज नथलोथनेजुडो एहवोजेविषय तेनाव्यापारथी जेनरतु चित्तघणी चतुराइथी जेवस्तुनेविषेलागे तेवस्तुआत्मानेसाथें जोडीये तेवारें तेनुप्रतिबिंबजाणे, पणते आत्मधर्मनही, तोपणअध्यात्मरीतें तेनुजअवलंबन रुडुकह्युछे ॥ १७ ॥

तदनु कांचन निश्चयकल्पना विगलितव्यवहारपदावधि ॥
न किमपीति विवेचनसंमुखी नवति सर्वनिवृत्तिसमाधये ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ पछीकांड्क निश्चयकल्पनायइ, अने व्यवहारपदनीमर्यादागलितथइ. "एगोहं-नथिमेकोई". एवीवेचणचेतनासन्मुखथइ, तेवारें सर्वेनिर्वृत्तिरूपसमाधिथाय ॥ १७ ॥

इह हि सर्वबहिर्विषयच्युतं हृदयमात्मनि केवलमागतं ॥
चरणदर्शनबोधपरंपरा परिचितं प्रसरत्यविकल्पकं ॥ १ए ॥

अर्थ ॥ जेवारें सर्वे बाह्यविषयथीहृदयखस्युं, तेवारेंपोताना आत्मानेविषे केवलए-कज ज्ञान, दर्शन, चारित्रनाबोधनी परंपराजे आत्मकुटुंबछे, तेनोमिलापते निर्विक-ल्पपणें प्रसरे. उंलखाणथाय एमजाणवुं ॥ १ए ॥

तदिदमन्यदुपैत्यधुनापि नो नियतवस्तुविलास्यपि निश्चयात् ॥
क्षणमसंगमुदेति निसर्गधी र्द्वैतबहिर्ग्रहमंत रुदात्तता ॥ २० ॥

अर्थ ॥ निश्चयनयथकी एआत्माते खरीशुद्धवस्तुनो विलासीछे, तेमाटे इमणा अ-न्यजे रागद्वेषादिजाव तेनेनपामे; वलीक्षणमांपण जेपरपुद्गलादिकनोसंगनकरे, एवी स्वाजाविकबुद्धि जेनेथइ तेथीबाह्यजाव हण्यो, अनेअंतरंग उत्कृष्टजावने पाम्यो ॥२०॥

कृतकषायजयः सगजीरिमा प्रकृतिशांतमुदात्तमुदारधीः ॥
समनुगृह्य मनोनुजवत्यहो गलितमोहतमः परमं महः ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ एहवोजेगंजीर स्वजाववालो, जेणेकषायनो जयमेलव्योछे, अनेजेनीबुद्धिमो-टीछे. अनेस्वजावें शांतछे, तेजोसम्यक्प्रकारें मननोनिग्रहकरे, तोतेथीमोहांधकारने-गालीने परम महातेजस्वीपणानो तेप्राणीजरूर अनुजव पामे ॥ २१ ॥

गलितदुष्टविकल्पपरंपरं धृतविशुद्धिमनो जवतीदृशं ॥ धृतिसु-
पेत्य ततश्च महामतिः समधिगच्छति शुज्रयशःश्रियं ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेणे मागविकल्पनी श्रेणिटालीछे अनेजेणेविशुद्धतानुं ग्रहणकीधुंछे, तेम-नोशुद्धिनेपामे, अनेतेवली संतोषीपणानेपामिने तेपंडितपुरुष उज्ज्वलयशरूपलक्ष्मी अथवा यशशोजानेपामे ॥ २२ ॥ इतिमनशुद्धिनामा एकादशोधिकारः समाप्तः ॥

इतिश्रीपंडित यशोविजयेन विरचितेऽध्यात्मसारप्रकरणे
तृतीय.प्रबंधः ॥ २७ आठमाना २ए नवमाना ३ए
दसमाना २२इग्यारमाना सर्वश्लोक ११७.

मनशुद्धिश्च सम्यक्त्वे सत्येव परमार्थत ॥ तद्विना मोहगर्भा सा
प्रत्यपायानुबंधिनी ॥ १ ॥ सम्यक्त्वसहिता एव शुद्धा दानादि-
का क्रिया. ॥ तासा मोक्षफले प्रोक्ता यदस्य सहकारिता ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एपूर्वेमनशुद्धिकही, तेजोसम्यकत्वगुणहोयतो, निश्चे मनशुद्धि केहेवाय प
सम्यकत्वविनाजे मनशुद्धिमाने, तेमोहगर्भितहोय, एटलेअज्ञानसहितहोय तेतो
टीकष्टवधन करनारीछे माटेहवेसम्यकत्वनो अधिकारकहेछे॥ १ ॥ दानादिकक्रिया
ए सम्यकत्वसहितहोय, तोजशुद्धछे, तेक्रिया मोक्षफललेवाने सहायकारकछे ॥ २

कुर्वाणोपि क्रिया ज्ञातिधनभोगास्त्यजन्नपि ॥ दुखस्पोरोददा
नोपि नाधेजयति वैरिण ॥ ३ ॥ कुर्वन्निर्वृत्तिमप्येवं कामभोगा
स्त्यजन्नपि ॥ दुखस्पोरोददानोपि मिथ्यादृष्टिर्न सिध्यति ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेमआधलो वेरीनेजीतीशकतोनथी, तेमक्रियाकरेछे, न्यातिधननो त्या
तजेछे, दुखसहेछे, कायानेकष्टआपेछे, पणएसर्वं सम्यकत्वविना व्यर्थजायछे ॥ ३
जोसतोषधरे,कामभोगछोडे,कायानेकष्टआपे,तो पणमिथ्यात्वीथको मुक्तिनेपामेनही॥४

कनीनिकेव नेत्रस्य कुसुमस्येव सौरभं ॥ सम्यक्त्वमुच्यते सार
सर्वेषां धर्म्मकर्म्मणा ॥५॥ तत्त्वश्रद्धानमेतच्च गदित जिनशास
ने ॥ सर्वे जीवा न हतव्या सूत्रे तत्त्वमितीष्यते ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमआखमा कीकीसारभूतछे, फूलमासुगध सारभूतछे, तेमसर्वधर्मक्रिय
मा सम्यक्त्वते सारभूतकह्युछे ॥ ५ ॥ जिनशासननेविषे जेतत्त्वनीश्रद्धाकरवीतेन
सम्यक्त्वकह्युछे, अनेकोइपणजीवने हणवोनही तेनेसूत्रमा तत्त्वकह्युछे ॥ ६ ॥

शुद्धोधर्मोयमित्येत धर्म्मरुच्यात्मक स्थित ॥ शुद्धानामिदमन्या
सा रुचीनामुपलक्षण ॥ ७ ॥ अथवेद यथातत्त्व माज्ञयैव तथा
ऽखिलं ॥ नवानामपि तत्त्वाना मितिश्रद्धोदितार्थत ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेशुद्धधर्मते एधर्मरुचिनामा सम्यक्त्वनेज कहियें, अनेएमध्ये उपल
क्षणथी बीजीपणशुद्धपदार्थनीरुचिउत्पन्नथायछे ॥ ७ ॥ अथवाएसम्यक्त्वते जेमप्रभुआज्ञा
रूप तत्त्वेप्रगटछे, तेनतत्त्वतोजीवादिकनवप्रकारेछे, तेनीजेश्रद्धा तेसम्यक्त्वजाणवु ॥ ८ ॥

इहैव प्रोच्यते शुद्धा ऽहिंसा वा तत्त्वमित्यतः ॥ सम्यक्त्वं दर्शितं सूत्रप्रामाण्योपगमात्मकं ॥९॥ शुद्धाऽहिंसोक्तितत्सूत्र प्रामाण्यं ततएव च ॥ अहिंसा शुद्धधीरेव मन्योन्याश्रयधीर्न तु ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वलीइहां तत्त्वते अहिंसारूप शुद्धतत्त्वछे. तेतत्त्वशुद्धाचारप्रमाणे विचारियें. तेवारें आत्माने अभिन्नस्वरूपें सम्यक्त्वदेखाडयुंछे ॥९॥ अने शुद्धिअहिंसाकही ते सूत्रेप्रमाणछे; एवेहुनीमात्रवचनेजजुदाइछे. तेमाटेएकअहिंसा तथावीजीतत्त्वशुद्धि एवेहुने माहोमाहें मेलवतां दूषणनथी; एकस्वरूपेंछे ॥ १० ॥

नैव यस्मादहिंसायां सर्वेषामेकवाक्यता ॥ तद्धुद्धतावबोधश्च संभवादिविचारणात् ॥ ११ ॥ यथा ऽहिंसादयः पंच व्रत धर्म यमादिभिः ॥ पदैः कुशलधर्माद्यैः कथ्यंते स्वस्वदर्शने ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ केमके अहिंसानेविषे सर्वनी एकवाक्यतानथी, तोपणविचारीजोतां शुद्ध अवबोध जणायछे ॥ ११ ॥ जेमअहिंसादिक पांचव्रततेधर्मछे, तेमसर्वपोतपोताना दर्शननेविषे कुशलयकाधर्मआदेदेइ यमादिकपदेंकरीने व्रतकहेछे ॥ १२ ॥

प्रादुर्भावव्रतास्तत्र व्रतोपव्रतपंचकान् ॥ यमांश्च नियमान् पाशुपतान् धर्मान् दशाभ्यधुः ॥१३॥ अहिंसा सत्यवचन मस्तैन्यं वा प्यकल्पना ॥ ब्रह्मचर्यं तयाक्रोधो ह्यार्जवं शौचमेव च ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ तेमांभावव्रतवाला एमबोलेछे, के पांचव्रतअने पांचउपव्रत मलीनेदशछे. एमपाशुपतमतवाला दशप्रकारें धर्मदिशा मानेछे. तेयमनियमादिक दश कही बतावेछे ॥ १३ ॥ दया, सत्यवचन, अचोरी, अकल्पना, अनेब्रह्मचर्य एपांच यम तथा अक्रोध. सरलता. शौच. संतोष, गुरुसेवा, एपांचनियमजाणवा ॥ १४ ॥

संतोषो गुरुशुश्रूषा इत्येते दश कीर्तिता. ॥ निगद्यंते यमा सांख्यै रपिव्यासानुसारिभिः ॥ १५ ॥ अहिंसा सत्यमस्तेन्यं ब्रह्मचर्यं तुरीयकं ॥ पंचमो व्यवहारश्चेत्येते पंच यमाः स्मृताः ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ संतोष,गुरुसेवादि एदशधर्मदशाकहेवाय. हवेवेदव्यासना मतानुसारी सांख्यमतवालापणयम नियमएमकहेछे १५ दया.सत्य,अचोरी,ब्रह्मचर्य व्यवहार एपांच यमजाणवा

अक्रोधो गुरुशुश्रूषा शौचमाहारलाघवं ॥ अप्रमादश्च पंचेति नियमाः परिकीर्तिताः ॥ १७ ॥ बौद्धैःकुशलधर्माश्च दशेष्यंते य दुच्यते ॥ हिंसास्तेयान्ययाकामं पैशुन्यं परुषानृतं ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ अक्रोध, गुरुसेवा, शौच, अल्पआहार, अप्रमाद, एपाचनियमकह्या ॥ १७ ॥ अनेबौद्धदर्शनमाजेकुशलछे तेधर्मजाला पणदशप्रकारेंकहेछे, तेमकहियेंछे हिंसा, चोरी, कदर्प, चाडी, कठोरवचन अने जुठुबोलवु ॥ १८ ॥

सभिन्नालापव्यापाद मभिध्याद्दगविपर्यय ॥ पापकर्मेति दश
धा कायवाङमनसै स्त्यजेत् ॥ १९ ॥ ब्रह्मादिपदवाक्यानि ता
न्याहुर्वैदिकादय ॥अत सर्वैकवाक्यत्वा द्धर्मशास्त्रमदोर्थक॥२०॥

अर्थ ॥ जेमतेमबकवु, मारवु, अब्रह्मसेववु, दृष्टिविपर्यास, एदशप्रकारे पापकर्म मन, वचन अने काया एत्रणेयोगेंकरीत्यजवा ॥ १९ ॥ अने वैदिकादिकमतवाला पण ब्रह्मादिपद बोलेछे, जेसर्वत्रब्रह्मपदछे, एथीएसर्वधर्मवालाना एकवचनछे माटे सार्थक पणे सर्वेनेधर्मशास्त्रकहियें ॥ २० ॥

क्वचैतत्सम्भवोयुक्त इति चिंत्य महात्मना॥शास्त्र परीक्षमाणेना
व्याकुलेनांतरात्मना ॥ २१ ॥ प्रमाणलक्षणादेस्तु नोपयोगो
त्र कश्चन॥तन्निश्चये ऽनवस्थाना दन्यथार्थस्थिते र्यत ॥२२॥

अर्थ ॥ तेमाटेएसर्वदर्शननोसम्भवकिहा ठेकाणेछे, एसमोटा पुरुषेंचिंतववु, तेशास्त्रनी परीक्षावालायें विचारवु, तेवलीअव्याकुलपणे अंतरात्मावडे विचारवु ॥ २१ ॥ इहाप्रमाणलक्षणादिकथकी कशोएउपयोग कार्यकारीनथी, जिहाअन्यथा अर्थपणे एटलेतेधर्म जुदोथइजाय अनेधर्मतो एकस्वभावरूपछे ॥ २२ ॥

प्रसिद्धानि प्रमाणानि व्यवहारश्च तत्कृत ॥ प्रमाणलक्षणस्यो
क्तौ ज्ञायते न प्रयोजन ॥२३॥ तत्रात्मा नित्यएवेति येषामेकांत
दर्शन ॥ हिंसादय कथ तेषां कथमप्यात्मनोव्ययात् ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ अनेचारप्रमाणतो प्रसिद्धछे, व्यवहारपणतेजकह्योछे, माटेप्रमाण तथा लक्षणनीयुक्तिविषे प्रयोजनजणातुनथी ॥ २३ ॥ तेमध्येचेनयेंकरी आत्मानित्यज एवुएकांतमतवालानु कहेवुछे, तेनेमतेतोहिंसादिकनथी केमके आत्माअविनाशीछे तेकोइवारेंमरेनही, अनेमरेनही, तेवारेंहिंसापणशानी ? ॥ २४ ॥

मनोयोगविशेषस्य ध्वंसोमरणमात्मन ॥ हिंसा तच्चेन्न तत्वस्य
सिद्धेरार्थसमाजत ॥ २५ ॥ नेति बुद्धिगता दु खोत्पादरूपेयमा
चिती ॥ पुंसि भेदाग्रहात्तस्या परमार्थोऽव्यवस्थित ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ सघलेमरणे मनोयागनाशपामेछे. तेवारेंलोककहेछेके जीवमुवो; पण आत्मानो मरनोनथीः माटेतत्त्वथकी आत्मानीहिंसानथी. एअर्थघटमानछे. एमकहेछे. ॥ २५ ॥ कोइजाणशेजे आगल दुःखउपजाववानीजेबुद्धितेहनेहिंसाकहियेंः पणएवात योग्यनथी. केमकेतमे बुद्धिनेतो पुरुषभेदआग्रहथकी आत्माथीभिन्नमानोछो, तेथीपण आत्मानी हिंसानथइ. केमकेपरमार्थे बुद्धिने आत्मासाथें व्यवस्थानथी ॥ २६ ॥

न च हिंसापदं नाशपर्यायं कथमप्यहो ॥ जीवस्यैकांतनित्यत्वे नुभवाबाधकं भवेत् ॥ २७ ॥ शरीरेणापि संबंधो न तद्योगाद्विवेचनात् ॥ विभुत्वेनैव संसारः कल्पितः स्यादसंशयं ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ एकांतेनित्यपणे जीवनोनाशथवानोजे पर्याय तेहिंसापदकहेवाय; तेहने अहोइति आश्चर्य ' अनुभवअबाधकपणेनहोयशुं? होयज. इतिकाकोक्ति ॥ २७ ॥ नित्यपणे शरीरेंकरीने पण संबंधनथी; केमके तेनायोगनी वेहेंचणनथी, माटेसंशयरहितपणें ईश्वरवकेकरीनेज ईश्वरकर्त्ता इत्यादिकसंसारकल्प्योछे ॥ २८ ॥

आत्मक्रियां विना च स्या न्मितानुग्रहणं कथं॥कथं संयोगभेदादि कल्पनाचापि युज्यते ॥२९॥ अदृष्टाद्देहसंयोगः स्यादन्यतरकर्म्मजः ॥ इत्थं जन्मोपपत्तिश्चे न्न तद्योगविवेचनात् ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ एकआत्मक्रियाविना एटले आत्माना व्यापारविना परिमितपरमाणुनुंग्रहण केमथाय ? वली संयोगवियोगादिकनी कल्पनापणकेमघटे " ॥२९॥ एमसांभलीने कोइबोल्योके हरकोइकर्मथी पूर्वसंस्कारदिठाविना शरीरनोसंयोगथायछे; तेनोउत्तरआपेछे एमजन्मनी उत्पत्तिते जीवनाव्यापारविना,वेचणविनाथायनही, इतिभावार्थ.॥३०॥

कथंचिन्मूर्त्ततापेति विना वपुरसंक्रमात् ॥ व्यापारयोगतश्चैव यत्किंचित्तदिदं जगुः ॥३१॥ निःक्रियोऽसौ ततोहंति हन्यते वा न जातुचित् ॥ किंचित्केनचिदित्येवं न हिंसास्योपपद्यत ॥३२॥

अर्थ ॥ शरीरनेसंयोगेतो जीव कांइकरूपीपणुंपामेछे. जोशरीरनो संक्रमनहोयतो जेकांइछे तेइहांकहेछे ॥ ३१ ॥ जेणेआत्मात्यागीकीधोछे, तेएमकहेछेके आत्माक्रिया रहितछे; माटेकोइनेहणतोनथी; तेमकोइकालें कोइथीहणातोपणनथी; एवुंजेनाचित्तमांछे तेहिंसानहीमाने ॥ ३२ ॥

अनित्यैकांतपक्षेपि हिंसादीनामसंजव ॥ नागहेतोरयोगेन क्षणिकत्वस्य साधनात् ॥ ३३ ॥ न च संतानजेदस्य जनकोहिंसकोजवेत् ॥ सावृतत्वादजन्यत्वात् जावत्वनियत हि तत् ॥३४॥

अर्थ ॥ एमएकांते अनित्यवादिनेपक्षे हिंसानथीमनाती केमके, तेसर्वपदार्थ क्षण रूपमानेछे माटेआत्माक्षणमां नाशरूपछे, तेपोतानीमेळेजमरेछे, तेवारें मारनार हेतुक ऽनथी माटेहिंसानथीज ॥ ३३ ॥ पुत्रपुत्रीप्रमुखनो कोइव्यापनथी, तेमकोइ मारना पणनथी, एजगत्सर्वक्षणिकजावनोनियमछे, अनित्यछे, माटेकोइ प्रगटकरनार न तेवारेंपिताकोनो अनेपुत्रकोनो ? ॥ ३४ ॥

नरादि क्षणहेतुश्च सूकरादेर्न हिंसक ॥ सूकरात्यक्षणेनैव व्यजिचारप्रसगत ॥ ३५ ॥ अनंतरक्षणोत्पादे बुधलुब्धकयोस्तुला ॥ नैव तद्विरति क्वापि तत शास्त्राद्यसंगतिः ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ मनुष्यक्षणमात्रछे अनेपछेसुअरनामरणने अतकाळनाक्षणमा तेमनुष्यनथी माटेसूअरने मारनारकोणछे, एहवाबोलनारनेपणप्रसगथी व्यजिचारयावेछे ॥ ३५ ॥ तथासूअरनेमार्युं अनेमरणनेबीजेसमयें ज्ञानीतथाआहेडी एबेसरिखाछे सूअरम णपाम्यु, तेएवेजपणेजाण्यु, माटेहवे एबेमाथीकोइने मारवानीमतिनथी तेमाटे मा नारतथामरनार सर्वनाक्षणेक्षणे उत्पत्ति तथा मरणछे, पण कोइक्षणे काइविरतिनथी एमकहेछे, एमतवाळाना शास्त्रपणजुगछे ॥ ३६ ॥

घटते न विनाऽहिंसा सत्यादीन्यपि तत्त्वत ॥ एतस्यावृत्तिजूतानि तानि य जगवान् जगौ ॥ ३७ ॥ मौनींद्रे च प्रवचने युज्यते सर्वमेव हि ॥ नित्यानित्ये स्फुट देहा ज्जिन्नाजिन्ने तथात्मनि ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ केमकेअहिंसाविना सत्यादिकधर्मपण घटेनहीं, अनेसत्यादिक धर्मनेत्र जीवदयारूपक्षेत्रनी वाडीछे, एवुकेवलीकहेछे ॥ ३७ ॥ जिनशासननेविषे तोएसर्वन मानछे, शरीरथी प्रगटपणेनित्यछे, वळीअनित्यपणछे, तेमज जिन्नाजिन्नपणुछे, तथ एकपणुछे, अनेअनेकपणुपणछे, वळीआत्मानेविषेपण तेमजकहेछु ॥ ३८ ॥

आत्मा द्रव्यार्थतोनित्य पर्यायार्थाद्विनश्वर ॥ हिनस्ति हन्यते तत्तत्फलान्यप्यधिगछति ॥ ३९ ॥ इह चानुजव साक्षी व्यावृत्यान्वयगोचर ॥ एकांतपक्षपातिन्यो युक्तयस्तु मियो हता ॥ ४० ॥

अर्थ ॥ आत्माद्रव्यार्थिकनयेंनित्यछे; अनेपर्यायार्थिकनयें अनित्यछे; एजीवकोइ नेहणेछे, अथवा कोइएजीवनेहणेछे, तेनांफलपरजवमां आत्माजोगवेछे ॥ ३ए ॥ ए जैननेशीलें अन्वय अनेव्यतिरेक एवेगुणेसहित एवोजेअनुजव तेसाद्गीकरतांथका, एकांतमतवालानी युक्तिओ माहोमांहे हणाइजायछे ॥ ४० ॥

पीमाकर्तृत्वतो देहव्यापत्या दुष्टजावतः ॥ त्रिधा हिंसागमे प्रोक्ता न हीछमपहेतुका ॥ ४१ ॥ हंतुर्जायति को दोषो हिंसनीयस्य कर्म्मणि ॥ प्रसक्तिस्तदजावे चान्यत्रापीति मुधा वचः ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ पीमाकरवाथी, देहपीमाथी, दुष्टजावथी, एवात्रणप्रकारनीहिंसा सिद्धांत मांकहीछे; तेकांइजुठीनथी ॥ ४१ ॥ जेप्राणीनुं स्वकृतकर्मनो उदयथयेथके मृत्युथयुं तोतेनाहणनारने शोदोपछे ? एटलेहिसानथइ; अनेजेहणाणो तेनांकर्मउदयआव्यां, तेतेणेजोगव्यां, तो तेमांशीहिंसाछे? केमकेजेजीवने मरणनोउदयहालनथी, तेनेमारियें तोपण तेकांइमरतोनथी; माटेहिंसाकोइनीथतीनथी; एवुंजेमानेछे तेमिथ्याछे ॥ ४२ ॥

हिंस्यकर्म्मविपाकेस्य दुष्टाशयनिमित्तता ॥ हिंसकत्वं न तेनेदं वैद्यस्य स्याद्रिपोरिव ॥ ४३ ॥ इछं सडुपदेशादे स्तन्निवृत्तिरपि स्फुटा ॥ सोपक्रमस्य पापस्य नाशात्स्वाशयवृद्धितः ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ केमकेजेप्राणीनामनमां दुष्टआशयनुंनिमित्तछे, तेनेएहिंसाछे. अनेहिंसानाकर्मविपाकपण तेनेजछे; जोवैद्यनेऔषधकरतां दुष्टचित्तहोय,तोतेऔषधशत्रुसरखुं थाय, अनेतेवैद्यनेपणहिंसकपणुंलागे. अनेजोवैद्यनुंमननिर्मलछे, तोवैद्यनेहिंसकपणुंनलागे ॥ ४३ ॥ एवासद्गुरुना उपदेशसांजलवाथी हिंसानीनिवृत्तिप्रगटपणेथाय; निर्मलचितना आशयनीवृद्धियकी सोपक्रमीजे निकाचितवांधेलांपाप तेनोनाशथायछे. ॥ ४४॥

अपवर्गतरोर्बीजं मुख्याऽहिंसेयमुच्यते॥ सत्यादीनि व्रताश्चयत्र जयंते पल्लवा नवाः ॥४५॥ अहिंसासंजवश्चेछं दृश्यतेऽत्रैव शासने ॥ अनुबंधादिसंशुद्धिरप्यत्रैवास्ति वास्तवी ॥ ४६ ॥

अर्थ ॥ जेअहिंसाते मोक्षरूपवृक्षनुबीजकहियें; अनेसत्यादिकजेव्रतछे तेमोक्षरूपवृक्षना नवपल्लवअंकुराछे. ॥४५॥ तेतोआजिनशासनमां जीवदयानो, अहिंसकपणानो संजवजोवामांआवेछे; अनेवलीअनुबंधहिंसा तथा हेतुहिंसा अनेस्वरूपहिंसा एत्रणजातनीजे हिंसातेनीशुद्धि तेपणआजिनशासनमांज वसीरहीछे ॥ ४६ ॥

हिसा या ज्ञानयोगेन सम्यग्दृष्टेर्महात्मन ॥ तप्तलोहपदन्यास
तुल्याया नानुबधन ॥४७॥ सताम्यस्याश्च कस्याश्चिद् यतना भ
क्तिशालिना ॥ अनुबधो ह्यहिसाया जिनपूजादिकर्म्मणि ॥४८॥

अर्थ ॥ मोटाप्राणीजे सम्यग्दृष्टि ते ज्ञानयोगेकरीवर्तेछे, तेनेपणअविरतिथी हिंसा लागेछे, तेकेवीछे ? जेमतपाव्युएवुंजेलोढु तेउपरपगमुकीकोइचाले, पणरखवानेजयं नि शंकपणें पगठरावेनहीं, तेमसमकीतिपण निशकपणेहिंसानकरे, अनेतेमाटेज नरक नोबधपणकरे नही ॥ ४७ ॥ तेमरुडाजयणावत जीवनेज्ञानयोगेंकरी जिनपूजाकरता अहिसाजेदया तेनोअनुबंधछे, केमकेएपूजातेपरपरायें मुक्तिफलनी आपनारीछ ॥४८॥

हिसानुबधिनी हिसा मिथ्यादृष्टेस्तु दुर्मते ॥ अज्ञानशक्तियोगे
न तस्याहिसापि सादृशी ॥ ४९ ॥ येन स्यान्निन्हवादीना दिवि
षद्दुर्गति क्रमात् ॥ हिसैव महती तिर्यङ् नरकादिभवातरे ॥ ५० ॥

अर्थ ॥ पणनरकगतिनोबधपडे, एवीजेहिसाते मिथ्यात्वीदुर्मतिनेहोय अज्ञान योगेकरी तेमिथ्यात्वीजो जीवदयापाले तोतेपण हिंसाजेवीजजाणवी ॥ ४९ ॥ कारणमाटे निन्हवादिक जम्मालीप्रमुखेपण जीवदयापालीछे, तोपणअज्ञानोदयनायोगे स्वर्गमापण दुर्गतिपाम्याछे, अनेढेरूपछे, माटेनिन्हवनीजे अहिंसाते परमाय हि सानाजफलआपे, केमके भवातरें तेमने तिर्यच्नरकादिकनीगति प्रगटेछे ॥ ५० ॥

साधूनामप्रमत्ताना सा चाऽहिसानुबधिनी ॥ हिसानुबधवि
छेदा द्गुणोत्कर्षो यतस्तत ॥५१॥ मुग्धानामियमज्ञत्वात् सानुब
धा न कर्हिचित्॥ज्ञानोद्रेकाप्रमादाभ्या मस्या यदनुबधन॥५२॥

अर्थ ॥ अप्रमत्तसाधु जेसातमागुणठाणावाला तेनेजेहिसाछे, तेअहिंसानुबधीछ केमके हिंसानोअनुबध विछेदथयाथकी जिहातिहाथकी गुणनोउत्कर्षथाय छे ॥ ५१ ॥ पण एअहिंसाते अज्ञानपणे भोलाप्राणीने कदापिकालें सुखदायकनथी, एटलेएअनु बधसहितनथाय, पणअप्रमत्त साधुने ज्ञानसहितजेअहिसा अथवाहिंसाते अनुब अहिंसाजकहियें, केमके एपरपरायें मोक्षसुखनुकारणछे माटे ॥ ५२ ॥

एकस्यामपि हिंसाया मुक्त सुमहदतर ॥ भाववीर्यादिवैचित्र्या
दहिंसाया च तत्तया ॥ ५३ ॥ सद्य कालातरे चेत द्विपाकेना
पि भिन्नता ॥ प्रतिपक्षातराभेनोद्धा शक्तिनियोगत ॥ ५४ ॥

अर्थ ॥ एकलीहिंसानेविषे पण जेममोटोअंतर देखाड्योछे. तेमजावलीयेना विचित्रपणाथकी अहिंसानेविषेपण तेमजजाणवुं ॥ ५३ ॥ प्रतिपक्षपणे अंतरालेंकरी अथवातेशक्तिनेयोगेंकरी तत्काल अथवाकालांतरे एविपाकेकरीने पणभिन्नताछे ॥ ५४ ॥

हिंसाप्युत्तरकालीनविशिष्टगुणसंक्रमात् ॥ त्यक्ताविध्यनुबंधत्वादहिंसैवातिभक्तितः ॥ ५५ ॥ इत्थंभंगशतोपेता ऽहिंसा यत्रोपवर्ण्यते ॥ सर्वांशपरिशुद्धंतत्प्रमाणं जिनशासनं ॥ ५६ ॥

अर्थ ॥ जेहिंसाछे तेपणजो उत्तरकालें विशिष्टगुणप्रगटे, तथापिअविधिनो अनुबंध तज्याथी अने अत्यंतभक्तिथकी प्राणीने अहिंसारूपज फलदायकथायछे. ॥ ५५ ॥ एरीतेंसेंकडोगमे भंगजालसहित जिहांअहिंसानेवर्णवियें, तेतोसर्वांशें शुद्धएवुंजेजिनशासन तेमांजप्रमाणछे ॥ ५६ ॥

अर्थोयमपरोनर्थ इति निर्धारणं हृदि ॥ आस्तिक्यं परमं चिन्हं सम्यक्त्वस्य जगुर्जिनाः ॥ ५७ ॥ शमसंवेगनिर्वेदानुकंपाभिः परिष्कृतं ॥ दधतामेतदविछिन्नं सम्यक्त्वं स्थिरतां व्रजेत् ॥ ५८ ॥

अर्थ ॥अहिंसा तेजअर्थछे; अनेबीजासर्वअनर्थछे;. एप्रकारें जेना मनमांधारणाछे, एहवी परमआस्थाप्रगटे तेआस्थाश्रद्धारूप समकितनुंचिन्हछे, एवुंप्रभुयें कह्युंछे ॥५७॥ शमता, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा एलक्षणो रूडीरीतें अविछिन्नपणे धरतांथकां समकितजेछे तेस्थिरतापणानेपामे ॥ ५८ ॥ इतिसम्यक्त्वाधिकार-द्वादशसमाप्तः ॥

मिथ्यात्वत्यागतः शुद्धं सम्यक्त्वं जायतेंऽगिनां ॥ अतस्तत्परिहाराय यतितव्यं महात्मना ॥ १ ॥ नास्ति नित्यो न कर्त्ता च न भोक्तात्मा न निर्वृत.॥तदुपायश्च नेत्याहुर्मिथ्यात्वस्य पदानि षट् ॥ २ ॥

अर्थ ॥ तेजेवारें मिथ्यात्वनोनाशथाय, तेवारेंजीवने सम्यक्त्वप्रगटे; माटे मिथ्यात्वगलवानो रूडाप्राणीयें उद्यमकरवो ॥ १ ॥ आत्मानथी; आत्मानित्यनथी; कर्त्तानथी; भोक्तानथी; सिद्धनथी; तेसिद्धताप्रगटकरवानो उपायनथी; एछपदमिथ्यात्वनांछे ॥ २ ॥

एतैर्यस्माद्भवेच्छुद्धव्यवहारविलंघनं ॥ अयमेव च मिथ्यात्वध्वंसी सदुपदेशतः ॥ ३ ॥ नास्तित्वादिग्रहेनैवोपदेशोनोपदेशकः ॥ ततः कस्योपकारः स्या त्संदेहादिव्युदासतः ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ एपदवडेकरी पुर्वाचार्यनाव्यवहार उलधायछे, लोपायछे,एजमिथ्यात्वछ नेतेसद्गुरुना उपदेशथकी नाशपामेछे ॥३॥ एछपदरूपी कुग्रहेनटळायतो जेउपदेशआपे, तेउपदेशनकहियें, तेथीकोइनेउपकारनथाय मिथ्यात्वीनाउपदेशसन्देहटळेनही॥४॥

येषा निश्चय एवेष्टो व्यवहारस्तु संगत ॥ विप्राणा म्लेछभा
षेव स्वार्थमात्रोपदेशनात् ॥ ५ ॥ यथा केवलमात्मान जाना
न श्रुतकेवली ॥ श्रुतेन निश्चयात्सर्वं श्रुतं च व्यवहारत ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमब्राह्मणने म्लेछभाषाबोलवानीमनाइछे मांटेपोतानास्वार्थजेटलीज बोले, तेमजजेहने एकनिश्चयनयजइष्टछे, तेहनेव्यवहारनयतो ब्राह्मणनेम्लेछनीभाषा नाउपदेशनीपरें स्वार्थवास्ते सगतमात्रछे ॥ ५ ॥ जेमश्रुतकेवली व्यवहारथीश्रुतज्ञान अनेसर्वनिश्चयनयवके श्रुतज्ञानेकरीश्रुतकेवली केवलआत्मानेजाणे ॥ ६ ॥

निश्चयार्थोत्र नो साक्षाद्वक्तुं केनापि पार्यते ॥ व्यवहारो गु
णद्वारा तदर्थावगमक्षय ॥७॥ प्राधान्यं व्यवहारे चेत्ततेषा
निश्चये कथं ॥ परार्थस्वार्थे तुल्ये शब्दज्ञानात्मनोर्द्वयो ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ इहांनिश्चयअर्थ प्रगटपणेकेरवाने कोइसमर्थनथी देखीतोगुणप्रगटे तर पछारें निश्चयअर्थनीप्राप्ति कयरूपव्यवहारकेहेनाय ॥ ७ ॥ जेनेकेवलव्यवहारने वि षेज प्रधानपणुछे, तोतेनेनिश्चयनयमाकेमहोय? वलीशब्दनयअने ज्ञाननयरूपप्राणीने स्वअर्थनेपरअर्थ बेतुल्यछे जेशब्दतेव्यवहारछे, अनेज्ञानतेनिश्चयछे ॥ ८ ॥

प्राधान्याद्व्यवहारस्य तत्त्वमुछेदकारिणा ॥ मिथ्यात्वरूपतेते
षा पदाना परिकीर्त्तिता ॥ ९ ॥ नास्त्येवात्मेति चार्वाक प्र
त्यक्षानुपलम्भत ॥अहताव्यपदेशस्य शरीरेणोपपत्तित ॥१०॥

अर्थ ॥ जेव्यवहारनाप्रधानपणाथकी सर्वनोउछेदथाय तेवाप्राणीने मिथ्यात्वना उपदेश मिथ्यात्वभावथयो, एमजाणवु ॥ ९ ॥ चार्वाकदर्शनवालाकहेछे, जे आत्मा नथी केमकेजो आत्माहोयतो प्रत्यक्षजणाय, तेतोकाइजणातोनथी अने अहंकार ए लेथ्याकार्यहुकरुंछुं, तेनोजे व्यपदेशछे तेतोशरीरें करीनेजणायछे ॥ १० ॥

मद्यागेभ्योमदव्यक्ति प्रत्येकमसती यथा॥मिलितेभ्योहि भूतेभ्यो
ज्ञानव्यक्तिस्तथामता ॥११॥ राजरंकादिवैचित्र्य मपि नात्मकृता
दितं ॥ स्वाभाविकस्य भेदस्य ग्रावादिष्वपि दर्शनात् ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेम महुत्रातथापाणीप्रमुख मदिरानाअंगछे, पणतेप्रत्येकमां मदिरानीश क्तिनथी; जेवारेंभेगांमले तेवारेंजशक्तिप्रगटे, तेमपंचभूतभेगांमलेंतेवारें ज्ञानशक्तिप्रग टथायछे ॥११॥ जेमएकशिलाअथवा एककांकरीएसर्व पथरानाभेदछे, तेमश्रा राजाछे. आरांकछे, एवुंविचित्रपणुंतेआत्मानथी. एतोस्वभावेभेदपड्याछे ॥ १२ ॥

वाक्यैर्न गम्यते चात्मा परस्परविरोधिभिः ॥ दृष्टवान्न च कोप्ये
नं प्रमाणं यद्वचो भवेत् ॥१३॥ आत्मानं परलोकं च क्रियां च वि
विधां वदन् ॥ भोगेभ्यो भ्रंशयत्युच्चै र्लोकचित्तं प्रतारकः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वलीसर्व मतवालाना मांहोमांहें विरोधीवचनहोवाथी आत्मानीप्रतीतिन थीयती, केमके कोइयेंआत्मादीठोनथी के जेथकी एकेनुंवचन प्रमाणथाय ॥ १३ ॥ आत्माने परलोकने अर्थे एमविचित्रप्रकारनीक्रियाकरावेछे. एहवुंकहेनारा विचारालो कने सुखभोगथीभ्रष्टकरेछे. एम जेलोकोनाचित्तने फेरवेछे, तेधूर्त्तगुरुजाणवा ॥ १४ ॥

त्याज्यास्तन्नैहिकाः कामाः कार्या नानागतस्पृहा ॥भस्मीभूतेषु
भूतेषु वृथा प्रत्यागतिस्पृहा ॥ १५ ॥ तदेतद्दर्शनं मिथ्या जीवप्र
त्यक्ष एव यत् ॥गुणानां संशयादीनां प्रत्यक्षाणामभेदतः॥१६॥

अर्थ ॥ माटेआभवमां पम्याजेसुखभोग तेतजवानही, अने आवताभवमां सुख पा मशुं एवीवांछानकरवी. केमके पंचभूतनुंपुतलुं वलीनेराखथशे,एटलेपरभवनी इछा स र्वेफोगटजशे ॥ १५ ॥ एरीतेचार्वाक दर्शननुंमतकह्युं. पणएदर्शनखोटुंछे. केमके प्रत्य क्षपणे संशयादिकजेगुण, तेजीवनेछे माटेजीवप्रत्यक्ष अभेदपणेछे ॥ १६ ॥

नचाहंप्रत्ययादीनां शरीरस्यैव धर्म्मता ॥ नेत्रादिग्राह्यतापत्ते
र्नियतंगौरवादिवत् ॥ १७ ॥ शरीस्यैव चात्मत्वे नानुभूतस्मृति
र्भवेत् ॥ बालत्वादिदशाभेदा त्तस्यैकस्यानवस्थितेः॥ १८ ॥

अर्थ॥जेमकोइआदरआपे तेपणआत्माछे. तेमअहंकारादिकप्रत्ययजेछे,तेआत्माछे तेकां इशरीरनोधर्मनथी अहंकारदिनेत्रमांजणायछे, तेदेखवारूपछे ॥ १७ ॥ शरीरनेजो आ त्माकहियें. तोआत्माजरूयथो तेवारेंपूर्वेनी अनुभवेलीवात आत्माविनाकोने सांभरेछे? शरीरनेतोसांभरतुनथी. अने बाल यौवननथावृद्धइत्यादिकजे शरीरनीदशाना भेदछे तेथीआत्मापण बालत्वादि दशावंतथायछे. पणनिश्चयनयथी आत्मानीएकदिशाछे.अने शरीरनीअवस्था एकनथी. केमके अनवस्थितदोषनो प्रसंगछे. माटे ॥ १८ ॥

अभ्रांतानां च विफला नामुष्मिक्यः प्रवृत्तयः ॥ परवंधनहेतोः कः स्वात्मानमवसादयेत् ॥२५॥सिद्धिः स्याएवादिवरूयव्यक्ता संशयादे व चात्मनः ॥ असौ खरविषाणादौ वस्त्वार्थविषयः पुनः ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ अभ्रांतजे ज्ञानीपुरुष तेनेहमणानीप्रवृत्तिते निःफलतानहोय; माटे पर वधननाहेतुयेंकरी पोतानाआत्माने कोणखेदमांनाखे ? ॥ २५ ॥ आत्मानीप्रगटपणे संशयथीसिद्धिछे, एवीवाततोवगडामां काडनाठुंठाजेवी देखाय, पणसंशयकरतांथकां जेअरंवृक्षते नजणाय. तेमज संशयवडे आत्मानेनजाणियें. अनेजेविपरीतअर्थे आत्माने माने तेनेगधेडाने शिंगडासमाननारजेवोसमजवो ॥ २६ ॥

अजीवइति शब्दस्य जीवसत्तानियंत्रिता ॥ असतोन निषेधोय त्संयोगादिनिषेधनात् ॥ २७ ॥ संयोगः समवायश्च सामान्यं च विशिष्टता ॥ निषिध्यते पदार्थानां तएव नतु सर्वथा ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ अजीवशब्दमां जीवशब्दनीसत्तावलगेलीछे; पणनिषेधअछतोछे. जेथी ना स्तिकमतवाला संयोग, समवाय, अनेसामान्य, तथा विशेषने निषेधेछे. तेपणसर्वथा पणे वस्तुस्वरूपने निषेधिशकतानथी; केमके संयोगसमवाय अने सामान्य नही मा नवायकी पणअजीव शब्द बोलवो तेयद्यपिअजीवपदार्थसत्छे, तथापिशब्दअसत्मानि यें, तोते असत्पदार्थनो निषेधदेखातोनथी॥२७॥माटे संयोग, समवाय, सामान्य इत्या दिकपदार्थनुंविशेषपणुं तेनास्तिकमतवाला निषेधकरेछे. पणतेसर्वनिषेधथायनही॥२८॥

शुद्धं व्युत्पत्तिमज्जीवपदं सार्थं घटादिवत् ॥ तदर्थस्य शरीरं नो पर्यायपदभेदतः ॥२९॥ आत्मव्यवस्थितेस्त्याज्यं ततश्चार्वाकद र्शनं ॥ पापाः किलैतदालापाः सद्यापारविरोधिनः ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ शामाटेशुद्धनिर्मलएवीव्युत्पत्ति तेजीवप्राणधारणे एवेअर्थेयुक्त एवुंजीव पदसार्थुछे; घटादिकनीपेरेछतुंछे; पणनवानवा पर्यायना भेदथकी जीवनेमूलअर्थे श रीरनथी ॥ २९ ॥ एरीतें आत्मानुंस्थापनकरीने चार्वाकदर्शननेछांडवुं; एदर्शनीसाथें आलापकरवो तेपणपापरूपछे; केमकेएसत्यवादीसाथें विरोधकारकछे; तेथीतजवुं॥३०॥

ज्ञानक्षणावलीरूपो नित्योनात्मेति सौगताः ॥ क्रमाक्रमाभ्यां नित्यत्वे युज्यतेर्थक्रिया न हि ॥ ३१ ॥ स्वभावहानितो ध्रौव्यं क्र मेणार्थक्रियाकृतौ ॥ अक्रमेण च तद्भावे युगपत्सर्वसंभवः ॥ ३२ ॥

अर्थ ॥ हवेबौद्धमतवालाबोल्याके, आत्माज्ञानरूपछे पणक्षण आत्रविकाप्रमाणे स्थितिछे, माटेआत्मानित्यनथी एटलेजीवते क्षणमाक्रोधकरे, क्षणमामानकरे, ए मभिन्नअवस्थाथायछे, एकअवस्थानित्यरेहतीनथी, परपरायें क्रमअक्रमपणेजो नित आत्माकोइवेलायेंहोय, तोअर्थक्रियाकलाप घटेनहीं, माटेनित्यआत्मानथी ॥ ३१ ॥ एनोस्वनावहणाय,तेवारेध्रुवपणुंपामे,अनुक्रमेअर्थक्रिया आकृतिनेविषे अक्रमेकरीनेते नावनेविषे समकालेंविचारतां सर्वेसनवहोय माटेअमारोक्षणिकमतसाचोलाग्यो ॥३२॥

क्षणिके तु नदोषोस्मिन् कुर्वद्रूपविशेषिते ॥ ध्रुवेक्षणोनुतृष्णाया निवृत्तेश्च गुणोमहान् ॥ ३३ ॥ मिथ्यात्ववृद्धिकृन्नून तदेतदपि दर्शन ॥ क्षणिके कृतहानिर्य त्तथात्मन्यकृतागम ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ वलीआक्षणिकमतमा दोषनथी केमके नवनवारूपकरेछे, पणजेसमयें जे पहोय, तेसमयेतेरूपनाशकर्णेकरीध्रुवछे तेमातृष्णानो अनेनिवृत्तिनो मोटोगुण जेथीध्रुवतारूप महागुणपामियें, एमबौद्धकहेछे ॥ ३३ ॥ एउपरथी खरेखर एदर्शन मिथ्यानीवृद्धिकरनारुछे केमकेआत्मानेक्षणिक माननारनासुकृतनीहानिथायछे जोक दीपापनकरे, तोपणजुगबोलवानु पापतोपरनवेजोगववुपडे माटेअकृतागमकहियें॥३४॥

एकद्रव्यान्वयाजावा द्वासनासंक्रमश्च न ॥ पौर्वापर्य्यं हि नावाना सर्वत्रातिप्रसक्तिमत् ॥ ३५ ॥ कुर्वद्रूपविशेषे च न प्रवृत्तिर्नवाऽस्तु मा ॥ अनिश्चयान्न वाध्यक्षं तथा चोदयतो जगौ ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ जेमएकद्रव्यनो सापेक्षपणे एकजावनथी, माटेवासनानु संक्रमणनथाय अनेनावनु पूर्वापरपणुसर्वत्रशक्तिरूपे परिणमेछे ॥ ३५ ॥ रूपविशेषकरताकना प्र त्तिकरवी अथवा नारवीतेतोनहीं, पणक्षणिकमतवालायेतो अनिश्चयपणकी आत्माने उदयथी क्षणिकपणुकह्युछे ॥ ३६ ॥

न वैजात्य विना तत् स्या न्नतस्मिन्ननुमा नवेत्॥ विना तेन न तत्सि द्धिर्नाध्यक्षं निश्चयं विना ॥ ३७ ॥ एकत प्रत्यभिज्ञान क्षणिकत्वं च वाधते ॥ योहमन्वनव सोह स्मरामीत्यवधारणात् ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ विजातिविना तेनहोय, एमाकाइअनुमान घटतुनथी, केमकेतेविना तेनी सिद्धि पणनथी, निश्चयविना प्रत्यक्षज्ञानपणनथीथातु ॥३७॥ तथाहुआयनुनवुतु, तेहुसमरु एयवगारपणकी आत्माने त्रैकालिक एकताज्ञान तेक्षणिकपणे वाधकार पामेछे॥३८

नास्मिन्विषयबाधो यत् क्षणिकेपि यथैकता ॥ नानाज्ञानान्वये न
हत् स्थिरे नानाक्षणान्वये ॥ ३९ ॥ नानाकार्यैक्यकरण स्वाभा
व्ये च विरुध्यते ॥ स्याद्वादसन्निवेशेन नित्यार्थक्रिया न हि ॥ ४० ॥

अर्थ ॥ एनित्यात्मानामतवके विषयबाधकपणुं नहोय. क्षणिकमतनेविषेपणएम-जजेम ज्ञानान्वयें एकत्वपणुछे, तेमस्थिरआत्मानेविषे नानाक्षणनेसंयोगें एकताजाणवी ॥ ३९ ॥ बहुकार्यना एकीकरणस्वभावने अंगीकारकरेछते विरोधपडेछे, अनेस्याद्वादशैलीयें स्थापना करवाथी नित्यापेक्षपणे अर्थक्रिया विरोधपामतीनथी. केमके वेहुनयें प्रकृतिअर्थ अनुसरेछे माटे ॥ ४० ॥

नीलादावप्येतद्भेद शक्तयः सुवचाः कथं ॥ परेणापि हि नानेक
स्वभावोपगमं विना ॥ ४१ ॥ ध्रुवे क्षणेपि न प्रेम निवृत्तमनुप
प्लवात् ॥ ग्राह्याकारइव ज्ञाने गुणस्तन्नात्र दर्शने ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ नीलादिवर्णनेविषे भेदशक्तिनहोय, एमसुखेकेम केहेवाय? परपुरुषवडेकरीनेपण एकस्वभावने टाल्याविना नानाविधपणुं संभवेनहीं ॥ ४१ ॥ ध्रुवतापणानेविषे क्षणनेविषेपण एटलेलोचननेविषेपण उपद्रवमाटे निवृत्तपणेप्रेमनजोइयें. जेमग्राह्याकार ज्ञाननेविषेगुणछे, तेमआ दर्शनमांगुणनथी ॥ ४२ ॥

प्रत्युतानित्यभावे हि स्वतः क्षणजबुद्धिया ॥ हेत्वनादरत. सर्व
क्रियाविफलता भवेत् ॥ ४३ ॥ तस्मादिदमपि त्याज्यमनि
त्यत्वस्य दर्शनं ॥ नित्यसत्यचिदानंदपदसंसर्गमिच्छता ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ उलटाअनित्यभावनेविषेपण पोताथी क्षणनीबुद्धियेंकरी हेतुनाअनादरथकीसघलीक्रिया नि.फलथाय ॥ ४३ ॥ तेमाटेए अनित्यदर्शनपणछोडवुं. सदैव नित्य सत्यपणे मुक्तिपदना संसर्गने इछनाप्राणीयें जरूरत्यजवुं ॥ ४४ ॥

न कर्त्ता नापि भोक्तात्मा कापिलानां तु दर्शने ॥ जन्मधर्माश्रयो
नायं प्रकृतिः परिणामिनी ॥ ४५ ॥ प्रथमः परिणामोऽस्या बुद्धिर्ध
र्माद्यष्टकाऽन्विता ॥ ततोहंकारस्तन्मात्रेंद्रियभूतोदयः क्रमात् ॥ ४६ ॥

अने ॥ हवेकपिलदर्शनवाला बोल्याके. आत्माकर्त्तानथी: तेमभोक्तापणनथी· आत्माप्रगटधर्माश्रय वालोनथी. मायापरिणामवर्त्तेछे ॥ ४५ ॥ एमायानो प्रथमपरिणाम

शुश्रूषा, श्रवण, चैवग्रहणइत्यादिक आठप्रकारनी बुद्धिरूपधर्मेकरीसहितछे अथवा तेथी अहंकार, तन्मात्र, इंद्रिय, पांचभूतोदय, एअनुक्रमेजाणवु ॥ ४६ ॥

चिद्रूपपुरुषोबुद्धेः सिध्ये चैतन्यमानत ॥ सिद्धिस्तस्या अपि या वच्छेदनियमाश्चितः ॥ ४७ ॥ हेतुत्वेपु प्रकृत्यर्थं क्रियाणामत्र निर्वृत्ति ॥ दृष्टादृष्टाविभागाश्च व्यासंगश्च न युज्यते ॥ ४८ ॥

अर्थ ॥ बुद्धिनीसिद्धिनेअर्थे आत्माचिद्रूपछे, वलीचैतन्यछे, तोपण निश्चयसहित अविछेदपणे तेबुद्धिनीजेसिद्धि तेअविषयीछे ॥ ४७ ॥ हेतुत्वेंकरी आत्मानेप्रकृतिथकी नेविषे इंद्रियोना निवृत्तिपणानो दीठाअणदीठाना विभागथी प्रसंगघटतोनथी ॥४८॥

स्वप्ने व्याघ्रादिसंकल्पा न्नरत्वानभिमानत ॥ अहंकारश्च नियत व्यापारः परिकल्प्यते ॥ ४९ ॥ तन्मात्रादिक्रमस्तस्मात्प्रपंचो त्पत्तिहेतवे ॥ इत्थंबुद्धिर्जगत्कर्त्री पुरुषो न विकारभाक्॥ ५० ॥

अर्थ ॥ जेमस्वप्ननेविषे व्याघ्रादिकना संकल्पथी अनेपुरुषार्थना निरभिमानथी अहंकारनेनिश्चये व्यापाररूपकल्पियेंछियें ॥४९॥ तेप्रपंचनी उत्पत्तिनाहेतुनेअर्थेतन्मात्रादिकनो क्रमछे एरीतेजगतूनीकरनारी बुद्धिछेरेछे माटे विकारनोभजनारआत्मानथी॥५०॥

पुरुषार्थोपरागोऽन्यो व्यापारावेशएव च ॥ अत्राशोविश्यह वस्तु करोमीति च धीस्वत ॥ ५१ ॥ चेतनोहं करोमीति बुद्धेर्भेदाग्रहा त्स्मय ॥ एतन्नाशेऽनवछिन्नं चैतन्य मोक्ष इष्यते ॥ ५२ ॥

अर्थ॥ सर्वप्रवृत्तिव्यापारनेविषे एकपुरुषार्थअने बीजोउपराग एवेव्यापारजछे,तेमांहु अंशेजाणुंछुं, हुवस्तुकरुंछु, एवीकदाग्रहीबुद्धियायछे॥५१॥ हुचेतनछु, हुकरुछु, एवाग्रहबुद्धिनाहेतुथी प्रगटेछे एवागर्वनोनाशकरी स्वभावेंरह्यु चैतन्यपणुंमुक्तिनेपामेछे ॥५२॥

कर्तृबुद्धिगते दुःखसुखे पुंस्युपचारत ॥ नरनाथे यथा भृत्यगतौ जयपराजयौ ॥ ५३ ॥ कर्त्ता भोक्ता च नतस्मा दात्मा नित्यो निरंजनः ॥ अध्यात्मादन्यथाबुद्धि स्तदाचोक्तं महात्मना ॥ ५४ ॥

अर्थ ॥ आत्मानेविषे दुःखसुखपणाछु, एहवीकर्त्तापणानीबुद्धिजेथायछे, तउपचारथीछे जेमसेवकनोजय अथवा पराजयते राजाहोवाथीजणायछे ॥ ५३ ॥ इत्यादिक माटे आत्माकर्त्ताभोक्तानथी, पणनित्यनिरंजनछे, अनेजेबुद्धिछे,तेतो अध्यात्मथी जुदीछे एवुमहात्मापिडमुनियें कहेलुछे ॥ ५४ ॥

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वथा ॥ अहंकारविमूढा त्मा कर्त्ताहमिति मन्यते ॥ ५५ ॥ विचार्यमाणं नो चारु तदेतद पि दर्शनं ॥ प्रकृतिचैतन्ययोर्व्यक्तं सामानाधिकरण्यतः ॥ ५६ ॥

अर्थ ॥ प्रकृतिनागुणेकरी क्रियमाण जे कर्म तेनो हुंकर्त्ताछुं, एम सर्व प्रकारें अहंकारें मूढआत्मामानेछे ॥ ५५ ॥ एवोविचारकरेथी एदर्शनपणरूडुंनथीः केमकेप्रगटबुद्धि प्रकृतिअनेचैतन्यनो सामानाधिकरणें विचारकरतां, रूडुंनथीजणातुं ॥ ५६ ॥

बुद्धिः कर्त्री च भोक्त्रीच नित्याचेन्नास्ति निर्वृत्तिः ॥ अनित्या चेन्न संसारः प्राग्धर्मादेरयोगतः ॥ ५७ ॥ प्रकृतावेव धर्मादिस्वीकारे बुद्धिरेव का ॥ सुवचश्चघटादौ स्यादीदृग् धर्मान्वयस्तथा ॥५८॥

अर्थ ॥ वलीतमेजो कर्त्ता भोक्तापणे बुद्धि मानशो, पणजोतेबुद्धिनित्यछेतो. मोक्ष नथी. एटलेमोक्षथशेनही. अनेजोबुद्धिने अनित्यमानशोतो, पूर्वेधर्मनाअयोग्यथकी संसारथशेनही ॥ ५७ ॥ प्रकृतिनेविषेधर्मादिकने अंगीकारकीधाथी बुद्धिनेशुंकेहेवी जोइयें ? अनेघटादिकनेविषेएवाधर्मनो अन्वयतेसुखेंकहेवो. इतितर्कवादः ॥ ५८ ॥

कृतिभोगौ च बुद्धेर्बंधो मोक्षश्च नात्मनः ॥ ततश्चात्मानमुद्दि-श्य कूटमेतवदुच्यते ॥ ५९ ॥ पंचविंशतितत्त्वज्ञो यत्रयत्राश्र मे रतः ॥ जटी मुंडी शिखी चापि मुच्यते नात्र संशयः ॥ ६० ॥

अर्थ ॥ जोकरवुं, भोगववुं बुद्धिनेछे, तोबंधमोक्षआत्मानेनथी. तेपणबुद्धिनेजजोइ यें. माटेआत्मानेउद्देशीने नहीतमजवामांआवे एरीतेंकूटकविकहेछे ॥ ५९॥ पंचविंश तत्त्वनोजाणजेपुरुषछे, ते कोइपणआश्रममांरतहोय; एटलेजटाधरहोय. अथवामुंडावे. अथवाचोटीरखावे. तोपणतेसंदेहविना संसारथीमुकाय. एवुंकपिलमतवालाकहेछे॥६०॥

एतस्य चोपचारत्वे मोक्षशास्त्रं वृथाखिलं ॥ अन्यस्य हि विमो-क्षार्थं न कोप्यन्यः प्रवर्तते ॥६१॥ कापिलानां मते तस्मा दस्मि न्नैवोचिता रतिः ॥ यत्रानुभवसंसिद्धः कर्त्ता भोक्ता च लुप्यते ॥६२॥

अर्थ ॥ एरीतें एआत्मानेविषे मोक्षनेउपचारिपणें अंगीकारकरेछे, तेनुंसकलमो क्षशास्त्र फोगटथायछे. केमकेकोइने मोक्षआपवा कोइबीजोप्रवृत्तथायनही ॥ ६१ ॥ जिहांअनुभवनिद्ध आत्मानुंकर्त्तापणुं तथाभोक्तापणलोपेछे, एटलेमाननतानथी. तेमाटे एहवा कपिलनामतमां प्रीतिकरवीते, ठीकनथी ॥ ६२ ॥

नास्तिनिर्वाणमित्याहुरात्मनः केप्यबंधतः ॥ प्राकपश्चाद्युगप
द्वापि कर्म्मबंधाव्यवस्थितेः ॥ ६३ ॥ अनादिर्यदि संबंध इष्यते
जीवकर्मणोः ॥ तदानंत्यान्न मोक्षः स्या त्तदात्माकाशयोगवत् ॥ ६४ ॥

अर्थ ॥ केटलाकअबंधमतवालाछे, तेएमकहेछेके, आत्माने मोक्षनिर्वाणनथी, केमके प्रथमकेअथवापछी समकालें आत्माने कर्मबंध नथी, तोमुक्तिशेनीहोय? ॥ ६३ ॥ जोजीवने तथाकर्मने अनादिसंबंधमानियें, तोआदिनहीं, तिहांअनंतपणकेमथाय? माटेअनंतपणा नाप्रसंगथी कोइकालेंमोक्षनथाय जेमआत्माथकीआकाशयोग कदापिभिन्ननथाय ॥ ६४ ॥

तदेतदल्पसंबद्धं यन्मिथो हेतुकार्ययोः ॥ संतानानादिता बीजां
कुरवत् देहकर्मणोः ॥ ६५ ॥ कर्त्ता कर्मान्वितो देहे जीवः कर्मणि दे-
हयुक् ॥ क्रियाफलोपभुक्तत्वे दंडान्वितकुलालवत् ॥ ६६ ॥

अर्थ ॥ एहबुबोलेछे, एवचनपणतुच्छे केमके कारणकार्यनेमाहोमाहे संबंध जेमपुत्रपौत्रादिकनो अनादिसंबंधथायछे, तेबीजनाअंकुरानीपेरेंछे, तेमजशरीरतथाकर्म नोपणअनादिसंबंधछे ॥ ६५ ॥ कर्मसहितजीव कर्त्तापणेदेहमारह्योछे, एवुजेकहेछे ते पणतुच्छे. जेमदंडसहितकुंभारनीपरें क्रियानुफलजोगवे, तेपण असंबंधछे तेनीपरे ॥ ६६ ॥

अनादिसंततेर्नाशः स्याद्बीजांकुरयोरिव ॥ कुक्कुट्यंडकयोः स्वर्ण
मलयोरिव चानयोः ॥ ६७ ॥ जव्येषु च व्यवस्थेयं संबंधो जीवकर्म-
णोः ॥ अनाद्यनंतोऽजव्यानां स्यादात्माकाशयोगवत् ॥ ६८ ॥

अर्थ ॥ तमेकहोछोके अनादिसंतति नाशनथाय तेनोतोनाशथतो देखीयेंछयें, जेमबीजनाशथये अंकुरनथाय अने अंकुरानाशथये बीजनहीथाय, कुकडीनाशथये इंडुं नाशपामे, अनेइंडानोनाशथये कुकडीनाशपामे, वलीअनादिनो सुवर्णथी मेलजुदो थायछे तेमआत्माथकी कर्मजुदाथायछे ॥ ६७ ॥ एरीतेंअनादिसंतति जीवकर्मनोसं बंधछे नाशथायछे तेजव्यजीवोआश्रयीछे, अनेजेहने अनादिसंतति दमननथी तेअजव्यजीवो आश्रयीने आत्मातोआकाशना योगनीपरेंछे ॥ ६८ ॥

द्रव्यजावे समानेपि जीवाजीवत्वजेदवत् ॥ जीवजावे समानेपि ज
व्याजव्यत्वयोर्जिदा ॥ ६९ ॥ स्वाजाविकं च जव्यत्वं कलशप्राग
जाववत् ॥ नाशकारणसामग्र्याद्भिनत्त्यन्न विरुध्यते ॥ ७० ॥

अर्थ ॥ जेमद्रव्यनीरीतें तोसर्वद्रव्य एकद्रव्यपणें तुल्यछे, पणतेद्रव्यमां जदजाति तोजीवअजीव ए बेथाय, तेमज जीवपणेतो सर्वजीवसरिखाछे, पणनेदकरता जव

तथाभव्य एवेन्नेदथायछे ॥ ६ए ॥ जेमघटउत्पत्तिपेहेलां माटीद्रव्यस्वानाविकपणेछे; अनेमाटीनानाशथी घटप्रगटेछे, तेविरुद्धनथी; तेमस्वानाविकनव्यपणे कर्मनीअनादिसंततिना नाशरूपकारणना सामर्थ्यथी परमात्मापणुंप्रगटे तेपणविरुद्धनथी. ॥ ७० ॥

नव्योछेदो न चैवं स्याद्गुर्वानंत्यान्ननोंशवत् ॥ प्रतिमादलवत् का पि फलनावेपि योगतः ॥७१॥ नैतद्ध्यं वदामोयद्नव्यः सर्वोपि सि ध्यति ॥ यस्तु सिध्यति सोवश्यं नव्य एवेति नो मतं ॥ ७२ ॥

अर्थ ॥ एरीतेंनव्यपणानो उछेदनथाय. मोटाअनंतपणाथकी आकाशनाअंशनी रें घटआखे आकाशपणआखुं, अनेघटनांगे आकाशखंडथयो पणआकाशकांइनघ्युं नही. तेमकर्मनानाशथकी आत्माअधिकथतोनथी. जेमकोइठेकाणे प्रतिमानादलनी रें प्रतिमादलपाषाणथी विवरूप फलउपजे तेममोक्षनुं उपजवुं थाय ॥ ७१ ॥ अमे एमकहेता नथीके सघलानव्यजीवो सिद्धिपामे. पणजेसिद्धिवरे तेनेनिश्चय नव्य कहियें एअमारोमतछे ॥ ७२ ॥

ननु मोक्षेपि जन्यत्वाद्विनाशिनी नवस्थितिः ॥ नैव प्रध्वंसवत्त स्या निधनत्वव्यवस्थितेः ॥७३॥ आकाशस्येव वैविक्ता मुद्गरादे र्घटक्षये ॥ ज्ञानादेः कर्मणो नाशे नात्मनो जायते ऽधिकं॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ मोक्षनेविषे प्रगटथवापणुंनथी, माटेनव्यस्थिति नाशवंतीछे. पणमोक्षमां अनंतपणानी स्थितिछे, माटेमुक्तिनोनाशनथी ॥ ७३ ॥ जेममोगरेंकरी घडोनांग्यो. अनेघडानेक्षयें आकाशजुदुथयुं, पणवध्युंनही, तेमज्ञानथी कर्मनोनाशथाय, पण आत्माअधिकथायनही ॥ ७४ ॥

न च कर्माणुसंबंधान्मुक्तस्यापि न मुक्तता ॥ योगानां बंधहेतूना मपुनर्नवसंनवात् ॥ ७५ ॥ सुखस्य तारतम्येन प्रकर्षस्यापि सं नवात् ॥ अनंतसुखसंवित्ति मोक्षः सिध्यति निर्नयः ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ जिहांमूलथीजकर्मपरमाणुनो संबंधनथी, अनेजेमूकाणा तेनेकांइमुकावना पणुंनथी, तथा मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, योग एचारबंधहेतुनायोगछे, तेनुं फरीथवापणुं नथी, तेहनेसिद्धिकहियें ॥७५॥ सुखनुंतारतम्य तथाज्ञाननीउत्कृष्टता प्रगटथयेथी एट लेअनंतसुखजाणवाथी निर्नयपणेजे सिद्धिवरे तेनुंनाममोक्षकहियें ॥ ७६ ॥

वचनं नास्तिकानाना मात्मसत्तानिषेधकं ॥ त्रांतानां तेन नाक्षे यं परमार्थगवेषिणा ॥७७॥ न मोक्षोपाय इत्याहु रपरेनास्तिको पमाः ॥ कार्यमस्ति न हेतुश्चे येषां तेषां कदथना ॥ ७८ ॥

अर्थ ॥ माटे नास्तिकमतवालानां वचन आत्मसत्ताना निषेधकछे, तेभर्म लायें आदरवानहीं अथवानास्तिकमतवालानां नयनावचनछे, एमजाणीआदरवान हीं जेपरमार्थनो गवेषकहोय तेणेछांडवा ॥ ७७ ॥ हवेवलीबीजा नास्तिकमतन मलताज मतवालाछे, तेनुकेहेवु एमछे के मोक्षनोउपायनथी एटलेकार्यजेमोक्षतेनोत पणतेनुकारणजे उपाय तेनथी एममानेछे तेमनेपण विटंबनाछे ॥ ७८ ॥

अकस्मादेव भवतीत्यलीकं नियतावधेः ॥ कदाचित्कस्य दृष्ट
त्वाद्भावे तार्किकोप्यद ॥ ७९ ॥ हेतुभूतनिषेधाना स्वानुपा
ख्यविधिर्न च ॥ स्वभाववर्णना नेव मवधेर्नियतत्वत ॥ ८० ॥

अर्थ ॥ कोइकतो अणचिंतव्यो अकस्मात्मोक्षथायछे, एमकेहेछे एपणजुटुं नि यत अवधिमर्यादाजछे तेमाटीनापिंडथीघटनिपजेछे, तेकदाचित्दीठुछे, एमतेहनेता र्किकशास्त्रवालाकहेछे, जेअमुकवखतमाजपुरुथाशे एवोकांइनियमनथी ॥ ७९ ॥ हेतुभू तमोक्षनोनिषेधनथी पोतानोअनुपकथनीय एटलेपोतानेबोलवुनहीं एहवोजेविधि पणनथी, अनेस्वभाववर्णनकरवु स्तुतिकरवीतेनथी केमकेएसर्वनीअवधिछे एटलेअ वधियेज मोक्षथाशे, तेमाटेमोक्षनु साधनकरवुतेजुठुछे, एमकेहेछे ॥ ८० ॥

नच सार्वत्रिको मोक्ष ससारस्यापि दर्शनात् ॥ नचेदानीं न तद्व्य
क्तिर्व्यंजको हेतुरेव यत् ॥ ८१ ॥ मोक्षोपायोस्तु किंत्वस्य निश्चयो
नेति चेन्मत ॥ तत्र रत्नत्रयस्येव तथा भावविनिश्चियात् ॥ ८२ ॥

अर्थ ॥ सर्वत्रमोक्षनथी केमके जेहमणानथी, तेनीप्रगटतापणनथी, अनेससारतो प्रत्यक्षदेखायछे, माटेजेहनोजेहेतुछे, तेजप्रगटनथी, तोतेहनोसशयछे ॥ ८१ ॥ मोक्ष नोउपायछे? किंवानथी? एवातनो निश्चयनथी माटेएमतपणजुठोछे मोक्षनोहेतुरत्न त्रयनीपरें तेमजभावें निश्चयथीजाणियें ॥ ८२ ॥

भवकारणरागादि प्रतिपक्षमद खलु ॥ तद्रूपदस्य मोक्षस्य
कारणं घटतेतरां ॥ ८३ ॥ अथ रत्नत्रयप्राप्ते प्राक्कर्म्मलघुता
यथा ॥ परतोपि तथैव स्यादिति किं तदपेक्षया ॥ ८४ ॥

अर्थ ॥ रत्नत्रयीजेछे, तेसंसारना कारणजेरागादिक तेहनाशत्रुछे अनेससाररूपश त्रुनोशत्रु मोक्षछे माटेमोक्षनु कारणजे उपायतेघटेछे ॥ ८३ ॥ केमकेरत्नत्रयनीप्राप्ति थायकी पूर्वभवनाकर्मनी जेवीलघुताथाय, तोवीजायकीपणतेमजथायएअपेक्षायें शो अवधिनयी तोपणशुथयु? ॥ ८४ ॥

नैव यत्पूर्वसेवातो मृध्वीतो साधनक्रिया ॥ सम्यक्त्वादिक्रिया त
स्माद् दृढैव शिवसाधने ॥ ७५ ॥ गुणा प्रादुर्भवंत्युच्चैरथवाकर्म
लाघवात् ॥ तथा भव्यतया तेषां कुतोपेक्षानिवारणं ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ जेपूर्वसेवाथकीते घचनाघोलनारूपथी, ऋजुताथी, साधनक्रियामंदरूप ते थीनहोय, माटे समकीतादिकक्रिया तेमोक्षसाधनमांदढछे ॥ ७५ ॥ अथवाकर्मना लघुतापणाथकी मोटाजेगुणतेप्रगटथायछे; तेप्रकारें तेनीभव्यतापणेकरीने मोक्षछे. पणमोक्षनीअपेक्षा वारीनथी. इतिसंशयिनः ॥ ७६ ॥

तथाभव्यतयाक्षेपाद्गुणा न च न हेतवः ॥ अन्योन्यसहकारित्वाद
दंडचक्रभ्रमादिवत् ॥ ७७ ॥ ज्ञानदर्शनचारित्राण्युपायास्त-
द्भवक्षये ॥ एतन्निषेधकं वाक्यं त्याज्यं मिथ्यात्ववृद्धिकृत् ॥ ७८ ॥

अर्थ ॥ तेमभव्यपणानातिरस्कारथकी पुनर्हेतुभूत गुणनहोय; केमके परस्पर सहकारीछे; माटे दंडचक्रभ्रमणनीपेरें भव्यतापणे ज्ञानादिक गुणप्रगटथाय, तेगुणमोक्षनाहेतुछे; एउत्तरकह्योछे ॥ ७७ ॥ माटेसंसारनाक्षयरूपजेउपाय तेज्ञानदर्शन अनेचारित्रछे, तेनोजेनिषेधकरे अने मिथ्यात्वनीवृद्धिकरें तेनुंवचनत्यागकरवुं ॥ ७८ ॥

मिथ्यात्वस्य पदान्येतान्युत्सृज्योत्तमधीधनः ॥
भावयेत्प्रातिलोम्येन सम्यक्त्वस्य पदानि षट् ॥ ७९ ॥

अर्थ ॥ एपूर्वेकह्याजे सर्वशास्त्रना मतवाद तेमिथ्यातनाछेकाणां, तेनेछांडीने बुद्धिरूपधननुं ग्रहणकरीने मिथ्यात्वनेप्रतिकूलपणेजे समकितनां छपदछे, तेनेभाववां ॥ ७९ ॥ इति मिथ्यात्वत्यागाधिकारः त्रयोदशःसमाप्तः ॥

मिथ्यात्वदावानलनीरवाहमसद्ग्रहत्यागमुदाहरंति ॥
अतोरतिस्तत्र बुधैर्विधेया विशुद्धभावैः श्रुतसारवद्भिः ॥ १ ॥

अर्थ ॥ मिथ्यात्वरूप जेदावानल तेनेशमाववाने मेघसमान एह्वामिथ्यात्वकदाग्रहरूपप्रसारनो त्यागपंडितेंकह्योछे. कदाग्रहनात्यागनेविषेरतिकरवी. जेपंडितहोय, वली गुरूताभाववालोहोय, अनेसिद्धांतनासारनो जाणहोय तेमणेकदाग्रहने छांडवो ॥ १ ॥

असद्ग्रहाग्निज्वलितं यदंतः क्व तत्र तत्त्वव्यवसायवल्लिः ॥
प्रशांतिपुष्पाणि हितोपदेशं फलानि चान्यत्र गवेषयंतु ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेनुंअंतःकरण अछतापदार्थना कदाग्रहरूप अग्निथेंबल्युंछे, तेनाहृदयमां

तत्त्वव्यापाररूप वेलीकेमकरीउगे ? अनेसमतारूपफुल केमफुटे ? तथाहितरूपे रूप फलक्याथीहोय ? तेमाटे कदाग्रहनेतजीने बीजेठेकाणे तत्त्वनीशोध करवी ॥

अधीत्य किंचिच्च निशम्य किंचिदसद्ग्रहात्पण्डितमानिनो ये ॥
मुखं मुखं चुंबितमस्तु वाचो लीलारहस्यं तु न तैर्जगाहे ॥३॥

अर्थ ॥ कांइकजणीने तथा काइकशास्त्रसांभलीने आत्मानेपंडितपणु मानत एवामूर्खकदाग्रहनाधरनारते पोतानुमुखचुंबिलजेवाचा तेनेमुखमाने, पणतेमुखेकरी लारूप रहस्यजेज्ञानते अवगाहेनहीं ॥ ३ ॥

असद्ग्रहोत्सर्पदतुच्छदर्पैर्बोधाशतांधीकृतमुग्धलोकैः ॥ वि
ण्डविता हंत जनैर्वितंडापाण्डित्यकंडूलतया त्रिलोकी ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेनेकदाग्रहथकी घणोगर्वबध्योछे, अनेस्वकल्पितज्ञानने अशोकरी भ्रमि कजीवोनेजेणे आधलाकीधाछे, एहवाजडप्राणीयें पंडिताइनी खरजकरीनेहतइतिखे पादुप्रहारेंथकी त्रणलोकने वितण्डाके॰ डाकण्माले निटवनाकरीछे ॥ ४ ॥

विधोर्विवेकस्य न यत्र दृष्टि स्तमोघन तत्त्वरविर्विलीनः ॥ अ
शुक्लपक्षस्थितिरेषनूनमसद्ग्रहास्थूलमतिर्मनुष्य ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेनाहृदयमां विवेकरूपचन्द्रनी दृष्टिनथी,तथाघणोअंधकारछे,अनेतत्त्वरूप सू अस्तपाम्योछे, तेथीतेकृष्णपक्षनी निशावत्स्थितिमाछे केमकेतेने कदाग्रहवध्योछे॥५॥

कुतर्कदात्रेण लुनाति तत्त्ववल्लीरसान्सिचति दोषवृक्ष ॥ क्षि
पत्यध स्वादुफलं शमाख्य मसद्ग्रह कोपिकुहूविलास ॥६॥

अर्थ॥ जेकदाग्रहीछे, ते कुविचाररूपदातरडेकरी तत्त्वरूपवेलीनेछेदेछे, अनेपाप वृक्षनेपाणीपायेछे, तथासमतारूपअमृतफलने हेठुंधुलमानाखेछे, एवोकोइ कदाग्रह रूप अमावास्यानी रात्रीनोविलासछे ॥ ६ ॥

असद्ग्रहग्रावमये हि चित्ते न क्वापि सद्भावरसप्रवेश ॥ इ
हाकुरश्चित्तविशुद्धबोध सिद्धांतवाचा वत कोपराध ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेकदाग्रहीमाणसनु चित्तपथ्थरजेवुछे जेमपथ्थरमापाणीभेदेनहीं, तम जिनवाणीरूपरस तेकदाग्रहीमाणसमा प्रवशकरेनहीं तेथीतेना चित्तरूपपृथ्वीमा शुद्ध बोधरूप अंकुरप्रगटेनहीं, तोतेमासिद्धांतनीवाणीनो शोवांक ? ॥ ७ ॥

व्रतानि चीर्णानि तपोपि तप्तं कृता प्रयत्नेन च पिंडशुद्धि ॥ अ
भूत्फलं यत्तु न निह्नवानामसद्ग्रहस्यैव हि सोपराध ॥ ८ ॥

असद्ग्रहस्थेन समं समंता त्सौहार्दमुद्दुःख मवेति तादृग ॥
उपैति यादृक्कदली कुरङ्ग स्फुट त्रुटत्कंटककोटिकीर्णा ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ जेमकेळनुंवृक्ष्तेकंथेरादिक वृक्षनेसंगे कांटायेंकरीकोरायछे, तेमजेप्राणीक दाग्रहीनाथें मित्राइकरेते अंतेदुःखनाविपाक पामेछे ॥ १९ ॥

विद्या विवेको विनयो विशुद्धिः सिद्धांतवात्सल्य मुदारता च ॥
असद्ग्रहाद्याति विनाशमेते गुणास्तृणानीव कणाद्दवाग्नेः॥२०॥

अर्थ ॥ जेमअग्निथी घासनासमूह नस्मीनूत थायछे; तेम विद्या, विनय, विवेक, विशुद्धि अने सिद्धांतउपर वत्सलतापणु,अने उदारता एसर्वे कदाग्रहथी नाश पामेछे॥२०॥

स्वार्थः प्रियो नो गुणवांस्तु कश्चिन्मूढेपु मैत्री नतु तत्त्ववित्सु॥अस
दग्रहापादितविभ्रमाणां स्थितिः किलासावधमाधमानां ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ जेकदाग्रहीनी सोबतेरह्या, तेने स्वार्थप्रियनही ते प्राणीअवगुणवंत, मूर्ख सार्थेमित्राइकरे, अने पंडितसाथें मित्राइकरेनही, एवाकदाग्रहीनी सोबतेंरह्या, जेअधममांअधम नीचप्राणी तेहनीएस्थितिछे, तेकही ॥ २१ ॥

इदंविदंस्तत्त्वमुदारबुद्धि रसद्ग्रहं यस्तृणवज्जहाति ॥ जहा
ति नैनं कुलजेव योषि द्गुणानुरक्ता दयिता यशःश्री ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ एमजाणीने तत्त्वनेओळखनार मोटीबुद्धिवाळाप्राणी कदाग्रहने तृणप्रायजाणीनेछांडें, तेने जेम कुळवंतीस्त्री नरतारने त्यजतीनथी, तेमगुणरागीएवीजे यश कीर्त्ति रूप लक्ष्मीतद्रूपस्त्रीयो छांडतीनथी ॥ २२ ॥ इतिकदाग्रहत्यागाधिकारचतुर्दशः ॥

इति महोपाध्याय श्रीयशोविजयगणि विरचितेअध्यात्मसार
प्रकरणे चतुर्थःप्रबंधः बारमांअधिकारमां ५७ तेरमां
ना ७९ चउदमाना २२ सर्वमळी १६९ काव्यथया

असद्ग्रहव्ययाध्वांत मिथ्यात्वविषयीप्रुषः॥सम्यक्त्वशालिनो
ध्यात्म शुद्धे योगः प्रसिध्यति ॥१॥ कर्मज्ञानविभेदेन स द्विधा
तत्र चादिमः ॥ आवश्यकादिविहितः क्रियारूपः प्रकीर्त्तितः॥२॥

अर्थ ॥ हवेकदाग्रहनानाशथी मिथ्यात्वरूपअंधकारनो विपयगयोछे जेमांथीएह वासमकितेंकरी उज्ज्वलअंतःकरणथयांछे जेहना एहवाजेप्राणी तेमने अध्यात्मनीशु

आमे घटे वारि घृतं यथा सन्निनाशयेत्तं च घट च सद्य ॥ अस
द्ग्रहग्रस्तमतेस्तथैव श्रुतात्प्रदत्ताज्जयोर्विनाश ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जेमकाचाघमामा पाणीजरवाथी घमानो तेमजपाणीनोनाशथायछे, तेमज कदाग्रहीमाणसने शास्त्र शीखवतांशास्त्रनो तेमजतेपोतानोवनेनोविनाशथायछे ॥ १४॥

असद्ग्रहग्रस्तमते प्रदत्ते हितोपदेश खलु यो विमूढ ॥ शुनी
शरीरे स मदोपकारी कस्तूरिकालेपनमादधाति ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ जेमविष्टायेंखरडुमुखदेखी कुतरीनेउपकारकरवा कस्तूरीनोलेपकरे, तेमूर्खजाणवो, तेमकदाग्रहीप्राणीने उपकारकरवाने हितउपदेशआपेछे ते पणमूर्खजाणवो ॥१५॥

कष्ठेन लब्ध विशदागमार्थं ददाति योऽसद्ग्रहदूषिताय ॥ स
खिद्यतेयत्नशतोपनीतं बीजं वपन्नूपरभुमिदेशे ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जेमघणाउद्यमे अनाजनाबीज भेगाकरी उखरजमीनमावावे, तेथीवावनारसदाय खेदपामेछे, तेम पंडितप्राणी गुरूनोविनयकरी कष्टेंकरीनिर्मल आगमनिज्ञातनाअर्थने पाम्योहोय, तेजो कदाग्रहेकरी दुषितप्राणीने तेहनो अर्थ शीखवानोउद्योगकरे, तोतेथी अतेखेद पामेछे ॥ १६ ॥

शृणोति शास्त्राणि गुरोस्तदाज्ञा करोति नासद्ग्रहवान् कदा
चित्॥विवेचकत्वं मनुते च सारग्राही भुवि स्वस्य च चालनीवत्॥१७॥

अर्थ ॥ जोगुरुपासेथीशास्त्रसांभले, तोपणकदाग्रहीजेहोय ते कोइकाले ते गुरुनी आज्ञानमाने ते पोतानीमेले पोतानेएहवुमाने, जे हुंज सर्वपदार्थनी बराबरवेचकरुवु पणलेतोजेम पृथ्वीमा चालणीमाथी चारीनेसारभूतवस्तु काहाडीलेइने बाकी असार धान्यरहेछे, तेहनो ते ग्राहीछे ॥ १७ ॥

दंभाय चातुर्य मधीतशास्त्रं प्रतारणाय प्रतिभापटुत्व ॥ ग
र्वाय धीरत्वमहोगुणाना मसद्ग्रहस्ते विपरीतसृष्टि ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ माटे अहोइतिआश्चर्य । विधातायें कदाग्रहीमाणसमा वीपरीतगुणसृष्टीकरीछे । जेवादेवतेवीपात्री, अनेमेघजलसर्पनामुखमा जेमविषतुल्यथइजायछे, एकेहेवतनवीधातायें सरीपाडीछे केमके जे कदाग्रहीनी चतुराइतेकपटनेअर्थेंथाय, अने शास्त्रभणवु ते मदनेअर्थेंथाय, तथा बुद्धिडाहापण अने उपदेशतेलोकने ठगवानासाधननेअर्थेंथायअने धैर्यपणु तेगर्वकरवानेअर्थेथाय ॥ १८ ॥

असद्ग्रहस्थेन समं समंता त्सौहार्दभृद्दुःख मवैति तादृग् ॥
उपैति यादृक्कदली कुरद्र स्फुट त्रुटत्कंटककोटिकीर्णां ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ जेमकेळनुंवृक्षतेकंथेरादिक वृक्षनेसंगे कांटायेंकरीकोरायछे, तेमजेप्राणीक दाग्रहीसाथें मित्राइकरेते अंतेदुःखनाविपाक पामेछे ॥ १९ ॥

विद्या विवेको विनयो विशुद्धिः सिद्धांतवाल्लभ्य मुदारता च ॥
असद्ग्रहाद्याति विनाशमेते गुणास्तृणानीव कणाद्दवाग्नेः॥२०॥

अर्थ ॥ जेमअग्निथी घासनासमूह जस्मीजूत थायछे; तेम विद्या, विनय, विवेक, विशुद्धि, अने सिद्धांतउपर वल्लजतापणु,अने उदारता एसर्वे कदाग्रहथी नाश पामेछे॥२०॥

स्वार्थः प्रियो नो गुणवांस्तु कश्चिन्मूढेषु मैत्री न तु तत्त्ववित्सु॥अस
दग्रहापादितविभ्रमाणां स्थितिः किलासावधमाधमानां ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ जेकदाग्रहीनी सोवतेरह्या, तेने स्वार्थप्रियनही ते प्राणीअवगुणवंत, मूर्ख सार्थेमित्राइकरे, अने पंडितसाथें मित्राइकरेनही, एवाकदाग्रहीनी सोवतेंरह्या, जेअधमसांअधम नीचप्राणी तेहनीएस्थितिछे, तेकही ॥ २१ ॥

इदंविदंस्तत्त्वमुदारबुद्धि रसद्ग्रहं यस्तृणवज्जहाति ॥ जहा
ति नैनं कुलजेव योपि गुणानुरक्ता दयिता यशःश्री ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ एमजाणीने तत्त्वनेओलखनार मोटीबुद्धिवालाप्राणी कदाग्रहने तृणप्रवानीपेठेछांडे, तेने जेम कुलवंतीस्त्री जरतारने त्यजतीनथी, तेमगुणरागीएवीजे यश कीर्त्ति रूप लक्ष्मीतद्रूपस्त्रीयो छांडतीनथी ॥ २२ ॥ इतिकदाग्रहत्यागाधिकारचतुर्दशः ॥

इति महोपाध्याय श्रीयशोविजयगणि विरचितेअध्यात्मसार
प्रकरणे चतुर्थःप्रबंधः बारमांअधिकारमां ५७ तेरमां
ना ७९ चउदमाना २२ सर्वमली १६९ काव्यथया

असद्ग्रहव्ययाध्वांत मिथ्यात्वविपर्यीप्रुषः ॥सम्यक्त्वशालिनो
ध्यात्म शुद्धे योगः प्रसिध्यति ॥१॥ कर्मज्ञानविभेदेन स क्रिया
तत्र चादिमः ॥ आवश्यकादिविहितः क्रियारूपः प्रकीर्त्तितः॥२॥

अर्थ ॥ हवेकदाग्रहनानाशथी मिथ्यात्वरूपअंधकारनो विपयगयोछे जेमांथीएट वालसमकितेंकरी उज्ज्वलअंतःकरणथयांछे जेहना एहवाजेप्राणी तेमने अध्यात्मनीशु

क्रियकीयोगप्रसिद्धरीतें प्रगटे ॥ १ ॥ तेयोगनावेभेदछे एककर्मयोग, अनेबी॰ योग नेमांकर्मयोगते आवश्यकादिकजे क्रियाकरवीतेरूपकह्योछे ॥ २ ॥

शारीरस्पंदकर्मात्मा यदयं पुण्यलक्षणं ॥ कर्मातनोति सद्रो गात्कर्मयोगस्ततः स्मृत ॥ ३ ॥ आवश्यकादिरागेण वात्स ल्याद्भगवद्गिरा ॥ प्राप्नोति स्वर्गसौख्यानि न याति परमं पदं ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ शरीरचेष्टारूप तेकर्मात्माकहियें, एयोगपुण्यरूपछे तेरुडाजोगथकी क नेविस्तारेछे तेमाटेएनेकर्मयोगकहियें ॥ ३ ॥ आवश्यकादिकक्रियानेरागे तथावि वाणीने विलासेंकरीने स्वर्गनासुखनेपामे, पणएयोगेंमुक्तिपदनेनपामे ॥ ४ ॥

ज्ञानयोगस्तप शुद्धमात्मरत्येकलक्षणं ॥ इंडियार्थोन्मनीभा वात्समोक्षसुखसाधक ॥ ५ ॥ न परप्रतिबंधोस्मिन्नल्पोप्येका त्मवेदनात् ॥ शुनं कर्मापि नैवात्र व्याक्षेपायोपजायते ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ बीजोज्ञानयोगतेहनेकहियें, जेतपशुद्धिपणे आत्मानेविषेरतिपामे तेएक लक्षण अने इंडियोनाविषयथीदूररहेवु,तेथीज, एवालक्षणेयुक्तजेयोग तेनेपामेथोपुरु तेमोक्षसुखनेसाधे ॥ ५ ॥ एकआत्मज्ञानयोगना ज्ञानमां बीजोप्रतिबंधनथी, अन जेकर्मथीमोक्षमांजता वारलागे तेशुनकर्मपणनथी ॥ ६ ॥

नह्यप्रमत्तसाधूना क्रियाप्यावश्यकादिका ॥ नियता ध्यानशु द्धत्वाद्यदन्यैरप्यद स्मृतं ॥ ७ ॥ यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृ प्तश्च मानव ॥ आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ अप्रमत्तसाधुने आवश्यकप्रमुखजेक्रिया तेनोपण करवानेविषे प्रतिब थी केमकेतेनेध्यानरूपशुद्धिछे, माटे ॥ ७ ॥ वलिअन्यदर्शनमां पण श्रीकृष्णकहे के, हे अर्जुन ! जेआत्मसुखमातृप्तछे,तेनेआत्मानेविषेज रतिछे, अनेसंतोषछे नेआ सुखमा संतुष्टछे, एहवोजेजीव तेहनेकांइपणकर्त्तव्यनथी ॥ ८ ॥

नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृते नेह कश्च नान चास्य सर्वभूतेषु कश्चि दर्थव्यपाश्रय ॥ ए ॥ अवकाशो निषिद्धोस्मिन्न रत्यानंदयोर पि ॥ ध्यानावष्टंभत कास्तु तत्क्रियाणा विकल्पन ॥ १० ॥

अर्थ ॥ तेप्राणीनेकार्यकरवे अर्थनथी, तेमजनकरवाथी खोटपणनथी तेहनेमा भूतनेविषेकांइप्रयोजननथी ॥ ए ॥ एठेकाणे अरतिनो अनेआनंदनो अवकाशनथी वेमके, ध्याननीस्थिरताथी तेक्रियानोविकल्पपण केमहोय ? ॥ १० ॥

देहनिर्वाहमात्रार्था यापि भिक्षाटनादिका॥क्रिया सा ज्ञानिनोऽसं गान्नैव ध्यानविघातनी ॥ ११ ॥ रत्नशिक्षादृगन्या हि तन्नियोजनदृग् यथा ॥ फलभेदात्तथाचारक्रियाप्यस्य विभिद्यते ॥ १२ ॥

अर्थ ॥देहनिर्वाहरूपें मुनिने गोचरीप्रमुखजे क्रियातेक्रिया ज्ञानिनाअसंगानुष्ठा नथी ध्यानमांविघ्नकरेनही ॥ ११ ॥ रत्नमाणिक्यपरीक्षाना ग्रंथजुदा अनेनजरपरीक्षा पणजुदी. ग्रंथजाणीने जेमनजरपरीक्षामांफल भेदथीप्रवर्त्तेछे, तेमआचारक्रियापण फेलभेदेंकरी भिन्नभिन्नछे, एटले भेदवंतीछे ॥ १२ ॥

ध्यानार्था हि क्रिया सेयं प्रत्याहृत्य निजं मनः ॥ प्रारब्धा जन्मसंकल्पादात्मज्ञानाय कल्पते ॥ १३ ॥ स्थिरभूतमपि स्वांतं रजसा चलतां व्रजेत् ॥ प्रत्याहृत्य निगृह्णाति ज्ञानी यदिदमुच्यते ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जोपोतानामनने पाछुंवालीने जन्मसंकल्पथीमांडीने आत्मज्ञानभणी कल्पियें तोतेक्रियाध्यानरूपछे ॥ १३ ॥ स्थिरथयेलुंजेमन तेपणरजोगुणेकरी चपलताने-पामे तेहनेपाछुंवाली तेनोनिग्रहकरे तेनेज्ञानीकेहवो ॥ १४ ॥

शनैः शनैरुपरमेद्बुध्या धृतिगृहीतया॥ आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किंचिदपि चिंतयेत् ॥१५॥ यतो यतो निःसरति मनश्चंचलमस्थिरं ॥ ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् ॥ १६ ॥

अर्थ॥हे अर्जुन ! मननेधीरेधीरेधीरजवके अनेबुद्धिवडे स्थिरकरवुं. पछीतेमनजेवारें आत्मानास्वरूपनेविषेजाय, तेवारे कांइपीजुं चिंतनकरवानी जरूरनथी॥१५॥मनचंचलने-अस्थिरछे, तेनेज्यांज्यां जायत्यांत्यांथीपाछुंवालीने आत्मानीसाथें वशकरीराखवुं ॥ १६ ॥

अतएवादृढस्वांतः कुर्याच्छास्त्रादिना क्रियां ॥ सकलां विषयप्रत्याहरणाय महामतिः ॥ १७ ॥ श्रुत्वा पैशाचिकीं वार्त्तां कुलवध्वाश्च रक्षणं ॥ नित्यसंयमयोगेषु व्यापृतात्मा भवेद्यतिः ॥१८॥

अर्थ ॥ एमपरदर्शनमांपण कह्युंछे माटेज्यांसुधी मनस्थिरनहोय, त्यांसुधी शास्त्रोक्तक्रिया जेटलीकरियें, तेटलीसर्वसफलथाय. जेवारेंविषयत्याग थाय, तेवारेंजसफलथाय माटेजेप्राणीमननेविषयथीवालवामां उजमालरहे, तेमहामति वालाजाणवा ॥ १७ ॥ जेमएकशेठनोपुत्र देशांतरगयो तेनाघरनीसामेना एकवृक्षउपर एकभूतरहेतो हतो, तेछलपामि पुत्रनुंरूपधारणकरी तेनिघरनी वायरीसाथेंलागुपड्यो. एम

करताते शेठनो दीकरो पोताने घेर आव्यो तेवारें घरमा लडाइचालवालागी
वारें इनसाफ नेवास्ते गया तिहांथी जूतनेघरमांथी काढवानुंकह्युं पणतेजूत
नही, नेकेहेवालाग्योकेहुं जवानोनथी, हुंपणपुत्रहुं, एवातसांजलीवहुने लाजलागी
शेठेजूतने वैरीसाथे युद्धकरवानुंकामजलाव्युं, अनेवहुने घरनोधधोजलाव्यो
अनाचारटाल्यो, अनेवहुनेराखी तेममुनियेंपण सयमनायोगे आत्मानेराखवो ॥
या निश्चयैकलीनाना क्रिया नातिप्रयोजना ॥ व्यवहारदशास्था
ना ता एवातिगुणावहा ॥१९॥ कर्मणोपि हि शुद्धस्य श्रद्धामेधा
दियोगत ॥ अक्षत मुक्तिहेतुत्वं ज्ञानयोगानतिक्रमात् ॥ २० ॥
अर्थ ॥ जेनुमन निश्चयमा लीनछे, तेनेक्रियानु प्रयोजननथी ०५
ने क्रियाते अतिगुणकारीछे ॥ १९ ॥ शुजकर्मथी अने श्रद्धाबुद्धिनायोगथी
नयोगने उलंघेनहीतो, तेहनेमुक्तिनोहेतु प्रगटथाय ॥ २० ॥
अभ्यासे सत्क्रियापेक्षा योगिना चित्तशुद्धये ॥ ज्ञानपाके शमस्यै
व यत्परैरप्यद स्मृत ॥ २१ ॥ आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्मकारण
च्यते ॥ योगारूढस्य तस्यैव शम कारणमुच्यते ॥ २२
अर्थ ॥ जेरुडीक्रियानीअपेक्षायें अभ्यासकरेछे, ते योगीश्वरने चित्त
ज्ञानपरिपक्वकरवाने उपशमकह्युंछे एमअन्यदर्शनीउ पणकहेछे ॥ २१ ॥
योगपामवानेइच्छताजेयोगीछे, तेहनेकर्मतो एककारणछे जेवारेंसर्व
तेवारेंतेनेज्ञानयोगी कहियें तेमाटेज्ञानारूढने समतातेजकारणछे ॥ २२
यदा हि नेंद्रियार्थेषु न कर्म्मस्वनुषज्यते ॥ सर्वसंकल्पसन्
योगारूढस्तदोच्यते ॥ २३ ॥ ज्ञानं क्रियाविहीनं न क्रि
ज्ञानवर्जिता ॥ गुणप्रधानजावेन दशाभेद किलैनयो ॥
अर्थ ॥ जेवारेंविषयथीविरमें, कर्मनेविषे सलग्ननथाय, जेवारेंसर्व
य तेवारेंतेहने योगारूढकहियें ॥ २३ ॥ क्रियाविना ज्ञाननथी, अनेज्ञ
नथी एवेमांक्रियातेगौणछे, अनेज्ञानतेमुख्यछे एवोएवेनो दिशीभेद
ज्ञानिना कर्मयोगेन चित्तशुद्धिमुपेयुषा ॥ निरवद्यप्र
ज्ञानयोगोचिती तत ॥२५॥ अतएव हि सुश्रद्धा चरा
नोत्तर ॥ ड पालश्रमणाचारग्रहण विहित जिने ॥

अर्थ ॥ कर्मयोगेंकरीने मनशुद्धिपामेला अने निर्दोषविहारी एहवाजेज्ञानी तेहने ज्ञानयोग मुख्यपणेसेववो उचितछे. एवोवीतरागनोमतछे ॥ २५ ॥ एमाटेरुडीश्रद्धा थंदेशविरतिरूप चारित्रनो स्पर्शकीधापछी दुःखेपाळिगकिये, एवामुनिनोआचार जेस वेविरतिपणुंछे, तेलेवो. एटलेप्रभुयें पछीसंयमलेवुंकह्युंछे ॥ २६ ॥

एकोद्देशेन संवृत्तं कर्म यत्पौर्वभूमिकं ॥ दोषोच्छेदकरं तत्स्या
द् ज्ञानयोगप्रवृद्धये ॥ २७॥ अज्ञानिनां तु यत्कर्म न ततश्चि
त्तशोधनं ॥ योगादेरतथाभावात् म्लेछादिकृतकर्मवत् ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ कोइएकदेशआश्रिने पूर्वभूमिते पूर्वभवरूपसंवृत्तपणे उद्देशीने एटलेदेश- की जेपेहेलांवृत्तआदर्यां एहवीजेक्रिया तेपणदुःखने टालनारीछे. वलीज्ञानयोगनी द्धिकर्त्ताथायछे ॥२७॥ अनेअज्ञाननीजेक्रियातेचित्तशुद्धि करवानेअर्थे नहीथाय. के- केतेहनेज्ञानयोगनो अभावछे, माटे म्लेछनाकरेला कार्यसरखीतेजाणवी ॥ २८ ॥

न च तत्कर्मयोगेपि फलं संकल्पवर्जनात् ॥ संन्यासो ब्रह्मबो
धाद्वा सावद्यत्वात्स्वरूपतः ॥२९॥ नो चेदित्थं भवेच्छुद्धिर्गोहिं
सादेरपि स्फुटा॥श्येनाद्वा वेदविहिता द्विशेषानुपलक्षणात् ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ तोतेवाकर्मयोगेपण फलनथी. फलनोसंकल्प वर्जे तेवारेंजथायछे. आत्मज्ञा नविना त्यागपणनथी, अनेएनुंस्वरूप सावद्यछे. माटेब्रह्मजेज्ञान तेनाबोधथकी फल- प्रगटे ॥ २९ ॥ जोकदापिएमशुद्धिनहोय, तेवारेंतो गोहिंसादिक थकीम्लेछादिकनेपण प्रगटशुद्धिहोय, तथाहिंसाणानावधथीवेदमां पशुयागकह्या, तेथकीहिंसककर्मनायोगें वेदीयाना अनेम्लेछना एकसरखांजलक्षणछेः कांइविशेषनथी ॥ ३० ॥

सावद्यकर्म नो तस्मादादेयं बुद्धिविप्लवात् ॥ कर्मोदयागते त
स्मिन्नसंकल्पादबंधनं ॥ ३१ ॥ कर्माप्याचारतोज्ञातु मुंक्ति
भावो न हीयते ॥ तत्र संकल्पजो बंधो गीयते यत्परैरपि ॥३२॥

अर्थ ॥एटलामाटे बुद्धिनाविपर्यासपणाथी सावद्यकर्मआदरवुंनहीं, अनेजोंदययोगें तेवांकर्मकरवानुं उदय आव्युं. तेवारेंतेकर्मकरवानो जोसंकल्पनथी, तोतेनुंबंधन- पणनथी ॥३१॥ सांसारिकक्रियानोजो आचारछे तोपणज्ञानीने मुक्तिभावनी हाणनथी. केमकेसंकल्पथी बंधनछे, एवुंअन्यदर्शनवालानुंपणकेहेवुंछे. तेशुंआगलकहेछे ॥ ३२ ॥

जितेंडियो जितक्रोधो मानमायानुपद्रुत ॥ लोजरसस्पर्गेरहितो
वेदखेदविवर्जित ॥ ४ए ॥ संनिरुध्यात्मनात्मानं स्थित स्वकृ
तकर्मजित् ॥ हगप्रयलोपरत सहजाचारसेवनात् ॥ ५० ॥

अर्थ ॥ जेक्रोधरहित, तथा मानमायानाउपडवे रहित, अने लोजनास्पर्शेरहित,वेदे दयरहित, खेदरहितहोय तेनेजितेंडियकहिये ॥ ४ए ॥ तेआत्माएकरी आत्मानेरोधी रह्यो, पोतानाकस्या कर्मनेजेदतो कदाग्रहथीनिरम्यो, स्वाजाविकआचारने सेवतो॥५०॥

लोकसंज्ञाविनिर्मुक्तो मिथ्याचारप्रपंचहृत् ॥ उल्लसत्कंरूक
स्थान परेण परमाश्रित ॥ ५१ ॥ श्रद्धावानाज्ञया युक्तः श
स्त्रातीतोह्यशस्त्रवान् ॥ गलो दृष्टेषु निर्वेदमनिन्हुतपराक्रम ॥५२॥

अर्थ ॥ लोकसञ्ज्ञाथी मुकाणो, मिथ्यात्वआचारनोटालनार, योगस्थानकें उल्लसि तथयोठे, एवो जेउत्कृष्टजावें आत्मानोआश्रितथयोठे॥५१॥ तथाश्रद्धावंत, आज्ञायुक्त अने माठाअध्यवसायरूपजे शस्त्र तेथीवेगलोरहेलो, अनेबाह्यशस्त्रथीरहित, देखा इतापदार्थनेविषे वैराग्यवान, वली बलवीर्यनेअणगोपवनार ॥ ५२ ॥

निहितदरोध्यानाग्निदग्धपापेधनव्रज ॥ प्रतिस्रोतोनुगत्वेन
लोकोत्तरचरित्रजृत् ॥ ५३ ॥ लब्धान् कामान्बहिष्कुर्व न्नकुर्व
न्बहुरूपता ॥ स्फारीकुर्वन् परं चक्षु रपर च निमीलयन् ॥५४॥

अर्थ ॥ अने व्रणदररहित, जेणे ध्यानरूपअग्निएकरी पापरूपकाष्टनासमूहने बा ल्योठे, जे सामेंप्रवाहे चालवेकरीने लोकोत्तरचारित्रनो धरनार ॥ ५३ ॥ तथा विषय सुखपामीने तेसुखदूरकरनार तथामायाकपट अनेक्रोधादिकने अणकरतोथको तेज्ञान चक्षुने विकस्वरकरतो अज्ञानरूप चक्षुने बधकरतोथको ॥ ५४ ॥

पश्यन्नंतर्गतान् जावान् पूर्णजावसुपागत ॥ जुजानोध्यात्मसा
म्राज्यमवशिष्टं न पश्यति ॥५५॥ श्रेष्ठो हि ज्ञानयोगोयमाध्यात्म
न्येव यजागौ ॥ वंधप्रमोक्षं जगवान् लोकसारे सुनिश्चित ॥५६॥

अर्थ ॥ वलीजेअध्यात्मजावने देखतोथको पूर्णजावने पामेलो,अध्यात्मनी ठकुराईने जोगवतोथको अन्यपदार्थने नथीजोतो॥५५॥एजपरकह्यो तेउत्कृष्टज्ञानयोगठे एअध्या त्मग्रथनेविषे बध मोक्षपण जगवतेनिश्चये आचारागनालोकसार अध्ययने कह्योठे॥५६॥

उपयोगैकसारत्वादाश्वसंमोहबोधनः ॥ मोक्षाते युंज्यतेचैव
तथाचोक्तं परैरपि ॥५७॥ तपस्विभ्योधिको योगी ज्ञानिभ्योप्य
धिको मतः ॥ कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन ॥५८॥

अर्थ ॥ मोक्षप्राप्तिनेविषे उपरकहेलोज्ञानयोग घटेछे, केमके शीघ्रपणे ज्ञानजाग्रत एहवोउपयोगजमात्र एकसारछे; अनेअन्यदर्शनीएपण एमजकह्युंछे ॥ ५७ ॥ तपसीथी योगीअधिकछे; ज्ञानीथी अने राजाथीपण योगीनेमोटोकह्योछे; तेमाटेश्रीकृष्णे अर्जुननेकह्युंछेके हे अर्जुन ! तुमेपणयोगीथाओ ! ॥ ५८ ॥

समापत्तिरिहव्यक्तमात्मनः परमात्मनि ॥ अभेदोपासनारूप
स्ततः श्रेष्ठतरोह्ययं ॥ ५९ ॥ उपासना भागवती सर्वेभ्योपि ग
रीयसी ॥ महापापक्षयकरी तथा चोक्तं परैरपि ॥ ६० ॥

अर्थ ॥ माटेइहां आत्मानीसमाप्तिप्रगटेछे. आत्मा तथा परमात्मा ए वेउनेविषे अभेदपणे सेवनरूपजेयोग तेघणोजश्रेष्ठछे ॥ ५९ ॥ माटेसर्वथीमोटी अनेमोटापापनेटालेएवीप्रभुनीसेवाछे. अनेपरदर्शनीयेंपण एवुंजकह्युंछे ॥ ६० ॥

योगिनापि सर्वेषां मद्गतेनांतरात्मना ॥ श्रद्धावान् भजते यो
मां स मे युक्ततमोमतः ॥६१॥ उपास्ते ज्ञानवान् देवं यो निरंज
नमव्ययं ॥ स तु तन्मयतां याति ध्याननिर्धूतकल्मषः ॥ ६२ ॥

अर्थ ॥ ॥ सर्वयोगीमांपण अंतरआत्मायें भज्योएवो श्रद्धावंतप्राणी तोतेहनेकहियें. जेमुजनेसेवे, तेमुजसरखोपुरुषोत्तमथाय, एमश्रीकृष्णअर्जुननेकहेछे ॥६१॥ ज्ञानवंत. निरंजन अने अविनाशीदेवजाणीने, जेपुरुषमनेसेवेछे, तेतन्मयिपणेथायछे, अने जेणेमहाराध्यानथी पापबालीनाख्याछे, हे ! अर्जुन ! तेपुरुषमहारारूपेंथायछे ॥ ६२ ॥

विशेषमप्यजानानो यः कुग्रहविवर्जितः ॥ सर्वज्ञं सेवते सोपि
सामान्यं योगमास्थितः ॥ ६३ ॥ सर्वज्ञो मुख्य एकस्तत् प्रतिप
त्तिश्च यावता ॥ सर्वेपि ते तमापन्ना मुख्यं सामान्यतो बुधाः ॥ ६४॥

अर्थ ॥ जेविशेषनेअणजाणतोछे, तोपणजे कदाग्रहेंरहितछे अनेजेसर्वज्ञनेसेवेछे. तेपण सामान्ययोगे आश्रितछे ॥ ६३ ॥ सर्वप्रमाणमां एकसर्वज्ञतोमुख्यछे; सेवाना करनारजेटलाछे, तेसर्वेतेहिज सर्वज्ञनाभावनेपामे, मेतो सामान्यथकीकहेछे ॥ ६४ ॥

न ज्ञायते विशेषस्तु सर्वथा सर्वदर्शिभिः ॥ अतो न ते तमापन्ना विशेष्य भुवि केचन ॥ ६५ ॥ सर्वज्ञप्रतिपत्त्यंशा त्तुल्यता सर्व योगिना ॥ दूरासन्नादिभेदस्तु तद्भृत्यत्व निहन्ति न ॥ ६६ ॥

अर्थ ॥ तेसर्वथा सर्वज्ञ सर्वदर्शीतेनडेपण विशेषतोजाणतोनथी, तेथीतेकोइ विशेषभूमीकाने पाम्यानथी, एटले पृथ्वीमाकोइ विशेषजाणपणे सर्वज्ञपणुपाम्यानथी ॥६५॥ सर्वज्ञपणानाजेप्रत्येक अंशछे तेसर्वयोगीनेसरिखाछे, माटेढुकडा अनेवेगळापणाना भेदथी तेहनुसेवकपणु काइहणातुनथी ॥ ६६ ॥

माध्यस्थमवलम्ब्यैव देवतातिशयस्य हि ॥ सेवा सर्वैर्बुधैरिष्टा कालातीतोपि यज्जगौ ॥ ६७ ॥ अन्येषामप्ययं मार्गो मुक्ताविद्या दिवादिना ॥ अभिधानादिभेदेन तत्त्वरीत्या व्यवस्थित ॥६८॥

अर्थ ॥ माध्यस्थपणु अवलबीने एटलेदेवताना अतिशयनु माध्यस्थपणु धारीने सर्वपडितेंसेवामानीछे कालथी अतीतछे तोपणएमकहेछे ॥ ६७ ॥ बीजापणमुक्तादीनो अनेअविद्यादिकवादी जेपरदर्शनीतेनेपण आमार्गछे एटले पूर्वेकह्योतेमार्गछे जो पण नामादिकभेदेकरी कदापिजूदाछे, तोपणतत्त्वरीतें जोताएकजव्यवस्थाछे ॥ ६८ ॥

मुक्तोबुद्धोर्हंश्चापि यत्र चैश्वर्येण समन्वित ॥तदीश्वर· स एव स्यात् संज्ञाभेदोत्र केवलं ॥ ६९ ॥ अनादिशुद्धइत्यादि र्योभेदो यस्य कल्प्यते ॥ तत्तत्तंत्रानुसारेण मन्ये सोपि निरर्थक ॥७०॥

अर्थ ॥ तेव्यवस्थाकहीदेखाडेछे कोइदर्शनी मुक्तकहेछे, कोइबुद्धकहेछे, कोइक अर्हत्कहेछे, कोइकऐश्वर्ययुक्तएटलेईश्वरकहेछे, एसर्वसर्वज्ञनीसज्ञानाभेदछे बीजुकाइ नथी ॥ ६९ ॥ तेमजवली अनादिशुद्धईश्वरछे, इत्यादिकभेदजे परदर्शनीओकल्पेछे तेभेदसिद्धातने अनुसारेविचारीयें तोमानवा पण निरर्थकछे इतिभाव ॥ ७० ॥

विशेषस्यापरिज्ञानाद् युक्तीनां जातिवादिन ॥ प्रायोविरोधतश्चैव फलाभेदाच्च भावत ॥ ७१ ॥ अविद्या क्लेशकर्मादि यतश्च भवकारण ॥ तत प्रधानमेवैत त्संज्ञाभेदमुपागतं ॥ ७२ ॥

अर्थ ॥ केमकेजे विशेषनेनहिजाणवाथी उक्तियुक्तिनाजातिवचनथी अने प्रायेंविरोधथकी भावथीफलनोअभेदछे, एहेतुमाटे ॥७१॥ जे अविद्या, क्लेश, अने कर्मइत्यादिकजे ससारनाकारणप्रगटे, तेकेटलाएक दर्शनीओजूदाजूदाकहेछे एटलेकोइअविद्या, कोइ क्लेश ॰ ॰ एमसज्ञायेंकरीभेदकहेछे पणएत्रणेप्रधानपणे एकजछे ॥ ७२ ॥

यस्यापि यो परोभेद श्चित्रोपाधिस्तया तथा ॥ गीयतेऽतीतहेतु
भ्यो धीमतां सोप्यपार्थकः ॥ ७३ ॥ ततः स्थानप्रयासोयं यत्त
भेदनिरूपणं ॥ सामान्यमनुमानस्य यतश्च विषयोगतः ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ एअविद्यादिकत्रणनावली बीजाभेद कल्पनायेंअनेकथायछे. तेथीअनेकप्रकारनी उपाधिनीपजे. तेमतेमजाणियेंजेहेतुनोअन्नावथायछे, पणतेउपाधिभेद पंडित-नेनिरर्थकछे एमजाणवुं ॥ ७३ ॥ तेथीआस्थाननोजेप्रयास तेभेदनुंनिरूपणकरवाने अनुमाननोविषय तेसामान्यजाणवो केमकेज्यांअनुमान प्रमाणकरियें. त्यांसामान्यपणे उपयोगीहोयतेवारें अनुमानविषयनो अन्नावथाय ॥ ७४ ॥

संदिग्धरुचिजिज्ञासो र्विशेषान्न वलं वलं ॥ चारिसंजीविनीचा
रज्ञत्वादत्रोपयुज्यते ॥ ७५ ॥ जिज्ञासापि सतां न्याय्या यत्प
रेपि वदंत्यदः ॥ जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्त्तते ॥७६॥

अर्थ ॥ जेम संजीवनीनामाचारोजे वासबुटीतेने ओलखनारी एकमोटीस्त्रीयें ते बुटीनेयोगे बीजीनानीस्त्रीनाजर्त्तारने पशुअवस्थामांथी पुरुषबनाव्यो. तेम संदेहरुचि वालो विशेषवलवान्केवारेंकेहेवाय ? जेवारेंतेनीप्रीति साचेसाचीहोय तेवारेंकहेवाय. पणसाचीप्रीतिविनानुं विशेषवलतेवलमांनगणाय ॥ ७५ ॥ माटे एत्रणजेकामादियोग-तेनेविषे सत्पुरुषेंजाणपणुंराखवुं उचितछे. परदर्शनीनुं केहेवुंपणएवुंजछे. हे अर्जुन ! जेपुरुषज्ञानयोगनेजाणवाछ्छे. तेपुरुषपरमात्मानो विज्ञानेपामे ॥ ७६ ॥

आर्त्तोजिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी चेति चतुर्विधाः ॥ उपासकास्त्रयस्त
त्र धन्या वस्तुविशेषतः ॥ ७७ ॥ ज्ञानी तु शांतविक्षेपो नित्यभ
क्तिर्विशिष्यते॥अत्यासन्नोह्यसौ भर्तुरंतरात्मा सदाशयः ॥७८॥

अर्थ ॥ एकदुःखी, बीजोजाणवानीइछावालो. त्रीजोधननोअर्थी, अने चोथोज्ञानी एचारप्रकारना हे अर्जुन ! मारासेवकोछे पणतेमध्ये एकधनार्थीविना जे बीजात्रण जातना सेवकतेवस्तुतत्त्वनाजाणछे. माटेधन्यछे; वखाणवायोग्यछे ॥ ७७ ॥ एत्रणने धन्यकह्यातेमां पण जेनोविक्षेपशम्योछे, अने नित्यभक्तिवंत एहवोज्ञानीपुरुषजे चोथो. तेमोटोजाणवो. तेज्ञानीअमारीपासे अत्यंतनजीकरहेछे; माटेश्रेष्ठछे. केमकेअंतरात्मायें-वर्त्तेछे. अनेतेनाआशयनिर्मलछे. तेमाटे ॥ ७८ ॥

कर्मयोगविशुद्धस्तद् ज्ञाने युंजीत मानसं॥ अज्ञश्च श्रद्दधानश्च
संशयात्मा विनश्यति ॥ ७ए ॥ निर्भयः स्थिरनासाग्रदत्तदृष्टिर्व्रते
स्थितः ॥ सुखासनः प्रसन्नास्यो दिशश्चानवलोकयन् ॥ ८० ॥

अर्थ ॥ हे अर्जुन ! कर्मयोगें विशुद्धथको तेप्राणी ज्ञानमांपोतानु मनजोमेले अने हे अर्जुन ! एकमूर्ख, बीजो श्रद्धारहित, अनेत्रीजो सशयजरेलोमाणस एत्रणेविनाशपामेछे ॥७५॥ निर्जय, नाशिकानाअग्रजागनेविषे दृष्टिराखीने स्थिररहेनार, तथा निरतर व्रतमारहेनार, एहवोसुखआसनेबेठो, वलीप्रसन्नमुखछे जेहनुं, अने एकदृष्टिराखनार आडुअवलुनहीजोनार ॥ ८० ॥

देहमध्यशिरोग्रीव मवक्रं धारयन्बुध ॥ दंतैरसस्पृशन् दंतान् सुश्लिष्टाधरपल्लव· ॥ ८१ ॥ आर्त्तरौद्रे परित्यज्य धर्मे शुक्ले च दत्तधी ॥ अप्रमत्तो रतो ध्याने ज्ञानयोगी जवेन्मुनि ॥ ८२ ॥

अर्थ ॥ केड, मस्तक, अने कोटतेने पाधराधरतो, एटले शरीरनी चपलताइवाकारहित एहवोमाह्यो, दांतेकरीदातने अणफरसतो एटले स्पर्शकरतोनथी अने जेनाहोठ पल्लववेठरुडीरीतेंमलेलाहोय ॥ ८१ ॥ तथा आर्त्तरौद्रध्यानछांडीने धर्मशुक्लध्यानमाबुद्धिदीधीछे अनेजावेंअप्रमत्तपणें ध्यानमारतथको एवोजेमुनि तेनेज्ञानयोगीकेहेवो ॥८२॥

कर्मयोग समन्यस्य ज्ञानयोगसमाहित ॥
ध्यानयोग समारुह्य मुक्तियोग प्रपद्यते ॥ ८३ ॥

अर्थ ॥ तेमुनिकर्मयोगनो अन्यासकरी चढवानेउजमालथइ ज्ञानयोगरूपदोरडजाली, समाधिपणे ध्यानयोग नीशरणीयें चडीने मुक्तियोगरूपमदीरनेपामे ॥ ८३ ॥
इतियोगाधिकार पचदशमोसमाप्त

स्थिरमध्यवसानं य त्तद्यान चित्तमस्थिरं ॥ जावना वाप्यनुप्रेक्षा चिंता वा तत्रिधा मत ॥ १ ॥ मुहूर्त्तांतर्जवेद्यान मेकार्थे मन स स्थिति ॥ वह्वर्थसक्रमे दीर्घाप्यच्छिन्ना ध्यानसतति ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेचित्तचपलछे, पणतेचित्तनेजेस्थिरपणे चित्तनाअध्यवसायने प्रगटकरेतेमरें तेनेध्यानयोगीकहियें एकजावना, बीजीअनुप्रेक्षा,अनेत्रीजु चिंतानुध्यान, एत्रणप्रकारें चित्तचपलथायछे ॥ १ ॥ अतर्मुहूर्त्तध्यानहोय, पणजिहा एकवामें एकअर्थनेविषे घणाअर्थनु सक्रमणथाय, एवीमननी स्थितिहोय, तिहाध्याननी अनिच्छिन्नदीर्घपणे परपराथाय तिहाकाइअतर्मुहूर्तनो नियमनथी ॥ २ ॥

आर्त्त रौद्रच धर्म्म च शुक्ल चेति चतुर्विधा॥तत्स्याद्भेदाविह द्वौ द्वौ कारणं जवमोक्षयो ॥ ३ ॥ शब्दादीनामनिष्टाना वियोगासंप्रयोगयो· ॥ चितनं वेदनायाश्च व्याकुलत्वमुपेयुषः ॥ ४ ॥

अर्थ॥ आर्त्त, रौद्र. धर्म ने शुक्ल, एचारध्याननाभेदछे. तेमध्येप्रथमनांबेध्यानते संसारनाकारणिकछे. अने पाछलांबेध्यानते मुक्तिनांकारणवाचीछे ॥ ३ ॥ तेमांप्रथमआर्त्तध्यानना चारभेदकहेछे. प्रथमअनिष्टजेशब्दादिक, तेनोवियोगवांछे के रखेअनिष्टनोसंयोगथने: तेमअनिष्टमलेजे पीडाथायतेनुं चिंतनकरेतेथीव्याकुलथाय ॥ ४ ॥

इष्टानां प्रणिधानं च संप्रयोगवियोगयोः॥ निदानचिंतनं पापमार्त्तमिहं चतुर्विधं ॥ ५ ॥ कापोतनीलकृष्णानां लेश्यानामत्र संभवः ॥ अनतिक्लिष्टभावानां कर्म्मणां परिणामतः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ बीजोभेद इष्टनुंचिंतनकरे; एटलेरखेइष्टवस्तुना संयोगनोवियोगथइजाय; त्रीजो नियाणुंकरे; चोथो रोगनाऔषधनीचिंताकरे. एचारआर्त्तध्याननाप्रकारछे ॥ ५ ॥ एमध्ये कापोत, नील, कृष्ण. एत्रणलेश्यानोसंभवछे. केमके जेमांअतिक्लिष्टभावनानथी एवीकर्मनीपरिणतिना परिणामेंकरी एत्रणलेश्यानोसंभवछे॥६॥

क्रंदनं रुदनं प्रोच्चैः शोचनं परिदेवनं ॥ ताडनं लुंचनं चेति लिंगान्यस्य विदुर्बुधाः ॥ ७ ॥ मोघं निंदन्निजं कृत्यं प्रशंसन् परसंपदं ॥ विस्मितः प्रार्थयन्नेताः प्रसक्तश्चैव दुर्जनः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ बकोरकरवो, उंचेस्वरेरडवुं, शोचनाकरवी, नामदइनेरुवुं, मारवुं, माथाना वालतोरुवा, इत्यादिकने पंडितआर्त्तध्यानना लक्षणकहेछे ॥ ७ ॥ अमेमंदबुद्धिछेयें एमकहीनेपोतानुंकार्यनिंदे,अमेशुंपालीशुं ? मुक्तिमार्गतोमोहोटोछे, एमप्रशंसाकरे, एम विस्मितथको लोकपासे मांगतोफरे, इत्यादिकदुर्जननीरीतछे ॥ ८ ॥

प्रमत्तश्चेंद्रियार्थेषु गृध्नो धर्म्मपराङ्मुखः॥ जिनोक्तमपुरस्कुर्वन्नार्त्तध्याने प्रवर्त्तते ॥ ९ ॥ प्रमत्तांतगुणस्थानानुगमे तन्महात्मना ॥ सर्वप्रमादमूलत्वा त्याज्यं तिर्य्यग्गतिप्रदं ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेप्रमादीहोय, विषयमांलीनहोय, धर्मथीउलटोहोय, जिनवाणीनेगोपवे, तेवोपुरुष आर्त्तध्यानमांप्रवर्त्ते ॥ ९ ॥ माटेएध्यानछपला गुणठाणापामतांथकां प्रमादमांपारु, अनेएध्यान छठागुणठाणालगेंरहे; माटेमोटामुनियें सर्वप्रमादनुंमूल तथातिर्यञ्चगतिपमारु एवुंजाणीनेएध्याननेछोडवुं ॥ १० ॥

निर्दयं वधबंधादिचिंतनं निबिडक्रुधा ॥ पिशुनासत्यमिथ्यावाक् प्रणिधानं च मायया॥११॥ चौर्य्यधीनिरपेक्षस्य तीव्रक्रोधानलस्य च ॥ सर्वाभिशंकाकलुषं चित्तं च धनरक्षणे ॥ १२॥

अर्थ ॥ हवेजेनिर्दयहोय, जीवनोवध बधनादिकचिंतवे, आकरो क्रोधीहोय, चाडीओहोय, जुठुबोले, मिथ्यात्वनु वचनबोले, माया कपटधरे ॥ ११ ॥ चोरीकरनार, मार्गरहित, क्रोधरूपअग्नियें धमधमतोरहे, धनसचयकरनार, धननेकाटीराखे, पणकार्येमेलुमनराखनार, पटलेरखेने कोइमारुंधनजुए अनेलेइजाय ॥ १२ ॥

एतत्सदोषकरणकारणानुमतिस्थिति ॥ देशाविरतिपर्यतं रौद्रध्यान चतुर्विधं ॥ १३ ॥ कापोतनीलकृष्णानां लेश्यानामत्र संभव ॥ अतिसंश्लिष्टरूपाणां कर्मणा परिणामत ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एरीतेएध्याननेकरवे, करावबे अने अनुमोदवानीस्थितियें करीएध्यान दें पनुकारणछे एध्यान चोथा अविरतिगुणठाणा अनेपांचमा देशविरति गुणठाणासुधी होय, एरीतेरौद्रध्यानना चारभेदकह्या ॥१३॥ कापोत, नील, अने कृष्ण एत्रणलेश्याने इहांभजवछे एअति संक्लिष्टरूपजे कर्मतेनापरिणामथीहोयछे ॥ १४ ॥

उत्सन्न बहुदोपत्वं नानामरणदोषता ॥ हिंसादिषु प्रवृत्तिश्च कृत्वाघ स्मयमानता ॥१५॥ निर्दयत्वाननुशयौ बहुमान परापदि ॥ लिंगान्यत्रेत्यदोधीरैस्त्याज्यं नरकदु खदं ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एप्रायें घणादोपनुकारणछे नानाप्रकारना जीवनेमारवाना दोषेंकरी हिंसादिकमा प्रवृत्तिथाय, पापकरीने खुशवक्तीपणुमाने ॥ १५ ॥ निर्दयपणु, पश्चातापपणु परयापदायें राजीपणु, अनेमहानिर्दयीपणु, एचिन्हेकरी एध्याननरकना दुःखनुंआपनारछे, माटेएध्यानने छाडवु ॥ १६ ॥

अप्रशस्ते इमे ध्याने दुरंते चिरसंस्तुते ॥ प्रशस्तं तु कृताभ्यासो ध्यानमारोढुमर्हति ॥ १७ ॥ भावनादेशकाले च स्वासनालंबनक्रमात् ॥ ध्यातव्यध्यानानुप्रेक्षा लेश्यालिंगफलानि च ॥१८॥

अर्थ ॥ एवाएवेध्यानते महानिंद्यछे एनोघणो परिचयकरिय, तोतेथीदुरथइ पाछप्रशस्त माटेडाह्यापुरुषें अभ्यासकरना उज्ज्वलध्याने चढवुयोग्यछे ॥ १७ ॥ हवेधर्मध्यानकहेछे देशकालजोइने शुभभावनाकरवी, पोतानीसत्ताना आलंबननाक्रमथी धर्मध्याता अनेध्याननी अनुप्रेक्षा ते शुभलेश्याना चिन्हनुफलछे ॥ १८ ॥

ज्ञात्वा धर्म ततोध्यायेच्चतस्रस्तत्र भावना ॥ ज्ञानदर्शनचारित्रवैराग्याख्या प्रकीर्तिता ॥ १९ ॥ निश्चलत्वमसंमोहो निर्जरा पूर्वकर्मणा॥संगासंगभयोच्छेदः फलान्यासां यथाक्रमात् ॥२०॥

अर्थ ॥ धर्मनेजाणीपछी ज्ञानन्नावना, दर्शनन्नावना, चारित्रन्नावना. अने वैराग्य न्नावना, एचारन्नावनाने धर्मजाणी ध्याववी ॥ १ए ॥ तेमां ज्ञानन्नावनाथी निश्चलपणुंथाय; अनेदर्शनन्नावनाथी अमूढपणुंथाय; वलीचारित्रन्नावनाथी पूर्वकर्मनीनिर्जराथाय; अने वैराग्यन्नावनाथी स्त्रियादिकनोसंग तथा पुज्ञलनीइहा अनेन्नयतेनोउब्ेदथाय; एरीतेंएचारन्नावनानां फलजाणवां. ॥ २० ॥

स्थिरचित्तः किलैताभिर्याति ध्यानस्य योग्यतां ॥ योग्यतैव हि नान्यस्य तथाचोक्तं परैरपि ॥ २१ ॥ चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवत् दृढं ॥ तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुडुष्करं ॥२२॥

अर्थ ॥ एन्नावनामां जेनुंचित्तस्थिरहोय, तेनेध्यानमांस्थिरतारहे. माटेतेप्राणीध्याननी योग्यतापामे; पणबीजोकोइनपामे. तेमजपरदर्शनमांपणकह्युंछे, तेकहेछे. ॥ २१ ॥ अर्जुनपुछेछे; हे कृष्ण ! मनतोचंचलछे; अनेशत्रुना सैन्यसरखुंदृढछे, तेमननोनिग्रहहुंशीरीतेकरुं ? केमके पवननीपेठेमनडुष्कर अनेअग्राह्यछे ॥ २२ ॥

असंशयं महाबाहो मनोडर्निग्रहं चलं ॥अन्यासेन च कौंतेय वैराग्येण च गृह्यते ॥ २३ ॥ असंयतात्मना योगो डःप्राप्य इति मे मतिः ॥ वश्यात्मना तु यतता शक्योवाप्तुमुपायतः ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ श्रीकृष्णकहेछे. हे महाबाहो ! के० मोटीछेबाहुजेनी एवा हे अर्जुन ! खरेखरुंमनचपलछे. तेनोनिग्रहकरवो तोकठणछे, तोपण हे कुंतिनापुत्र ! हे अर्जुन ! अन्यास अने वैराग्येकरीने मनवशथाय एवुंछे. ॥ २३ ॥ हे अर्जुन ! जेनेपोतानो आत्मावशनथी, एवोजेपुरुष तेनेध्यानयोगपामवो डुःकरछे, एवीमारीमतिछे. पणजेणेआत्मानेवशकीधोछे, तेनेउद्यमेंकरी अने अन्यासेंकरी ध्यानयोगपामवो सुलन्नछे ॥२४॥

सदृशप्रत्ययावृत्त्या वैतृष्ण्याद्बहिरर्थतः ॥ एतच्च युज्यते सर्वं न्नावनान्नावितात्मनि ॥ २५ ॥ स्त्रीपशुक्लीबडुःशीलवर्जितस्थानमागमे ॥ सदा यतीनामाज्ञप्तं ध्यानकाले विशेषतः ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ सरखोप्रत्ययजे विश्वासतेणेसहित अनेबाह्यपदार्थनी तृष्णायेंरहित तथा शुनन्नावनायेंन्नावितपुरुषने एआत्मावशकरवो सर्वप्रकारेंघटेछे ॥२५॥ स्त्री, पशु, नपुंसक डुःशीलादि रहित एहवीवसतिमुनियें सेववी, एमआगममां मुनिनेसदाय प्रभुए आज्ञा करीछे. तेमांपण ध्यानवेलायेंतो विशेषपणे कहिछे, एमजाणवुं ॥ २६

स्थिरयोगस्य तु ग्रामे विशेष कानने वने ॥ तेन यत्र समाधान
स देशो ध्यायतो मत ॥ २७ ॥ यत्रयोगसमाधान कालोपीष्ट
स एव हि ॥ दिनरात्रिक्षणादीनां ध्यानिनो नियमस्तु न॥२८॥

अर्थ ॥ स्थिरयोगवालाये गाममां अने विशेषेकरीने वगडामां तथा वनमांहिा चित्तसमाधानीमारहे, तेस्थानकेंध्यानकरवु ॥ २७ ॥ जेनवखतयोगस्थिररहे, तेकालठो समजवो, पणध्यानवालाने दिवस अथवा रात्रिनो नियम नथी ॥ २८ ॥

यैवावस्था जिता या तु न स्याद्ध्यानोपघातिनी ॥ तया ध्यायेन्नि
षण्णो वा स्थितो वा शयितोथवा ॥२९॥ सर्वासु मुनयोदेशकाला
वस्थासु केवलं॥प्राप्तास्तन्नियमो नासा नियता योगसुस्थिता ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ ध्यानवतमुनिने जेअवस्थायें,जेठेकाणे, अने जेवेलाये ध्याननेव्यघातनथाय तेठेकाणे, तेवेलायें, तेरीतेंवेठा, ऊभा, अथवा सुताध्यानकरवु ॥२९॥ सर्वदेशकाल अव स्थानेविषेरह्याजे, मुनितेनेकाइनियमनथी केमकेतेनियतपणेयोगमांस्थिररह्याछे ॥३०॥

वाचना चैव पृच्छा च परावृत्त्यनुचितनं ॥ क्रिया चालंबनानीह स
धर्मावश्यकानि च ॥ ३१ ॥ आरोहति दृढद्रव्यालंबनोविषम
पदं ॥ तथा रोहति स ध्यानं सूत्राद्यालंबनाश्रित ॥ ३२ ॥

अर्थ ॥ वाचना, पृछना, परावर्त्तना, अनेअनुप्रेक्षा एधर्मना आलंबन कह्याछे, त अवश्यकरणीछे ॥ ३१ ॥ जेप्राणी खरीवस्तुनो आलंबकछे, तेप्राणी कठणठेकाणेपण चढे, तेमजेजैनसूत्रादिकनो जेआलंबकछे तेप्राणी रुडेध्यानेपण चढे ॥ ३२ ॥

आलंबनादरोद्भूत प्रत्यूहक्षययोगत ॥ ध्यानाद्यारोहणभ्रंशो
योगिना नोपजायते ॥ ३३ ॥ मनोरोधाधिको ध्यानप्रतिपत्ति
क्रमो जिने ॥ शेषेषु तु यथायोगसमाधान प्रकीर्तित ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ आलंबनना आदरथी प्रगटथोजे विघ्ननोक्षय तेनायोगथी ध्यानरूपपर्वत उपरचढतां, योगीश्वरने भ्रष्टपणु थतुनथी ॥३३॥ योगनिरोधध्यानतो केवलीनेंछे मन रोधकरण, इत्यादि अनुक्रम जिनमतमांछे बाकी बीजादर्शनमांतो जेम नजरमांआवे तेमयोगनुंसमाधानकरवुंछे ॥ ३४ ॥

आज्ञापायविपाकाना संस्थानस्य च चिंतनात् ॥ धर्मध्यानोपयु
क्ताना ध्यातव्य स्याच्चतुर्विधं ॥३५॥ नयभंगप्रमाणाढ्या हेतूदाह
रणान्वितां ॥ आज्ञा ध्यायेज्जिनेंद्राणामप्रामाण्यकलंकिता ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ आज्ञा, अपाय, विपाक, अने संस्थान एचारभेदना चिंतनथकी धर्मध्यानवालायें धर्मध्यानकरवुं ॥ ३५ ॥ सातनय, सप्तभंगी, चारप्रमाणसहित तथाहेतु उदाहरणेसहित अनेअप्रमाणरूपदूषणेंरहितएवी जिनेश्वरनीआज्ञाध्याववीएप्रथमभेद. ॥ ३६ ॥

रागद्वेषकषायादिपीडितानां जनुष्मतां ॥ ऐहिकामुष्मिकांस्तां स्ता न्नानापायान्विचिंतयेत् ॥३७॥ ध्यायेत्कर्मविपाकं च तं तं यो गानुभावजं ॥ प्रकृत्यादिचतुर्भेदं शुभाशुभविभागतः ॥३८॥

अर्थ ॥ जे जीव राग, द्वेष, कषायथकेपीडायाछे, ते आलोक ने परलोकसंबंधीक ष्टते बीजेपाइये चिंतवे ॥ ३७ ॥ जेयोगनाअनुभवथीथयो, अने प्रकृति, स्थिति, रस, प्रदे- शनाबंधथी नीपनो, एहवोजेकर्म्मनोविपाक तेने शुभाशुभवेंहेंचणथीध्यावे ॥ ३८ ॥

उत्पादस्थितिभंगादि पर्यायैर्लक्षणैः पृथक् ॥ भेदैर्नामादिभिर्लो कसंस्थानं चिंतयेद् भृतं ॥३९॥ चिंतयेत्तत्र कर्त्तारं भोक्तारं नि जकर्मणां ॥ अरूपमव्ययं जीव मुपयोगस्वलक्षणं ॥ ४० ॥

अर्थ ॥ उत्पाद, व्यय अने ध्रुव. काल, तथाभंगादि, पर्यायलक्षणेकरी जुदाजुदाभेदें नाम, स्थापना, द्रव्य, भावभेदेंकरी नेचउदराज्यलोकनुं संस्थानधारीनेचिंतवे॥३९॥ ति हांपोतानाकर्मनो कर्त्ताभोक्ता आत्माछे, एमचिंतवें. एजीवअरूपी, अविनाशी, अनेउ पयोगलक्षणेयुक्तछे, एमचिंतवें ॥ ४० ॥

तत्कर्मजनितं जन्मजरामरणवारिणा ॥ पूर्णं मोहमहावर्तका मौर्वानलभीषणं ॥ ४१ ॥ आशामहानिलापूर्णं कषायकलशो च्छलत् ॥ असद्विकल्पकल्लोलचक्रं दधतमुद्धतं ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ एवेकर्मजनितरूप समुद्रजाणवोछे. तेजन्मजरा अने मरणरूप जलेंपूर्ण भरयोछे, तथा मोहरूपमोटा आवर्त. तद्रूपवमरी अने कामरूपवडवानलें करीभयंकर ॥ ४१ ॥ आशारूप प्रचंडवायुयें भरपूर, कषायरूप पातालकलशायेंयुक्त, अने नानावि- कल्परूपमहाउद्धत कल्लोलश्रेणिधारकछे. एवोभवसमुद्र भयंकरछे ॥ ४२ ॥

हृदिस्रोतसिकावेला संपातदुरतिक्रमं ॥ प्रार्थनावल्लिसंतानं दुःपूरविषयोदरं ॥४३॥ अज्ञानदुर्दिनं व्यापद्विद्युत्पातोद्भव द्भयं ॥ कदाग्रहकुवातेन हृदयोत्कंपकारिणं ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ वलीतेसमुद्रमां मनमां श्रोतसिका एटलेजे हर्ष तथाशोकनुजरावयु, तेरूपवे लाएटलेजरतिकहियें, माटे जोएमांपस्योतो पठीनिकलवुंघणुकठणछे, अने याचनारूप सेवालनो समूहछे, जेनेविषे तथाकुखेपूर्णथाय एवोनिपयरूप मध्यजागछेजेनो ॥४३॥ जिहांअंधकारेव्याप्यु एवुअज्ञानरूपवादलुछे, तथा जेमांआपदारूप वीजलीप्रकाशे थयछे, अने कदाग्रहरूप खराब पवननो उद्भवथयोछे, तेणेकरीने देखताज्ञान नजरवालानुंतो दैयुध्रुजेएहवो, कर्म्मजनितसमुद्रविहामणोछे ॥ ४४॥

विविधव्याधिसवंधमत्स्यकच्छपसंकुलं ॥ चिंतयेच्च जयाजो
धि चलहोपाद्रिदुर्गमं ॥ ४५ ॥ तस्य संतरणोपायं सम्यक्त्व
दृढवंधनं ॥ बहुशीलांगफलकं ज्ञाननिर्यामिकान्वितं ॥४६॥

अर्थ ॥ जेसमुद्र विविधजातिनाजेरोगना सवध रूपी मछ अने काचबायेंकरी आकुलछे, तथा जेमांचंचलता, शून्यता अने गर्वतेरूपजेदोषतद्रूप महोटापर्वतछे, एवो जवरूपसमुद्रनेचिंतवे ॥ ४५ ॥ हवेएवासमुद्रथीतरवानोउपाय, तेसमकितरूप दृढवंधनछेजिहां, अने जेनेअढारहजार शिलागरथरूपपाटीया जड्याछे, तथा ते जहाज ज्ञानरूपचलावनार निर्यामकजेना खुदा तेणेसहितछे ॥ ४६॥

संवरास्ताश्रवछिद्र गुप्तिगुप्तसमतत ॥ आचारमंरूपोद्दीताप
वादोत्सर्गजूमय ॥४७॥ असंख्यैर्दुर्धरैर्योधैर्दु प्रधृष्यं सदाशये॥
सद्योगरूपस्तत्राग्रन्यस्ताध्यात्मसितागुकं ॥ ४८ ॥

अर्थ ॥ वली तेजहाजनापाटीआनेविषेरह्याजे छिद्रोतेहनेसवररूपीकीचरु तद्रूपते खवडेपुंख्याछे, तथा मनोगुप्तिरूप गुप्तसुकानतेमार्गेवलावेछे, तेणेकरीतेवाहण समुचा लेछे, तथा आचाररूपमडपेशोजलुथका वली तेरहाणमाउत्सर्ग अने अपवादरूप बेजातनोमालजरेलोछे ॥४७॥ जेवहाणमा शुद्धअध्यवसायरूप घणानलवतसुजटो जेणा रूपादिशत्रुने दु प्रधृष्यछेछे, तथा जलोजेयोग तेरूपकुछ जेथत्र तेनाउपर अध्यात्मरूप उज्वल सढ खेच्योछेजिहा ॥ ४८ ॥

तपोनुकूलपवनोद्भुतसंवेगवेगत ॥ वैराग्यमार्गपतित चा
रित्र वहनं श्रिता ॥ ४९ ॥ सद्भावनाख्यमजूषा न्यस्तसच्चि
त्तरत्नत ॥यथाऽविघ्नेन गच्छति निर्वाणनगरे बुधा ॥ ५० ॥

अर्थ ॥ तेसमयी तपस्यारूप अनुकूल पवनप्रगट्योछे, अने ते पवनेकरी सवेगरूप

रूपवेगप्रगट्योछे; तेणेकरी वैराग्यमार्गमां तेवहाणचालतुंजायछे; एहवुंचारित्ररूप जे वहाणतेमांबेठाथका मुनिराजोते ॥ ४ए ॥ रुडीजावनारूप मंजूषामां गुप्तपणेगुप्त चिद्रूपीरत्नस्थाप्युंछे जेणे, एवा मुनि निर्विघ्नपणे मुक्तिरूपनगरनेपामेछे. ॥ ५० ॥

यथा च मोहपल्लीशे लब्धव्यतिकरे सति ॥ संसारनाटकोच्छेदा
शंकापंकाविले मुहुः ॥ ५१ ॥ सजीकृतस्वीयजटे नावं दुर्बुद्धि
नामिकां ॥ श्रिते दुर्नीतिनोवृंदरूढशेषजटान्विते ॥ ५२ ॥

अर्थ ॥ एवातनीखबर चोरनोराजाजे मोहरूपिओपल्लिपति तेनेपडी. तेवारेंतेमोह जेचोरनोराजाछे, तेणेविचार्युंजे रखेनेसंसाररूपनाटकनो उछेदथइजाय; एवीशंकारूप जेकचरो तेमांखेपाणोथको ॥ ५१ ॥ तेमोहराजा पोतानासुजटोने सज्जकरीने दुर्बुद्धि नामे जे नावतेमां पोतेबेठोथको दुष्टाचाररूपवीजाजे नावछे, तेमांवलीबीजाघणासुजटोने बेसारीनेपोतें जवसमुद्रमांआव्यो ॥ ५२ ॥

आगतत्यथधर्मेशजटौघे रणमंरूपं ॥ तत्वचिंतादिनाराच
सजीजूते समाश्रिते ॥ ५३ ॥ मिथोलग्ने रणावेशे सम्यग् द
र्शनमंत्रिणा ॥ मिथ्यात्वमंत्रिविषमा प्राप्यते चरमा दशा ॥५४॥

अर्थ ॥ तेवखते धर्मराजाना सुजटोनाजेथोकते मोहनासैन्यनेजोइने रणमंडपजूमीमांआवी तत्त्वचिंताप्रमुखजे वहणतेलेइने सज्जथयाथका ॥ ५३ ॥ तेपछीबेजनेमाहोमांहे युद्धचालवालाग्युं; तेमांसम्यग्दृष्टिजेप्रधान तेणेमिथ्यात्वप्रधानने विषमचरमदशाके० मरणदशापमाडी, एटले मृत्युप्रायकीधोछे ॥ ५४ ॥

लीलयैव निरुध्यंते कषायचरटा अपि ॥ प्रशमादिमहायोधैः
शीलेन स्मरतस्करः ॥ ५५ ॥ हास्यादिषट्कलुंटाकवृंदं वैरा
ग्यसेनया ॥ निडादयश्च ताड्यंते श्रुतयोगादिजिर्जटैः ॥ ५६ ॥

अर्थ ॥ अने उपशमादिक महासुजटे लीलायेंकरीने कषायरूप चोरटानेरोक्या तथा शीलसुजटे कंदर्परूपचोरनेजीत्यो ॥ ५५ ॥ वैराग्यनीसेनायेंकरीने हास्यादिकजे छचोरतेने जीत्या अने ज्ञानयोगादिकजेसुजटो तेणेनिद्रादिकने मारीकाढ्या ॥ ५६ ॥

जटाज्यां धर्मशुक्लाज्यां मार्तरौद्राजिधौ जटौ॥निग्रहेणेंद्रियाणां च
जीयते त्यागसंयमः ॥ ५७ ॥ क्षयोपशमनश्चक्षुर्दर्शनावरणा
दयः ॥ नश्यत्याशासैन्यं च पुण्योदयपराक्रमात् ॥ ५८ ॥

अर्थ ॥ वलीतेसमुद्रमां मनमां श्रोतसिका एटलेजे हर्ष तथाशोकनुजरावबु,तेरूपनं लाएटलेजरतिकहियें, माटे जोएमापञ्योतो पठीनिकलवुघणुकठणठे, अने याचनारूप सेवालनो समूहठे, जेनेविषे तथाड्ड खेपूर्णथाय एवोविषयरूप मध्यजागठेजेनो ॥४३॥ जिहांअंधकारेव्याप्यु एवुअज्ञानरूपवादलुठे, तथा जेमांआपदारूप वीजलीपमवानो जयठे, अने कदाग्रहरूप खराव पवननो उद्भवथयोठे, तेणेकरीने देखताज्ञान नजरव लानुंतो हैयुध्रुजेएहवो, कर्म्मजनितसमुद्रविहामणोठे ॥ ४४॥

विविधव्याधिसंबंधमत्स्यकछपसंकुलं ॥ चिंतयेच्च जयाजो
धि चलद्दोषाडिद्रुर्गमं ॥ ४५ ॥ तस्य संतरणोपाय सम्यक्त्व
दृढवंधनं ॥ बहुशीलागफलक ज्ञाननिर्यामिकान्वित ॥४६ ॥

अर्थ ॥ जेसमुद्र विविधजातिनाजेरोगना सवध रूपी मछ अने काचबायेंकरी आकुलठे, तथा जेमाचचलता, शून्यता अने गर्वतेरूपजेदोषतद्रूप महोटापर्वतठे,एवं जवरूपसमुद्रनेचिंतवे ॥ ४५ ॥ हवेएवासमुद्रथीतरवानोउपाय, तेसमकितरूप दृढवं धनठेजिहां, अने जेनेअढारहजार शिलागरथरूपपाटीया जड्यांठे, तथा ते जहाज ज्ञानरूपचलावनार निर्यामकजेना खुदा तेणेसहितठे ॥ ४६॥

सवरास्ताश्रवछिड्रं गुप्तिगुप्तसमतत ॥ आचारमरूपोद्दीताप
वादोत्सर्गभूद्वय ॥४७॥ असख्यैर्दुर्धरैर्योधैर्दु प्रधृष्य सदाशये॥
सद्योगरूपस्तजाग्रन्यस्ताध्यात्मसिताशुकं ॥ ४८ ॥

अर्थ ॥ वली तेजहाजनापाटीआनेविषेरह्याजे ठिड्रोतेहनेसवररूपीकीचरु तद्रूपवे खवडेपुर्याठे, तथा मनोगुप्तिरूप गुप्तसुकानतेमार्गवतावेठे, तेणेकरीतेवाहण समुवा लेठे, तथा आचाररूपमडपेशोजतुयका वली तेवहाणमाउत्सर्ग अने अपवादरूप वेजातनोमालजरेलोठे ॥४७॥ जेवहाणमा शुद्धअध्यवसायरूप घणानलवतसुजटो जेराग द्वेषादिशत्रुने ड्ड प्रधृष्यठेठे, तथा जलोजेयोग तेरूपकुवं जेयज तेनाउपर अध्या त्मरूप उज्वल सरु खेच्योठेजिहा ॥ ४८ ॥

तपोनुकूलपवनोद्भूतसवेगवेगत ॥ वैराग्यमार्गपतित चा
रित्र वहन श्रिता ॥ ४९ ॥ सद्भावनाख्यमजूषा न्यस्तसच्चि
त्तरत्नत ॥यथाऽविघ्नेन गच्छंति निर्वाणनगरे बुधा ॥ ५० ॥

अर्थ ॥ तेसमुद्रथी तपस्यारूप अनुकूल पवनप्रगट्योठे, अने ते पवनेकरी सवेगगुण

अर्थ ॥ धर्मध्यानअनेशुक्लध्यान एवेसुजटे आर्त्तअने रौद्र एवेसुजटनेहण्या त
पाचइंद्रियनानिग्रहरूपसुजटे उतावलेकरी असंयमरूपसुजटनेजीत्यो ॥ ५७ ॥
नावरणीयना क्षयोपशमसुजटे चक्षुर्दर्शनावरणादिक योद्धाओनेमार्या, वलीपुण्योदय
पराक्रमथी आशारूपसैन्य नासीगयु ॥ ५८ ॥

सद्भेदपगजेंद्रेण रागकेसरिणा तथा ॥ सुतेन मोहनृपोपि धर्मभूपेन हन्यते ॥ ५९ ॥ तत प्रातमहानंदा धर्म्मभूपप्रसादतः ॥ यथाकृतार्थो जायते साधवो व्यवहारिण ॥ ६० ॥

अर्थ ॥ हवे द्वेषदेद्वेषरूपहाथीयेवेठो तथा रागरूपसिंहसहित एहवो मोहरा
तेनेपण धर्मराजायें हण्यो ॥ ५९ ॥ तेवारपछी साधुरूपी व्यवहारिया धर्मराजा
प्रसादजेपसाय तेथीकृतार्थथइ आनंदपामी सुखेपोतानो व्यापारकरतायया ॥ ६० ॥

विचिंतयेत्तथा सर्व धर्मध्याननिविष्टधी ॥ ईद्दगन्यदपि न्यस्तमर्थजातं यदागमे ॥ ६१ ॥ मनसश्चेंद्रियाणा च जयाद्योनिर्विकारधी ॥ धर्मध्यानस्य स ध्याता शातोदात प्रकीर्तित ॥ ६२ ॥

अर्थ ॥ एरीतेंसर्वधारीलेवुं तेधर्मध्यानमा जेमुनिनीबुद्धिपेठीछे, तेणेएनेलताए
जेवा बीजापणजेआगमसिद्धातमा पदार्थना समूहस्थाप्याछे, तेनुचितनकरवु ॥ ६१
जेमननो अनेइंद्रियनोजयकरीने निर्विकारबुद्धिवालो थयो, तेनेधर्मध्याननोध्याता
होछे वलीशातदातपणु पणतेहनेजहोय ॥ ६२ ॥

परैरपि यदिष्टं च स्थितप्रज्ञस्य लक्षण॥ घटते ह्यत्र तत्सर्व तथा चेद व्यवस्थित ॥ ६३ ॥ प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान् ॥ आत्मन्येवात्मसंतुष्ट स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ ६४ ॥

अर्थ ॥ परदर्शनीपण स्थितप्रज्ञनुलक्षण एमकहेछे अनेतेसर्वइहाघटेछे तेमन
हाअवस्थितहोयतेजाणवु ॥ ६३ ॥ हे अर्जुन ! जेवारेंकदर्पनेछोडे, अने मननासर्वकामने
त्यागी आत्मसतोषीथइने आत्मानेविषेरहे,तेप्राणीने तेवारें स्थितप्रज्ञावतकहियें ॥ ६४ ॥

दुःखेष्वनुद्विग्नमना सुखेषु विगतस्पृहा ॥ वीतरागभयक्रोध स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥ ६५ ॥ य· सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभं ॥ नाभिनदति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६६ ॥

अर्थ ॥ जेहनेदुःखमां उद्वेगनथी, अनेसुखनीइच्छानथी, तथाजेहना राग, जय, अने क्रोधगयाछे, तेमुनिने स्थितबुद्धिवालो कहियें ॥ ६५ ॥ जेनेविषयउपर स्नेहनथी, जेवुंतेवुं शुजअशुज मलेतोपण रागद्वेषनथी, हे अर्जुन ! तेनीबुद्धिरुमीछे एमजाणवुं ॥ ६६ ॥

यदा संहरते चायं कूर्मोंगानीव सर्वशः ॥ इंद्रियाणींद्रियार्थेज्य
स्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६७ ॥ शांतो दांतो जवेदीद्दगात्माराम
तया स्थितः ॥ सिद्धस्य हि स्वजावोयं सैव साधकयोग्यता ॥ ६८ ॥

अर्थ ॥ हे अर्जुन ! जेमकाचवो अंगनेसंहरी संकोचीराखे, तेमइंद्रिओनेविषयथी पाठीवाले तेनीबुद्धिमोटीछे ॥ ६७ ॥ तेशांतगुणअने दांतगुणीहोय, तेनेआत्मारामनडे आत्मामांरह्यो कहियें. सिद्धिनोस्वजावपण एवोजछे, अने एवाजेहोयतेनेजसाधकता-पणानी योग्यता कहियें ॥ ६८ ॥

ध्यातायमेव शुक्लस्याप्रमत्तः पादयोर्द्वयोः॥ पूर्वविद् योग्ययोगी
व केवली परयोस्तयोः ॥ ६ए ॥ अनित्यत्वाद्यनुप्रेक्षा ध्यानस्यो
परमेपि हि ॥ जावयेन्नित्यमत्रांतः प्राणा ध्यानस्य ते खलु ॥ ७० ॥

अर्थ ॥ एथणीशुक्ल ध्याननाबेपायानो अप्रमत्तथको ध्यावनारथाय. पूर्वधरपणेयोगी होय, अथवा अयोगीहोय; पण केवलीपणेहोय, पठीशेषबेपायाने ध्यावे ॥ ६ए॥ ध्यान नेविरामकालें अनित्यत्वादिजावना ठंकेनही, विभ्रमरहितपणे नित्यजावनाजावे. तेध्या-नना प्राण जाणवा ॥ ७० ॥

तीव्रादिजेदजाजः स्युर्लेश्यास्तिस्र इहोत्तराः ॥ लिंगान्यत्रागम
श्रद्धाविनयः सद्गुणस्तुतिः॥७१॥शीलसंयमयुक्तस्य ध्यायतोध
र्ममुत्तमं ॥ स्वर्गप्राप्तिफलं प्राहुः प्रौढपुण्यानुबंधिनीं ॥ ७२ ॥

अर्थ ॥ इहांउत्तरजे पाठलीत्रणलेश्याछे एटले तेजो, पद्म अने शुक्ल एत्रणलेश्या जेहे ते तीव्र, तीव्रतर, अनेतीव्रत्तम एत्रणजेदनीजजनारीछे. तेनाएचिन्हछेजे आगमनी श्रद्धा. विनय. सद्गुणनीस्तवनाकरवी ॥ ७१ ॥ शील अने संयमयुक्तप्राणीने उत्तम धर्मध्यान ध्यातेथके स्वर्गप्राप्तिफलकहुंछे तेमोटापुण्यानुबंधी पुण्यनेपामे ॥ ७२ ॥

ध्यायेच्छुक्लमथद्मांतिमृदुत्वार्जवमुक्तिभिः ॥ ठद्मस्थोणौमनो
धृत्वा व्यपनीय मनो जिन. ॥ ७३ ॥ सवितर्कं सविचारं सपृथ
क्त्वं तदादिमं ॥ नानानयाश्रितं तत्र वितर्कःपूर्वगश्रुतं ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ जेसमतापणे तथानिष्कपटपणे अनेजीवनमुक्तपणे एवीस्थितिराखीने शुक्ल ध्याननेध्यावे, अनेछद्मस्थपणे अणुमां मनधरीनेरहे, तेवारेरागद्वेपनेजीते ॥ ७३ ॥ सपृथक्त्व, सवितर्क, सविचार, तेमाआदिनोजेसवितर्क एनामेशुक्लध्याननो पेहेलोपायो तेनेनानाविध नयेसहित विचारपूर्वक श्रुतेकरीध्यावनो ॥ ७४ ॥

अर्थव्यजनयोगाना विचारोन्योन्यसंक्रम ॥ पृथक्त्व द्रव्यप र्यायगुणातरगति पुन ॥ ७५ ॥ त्रियोगयोगिन साधोर्वितर्कां द्यन्वितं ह्यद ॥ईपचलत्तरंगाऽब्धे· क्षोभावावदशानिभं ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ अर्थ, अक्षर अने योगएनाजेविचार तेनुमाहोमाहे संक्रमण तेनुनामपृथक्त्व कहिये, तेकेवुछे ? के, द्रव्य, गुण, अनेपर्याय तेमागतिछे जेनीएवुछे एपेहेलोभेद ॥७५॥ त्रणयोगे उपरम्या जेयोगी तेसाधुनेवितर्कादिक थोडाचचलतरगछे, जेमा एहवोजेस मुद्र तेहोननोजेअवतार तेनी दशासरखुछे ॥ ७६ ॥

एकत्वेन वितर्केन विचारेण च संयुत ॥ निर्वातस्य प्रदीपाभ द्वितीय त्वेकपर्ययं ॥७७॥सूक्ष्मक्रियानिवृत्ताख्य तृतीय तु जिनस्य तत्॥अर्धरुद्धागयोगश्च रुद्धयोगे द्वयस्य च ॥ ७८ ॥

अर्थ ॥ एकत्ववितर्कविचारनामजे बीजोपायो तेपवनरहितजे दीवो तेसरखोछे एबीजोपायोते एकपर्यायरूपछे ॥ ७७ ॥ सूक्ष्मक्रियानिवृत्तिनामे त्रीजोपायो ते कवली नेहोय तेमावादरजे काययोगतेने अर्द्धरुध्योछे, अने मन तथावचनएवेयोगनेसमन रुधे तेवारे त्रीजोपायोध्यावे ॥ ७८ ॥

तुरीय तु समुच्छिन्नक्रियमप्रतिपाति तत् ॥ शैलवन्नि प्रकंपस्य शैलेश्य विश्ववेदिन ॥ ७९ ॥ एतच्चतुर्विध शुक्लध्यानमत्र द्व यो फल ॥ आद्ययो सुरलोकाप्तिरत्ययोस्तु महोदय ॥ ८० ॥

अर्थ ॥ हवेचोथापायामा क्रियाउछेदीछे अनेपोतेपर्वतनी परे अप्रतिपातियपोते,एहवा विश्ववेदी तेजगतना सर्वभावनो जाणजे केवली तेनि प्रकप पर्वतनीमाफक इहांप्रथम बे पायामा जेकालकरेते,स्वर्गगतिपामे अने उपरनाबेपायामा कालकरवाथी मोक्षगामी

आश्रवापायसंसारानुभावभवसंततीः ॥ अर्थे विपरिणाम वा नुपश्येच्छुक्लविश्रमे ॥ ८१ ॥ द्वयो शुक्ला तृतीये च लेश्या सा परमा मता ॥ चतुर्थशुक्लभेदस्तु लेश्यातीत प्रकीर्तित ॥ ८२ ॥

अर्थ ॥ शुक्लध्याननेविश्रामें आश्रवनोनाशदेखे. संसारनास्वरूपने ज्ञवनीपरंपरादेखे-अनेअन्यपदार्थें आत्मानुविपरिणामपणंजुए ॥ ७१ ॥ एशुक्लध्यानना प्रथमबेपायामां बेलेश्या तथात्रीजेपायेतो परमउत्कृष्ट शुक्ललेश्याकहिछे, अने चोथोपायोजेछे तेतो ले-श्यायेंरहितकह्योछे ॥ ७२ ॥

लिंगं निर्मलयोगस्य शुक्लध्यानवतोऽवधः ॥ असंमोहो विवेकश्च व्युत्सर्गश्चाभिधीयते ॥ ७३ ॥ अवंधाडुपसर्गेभ्यः कंपते न बि भेति च ॥ असंमोहान्न सूक्ष्मार्थे मायास्वपि च मुह्यति ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ शुक्लध्यानवालाने निर्मलयोगहोय, तेनांलक्षणकहेछे. अहिंसकहोय; मोह-रहित, विवेकीहोय; अनेत्यागबुद्धियें युक्तहोय ॥ ७३ ॥ वलीअवंधीथयो माटे उपसर्ग अनेपरिसह तेथीकंपेनही; तथाबीहेपणनही; एअहिंसकलक्षणहोय, तथासूक्ष्मअर्थमां वलीमायामांमुझायनही; एअसंमोहएटले मोहरहितनुं लक्षणकह्युं ॥ ७४ ॥

विवेकात्सर्वसंयोगाद्भिन्नमात्मानमीक्षते ॥ देहोपकरणासंगो व्युत्सर्गाज्जायते मुनिः ॥ ७५ ॥ एतद्ध्यानक्रमं शुद्धं मत्वा भगव दाज्ञया ॥ यः कुर्यादेतदभ्यासं संपूर्णाध्यात्मविद्भवेत् ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ सर्वसंयोगथी आत्मानेजूदोदेखे, एविवेकनुंलक्षणछे. देहतथाउपकरणनी त्यागबुद्धियें असंगानुष्टान वर्त्तेछे, एव्युत्सर्गनुंलक्षणछे. एचारलक्षण ६६ मा श्लोकमां कह्यांछे. तेनोएअर्थविवरिने कह्यो एलक्षणेजेमुनिहोयते, ज्ञानपणुपामे ॥ ७५ ॥ एरीतें ध्याननोजेअनुक्रम तेशुद्धरीतें जाणीनेप्रभुनी आज्ञाप्रमाणे एनोअभ्यास जेकरशे, तेसं-पूर्णअध्यात्म ज्ञानीथाशे ॥ ७६ ॥ इतिध्यानाधिकारः षोडश. ॥

यत्र गछति परं परिपाकं पाकशासनपदं तृणकल्पं ॥
स्वप्रकाशसुखबोधमयं तद्ध्यानमेव भवनाशिभजध्वं ॥ १ ॥

अर्थ ॥ माटेउत्कृष्ट परिपक्वध्यान पामेथके मुनिराजतेइंद्रनीपदवीनेपण तृणपला बरोबरगणे. माटे जेथकी आत्माने प्रकाशकारी सुखेज्ञानप्रगटे एवुं संसारनुं नाशकरनारं ध्यानसेववुं ॥ १ ॥

आतुरैरपि जडैरपि साक्षात् सुत्यजा हि विषया नतु रागः ॥
ध्यानवांस्तु परमब्रह्म निदर्शी तृप्तिमाप्य न तमृछति भूयः ॥२॥

अर्थ ॥ कामातुरजेप्राणी तथाजडजेप्राणीतेपण प्रगटपणे विषयसुखने सुखेंछांडे;

पपरागदिशा वाळवीकुर्पंटछे, अनेध्यानवलमुनितो मात्र परमात्मानोजदर्शनीजे. ते ध्यानमा तृप्तिपामिने फरीथीरागद्वेषने वाछेनही ॥ २ ॥

या निशा सकलजूतगणानां ध्यानिनो दिनमहोत्सव एष ॥
यत्र जाग्रति च तेऽभिनिविष्टा ध्यानिनो जवति तत्र सुषुप्ति ॥३॥

अर्थ ॥ सर्वप्राणीने निद्रामाजे रात्रीजायछे, तेध्यानदिशावाळाने एरात्रीते जाण महोत्सवनो दिवसछे अनेसंसारीजीव विषयमालीनथका जेवेळायेंजागेछे, तेवेळाए ध्या नवाळामुनिराजने शयनरूपछे॥३॥

संप्लुतोदकमिवांधुजलानां सर्वत सफलकर्म्मकलाना ॥
सिद्धिरस्ति खलु यत्र तदुच्चैर्ध्यानमेव परमार्थनिदान ॥४॥

अर्थ ॥ जेमअंधरूकूवानु पाणी डोहोळुरहेछे, तेमजेमासर्वेथकी सकळकर्मनाफळनी सिद्धिएहवोजे ध्यानरूपघट जेजलमां रमतोहोय, त्याजलनिर्मळहोय माटेसकळसि पामवानी सिद्धिध्यानथीछे ध्यानतेपरम अर्थनु कारणछे. ॥ ४ ॥

बध्यते नहि कषायसमुच्चैर्मानसैर्ननतजूपनमद्भि ॥
अत्ननिष्टविषयैरपि दुःखैर्ध्यानवान्निभृतमात्मनि लीन ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेध्यानवान् पुरुषते कषायजनित मनेकरी वधातोनथी तेहनेजोरावरीथी थाधीनमस्कारकरे, तोपणतेनुचित्तडोहोळायनही अनेअनिष्टविषयनीप्राप्तिना गेकरीपणनिश्चलपणु छोडेनहि. तेनेआत्मानेविषे लीनकहियें ॥ ५ ॥

स्पष्टदृष्टसुखसंजृतमिष्टं ध्यानमस्तु शिवशर्म गरिष्ठ ॥ ना
स्तिकस्तु निहतो यदि न स्यादेवमादिनयवाङ्मयदडात् ॥६॥

अर्थ ॥ जेनेप्रगटदीठु अनेमोक्षसुखेनरयु एवुजेध्यान तेइष्टछे, पटले मोक्षसुखथी पणध्यान मोटुछे, पणनिश्चयसुखी शास्त्रनादंडथकी नास्तिकज्ञानने अतिशयपणे हणो नथी, विद्यासुखीनथी, पणनास्तिकज्ञानेरहित जेज्ञानतेमोटुछे ॥ ६ ॥

यत्र नार्कविधुतारकदीपज्योतिषा प्रसरतामवकाश ॥ ध्यान
भिन्नतमसामुदितात्मज्योतिषां तदपि जाति रहस्य ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेनीआगळ सूर्यनुतेज, तथाचंद्रमा अनेतारानुतेज, वळीदीपकनातेजने प्रसारपणनथी, एवुजेध्यान तेणेकरीने भेदाणोछेअज्ञानरूप अधकारजेप्राणीनो प्रग टथयाआत्मानुतेज तेणुतपणे पणआत्मानेविषे शोभेछे ॥ ७ ॥

योजयत्यमितकालवियुक्तां प्रेयसीं शमरतिं त्वरितं यत् ॥
ध्यानमित्रमिदमेव मतं नः किंपरैर्जगति कृत्रिममित्रैः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ शमतारतिरूप स्त्रीनीसाथें प्राणीनेघणा कालथीवियोग हतो. तेक्षणमां वियोगवालांगीने संयोगमिलावें एहवोध्यानरूप परममित्रछे. तेध्यानमित्र असारेप्रमाणछे, एमध्यान करनारप्राणी वोलेछे. माटेसंसारमां कृत्रिम परमित्रथीशुंथाय? तेकृत्रिममित्रोकरतांतो ध्यानमित्रघणोश्रेष्टछे ॥ ८ ॥

वारितस्मरवलातपचारे शीलशीतलसुगंधिनिवेशे ॥
उच्छ्रितप्रशमतल्पनिविष्टो ध्यानधाम्नि लभते सुखमात्मा ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ हवे ध्याननेरंगमंदिरनी उपमाआपेछे. जिहांकामरूपतापटल्योछे, अने शीलरूप शीतलसुगंधीपसरीरहीछे, तेवीवेठकनेविषे शमतारूपमोटीतलाइछे, तेउपर आत्मावेठोथको पूर्णआनंदपामेछे; एवुंध्यानरूपमंदिरछे ॥ ९ ॥

शीलविष्टरदमोदकपीठं प्रातिहार्यशमतामधुपर्कैः ॥ ध्यानधाम्नि भवति स्फुटमात्मा हुतपूतपरमातिथिपूजा ॥ १० ॥

अर्थ ॥ ध्यानमंदिरमां शीलरूपसिंहासने इंद्रियदमनरूप जलनोबाजोटछे, अने शमतारूप पोलीओ तेएवाध्यानघरमां पवित्रपणे आत्मानेतेडीनेतेनी मधुपर्ककरी परोणागतकरेछे ॥ १० ॥

आत्मनो हि परमात्मनि यो भूद्भेदबुद्धिकृत एव विवादः ॥ ध्यानसंधिकृदमुं व्यपनीय द्रागभेदमनयोर्वितनोति ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ आत्मा अने परमात्मानेविषे जेभेदबुद्धिनोविवादहतो, एटलेतेमांपंक्तिनना विवादरूपकगडाहता. तेनेध्यानरूपसंधिपाले एटलेध्यानिपुरूषे तेविवादोनेटाल्या अनेजलदीथी एवेजनुंअभेदपणुंकरीआप्युं ॥ ११ ॥

क्वामृतं विषभृते फणिलोके क्वचिपण्यपि विधौ त्रिदिवे वा ॥
क्वाप्सरो रतिमतां त्रिदशानां ध्यान एव तदिदं बुधसेव्यं ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ विषथकीभरेलोजे नागलोकतिहां अमृतक्यांथीहोय? तेमदिनदिनक्षय पामनोजेचंद्रमा तेमांअमृतकिहांथीहोय? अनेदेवलोकनांअप्सरानापोगें रागाजेदेवना तेमांपणअमृत किहांथीहोय? माटेएमात्र ध्यानरूपअमृतलस्यछे. तेनेजपंडितोसेवेछे ॥ १२ ॥

गोस्तनीषु न सितासु सुधाया नापि नापि वनिताधरबिंबे ॥ त
न्न कमपि वेत्ति मनस्वी ध्यानसंभवधृतौ प्रथते य ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ गायनाम्नमाजेरसनथी जेमाकरमारसनथी, अनेजेरसअमृतमांरानथी नेमनर्थीनाथअरजेहोत तेमांपणजेरसनथी तेरसध्यानथीप्रगटचो अनेसंतोषथी [illegible] ते एहवोनेकोइकअपूर्वरस तेनेनोकोइक पंडितजजाणेछे ॥ १३ ॥

इत्यवेत्य मनसा परिपक्वध्यानसंभवफले गरिमाणं ॥ तत्र य
त्न मनिरन्नमुपैति प्रौढधामसततमाशु यश श्री ॥ १४ ॥

॥ एमजाणे मनेकरीनेपरिपक्वजे ध्यानतेथीप्रगटथुजे फलतेहनेमोटाइपणे अ [illegible] गि मोगनेजनत कीतिगानपुरुषछे अनेतेनेज यशलक्ष्मीपामे ॥ १४ ॥

[illegible] ध्यानाधिकार समाप्त ॥

इतिश्रीश्रीयशोविजयगणिविरचिते अध्यात्म
सारप्रकरणे पनरमप्रबंध तेमां पनरमोना ०२ श्लोक
मोना ०२ अने सत्तरमाना १४ सहीने १०२ काव्यछे

[illegible] ध्यानमात्मज्ञानं च मुक्तिदं ॥ आत्मज्ञानाय
[illegible] महात्मना ॥१॥ ज्ञाते ह्यात्मनि नो भूयो
[illegible] ॥ अज्ञाने पुनरेतस्मिन् ज्ञानमन्यन्निरर्थकं ॥ २॥

[illegible] ध्यानकरवाने माटे, पणआत्मज्ञानछेप तेवास्ते मुनि [illegible] आत्मज्ञानमां उद्यमकरवो ॥ १ ॥ जेणे आत्मा [illegible] अनेजिणाश्री आत्मानेजाण्याथी [illegible] ते निरर्थक ॥ २ ॥

[illegible] ज्ञानमात्मप्रमित्यै ॥ येनाजीवाद्यो भावा
[illegible] ॥३॥ श्रेतो ह्यात्मपरोत्तरोऽनुभूत स्मृत
[illegible] निसर्गात्परमात्मा वेत्ति नेदं तु कश्चन ॥ ४ ॥

[illegible] आत्मज्ञान प्रगटकरवानअर्थे [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] अनुभवथी, परिचयपर्यायकरी, गेहने अथवा [illegible]

तदेकत्वपृथक्त्वाभ्यामात्मध्यानं हितावहं ॥ वृथैवाभिनिविष्टा
नामन्यथा धीर्विडंबना ॥ ५ ॥ एक एव हि तत्रात्मा स्वभावस
मवस्थितः ॥ ज्ञानदर्शनचारित्रलक्षणप्रतिपादितः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेएकत्व पृथक्त्वेकरी आत्मज्ञान हितकारीथाय, नहीतो फोकटपणे मिथ्यात्वनीबुद्धिनीविटंबनाछे ॥ ५ ॥ तिहांएकजआत्मा स्वभावपणेरह्योछे, तेआत्मा तोज्ञानदर्शन अने चारित्ररूपलक्षणेकह्योछे ॥ ६ ॥

प्रभानैर्मल्यशक्तीनां यथारत्नान्न भिन्नता ॥ ज्ञानदर्शनचारित्र
लक्षणानां तथात्मनः॥७॥ आत्मनो लक्षणानां च व्यवहारो हि
भिन्नता ॥ षष्ठ्यादिव्यपदेशेन मन्यते न तु निश्चयः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेमरत्ननीकांति अने निर्मलता एवेभनीशक्तिकांइजुदीनथी, तेमज्ञानदर्शन अने चारित्रलक्षणे जेआत्मातेकांइजुदोनथी ॥ ७ ॥ आत्मा अनेआत्मानुंलक्षण एवे व्यवहारेजुदांछे. तेषष्टिआदेदइ विभक्तिनेव्यपदेशेंकरीमानियें, पणनिश्चयथीनही ॥८॥

घटस्य रूपमित्यत्र यथाभेदो विकल्पजः ॥ आत्मनश्च गुणानां
च तथा भेदो न तात्त्विकः ॥९॥ शुद्धं यदात्मनो रूपं निश्चये ना
नुभूयते ॥ व्यवहारो भिदाद्वारानुभावयति तत्परं ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेमघटनुंरूपतेनोभेदते विकल्पमात्रछे, तेमआत्माने अने गुणनेपरमार्थे भेदनथी ॥ ९ ॥ जेआत्मरूपशुद्धछे, तेनिश्चयनयेकरी अनुभवायछे; अने व्यवहारवडें परके० कायातेपणओलखायछे ॥ १० ॥

वस्तुतस्तु गुणानां तद्रूपं न स्वात्मनः पृथक् ॥ आत्मा स्यादन्यथा
नात्मा ज्ञानाद्यपि जडं भवेत् ॥ ११ ॥ चैतन्यपरसामान्या
सर्वेषामेकतात्मनां ॥ निश्चितः कर्मजनितो भेदः पुनरुपप्लवः ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ वस्तुभावेतोगुणनुं अने आत्मानुंरूपजुदुंनथी. जोजुदुंकहीयेंतो, आत्माछे तेअनात्माथाय; ज्ञानादिकेजडथाय ॥ ११ ॥ चैतन्यपरसामान्यपणे सर्वआत्मानी एक ताछे; अनेनिश्चयथी तोकर्मेप्रगट्योजेभेद तेतोविटंबनारूपछे ॥ १२ ॥

मन्यते व्यवहारस्तु भूतग्रामादिभेदतः ॥ जन्मादेश्च ०
मिथोनानात्वमात्मनां ॥ १३ ॥ न चैतन्निश्चये युक्तं भूतय[illegible]
तोऽखिलः ॥ नामकर्मप्रकृ[illegible]प्रभावो नात्मनः प[illegible]

अर्थ ॥ जीवसमूहनाजेदथी तथावालजुवान वृद्ध एअवस्थावकेमाहोमाहे विवि धपणुंजणायछे एमव्यवहारनयवालोमानेछे ॥ १३ ॥ पणएवातनिश्चयनयवालो मान तोनथी तेएमकेहेछेके, एजीवनेसर्वअवस्था नामकर्मना स्वजावथीप्रगटेछे, पणएआ त्मानोमूलस्वजावनथी ॥१४॥

जन्मादिकोपि नियत परिणामो हि कर्मणा॥न च कर्मकृतो नेद
स्यादात्मन्यविकारिणि ॥१५॥ आरोप्य केवलं कर्म कृता विकृ
तिमात्मनि ॥ भ्रमंति भ्रष्टविज्ञाना नीमे संसारसागरे ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जन्मजरादिक परिणाम कर्मनेनशछे, अनेआत्मातो अविकारीछे तेथी कर्मनोनेद आत्मानेसंजवेनही केमकेएआत्मस्वजावनही ॥ १४ ॥ जन्मजरादि कर्मप्रकृतिछे, अनेकर्मजनित नावनेकेवल आत्मानेविषे आरोपीने भ्रष्टज्ञानी नयरू संसारसमुद्रमां नमशे ॥ १६ ॥

उपाधिनेदज नेदं वेतज्ञस्फटिके यथा ॥ तथा कर्मकृतं नेदमात्म
न्येवानिमन्यते ॥ १७ ॥ उपाधिकर्मजो नास्ति व्यवहारात्स्व
कर्मण ॥ इत्यागमवचो लुप्तमात्मवैरूप्यवादिन ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ स्फटिकमा जेममूर्खप्राणी नेदमानेछे, तेमउपाधिनेद आत्मानेविषे अज्ञा नी कर्मकृतनेदते एमानेछे ॥ १७ ॥ पोतानाव्यवहारथी कर्मजनित जेउपाधिते नथी एममानता आत्मविरूपवादी आगमनुवचन लोपेछे ॥ १८ ॥

एकक्षेत्रस्थितोप्येति नात्मा कर्मगुणान्वये ॥ यथा नव्यत्व
भावत्वात्पुरो धर्मास्तिकायवत् ॥१९॥ यथा तैमिरकश्चंद्र मप्ये
कं मन्यते द्विधा ॥ अनिश्चयकृतोन्मादस्तथात्मानमनेकधा ॥ २० ॥

धर्मास्तिकायनीपरे एकक्षेत्रमा रह्यांछतोपण कर्मगुणनासंयोगने पामत
ी शुद्धछे ॥ १९ ॥ जेमतिमिरके० मद्दणरोगी एकचं
ि प्राणीते जन्मादमरणेकरी आत्मा

नयात् ॥ सादृश्यास्तित्व
मद्दसद्भावपिशुनात् सगो
शुद्धनय सूत्र ॥२२॥

अर्थ ॥ जेमअन्वयथी एकस्वरूपास्तिपणाने अनुभवियेछइयें, तेमसरखापणे जे विद्यमानपणुंछे, तेथकीआत्माने एककहियें ॥ २१ ॥ व्यवहारनयथी सद्असद्वादरूपजे चाडियो तेनेहुपावीने शुद्धनयरूपजे मित्रछे, तेएकतारूप रत्नदेखाडेछे ॥ २२ ॥

नृनारकादिपर्यायै रम्यं तन्न विनश्वरैः ॥ भिन्नैर्जहाति नैकत्व मात्मद्रव्यं सदान्वयि ॥ २३ ॥ यथैकं हेमकेयूरकुंडलादिपु वर्त्तते ॥ नृनारकादिभावेपु तथात्मैको निरंजनः ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ नरनारकादि पर्यायजेउपजेछे, अनेविणशेछे, तेभिन्नपर्यायकांइरम्यनथी; माटे तेपर्यायेंकरीने सदाअन्वयीजे शुद्धवंशीआत्मतत्व तेएकत्वपणाने छांडतुंनथी ॥ २३ ॥ जेमसुवर्णएकछे, पणबाजुबंध, कंठी, कुंडलादिक पर्यायेंवर्त्तेछे, तेमआत्माएकछे, पणनरनारकादिकना भवेकरीभिन्नछे; पणआत्मातो एकनिरंजनछे ॥ २४ ॥

कर्मणस्ते हि पर्याया नात्मनः शुद्धसाक्षिणः ॥ कर्मक्रिया स्वभावो यदात्मा तु न स्वभाववान् ॥ २५ ॥ नाणूनां कर्मणो वासौ भवस्वर्गः स्वभावजः ॥ एकैकविरहे भावान्नवतत्त्वांतरं स्थितं ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ जेनरनारकादिकभव तेतो सर्वकर्मना पर्यायछे, पणशुद्धसाक्षी निश्चयनयें आत्मपर्यायछे, अनेकर्मक्रियारूपजे स्वभावतेकांइआत्मानो मूलस्वभावनथी, आत्मातो अज, अविनाशीस्वस्वभावीछे ॥ २५ ॥ कर्मनाजेपरमाणुआ तेआसंसार स्वर्गस्वाभाविक नथी; एकेकउज्वलतानेविपे भावथकी नवतत्त्वमां रह्युंछे ॥ २६ ॥

श्वेतद्रव्यकृतं श्वैत्यं भित्तिभागे यथा द्वयोः ॥ भात्यनंतभवत्सत्यं प्रपंचोपि तथेक्षतां ॥ २७ ॥ यथास्वप्नावबुद्धोर्थो विबुद्धेन न दृश्यते ॥ व्यवहारमते स्वर्गो ज्ञानिना न तथेक्षते ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ जेमश्वेतद्रव्यें कीधेलुंजे चित्रामण तेवेभीतना भागमांशोभे, तेमअनंतभवसत्यतायें एप्रपंचनेजाणवुंछे ॥ २७ ॥ जेमस्वप्नमां दीठेलोअर्थ जाग्यापछीदेखायनही, तेमव्यवहारें स्वर्गादिकमार्ग श्रेष्ठछे. पण नियतप्रमाणीज्ञानीपुरुपने संसार नजणाय. ॥२८॥

मध्याह्ने मृगतृष्णायां पयःपूरो यदेक्षते ॥ तथा संयोगजः सर्गो विवेकख्यातिविप्लवे ॥ २९ ॥ गंधर्वनगरादीनामंबरेऽम्बरो यथा ॥ तथा संयोगजः सर्वो विलासो वितथाकृतिः ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ जेममध्याह्ने मृगतृष्णावर्के पृथ्वीउपर जलपूरदेखायछे, तेमसंयोगेंउपनी जे सृष्टितेविवेकनी रव्यातियेंनाशदेखायछे ॥ २९ ॥ जेमगधर्वनगरवर्के आकाशें आश्चर्य जणाय, तेमसंयोगेप्रगट्याजे सर्वविलास तेजुठाछे ॥ ३० ॥

इतिशुद्धनयायत्तमेकत्व प्राप्तमात्मनि ॥ अंगादिकल्पनाप्य
स्य नेष्टा यत्पूर्णवादिन ॥ ३१ ॥ एक आत्मेति सूत्रस्याप्यय
मेवाशयोमत ॥ प्रत्यग्ज्योतिषमात्मानमाहु शुद्धनया खलु ॥ ३२ ॥

अर्थ ॥ एरीतशुद्धनयेजे एकत्वपणुमल्यु, तेआत्मानेविषे पाम्यु, एनेअशादिकनी कल्पनातेपूर्णवादिने वाहालीनथी ॥३१॥ सूत्रमा, "एगेआया" एवोजेपाठछे, तेपणआ शयेंकह्योछे एकप्रगटज्योतिरूपजे आत्मा तेतेजरूपछे,एमशुद्धनयवालाकेहेछे ॥ ३२ ॥

प्रपचसचयक्लिष्टान्मायारूपाद्बिभेमि ते ॥ प्रसीद भगवन्नात्म
न् शुद्धरूप प्रकाशय ॥ ३३ ॥ देहेन सममेकत्व मन्यते व्यव
हारवित् ॥ कथंचिन्मूर्ततापत्तेर्वेदनादिसमुद्भवात् ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ निश्चयनयकहेछेके,प्रपचसचयवडे सक्लिष्टपटले डु स्वरूपएवु जेएमायारूप, तेथकी हे भगवन् ! हे आत्मा ! हु बीहुछु माटे प्रसन्नथाओ, अनेशुद्धरूप प्रकाशकरो ॥ ३३ ॥ कोइकप्रकारेंरूपीपणु पाम्योजे आत्मातेनेवेदनादिक उपजेछे माटे व्यवहारनयवालो शरीरसाथें आत्मानुएकत्वपणुं मानेछे ॥ ३४ ॥

तन्निश्चयो न सहते यदमूर्तो न मूर्तता ॥ अशेनाप्यवगाहेत
पावक शीततामिव ॥ ३५ ॥ उष्णस्याग्नेर्यथा योगाद् घृतमु
ष्णमिति भ्रम ॥ तथामूर्ताङ्गसंबंधादात्मा मूर्त इति भ्रम ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ पणतेवातनिश्चयनावालो सहीशकतोनथी, जेमअग्निशीतलपणा पामतोनथी तेमजेअरूपीआत्माछे, तेअशेकरीनेपणरूपीपणाने पामतोनथी ॥ ३५ ॥ जेमउष्णअग्निनेसयोगें घृतउष्णथयुं एवोभ्रमछे, तेमरूपीशरीरने सयोगें आत्मापणरूपीछेएवो भ्रमथाजदेखायछे ॥ ३६ ॥

न रूप न रसो गंधो न न स्पर्शो न चाकृति ॥ यस्य धर्मो न शब्दो
वा तस्य का नाम मूर्तता ॥ ३७ ॥ दृशादृश्य हृदाग्राह्य वाचा
मपि न गोचर ॥ स्वप्रकाश हि यद्रूपं तस्य का नाम मूर्तता ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ केमकेरूप, रस, गंध, स्पर्श, संस्थान एटलावानांआत्मानेनथी; एतो पुज्ञलनेछे, तेमजवाह्यधर्मपणनथी, शब्दनथी; तेवारेंआत्मानेशीरीतेरूपीकहेवाय? ॥ ३७ ॥ वलीआत्मानजरेदेखाय एवोपणनथी, मनथीग्रहवाय एवोपणनथी, तथावचने पणअगोचरछे, जेनुंरूपपोताना प्रकाशेछे, पणवीजना प्रकाशेनथी, तेनेरूपीकेमकेहेवाय?॥३८॥

आत्मा सत्यश्चिदानंदः सूक्ष्मात्सूक्ष्मः परात्परः ॥ स्पृशत्यपि
च मूर्त्तत्वं तथा चोक्तं परैरपि ॥३९॥ इंद्रियाणि पराण्याहुरिं
द्रियेन्यः परं मनः ॥ मनसोपि परा बुद्धि र्योबुद्धेः परमस्तु सः ॥ ४० ॥

अर्थ ॥ आत्मासत्यछे; चिदानंदमयीछे; सूक्ष्मथीपणसूक्ष्मछे; उत्कृष्टमांउत्कृष्टछे; ते मूर्त्तपणुंकेमफरसे? तेमजपरदर्शनमां श्रीकृष्णकहेछे, हे! अर्जुन! शरीरमां इंद्रियोमोटीछे. अने इंद्रियोथीमनमोटुंछे; मनकरतां बुद्धिमहोटीछे, अनेतेथीआत्मामोटोछे ॥३९॥४०॥

विकले हंत लोकेस्मिन्नमूर्त्ते मूर्त्तता भ्रमात् ॥ पश्यत्याश्चर्यवद्
ज्ञानी वदत्याश्चर्यवच्चः ॥ ४१ ॥ वेदना येन मूर्त्तत्वं निमित्ता
स्फुटमात्मनः ॥ पुज्ञलानां तदापत्तेः किंत्वशुद्धस्वशक्तिजा ॥४२॥

अर्थ ॥ हंतइतिखेदे. आविकललोकनेविषे अमूर्त्तिआत्मानेविषे मूर्त्तिपणानाभ्रमथकीजेज्ञानीपुरुषछे, तेअचंबोदेखेछे, अनेवचनपणअचंबानांबोलेछे ॥ ४१ ॥ जेमाटे जीवात्मानेमूर्त्तिनिमित्तवेदना प्रगटपणेछे. एमजोमानिएतो, पुज्ञलनेवेदनाथइजोइयें; ते माटेएवेदनातो आत्माने अशुद्धशक्तिथी अनुभवथायछे ॥ ४२ ॥

अक्षद्वारा यथा ज्ञानं स्वयंपरिणमत्ययं ॥ तथेष्टानिष्टविषय
स्पर्शद्वारेण वेदनां ॥४३॥ विपाककालं प्राप्यासौ वेदना प
रिणामभाक् ॥ मूर्त्तं निमित्तमात्रं नो घटे दंडवदन्वयि ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ इंद्रियद्वारेंकरी जेम ज्ञानदिशा पोतानीमेले परिणमेछे, तेमइष्टअनिष्टविषयस्पर्शद्वारेंकरी वेदनापरिणमेछे ॥ ४३ ॥ विपाककालपामीने आवेदनापरिणामने जेम आत्माभजेछे. तेथी अमारेमतें मूर्त्तिपणुंतेनिमित्तमात्रथयुं, अन्वयीके० सहचारीथयुं, जेमघटनेविषे दंडसहचारीछे तेनीपरेजाणवुं ॥ ४४ ॥

ज्ञानाख्या चेतना बोधः कर्म्माख्याद्विष्टरक्तता ॥ जंतोः कर्मफ
लाख्या सा वेदना व्यपदिश्यते॥४५॥नात्मा तस्मादमूर्त्तत्वं चैत
न्यं चातिवर्त्तते ॥ अतो देहेन नैकत्वं तस्य मूर्त्तेन कर्हिचित ॥ ४६ ॥

अर्थ ॥ ज्ञाननामे चेतनातेबोधछे अने कर्मनामेछिद्ररक्तताछे, तेबहेजीवने कर्मच
तनामेवेदना व्यपदेशपामेछे ॥ ४५ ॥ तेमाटेअमूर्त्तिआत्माते चैतन्यपणाने छांडेनही
अनेमूर्त्तिमान् देहसाथेंआत्माने कोइप्रकारें एकत्वपणुछेजनही ॥ ४६ ॥

सन्निकृष्टान्मनोवाणी कर्मादेरपि पुद्गलात् ॥ विप्रकृष्टाद्धनादेश्च
चान्येव भिन्नात्मन ॥४७॥ पुद्गलाना गुणोमूर्त्ति रात्मा ज्ञानगु
ण पुन ॥ पुद्गलेभ्यस्ततोभिन्नमात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः ॥४८॥

अर्थ ॥ एरीतें कर्मवर्गणाना, मनोवर्गणाना, वचनवर्गणाना, जेआत्मानेसमीपवर्त्ति
एकरवर्मगनवर्त्ति एवातनधनादिक जेपुद्गल, तेतोसर्वआत्माथी भिन्नके० दूरछे ॥ ४७ ॥
धर्मकेपुद्गलनोगुणतोमूर्त्तिमानछे, अने आत्मातोज्ञानगुणमयछे, माटेपुद्गलथी आत्मद्र
व्यजुदुछे एमप्रभुकहेछे ॥ ४८ ॥

धर्मस्य गतिहेतुत्वं गुणो ज्ञान तथात्मन ॥ धर्मास्तिकायात्तद्भिन्न
मात्मद्रव्य जगुर्जिना ॥ ४९ ॥ अधर्मे स्थितिहेतुत्व गुणो ज्ञान
गुणोऽसुमान् ॥ ततो धर्मास्तिकायान्यमात्मद्रव्य जगुर्जिना ॥५०॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायनोगुण गतिहेतुछे अनेआत्मानोगुणज्ञानछे, माटेधर्मास्तिका
यथी आत्मानुदोछे, एमप्रभुकहेछे ॥ ४९ ॥ अधर्मास्तिकायनोगुण स्थितिहेतुछे अने
आत्मानोज्ञानगुणछे, माटे अधर्मास्तिकायथी आत्मद्रव्यजुदुछे एमप्रभुकहेछे ॥ ५० ॥

अवगाहो गुणो व्योम्नो ज्ञान खल्वात्मनो गुण ॥ व्योमास्ति
कायात्तद्भिन्नमात्मद्रव्यं जगुर्जिना ॥५१॥ आत्मज्ञानगुण सिद्ध
समया वर्त्तनागुण ॥ तद्भिन्नं समयद्रव्यादात्मद्रव्य जगुर्जिना ॥५२॥

अर्थ ॥ आकाशनोगुणअवगाहछे, अनेआत्मानोगुणज्ञानछे माटे आकाशास्तिका
यथीआत्मद्रव्यजुदुछे एमप्रभुकहेछे ॥ ५१ ॥ आत्माज्ञानगुणेसिद्धछे, काल वर्त्तनाका
माटेकालथी आत्मद्रव्यजुदुछे, एमप्रभुकहेछे ॥ ५२ ॥

आत्मनस्तदजीवेभ्यो विभिन्नत्व व्यवस्थितं ॥ व्यक्तिभेदेन वादेना
दजीवत्वमपीष्यते ॥ ५३ ॥ अजीवा जन्मिन शुद्धनावप्राणव्य
पेक्षया ॥ सिद्धाश्च निर्मलज्ञाना द्रव्यप्राणव्यपेक्षया ॥ ५४ ॥

अर्थ ॥ एमनामांअजीवथी आत्मानुंजुदापणुं सत्यछे, पणनेगमनी देखादेखी ...

वपणुपणवंतीयेठइये ॥ ५३ ॥ जेमनिर्मलज्ञानवंतसिद्धने द्रव्यप्राणनी अपेक्षारहितप णे अजीवपणुकहियें, तेमशुद्धनावप्राणनीअपेक्षारहित जीवनेअजीवकहियेठेये ॥५४॥

इंद्रियाणि बलं श्वासो वासो ह्यायुस्तथा परं ॥ द्रव्यप्राणाश्चतुर्भेदाः पर्यायाः पुजलाश्रिताः ॥ ५५ ॥ भिन्नास्ते ह्यात्मनोऽत्यंतं तदेतै र्नास्ति जीवनं ॥ ज्ञानधैर्यसदाश्वासनित्यस्थितिविकारिभिः ॥५६॥

अर्थ ॥ इंद्रिय, बल, श्वासोवास, अनेआयुष्य एरीतेंद्रव्यप्राण चारभेदेठे. एनापर्यायतो पुजलने आश्रीरह्याठे॥५५॥ तेआत्माथी अत्यंतजुदाठे, माटे एवडे कांइआत्माने जीववुं नथी. एपर्यायतो ज्ञान, धैर्य, तेनाश्वासनीजेकांइ नित्यस्थितितेणेकरी वार्जितठे ॥ ५६ ॥

एतत्प्रकृतिभूताभिः शाश्वतीभिस्तु शक्तिभिः ॥ जीवत्यात्मा स देत्येषा शुद्धद्रव्यनयस्थितिः॥५७॥ जीवोजीवति न प्राणैर्विना तै रेव जीवति ॥ इदं चित्रचरित्रं को हंत पर्यनुयुज्यतां ॥ ५८ ॥

अर्थ ॥ एप्रकृतिरूप शाश्वतीशक्ति तेणेकरीने आत्मासदैवजीवेठे, एशुद्धद्रव्यनयनी स्थितिजाणवी॥५७ जीवकांइप्राणेकरीने जीवतोनथी,एजीवतोप्राणविनाजीवेठे,एअचंबा नीवात विचित्रकारी चरित्रसांजली कोणनहखें?अनेएवातशुद्धनयें कोणनजोडे? ॥५८॥

नात्मा पुण्यं नवा पापमेते यत्पुजलात्मके॥आद्यबालशरीरस्यो पादानत्वेन कल्प्यते ॥५९॥ पुण्यं कर्म शुभं प्रोक्तमशुभं पाप मुच्यते ॥ तत्कथं तु शुभं जंतून् यत् पातयति जन्मनि॥६०॥

अर्थ ॥ आत्मापुण्यनही, तेमपापपणनही, केमके पुण्यनेपापतो पुजलरूपठे. प्रथम बालकाले जेशरीरतेनेउपादानजावेकल्पेठे ॥ ५९ ॥ जेशुभकर्म तेपुण्यकहियें, अनेजे अशुभकर्मतेपापकहियें, तेवारे तेशुभकर्मजेठे, तेजीवनेसंसारमांकेमपाडेठे? ॥ ६० ॥

नह्यायसस्य बंधस्य तपनीयमयस्य च ॥ पारतंत्र्याविशेषेण फ लभेदोस्ति कश्चन॥६१॥फलाभ्यां सुखदुःखाभ्यां न भेदः पुण्य पापयोः ॥ दुःखान्नभिद्यते हंत यतः पुण्यफलं सुखं ॥ ६२ ॥

अर्थ ॥ एकलोहनीवेडी अनेएकसुवर्णनीवेडी तेपणपरवशपणुंठे, माटेविचारीयेंतो फलभेदकांइनथी, तेमअशुभकर्मते लोहनीवेडीअनेजे शुभकर्मते सुवर्णनीवेडी ॥६१॥

सुखनांफल अने दुःखनांजेफलप्रगटेछे, तेथीपुण्यपापमध्ये काइंभेदनथी जेथकीपुण्य सुखविलसे, एपुण्यनुंफलछे, तेपणदुःखरूपजछे ॥ ६२ ॥

सर्वं पुण्यफलं दुःख कर्मोदयकृतत्वत ॥ तत्र दुःखप्रतीकारे विमूढाना सुखत्वधी ॥६३॥ परिणामाच्च तापाच्च सस्काराच्च बुधैर्मतं ॥ गुणवृत्तिविरोधाच्च दुःखं पुण्यभवं सुखं ॥ ६४ ॥

अर्थ ॥ माटेसर्वपुण्यनुफल तेदुःखरूपछे, केमकेएकर्मनाउदयथीथायछे माटेदुःखनाप्रतीकारनेविषे मूर्खनेसुखबुद्धिउपजेछे ॥ ६३ ॥ पंडितकहेछेके, परिणामथी, तथातापथी,अनेसंस्कारथी गुणवृत्तिविरोधी एहदु जेपुण्य,तेथीनीपनुं जेसुखतेदुःखप्रायछे॥६४॥

देहपुष्टे र्नरामर्त्यनायकानामपि स्फुटं ॥ महाजपोपणस्येव परिणामोतिदारुण ॥६५॥ जलुका सुखमानिन्य पिबत्यो रुधिर यथा ॥ भुंजाना विषयान् याति दशामते ऽतिदारुणा ॥ ६६ ॥

अर्थ ॥ नरनेराजाने, तथा इन्द्रादिकनेपण जेसुखमाशरीरनीपुष्टिथायछे, तेमोटाबोकडानीपेठेछे, ए कथाउत्तराध्ययनमां कहीछेतिहांथीजाणवी जेवारे वधथयो, तेवारे परिणामेअतिदुःखछे ॥ ६५ ॥ जेमजलोलोही पीतायका सुखमानेछे, तेमविषयभोगवतायकाप्राणी सुखमानेछे, पणतेथीअते माठीदशानेपामेछे ॥ ६६ ॥

तीव्राग्निसगसंशुष्यत्पयसामयसामिव ॥ यत्रौत्सुक्यात्सदाक्षाणा तप्तता तत्र किं सुखं ॥ ६७॥ प्राक्पश्चाच्चारतिस्पर्शात्पुटपाकमुपेयुषि ॥ इंद्रियाणागणेताप व्याप एव न निर्वृत्ति ॥ ६८ ॥

अर्थ ॥ आकरीअग्निमा बलतरायेकरी लोहपाणीपीयेछे, तेमज्यासदा इंद्रियोनी चलकाथीघणीज बलतराहेछे, त्या शु सुखछे ? ॥ ६७ ॥ पेहेलाअथवापछी पणनेयकी अरतिउपजे, तेने अडकवाथी विपाकपामेयके इंद्रियोना समूहमा ताप व्यापेपणसुखनथाय,एटले पेहेलाबाध्याजेकर्म तेजेवारे भोगववामाआवे,तेवारेपण अरतिछेइनेनथाय, अनेपछी तेकर्मो विपाकेपण दुःखआपे ॥ ६८ ॥

सदा यत्र स्थितो द्वेपोल्लेख स्वप्रतिपंथिषु ॥ सुखानुभवकालेपि तत्र तापहतं मन ॥६९॥ स्कधात् स्कधातरारोपे भारस्येव न तत्वत ॥ अदाल्हादेपि दुःखस्य संस्कारोपि निवर्तते ॥ ७० ॥

अर्थ ॥ जेहनेसदैवशत्रुउपर ऊपरह्योछे, तेप्राणीजो घरमांसुखेबेठोहोय, तोपणतेह नेसुखनहोय. तेमविषयसुखमां अनुजवकालेपण विषयना तापेकरीजेनुंमनहणा णुंछे, तेहनेसुख क्यांथीहोय? ॥ ६ए ॥ जेमएकखंजाउपरथी वीजाखंजाउपरजारलीधो, पणतत्त्वथी जारउतर्योनही एमइंद्रियोनेआनंदे डुःखनोसंस्कारमटतोनथी ॥ ७० ॥

सुखं डुःखं च मोहश्च तिस्रोपि गुणवृत्तयः ॥ विरुद्धा अपि वर्त्तंते डुःखजात्यनतिक्रमात् ॥ ७१ ॥ क्रुद्धनागफणाजोगोपमोजोगोद्भवो खिलः ॥ विलासश्चित्ररूपोपि जयहेतुर्विवेकिनां ॥ ७२ ॥

अर्थ ॥ सुख, डुःखअनेमोह एत्रणे जोपणविरुद्धछे, तोपणगुणवृत्तियेवर्त्तेछे; केम- केडुःखनीजातिने उलंघनकरीशकतानथी, माटे गुणवर्त्तिरूपछे ॥ ७१ ॥ क्रोधीनागनी- फणना विस्तारसरखो, सर्वजोगविलासछे, वलीतेजोगविलास यद्यपिविचित्ररूपछे, त- थापि विवेकीजनने तेजयनोहेतुछे. ॥ ७२ ॥

इत्थमेकत्वमापन्नं फलतः पुण्यपापयोः ॥ मन्यते यो न मूढात्मा नांतस्तस्य जवोदधेः ॥ ७३ ॥ डुःखैकरूपयोर्भिन्नस्तेनात्मा पु ण्यपापयोः ॥ शुद्धनिश्चयतः सत्यचिदानंदमयः सदा ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ एरीतें फलनीअपेक्षायें पुण्यपापनुं एकत्वपणुंठराव्युं. पणजेमूर्खनमानशे, तेसंसारमांजटकशे; अनेजेमानशेतेजवसागरतरीजशे ॥ ७३ ॥ पुण्यअनेपाप एवेहुएक- सरखाडुःखरुपजछे,तेथकीआत्माजिन्नछे;शुद्धनिश्चयनयथी सदासत्चिदानंदमयछे.॥७४॥

तत् तुरीयदशाव्यंगरूपमाचरणान्वयात् ॥ जात्युप्पणो द्योतशी लस्य घननाशाद्रवेरिव ॥७५॥ जायंते जाग्रतो ऽक्षेभ्यश्चित्रार्थि सुखवृत्तयः ॥ सामान्यं तु चिदानंदरूपं सर्वदशान्वयि ॥ ७६॥

अर्थ ॥ एवाततेचोथीदिशाये जाणवायोग्यछे. जेमवर्षाकालमां मेघवरसीरह्या पछी वादलनाशथायछे, अनेसूर्यप्रजाशोजेछे, तेमव्यंगरूपविचित्र एहवाआचरणविशेषेकरी चोथीदशामांशोजेछे ॥ ७५ ॥ जागताजीवने इंद्रियोनीसुखवृत्तिओ नानाप्रकारनीथा- यछे, पणसामान्य जे चिदानंदस्वरूप तेनेतोसर्वदशामां सरखुंसुखछे ॥ ७६ ॥

स्फुलिंगैर्यथा वन्हि र्दीप्यते ताप्यतेऽथवा ॥ नानुजूतिपराजू ती तथैताभिः किलात्मनः॥ ७७ ॥ साक्षिणः सुखरूपस्य सुषुप्तौ निरहंकृतेः ॥ यथा जानं तथा शुद्धविवेके तदतिस्फुटं ॥ ७८ ॥

अर्थ ॥ तणपेकरीनेजेम अग्निदीपेनही, तपेनही, तेमअनुजवादिकें करीने आ ानेकउनथी ॥ ७७ ॥ निद्रावस्थामांजेम सुखरूपनोसाक्षीजे आत्मातेने अहंकारो हितसुखनो जासथायछे, तेमशुद्धविवेकनेविषे तोप्रगटपणेसुखजासेछे ॥ ७८ ॥

तच्चिदानंदजावस्य जोक्तात्मा शुद्धनिश्चयात् ॥ अशुद्धनिश्चया त्कर्म्म कृतयोः सुखदुःखयो ॥७ए॥ कर्मणोपि च जोगस्य स्रगा देर्व्यवहारत ॥नैगमादिव्यस्थापि जावनीयाऽनया दिशा ॥७०॥

अर्थ ॥ तेमाटेशुद्धनिश्चयनयथकी आत्माचिदानदजावनोजोक्ताछे, अनेअशुद्धनि यनयथकीकर्मकस्यांजे सुखदुःखतेनोजोक्ताछे ॥ ७ए ॥ फुलनीशय्या तथा लनांजूपण प्रमुखनेविषेजोगकर्मनी व्यवहारथीप्रवृत्तिछे, तेमनैगमादिकनयनी व्य स्थापण आवीरीतें जाविवें, तेनीचेंलखयाप्रमाणेछे ॥ ७० ॥

कर्त्तापि शुद्ध जावाना मात्माशुद्धनयाद्विजु ॥ प्रतीत्यवृत्तिं यच्छुद्ध क्षणानामेष मन्यते ॥ ७१ ॥ अनुपप्लवसाम्राज्ये विषजागपरि क्षये ॥ आत्मा शुद्धस्वजावानां जननाय प्रवर्त्तते ॥ ७२ ॥

अर्थ ॥ शुद्धजावनोकर्त्ता आत्माशुद्धनयथी समर्थछे, जेवारेंशुद्धपरिणामीछे, तेस र्थवीर्यवृत्तिनेआश्रयीने शुद्धजावनोकर्त्ताछे एमशुद्धनयवालोमानेछे ॥ ७१ ॥ उपद्र ऽतरायादिकेरहित साम्राज्यपणानेविषे दुष्टजावनोनाशथयेछते आत्माशुद्धस्वजाव गटकरवाने प्रवर्त्तेछे ॥ ७२ ॥

चित्तमेव हि संसारो रागादिक्लेशवासित ॥ तदेव तैर्विनिर्मुक्त प्र वात इति कथ्यते ॥ ७३ ॥ यश्च चित्तक्षिणक्लिष्टो नासावात्मा विरोधत ॥ अनन्यविकृतं रूपमित्यर्थत्व हृद पद ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ जेरागादिक क्लेपवडें चित्तवासितहोय, तेससारकेहेवाय अने रागद्वेषथीमु कावयु तेनुनाम मुक्तिछे, एमजाणवु ॥७३॥ रागद्वेषेव्याप्यो जेमननोक्लिष्ट परिणाम, तेकाऽआत्मानोनथी आत्मानुरूपतो सत्यार्थपणेअविकारीछे ॥ ७४ ॥

श्रुतवानुपयोगश्चेत्येतन्मिथ्या यथा वच ॥ तथात्मा शुद्धरूपश्चे त्येवं शब्दनया जगु ॥ ७५ ॥ शुद्धपर्यायरूपस्तदात्मा शुद्धस्व जावकृत् ॥ प्रथमाप्रथमत्वादि जेदोप्येव हि तात्त्विक ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ जेम आत्मानोउपयोग श्रुतवंतछे एखोटुंछे, तेमशब्दनयवालाकहेछेके आत्माशुद्धरूपनथी, एपणखोटुंछे ॥ ७५ ॥ शुद्धपर्यायरूप आत्मा, पूर्वपश्चात्पणानो जेभेद तेपणे शुद्धस्वभावनोकर्त्ताछे. एमतात्त्विकछे ॥ ७६ ॥

ये तु दिक्पटदेशीयाः शुद्धद्रव्यतयात्मनः ॥ शुद्धस्वभावकर्तृत्वं जगुस्ते पूर्वबुद्धयः ॥७७॥ द्रव्यास्तिकस्य प्रकृतिः शुद्धा संग्रह गोचरा ॥ येनोक्ता संमतौ श्रीमत्सिद्धसेनदिवाकरैः ॥ ७८ ॥

अर्थ ॥ दिगंबरएमकहेछेके, शुद्धद्रव्यार्थे वलीजेमउपयोगविनाश्रुतभण्यो तेनुंपण शुद्धस्वभावनुं कर्त्तापणुंजतुंनथी; केमकेतेतेने स्वभावेजपरिणमेछे. एमअपूर्वबुद्धिनुं केहेवुंछे ॥७७॥ द्रव्यास्तिकनयनीजे शुद्धप्रकृतिछे, तेसंग्रहनयउपरचालेछे, केमकेसम्मति ग्रंथमां सिद्धसेनसूरियेंकह्युंछे ॥ ७८ ॥

तन्मते च न कर्तृत्वं भावानां सर्वदान्वयात् ॥ कूटस्थः केवलं तिष्ठत्यात्मा साक्षित्वमाश्रितः ॥ ७९॥ कर्तुं व्याप्रियते नायमुदासीन इव स्थितः ॥ आकाशमिव पंकेन लिप्यते न च कर्मणा ॥ ८०॥

अर्थ ॥ तेनेमते कर्त्तापणुंनथी, केमकेसदेवभावनो अन्वयछे. माटेकूटस्थकेवल निर्विक्रियजे आत्मा तेसाक्षीपणाने आश्रीनेरह्योछे ॥७९॥ करवानोव्यापार करतोनथी; उदासीनीपेठेरह्योछे. जेमकचरें आकाशलेपातुंनथी, तेमकर्मेंआत्मा लेपातोनथी ॥८०॥

स्वरूपं तु न कर्त्तव्यं ज्ञातव्यं केवलं स्वतः॥ दीपेन दीप्यते ज्योतिर्न नित्यपूर्वं विधीयते॥८१॥ अन्यथा प्रागनात्मा स्यात्स्वरूपाननुवृत्तितः॥ भवहेतुसहस्रेणाप्यात्मता स्यादनात्मनः ॥ ८२ ॥

अर्थ ॥ पोतानारूपनेनवीनकरवुंनथी. मात्रपोताना रूपनेपोताथकीकेवल जाणी लेवुंछे. जेमदीवेथी ज्योतिदीपेछे, तेमनित्य शाश्वतआत्मा स्वप्रकाशहोवाथी पोतेपोताने प्रकाशेछे ॥ ८१ ॥ एम आत्माने स्वप्रकाश अने शाश्वत अंगीकार करीएनही अने परप्रकाश तथा कर्तृत्व सिद्धमानीए तो, पूर्वेअनात्मपणुं अंगीकार करवुंपडशे. केमके क्रियावडे उत्पन्नथएलापदार्थनुं पूर्वनुं रूप जुदुज होयछे, एवोनियमछे. एवी रीतेआत्मानी उत्पत्तिनी पूर्वे आत्माने अनात्मामानवो पडशे अने क्रियावडे आत्मानुं रूपांतरथाएछे, एममानीएतो, आत्मानी आवृत्ति अंगीकारकरवीपडशे. आवृत्ति अंगीकारकरीएतो संसारविषयक हजारोकृत्यरूप हेतुवडे हजारोरूप बदलाशे. त्यारे

पूर्वं पूर्वंनुरूपअनात्मा अने उत्तर उत्तरक्रियाजन्यरूप आत्माभानवो पडशे, अने करवाथी छेवटे अनवस्था दोष प्राप्तथशे ॥ ९२ ॥

नये तेनेह नो कर्त्ता किल्वात्मा शुद्धभावभृत् ॥ उपचारात्तु लोकेषु तत्कर्तृत्वमपीष्यते ॥ ९३ ॥ उत्पत्तिमात्र धर्माणा विशेषग्राहिणो जगु. ॥ अव्यक्तिरावृत्तेस्तेषा नाभावादिति का प्रमा॥ ९४ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेआनयनेविषे कर्त्तापणुनथी केमके आत्माशुद्धभावनो धरनार अनेलोकमा उपचारथी तेनुकर्त्तापणुकेहेछे ॥ ९३ ॥ विशेषग्राही जेज्ञानीपुरुषोछे ते वोकरीते आत्माने क्रियासिद्ध मानतानथी, किंतु आत्मानाधर्मोनी उत्पत्ति माने आंही कोइने शकाथशे के,जेम आत्माअव्यक्तछे, तेमआत्मानाधर्मपण अव्यक्तछे, ज्यारेआत्मानी उत्पत्ति मानतानथी, त्यारेतेनाधर्मनीउत्पत्तिपण केममनाय ? तेनु माधानजे, केटलीएकअव्यक्त वस्तुओ आकाशनीपेठे जेमनीतेमरहेछे अने केटल एक रूपातरने पामेछे, आत्माशाश्वताव्यक्तछे अने तेनाधर्मअशाश्वताव्यक्तछे माटे ओनी आवृत्तिथायछे केमके जेमआत्मानी अनावृत्तिमा घणाप्रमाणोछे,तेमआत्मान धर्मनीआवृत्ति नथवामा कोइप्रमाणनथी, तेथीआत्मानी पुनरावृत्ति थतीनथी,पणआ त्माना धर्मोनीपुनरावृत्तिथायछे, एवुसिद्धथयु ॥ ९४ ॥

सत्वं च परसताने नोपयुक्तं कथ च न ॥ सतानिनामनित्यत्वात्सतानोपि न च ध्रुव ॥९५॥ व्योमाप्युत्पत्तिमत्तसदवगाहात्मना तत ॥ नित्यता नात्मधर्माणा तद्दृष्टातबलादपि ॥ ९६ ॥

अर्थ ॥ आत्मानुउत्पत्तिरहितपणु दृष्टातथकेदृढकरेछे जेमपितापुत्ररूप परिवारनी उत्पत्तिमां पूर्वपूर्वपितारूप कारणथी उत्तरउत्तर पुत्ररूपकार्यनीउत्पत्तिथयाथी पितापणानोअभाव अनेपुत्रपणानोभाव थायछे, एमसकलनाचालतां जेमपितानोनाश तेमपुत्रनो पणनाशथायछे तेमअनात्माथी आत्मानीउत्पत्तिरूप प्रवाहथी पूर्वनोअनाश अनेउत्तरनो भावथता पूर्वनीपेठे उत्तरनानाशनो पणसभव सिद्धथायछे एथीआत्मा अशाश्वत अनेनाशरूप ठरशे ॥ ९५ ॥ आकाशनादृष्टातवडे आत्मानुअचलपणु अने आत्मानाधर्मोनु चलायमानपणु सिद्धकरेछे जेमआकाशउत्पत्तिरहितछे, तेथीतेनुरूपांतर थतुंनथी, तेमजआत्मापण उत्पत्तिरहित होवाथीतेनु रूपातरथतुनथी अनेआ

त्मानाधर्म उत्पत्तिवानूछे, तेथीतेनुं रूपांतरथायछे. अहींपण आकाशनुंव्यतिरेकपणे दृष्टांतलेवुं जेवस्तुआकाशनीपेठे उत्पत्तिरहित नथीहोती, तेनुंरूपांतर थायछे ॥ ए६ ॥

ऋजुसूत्रनयसूत्रः कर्तृतां तस्य मन्यते ॥स्वयं परिणमत्यात्मा यं
यं भावं यदा यदा ॥ ए७ ॥ कर्तृत्वं परभावानामसौ नाभ्युप
गच्छति ॥ क्रियाद्वयं हि नैकस्य द्रव्यस्याभिमतं जिनैः ॥ ए८ ॥

अर्थ ॥ ज्यारेआत्मानुं रूपांतरथतुंनथी. त्यारेपरिणामवादनो उछेदथशे. एवीआशंकाकरीनेतेनो उत्तरकहेछे. ऋजुसूत्रनयवालो, ज्यारेज्यारे जेजेभावनापरिणामने आत्मापामेछे. त्यारेत्यारे तेतेभावरूप कर्मवडे परिणामरूप उत्पत्तिमानेछे, तथापिआत्माते कर्तृत्वपणे बीजाभावनी प्राप्तिथतीनथी. केमके एकद्रव्यमां बेक्रियासंभवेनही, एवुंजिनने अभिमतछे ॥ ए७ ॥ ए८ ॥

भूतिर्या हि क्रिया सैव स्यादेकद्रव्यसंततौ ॥ न साजात्यं विना च
स्यात् परद्रव्यगुणेषु सा ॥एए॥ न चैवमन्यभावानां न चेत्कर्त्ता
परोजनः ॥ तदा हिंसादयादानहरणाय व्यवस्थितः ॥ १०० ॥

अर्थ ॥ भूतिएटले भावअनेक्रिया एबन्नेनोएक अर्थछे. ते एकद्रव्यसंततिनेविषे सामान्यविना नथाय; अनेद्रव्यनागुणनेविषे पणनथाय; केमकेकोइपण द्रव्य अपरभावनो कर्त्ताहोतोनथी. ॥ एए ॥ एमजआत्मानेविषे अन्यभावनुं कर्त्तापणुंनथी. त्यारेशिष्यपूछेछे, के हिंसा दया दानवगेरेनी व्यवस्थाकेम रहेशे? ॥ १०० ॥

सत्यं पराश्रयं न स्यात् फलं कस्यापि यद्यपि ॥ तथापि स्वगतं
कर्म स्वफलं नाभिवर्त्तते ॥१०१॥ हिनस्ति न परं कोपि निश्चया
न्न च रक्षति ॥ न चायुः कर्मणो नाशो मृतिजीवनमन्यथा ॥१०२॥

अर्थ ॥ त्यारेगुरुकहेछे, तारुंबोलवुं साचुंछे. कोइनेपण पराश्रये फलथतुंनथी, तथापिपोतानेविषे रहेलुंजेकर्म तेपोतानाफलनेविषे प्रवर्त्ततुंनथी ॥ १०१ ॥ निश्चयवडे बीजाकोइने कोइमारतोनथी; तेमकोइनुंकोइ रक्षणकरतोनथी; आयुकर्मनो नाश थायनही; अनेमृत्युजीवन अन्यथाथायनही ॥ १०२ ॥

हिंसादयाविकल्पाभ्यां स्वगताभ्यां तु केवलं ॥ फलं विचित्रमा
प्नोति परापेक्षां विना पुमान् ॥१०३॥ शरीरी म्रियतां मा वा ध्रुवं
हिंसा प्रमादिनः ॥ दयैव दयमानस्य वधेपि प्राणिनां क्वचित् ॥१०४॥

अर्थ ॥ हिंसाअने दयानीपणमात्र कल्पना करवीठे पोतानामतेकरी तोपरनीअ॰ क्षाथी पुरुषकेवल विचित्रफलने पामेठे ॥ १०३ ॥ जीवनोघातथाय, अथवानथा॰ तोपण जेप्रमादीजीवठे, तेनेनिश्चयेकरी हिंसाथायछे, अनेजे दयावान्प्राणीठे तेनाहा॰ कदाचूकोइजीवनी घातथइजाय, तोपणतेने हिंसालागतीनथी ॥ १०४ ॥

परस्य युज्यते दानं हरणं वा न कस्यचित् ॥ न धर्मसुखयोर्यत्ते कृतनाशादिदोषत ॥ १०५ ॥ जिन्नाभ्यां जक्तवित्तादिपुजला भ्या च ते कुत ॥ स्वत्वापत्तिर्यतो दानं हरणं स्वत्वनाशनं ॥१०६॥

अर्थ ॥ कोइवीजाने दानदेतोनथी, अनेवीजानी पासेथीकोइकाइ हरणकरी लेतो नथी, धर्मअनेसुखनेविषे पणदानतथा हरणनो सजवनथी, केमके कृतनाशयने अ॰ कृतनोप्रसंग इत्यादिदोष प्राप्तथशे जेमदानकर्यु, तेनोनाशथाय तेनेकृतनाशकहेठे, अनेजेवीजाने आप्युनथी तेनुहरणकरवुते अकृतागम प्रसंगकहेवाय एवादोष आ॰ त्मानेविषे प्राप्तथशे ॥ १०५ ॥ केमकेजोजन तथाधनादिकजेपुद्गल तेतोआत्माथीजि॰ न्नठे तोतेमांक्यांथी पोतापणुआव्यु? माटेदानअनेहरणते पोताथीजनाशठे ॥ १०६ ॥

कर्मोदयाच्च तद्दान हरणं वा शरीरिणा ॥ पुरुषाणा प्रयास क स्तत्तूपनमति स्वत ॥१०७॥ स्वागताभ्या तु जावाभ्यां केवलं दानचौर्ययो ॥ अनुग्रहोपघातौ स्त परापेक्षा परस्य न॥१०८॥

अर्थ ॥ वलीतेदान अनेहरणप्राणीने कर्मनाउदयथकीठे, त्यांपुरुषनेशोप्रयास? तेतोपोतानीमेलेज उदयपामेठे ॥ १०७ ॥ पोतामारह्या एवाजेदानअनेहरणना जाव तेणेकरीनेएकथी उपकारथाय,वीजाथीउपघातथाय, त्यापरनीअपेक्षापरनेनही॥१०८॥

पराश्रितानां जावानां कर्तृत्वाद्यजिमानत ॥ कर्मणा वध्यतेऽज्ञा नी ज्ञानवास्तु न लिप्यते ॥१०९॥ कर्त्तैवमात्मनो पुण्यपापयो रतिकर्मणो ॥ रागद्वेषाशयानां तु कर्त्तेष्टानिष्टवस्तुषु ॥ ११० ॥

अर्थ ॥ परआश्रितजे तेनोहुकर्त्ताछु, एमअजिमानथीकहेवु, एवाकर्मेअज्ञानीबंधा॰ यठे पणज्ञानीतेनाकर्मे लेपातानथी ॥ १०९ ॥ माटेआत्मातेपुण्यपापरूप कर्मनोकर्त्ताठे, राग द्वेषआशयनो कर्त्ताठे, अनेइष्टअनिष्टवस्तुनेविषेपण आत्मा कर्त्ताठे ॥११०॥

रज्यते द्वेष्टि चार्थेषु तत्तत्कार्यविकल्पतः ॥ आत्मा यदा तदा
कर्म भ्रमदात्मनि युज्यते ॥ १११ ॥ स्नेहाभ्यक्ततनो रंगं रेणुना
श्लिष्यते यथा ॥ रागद्वेषानुविद्धस्य कर्मबंधस्तथा मतः ॥ ११२ ॥

अर्थ ॥ ज्यारेतेतेकर्मनाविकल्पथी आतमाने कोइपदार्थउपर रागदिशा अथवाद्वे-
षउपजेछे. त्यारेथ्यात्मामां कर्मनोभ्रमजोडायछे ॥ १११ ॥ तेललगाडेलाशरीरे जेम
रजनोलेपवलगेछे, तेमरागीअनेद्वेषी आत्माने कर्मनोबंधवलगेछे ॥ ११२ ॥

आत्मा न व्यापृतस्तत्र रागद्वेषाशयं सृजन् ॥ तन्निमित्तोपनम्रे
षु कर्मोपादानकर्मसु ॥ ११३ ॥ लोहं स्वक्रिययाभ्येति भ्रामको
पलसंनिधौ ॥ यथा कर्म तथा चित्रं रक्तद्विष्टात्मसंनिधौ ॥ ११४ ॥

अर्थ ॥ तिहांआत्मापोते कोइक्रियाकरतोनथी. पणराग द्वेषकरतोथको तेनिमित्तेपा-
म्यां जेकर्म तेनानिमित्तेकर्त्तापणुकर्मछे; पणतिहांआत्मातो रागद्वेष रूपकर्मनो मूकना-
रोछे. एटले आत्मा भावकर्मनो व्यापारवंतछे; पणद्रव्यकर्मनोव्यापारवंतनथी ॥ ११३ ॥
जेमचमकपाषाणते लोहने आकर्षे, तेणेकरीलोह पोतानीक्रियाये चमकपासेआवीमले,
तेमरागद्वेषीआत्मानीपासे कर्मआकर्षणेआवीमलेछे ॥ ११४ ॥

वारि वर्षन् यथांभोदो धान्यवर्षी निगद्यते ॥ भावकर्म सृजन्नात्मा
तथा पुद्गलकर्मकृत् ॥ ११५ ॥ नैगमव्यवहारौ तु ब्रूतः कर्मा
दिकर्तृतां ॥ व्यापारः फलपर्यंतः परिदृष्टो यदात्मनः ॥ ११६ ॥

अर्थ ॥ जेमपाणीवरसेछे. तेलोकव्यवहारे धान्यवरसेछे एमकहियें; तेमभावकर्मक-
रतोथको आत्मापुद्गल कर्मनोकर्त्ताकहियें ॥ ११५ ॥ नैगमअनेव्यवहारनयवाला तो
कर्मादिकनोकर्त्ताआत्माने मानेछे; जेआत्मानो व्यापार तेफलपर्यंतदेखायछे ॥ ११६ ॥

अन्योन्यानुगतानां का तदेतदिति वा भिदा ॥ यावच्चरमपर्यायं
यथा पानीयदुग्धयोः ॥ ११७ ॥ नात्मनो विकृतिं दत्ते तदेषा
नयकल्पना ॥ शुद्धस्य रजतस्येव शुक्तिधर्मप्रकल्पना ॥ ११८ ॥

अर्थ ॥ परस्परमल्याएवाजेनय तेने एवोनिर्णययावत् चरमपर्यायछे. परंतुजातिभे
दकेमजणाय ? जेमदुधअनेपाणीनासंयोगनीपरेछेसंग्रहमाने नैगमने, अनेनैगममाने सं-
ग्रहने, एवेनयमांहोमांहेभलेछे एमव्यवहारपण भलेछे ॥११७॥ वलीऋजुसूत्रनयवालो बोले-

ठेजे, आत्मानेविकार नथी, आपतोएवीनैगम तथाव्यवहारनयनी कल्पनाठे केनीपेठ तेकहेठे जेमशुद्धरूपानेठीपनोधर्म कल्पेठेतेनीपेठे जाणवु ॥ ११७ ॥

मुपितत्वं यथा पांथगतं पथ्युपचर्यते ॥ तथा पुद्गलकर्मस्था विक्रि
यात्मनि वालिशै ॥ ११९ ॥ कृष्णशोणोपि चोपाधेर्नाशुद्ध स्फ
टिको यथा ॥ रक्तोद्विष्टस्तथैवात्मा ससर्गात्पुण्यपापयो. ॥१२०॥

अर्थ ॥ जेमपथीजनने लुटतांलोककहेशेजे मार्गलुटाणो, एलोकवाक्यठे, तम र्सप्राणी पुद्गलकर्ममांरही जेविक्रियाकरे तेआत्मानेविषे मानेठे ॥ ११९ ॥ जे कालो अथवारातो स्फटिकठे तेउपाधिथीठे, माटेतेथीतेने अशुद्धनकहिये, तेमपु पापना संयोगथी आत्मारागीद्वेषी कहेवायठे ॥ १२० ॥

सेय नटकला तावद् यावद्विविधकल्पना ॥ यद्रूपं कल्पनातीत
न तु पश्यत्यकल्पक ॥१२१॥ कल्पनामोहितो जंतु शुक्ल कृष्ण
च पश्यति ॥ तस्यां पुनर्विलीनायामशुक्ल कृष्णमीक्षते ॥१२२॥

अने ॥ जिहांसुधीविविध प्रकारनीकल्पनाहोय, तिहांसुधीएसर्व नटकलारूप णकल्पनायेअतीतजेरूप तेनेतो जेअकल्पकहोय तेदेखे ॥ १२१ ॥ पणकल्पनायेमुग्ध जेजीव तेतो धोलानेकालुदेखेअनेकालाने धोलुंदेखे, अनेतेकल्पना जेवारेजाय तें तोकालानेकालुजदेखे, अनेधोलाने धोलुंजदेखे ॥ १२२ ॥

तद्ध्यान सा स्तुतिर्भक्ति सैवोक्ता परमात्मन ॥ पुण्यपापवि
हीनस्य यद्रूपस्यानुचिंतनं ॥ १२३ ॥ शरीररूपलावण्यवप्र
छत्रध्वजादिभि ॥वर्णितैर्वीतरागस्य वास्तवी नो पवर्णना ॥ १२४॥

अर्थ ॥ पुण्यपापरहित एहवाजेपरमात्माप्रभु तेनास्वरूपनु चिंतवबु तेनेजध्यान हिये, अनेस्तुतिपणतेज तथाभक्तिपणतेजकहिये ॥ १२३ ॥ पणशरीरनावर्ण, रूपें लावण्यनायेकरी, समोसरणे, अनेछत्रेकरी, तथा इन्द्रध्वजादिकेकरी जेपरमात्मानें स्तवना एहवीस्तुतिने वस्तुत साचीनकहिये ॥ १२४ ॥

व्यवहारस्तुति सेय वीतरागात्मवर्त्तिना॥ज्ञानादीना गुणाना तु
वर्णना निश्चयस्तुति ॥ १२५॥ पुरादिवर्णनाद्राजा स्तुत स्या
दुपचारत ॥ तत्वत. शौर्यगांभीर्यधैर्यादिगुणवर्णनात ॥१२६॥

अर्थ ॥ केमके एस्तुतिनोव्यवहारेठे पणजेमा वीतरागनाज्ञानादिगुण प्रम

तेहनेनिश्चयस्तुतिकहिये ॥१२५॥ जेमदेशनगरादिकेकरी राजावखाणवो एउपचारेस्तुतिजाणवी;पणराजानुंबल, गांभीर्यता, धैर्यतानुंवर्णववुं, तेनिश्चयथीस्तुतिकहिये ॥१२६॥

मुख्योपचारधर्माणा मविभागेन या स्तुतिः॥ न सा चित्तप्रसादा
य कवित्वं कुकवेरिव ॥ १२७ ॥ अन्यथाभिनिवेशेन प्रत्युतान
र्थकारिणी ॥ सुतीक्ष्णखड्गधारेव प्रमादेन करे धृता ॥ १२८ ॥

अर्थ ॥ जेम कुकविनीकविताथी पंडितरीझेनही, तेमबाह्यउपचार देखीवेहेंचणविनानीजेस्तुतिकरिये, तेथकी चित्तप्रसन्नथायनही ॥१२७॥ जेपोतानाहठ–कदाग्रहेकरी मुखउपचारे स्तुतिकरी गुणमानेछे, पणतेउलटी अनर्थकारीछे; जेमप्रमादेकरीहाथमांझालेली तरवारनीधार तेजोकदाच्पडे, तोउलटीअनर्थ–विघातकरेछे; तेनीपरें तेस्तुतिपण अन्यथाजाणवी ॥ १२८ ॥

मणिप्रभामणिज्ञानन्यायेन शुभकल्पना ॥ वस्तुस्पर्शितया
न्याय्या यावन्नान्यजनप्रथा ॥१२९॥ पुण्यपापविनिर्मुक्तं तत्त्वत
स्त्वविकल्पकं ॥ नित्यं ब्रह्म सदाध्येय मेषाशुद्धनयस्थितिः ॥१३०॥

अर्थ ॥ मणिरत्ननीकांतिदेखीने जेममणिनुंज्ञानकेंओलखाणथायछे, एदृष्टांते, शुभकल्पनायेकरी आत्मानुंज्ञानहोयछे. पछीवस्तुस्पर्शिकवडेकरी योग्यताथायछे; पणज्यांसुधिनिरंजन प्रथानथीथयी, त्यांसुधीकर्मछे. ॥ १२९ ॥ माटेपुण्यपापरहितपणे तत्त्वथीनिर्विकल्पएवो शाश्वतोजे आत्मातेसदाचध्यावो. एवीशुद्धनयनीस्थितिछे ॥१३०॥

आश्रवः संवरश्चापि नात्मा विज्ञानलक्षणः ॥ यत्कर्म पुद्गला
दान रोधावाश्रवसंवरः ॥१३१॥ आत्मा दत्ते तु यैर्भावैः स्वतंत्रः
कर्मपुद्गलान् ॥ मिथ्यात्वाविरति योगाः कषायास्ते तदाश्रवाः ॥१३२॥

अर्थ ॥ आत्माज्ञानरूपछे. माटेआत्माने आश्रव,संवरकांइनकहिये. पणकर्मपुद्गलनुंग्रहवुं तथारोधवुंते आश्रव संवरछे ॥ १३१ ॥ जेभावकरी स्वाधीनपणे कर्मपुद्गलने आत्माग्रहेछे, ते मिथ्यात्व. अविरति, कषाय, अनेयोगरूपआश्रवेकरीजाणवुं ॥ १३२ ॥

भावनाधर्मचारित्र–परिषहजयादयः॥आश्रवोछेदिनो धर्मा आ
त्मनो भावसंवराः ॥ १३३॥ आश्रवः संवरो न स्या त्संवरश्चा
श्रवः कचित्॥भवमोक्षफलाभेदोऽन्यथा स्याद्धेतुसंकरात् ॥ १३४॥

अर्थ ॥ अनेभावनाधर्मजेचारित्रछे, जेयकी परिषहनोजयथायछे एआभवने छेदकधर्मछे एआत्माने भावसंवरकहियें॥१३३॥ जेआश्रवतेसंवरनथाय अनेजेम्ना आश्रवनथाय हेतुसकर एवेजोकदापि एकरूपथाय,तोससारअने मोक्ष एवेनाउं एकथाय पणतेमाम्नेदरहेनहीं,एटलेज्याआश्रवेकरीसंवरनु संक्रमणथाय, त्यांनो जाणवु अनेज्यासंवरेकरी आश्रवनुसंक्रमणथाय, त्यांससारफलजाणवु ॥ १३४॥

कर्माश्रवश्च संवृण्वा न्नात्मा भिन्नैर्निजागयै ॥ करोति न परापेद मत्नजूपणु स्वत सदा ॥१३५॥ निमित्तमात्रनूता तु हिंसाऽहिंन दयोरिला ॥ ये परप्राणिपर्याया न ते स्वफलहेतव ॥१३६॥

अर्थ ॥ आश्रवनावने संवरकरतोयकोजे पोतानाआत्माथीजूदानथी एवाने नाआशय तेणेकरी परअपेक्षानकरे केमकेतेपोताथी सदायसमर्थछे ॥१३५॥ जेहिं हिंसादिकनयप्राणपरप्राणिनापर्याय ते आत्माने निमित्तनूतछे, पणपोतानेफलहेतुनथी

व्यवहारविमूढस्तु हेतूंस्तानेव मन्यते ॥ बाह्यक्रियारतस्वांत स्तत्त्व गूढ न पश्यति ॥१३७॥ हेतुत्वं प्रतिपद्यते नैवेति नियम स्पृश ॥ यावंत आश्रवा प्रोक्ता स्तावतोहि परिश्रवा ॥ १३८॥

अर्थ ॥ व्यवहारमूढजेआत्मातेपरपर्यायने पोताना फलहेतुमानेछे, माटेजेनुमन क्रियामांरमछे तेयाप्राणीगुसतत्त्वने देखतानथी ॥ १३७ ॥ जेहिंसादिक तथाअहिंसादिक परपर्यायहेतुपणुछे, तेनेपडिवजे अथवानथीपडिवजता, एहवोनियम तेनीनिश्चयना जेपरमनारामे तेहनेजेटलाआश्रवछे तेटलासंवररूपथाय ॥ १३८ ॥

तस्मादनियत रूप वाह्यहेतुपु सर्वथा ॥ नियतो भावनैचित्र्या दात्मनाश्रवसंवरौ ॥ १३९ ॥ अज्ञाता विषयासक्तो बध्यते विषयैस्तु स ॥ज्ञानाद्विमुच्यते चात्मा नतु शास्त्रादिपुद्गलात् ॥ १४० ॥

अर्थ ॥ तेमाटे सदायवाह्यहेतुनेविषे अनियतरूपछे नियतिनेविषे भावना विचित्रपणाथकी आत्मातेज संवर आश्रवरूपछे ॥ १३९ ॥ जेअज्ञानीछे, अने विषयासक्त छे इन्द्रियविषयमा बंधायछे ते विषयनो आत्माने आत्मज्ञानथकी मूकाय पणशास्त्रादि पुद्गलथकी नमूकाय ॥ १४० ॥

शास्त्रं गुरोश्च विनयं क्रियामावश्यकानि च ॥ संवरांगतया प्रा हु व्यवहारविशारदा ॥ १४१ ॥ विशिष्टा वाक्तनुस्वांतपुद्गला स्ते पत्रावहा ॥ते नु ज्ञानादयोभावा संवरत्वं प्रयान्ति ते॥१४२॥

अर्थ ॥ शास्त्रजणवुं. गुरुनोविनयकरवो, तथाआवश्यकादिकक्रियाकरवी एनेव्यव हारमां विचक्षणपुरुषोये संवरनांअंगकह्यांछे ॥१४१॥ जेरुडामनवचनकायायेकरी प्रवर्त्तवुं तेहनाजेपुण्यफलतेफलदाइछे. पणजेज्ञानादिकजावछे तेसंवरपणानेपामेछे ॥ १४२ ॥

ज्ञानादिजावयुक्तेषु शुजयोगेषु तज्जतं ॥ संवरत्वं समारोप्य स्मर्यंते व्यवहारिणः ॥ १४३ ॥ प्रशस्तरागयुक्तेषु चारित्रादिगु णेष्वपि ॥ शुजाश्रवत्वमारोप्य फलजेदं वदंति ते ॥ १४४ ॥

अर्थ ॥ ज्ञानादिकजावेयुक्त एवाजेशुजयोगतेनेविषे तज्जतजेसंवरत्वतेनेआरोपीने व्यवहारे प्रवर्त्तकजेजीव तेहपेपामेछे ॥ १४३ ॥ रुडारागेयुक्त एवाजेचारित्रादिक गुणतेनेविषे पण शुजआश्रवपणु आरोपीने फलजेदकहेछे ॥ १४४ ॥

जवनिर्वाणहेतूनां वस्तुतो न विपर्ययः ॥ अज्ञानादेव तज्ञानां ज्ञानी तत्र न मुह्यति ॥१४५॥ तीर्थकृन्नामहेतुत्वं यत्सम्यक्त्वस्य वर्ण्यते ॥ यच्चाहारहेतुत्वं संयमस्यातिशायिनः ॥ १४६ ॥

अर्थ ॥ संसारतथामोक्षनोहेतु तेनेवस्तुतत्त्वे कांइविपर्यासनथी, पणअज्ञाननायोग थकी तेजगाये विपर्यासपणुथायछे, पणतिहांज्ञानीपुरुष कांइमुजातानथी ॥ १४५ ॥ जिननामकर्मनाहेतु समकितने वर्णवीएछेये, तेपणउपचारेंकहेवायछे. अनेआहारकशरीरनोहेतु जेअतिशयलब्धिवंत संयमिमुनि तेपणउपचारेकहेवायछे ॥ १४६ ॥

तपःसंयमयोः स्वर्ग हेतुत्वं यच्च पूर्वयोः ॥ उपचारेण तद्युक्तं स्या द् घृतं दहतीतिवत् ॥ १४७ ॥ येनांशेनात्मनोयोग स्तेनांशेना श्रवोमतः ॥ येनांशेनोपयोगस्तु तेनांशेनास्यसंवरः ॥ १४८ ॥

अर्थ ॥ जेपूर्वेकहेला तपअनेसंयम स्वर्गहेतुछे, तेपणउपचारेकहियें; सर्वपरिणामेछे; पण जेमघीबलेछे एउपचारेछे,पणअग्निबलेछेएखरुछे ॥१४७॥ जेअंशेकरी आत्मा योगवर्त्ती थयो तेअंशेआश्रवकहिये अनेजेअंशेआत्माउपयोगी थयो तेअंशेसंवरकहिये ॥१४८॥

तेनासावंशविश्रांतो विभ्रदाश्रवसंवरो ॥ जात्यादर्श इव स्वच्छा स्वच्छजागद्धयः सदा ॥१४९॥ शुद्धैव ज्ञानधारा स्या त्सम्यक्त्व प्राप्त्यनंतरं ॥ हेतुजेदाद्विशेषे तु योगधारा प्रवर्त्तते ॥ १५० ॥

अर्थ ॥ तेमाटेआ अंशविश्रांतिनेविषे आश्रवसंवर धरेछे, तेमांएकछे मलिन, अने एकछेनिर्मल; जेमआरिशाना पछवाडानो जागमलिनछे, अने आगलोजागनिर्मलछे,

तेहनीपरें सदाय निर्मलमलिन एवेजागेकरीआत्माशोजेछे, आरिसानीपेरे ॥१५०॥ समकितपाम्यापछी जेशुद्धज्ञानधाराप्रगटे तेहेलुनेदथकी विशेषेकरी योगधाराप्रवर्त्तेछे१५०

सम्यग्दृशो विशुद्धत्वं सर्वास्वपि दशास्वतः ॥ मृदुमध्यादिनाव स्तु क्रियावैचित्र्यतोनवेत्॥१५१॥यदा तु सर्वतः शुद्धिर्जायतेधारयो र्द्वयो ॥ शैलेशीसंज्ञितस्थैर्या त्तदा स्यात्सर्वसंवर ॥१५२॥

अर्थ ॥ समकितिने सर्वदशामा शुद्धपणुछे एमाटे लघु, मध्यम, उत्तम एनावछे, तेक्रियानिचित्रतायीछे ॥ १५१ ॥ जेवारेसर्वथी मनवचनकायानायोग तथाउपयोग, एबेधारानी शुद्धियाय तेवारेशैलेशीनामेस्थिरतायी सर्वसंवरहोय ॥ १५२ ॥

ततोर्वाग् यत्र यावच्च स्थिरत्वं तावदात्मन ॥संवरो योगचाचल्य यावत्तावत्क्लिआश्रव ॥१५३॥ निर्जरा कर्मणोत्सादो नात्मा ऽस्मो कर्म्मपर्यय ॥ येन निर्जायते कर्म स्वनावस्त्वात्मलक्षणं ॥१५४॥

अर्थ ॥ अनेतेथीपेहेलाहेठला गुणठाणेतोजिहांसुधी आत्माने स्थिरतापणुछे, तिहांसुधीआत्माने संवरत्तेछे, अने जिहांसुधीयोगनीचंचलताछे, तिहांसुधीनिश्चयेथी जाणीये जे आत्मानेआश्रवपणुवर्त्तेछे एमयावत् शैलेशीकरण सुधी समजवु ॥ १५३ ॥ कर्मनुजेशाडवु तेनेनिर्जराकहिये पणआत्मापोते कर्मपर्यायरूपनथी, तेमाटे कर्मनिर्जरियेपणोजेस्वनाव तेआत्मानुलक्षणछे ॥ १५४ ॥

तत्तपोद्वादशविधं शुद्धज्ञानसमन्वितं ॥ आत्मशक्तिसमुत्थाना चित्तवृत्तिनिरोधकृत् ॥ १५५ ॥ यत्र रोधः कषायाणां ब्रह्मध्यानं जिनस्य च ॥ ज्ञातव्यं तत्तपः शुद्ध मवशिष्टं तु लंघनं ॥१५६॥

अर्थ ॥ निर्जरानुकारणते शुद्धज्ञानेसहित प्रगटयो अने चित्तनी चपलवृत्तिनोरुनो एहवो बारनेदेतपछे ॥१५५॥ जिहां प्रजुनाध्यानयुक्त कषायनोरोधछे, ब्रह्मचर्यनुरखवुछे, तेशुद्धतपजाणवो एशिवाय बीजोतपतेमात्रलांघण करवा जेवोछे ॥ १५६ ॥

क्षुत्तृडादिदसह्यं वा तपसो नास्ति लक्षणं ॥ तितिक्षाब्रह्मगुप्त्या दिस्थानं ज्ञान तु तद्वपु ॥१५७॥ ज्ञानेन निपुणेनैस्य प्रातच दनगयरत॥निजगमात्मनो वृत्ते तपोनान्यादृश क्वचित् ॥१५८॥

अर्थ ॥ क्षुधेसहवु शरीरनेडुःखसुकवु, एतपनुलक्षणनथी, पण जिहांज्ञानयुक्त ब्रह्मचर्यनेगुप्ति, तथा तितिक्षादि० शांतिहोय एतपनु स्वरूपछे ॥१५७॥ जेज्ञानमांदक्ष

ताभावनेपाम्यो, एवोजेतपतेनेतपकहिये. जेमचंदनसाथे गंध एकताभावनेपाम्योछे, ते नीपरेएतपते ज्ञानेयुक्तथकोआत्मानेनिर्जराफलआपे. पण बीजीरीते नआपे ॥ १५७ ॥

तपस्वी जिनभक्त्या च शासनोद्भासनोत्थया ॥ पुण्यं बध्नाति बहु लं मुच्यते तु गतस्पृहः ॥१५९॥ कर्मतापकरं ज्ञानं तपस्तन्नैव वेत्ति यः ॥ प्राप्नोतु स हतस्वांतो विपुलां निर्जरां कथं ॥१६०॥

अर्थ ॥ निरासीभावेतपनोकरनारो तपसी जिन तथा ज्ञानभक्तिएकरी शासननेदिपावे, अनेघणुंपुण्यबांधे; कर्मथीमुकाय ॥१५९॥ कर्मनेतापवे एवुंज्ञानछे, अनेतेज्ञानमां जेधणी तपनेनजाणे, तेतपसीनिर्बुद्धिनोधणी विपुलनिर्जराकेमपामे ? ॥ १६० ॥

अज्ञानी तपसा जन्मकोटिभिः कर्म यन्नयेत् ॥ अंतं ज्ञानतपोयुक्त स्तत् क्षणेनैव संहरेत्॥१६१॥ज्ञानयोगस्तपः शुद्ध मित्याहु र्मुनिपुंगवाः॥तस्मान्निकाचितस्यापि कर्मणो युज्यते क्षयः ॥१६२॥

अर्थ ॥ ज्ञानविनाएककोटि भवसुधी जेटलांतपकरे, तेतपमांजेटलांकर्मक्षय नथाय तेटलांकर्मोनेएकक्षणमां ज्ञानसहित तपेकरीखपावे ॥ १६१ ॥ माटेज्ञानयोगेजेतपकरवोतेशुद्धछे. एरीतेप्रभुकहेछे. केमकेतेतपथी निकाचितकर्मनो क्षयथायछे ॥ १६२ ॥

यदिहापूर्वाकरण श्रेणिः शुभ्रा च जायते॥ ध्रुवः स्थितिक्षयस्तत्र स्थितानां प्राच्यकर्मणां॥१६३॥तस्माद् ज्ञानमयः शुद्ध स्तपस्वी भावनिर्जरा॥शुद्धनिश्चयतस्त्वेषा शुभाशुद्धस्य कापि न॥१६४॥

अर्थ ॥ जेतपथीइहांअपूर्वकरण श्रेणिशुद्धथाय, वलिएथीपूर्वकर्मनी रहिजेकर्मनी स्थितिओ तेस्थितिओनिश्चयथी क्षयथाय ॥ १६३ ॥ तेमाटेज्ञानमयी जेशुद्धतपसीते नेनिश्चयथी शुद्धभावनिर्जराथाय, पणअज्ञानतपसीनेकांइनथाय ॥ १६४ ॥

बंधः कर्मात्मसंश्लेषो द्रव्यतः स चतुर्विधः ॥ तद्धेत्वध्यवसाया त्मा भावतस्तु प्रकीर्त्तितः॥१६५॥वेष्टयत्यात्मनात्मानं यथा सर्प स्तथा पुमान्॥तत्त भावैः परिणतो बध्नात्यात्मानमात्मना ॥ १६६ ॥

अर्थ ॥ कर्मनीसाथेआत्मानुंजेमलवुं तेनेबंधकहिये. तेबंधचारभेदेछे. तेहेतुअध्यवसाये आत्माभावथीकह्योछे ॥ १६५ ॥ जेमसर्पपोतानीनेवे पोते [illegible] पण तेतेभावे परिणम्योथको पोतेपोत [illegible] कर्मनायेबंधायछे [illegible]

वध्नाति स्वं यथा कोशकारकीट स्वतंतुभि ॥आत्मन स्वगतैर्भा वैर्बंधने सोपमा स्मृता ॥१६७॥ जतूनां सापराधाना वधकारी न ईश्वर ॥ तद्वंधकानवस्थाना दबंधस्याप्रवृत्तिन ॥ १६८ ॥

अर्थ ॥ जेमरेशमनोकीडो पोतानीलाळेकरी पोतेजवधायछे, तेमआत्मा पोताना रागादिपरिणामेकरी पोतेजवधायछे एउपमाकही ॥ १६७ ॥ पणजेईश्वरकर्त्ताकहेछे, तेवातनिषेधेछे, अपराधीजीवनेकांइ ईश्वरवधकर्त्तानथी तेईश्वरवधकर्त्तापणाना निषेधथकी अवंधनीय आत्मानेविषे अप्रवृत्तछे एटलेस्वभावेज वधनिवृत्तिआत्मानेछेपण ईश्वरकर्त्तानथी ॥ १६८ ॥

तत्त्वज्ञान प्रवृत्त्यर्थे ज्ञानवन्नोदना ध्रुवा ॥ अबुद्धिपूर्वकार्येषु स्वप्नादौ तददर्शनात ॥१६९॥ तथा भव्यतया जतु र्नोदितश्च प्रवर्त्तते ॥ वधन् पुण्यच पाप च परिणामानुसारत ॥ १७० ॥

अर्थ ॥ ज्ञानवंतनी जेप्रेरणाछे तेतत्त्वज्ञाननी प्रवृत्तिनेअर्थे ध्रुवछे, केमकेस्वप्नादिक जेअबुद्धिपूर्वक कार्यछे, तेनेविषे ए ज्ञाननी प्रेरणाकांइ देखातीनथी, तेमाटे ॥१६९॥ तेमज प्राणीभव्यतायें प्रेस्योथको परिणामने अनुसारेकरी पुण्यपापने बांधतोथको प्रवर्त्तेछे ॥ १७० ॥

शुद्धनिश्चयत स्वात्मा न वद्धो वंधशंकया ॥ भयकंपादिकं किंतु रज्जावहिपतेरिव ॥ १७१ ॥ रोगस्थित्यनुसारेण प्रवृत्ती रोगिणो यथा ॥ भवस्थित्यनुसारेण तथा वधोपि वर्ण्यते ॥ १७२ ॥

अर्थ ॥ शुद्धनिश्चयनयथकीतो आत्माअवधकछे, पणभयकंपादिकेकरी वधनीशंका रहेछे जेमदोरडुदेखी सर्पनीशकाउपजेछे, तेनीपरेंजाणवु ॥ १७१ ॥ रोगनीस्थितिने अनुसारेरोगछे एटले जेदिवसेशरीरउपनु, तेजदिवसथी सर्वरोगनीस्थितिओ शरीरना उत्पन्नथयलीछे, अर्थात्शरीरकेवल रोगनीस्थितिरूपजछे पणतेरोगजेवारेरोगीने कुपथ्यसेवेतेवारेप्रगटथायछे तेवारेरोगीपुरुषजेम रोगनीप्रवृत्तिगणेछे, तेमजभवस्थितिने अनुसारे आत्माने वधपणकहियेछेये ॥ १७२ ॥

दृढाज्ञानमयीशंका मेनामपनिनीषत ॥ अध्यात्मशास्त्रमिछति श्रोतु वैराग्यकांक्षिण ॥ १७३ ॥ दिशाप्रदर्शकं शाखा चंद्रन्यायेन तत्पुन ॥प्रत्यक्षविषया शका न हि हति परोक्षधी ॥१७४॥

अर्थ ॥ एटले अज्ञानमय एहवी जे शंका तेहनेटालवानेइछतो, वैराग्यनो अभिलाषी थको. अध्यात्मशास्त्रमांजहवानेइछेछे ॥ १३३ ॥ जेमनिर्मलचक्षुवनां ग्रहणवेलाजेवी नजरथइजायछेतेणेकरी एकचंद्रनीपासे बीजोचंद्रदेखे एन्यायेकरी जे अध्यात्मशास्त्र छे. तेपणदिशिनुंदेखाडनारछे. पणपरोक्षबुद्धिकांइप्रत्यक्षविषयनी आशंकाने टालीनशके. एटलेअध्यात्मनोविषय प्रत्यक्षपणेनथी. परोक्षपणेछे. माटेलखावेछे अध्यात्मशास्त्रछे. तेपरोक्षबुद्धिछे. पणअनुभवते साक्षात् प्रत्यक्षपणाने हणीनशके: एटले आत्मानुभवि पुरुषो पोतानाअनुभवेकरी आत्मानोप्रत्यक्षअनुभवकरेछे ॥ १३४ ॥

शंखश्वैत्यानुमानेपि दोषात्पीतत्वधीर्यथा ॥ शास्त्रज्ञानेपि मिथ्याधीः
संस्काराद्वंधधीस्तथा॥१३५॥श्रुत्वा मत्वा मुहुः स्मृत्वा साक्षादनुभवं
ति ये ॥ तत्त्वं न बंधधीस्तेषामात्मबंधः प्रकाश्यते ॥ १३६ ॥

अर्थ ॥ जेमनधुगलानोरोगवंतपुरुष तेयद्यपिशंखने उज्वलनोजाणेछे पणरोगेकरीतेने पीलावर्णनीबुद्धिथायछे: तेमशास्त्रेकरीआत्मानेनिर्मलतोजाणेछे, पणमिथ्यात्वबुद्धिना संस्कारथकी बंधरूपबुद्धिछे. एटलेआत्मानेरागी द्वेषीबंधरूपजेदेखेछे. तेअनुभवविना देखेछे. एभावार्थछे ॥ १३५ ॥ गुरुनामुखथी अध्यात्मशास्त्रनुं सांभलवुं तेनेश्रवणकेहेछे. तेनांभलेलाविषयनो अनुक्रमेपुन:पुनः अंत:करणमां विचारकरवो तेनेमननकहेछे. अनेसांभलीनेविचारकरी संशयतथाविपर्ययभावरहित थइने उक्तआध्यात्मिक विषयरूप आत्मतत्त्व अंतर्वृत्तिकरीने जेसाक्षात् अनुभवकरवुं. तेनेनिदिध्यासनकहेछे. एवाआत्मारमनतत्त्वज्ञाता पुरुषनेबंधबुद्धि होतीनथी; केमके बंधनेप्रकाशकरनारतोआत्मा पोतेजछे तेअनुभवथयापछी अज्ञानरूपबंधनो आश्रयकेमकरे? ज्यांसुधी आत्माअनुभवअथवा ज्ञानवडे प्रकाशनेपाम्यो नहतो, त्यांसुधी तमरूपअज्ञान अनेबंधवानथयोहतो, पण अनुभवथयापछी आत्मानेविषे बंधनथी ॥ १३६ ॥

द्रव्यमोक्षः क्षयः द्रव्यकर्म्मणां नात्मलक्षणं ॥ भावमोक्षस्तु
तद्धेतुरात्मा रत्नत्रयान्वयी ॥ १३७ ॥ ज्ञानदर्शनचारित्रैरात्मैक्यं
लभते यदा ॥ कर्मणि कुपितानीव भवंत्याशु तदा पृथक् ॥ १३८ ॥

अर्थ ॥ जेद्रव्यकर्मनो क्षयतेद्रव्यमोक्षछे, पणतेकांइआत्मानुंलक्षणनथी; मात्रतेद्रव्यकर्मनोक्षयतेमोक्षनो हेतुथायछे. पणआत्मातोरत्नत्रय परिणतिरूपछे. तेने द्रव्यकर्मनो क्षयनो उपचारथीमोक्षहेतुकहिये. पणवस्तुथीतत्त्वबुद्धिएकेहेवायनही ॥१३७॥ तेज्ञानदर्शनचारित्रएरत्नत्रयीवडेकरीने ज्यारेआत्माएकभावपणानेपामे, त्यारेजेकर्मंहतां; तेकोइकसंसारीजीवजेम रीसाइनेघरमांथीजूदोनिकले, तेमजीवथीजुदांनिकलीजाय ॥ १३८ ॥

अतोरत्नत्रयमोक्ष स्तदजावे कृतार्थता ॥ पापम्गिणलिगैश्च ग्रहलिगैश्च कापि न ॥ १७ए ॥ पापडिगणलिगेपु ग्रहलिगेपु ये रता ॥ न ते समयसारस्य ज्ञातारो वालबुध्य ॥ १७० ॥

अर्थ ॥ एमाटेजेरत्नत्रयी तेथी मोक्षछे, पणतेरत्नत्रयीनेअजावे पाखमीसाधुनासमूहने तथापाखंडी ग्रहीलिगीने कृतार्थपणु काइनथी ॥ १७ए ॥ माटेपाखमीसाधुना समूहमां तथापाखमीग्रहीलिगीमा जेप्राणीरक्तछे, तेहनेवालमतिवाला समजवा, पण तेसिद्धांतनासार एटलेरहस्यना जाणनथी ॥ १७० ॥

जावलिगरता येपु सर्वसारविदो हि ते ॥ लिगस्था वा ग्रहस्था वा सिध्यति धूतकल्मपा ॥१७१॥ जावलिगं हि मोक्षाग ड्व्य लिगमकारणं ॥ ड्व्य नात्यतिकं यस्मान्नाप्यैकातिकमिप्यते ॥१७२॥

अर्थ ॥ अनेजेप्राणी जावलिंगेराताछे, तेहनेसर्वसारना जाणकहिये तेवेपधारी साधुलिगेहोय, अथवाग्रहस्थलिगेहोय, तोपणपापकर्मधोइने मोक्षपामे ॥ १७१ ॥ कमकेजेजावलिगते मोक्षनुअगछे, अनेड्व्यलिगतोअकारणछे ड्व्यलिगतेकाइ आत्यतिकनथी, माटेजेजावलिगीछे, तेड्व्यलिगने एकातेनथीइछता ॥ १७२ ॥

यथा जातदशालिगमर्थादव्यजिचारि चेत् ॥ विपक्षबाधकाजावात् तध्देतुत्वे तु का प्रमा॥१७३॥वस्त्रावधारणेन्गचेद्बाधिकातस्य ता विना ॥ धृतस्य न किमस्थाने करादेरिव बाधक ॥१७४॥

अर्थ ॥ इहाकोइकहेछेजे, नग्नपणेमोक्षछे तेनेउत्तरकहेछे जोएअर्थथी वातव रीछेतो आत्मानेमोहबाधकछे तेमोहनोअजावथाशे, अनेजोनगनपणे मोक्षहोयतो मोह टालवानु शुप्रमाण ? तेवारेतोमोहटालवानी काइजरूरनरहे ॥ १७३ ॥ वस्त्रर णेएटले इछाविनापण जो वस्त्रराखता मोक्षनीबाधकताछे, तोइछाविनाजे करादिक एटले हाथप्रमुखअगधर्याछे, तेपणमोक्षना बाधकथाशे, एटले दिगबरलोककहेछेके वस्त्रराखवाथी मोक्षनीवाधकताछे, तेहनेनिरुत्तरकर्या ॥ १७४ ॥

स्वरूपेण च वस्त्र चेत्केवलज्ञानबाधक ॥ तदादिकूपटनीत्येव तत्तदावरण जवेत् ॥१७५॥ इत्थ केवलिनस्तेन मूर्ध्नि क्षिप्तेन केनचित् ॥ केवलित्व पलायतेत्यहोकिमसमंजस ॥ १७६ ॥

अर्थ ॥ जोपरमार्थथी जेवस्त्रछे तेनिजकेवलज्ञानने बाधकपणेहोयतो दिगबरनी रीते केवलज्ञानावरणीयने ठेकाणे वस्त्रावरणीय एमथयुंजोइये तेवस्त्रावरणीय कर्मदिगब

रीयो रहेतानथी, एटलीएनीचूकछे ॥१८५॥ एरीतेतो केवलिनेमाथे कोइकवस्त्रश्रो ढाडे तेवारेकेवलज्ञानने नासीजवुंजोइये. पणकेवलीने वस्त्रश्रोढानतां केवलज्ञाननासी जायछे एमतोथतुंनथी, माटे अहोइतिश्राश्चर्य शुंतुतुश्रसमंजस वोलोछो ! ॥ १८६ ॥

भावलिंगात्ततोमोक्षो भिन्नलिंगेष्वपि ध्रुवः ॥ कदाग्रहं विमुच्यै
तद्भावनीयं मनस्विना॥१८७॥अशुद्धनयतो ह्यात्मा बंधोमुक्त इ
तिस्थितिः ॥ न शुद्धनयतस्त्वेष वध्यते नापि मुच्यते ॥१८८॥

अर्थ ॥ तेमाटे भावलिंगथीमोक्षछे. वेषनोकांइनियमनथी. कदापिद्रव्यथी अन्य लिंगीनोवेषहोय. तोपणनिश्चयेमोक्षछे. माटेकदाग्रहछांडीने बुद्धिवंतपुरुषे एरीतेविचा-रवुं ॥ १८७ ॥ अशुद्धनयथी आत्मावंधायछे अनेमुंकायपणछे. पणशुद्धनयेनो एआत्मावं धानोपणनथी, अनेमुंकानोपणनथी ॥ १८८ ॥

अन्वयव्यतिरेकाभ्यामात्मतत्त्वविनिश्चयं ॥ नवभ्योपि हि तत्त्वे
भ्यः कुर्यादेवं विचक्षणः ॥१८९॥ इदं हि परमध्यात्म मम्रतं ह्य
द एव च ॥ इदं हि परमं ज्ञानं योगोयं परमः स्मृतः ॥१९० ॥

अर्थ ॥ अन्वयव्यतिरेकेकरीने जेवतेतेवतुं, तेहनेअन्वयकहिये अनेजेश्रवते तेश्र वतुं तेहनेव्यतिरेककहिये ॥ तद्भावेतद्भावोश्रन्वयः तदभावेतदभावोव्यतिरेकः इंह घटदष्टांतेनभाव्यं ॥ विचक्षणपुरुषे एरीतेश्रात्मतत्त्वनो निश्चयनवतत्त्वेकरीने करवो ॥ १८९ ॥ एहिजउत्कृष्टअध्यात्मछे; एहिजअमृतोपमछे; वलीएहिज परमज्ञानछे; अने एहिजपरमयोगकह्योछे ॥ १९० ॥

गुह्याद्गुह्यतरं तत्त्वमेतत्सूक्ष्मनयाश्रितं ॥ न देयं स्वल्पबुद्धी
नां तेह्येतस्य विडंबिकाः ॥१९१॥ जनानामल्पबुद्धीनां नैतत्तत्त्वं
हितावहं ॥ निर्बलानां क्षुधार्त्तानां भोजनं चक्रिणो यथा॥ १९२॥

अर्थ ॥ छानामांछानुं एतत्त्वछेः माटेसूक्ष्मनयश्राश्रीने एतत्त्वश्रल्पबुद्धिने नमंजणा-ववुं; शामाटेकेजे श्रल्पमतिवाला तेएनत्त्वनाविटंवकछे ॥ १९१ ॥ माटेश्रल्पबुद्धिवंत प्राणीने एतत्त्वहितकरनेहि. जेमचक्रवर्त्तिनुं खीरनुं भोजन निर्वलनेक्षुधारेपीडा प्राणीहोयतेनेपचेनही. तेनीपरेंजाणवुं ॥ १९२ ॥

ज्ञानांशदुर्विदग्धानां तत्त्वमेतदनर्थकृत् ॥ अशुद्धमंत्रपाठस्य
फणिरत्नग्रहो यथा ॥१९३॥ व्यवहाराविनिष्णातो योज्ञीप्सति
विनिश्चयं ॥ कासारतरणाशक्तः सागरं स तितीर्षति ॥ १९४ ॥

अर्थ ॥ तेमसंस्कृत पंडिताइयेकरीने अर्धवच्चाएइगा जेप्राणी तेनेएतत्त्व अनर्थकारीछे, जेमअशुरू मंत्रनापाठवालो पुरुष सर्पनोमणिलेवाजाय, तेतेनेअनर्थकारी थाय, तेनीपरेंजाणवु ॥१९३॥ जेप्राणीव्यवहारनयमां कुशलनथी, अनेनिश्चयनयने समजवाजाय, तेप्राणीतलावने तरवामांअसमर्थछता समुद्रतरवा वाछेछे ॥ १९४ ॥

व्यवहारं विनिश्चित्य तत शुद्धनयाश्रित ॥
आत्मज्ञानरतोभूत्वा परमं साम्यमाश्रयेत् ॥ १९५ ॥

अर्थ ॥ व्यवहार अनेनिश्चयेकरी शुद्धनयनेआश्रीने आत्मज्ञाने रतथइ जेप्रवर्त्ते तेप्राणी परमपदनेपामे ॥ १९५ ॥ इतिआत्मनिश्चयाधिकार अष्टादशसमाप्त ॥

उत्सर्प्पद्व्यवहारनिश्चयकथाकल्लोलकोलाहलत्रस्यद्दुर्नयवादिकच्छपकुलं भ्रश्यत्कुपक्षाचलं ॥ उद्यद्युक्तिनदीप्रवेशसुभग स्याद्वादमर्यादया युक्तं श्रीजिनशासनं जलनिधिं मुक्त्वा परं नाश्रये ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेजिनशासनरूप रत्नाकरनीस्तुति करेछे तेमाप्रथम जिनशासनने समुद्रनीउपमाआपेछे, तेजिनशासनरूपसमुद्र केवोछे ? तेकहेछे पसरतीएहवी व्यवहारतथा निश्चयनयनीजेकथा, तेरुपजेकल्लोल तेनोजेकोलाहल, तेणेकरीने दुष्टजननयवादिरूपी, काचबानोकुल जेनेविषे त्रासपामेछे वलीजेमाथी कुमतिरूपियपर्वत तुटीगयाछे, जागाछे, वलीजेमामोहोटी उक्तियुक्तिरूपिणी नदीओनो प्रवेशछे तेणेंकरीजेसुभग एटले मनोहरछे, वली स्याद्वादशैली रूपमर्यादायेजेयुक्तछे, एवो श्रीजिनशासनरूपरत्नाकरजेसमुद्र तेनेतजीनेपरदर्शननेकोणसेवे ? ॥ १ ॥

पूर्णपुण्यनयप्रमाणरचनापुष्पै सदास्थारसैस्तत्त्वज्ञानफलै सदा विजयते स्याद्वादकल्पद्रुम ॥एतस्मात् पतितै प्रवादकुसुमै षट्दर्शनारामभूर्य सौरभमुद्वमत्यभिमतैरध्यात्मवार्तालवै ॥ २॥

अर्थ ॥ हवेएजिनमतने कल्पवृक्षकरीदेखाडेछे जेमापूर्णपवित्रजे सातनय अने चारप्रमाण तेहनीजेरचना तेरूपिय फुलमाहेथी सदेव श्रद्धारूपरसेकरीने तत्त्वज्ञानरूपफल नीपजाछे, एवोस्याद्वादनामाजे कल्पवृक्ष ते सदाजयवंतोवर्त्तो ! एकएहथी खरीपड्याजे प्रवाहरूपि फुल तेणेकरीने षड्दर्शनरूप वाग्मीनी जेधरतीते नवनवीअध्यात्मनी जेवार्त्ताओ तेनाजेलव तेणेकरीने भूय कहेताफरीने सुगंधपणाने प्रगटकरेछे ॥ २ ॥

चित्रोत्सर्गशुभापवादरचनासानुश्रियालंकृतः श्रद्धानंदनचंद
नद्रुमनिभप्रज्ञोल्लसत्सौरभः ॥ भ्राम्यद्भिः परदर्शनग्रहगणैरासे
व्यमानः सदा तर्कस्वर्णशिलोच्छ्रितो विजयते जैनागमो मंदरः ॥३॥

अर्थ ॥ हवे जिनशासनने मेरुपर्वतनी उपमा आपेछे. नानाप्रकारनो उत्सर्गमार्ग अने रुडो जे अपवादमार्ग तेनी रचनावंत रूपशिखर तेनी शोभाये शोभितछे. वली श्रद्धारूप नंदनवनमां चंदननो वृक्ष तेरूप जे बुद्धि तेथकी प्रगटीछे सुगंध जिहां एवो मेरुतुल्यछे. वली एमेरुपर्वतनी पठवाडे भमताजे परदर्शनरूपी ग्रहनासमूह तेणेकरीने सदासेवितछे. तथा तर्कजे शुद्धविचार तेरूपिणी सुवर्णशिला तेणेकरीने ऊंचोछे. एवो जैनागमरूपजेमेरु तेजयवंतोवर्त्तो ! ॥ ३ ॥

स्याद्दोषापगमस्तमांसि जगति क्षीयंत एव क्षणाद् ध्वानो विशदी
भवंति निविमा निद्रादृशोर्गच्छति॥यस्मिन्नभ्युदिते प्रमाणदिवस
प्रारंभकल्याणिनी प्रौढत्वं नयगीर्दधाति स रविर्जैनागमो नंदतात् ॥४॥

अर्थ ॥ हवे जिनशासनने सूर्यनी उपमा आपी वखाणेछे. जैनागमरूपसूर्यनाउदयथकी चोरीजारीइत्यादिदोषटले, वली जेथकी क्षणेकमां जगत्नेविषे अज्ञानरूपअंधारुं क्षयथाय, जेथकीमार्गनिर्मलथायछे, वलीचक्षुमांथी प्रमादरूपनिद्राजायछे, तथा जेमसूर्योदयथी दिवस उद्योएमसिद्धथायछे, तेमजैनागमना उदयथी प्रमाणनीसिद्धतारूपदिवसनी सिद्धतायायछे, तेजाणियेदिवसनेप्रारंभे लोकप्रभातेमंगलिकबोलेछे, जेमसूर्यउदये लोकन्यायमार्गेचाले, न्यायनांवचनबोले, तेमजैनसूर्यउदये नयतथा आगमनीवाणीते घणीरूडीरीतेप्रौढतापामेछे. एवोएजिनशासनरूपि सूर्य तेजयवंतोवर्त्तो ! ॥ ४ ॥

अध्यात्मामृतवर्षिभिः कुवलयोल्लासं विलासैर्गवां तापव्यापविनाशि
भिर्वितनुते लब्धोदयोयः सदा॥तर्कस्थाणुशिरःस्थितः परिवृतः स्फा ,
रैर्नयैस्तारकैः सोयं श्रीजिनशासनामृतरुचिः कस्येति नो रुच्यतां ॥५॥

अर्थ ॥ हवे जिनशासनने चंद्रनी उपमा आपी वखाणेछे अध्यात्मरूप अमृतनो जेवरसाद तेणेकरीने कुवलयजेपृथ्वीरूपकमल तेनेविकस्वर करेछे, एवो, वली गवांके० वाणीरूपकिरण तेनाविलासेकरीने संसारना तापनोजेसमूह तेनोनाशकरेछे, एवो; वली एचंद्रमाकेवोछे ? जेतर्कविचार रूपीजे महादेव तेनामस्तकेरह्योथको उदयपाम्योछे, एवो; वली दीप्तजेनय तेरूपजेतारामंडल तेणेपरिवर्याथको फिरेछे,

एवो, जिनागमचन्द्र ते श्रीजिनशासन रूपियोजेचन्द्रमाते कोनेरुचिपणाने नउपनावे? अपितु सर्वनेउपजावेज ॥ ५ ॥

बौद्धानामृजुसूत्रतो मतमभूद्वेदांतिना संग्रहात्सांख्याना तत एव
नैगमनयाद् योगश्च वैशेषिकः॥शब्दब्रह्मविदोपि शब्दनयत स
र्वैर्नयैर्गुंफिता जैनी दृष्टिरितीह सारतरता प्रत्यक्षमुद्वीक्षते ॥६॥

अर्थ ॥ जैनाश्रनेकनयमांथी एकेकानयग्रहणकरीने एटले ऋजुसूत्रनयथी बौद्धनोमतप्रगट्यो, श्रनेसंग्रहनयथी वेदांतिकनो मतप्रगट्यो, तथासांख्यमतपण संग्रहनयथीजउपनो श्रनेनैगमनयथी योगमत श्रने वैशेषिकमत प्रगट्यो, शब्दनयथकी मीमांसकदर्शन उपनु, श्रनेजैनशासनतो सर्वनयेकरीने गुंफितछे, तेमाटेश्रा जिनशासनमां सारमासारपणु प्रत्यक्षपणे रुडीरीतेदेखीयेछेये ॥ ६ ॥

ऊष्मा नार्कमपाकरोति दहन नैव स्फुलिंगावली नाब्धिं सिंधुजल
प्लव सुरगिरिं ग्रावा नवाभ्यापतत् ॥ एवं सर्वनयैकनावगरिमस्था
न जिनेंद्रागमं तत्तद्दर्शनसंकथाशरचनारूपं न हंतुं क्षमा ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ उकलाटजे बाफ तेनोजेताप तेसूर्यनेजीतीशकेनही, श्रनेश्रग्निना कणियाते दावानलने जीतीनशके, तथासिंधुनदीनुजल तेनोजेवेग तेलवणसमुद्रने ठेलीनशके, पत्थरनाजेखड तेमेरुपर्वतने दाबीनशके, एमसर्वनयना एकताजावनी मोहोटाइनुस्थानक एहवु तीर्थंकरनुजेश्रागम तेहने तेपरदर्शनीश्रो हणवानेसमर्थनथी, शामाटेजे ए जैनतेसर्वदर्शनीछे, श्रनेतेदर्शनीयो जैननाएकेकश्रंशीछे ॥ ७ ॥

दुःसाध्यं परवादिना परमतक्षेपं विना स्व मत
तत्क्षेपे च कषायपंककलुष चेत समापद्यते ॥
सोयं निस्वनिधिग्रहव्यवसितो वेतालकोपक्रमो
नायं सर्वहितावहो जिनमते तत्त्वप्रसिध्यर्थिना ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ परदर्शनीजेटलाछे तेएकएकनामतने खंड्याविना पोतानामतने थापी शकानथी ए मतमतनोजेकदाग्रह तेनोप्रक्षेपकरता कषायरूपकादवेकरीने मनमलिनथायछे एकदाग्रहनो व्यापारतेतो दरिद्रीनाघरनोनिधान हरवाने वेतालगयो तेप्रायजाणवो एउपक्रम सर्वजिनमतनेविषे हितकारीनथी माटे श्रर्थीजीवने ए निनमत ते तत्त्वरूपे प्रसिद्धछे ॥८॥

वार्त्ताः संति सहस्रशः प्रतिमतं ज्ञानांशबंधक्रमाश्चेतरतासु ततः प्र
याति न तुमां लीनं जिनेंद्रागमे॥नोत्सर्पंति लताः कति प्रतिदिशं पुष्पैः
पवित्रा मधौ तान्योनेति रतिं रसालकलिकारक्तस्तु पुंस्कोकिलः ॥ए॥

अर्थ ॥ जेनोअनुक्रमज्ञाननेमात्रअंशेकरीनेबंधायोछे, एवीपरदर्शनीओनीवार्त्ताछे. तेवामतममत्व हजारोगमेवर्त्तेछे, पणतेवातोनेविषे माहारुंचित्तजातुंनथी. शामाटे- जेसिद्धांतोनेविषे माहारुंमनलीनछे. माटेचैत्रमासे दिशोदिशेजेफूल तेणेकरीने पवित्र एहवीजेलता तेकेटलीकविकस्वरथाय, फले, पणपुंस्कोकिलजे कोयल तेआंबानीमंजरी थीरक्तएवीथकी तेलताओनेविषेरतिनपामे, तेनीपरे महारुंचित्तपण सिद्धांतरूप आंबानीमंजरिये रक्तथयुंथकुं अन्यदर्शनरूप लताओमां जातुंनथी ॥ ए ॥

शब्दोवा मतिरर्थ एव वसु वा जातिः क्रिया वा गुणः शब्दार्थः किमि
ति स्थितिः प्रतिमतं संदेहशंकुर्यथा॥जैनेंद्रे तु मते न सा प्रतिपदं जा
त्यंतरार्थस्थितिः सामान्यं च विशेषमेव च यथा तात्पर्यमन्विच्छति॥१०॥

अर्थ ॥ आशब्दछे, किवा मतिछे केअर्थछे, केगुणछे, के वस्तुके० द्रव्यछे, केजातिछे के क्रियाछे? वलीएनो शब्दार्थकेमहशे? एवोसंदेहरूपि खीलो मतमतप्रत्येरह्योछे पण जिनमतमांनथी.तेपदपदप्रत्ये जात्यंतरअर्थनी स्थितिछे. माटे सामान्यअने विशेष जेवाप दार्थनो यथार्थनिश्चय तात्पर्यअर्थतेने नजेछे.माटे जिनमतमां संदेहरूपखीलोनथी॥१०॥

यत्रानर्पितमादधाति गुणतां मुख्यं तु वस्त्वर्पितं तात्पर्यानवलंबने
न तु नवेद्बोधः स्फुटं लौकिकः॥संपूर्णं त्ववन्नासते कृतधियां कृत्स्नाद्वि
वक्षाक्रमात् तां लोकोत्तरनंगपद्धतिपदं स्याद्वादमुद्रांस्तुमः ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ स्याद्वादरूपजैनमुद्रामां केवोगुणछे? के जेमांवस्तुने अनर्पणकरीछतां पण तेवस्तुगुणतानेप्राप्तथायछे; अनेवस्तुअर्पणकरीछतांते मुख्यतानावनेपामेछे, अने जेनातात्पर्यअर्थने अवलंबनेकरीने तोप्रगटपणे लौकिकबोधथायछे; अनेसंपूर्णबोधतो समग्रविवक्षाना अनुक्रमथकी महानिपुणबुद्धिवालाने प्रकाशथायछे; तेमाटेए लोकोत्तर नंगजालनुंठेकाणुं एवीजेस्याद्वादशैलीरूपमुद्रा तेनेअमेस्तवियेछैये ॥ ११ ॥

आत्मीयानुन्नवाश्रयार्थविषयोप्युच्चैर्यदीयक्रमो म्लेछानामिव संस्कृ
तं तनुधियामाश्चर्यमोहावहः ॥ व्युत्पत्तिप्रतिपत्तिहेतुविततस्याद्वा
दवाग्गुंफितं तं जैनागममाकलय्य न वयं व्याक्षेपन्नाज. क्वचित्॥१२॥

अर्थ ॥ तेजैनागमकेवुछे ? जेमां पोतोना आत्मानो अनुभवकरवाना आश्रयनो विषयछे, एवोउंचपणेकरीने जेनोक्रमछे एटलेपरिपाटीछे, अनेम्लेछनेजेम सत्क तत्रापा आश्चर्यकरनारी अनेमोहउपजावनारीछे तेनीपरे अल्पबुद्धिवालाने अव चोपामी मुक्तावयानुंस्थानकछे, माटेजैनागमतो व्युत्पत्तिनु निरूपण करनाराजे हेतुछे णेकरी विस्तीर्णएहवोजे स्याद्वादमार्गतेणेकरी रचेलु छे, तेनेपामीने महाराचित्तमा बीजुकोइपण व्याक्षेपपणु क्यारेपणथतुनथी ॥ १२ ॥

मूलं सर्ववचोगतस्य विदितं जैनेश्वरं शासनं तस्मादेव समुत्थितैर्नय
मतैस्तस्यैव यत्खंडनं ॥ एतत्किंचन कौशलं कलिमलछन्नात्मन स्वा
श्रितां शाखा छेतुमिवोद्यतस्य कटुकोदर्काय तर्कार्थिन ॥१३॥

अर्थ ॥ माटेसर्ववचनगतसमूहनुजेमूल एहवुएजिनशासनकह्युछे एजिनशासन थकीज प्रगट्या एहवाजे नयनपना मत तेवामतेकरीनेज कुछप्राणी तेज जिनआगमनु खंडनकरेछे तेपापिष्टआत्माओनो आत्मा पापरूपमेलेकरीढकाणोछे एवाकुछेनुजेकांइ किंचित्मात्र डाहापणपणुछे,तेजेमकोइकमूर्ख जेवृक्षनी डाले बेठोयको तेजडालकापवानेउ जमालथाय,तेथीकडवा विपाकपामे,तेमतेकुविचारवालाने आगलकर्मनांफल प्रगटशे १३॥

त्यक्त्वोन्मादं विभज्य वादरचनामाकर्ण्य कर्णामृत सिद्धातार्थरहस्य
वित्क्वलभतामन्यत्र शास्त्रे रति ॥ यस्या सर्वनया वसति न पुनर्व्य
स्तेषु तेष्वेव या मालायां मणयो लुठंति न पुनर्व्यस्तेषु तेष्वेव सा॥१४॥

अर्थ ॥ उन्मादतजीने,माहोमांहे झगडोतजीने,वली कानेअमृतरूप वाणीसांभळीने, सिद्धांतनाअर्थ रहस्यनोजे जाणपुरुष तेबीजाशास्त्रनेविषे रतिकेमपामे ? अर्थात्नजपामे जे जैनवाणिनेविषे सघलाएनय प्रवेशकरेछे, पणतेजूदाजूदामतवालाना मतमा सर्वनय नथी तेथीजेनवाणीकाइतेमारेहेतिनथी शामाटेजेतेसर्वे व्यग्रचित्तवालाछे माटेजैनमां सर्वे नयछे जेममालानेविषे सर्वमणकारमेछे,पणछूटामणकापड्याहोय तेनेमालानकहिये अनेएकमणके संभमणका समाणाएमपणनकहीए माटेतेमालासरखोजैनमतछे ॥ १४ ॥

अन्योन्यप्रतिपक्षभाववितथान् स्वस्वार्थसत्यान्नयानपेक्षाविषय
ग्रहे विभजते माध्यस्थमास्थाय य ॥स्याद्वादे सुपथे निवेश्य हरते
तेषा तु दिङ्मूढतां कुंदेंदुप्रतिम यशोविजयिनस्तस्यैव संवर्द्धते ॥१५॥

अर्थ ॥ [illegible] वैरभावेकरी जूदाजूदाओपोतपोतानाअर्थ तेनेसाचाकरता [illegible] विषयग्रहणकरी माध्यस्थपणानेस्वीकारी

नागमावानो विनागकरावीने, स्याद्वादरूपउत्तममार्गनेविषेलोकनुं चित्तस्थापनकरावी ने अने जे माध्यस्थपणुं ग्रहणकरीतेमनी दिग्मूढनानोनाशकरे. ते विजयवंतप्राणी कुंदनुं फुल तथाचंद्रमासरखो उज्वलोजेजश तेणेकरीवृद्धिवंतोथशे. अहीं कवियेपोतानुंनामस्मरणसूचव्युंछे ॥ १५ ॥ इतिश्रीजैनमतस्तुत्यधिकार एकोनविंशतिसमाप्तः ॥ ॥ इतिश्रीमहोपाध्याय श्रीयशोविजयगणिना विरचिताध्यात्मसारप्रकरणेपष्ठप्रबंधः ॥ अहा रमांअधिकारनाकाव्य १९५ तथा ओगणीसमांना १५ मळीने २१० काव्यछे.

शास्त्रोपदर्शितदिशा गलितासदग्रहकषायकलुषाणां ॥
प्रियमनुभवैकवेद्यं रहस्यमाविर्भवति किमपि ॥ १ ॥
प्रथमाभ्यासविलासा दाविर्भूयैव यत्क्षणाल्लीनं ॥ चं
चलतरुणीविभ्रमसमं सुनरखमनः कुरुते ॥ २ ॥

अर्थ ॥ शास्त्रेबतावीजेदशा तेणेकरीने गलीगइछे सारीनरसी असद्ग्रहरूपकषायनी कलुषताजेनी, जेने प्रियएहवोजे एकअनुभव तेथीजणातुं एवुंजेरहस्य ते कांइकप्रगटथायछे ॥ १ ॥ प्रथमअभ्यासरूपी विलासनायोगेकरीने जेप्राणीपूर्वोक्त कांइक रहस्यमां लीनथायछे अनेफरीचंचलपणेरहेछे. जेमचंचलस्त्री पोताना विलासनायोगेकरी कांइकसुखमां लीनथायछे अनेपछी जेवीनेतेवी चंचलरहेछे, तथाजेम कीडानेनमरी ज्यारेचटकोमरावेछे. त्यारेतेनाध्यानेकरीने तेतल्लीनथइजायछे अनेपछीजे वारेजमरीपोताना चटकानोउद्योगमुकीआपेछे, तेवारेतेसर्वभुलीजइ पोतानोमूलनो स्वभाव धारणकरेछे. तेनीपरे जाणीलेवुं ॥ २ ॥

सुविदितयोगैरिष्टं क्षिप्तं मूढं तथैव विक्षिप्तं॥एकाग्रं च निरुद्धं चे
तः पंचप्रकारमिति ॥३॥ विषयेषु कल्पितेषु च पुरःस्थितेषु च
निवेशितं रजसा॥सुखदुःखयुग्बहिर्मुखमाघातं क्षिप्तमिह चित्तं ॥४॥

अर्थ ॥ योगज्ञानिये पांचभेदे मनकह्युंछे. १ क्षिप्तमन २ मूढमन ३ तेमजविक्षिप्तमन ४ एकाग्रमन ५ निरुद्धमन. एपांचप्रकारमननाछे ॥ ३ ॥ तेमांक्षिप्तनुंलक्षणकहेछे. पोतानाचित्तनेसन्मुख कल्प्याजेविषय तेनेविषे रजोगुणेकरीने थाप्युं. सुखतथा दुःखयुक्त, अने बहिर्मुखथयलुंचित्त तेने क्षिप्तमनकह्युंछे ॥ ४ ॥

क्रोधादिभिर्नियमितविरुद्धकृत्येषु यत्तमो जाग्यात्कृत्याकृत्यविभा
गासंघतमेतन्मनोमूढं ॥ ५ ॥ सत्वोद्रेकापरिहृतदुःखनिदानेषु सु
खनिदानेषु ॥ शब्दादिषु प्रवृत्तं तदेव चित्तं तु विक्षिप्तं ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमा बहुलताये तमोगुणहोय, एटलेकोधसहित निरुद्धकामनेविषे जे तत्पर होय अने विवेकरहितपणे कृत्याकृत्यनी वहेंचणविना जे होय, तेनेमूढमनकहीये॥५॥ जेधैर्यनाबलथी दुःखनाकारणगणतुनथी, शब्दादिकविषयमां रूपरसादिकनाकारण जाणी कठोरपणेप्रवर्त्ते एवुंजेचित्ततेने क्षिप्तमनकहिये ॥ ६ ॥

अद्वेषादिगुणवता नित्य खेदादिपट्कपरिहारात्॥मदगप्रत्ययस गतमेकाग्र चित्तमाम्नातं ॥ ७ ॥ उपरतविकल्पवृत्तिकमवग्रहादि क्रमच्युत शुद्ध ॥ आत्मारामसुनीना नवति न रुद्ध सदा चेत ॥८॥

अर्थ ॥ रागद्वेषादिकेरहित जेगुणवतपुरुषछे अनेसदा खेदादिकनोपरिहारकरना रजेपुरुष छे, ते तुमन सर्वेवरागद्वेषटालवाथी सर्वकार्यमा सरखुमल्युछे, तेनेएकाग्रमनक हिये ॥ ७ ॥ जेनीविकल्पवृत्तिशातथईछे, वलीअवग्रहादिकमथी पाछुंओसर्युछे कष्ट रहीयह्युशुद्धमन, तेआत्मारामसुनिनुजेअत करणहोय, तेनेनिरुद्धमनकहिये ॥ ८ ॥

न समाधावुपयोग तिस्रश्चेतोदशा इह लनंते॥सत्वोत्कर्षात् स्थै र्याच्चे समाधिसुखातिशयात् ॥ ९ ॥ योगारम्भस्तु नवेद्विक्षिप्ते मनसि जातसानंदे॥क्षिप्ते मूढे चास्मिन् व्युत्थानं नवति नियमेन ॥१०॥

अर्थ ॥ चित्तनीत्रणदशा तेआसमाधिमाकाइ उपयोग पामतीनथी, तेवारे पणतेमा वेदशातो सत्वोत्कर्षथकी तथास्थिरताथकी अनेसमाधिसुखना अतिशयथी उपयोग पामेछे ॥ ९ ॥ कदाचितुविक्षिप्तचित्तनेविषे योगसमाधिमा आनंदितहोय तोयोगारंभ सनवे, क्षिप्तमूढमनेतो योगनोविशेष विषयरूप उदयहोय ॥ १० ॥

विषयकषायनिवृत्त योगेषु च सचरिष्णुविविधेषु ॥ गृहखेलद्बा लोपममपि चलमिष्ट मनोऽन्यासे॥११॥वचनानुष्ठानगत याताया तं च सातिचारमपि॥चेतोऽन्यासदशायां गजांकुशन्यायतोऽदुष्ट ॥१२॥

अर्थ ॥ विविधप्रकारना योगनेविषे फरतु अनेविषयकषाये नखु एवुघरमारमता बालकनीपेरे चपलजेमनतेअन्यासेकरी रुडुजाणवु ॥ ११ ॥ वचनानुष्ठानमारह्यु एवु जातुआवतु अतिचारसहित मनहोयतोपण जोमनअन्यासदशामा वर्त्ततु होयतो, जेम हस्तिते अंकुशेकरीरुकोयाय तेदृष्टाते तेमनपणरुडुंथाय ॥ १२ ॥

ज्ञानविचारान्निमुखे यथा यथा नवति किमपि सानंद॥अर्थं प्रलोभ्य बाह्यैरनुगृह्णीयात्तथाचेत ॥ १३ ॥ अनिरूपजिनप्रतिमा विशिष्टपद वाक्यवर्णरचना च॥पुरुषविशेषादिकमप्यत एवालंबन ब्रुवते॥१४॥

अर्थ ॥ ज्ञानविचारणानासुखथी जेमकांइक आनंदथाय एहवेबाह्यअर्थेकरी लोजावीने तेमांचित्तनेथोजावीराखीने ज्ञाननाविचारने सन्मुखकरीये ॥ १३ ॥ रुमीजिनप्रतिमा. रुडांसिद्धांतनांपद, वचन अक्षर, ते पुरुषविशेषजे बहुश्रुतगीतार्थमुनि होयतेहने एत्रणआलंबन प्रजुयेकह्यांछे ॥ १४ ॥

आलंबनैः प्रशस्तैः प्रायोजावः प्रशस्त एव यतः॥इति सालंबनयोगी मनः शुजालंबनं दध्यात् ॥१५॥ सालंबनं क्षणमपि क्षणमपि कुर्यान्मनोनिरालंबं ॥ इत्यनुजवपरिपाकादाकालं स्यान्निरालंबः ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ रुडेआलंबनेकरीने प्रायेरूडोजावहोय. माटेसालंबनयोगी जे रुमाजीवहोय तेणेशुद्धआलंबन धरवुं ॥ १५ ॥ अनेकक्षणेकमां सालंबनमनकरे, अनेकक्षणेकमां निरालंबनमनकरे, एरीतेअनुजवनापरिपाकथी तेप्राणीसदाय निरालंबनथाय ॥ १६ ॥

आलंब्यैकपदार्थं यदा न किंचिद्विचिंतयेदन्यत् ॥ अनुपनतेंधनवह्निवडपशांतं स्यात्तदा चेतः ॥ १७ ॥ शोकमदमदनमत्सरकलहकदाग्रहविषादवैराणि॥क्षीयंते शांतहृदामनुजव एवात्र साक्षात्तः ॥१८॥

अर्थ ॥ पठीएकपदार्थनेअवलंबीने जेवारेबीजुंकांइ चिंतवेनही, तेवारे जेमकाष्टविनानो अग्निउपशमेछे, तेनीपरेउपशांतपणुंपामे ॥ १७ ॥ माटेशोक, गर्व, काम, मत्सर, क्लेश, हठ, विषाद अनेवैर एटलावानां शमतावंतप्राणीनेनहोय, एवातनो साक्षीइहां अनुजवछे ॥ १८ ॥

शांते मनसि ज्योतिः प्रकाशते शांतमात्मनः सहजं॥जस्मीजवत्यविद्या मोहध्वांतं विलयमेति ॥ १९ ॥ बाह्यात्मनोधिकारः शांतहृदामंतरात्मनां न स्यात्॥परमात्मानुध्येयः सन्निहितो ध्यानतो जवति ॥२०॥

अर्थ ॥ शांतमननेविषे रहेताथका आत्मानुंशांत,स्वाजाविक, सहजानंदरूप जे तेज छेते प्रगटथाय, तेवारे जेकुविद्याछेते राखथइजाय; अनेमोहांधकार नाशपामे ॥ १९ ॥ बाह्यथकि मननोजेअधिकार तेशांतपरिणामि अंतरआत्मावाला प्राणीने नहोय, केमकेतेने ध्येयरूपी जेपरमात्मा तेध्यानथी ढुकडोछे. ॥ २० ॥

कायादिर्बहिरात्मा तदधिष्ठानांतरात्मतामेति ॥ गतनिःशेषोपाधिः परमात्मा कीर्त्तितस्तज्ज्ञैः ॥ २१ ॥ विषयकषायावेशः तत्त्वाश्रद्धा गुणेषु च द्वेषः॥आत्माज्ञानं च यदा बाह्यात्मा स्यात्तदा व्यक्तः ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ कायाअधिष्ठित जेबहिरात्मा तेनुंअधिष्ठानजे अंतरात्माछे, तेप्रतेपामे

अनेगश्छेसमस्त उपाधिजेने तेने ज्ञानियेपरमात्मा कह्योछे ॥ २१ ॥ जेनेविषयत्रषा यनोआवेश होय, तथा तत्वनीश्रद्धाहोय अनेगुणीउपर द्वेषहोय, अनेजेने आत्मानु श्रोलखाणनथी, तेनेप्रगटपणे वहिरात्मा कहिये ॥ २२ ॥

तत्वश्रद्धाज्ञानं महाव्रतान्यप्रमादपरता च ॥ मोहजयश्च यदा स्यात् तदातरात्मा नवेद्व्यक्त ॥ २३ ॥ ज्ञानं केवलसंज्ञ योगनिरोध समग्र कर्म्महति ॥ सिद्धिनिवासश्च यदा परमात्मा स्यात्तदा व्यक्त ॥२४॥

अर्थ ॥ जेनेतत्वनीश्रद्धाहोय, ज्ञानपणुहोय, महाव्रतीपणुहोय, तथाअप्रमादीपणु होय, एमकरता जेवारेमोहनेजीते, तेवारेतेनेप्रगटपणे अतरात्माकहिये ॥ २३ ॥ नि हाकेवलज्ञानहोय अने मनवचनकायाना योगनिरोधी आठकर्मक्षयकरी सिद्धमावसे तेवारे तेनेप्रगटपणे परमात्माकहिये ॥ २४ ॥

आत्मानतो गुणवृत्ति विविच्य य प्रतिपदं विजानाति॥कुशलानुवध युक्त प्राप्नोति ब्रह्मभूयमसौ ॥ २५ ॥ ब्रह्मस्थो ब्रह्मज्ञो ब्रह्म प्राप्नो ति तत्र किंचित्र ॥ ब्रह्मविदां वचसापि ब्रह्मविलासाननुनवाम ॥२६॥

अर्थ ॥ जेप्राणीआत्मानेअने गुणवृत्तिने माहोमाहेवेहेंचणकरीने ठेकाणेनोने तेप्राणीकुशलानुवधि पुण्यसहित मोक्षपदनेपामे ॥ २५ ॥ जेब्रह्ममारह्यो ब्रह्मनोनाण तेब्रह्मनेपामे, एमाशोअचवोछे ? माटेब्रह्मवेत्तापुरुपजेज्ञानी तेनावचनेकरी ब्रह्मजेमोक्ष विलासीसुख, तेने अमे अनुनवियेछिये ॥ २६ ॥

ब्रह्माध्ययनेषु मत ब्रह्माष्टादशसहस्रपदनाव ॥ येनाप्त तत् पूर्ण योगी ब्रह्मण परम ॥ २७ ॥ ध्येयोय सेव्योयं कार्या नक्ति सुकृत धिया सैव ॥ अस्मिन्गुरुत्वबुध्या सुतर संसारसिंधुरपि ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ ब्रह्मअध्ययननेविषे कह्युछेके, अढारहजार शिलागरथेकरी जेब्रह्मचर्यने पाम्यु, तेनेपूर्णयोगीअनेपरम ब्रह्मकहिये ॥ २७ ॥ माटेएनेजध्यावो, एनीजपुण्यरुपे नक्तिकरवी,यनेएनेविषे मोटाइपणानी बुद्धिधरीये,तो ससारसमुद्रतरवोसहेलछे॥२८॥

अवलवेछायोग पूर्णाचारासहिष्णवश्च वय ॥ नक्त्या परममुनी ना तदीयपदवीमनुसराम ॥२९॥ अल्पापि यत्र यतना निर्दंना सा शुनानुबंधकरी ॥ अज्ञानविषय यत्तद्विवेचन चात्मनावाना ॥३०॥

अर्थ ॥ इछायोगतो अमारेनिर्मलछे, पूरोआचारपणअमे पालीशक्तानथी, पणमोटा

मुनिनी नक्तिएकरीने तेहनीपदवीने पामशुं ॥२ए॥ थोडीपणजयणा कपटरहितयशे, तोतेशुनअनुबंधकारीछे. पणआत्मानावनीजेवेहेंचण तेअज्ञाननेटालनारछे ॥ ३० ॥

सिद्धांततदंगानां शास्त्राणां यः सुपरिचयः शक्त्या ॥ परमालंवनभूतो दर्शनपक्षोयमस्माकं ॥ ३१ ॥ विधिकथनं विधिरागो विधिमार्गस्थापनं विधेरिछा॥अविधिनिषेधश्चेति प्रवचनन्नक्तिः प्रसिद्धांतः॥३२

अर्थ ॥ सिद्धांतनाअमेपक्षीछीये, तेनाअंगजेशास्त्रतेनो शक्तिप्रमाणे अमारेपरिचय छे, माटेपरमआलंवननूत एवोजेंसमकितपक्ष तेअमारेरूडोछे ॥ ३१ ॥ शुद्धनापवुं. विधिशास्त्रनोरागकरवो, शुद्धमार्गनुं स्थापनकरवुं,विधिमार्गनीइछाराखवी, अविधिटालवी अनेसिद्धांतनी नक्तिकरवी एअमारोसिद्धांतछे ॥ ३२ ॥

अध्यात्मन्नावनोज्वलचेतोवृत्त्योचितं हितं ॥ पूर्णक्रियाभिलापश्चेतिद्वयमात्मशुद्धिकरः ॥३३॥ द्वयमिह शुन्नानुबंधः शक्यारंभश्च शुद्धपक्षश्च ॥ अहितो विपर्ययः पुनरित्यनुन्नवसंगतः पंथाः ॥३४॥

अर्थ ॥ अध्यात्मनी नावनायेकरी उज्वलएहवीजेचित्तवृत्तितेणेकरीने उचितकार्य करवुं, तथाहितकारी करणीकरवी, पूर्णक्रियाना विलासनोअभिलापधरवो. एअमारे आत्मानी शुद्धिकारकछे. एटलेएकअंत करणनी उज्वलताजे शुद्धिकरवीते, अनेवीजो आद्यथीमांडीअंतपर्यंत पूर्णशुन्नक्रियाकरवानी अभिलापा एवेवानांआत्मानी शुद्धिकरनारांछे ॥ ३३ ॥ तथाएककरवायोग्यआरंनते शक्यआरंनअने वीजोशुद्धपक्ष एवेवानांशुन्नानुवंधीछे. एवेजेनेप्रारंनकालेसमर्थछे, एमांजेनी शक्तिउद्यमअने शुद्धप्ररूपणछे तेनेतोहितकारीमाने अने एथीविपर्यासजेछे, तेने अहितकारीमाने. एवीरीते अनुनवज्ञानने मलवानो एपंथछे एथीमिथ्यात्वटले ॥ ३४ ॥

ये त्वनुन्नवाविनिश्चितमार्गाश्चारित्रपरिणतिभ्रष्टाः ॥ बाह्यक्रियया चरणाभिमानिनो ज्ञानिनोपि न ते॥३५॥लोकेषु बहिर्बुद्धिषु विगोपकानां बहिःक्रियासु रतिः॥श्रद्धां विना नचेतःस्थतां प्रमाणं यतोनिश्चितं॥३६

अर्थ ॥ जेने अनुनवनो निश्चयनथी, चारित्रथी जे भ्रष्टछे, तथावाह्य क्रियानी जेनी आचरणाछे, अने लोकमांउत्कृष्टाईपद आचारनोगर्वधरेछे, तेनेज्ञानीनकहिये ॥ ३५ ॥ वाह्यदृष्टिवाला मूर्खलोक तेने वाह्यक्रियादेखतांमांप्रीतिधरे, तेनो जेमकोइदवापीयो वाह्यक्रियाएानो व्यापारकरनोइम्हिते तेने [illegible] धद्धाविनानुं करवुंते प्रमाणनथी ॥ ३६ ॥

बालः पश्यति लिंगं मध्यमबुद्धिर्विचारयति वृत्तं ॥ आगमतत्वं तु बुध परीक्षते सर्वयत्नेन ॥ ३७ ॥ निंद्यो न कोपि लोके पापिष्ठेष्वपि भव स्थितिश्चिंत्या ॥ पूजा गुणगरिमाढ्या धार्यो रागो गुणलवेपि ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ माटेजेबालजीवहोयते वेषजोइने परीक्षाकरे. तथा मध्यमजीवते आचरण जोइपरीक्षाकरे, अनेपंडिततोज्ञानतत्त्वदेखी परीक्षाकरे ॥ ३७ ॥ लोकनेविषे कोइनी निंदाकरियेनहीं, पापीनेविषे महोटी संसारनी स्थिति चिंतवियें, जेगुणयुक्तपुरुषहोय तेनीपूजाकरीयें, वडाइकरीयें, तथाजेअल्पगुणीहोय तेनाउपर पण रागधरीयें ॥३८॥

निश्चित्यागमतत्त्वं तस्मादुत्सृज्य लोकसंज्ञां च ॥ श्रद्धाविवेकसारं य तितव्यं योगिना नित्यं ॥३९॥ ग्राह्यं हितमपि बालादालापैर्दुर्जन स्य न द्वेष्यं ॥ सत्या वाचः पराशापाशा इव संगमा ज्ञेया ॥ ४० ॥

अर्थ ॥ तथा आगमनोनिश्चयकरी लोकसंज्ञाछोडीने विवेकनोसारजेश्रद्धातेनेविषे योगीश्वरे सदाउद्यमकरवो ॥ ३९ ॥ बालकथकीपण आलापेकरीने हितनीवात लेवी, दुर्जनउपर द्वेषनकरवो, सत्यबोलवु, पारकीआशानापाससरिखासंगमजाणवा ॥४०॥

स्तुत्या स्मयो न कार्यः कोपोपि च निंदया जनैः कृतया॥ सेव्या धर्माचा र्यास्तत्त्वं जिज्ञासनीयं च ॥ ४१ ॥ शौचं स्थैर्यमदंभो वैराग्यं चात्मनि ग्रहः कार्यः ॥ दृश्या भवगतदोषाश्चिंत्यं देहादिवैरूप्यं ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ कोइनवखाणेतो गर्वनकरवो, कोइनिंदेतो कोपनकरवो, धर्माचार्यनी सेवा करवी, तत्त्वनेजाणवानी इच्छाराखवी ॥ ४१ ॥ पवित्रपणु स्थिरतापणु अने निष्कपट पणु आदरवु तथावैरागधरवो अनेमननेवश्यकरीराखवु, तथासंसारनादोषदेखवा, वली देहनेविनाशीपणे चिंतववो ॥ ४२ ॥

भक्तिर्भगवति धार्या सेव्यो देशः सदा विविक्तश्च॥ स्थातव्यं सम्यक्त्वे विश्वास्यो न प्रमादरिपु ॥ ४३ ॥ ध्येयात्मबोधनिष्ठा सर्वत्रैवागम पुरस्कार्यः ॥ त्यक्तव्याः कुविकल्पाः स्थेयं वृद्धानुवृत्त्या च ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ प्रभुउपरभक्तिधरवी, पशुपंडकादिदोषरहित देशजेस्थानक तेसेववु सम कितदिशामांस्थिररहेवु, प्रमादरूपशत्रुनोविश्वासनकरवो ॥ ४३ ॥ ध्येयस्वरूपने आ त्मबोध तेमांरहेवु, सर्वक्षेत्रे आगमसिद्धांतने आगलकरवु, कुविकल्पछांडवा जेमां गंरुचाले तेमांचालवु ॥ ४४ ॥

साक्षात्कार्यंतत्त्वं चिद्रूपानंदमेदुरैर्भाव्यं ॥ हितका
री ज्ञानवतामनुभववेद्यः प्रकारोऽयं ॥ ४५ ॥

अर्थ ॥ तत्त्वने प्रगटकरवुं, ज्ञानरूपआनंदभरेरहेवुं, ज्ञानवंतने हितकारीथइने रहेवुं, एअनुभववंतजीवोना प्रकारछे ॥ ४५ ॥ इतिअनुभवाधिकारः विंशतिमसमाप्तः ॥ २० ॥

येषां कैरवकुंदवृंदशशभृत्कर्पूरशुभ्रागुणामालिन्यं व्यपनीय चे
तसि नृणां वैशद्यमातन्वते ॥ संतःसंतु मयि प्रसन्नमनसस्ते केपि
गौणीकृतः स्वार्थामुख्यपरोपकारविधयोत्तुंखलैःकिंखलैः ॥ १ ॥

अर्थ ॥ चंद्रविकासीकमलनाफूलनोसमूह, चंद्रमा, कपूर, एसरपाउज्वला जेना गुणछे. तथाजे मनुष्यनाचित्तनेविषे मलिनताटालीने निर्मलनाउज्वलताने वि स्तारेछे; एवाजेसज्जन पुरुषोते, माहाराउपर प्रसन्नमने सदैवरहेजो! जेणेपोतानोअर्थ गौणकर्योछे, अनजेनीमुख्यपणे परउपकारनी बुद्धिछे, एवासज्जन जो महाराउप रप्रसन्नछे तो, उन्मत्तएवाखलजे दुर्जनलोक तेनी अप्रसन्नताये शुंथवानुंछे ? ॥ १ ॥

ग्रंथार्थान् प्रगुणीकरोति सुकविर्यत्नेन तेषां प्रथामातन्वंति कृपाक
टाक्षलहरीलावण्यतः सज्जनाः ॥ माकंदद्रुममंजरीं वितनुते चित्रां म
धुश्रीस्ततः सौभाग्यं प्रथयंति पंचमचमत्कारेण पुंस्कोकिलाः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ रूडाजेकविछे, तेअर्थानुपत्तिए नवाग्रंथरचे; पणकृपानजरनीलेहरी तेनुंवर एवाजे सज्जन तेग्रंथनेवखाणीने विस्तारकरेछे, तेउपरदृष्टांतकहेछे; जेमवसंतलक्ष्मी आंबानीमंजरीना मनोहरपणानेप्रगटकरेछे, पणपोताना पंचम रागनागचमत्कारेकरी एटलेरागनोटहुको तेणेकरीनेकोयल मंजरीनुं सोभाग्यपणुंजगमांविस्तारेछे ॥ २ ॥

दोषोल्लेखविषः खलाननबिलादुत्थाय कोपाज्ज्वलन् जिव्हाहिर्ननु
किं गुणान्नगुणिनां वासक्षयं प्रापयेत् ॥ तस्माच्चेत्प्रबलप्रभावभवनं
दिव्योषधी सन्निधौ शास्त्रार्थप्रतिपत्तिदां गुरुहृदां कारुण्यपुण्यप्रथा॥३॥

अर्थ ॥ दोषना विस्ताररूपविषेसहित एहवुं खलप्राणीना मुखरूपजे सर्पनुंघर ते थीउठीने कोपेबलतोथको एवोदुर्जननीजीभरूपजे सर्प जेगुणिनागुणने ननुके० नि श्चेथी क्षयपणाने नपमाडेशुं ? अपितुपमाडेज. तेमाटे महाप्रभावनुंघर एहवोजे शास्त्र नोअर्थ, तेनीप्राप्तिनाजाण जेसज्जन तेनीजेकरुणातेपुण्यवार्त्तारूपनीबुटी, एटलेजडीते दिव्यऔषधिकहिये, तेनेपासेरहेतायका तेने केरचटेनहीं ॥ ३ ॥

उत्तानार्थगिरां स्वतोऽवगमान्नि सारता मेनिरे गंभीरार्थसमर्थने वत खला काठिण्यदोषं दघु ॥ तत्कोनाम गुणोस्तु कश्च सुकवि किका व्यमित्यादिका स्थित्युच्छेदमति दरति नियता दृष्टा व्यवस्था सता ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ दुर्जनमूर्खनीरीतिओ तोजेवारे पोतानीमेळे पदवाचता अर्थसुझे एवाश्र टपार्थने सुगमपदजो अमेजोमीये तोखलमाणसपमकहेशेजे, काइआग्रंथमा सारनथी, एममाने वलीजोअमे गंभीरअर्थसहित पदवाधीएतो, खलमाणस कहशेके, कठण दयाष्याने, एनोशुअर्थकरिये? एतोमुगानीपारसीछे एवेग्रयेकोइने गुणनथाय, जे आ गलबुद्धिविचारे एवाआजेकोणरुकाकविछे? वलीसर्वनेजोगपडे एवास्याकाव्यछे? एवुदु र्जनपोतेमाटेपग्रयमर्यादानी स्थितिनेउच्छेद करवानीमतिछे, तेनेजेटाले, कविनागुणने जाणे, एवाजेसज्जनपुरुष तेनीव्यवस्था रूमीदीठी ॥ ४ ॥

अध्यात्मामृतवर्षिणीमपि कथामापीय संत सुखं गाहते विषमुग्नि रनि तु खला वैषम्यमेतत्कुत ॥ नेदं चाद्भुतमिन्दुदीधितिपिबा पीता अकोरा ध्रुवं कि न स्युर्व्रत चक्रवाकतरुणास्त्वत्यतखेदातुरा ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अध्यात्मरूप अमृतवृष्टि एवीवार्त्ता, तेनुपानकरीने सज्जनपुरुषसुखमानेछे अनेजेखलछोकछे, तेएनीवाणीने विषमपदकहीने विषरूपप्रगटकरेछे, एमा शुआश्चर्य छे? तेउपरदृष्टान्तरहेछे जुओचन्द्रकिरणनादर्शनथी अमृतपीने चकोरघणुरीझपामेछे, तोशुचन्द्रदर्पीनेचक्वो, चक्वीघणोखेदनथीपामता? अपितुपामेजछे ॥ ५ ॥

किंचित्साम्यमवेक्ष्य ये विदधते काचेन्द्रनीलाभिदा तेषा न प्रमदावदा तनुधिया गूढा कवीना कृति ॥ ये जानति विशेषमप्यविषमे रेखोपरेखांशतो वस्तुन्यस्तु मतामित कृतधिया तेषा महानुत्सव ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमकाइक सरखापणु देखीने काचमा अनेइन्द्रनीलमणिमा अभेदपणाने एवपणुजाणे, तेवाअल्पबुद्धिवालाने मोटाकविनि गूढअर्थनीरचना तेहर्षनपणीनथाय ने जाणीअविषमवस्तुनेविषे एकरेखा, उपरेखा, अर्धरेखाइत्यादिक अशोथकी वस्तुनेविशे षपरखेजाणेछे, एवाकृतबुद्धिवालामज्जनने पग्रथनाजेनारछे, तेमहाआनन्दरूपछे ॥ ६ ॥

पूर्णा यात्मपदार्थमार्थघटना चेतश्चमत्कारिणी मोदमन्नदृशा जने तनुधिया नो पंक्तिनामिव ॥ काकुल्याकुलकामगर्भगहनप्रोद्दाम वाक्चातुरी कामिन्या प्रमदे प्रमोदयति न ग्राम्यान विदग्धानिवा

अर्थ ॥ जेमांपूर्णअध्यात्मपदार्थ तेसहितघटनाछे, पण तेजेनीइगाअज्ञानेकरी ने अवगणीछे, एवाअल्पबुद्धिवालानां चित्तमांतोजेरीते पंडितलोकआवाग्रंथथीरीज पामे तेरीननोचमत्कारनउपजावे. तेहनोदृष्टांत. जेनकामेव्यापीथकी अंतरंगमां विषयसुखने इच्छनीथकी, तथा बाह्यथी भयशोकधरतीथकी, पुरुषनेवल्लभ, हुंरूपवती एमगर्व करीथकी. स्त्रीवचननीचतुराइ करनार. एवीजे चतुरस्त्रीहोयतेपण गामनी आभूलने रीझवीनशके. पणपंडितनेतोआनंदपमाडे तेनीपेरेजाणवुं ॥ ७ ॥

स्नात्वा सिद्धांतकुंडे विधुकरविशदाध्यात्मपानीयपूरैस्तापं
संसारदुःखं कलिकलुषमलं लोभतृष्णां च हित्वा॥जाता ये
शुद्धरूपाः शमदमशुचिताचंदनालिप्तगात्राः शीलालंका
रसाराः सकलगुणनिधीन्सज्जनांस्तान्नमामः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ सिद्धांतरूपकुंडमां चंद्रसरखानिर्मल अध्यात्मरूपपाणीनापूरमांस्नानकरीने. भवदुःखरूपजेताप अने पापरूपजेमेलाप तथालोभ, ने तृष्णानेछांडीने, यथाशुद्धरूपे करी वलीसमताइंद्रियदमनजे पवित्रतेरूपचंदनेकरी शरीरविलेपितछेजेनुं, वलीशी लरूपघरणेकरीशोभता. सर्वगुणनानिधानएवाजे सज्जनतेने अमे नमिये छैये. ॥ ८ ॥

पाथोदः पद्यबंधे विपुलरसभरं वर्षति ग्रंथकर्त्ता प्रेम्णां
पूरैस्तु चेतःसर इह सुहृदां लाव्यते वेगवद्भिः ॥ त्रुट्यंति
स्वांतबंधाः पुनरसमगुणद्वेषिणां दुर्जनानां चित्रं भावज्ञ
नेत्रात् प्रणयरसवशान्निःसरत्यश्रुनीरं ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ जेग्रंथकर्त्ता मेघसरखाछे. तेपद्यबंधेकरीने, बहुरसभरे, वरसनारका तेथी प्रेमरूपपूरते सज्जननाचित्तरूप सरोवरमां वेगेकरीनेभरायछे, वलीअसाधारणगुणना द्वेषीजे दुर्जन. तेनातोअंतःकरणना बंधतुटेछे. अने एवाविचित्रकारीजेग्रंथ तेनाभाव नाजाणजेपुरुषछे तेविनयेप्रणीत रसेउछलाछे, तेनानेत्रथी हर्षरूपआंसुंझरेछे ॥ ९ ॥

उद्दामग्रंथभावप्रथनभवयशःसंचयः सत्कवीनां क्षीरा
ब्धिर्मथ्यते यः सहृदयविबुधैर्मंदरेणा वर्णनेन ॥ एतद्धिंडी
रपिंडीभवति विधुरुचेर्मंडलं विद्रुपमन्तास्तागः केवाम
शैवालदय इह दधते वीचिविक्षोभलीलां ॥ १० ॥

अर्थ ॥ रत्नाकविनी उद्दामके०मोटएहवीजे ग्रं... ...उपनो

जेयशनोसमूहतेरूप क्षीरसमुद्र तेसज्जनपक्तिते वर्णवरूपि मेरूएकरीने मथ्यो तेथी प्रगटथोछे फीण तेनोउज्वलो चन्द्रमाथयो, वलीतेनेवलोवताजे छाटाउड्या तेनातारा मडलथया, तथा कैलासादिक पर्वतथया एरीतेग्रथनोजश लीलाएकरी पसर्योा॥१०॥

काव्यं दृष्ट्वा कवीना हृतममृत मिति स्व सदा पानशक्ती खेदं
धत्ते तु मूर्ध्नी मृडुतरहृदय सज्जनो व्याधुतेन ॥ ज्ञात्वा सर्वो
पजोग्यं प्रसृमरथ तत्कीर्त्तिपीयुषपूरं नित्यं रक्षापि
धाना नियतमतितरा मोदते च स्मितेन ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ कविनाकाव्यदेखीने अमृतहरायु, एमविचारीने देवताओ सदाअमृतपीवानी शक्ताधरतायका खेदधरेछे शामाटेजे मृडुसुकोमलछे हृदयजेनु, एवाजे सज्जन तेमस्तकधूणावीकरीने जेसर्वनेउपजोग्यपणे पसरतुएवु ते कविनीकीर्त्तिरूप अमृतनुपूर तथा जेनेनिरतर रक्षारूप ढाकणुंअत्यतपणे दीधुछे तेनेजाणीने देखीने हसीने हर्षपामेछे ॥ ११॥

निष्पाद्य श्लोककुंभ निपुणनयमृदा कुम्भकारा कवीशा
दार्ढ्यं चारोप्यतस्मिन्न किमपि परिचयात्सून्यराक्षर्कता
स॥पर्कं कुर्वति वाढं गुणहरणमिति प्रज्वलद्दोपदृष्टि ज्वा
लामालाकराले खलजनवचन ज्वालजिव्हे निवेश्य॥१२॥

अर्थ ॥ रूडानयरूपमाटीरूके कवीश्वररूपिजे कुम्भकारते श्लोकरूपघडो निपजावे पछीजेमकुम्भारतेघडने परिचयथी दृढपणुं आपे तेमज श्लोकघडने परिचय विचारीने पदअक्षर आघापाछाहोय तेनेमसारे एरीते तडकामूकवा पछीपक्तिनेनेमेंरयाडी परिपक्व करे, तेजाणे नीमाडोदेयाछे द्वषेदुर्जनजाणेने एवका ते, तेथीमाहरा गुणहरणथशे, एमजलनोयको पक्तिनीजोडेली कमामा दोषरूप दानी दृष्टिरूप आगमनीज्वालानी श्रेणि तेणेकरी विकरालएवीपोतानी नजाररूप अग्नि वलीतेदुर्जननाजेवचन तेजाणियेनिंदारूप अग्निनी ज्वाला तेणेकरी घडतेने मूकीनेपाकोकरेछे, अनेनीमाडानीराखमा घटमूखपेमायछे ॥ १२ ॥

ऋजुत्वादारमोघ स्वविजनवचनं दुर्जनस्याग्नियन्त्राना
नाडव्यप्रयोगात्समुपचितगुणो मथता याति सद्य ॥

ंतः पित्वा यज्वचेदंधति हृदि मुदं घूर्णयंत्यक्षियुग्मं स्वैरं
हर्षप्रकर्षादपि च विदधते नृत्यगानप्रबंधं ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ शेलडीअने द्राखनारसनासमूह सरखुंकविनुंवचनछे; पणदुर्जनरूपी अग्नि-तुजे यंत्रछे तेमध्येनानाप्रकारना उत्पनायोगथकी रुडीरीते गुणपुष्टिने पामतुं एहवुं-कविनुंजेवचनते. नाजा मदिरापणानेपामेछे; तेमदिरानेहर्षेकरी सज्जनपुरुषपानकरीने हृदयमांहर्षधरेछे; तेथीतेओंखोघुर्णायमानथायछे; स्वइच्छाये हर्षनाकल्लोलथी पणश्लोक-नोजावार्थपामीने नाचेछे; गायछे ॥ १३ ॥

नव्योस्माकं प्रबंधोप्यनणुगुणभृतां सज्जनानां प्रजावा
द्विख्यातःस्यादिति सुहितकरणविधौ प्रार्थनीया न किंनः ॥
निष्णाताश्च स्वतस्ते रविरुचयइवांभोरुहाणां गुणाना
मुल्लासे पेक्षणीया न खलु पर रुचा कापि तेषांस्वजावः ॥१४॥

अर्थ ॥ अमारोग्रंथनवोछे. तोपणमहागुणवंतजे सज्जन तेनाप्रजावथकी विख्यात थजो ! एरीतेरुडाहितनेअर्थे अमारे एसज्जनने प्रार्थनाकरवायोग्यनथीशुं ? अपि-तुवेज जेम कमलनागुणने उल्लासकरवाने सूर्यनांकिरणछे, एम पोतायकीजे प्रवीणछे, एवातेसज्जननाजे स्वजाव तेक्यांयेपररुचिजणि निश्चेजवेखवायोग्यनथी ॥ १४ ॥

यत्कीर्त्तिस्फूर्त्तिगानावहितसुरवधूवृंदकोलाहलेन प्रभु
ध्यस्वर्गसेतोः पतितजलजरैः क्षालितः शैत्यमेति ॥
अश्रांतभ्रांतकांतग्रहगणकिरणैस्तापवान् स्वर्णशैलो भ्रा
जंते ते मुनींद्रा नयविजयबुधाः सज्जनव्रातधुर्याः ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेपोतानागुरुनो वर्णवकरेछे. जेनीपसरलीजेकीर्त्ति तेनेगावाने सावधान, एटलेस्वर्गमां देवतानी अप्सराओजेछे तेथीनयविजयजीना गुणगायछे, तेनागीतश ब्दना कोलाहलेकरीने क्षोजनापामी एवीजेस्वर्गनदी तेनीपाजजांगी,तेथीपड्युं जेजल तेनासमूहेकरी पखाल्योजेमेरुपर्वत, तेणेकरीमेरुपर्वतपण शीतलतानेपाम्योछे. नहितो अहर्निश प्रदक्षणायेजमताजे, ग्रहमंडल तेनाकिरणेकरी तापवंतमेलहतो. तेहमणाशी-तलथयोथको शोजेछे. एवातेमुनींद्र श्रीनयविजयनामा पंडितजे सज्जन पुरुषोनासमू-हमां वडेराहता ॥ १५ ॥

चक्रे प्रकरणमेतत्तत्पदसेवापरोयशोविजयः ॥
अध्यात्मधृतरुचीना मिदमानंदावहं जयतु ॥

अर्थ ॥ तेनाचरणना सेवकउपाध्यायश्रीयशोविजयजी एप्रकरणकरताहवा तेथ ध्यात्मनेविषेजेणेरुचिधरीछे, एवाप्राणीने रुचिसहित एप्रकरणआनंदसुखनुआपनार होजो ॥ १६ ॥ इति ॥ सज्ञानस्तुतिअधिकार एकविंशतितम समाप्त. ॥

॥ इतिमहोपाध्याय श्रीकल्याणविजयगणि शिष्यमुख्यपंडित श्रीलाभ
विजयगणि शिष्यमुख्यपंडित श्रीजितविजयगणी तच्छिष्यमुख्य
पंडित श्रीनयविजयगणी चरणकमलचचरीकेण पंडितश्रीपद्म
विजयगणिसहोदरेण पंडित श्रीयशोविजयेनविरचिते
अध्यात्मसारप्रकरणे सप्तमवध समाप्त ऽसर्वकाव्य॥६१॥

॥ इति श्रीमत्तपागछे भट्टारकश्री विजयसिंहसूरीश्वरशिष्यपंडित श्रीसत्यविजयगणि शिष्यपंडितश्रीकर्पूरविजयगणि शिष्यपंडितश्रीक्षमाविजयगणि शिष्यपंडितश्रीयशो विजयगणि शिष्यपंडितश्रीशुभविजयगणि शिष्यपंडितश्रीवीरविजयगणिनिरध्यात्म सारग्रंथस्यबालिकरूपोमुनिकीर्त्तिविजयस्यानुग्रहाया यटवार्थ कृत संवत् १७७१ चैत्र शुक्लपक्षपूर्णिमायामितिश्रे ॥

सर्वमूलशास्त्र ७४३ नीमध्यायेछे तेमा पेलाप्रबंधना १०२ बीजाप्रबंधना
१०५ त्रीजाप्रबंधना ११७ चोथाप्रबंधना १६७ पांचमाप्रबंधना १०२
छठाप्रबंधना २१० सातमाप्रबंधना ६१ सर्वमलीने ७४३

सूचना

आ अध्यात्मसार नामनो ग्रंथ श्रीयशोविजयजी उपाध्याये संस्कृतभाषाना पद्यमां रच्यो छे ए ग्रंथमां आग्रंथनुं नाम, तथा तेना रचनारनुं नाम सांभलता श्रवण करनार सुज्ञ जनोना मनमां प्रसन्नतायुक्त उत्कंठनार उत्पन्नथयाविना रहेशे नहीं, केमके ग्रंथना नामप्रमाणे ते शब्दनो अर्थ अध्यात्मनो सार थायछे, तेम ग्रंथना रचनारना नामप्रमाणे तेनो अर्थ यशनो विजयकरनार थायछे, एरीते नाम सार्थकछे, एम कहवामां काइपण बाधा आवशे नहीं. आ ग्रंथमां जेवी रीते अध्यात्मविषयना प्रकारोनो समावेश कर्योछे, तेवी रीते बीजे कचित् दीठामां आवशे उपाध्यायजीनां पांडित्य कवित्वशक्ति, समयसूचकता, पूर्वपक्षखंडन,उत्तरपक्षमंडन, वाक्यचातुर्य, पदलालित्य, अर्थगौरव, रस, अने अलंकारआदि एमना रचेला हरेक ग्रंथमां जोता कोने केवल आश्चर्य उत्पन्न थयाविना रहेशे नहीं, केमके उपाध्यायजीए जेजे विषयमां कलम चलावीछे, ते ते ग्रंथमां एवी युक्तियो करीछे के, तेना यथार्थ सूक्ष्मभावनुं रहस्य अन्यसामान्य मनुष्य समजी शके नहीं, तेम विद्वानोनी बुद्धि पण काइ

भमवडे जाणी शके: श्राम ए महापंडित हता एमां संशयनथी. तेमणे अध्यात्मवि-षयक जे आ ग्रंथ रच्योछे, तेनी उत्कृष्टता प्रत्यक्षप्रमाणवडे सहेजे समजाशे, एवा ग्रंथनो यथार्थभाव टीकाविना समजवो महाकठिण पडेछे; टीकानो अमे घणो शोध कर्यो. पण ते क्यांइ मली आवी नही, ने टीका थइछे एवुं पण कोइ ठेकाणेथी सां भलवामां आव्युं नही, त्यारे ते प्रयत्न रहेवा दइने बालावबोध अथवा टबाविषे शोध करतां मात्र श्रीवीरविजयजीनो करेलो टबो मली आव्यो, ते पण तेमणे पोतानी बुद्धि अनुसार साधारण करेलोछे. ए टबाउपरथी स्पष्ट दीठामां आवेछे के, अध्यात्म विषयविषे श्रीवीरविजयजीनो अभ्यास घणो थोडो हतो, तेथी यथार्थ मूल ग्रंथनो भाव प्रदर्शित करी शक्या नथी, ए मोटी दिलगिरीनी वात छे. पण ए टबाथी बीजो सारो टबो कोइ अमने मल्यो नही, तेथी एमां कांइक सहेज अमारी मति अनुसार सुधारो करीने आ पुस्तकमां छाप्यो छे.

॥ श्रीजिनायनमः ॥

॥ अथ ॥ श्रीसमाधिशतक श्रीयशोविजय उपाध्यायजीकृत प्रारंभः ॥

॥ दोहरा ॥

॥समरी भगवति भारती। प्रणमी जिन जग बंधु॥ केवल आतम बोधको। करशुं सरस प्रबंध ॥ १ ॥ केवल आतम बोध है । परमारथ शिव पंथ ॥ तामें जिनकुं मगनता । सोइ भाव निगरंथ ॥ २ ॥ भोग ज्ञान ज्यूं बालको । बाह्य ज्ञानकी दोर ॥ तरुण भोग अनुभव जिस्यो । मगन भाव कछु ओर ॥ ३ ॥ आतम ज्ञाने मगन जो। सो सब पुद्गल खेल ॥ इंद्रजाल करि लेखवे । मिले न तहँ मन मेल ॥ ४ ॥ ज्ञान विना व्यवहारको । कहा बनावत नाच ॥ रत्न कहो को काचकूं । अंत काच सो काच ॥ ५ ॥ राचे साचे ध्यानमें । जाचे विषय न कोइ ॥ नाचे माचै मुगति रस । आतमज्ञानी सोइ ॥ ६ ॥ बाहिर अंतर परम ए । आतम परिणति तीन ॥ देहादिक आतम भरम । बाहिरातम बहु दीन ॥ ७ ॥ चित्त दोष आतम भरम । अंतर आतम खेल ॥ अति निर्मल परमातमा । नाहि कर्मको भेल ॥ ८ ॥ नर देहादिक देखिके । आतम ज्ञाने हीन ॥ इंद्रिय बल बहिरातमा । अहंकार मन लीन ॥ ए ॥ अलख निरंजन अकल गति व्यापी रह्यो शरीर ॥ लखे सु ज्ञाने आतमा । खीर लीन ज्युं नीर ॥ १० ॥ अरि पुत्रादिक कल्पना । देहातम अभिमान ॥ निज पर तनु संबंध मति । ताको होत निदान ॥ ११ ॥ देहादिक आतम भ्रमी । कल्पे निज परभाव ॥ आतम ज्ञानी जग लहे । केवल शुद्ध स्वभाव ॥ १२ ॥ स्वपर विकल्पे

वासना । होत अविद्या रूप ॥ ताते वहुरि विकल्पमय । जरम जाल अंध कूप ॥ १३॥ पुत्रादिककी कल्पना । देहातम भ्रम मूल ॥ ताकू जड संपत्ति कहे । इहां मोह प्रतिकूल ॥ १४ ॥ या भ्रम मति अब छांडि दो । देखो अंतर दृष्टि ॥ मोह दृष्टि जो छोडिये । प्रगटे निजगुण सृष्टि ॥ १५ ॥ रूपादिकको देखिवो । कहन कहावन कूट ॥ इंद्रिय जोगादिक वले । ए सब लूटालूट ॥ १६ ॥ पर पञ्च आतम ज्यक्त ॥ कहन सुनन कछु नाहि ॥ चिदानंद घन खेलही । निज पद तो निजमाहि ॥ १७ ॥ ग्रहण अयोग्य ग्रहे नही । ग्रह्यो न छोंडे जेह ॥ जाने सर्व स्वभावने । स्व पर प्रकाशक तेह ॥ १८ ॥ रूपेके भ्रम सीपमें । ज्यु जड करे प्रयास ॥ देहातम भ्रमतें भयो । त्यु तुज कूट अभ्यास ॥ १९ ॥ मिटे रजत भ्रम सीपमें । जन प्रवृत्ति निम नाहि । नरमे आतम भ्रम मिटे । त्यु देहादिक माहि ॥ २० ॥ फिरे अनोधे वत गत । चामीकरके न्याय ॥ ज्ञान प्रकाशे मुगति तुज । सहज सिद्ध निरुपाय ॥ २१ ॥ यानिन तु सूतो सदा । योगे जोगे जेणि ॥ रूप अतींद्रिय तुंहतं । कहीं शके कछु केणि ॥ २२ ॥ देखे जाले श्यो करे । ज्ञानी सवहि अचल ॥ व्यवहारे व्यवहारसु निश्चयमें थिर थल ॥ २३ ॥ जग जाणे उन्मत्त श्यो । श्यो जाणे जग अंध ॥ ज्ञानी कु जगमें रह्यो । यु नहि कोइ सबंध ॥ २४ ॥ या परछाही ज्ञानकी । व्यवहारे जु कहाउ ॥ निर्विकल्प तुजरूपमे । द्विधा भाव न सहाइ ॥ २५ ॥ यु बहिरातम छांडिके । अनर आतम होइ ॥ परमातम मति भावइ । जहां विकल्प न कोइ ॥ २६ ॥ सो में या दृढ वासना । परमातम पद हेत ॥ इलिका भमरी ध्यान गत । जिन मति जिनपदहेत ॥ २७ ॥ भारे भय पद सोइ है । जहँ जगकू वीसास ॥ जिनसू थ्यो करतो फिरे । सोइ अजय पद तास ॥ २८ ॥ इंद्रिय वृत्ति निरोध करि । जो गिनु गलिन निनाव ॥ देखे अनर आतमा । सो परमातम भाव ॥ २९ ॥ देहादिकतें भिन्न में । मोथे न्यारे तेहु ॥ परमातम पथ दीपिका । शुद्ध भावना एहु ॥ ३० ॥ क्रिया कष्ट भी बहु सहे । भेद ज्ञान सुखसन ॥ या बिन बहु विधि तप करे । तो भी नहि भव अन ॥ ३१ ॥ अनिनिवेश पुरुष विषय । ज्ञानीहू कहूँ होत ॥ गुणको भी मद मिटगयो । प्रगटत सहज उद्योत ॥३२॥ धर्म क्षमादिक भी मिटे । प्रगटत धर्म सन्यास ॥ तो कल्पित भव भावमें । त्यु नहि होत उदास ॥ ३३ ॥ रज्जु अविद्या जनित अहि । मिटे रज्जुके ज्ञान ॥ आतमज्ञाने त्यु मिटे । भाव अबोध निदान ॥३४॥ धर्म अरूपी द्रव्यके । नहि रूपी परहेत ॥ अपरम गुन राचे नही । यु ज्ञानी मति देत ॥ ३५ ॥ नेगम नयकी कल्पना । अपरम भाव विशेष ॥ परम भावमें मगनना । अति विशुद्ध नय रेख ॥३६॥ रागादिक जव परिहरी । करे सहज गु

गमोज ॥ घटमें जो प्रगटे सदा । चिदानंदकी मोज ॥३७॥ रागादिक परिणामयुत । मन हि अनंत संसार ॥ तेहज रागादिक रहित । जानि परमपद सार ॥३८॥ भव प्रपंच मन जालकी । बाजी जूठी मूल ॥ चार पांच दिन खुस लगे । अंत धूलकी धूल ॥ ३९ ॥ मोह वागुरी जाल मन । तामें मृग मत होउ ॥ यामें जे मुनि नहि परे । ताकूं असुख न कोउ ॥ ४० ॥ जब निज मन सनमुख हुए । चिंते न पर गुणदोष ॥ तब बहुराइ लगाइये । ज्ञान ध्यान रस पोष ॥ ४१ ॥ अहंकार परमें धरत । न लहे निज गुण गंध ॥ अहं ज्ञान निज गुण लगे । छुटे परहि संबंध ॥ ४२ ॥ अर्थ त्रिलिंगी पद लहे । सो नहि आतम रूप ॥ तो पद करि क्यूं पाइए ? । अनुभव गम्य स्वरूप ॥ ४३ ॥ आतम गुण अनुभवत जो । देहादिकतें भिन्न ॥ जूठे विभ्रम वासना । जो रहि फिरि न खिन्न ॥ ४४ ॥ देखे सो चेतन नही । चेतन नाहि दिखाय ॥ रोष तोष किनकूं करे । आपहि आप बुजाय ॥ ४५ ॥ त्याग ग्रहण बाहिर करे । मूढ कुशल अति रंग ॥ बाहिर अंतर सिद्धकूं । नही त्याग औ संग ॥ ४६ ॥ आतम ज्ञाने मन धरे । वचन काय रति छोरि ॥ तो प्रगटे शुभ वासना । गुण अनुभवकी जोरि ॥ ४७ ॥ योगारंभीकूं असुख । अंतर बाहिर सुक्ख ॥ सिद्ध योगकूं सुक्ख है । अंतर बाहिर दुःक्ख ॥ ४८ ॥ सो कहिये सो पूछिये । तामें धरिये रंग ॥ याते मिटे अबोधता । बोधरूप व्हे चंग ॥ ४९ ॥ नहि कछु इंद्रिय विषयमें । चेतनकूं हितकार ॥ तोभी जन तामें रमे । अंधो मोह अंधार ॥५०॥ मूढा तमसूं तेग्रवल । मोह छोरी शुद्धि ॥ जागत हे ममता भरे । पुद्गलमें निज बुद्धि ॥ ५१ ॥ ताकूं बोधन श्रम अफल । जाकूं नहि शुभ योग ॥ आप आपकूं बूजवे। निश्चय अनुभव भोग ॥ ५२ ॥ परको किशो बुझावनो । तूं परग्रहण न लाग ॥ चाहे जेमें बूजवो । सो नहि तुज गुण भाग ॥ ५३ ॥ जबलों प्रानी निज मतें । ग्रहे वचन मन काय ॥ तबलों हे संसार थिर । भेद ज्ञान मिटि जाय ॥ ५४ ॥ सूखम घन जीरन नव । ज्यूं कपरे त्यूं देह ॥ तातें बुध माने नही । अपनी परिणति तेह ॥ ५५ ॥ जैसे नाश न आपको । होत वस्त्रको नाश ॥ तैसे तनुके नाश तें । चेतन अचल अनाश ॥ ५६ ॥ जंगम जग थावर परें । जाकूं भासे नित्त ॥ सोचाखे समता सुधा । अवर नही जड चित्त ॥ ५७ ॥ मुगति दूरि ताकूं नही । जाकूंथिर संतोष ॥ दूर मुगति ताकूं सदा । जाकूं अविरति पोष ॥ ५८ ॥ होत वचन मन चपलता । जनके संग निमित्त ॥ जन संगी होवे नही । तातें मुनि जग मित्त ॥ ५९ ॥ वास नगर वनके विषे । माने दुविध अबुद्ध ॥ आतम दरशीकुं वसति । केवल आतम शुद्ध ॥ ६० ॥ आप भावना देहमें । देहांतर गति हेत ॥ आप बुद्धि जे [illegible] । सो

विदेहपद देत ॥ ६१ ॥ जवि शिव पद दे आपकु । आपहि सनमुख होइ ॥ गुरु है आतमा । अपनो ओर न कोइ ॥ ६२ ॥ सोवत हे निज जावमें । जे व्यवहार ॥ सूतो आतम जावमें । सदा स्वरूप अधार ॥ ६३ ॥ अतर चेतन देखिके । बाहिर देह स्वजाव ॥ ताको अतर ज्ञानते । होइ अचल दृढ जाव ॥ ६४ ॥ जासे आतम ज्ञान धुरि । जग उनमत्त समान ॥ आगे दृढ अभ्यासतें । पथ्थर तृण अनुमान ॥ ६५ ॥ जिन्न देहतें जाविये । त्यू आपहिमें आप ॥ ज्यू स्वपनहिमे नहि हुए । देहातम ज्रम ताप ॥ ६६ ॥ पुण्य पाप व्रत अव्रते । सुगति दोउके त्याग ॥ अव्रतपेरे व्रत जी तजे । ताते धरि शिवराग ॥ ६७ ॥ परम जाव प्रापति लगे । व्रत धरि अव्रत छोरि ॥ परम जाव रति पायके । व्रत जी इनमें जोडि ॥ ६८ ॥ दहन समै ज्यू तृण दही । त्यू व्रत अव्रत छेदि ॥ । इनमें नही । जा गति निश्चय जेद ॥ ६९ ॥ व्रत गुण धारत अव्रती । व्रती ज्ञान गुण दोइ ॥ परमातमके ज्ञानते । परम आतमा होइ ॥ ७० ॥ लिंगदेह आश्रित रहे । जवको कारण देह ॥ तातें जव छेदे नही । लिंग पक्ष रत जेह ॥ ७१ ॥ जाति देह आश्रित रहे । जवको कारण देह ॥ ताते जव छेदे नही । जाति पक्ष रति जेह ॥ ७२ ॥ जाति लिंगके पक्षमे । जिनकु हे दृढ राग ॥ मोह जालमें सो परे । न लहे शिव सुख जाग ॥ ७३ ॥ लिंग द्रव्य गुण आदरे । निश्चय सुख व्यवहार ॥ वाह्य लिंग हठ नय गती । करे मूढ अविचार ॥ ७४ ॥ जाव लिंग जातें जये । सिद्ध पनरस जेद ॥ तातें आतमकु नही । लिंग न जाति न वेद ॥ ७५ ॥ पगु दृष्टि ज्यू अधमें । दृष्टि जेद नहु देत ॥ आतम दृष्टि शरीरमें । त्यु न धरे गुण हेत ॥ ७६ ॥ स्वप्न विकलतादिक दशा । ज्रम माने व्यवहार ॥ निश्चय नयमें दोष क्षय । विना सदा भ्रम चार ॥ ७७ ॥ छूटे नहि वहिरातमा । जागत जी पढि ग्रंथ ॥ छूटे जवथे अनुजवी । सुपन विकल निगरथ ॥ ७८ ॥ पढी पार कहूँ पावनो । मिटो न मनको चार ॥ ज्युं कोलुके वेलको । घरही कोस हजार ॥ ७९ ॥ जिहां बुद्धि थिर पुरुषकि । तह रुचि तह मन लीन ॥ आत्ममति आतम रुचि । कहो कोन आधीन ॥ ८० ॥ सेवत पर परमातमा । लहे जविक तस रूप ॥ वतिया सेवक ज्योतिकु । होवत ज्योति सरूप ॥ ८१ ॥ आप आपमें स्थित हुए । तरुथें अगनि उद्योत ॥ सेवत आपहि आपकु । त्यु परमातम होत ॥ ८२ ॥ एहि परम पद जाविये । वचन अगोचर सार ॥ सहज ज्योति तो पाइये । फिरि नहि जव अवतार ॥ ८३ ॥ ज्ञानीकु दुःख कछु नही । सहज सिद्ध निर्वाण ॥ सुख प्रकाश अनुजव जये । सबही ठोर कल्याण ॥ ८४ ॥ सुपन दृष्टि सुख नाशतें ज्यु दुःख न लहे

शोक ॥ यागर इष्ट विनष्टमे । त्युं बुधकुं नहि शोक ॥ ७५ ॥ सुखन्नावित डुःख पायकें । द्दय पावे जग ज्ञान ॥ न रहे सो बहु तापमें । कोमल फूल समान ॥ ७६ ॥ डुःख परितापें नविगले । डुःख न्नावित मुनि ज्ञान ॥ वज्र गले नवि दहनमें । कंचनके अनुसान ॥ ७७ ॥ ताते डुःख सून्नाविये । आप श क्ति अनुसार ॥ तो दृढतर हुइ उल्लसे । ज्ञान चरण आचार ॥ ७८ ॥ रनमें लरते सुनट ज्युं । गिने न वान प्रहार ॥ प्रन्नु रंजनके हेत त्युं । ज्ञानी असुख प्रचार ॥७९॥ व्यापारी व्यापारमें । सुख करि माने डुःख ॥ क्रिया कष्ट सुखमें गिणे । त्युं वंछित मुनि सुख ॥ ८० ॥ क्रिया योग अन्यास हे । फल हे ज्ञानअबंध ॥ दोनूकूं ज्ञानी नजे । एक मतीतें अंध ॥ ८१ ॥ इछा शास्त्र समर्थना । त्रिविध योग हे सार ॥ इछा निज शक्ति करी । विकल योग व्यवहार ॥ ८२ ॥ शास्त्र योग गुण ठाणको । पूरन विधि आचार ॥ पद अतीत अनुन्नव कह्यो । योग तृतीय विचार ॥ ८३ ॥ रहे यथा बल योगमें ॥ गहे सकल नय सार ॥ न्नाव जैनता सो लहे । चहे न मिथ्याचार ॥ ८४ ॥ मारग अनुसारी क्रिया । छेदे सो मतिहीन ॥ कपट क्रिया बल जग ठगे । सो न्नी न्नवजल मीन ॥ ८५ ॥ निज निज मतमें लरि परे । नयवादी बहु रंग ॥ उदासीनता परिणमे । ज्ञानीकूं सरवंग ॥ ८६ ॥ दोउ लरे तिहां इक परे । देखनमें डुःख नाहि ॥ उदासीनता सुख सदन । पर प्रवृत्ति डुःख ठांहि ॥ ८७॥ उदासीनता सरलता । समता रस फल चाखि ॥ पर पेखनमे मत परे । निजमे गुण निज राखि ॥ ८८ ॥ उदासीनता ज्ञान फल । पर प्रवृत्ति हे मोह ॥ शुन्न जानो सो आदरो । उदित विवेक प्ररोह ॥ ८९ ॥ दोधिक शतकें उधर्युं । तंत्र समाधि विचार ॥ धरो एह बुध कंठमें । न्नाव रतनको हार ॥ १०० ॥ ज्ञान विमान चारित्र पवि । नंदन सहज समाध ॥ मुनि सुरपति समता शचि । रंगे रमे अगाध ॥ १०१ ॥ कवि जश विजयें ए रच्यो । दोधिक शतक प्रमाण ॥ एह न्नाव जो मन धरे । सो पावे कल्या ण ॥ १०२ ॥ इति समाधि शतक समाप्त.

॥ अथश्री यशोविजयजी उपाध्यायकृत समता शतक प्रारंन्नः ॥

॥ दोहा ॥ समता गंगा मगनता । उदासीनता जात ॥ चिदानंद जयवंत हो । के वल न्नानु प्रन्नात ॥ १ ॥ सकल कलामें सार लय । रहो दूर चिति एह ॥ सकल यो गमें न्नी सकल । लय दे ब्रह्म विदेह ॥ २ ॥ चिदानंद विधुकी कला । अमृत बीज अन पाय ॥ जानि केवल अनुन्नवी । किनही कही न जाय ॥ ३ ॥ तो नो आश्रव तापके । उपशम करण निदान । वरपत हुं ताके वचन । [illegible] नसमान

॥ ४ ॥ उदासीनता परिनयन । ज्ञान ध्यान रंग रोल ॥ अष्ट अग मुनि योगको । एही अमृत निचोल ॥ ५ ॥ अनासंग मति विषयमें । राग द्वेषको छेद ॥ सहज जावमे लीनता । उदासीनता जेद ॥ ६ ॥ ताको कारन अममता । तामें मन विसराम ॥ करै साधु आनद घन । होवत आतम राम ॥ ७ ॥ ममता थिर सुख शाकिनी । निर्ममता सुख मूल ॥ ममता शिव प्रतिकूल है । निरममता अनुकूल ॥ ८ ॥ ममता विष मूर्छित जये । अतरग गुण वृंद ॥ जागे जाव निरागता । लगत अमृतके विंद ॥ ए ॥ परिणति विषय विरागता । जव तरु मूल कुगर ॥ ता आगे क्यु करी रहै । ममता वेलि प्रचार ॥ १० ॥ इहा मोहकी वासना । बुधकु जी प्रतिकूल ॥ या केवलि श्रुत अधता । अहंकारको मूल ॥ ११ ॥ मोह तिमिर मनमें जगे । याके उदय अछेह ॥ अधकार परिणाम है । श्रुतके नामे तेह ॥ १२ ॥ करे मूढमति पुरुषकुं । श्रुत जी मद नय रोप ॥ ज्यु रोगीकु खीर घृत । सन्निपातको पोप ॥ १३ ॥ टाले दाह तृषा हरे । गाले ममता पक ॥ लहरि जाव वैरागकी । ताकु जजो निःशंक ॥ १४ ॥ राग जुजंगम विष हरन । धारो मत्र विवेक ॥ जव वन मूल उछेदकु । विलसै याकी टेक ॥ १५ ॥ रवि दूजो तीजो नयन । अतर जावि प्रकाश ॥ करो धध सव परिहरी । एक विवेक अभ्यास ॥ १६ ॥ प्रथम पुष्करावर्त्तके । वरषत हरख विशाल ॥ द्वेष हुताश बुजाइये ॥ चिंता जाल ज टाल ॥ १७ ॥ किनके वश जव वासना । होवै वेसा धूप ॥ मुनि जी जिनके वश जये । हाव जाव अवधूत ॥ १८ ॥ जवलू जवकी वासना । जगे मोह निदान ॥ तनलु रुचे न लोककु । निर्मम ~~~~~~ ॥ १९ ॥ विषम ताप जव वासना । त्रिविध दोषको जोर ॥ प्रगटे याकी प्रवलता । क्रोध कषाए घोर ॥ २० ॥ ताते दुष्ट कषायके । छेदै हित तिन चित्त ॥ धरो एह शुज जावना । सहज जावमे नित्त ॥ २१ ॥ सिद्ध औषधी इक क्षमा । ताको करो प्रयोग ॥ ज्युमिटि जाए मोह घर । विषम क्रोध ज्वर रोग ॥२२॥ चेतनकु कोमल ललित । चिदानदमय देह ॥ सूक जूक जुर जात है । क्रोध सूकते तेह ॥ २३ ॥ क्षमासार चदन रसै । सींचो चित्त पवित्त ॥ दया वेल मडप तले । रहो लहो सुख मित्त ॥ २४ ॥ याको जासै समवधू । क्षमासहजमे जोर ॥ क्रोध योध क्यु करि करै । सो अपनो वल सोर ॥२५॥ देत खेद वर्जित क्षमा । खेद रहित सुख राज ॥ इनमे नहि संदेह कछु । कारन सरिखो काज ॥२६॥ पर्वत गर्व शिखर चड्यो । गुरुकु जी लघु रूप ॥ कहै तिहा अचरज किस्यो । कथन ज्ञान अनुरूप ॥ २७ ॥ अति शिखर गिरिराजके । गामे निमला लोक ॥ लौ प्रकाश सुख क्यु लहै । विषम मान वश लोक ॥ २८ ॥ मान महिधर छेद तु । कर मृदु ताप विघात ॥ ज्यु सुख

मार्दव सरलता । होवे चित्त विश्राम ॥ २९ ॥ मृदुता कोमल कमलथें । वज्र सार अहंकार ॥ छेदत हे इक पलकमें । अचिरज एह अपार ॥ ३० ॥ विकसित माया वेलि घर । भव अटवीके बीच ॥ सोवत हे नित मूढ नर । नयन ज्ञानके मींच ॥ ३१ ॥ कोमलता बाहिर धरत । करत वक्र गति चार ॥ माया सापिणि जग डसे । ग्रसे सकल गुण सार ॥ ३२ ॥ ताके निग्रह करनकूं । करो जुं चित्त विचार ॥ समरो ऋजुता जंगुली । पाठ सिद्ध निरधार ॥ ३३ ॥ लोभ महा तरु शिर चढी । बढी जु तृषणा वेलि ॥ खेद कुसुम विकसित भइ । फले दुःख ऋतु मेलि ॥ ३४ ॥ आगर सबही दोषको । गुण धनको बम चोर ॥ व्यसन वेलिको कंद हे । लोभ पास चिहुं ओर ॥ ३५ ॥ लोभ मेघ उन्नत भये ॥ पाप पंक बहु होत ॥ धर्म हंस रति नहु लहे । रहे न ज्ञान उद्योत ॥ ३६ ॥ कोउ स्वयंभू रमनको ॥ जे नर पावे पार ॥ ओती लोभ समुद्रको । लहे न मध्य प्रचार ॥ ३७ ॥ मन संतोष अगस्तिकुं । नावे शोष निमित्त ॥ नितु सेवो जिनि सो कियो । निजजल अंजलि मित्त ॥ ३८ ॥ याकी लालच तूं फिरे । चिंते तूं कमडोल ॥ ता लालच मिटि जात घट । प्रगटे सुख रंग रोल ॥ ३९ ॥ धनमानत गिरि मृत्तिका । फिरत मूढ दुर्घ्यान ॥ अखय खजाणो ज्ञानको । लखे नसुख निदान ॥ ४० ॥ होत न विजय कषायको । विनु इंद्रिय वश कीन ॥ तातें इंद्रिय वश करे । साधु सहज गुण लीन ॥ ४१ ॥ आप काज पर सुख हरे । धरे न कोसूं प्रीति ॥ इंद्रिय दुर्जन परिहरे । वहे न धर्म न नीति ॥ ४२ ॥ अथवा दुर्जनथें बुरे । इह परभव दुःखकार ॥ इंद्रिय दुर्जन देतु हे । इह भव दुःख इकवार ॥ ४३ ॥ नयन फरस जनु तनु लगे । दहे दृष्टि विष साप ॥ तिनसूं भी पापी विषे । सुमरे करे संताप ॥ ४४ ॥ इछाचारी विषयमें । फिरते इंद्रिय ग्राम ॥ वश कीजे पगमें धरी । यंत्र ज्ञान परिणाम ॥ ४५ ॥ उन्मारग गामी अवश । इंद्रिय चपल तुरंग ॥ खेंची नरग अरण्यमें । लेइ जाय निज संग ॥ ४६ ॥ जे निजीक हे श्रमरहित । आपहिमें सुख राज ॥ बाधत हे ताकूं करन । आप अरथके काज ॥ ४७ ॥ अंतरंग रिपु कटक भट । सेनानी बलवंत ॥ इंद्रिय क्षणमें हरत हे । श्रुत बल अतुल अनंत ॥ ४८ ॥ अनियत चंचल करण हय । पद प्रवाह रज पूर ॥ आशा छादक करतु हे । तत्त्वदृष्टि बल दूर ॥ ४९ ॥ पंच बाण इंद्रिय करी । काम सुभट जग जीति ॥ सबके शिर पद देतु हे । गणे न कोसू भीति ॥ ५० ॥ वीर पंच इंद्रिय लही । काम नृपति बलवंत ॥ करे न संख्या पूरणी । सुभट सेणिको तंत ॥ ५१ ॥ दुःख सबहिं सुख विषयको । करम व्याधि प्रतीकार ॥ ताकूं मन्मथ सुख कहे ।

॥ ४ ॥ उदासीनता परिनयन । ज्ञान ध्यान रंग रोल ॥ अष्ट अग मुनि योगको। एही अमृत निचोल ॥ ५ ॥ अनासग मति विषयमें । राग द्वेषको छेद ॥ सहज भावमे लीनता । उदासीनता भेद ॥ ६ ॥ ताको कारन अममता । तामें मन विसराम ॥ करे साधु आनद घन । होवत आतम राम ॥ ७ ॥ ममता थिर सुख शाकिनी । निर्ममता सुख मूल ॥ ममता शिव प्रतिकूलहे । निरममता अनुकूल ॥८॥ ममता विष मूर्छित भये । अतरग गुण वृद ॥ जागे भाव निरागता । लगत अमृतके विद ॥ ए ॥ परिणति विषय विरागता । भव तरु मूल कुठार ॥ ता आगे क्यु करि रहे । ममता बेलि प्रचार ॥ १० ॥ इहा मोहकी वासना । बुधकु भी प्रतिकूल ॥ या केवलि श्रुत अधता । अहकारको मूल ॥ ११ ॥ मोह तिमिर मनमें जगे । याके उदय अछेह ॥ अधकार परिणाम हे । श्रुतके नामे तेह ॥ १२ ॥ करे मूढमति पुरु षकु । श्रुत भी मद जय रोष ॥ ज्यु रोगीकु खीर घृत । सन्निपातको पोष ॥ १३ ॥ टाले दाह तृषा हरे । गाले ममता पंक ॥ लहरि भाव वैरागकी । ताकु भजो निश क ॥ १४ ॥ राग भुजंगम विष हरन । धारो मत्र विवेक ॥ भव वन मूल उछेदकु । विलसे याकी टेक ॥ १५ ॥ रवि दूजो तीजो नयन । अतर भावि प्रकाश ॥ करो धध सब परिहरी । एक विवेक अभ्यास ॥ १६ ॥ प्रथम पुष्करावर्तके । वरषत ह रख विशाल ॥ द्वेष हुताश बुझाइये ॥ चिंता जाल ज टाल ॥ १७ ॥ जिनके वश भव वासना । होवै वैसा धूप ॥ मुनि भी जिनके वश भये । हाव भाव अवधूत ॥ १८ ॥ जबलू भवकी वासना । जगे मोह निदान ॥ तबलु रुचे न लोककु । नि र्मम [illegible] ॥ १९ ॥ विषम ताप भव वासना । त्रिविध दोषको जोर ॥ प्रगटे याकी प्रबलता । क्राथ कषाए घोर ॥ २० ॥ ताते दुष्ट कषायके । छेदे हित निज चित्त ॥ धरो एह शुभ भावना । सहज भावमे नित्त ॥ २१ ॥ सिद्ध औषधी इक क्षमा । ताको करो प्रयोग ॥ ज्युमिटि जाए मोह घर । विषम क्रोध ज्वर रोग॥२२॥ चेतनकु कोमल ललित । चिदानदमय देह ॥ सूक चूक जुर जात हे । क्रोध लूकते तेह ॥ २३ ॥ क्षमासार चदन रसे । सीचो चित्त पवित्त ॥ दया वेल मडप तने। रहो लहो सुख मित्त ॥ २४ ॥ याको भासे समवधू । क्षमासहजमे जोर ॥ क्रोध योध क्यु करि करे । सो अपनो वल सोर ॥२५॥ देत खेद वर्जित क्षमा। खेद रहित सुख राज ॥ इनमें नहि सदेह कछु । कारन सरिखो काज ॥२६॥ पर्वत गर्व शिखर चढ्यो। गुरुकु भी लघु रूप ॥ कहे तिहा अचरज किस्यो । कथन ज्ञान अनुरूप ॥ २७ ॥ आठ शिखर गिरिराजके । गमे विमला लोक ॥ तो प्रकाश सुख क्यु लहे। विषम मान वश लोक ॥ २८ ॥ मान महिधर छेद तु । कर मृदु ताप निघात ॥ ज्यु सुख

मारग सरलता । होवे चित विख्यात ॥ २९ ॥ मृदुता कोमल कमलथें । वज्र सार अहँकार ॥ ठेदत हें इक पलकमें । अचिरज एह अपार ॥ ३० ॥ विकसित माया वेलि घर । जव अटवीके वीच ॥ सोवत हे नित मूढ नर । नयन ज्ञानके मीच ॥ ३१ ॥ कोमलता वाहिर धरत । करत वक्र गति चार ॥ माया सापिणि जग डंसे । ग्रसे सकल गुण सार ॥ ३२ ॥ ताके निग्रह करनकूं । करो जुं चित्त विचार ॥ समरो ऋजुता जंगुली । पाठ सिद्ध निरधार ॥ ३३ ॥ लोज महा तरु शिर चढी । वढी जु तृपणा वेलि ॥ खेद कुसुम विकशित जइ । फले डुःख ऋतु मेलि ॥ ३४ ॥ आगर सवही दोपको । गुण धनको वम चोर ॥ व्यसन वेलिको कंद हे । लोज पास चिहुं ओर ॥ ३५ ॥ लोज मेघ उन्नत जये ॥ पाप पंक वहु होत ॥ धर्म हंस रति नहु लहे । रहे न ज्ञान उद्योत ॥ ३६ ॥ कोउ सयंजू रमनको ॥ जे नर पावे पार ॥ सोत्नी लोज समुद्रको । लहे न मध्य प्रचार ॥ ३७ ॥ मन संतोप अगस्तिकू । ताके शोप निमित्त ॥ नितु सेवो जिनि सो कियो । निजजल अंजलि मित्त ॥ ३८ ॥ याकी लालच तूं फिरे । चिंते तूं डमडोल ॥ ता लालच मिटि जात घट । प्रगटे सुख रँग रोल ॥ ३९ ॥ धनमानत गिरि मृत्तिका । फिरत मूढ डुर्ध्यान ॥ अखय खजाणो ज्ञानको । लखे नसुख निदान ॥ ४० ॥ होत न विजय कपायको । विनु इंडिय वश कीन ॥ तातें इंडिय वश करे । साधु सहज गुण लीन ॥ ४१ ॥ आप काज पर सुख हरे । धरे न कोसूं प्रीति ॥ इंडिय डुर्जन परिदहे । वहे न धर्म न नीति ॥ ४२ ॥ अथवा डुर्जनथें वुरे । इह परजव डुःखकार ॥ इंडिय डुर्जन देतु हे । इह जव डुःख इकवार ॥ ४३ ॥ नयन फरस जनु तनु लगे । दहे दृष्टि विप साप ॥ तिनसूं जी पापी विपे । सुमरे करे संताप ॥ ४४ ॥ इछाचारी विपयमें । फिरते इंडिय ग्राम ॥ वश कीजे पगमें धरी । यंत्र ज्ञान परिणाम ॥ ४५ ॥ उन मारग गामी अवश । इंडिय चपल तुरंग ॥ खेची नरग अरण्यमें । लेइ जाय निज संग ॥ ४६ ॥ जे निजीक हे अमरहित । आपहिमें सुख राज ॥ वाधत हे ताकू करन । आप अरथके काज ॥ ४७ ॥ अंतरंग रिपु कटक जट । सेनानी वलवंत ॥ इंडिय क्षणमें हरत हे । श्रुत वल अतुल अनंत ॥ ४८ ॥ अनियत चंचल करण हय । पद प्रवाह रज पुर ॥ आशा शादक करतु हे । तत्त्वदृष्टि वल दूर ॥ ४९ ॥ पंच वाण इंडिय करी । काम सुजट जग जीति ॥ सवके शिर पद देतु हे । गणे न कोसूं जीति ॥ ५० ॥ वीर पंच इंडिय लही । काम नृपति वलवंत ॥ करे न संख्या पूरणी । सुजट सेणिको तंत ॥ ५१ ॥ डुःख सवहि सुख विपयको । करस व्य[illegible] ॥ ताके मन्मथ सुख कहे । धूर्त जगत् [illegible]

कार ॥ ५२ ॥ लगे कामके सुख गिने । पाइ विषयकी भीख ॥ सहज राज पा
त नहीं । लगी न सद्गुरु शीख ॥ ५३ ॥ अप्रमाद पवि दृढधरे । करी मोह चक
चूर ॥ ज्ञानी आतम पद लहे । चिदानंद भरपूर ॥ ५४ ॥ जाके राज विचारमें ।
अबला एक प्रधान ॥ सो चाहत है ज्ञान जय । कैसे काम अयान ॥ ५५ ॥ और
भ्रांति मिटि जात है । प्रगट ज्ञान उद्योत ॥ ज्ञानीकूं भी विषय भ्रम । दिशा
मोह सम होत ॥ ५६ ॥ दाखें आप विलास करि । जूठेकूं भी साच ॥ इन्द्रजाल
परें कामिनी । तासूं तु मत राच ॥ ५७ ॥ हसित फूल पल्लव अधर । कुच फल
कठिन विशाल ॥ प्रिया देखि मत राच तु । या विष वेलि रसाल ॥ ५८ ॥ चरम
मंडित है कामिनी । भाजन मूत पुरीख ॥ काम कीट आकुल सदा । परिहर सुनि
गुरु सीख ॥ ५९ ॥ विषय तजे सो सब तजे । पातक दोष वितान ॥ जलधि तरत
नवि क्यूं तरे । तटिनी गंग समान ॥ ६० ॥ चाटे निज लाला मिलित । शुष्क
हाड ज्युं श्वान ॥ तेसे राचे विषयमें । जड निज रुचि अनुमान ॥ ६१ ॥ भूषन
बहुत बनावते । चंदन चरचत देह ॥ बचत आपहि आपकूं । जड धरि पुद्गल नेह
॥ ६२ ॥ दूर दमनके जय किये । इंद्रिय जन सुख होत ॥ तात मनतप
करनकूं । करो विचार उद्योत ॥६३॥ विषय ग्रामकी सीममें । इच्छा चारि चरत ॥
जिन आणा अंकुश करी । मन गज वश करो संत ॥ ६४ ॥ एक भान मन पौन
को । मूढ करे अँधकार ॥ याते पवनहिते अधिक । होत चित्तको चार ॥ ६५ ॥
जामें राचे ताहिमें । विरचे करि चित्त चार ॥ इष्ट अनिष्ट न विषयको । यूं निश्चय
निरधार ॥ ६६ ॥ केवल तामें करमको । राग द्वेषते बंध ॥ परमें निज अभिमान
धरि ॥ फरा फिरत हो अंध ॥ ६७ ॥ जेसे ललना ललितमें । भाव धरतु है सार ॥
तेसें मैत्री प्रमुखमें । चित्त धरि करि सुविचार ॥ ६८ ॥ बाहिर बहुर कहा फिरे ।
आपहिमें हित देखि ॥ मृग तृष्णा सम विषयको । सुख सब जानि उवेखि ॥ ६९ ॥
प्रिय अप्रिय व्यवहार निज । रुचि रम साचो नाहि ॥ अगज बल्लभ सुत भयो । पूर्ण
दिन नहि काहि ॥ ७० ॥ होवत सुख नृप रंककूं । भोजन सुगत समान ॥ इक भो
गे इक नाहिमो । भयो चित्त अभिमान ॥ ७१ ॥ जनको सुख संकल्प तन । कृमि
म बिमो कपूर ॥ रजन है जन मुगधकुं । वर्जित ज्ञान अँकुर ॥ ७२ ॥ गुन ममता
रत वस्तुको । सो वासना निमित्त ॥ माने गुनमें गुन अधिक ॥ दोरत है नित
चित ॥ ७३ ॥ मनहून ममता अबहे नहीं वस्तु परजाय ॥ नहि तो वस्तु विरायें ।
क्युं ममता मिटि जाय ॥ ७४ ॥ जन जनकी रुचि भिन्न है । भोजन इक बहुर ॥
रोगमंतकूं नो रुचे । करत करे सो दूर ॥ ७५ ॥ करभ हसे नृपभोगकूं । हसे कर

नकूं कूप ॥ उदासीनता विनु नही । दोनूंकूं रति रूप ॥ ७६ ॥ परमे राचे पर रुचि। निज रुचि निज गुणमांहि ॥ खेले प्रभु आनंदघन । धरि समता गलि बांहि ॥७७॥ माया मय जगको कह्यो । जहां सबहि विस्तार ॥ ज्ञानीकूं होवत कहां । तहां शोक को चार ॥ ७७ ॥ शोचत नहि अनित्य मति । होवत माल मलान ॥ भांजे भी शोचन लगे। धरत नित्य अभिमान ॥७९॥ कूट वासना मंडितहे। आशा तंतु विनान ॥ वेदि ताकूं शुभ मती । कर धरि वोध कृपान ॥ ८० ॥ जननी मोह अंधारकी । माया रजनी कूर ॥ ज्ञान भानु आलोकते । ताको कीजे दूर ॥८१॥ उदासीनता मगनहुइ । अध्यातम रस कूप ॥ देखे नहि कछु और जब । तब देखे निज रूप ॥ ८२ ॥ आगे करी निसंगता । समता सेवत जेहु ॥ रमे परम आनंद रस । सत्य योगमे तेहु ॥८३॥ संगहि जनित असंगता । इह भवके सुख देत ॥ संग रहित निसंगते। कौन दूर सुख देत ॥ ८४ ॥ मतहो संग निवृत्तकूं । प्रेम परम गतिपाइ ॥ ताको समता रंग पुनि । कीनही कह्यो न जाइ ॥ ८५ ॥ तिसना विद्रुम वल्लि घन । विषय घुमर बहु जोर ॥ भीम भयंकर खेद जल । भव सायर चिहुं ओर ॥ ८६ ॥ चाहे ताको पार तो । सज कर समता नाव ॥ शील अंग दृढ पाटिए । सहस अटार वनाव ॥ ८७ ॥ कृथा यत्न शुभ योग परि । वैठे मालिम ज्ञान ॥ अध्यातम सट वले चले। संयम पवन प्रमान ॥ ८८ ॥ योगी जब हुं तप करे । खाइ झुरे तरु पात ॥ उदासीनता वीनु न सम । हुतिमे सोभी जान ॥ ८९ ॥ छूटे भवके जालथे । जेनही तप करि खोक ॥ तो भी मोह काहुकूं । देत जनमकोशोक ॥ ९० ॥ विषय उपद्रव भय मिटो। होवत गु ण संतोष ॥ नाते विषयातीत है । देत शांत रस पोख ॥ ९१ ॥ विनु खासन यश होत है । वसा वान यह साच ॥ याते करे निरीहके । आगे सम रति नाच ॥ ९२ ॥ दे परिमल समता लता । वचन अगोचर सार ॥ नित्य वहिरि भी जिहां यने । खद्र तु प्रेम सहकार ॥ ९३ ॥ सेना रावस मोहकी । जीपे सुरे प्रवुद्ध ॥ ब्रह्म वानि कंडेइके । समता अंतर शुद्ध ॥ ९४ ॥ कविनुन कल्पित अमृतके । रसमे मूरग्न नांहि ॥ सजो एक समता सुधा ॥ रति धरि शिवपदमांहि ॥ ९५ ॥ योग मंत्र ज लनिधि मथो । मनकरि मेरु मथान ॥ समता अमृत पाइके । हो अनुभव रस जान ॥ ९६ ॥ उदासीन मति पुन्य जो । समता निधि शुभ वेष ॥ रोग नाहूं क्रोध किछु । आपे कर्म अशेष ॥ ९७ ॥ शुद्ध योग अभ्यास धरि । नित्य रस को त्याग ॥ प्रथम करे जो मूढलो । उनर द्रष्ट निरभाग ॥ ९८ ॥ क्रिया मूढ फूली क्रिया । करे यद्यपि ज्ञान। क्रिया भ्रष्ट इक ज्ञान मति ॥ दोउ [illegible] अज्ञान ॥ ९९ ॥ ते दोनूंथे दूरि शिव । जे निज वल अनुसार ॥ मारग [illegible] री गहे ।

सो शिव साधन द्वार ॥ १०० ॥ निवृत्ति ललनाकू सहज । अचिरजकारी कोउ ॥ जो नहि याकू रुचत हे । याकू देखे सीउ ॥ १०१ ॥ मन पारद मूर्छित जयो । सम ता ओषधि आइ ॥ सहज वेध रस परम गुन । सो वन सिद्धि कमाइ ॥ १०२ ॥ बहु त ग्रथ नय देखिके । महा पुरुषकृत सार ॥ विजयसिंह सूरी कीउ । समता शतको हार ॥ १०३ ॥ जावत जाकू तत्त्व मन । हो समतारसलीन ॥ ज्यू प्रगटे तुज सहज सुरन । अनुजवगम्य अहीन ॥ १०४ ॥ कवि यशविजय शुं शीखए । आप आपकूहेत ॥ साम्यशतकउऊारकरि । हेमविजयमुनिहेत ॥ १०५ ॥ इतिश्री समता शतक समाप्त ॥

॥ अथ श्री दिक्पट चोराशी बोल प्रारम्भः ॥

॥ छप्पयछंद ॥ सुगुण ज्ञान शुज्ञ ध्यान, दान विधि धर्म प्रकाशक सुवद्धमान पर मग्न, आन जस सुगति अन्यासक, कुमत वृंद तमकद, चंद परि वृंद निकासक, रु चि अमद मकरद, सत आनद विकासक, जस वचन रुचिर गजीर नय, दिक्पट कपट कुठार सम, जिन वर्द्धमान सो वंदिये, विमल ज्योति पूरन परम ॥ १ ॥ क वित्त इकतीसा ॥ सागरके आगे कहा गागरी करेगी गर्व, सर्व कहा वेसरूके आगे अर्व इदको, नाक वृठ आगे कहा आकको अकूर ठाजे, सूर तेज आगे कहा राते धाम चदको, कामधेनु आगे कहा कूकरी करेगी मान, जूपतीके आगे कहा जोरहे पुलिंदको, ऐसे खरवग शुद्ध ग्रथ जो सितवरको, ताके आगे कौन दर्प दुर्मतीके वृदको ॥ २ ॥ दोहरा ॥ पहिलु दिक्पटशु सुने, बोल चुरासी फेर, सर्व विसवादे जयो, अवतो वहुत अधेर ३ निन्हव थे अधिको बुरो, कह्यो मिथ्याति सो इ, परिहरना अधिकार यह, आवश्यकमे जोइ ४ खट शत नव वरखे जयो, तस मत जरु मृग पास, सहस मल्ल दीक्षा लइ, आर्य कृष्ण गुरुपास ५ राजमाय तिणे अन्यदा, वीहरयो कवल रत्न, मूर्छासेती सग्रह्यो, कियो न सवर यत्न ६ गु रुने कीने पूछने, टले यु मूर्छा दोष, आइ देखि मनमे धस्यो, तीनि तायें बहु रो ष ७ थविरकल्प खडन कियो, वरन्यो जब जिन कल्प, नगन पथ तिण आ दस्यो, त्यजि सद्गुरुके जल्प ८ तस जगनी देखी नगन, वेसे दीनो वेस, चरन निषेधे नारिकू, तब सो सुरि निरदेश ९ जैन कहावे नामथें, ताथें बटो अह र, तनु मल ज्यु फुनि सतने, कियो दूरिथें दूर. १० जसमक ग्रह रज जसममय, ताथें वेसर रूप, उठे नाम अध्यातमी, जरम जाल अध कूप ॥११॥ कवित्त इकतीसा ॥ जोगके जीखारी अधिकारी नही ग्रथनके, आपकी पथारीमें चलावे निंदा पारकी सो जे जाति न्यारी न्यारी किरियाकू दूरि मारी, कहे कोउ शीखसारी देवे गारी नारकी

फूठे मन नामधारी जांगकी खुमारीमें जो, लवे युक्ति जारी सोतो, कूटे जीती गारकी: एसे है जुआरी अब मूढनके पट्टधारी, आरी आरी जाने बात लात जैसी टारकी ॥ १२ ॥ दोहरा ॥ पल्लवग्राही लोककूं, समुजावे कुन जान; कोमल करतुनघनघटा, ज्युं मुगसेल पखान. १३ दृष्टिराग मदमत्तकूं, जो देवे उवएस; सो कूकर मुखमें ठवे; आप कपूर अशेष १४ शुष्क पयोधर नारि ज्युं, निंदे कंचुककार; गूढ हेतु बुद्धगम्य त्युं, निंदे ग्रंथगिमार. १५ ऐसे जडसूं संतकूं, घटे न वाद विचार; तो जी परके बोधकूं, कहियें बोल उचार. १६ साचेकूं जूठा कहे, जूठेकूं कहे साच; अजिनिवेश उन्मत्तको. ऐसो बहु विधि नाच. ॥ १७ ॥ कवित्तइकतीसा ॥ टूटे अंतराय पंच रंचही न राग रोश, फास ठक काम कीनो अंचही न देखिइं; वंचना अज्ञानकी मिथ्यातको प्रपंच निंद, आश्रवको संच सो तो, मूलथें विलेखिइं, एसें जो अठार दोष, घाति कर्म जाव पोष, ताको परिशोष याके ज्ञानमें विशेखिइं, सोई शुद्ध नाम कोप घोपतें अनंत तोप, मोप मग्ग दाता त्राता देव देव लेखिइं॥१८॥छपय्यछंद॥ क्षुधा, तृषा. जय, शोग, रोग, जर, मरण, जनम, मद; मोह, खेद परसेद, निंद, विपमय चिंता, गद; रति विषाद, ए दोष, कहे अष्टादश दिक् पट, सो लीक तिन मांहि. नही गुण दूषण उद्भट; जो जाव अघाती दोष हुइ, तो जिनकूं नर गति प्रमुख दूषन अनंत विलगे रहे, शिव पद दूपक सुनि विमुख ॥ १९ ॥ चोपाइ ॥ सप्तधातु वर्जित जिन काया, परमो दारिक कहे सु माया; जिदा नही वेकी परि ताकी; संघयणादिक खंध विपाकी २० परमोदारिक जो जिनवरकूं; तो मध्योदारिक गणधरकूं; कहे कहा नहि कल्पन कारी; क्युं ओरनि सरखे गणधारी. २१ सप्त धातु गले जिनवरके; केते धातु गले गनधरके; सप्त धातु जिण नाणें जावे; मन नाणें मुनि कहो कहाँ पावे. २२ जिन तनु थिति नो कर्माहारें, कहे मूढ तेजूठ विचारें, औदारिक थिति कवलाहारें, दृष्टि हानि होइअन्य प्रकारे, ॥ २३ ॥ दोहरा ॥ कहे केवली कर्मकूं, दग्ध रज्जु सम मूढ, आगममति जाने नही, जोआउ नाम दृढ रूढ २४ तत्त्वारथ परिषह कहे, जिनको प्रगटइग्यार; ताको अरथ मरोरतें, क्युं पामें जव पार; २५ सूत्रनमें परिषह कहे, वृत्ति लिख्यो नकार; जो संसो उपजत नही, तो तुज भ्रमको जार. २६ जिनकूं इंद्रिय विरहथें, तनु गत नहि सुख दुःख; कहे जु जीव विपाक तसु, उदो फले कुण रुख २७ खाइक सुख जिनकूं कहे, केवल ज्ञान सरूप; वेदनीयके खय गये, कुन गुन कहो पशु रूप. २८ उदय जाव खाइक गन्यो, जिनकूं प्रवचनसार; अर्क तूल परें तो फिरे, क्रियारहित निरधार. २९ वेठें उठे आसने, देव प्रेरित देव, ऐसो है क्युं कल्पना ? छोडि न मिथ्या टेव. ३० केवलनाणे जो खगति,

मननाणे कहु होइ, करम निफल जो मोह विनु, यश कीरति क्यु जोइ ? ३१ अति शय चूरन अनानको, कहे सुगुरु कुल हीन, नाव अघाती क्यु मिटे, घातीगए जो खीन ॥ ३२ ॥ कवित्त इकतीसा ॥ केवलीआहार करे जागे अग्नि अंतरकी, वेदनी आहार शक्ति ताकी नाही हीनता, हेतुके समाजते घटे जुं काज साज शुद्ध, ताते तहा आज लुक हानि कहा दीनता, अन्यथा न अष्ट वर्ष, बाल केवली निशाख, पूर्व कोटि आउ पाल ताकू वृद्धि खीनता, वृद्धि पोरवदाइ जाइ वर्गणा कहासु पाइ ? ज्ञानथे जु आउ तामे मुक्तिकी प्रवीणता ॥ ३३ ॥ दोहरा ॥ दिक् पट जिन योमें नही, गिरथें उठे नाद, किरिया विनु घट ध्वनि परे, तामे कौन सवाद ३४ कहे शिलाका पुरुषकू, नही कबहु निहार, तपति लब्धि सबकू नही, एहु अदृष्ट प्रकार ३५ मल पुद्गल तिनकूं जले, रस पुद्गल जलि जाइ, दोउ जले तो उदरमें, जरम व्याधि उपाइ ३६ तेनरु कक गहनि कहे, डर कपोत परिनाम, ए आगमके वचन मे, क्यु न करो विसराम ? ३७ कहे साधु अप्रमत्तकू, नही आहार विहार, ताकी सिद्ध शिला भइ, जिहा न साधु प्रचार ३८ बाहिर मानुष खेतके, गइहोइ व्रत नग, ए कहते चारण विना, क्यु जलमे शिव संग ? ॥ ३९ ॥ सोरठा ॥ दोइ घटीक फेर, केवल माने भरतकू, घटो मोहको घेर, भाव प्रधान गने नही ॥ ४० ॥ हरि गीत छंद ॥ व्यारहु निखेपे एक द्रव्ये, कहे श्रीजिन आगमें, ज्यु नाम घट सथापन, द्रव्य मृदगुण नाममें, युं जीव द्रव्यह केवलादिक, गुनह द्रव्यत नावत हुइ नियम पुद्गल द्रव्यको, तो तत नहि व्यभिचारते ४१ जो समय सारे अर्थ धारे, मुगति लिंग न वेदते, निश्चय प्रमाने व्यवहरइ ते, वस्तु गुण गुनि भेदते, अधिगम विना सम्यक्त्व माने, द्रव्य विनु चारित नही, चारित विना करे समकिते, शिव दते मति जो यही ४२ सुर कोइ शिर परि वस्त्र डारे, जाय केवल तो घटी, जो द्रव्य विनु केवल नही, तो केवला वरण पटी, जो भाव लिंग प्रमान कीजे, भेद पनरहुं तो घटे, सिद्धति जागे सिद्धके नर, तासु निंदक नर अटे ४३ यो लिंग सिद्ध न्हे न कुमते, तास चरण निवारए, जो सब प्रवचन सारि चोविह, पटो मो न विचारए, चोविध जोलि अंजिका करि, पर होत अजके ए सब लोपे समय कोपे, कुमती न वधी सके ॥ ४४ ॥ कवित्त इकतीसा ॥ दुमवे कचोल रग रोलके निचोल सोल, शीलथे अटोल याकी जातिमे महामनी यामे नग तानकी मान अवदान गात, नमे जाहू इद जाति निलहि महीयनी दानके स्वभाव माचे, तपके प्रभाव जाचे, नही नावराचे नाचे माचे साधु भगता धर्म अवलविनी जो दोपकी विलविनी नितंविनी हे प्रेमी ताहू स्पृ न पावमी य

ति ॥ ४५ ॥ दोहरा॥ मल्ली सो कुमरी कही, मल्लसु कुमर कहाइ; पुरुष स्वरूपें देखिये, पुरुष स्वरूप न माइ. ४६ तित्थंकर थी वेदको, क्यूं एकनको बंध; गुण थानक आकर्ष थी, एहु हमारी संध. ४७ तित्थ प्रणाम प्रदक्षिणा, थानकी वरखि कहान; परहित करनी पुण्य फल, कपिल नृत्यको तान. ४८ दोहु कुमर जिनजी कहे, पंच कुमर कुन हेत; प्रिया पंचकी द्रौपदी, मानें नहि कुछ केल ४९ एके घरि ऊजोजिमें, अठावीस गुनमूल; अंतराय कल्पित कहे, ते सबही निरमूल. ५० कस्तुरी अपवीत्त कहे, वाय बजावें कांहि; कहु कुंकुम करपूरकी. गति आवे मनमांहि. ५१ प्रतिमा नगन न सो हियें, पट भूखन पहिराइ; स्नात्र विलेपन धूप मुख, जगतिहि हेतु कराइ. ५२ शिष्य करें ज्युं जिन करे, तो क्यूं दिख्कत शीश; क्यूं बोलत केवल विना. न विराधो जग दीश. ५३ नगन दशा जिनवर धरें, नगन दिखावें नाहि; अंबर हरि खंधे धरें, उचित जानि मनमांहि. ॥ ५४ ॥ अरिल्लछंद ॥ गोतम स्वामीगए, खंदककूं; मानें नहि मुनि जाइ, सुसन्मुख जेनकूं; धर्मके कारन क्यूं अपवाद न मानही; ऐसेहि जांतिसुं होवत वीजाधानही. ॥ ५५ ॥ दोहरा ॥ कोरे कहे जु थापना, प्रतिमा क्यूं न प्रमान; सद्भावा सद्भावतें, ताको द्विविध वखान. ५६ जिन विरहे जिन बिंबकी, ज्यूं थापना प्रमान; गुरुविरहे गुरुथापना, तैसे करे सुजान. ५७ तेसी जमति न विमल गिरि, जैसी गढ गिरनार; तीरथ क्रम जानें नही. को तस बोधन हार. ५८ शुद्ध उपयोगी साधुकूं, शिष्य दिख्क उवएश; ध्यान शुद्ध उपयोगमें. नहि अपवाद अशेश. ५९ काय खेद जो धर्ममें, सो ग्रहि धर्म प्रकार; ताकूं करत यती नही, नाव्वे प्रवच नसार. ६० तापरि हम यूं कहतु हें, कह अपवादी साधः पंचम गुन थानक नजे, के अधिकार हि वाध. ६१ प्रथम पद्य अविरति नही. तो व्रतको नहि भंग; द्वितिय पद्य जो पाप हे. तो गृहिकूं क्यूं रंग ६२ हिंसा दोष स्वरूप जो, तो लूपक मन रज्ञ; आगे पीछे देखिके, क्यूं जापो नहि अज्ञ. ६३ वधू भइ वसुदेवकी, बहुनरि सहस उदारः अधिक भयो कहु चक्रियें, यूं संसो मन धार. ६४ बाहुबली ज्यूं अधिक बल, नरन हियें निरधार; सोभागी वसुदेव त्यूं, सबहीमें शिरदार. ६५ गज जनाली दीन्हो. कह्यो जमाई सुचि; सो उत्थाप्यो कुमतयें, वीर कुमर कहि धुनि. ६६ चंकमके सीसकूं, मानें केवल नांहि; जानें नहि ठांके नही, सो व्यवहार उछांहि. ६७ चोविहार पचखान विनु, मानें नहि उपवासः जानें नहि तिविहार नी, दुब्बहको अभ्यास. ६८ परम क्रिया आगे करे, प्रथम क्रियाके त्याग, चपल बिगुर्ते मूढ नर

जगम तिरय तुरगम सगम, रगम हानि धिकारन जानी, ताके प्रयोजन योजन साठि निशाहिमे श्राय जु निर्मल ज्ञानी, अधमही भृगु कछ सुलछन, पावन कीनि सुधाखरिवानी, ताके नमो मुनिसुव्रतके पद सपद कारन तारन प्रानी ॥ १०२ ॥ दोहरा ॥ महामत्र नव पद कहे, कहे पच पद आन, गोमुठसारादिक धुरे, नव पद लिखे प्रमान १०३ ज्यू चूला विनु श्रुत नही, त्यू न मुढ नवकार, जो मखे पढि आदरो, जपहु एक ॐकार १०४ श्रुत सबहीमे पच पद, नव पद श्रुत महमंत, शुरू परपर बुध लहे, ए जिन शासन तत १०५ चूला वर्ण बतीशकी, कहे सु सबहि अजान, अडसठ अरकर कवचमे, कहे जु मत्र प्रमान १०६ नव अरकर पदये नही, तहा तदको जग, ऐसे यह पद देखिह, आगममाहि सुरग. १०७ देव देव उर देव सब, अर्द्ध मागधी वाणि, जाखे सत्यारथ वचन, पचम अगे जाणि १०८ और कहे जिन जावही, सर्व मागधी वाणि, तामे सारी कौन थो, कहा लाच कह हाणि ? १०९ दत रहित जिन मानते, याको नहि कछु लाज सा माने नहि दाढ तस, पूजे जे सुरराज ११० कहे ज्यु तत्र समाधिते, जाति लिग नहि हेत, चडालादिक जातिको, क्यु नहि मुकति सकेत, १११ गुणथानक प्रत्यय मिटे, नीच गोत्रकी लाज, दर्शन ज्ञान चरित्तको, सबहु तुल्य समाज ११२ कौन जाति अधिकारिणी, नहि तो कहो प्रमान, ब्रह्मजाति ब्रह्मणवदे क्षत्रिय क्षत्रिय मान ११३ त्राण नही कुल जाति कछु, विद्याचरण विहीन, सूगडागको वचन यह, क्यु न करो मन लीन ? ११४ करमभाव प्रभुको रह्यो, नीच गोत्र अवशेष, ताथें द्विज घरि अवतरे, तहा करे जक द्वेष ११५ दोष .. दो तातको, क्षेत्र वीजके न्याय, शील जग नहि [illegible] न ११६ अन्न खात्र परिनाम है, पय तृणको [illegible] भिन्न

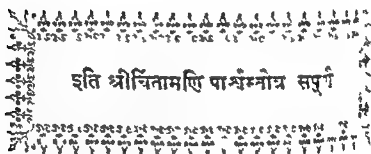
उचित प्रवृत्ति न धारही, तो नी जिन सद्भाव. १२३ छींक न माने वीरकूं. कर्म वेद्य को नाव;फरसनकूं दरसन कहे.सो तो कुटिल स्वनाव. १२४ हरि हरिनी हरिवर्षके यु गल हरे सुर कोइ; मथुरा नगरी राज्य दिइ; करे देह लघु सोइ. १२५ दिव्य शक्ति तवथें नयो, हरिको वंश विशाल;ऐसो अचरय नाव ए. होत अनंतहि काल १२६. काल अनंत अनंतथें. युगल युगल अपहारि; शून्य होत हरि खेत युं, दूपन कहे विचारि. १२७ तहां कहे सिद्धांत हम, जैसो युग अपहार; तैसो पूरन ताहिको, काल बहु निर धार. १२८ एक रूप अचरय नही, सदा कहे दश संख्य; काल अनंत अनंतथें, होत असंख्य असंख्य १२९ कहे चमरकी गति नही, शक्र लगें निरधार; ताकूं कोप कुनां तको, नगवइ अंग विचार. १३० देशअनारयमेंनही, वीर विहार अशुद्ध; मनुपिणि देव न नोगवे, कहे सु वचन विरुद्ध. १३१ सुदि वैशाख दशमि दिने. वीर उपन्नो ज्ञान; श्रावन सुदि परुवा दिने; आपुन कियो वखान. १३२ ठासठ दिन मोनी रहे, नाखे एम अजान, एकहु सना अनापितां, हम हें वचन प्रमान. १३३ मोन अना वित जानिके, मानहु अधिक छमास; एक सना तेसी कहन, क्यूं लागत तुम पास १३४ नवे देव जिन विचरिते; पाव कमल पग हेठि; कहे नूमि परि गमनमें. ते देव नको वेठि. १३५ पाउ धरे जहँ धरनि परि, तहां कमलको काज; कमल गगन नपरि चले, कहा नन्यो एसाज. ! १३६ सोल सुपन जिनमातकूं, सोल कहें सुर लोक; इंड मिलन सत मानही, ते सवही मन फोक. १३७ वदले अतिशय तीस चउ, कहे नु गुरु कुल रीति; तो अदस्य आहार विधि, दाखन पावे नीती. १३८ नुगति रहित जिनवर कहो, वधि ढांकन कुन हेत, चरम नीर घृत कुलपको, कोन दोष [illegible] त. ? १३९ मरुदेवी श्रो नानिको; युगल धर्म नहि दोष; दशायु [illegible], करे धर्मको पोप. १४० सुर नर विहित विवाहको, जवलूं नहि व्यवहार; [illegible] तवलूं नही, युग्म धर्म अधिकार. ॥ १४१ ॥ कवित्त इकतीसा: ॥ [illegible] कहे पात्रधारी नांहि; वात्रमो पढ्यो हे कोपं गायकूं न मानहीं; [illegible] लब्धि पात्र श्रोर पात्रधारी; एह रीति नीति ज्ञाना [illegible] दान पात्र विनु केसे होत, यही पात्र छूटे तो [illegible] युक्ति पात्रहीथि करे साधु; पिंडकी [illegible] वेइसा ॥ श्रावके कारन गर्भ [illegible] धरी त्यजि देवकूं, [illegible]

जगम तिरच तुरगम सगम, रगम हानि धिकारन जानी, ताके प्रयोजन योजन साति निशाहिमे आय जु निर्मल ज्ञानी, अष्टमही भृगु कच्छ सुउछन, पावन कीनि सुशावगिानी, ताके नमो मुनिसुव्रतके पद सपद कारन तारन प्रानी ॥ १०२ ॥ दोहरा ॥ महामत्र नव पद कहे, कहे पच पद थान, गोमुठसारादिक धुरे, नव पद जिये प्रमान १०३ ज्यू चूला जिनु श्रुत नही, त्यू न सुद्ध नवकार, जो मत्ते पद्दि आदरो, जपहु एक ॐकार १०४ श्रुत सवहीमे पंच पद, नव पद श्रुत महमन, शुरू परपर चुर कहे, ए जिन शासन तत १०५ चूला वर्ण वतीशकी, पत्रे सु मनहि अजान, अडसठ अरकर कवचमे, कहे जु मंत्र प्रमान १०६ नव अक्षर पदये नही, नहा ठदको जग, ऐसे बहु पद देखिइ, आगममांहि सुरग १०७ देव देव अर देव मन, अर्द्ध मागधी वाणि, जामे सत्यारय वचन, पचम अगे जाणि १०८ और कहे जिन नामही, सवे मागधी वाणि, तामे साखी कौन थो, पयो मान पद हाणि ? १०९ दत रहित जिन मानते, याको नहि कछु लाज गा मानि नहि दाट तस, पूजे जे सुरराज ११० कहे ज्यु तब समाजिते, जाति लिंग नहि हैत, चडालादिक जातिको, क्यु नहि मुकति सकेत, १११ गुणथानक प्रत्यय मिटे, नीच गोत्रकी लाज, दर्शन ज्ञान चरित्तको, सबहु तुल्य समाज ११२ चोर जाति अधिकारिणी, नहि तो कहो प्रमान, ब्रह्मजाति ब्रह्मणवदे क्षत्रिय क्षत्रिय मान ११३ प्राण नही कुछ जाति कछु, क्रियाचरण विहीन, सूगडांगरो वचन यह, क्यु न धरो मन लीन ? ११४ करमनाय प्रभुको रह्यो, नीच गोत्र अवशेष, तायें द्विज घरि अवतरे, तहा करे जन्म ठेप ११५ दोष नही दो तानरो, देख बीनके न्याय, नीच जग नहि मातहू, गर्भ न वीर्य पहाय ११६ अन्न मात्र परिनाम है, पय तृणको परिनाम, द्रव्य निश्र पै निश्र गुन, गर्भ न वीरय नाम. ११७ परम नाथ प्रभुकुं कह्यो, जो थाने तुम्ह लाज, सदा निरुद्ध नों मानिस्यो, कहा जनमको काज ११८ पशा नर दो घरि किये, कल्यानक पद होन, मो हरण हमहू नही, तहँ दिन गणित टदोन ११९ सुरकृत कल्यानक नही, हरन राज अनिषेक, वीरगर्भ अपहारम, त्यु न कल्यानक देख १२० नेगमेषिकी शकति है, रोम कूपमें गर्भ, संक्रम करनहि अवरूं, सो नहि मानन अर्न १२१ कहे याहूयम केवली, नम्यो उपजके पाप वेग देह प्रदक्षिणा, कहो न कूड़ वनाय १२२ अप्रमत्तता है जन्हा, तहा न वयन मात,

उचित प्रवृत्ति न छांड्ही. नाँ नी जिन सद्‌भाव. १२३ शीक न मानें धीरकूं, कर्म वेद्य को नाव. परम्मनकूं दम्मन कहै. नो नों कुटिल स्वनाव. १२४ हरि हरिनी हरिवर्षके यु गल हरे सुर कोउ. मथुरा नगरी राज्य विः करे देह लघु सोउ. १२५ दिव्य शक्ति तनथें नयो. हरिवंश वंश विशाल: ऐसो अच्चरय नाव ए. होत अनंतहि काल १२६. काल अनंत अनंतथें. युगल युगल अपहारि; शून्य होत हरि खेत युं, दूषन कहै विचारि. १२७ नरां फों सिद्धांत हम, जेसो युग अपहार; तेसो पूरन ताहिको. काल वहू निर धार. १२८ एक रूप अचरय नही, सदा कहे दश संख्य; काल अनंत अनंतथें, होत असंख्य असंख्य १२९ कहै चमरकी गति नही. शक्र लगे निरधार; ताकूं कोप कुनां तको, नगवड अंग विचार. १३० देशअनारयमेंनही. वीर विहार अशुद्ध; मनुपिणि देव न जोगवे, कहै सु वचन विरुद्ध. १३१ सुदि वैशाख दशमि दिने, वीर उपन्नो ज्ञान; श्रावन सुदि पक्वा दिने; आपुन कियो वखान. १३२ छासठ दिन मोनी रहे, जाने एम अजान; एकहु सना अजापितां, हम हें वचन प्रमान. १३३ मोन अज्ञा वित जानिके, मानहु अधिक छुमास; एक सना तेसी कहत, क्यूं लागत तुम पास १३४ ठवे देव जिन विचरिते; पान कमल पग हेठि; कहे भूमि परि गमनमें. ते देव नकी वेठि. १३५ पाउ धरे जहें धरनि परि, तहां कमलको काज; कमल गगन उपरि चले. कहा वन्यो एसाज. ! १३६ सोल सुपन जिनमातकूं, सोल कहैं सुर लोक; इंद्र मिखत सत मानही, ते सवही मत फोक. १३७ वदले अतिशय तीस चउ, कहे सु गुरु कुल रीति; तो अदृश्य आहार विधि, दाखत पावे नीती. १३८ कुगति रहित जिनवर कह्यो, वक्ति ढोंकत कुन हेत, चरम नीर वृत कुतपको, कौन दोप कहु ले त. ? १३९ मरुदेवी औं नाजिको; युगल धर्म नहि दोप; दशायु सन्मुख धर्मकी, करे धर्मको पोप १४० सुर नर विहित विवाहको, जवलूं नहि व्यवहार; प्रजुकूं नी तवलूं नही, युग्म धर्म अधिकार. ॥ १४१ ॥ कवित्त इकतीसा: ॥ साधुकूं कुपात्र कोउ कहे पात्रधारी नांहि; छात्रसो पत्यो है कोपें गात्रकूं न मानही; पाउधारी नाहि, लब्धि पात्र और पात्रधारी; एह रीति नीति ज्ञाता सूत्रथें प्रमानही; ग्लानकूं आहार दान पात्र विनु केसे होत, गृही पात्र भुंजे तो गृहस्थ नाव छानही; पाहुनेकी नक्ति युक्ति पात्रहीथे करे साधु, पिंडकी संशक्ति पात्र विना केसे जानही. ॥ १४२ ॥ सवैया तेइसा ॥ शौचके कारन राखे कमंडलु, पात्रकुं छोरि कहा गुन पायो; नी धरी त्यजि उंघेकुं, औरसु मूढने वेप वनायो; तसलब्धी लग जोहि

लँग्री लगि पात्रमुहायो, जेनको भूपन जेनको वेप है, और धरे कह हायमे ॥ १४३ ॥ दोहरा ॥ वाल अग्र पुजन वरे, मुखि जापन हो दोप, धरो कमरन का, कहा करो कठगोप ? १४४ उपधि सहित नहु शुद्ध है, ज्यूं तनुज ५ पत्र मन शुद्धता, कहे जाव जगवन, १४५ कहे कोउ पचखानको, उपकरने देहा उहारादिकवीपे, तास न उचित प्रसग १४६ रोउ्यान मूर्छा प्रमुख, रिखे तई दोप, यतनासु निर्दोपता, ए सुवचन सत् कोप १४७ उव्यादिक वरे न मूर्छा साधु, ए चोविह पचखानको, एकहु अर्थ अगाधु १४८ शुद्ध वाद्ये, कह उपकरन सु मद, उपचरिताऽनुपचरितमें, साधनतासमभद १४९ याद्य प्रवृत्तिमें, जोतुम कहो कुपरक, जोजन त्यजि अनशनजजो, ऐसे होत जु १५० घ्यानदीपको तेजजो, जोजन करो प्रमान, तो निवात पद उपकरन, माने न अजान ? ॥ १५१ कवित्त छत्तीसा ॥ पापके ओडेया महा मोहमें पोटेया देया देया करे देखि साधुके वसनकू, छिद्रके कटेया निंदाधर्मके मटेया माया दटेया लागे लोकने हसनकू, अगके पढेया गुण श्रेणिके चढेया शुद्ध शीलके कहे धर्म उल्लसनकू, फूलके खडेया सत्य थजके गटेया नेयावस्त्र पात्र हेत स। लीदसनकू ॥ १५२ ॥ दोहरा ॥ शीत त्राण कम्बके धरे, कवल वर्षा त्राण, ५ ते रामिये, जे सपातिम प्राण १५३ सरसज्ञानमें रात्रिये, चोल ५८ उचित धर्म आचारमें, नीललक नहि लाज १५४ आठ जेद जिनकल्पके, मो मूढ, नगन दिगावे सो त्यजे, वस्त्र नाहि ए गूढ १५५ और सिद्धात इमो कुमतको नाच, पे मनाद विनाकहा, पाचो प्रकरन साच १५६ अन तुम पढे, पाठ दिखावो तास, जन प्रकरन तुम गुरु किये, तन जो हुते १५७ हेमराज पाडे नियै, बोल चुराशी फेर, या विधि हम नापा न मन किय जेर १५८ है दिक्पटके वचनमें और दोप शत मान, केतेकाजे तुजन दधि उर मान १५९ पटिन ६ महदे मूरख मिथ्यामग,

सुविस्तारि ताविष्टपाशेषशांति ॥ गनान्यूनदोषं जर मुन्निनाग स्तुवे
ज्ञादिवंद्यं सदालब्धयोगं निशारत्नवक्त्राननं रक्तशोक ॥ [illegible]
स्तुवे देव० ॥ ६ ॥ जगत्तारक दानक सजज्ञानां श्रिर शान्तिनाथं
रम्यस्य रुद्निर्जिताताधिनाथ स्तुवे देव० ॥ ७ ॥ कृपावाहिनिन्नं
श्रीरुमातगपचास्यशोज ॥ विदुषाहककर्माग्गे परिनाथ स्तु [illegible]
॥ ८ ॥ इत्येव श्रीमहीरचद्रशिशुनामजूर [illegible] ॥ जयतु जि [illegible]
जितमदराग ॥ ९ ॥ इतिश्रीमत्पार्श्वनाथस्तवनाष्टक [illegible]





लेंची लगि पात्रसुहायो, जैनको जूपन जैनको वेप हे, ओर धरे कह हायमे
॥ १४३ ॥ दोहरा ॥ वाल अग्र पुद्गल धरे, मुखि जापत हो दोप, धरो कमडल
का, कहा करो कठशोप ? १४४ उपधि सहित नहु शुद्ध हे, ज्यू तदुल तुष
पग मन शुद्धता, कहे जाव जगवत, १४५ कहे कोउ पचखानको, उपकरने
देहा ऽहारादिकवीषे, तास न उचित प्रसग १४६ रौद्रध्यान मूर्छा प्रमुख,
रिसे तहं दोप, यतनासू निर्दोपता, ए सुवचन सत् कोप १४७ द्रव्यादिक
धरे न मूर्छा साधु, ए चोविह पचखानको, एकहु अर्थ अगाधु १४८ शुद्ध
वादये, कह उपकरन सु मंद, उपचरिताऽनुपचरितमें, साधनतासमद १४९
घाम प्रवृत्तिमें, जोतुम कहो कुपरु, जोजन त्यजि अनशनजजो, ऐसे होत जु
१५० ध्यानदीपको तेलजो, जोजन करो प्रमान, तो निवात पद उपकरन, मान
न अज्ञान ? ॥ १५१ कवित्त इकतीसा ॥ पापके ओढेया महा मोहमें पोढेया
देया देया करे देखि साधुके वसनकू, ठिद्रके कढेया निंदाचर्मके मढेया माया
दढेया लागे लोकमे हसनकू, अगके पढेया गुण श्रेणिके चढेया शुद्ध शीलके
धरे धर्म ग्रहसनकू, कूडके लढेया सत्य थत्तके गढेया जैयावस्त्र पात्र देन साचे
नीरसनकू ॥ १५२ ॥ दोहरा ॥ शीत त्राण कलके धरे, कनल वर्षा त्राण, मुख
से राखिये, जे सपातिम प्राण १५३ सवसज्ञानमें राखिये, चोल पट्ट
उचित धर्म आचारमे, नीलजकू नहि लाज १५४ आठ जेद जिनकल्पके,
गो मूढ, नगन दिखावे सो त्यजे, वस्त्र नाहि ए गूढ १५५ ओर सिद्धात
इसो कुमतको नाच, पे मनाद विनाकहा, पावो प्रकरन साच १५६ अब
तुम कहे, पाठ दिखावो ताम, जब प्रकरन तुम गुरु किये, तब जो हुते
१५७ हेमराज पाडे लिये, बोल चुराशी फेर, या विधि हम जाया वचन
मन किय जेर १५८ हे दिक्पटके वचनमे ओर दोप शत सात, केतेकासे
पुराण दवि डर माय १५९ पठित साचो सद्दहे, मूरख मिथ्यारग,
आधार हे, जन न त्यजे निज ढग १६० सत्य वचन जो सद्दहे, गहे साधु
वानर जग वह सो लहे, मगल रग अनग १६१ इति श्रीयशोविजयजी
कृत दिक्पट चोराशी बोल समाप्त ॥

॥ श्रीचिंतामणिपार्श्वनाथ जिनस्तोत्र लिख्यते ॥

किं कर्पूरमयं सुधारसमयं किं चंद्ररोचिर्मयं किं लावण्यमयं महामणिमयं
मयं ॥ विश्वानंदमयं महोदयमयं शोजामयं चिन्मयं शुक्लध्यानमयं वपुर्जिन

[illegible] ॥१॥ [illegible] विक्चकं क्रमयन् सुर
[illegible] च [illegible] ॥ [illegible] जलानि जजये फेनच्छलाल्लोलयन् श्री
[illegible] गर्जने ॥ २ ॥ पुण्यानां विपणिस्तमोदिनमणिः का
[illegible] ज्योति प्रजानागणि ॥ दाने देवमणिर्नतो
[illegible] श्रीपार्श्वचिंतामणिः ॥ ३ ॥ श्री
[illegible] मया [illegible] श्रियः समजनन्नागक
[illegible] ॥ मुक्तिः [illegible] मनोवांछितं दुर्दैवं दुरितं च दुर्दिन
[illegible] मम ॥ ४ ॥ [illegible] प्रोद्दामधामा जगज्ज्वालः कलि
[illegible] ॥ नित्योद्योतपदं समस्तकमलाकेलिगृहं राजते स
[illegible] चिंतामणि पातु मां ॥५॥ विश्वव्यापि तमो हिनस्ति तर
[illegible] दारिद्र्याणि गजावलिं हरिशिशुः काष्ठानि वन्हेः कणः॥पीयूषस्य
[illegible] विनो ॥ मूर्त्ति स्फूर्तिमती सती त्रिजगतीकष्टानि हर्तुं क्ष
॥ ६ ॥ श्रीचिंतामणिमंत्रमोंकृतियुतं न्ह्रींकारसाराश्रित श्रीमर्हं नमिऊणपासकलि
त्रैलोक्य[illegible] ॥ [illegible]विषापहं विषहरश्रेयःप्रभावास्पदं सोल्लासं वसुहांकितं
[illegible] ॥ ७ ॥ न्ह्रींश्रींकारवरं नमोक्षरपरं ध्यायंति ये योगिनो हृ
[illegible] विनिवेश्यपार्श्वमपि चिंतामणिसंज्ञकं ॥ भाले वामभुजे च नाभिकरयोर्भूयो भुजे
[illegible] पश्चादष्टदलेषु ते शिवपदं द्वित्रैर्भवैर्यांत्यहो ॥८॥ नो रोगा नैव शोका न कलहक
[illegible] नारिमारीप्रचारा ॥ नैवाध्यं नासमाधि नैव दुरदुरितेदुष्टदारिद्रता नो॥ नो शाकि
[illegible] नो न ग्रहिकरिगणव्यालवेतालजाला ॥ जायंते पार्श्वचिंतामणिनतिवशतः प्राणि
[illegible] ॥९॥ गीर्वाणद्रुमधेनुकुंभमणयः स्वस्यांगणे रंगिणो॥ देवादानवमानवाः स
[illegible] तस्मैहितं ध्यायिन ॥ लक्ष्मीस्तस्य वशा वशेव गुणिनां ब्रह्मांडसंस्थायिनी श्रीचिं
[illegible] पार्श्वनाथमनिशं संस्तौति यो ध्यायति ॥ १० ॥ इतिजिनपतिपार्श्वः पार्श्वपार्श्वा
[illegible] प्रदलितदुरितौघः प्रीणितप्राणिसंघः॥ त्रिभुवनजनवांछादानचिंतामणीकः शि
[illegible] बीजं बोधबीजं ददातु ॥ ११ ॥ इतिश्रीचिंतामणिपार्श्वनाथजिनस्तोत्रंसं० ॥
[illegible] गुरुभ्योनमः ॥ श्रियः संततेः कारकं श्रीजिनेशं महामोहभूपालनाशे क्षिने
[illegible] ॥ नतं नाकिजिन्नकिजिर्जीवनाथ स्तुवे देवचिंतामणिं पार्श्वनाथं ॥ १ ॥ महाना
[illegible] वैश्वानरा हि प्रवातांबुधीरोगसंतानदाहं ॥ जित [illegible] त्रिविश्वैकनाथं स्तुवे
० ॥ २ ॥ क्षमापार्श्वसेनस्य वंशेऽवतंसं हतक्रोधशत्रुं [illegible] ननांभोज
[illegible] स्फुटं घसनाथं स्तुवेदेव० ॥३॥ [illegible] धूम
[illegible] ॥ क्रमेदी वरालीननागांकनाथं स्तुवे [illegible] कांति

जगम तित्थ तुरगम सगम, रगम हानि धिकारन जानी, ताके प्रयोजन योजन साठि निशाहिमे आय जु निर्मल ज्ञानी, अघमही भृगु कछ सुजठन, पावन कीनि सुधाखरिवानी, ताके नमो मुनिसुव्रतके पद सपद कारन तारन प्रानी ॥ १०२ ॥ दोहरा ॥ महामत्र नव पद कहे, कहे पच पद आन, गोमुठमारादिक धुरे, नव पद लिखे प्रमान १०३ ज्यू चूला विनु श्रुत नही, त्यू न सुद्ध नवकार, जो सखे पहि आदरो, जपहु एक ॐकार १०४ श्रुत सवहीमे पच पद, नव पद श्रुत महमत, शुद्ध परपर बुध लहे, ए जिन शासन तत १०५ चूला वर्ण वतीशकी, कहे सु सबहि अजान, अडसठ अरकर कवचमे, कहे जु मत्र प्रमान १०६ नव अरकर पदये नही, तहा ठदको जग, ऐसे बहु पद देखिइ, आगममाहि सुचग १०७ देव देव उर देव सव, अर्द्ध मागधी वाणि, जासे सत्यारथ वचन, पचम अगे जाणि १०८ और कहे जिन जाखही, सर्व मागधी वाणि, तामे साखी कौन थो, कहा लाज कह हाणि ? १०९ दत रहित जिन मानते, याको नहि कछु लाज सा माने नहि दाढ तस, पूजे जे सुरराज ११० कहे ज्यु तंत्र समाविते, जाति लिग नहि हेत, चडालादिक जातिको, क्यु नहि मुकति सकेत, १११ गुणथानक प्रत्यय मिटे, नीच गोत्रकी लाज, दर्शन ज्ञान चरित्तको, सनहु तुल्य समाज ११२ कौन जाति अधिकारिणी, नहि तो कहो प्रमान, ब्रह्मजाति ब्रह्मणवदे क्षत्रिय क्षत्रिय मान ११३ त्राण नही कुल जाति कछु, विद्याचरण विहीन, सूगडागको वचन यह, क्यु न करो मन लीन ? ११४ करमजाव प्रजुको रह्यो, नीच गोत्र अवशेष, ताथे द्विज घरि अवतरे, तहा करे जम्न द्वेष ११५ दोष नही दो तातको, क्षेत्र बीजके न्याय, शील जग नहि मातकू, गर्ज न वीर्य कहाय ११६ अन्न रात्र परिनाम हे, पय तृणको परिनाम, द्रव्य जिन्न पें जिन्न गुन, गर्ज न वीरय नाम ११७ करम जाव प्रजुकु कह्यो, जो आवें तुम्ह लाज, सदा सिद्ध तो मानिलो, कहा जनमको काज ११८ कल्या नक दो घरि किये, कल्यानक पट्ट होत, सो दूशन हमकू नही, तहँ दिन गणित उद्योत ११९ सुरकृत कल्यानक नही, ऋषज राज अजिपेक, वीरगर्ज अपहारमें, त्यू न कल्यानक टेक १२० नेगमेषिकी शकति हे, रोम कूपमें गर्ज, सकम करतहि अपहरे, सो नहि मानत अर्ज १२१ कहें वाहुवल केवली, नम्यो ऋषजके पाय, वेठो देइ प्रदक्षिणा, कहो न फूठ वनाय १२२ अप्रमत्तता हे जहा, तहा न वधन जाव,

उचित प्रवृत्ति न ठानही, तौ जी जिन सद्भाव. १२३ ठौंक न मानै वीरकूं. कर्म वेद्य को नाव फरसनकू; दरसन कहे सो तौ कुटिल स्वनाव. १२४ हरि हरिनी हरिवर्षके.यु गल हरै सुर कोइ; मथुरा नगरी राज्य दिइः करे देह लघु सोइ. १२५ निज्य शक्ति तवयें नयो, हरिको वंश विशाल: ऐसो अचरय नाव ए. होत अनंतहि काल १२६. काल अनंत अनंतयें. युगल युगल अपहारि; शून्य होत हरि खेत युं, रूपन कहे विचारि. १२७ हां कहे सिद्धांत हम, जैसो युग अपहार; तैसो पूरन ताहिको, काल वहू निर धार. १२८ एक रूप अचरय नही, सदा कहे दश संख्य; काल अनंत अनंतथें, होत असंख्य असंख्य १२९ कहे चमरकी गति नही. शक्र लगें निरधार; ताकूं कोप कृतां तको, जगवइ अंग विचार. १३० देशअनारयमेंनही, वीर विहार अशुद्ध, मनुपिणि व न जोगवे, कहे सु वचन विरुद्ध. १३१ सुदि वेशाख दशमि दिने, वीर उपन्नो ज्ञान; श्रावन सुदि परुवा दिने; आपुन कियो वखान. १३२ ठासठ दिन मोनी रहे, ताके एम अजान; एकडु सजा अजापितां, हम हैं वचन प्रमान. १३३ मोन अजा वेत जानिके, मानहु अधिक डुमास; एक सजा तेसी कहत, क्यूं लागत तुम पास १३४ ठवे देव जिन विचरिते; पान कमल पग हेठि; कहे नूमि परि गमनमें, ते देव नकी वेठि. १३५ पाठ धरे जहं धरनि परि, तहां कमलको काज; कमल गगन उपरि चले, कहा वन्यो एसाज. ! १३६ सोल सुपन जिनमातकूं, सोल कहे सुर लोक; इंद्र मिखत सत मानही, ते सवही मत फोक. १३७ वदले अतिशय तीस चउ, कहे जु गुरु कुल रीति; तौ अदृश्य आहार विधि, दाखत पावे नीती. १३८ नुगति रहित जिनवर कह्यो, वलि ढोकत कुन हेत, चरम नीर घृत कुतपको, कौन दोप कहु ले त. ? १३९ मरुदेवी औ नाजिको; युगल धर्म नहि दोष; दशायु सनमुख धर्मकी, करे धर्मको पोप १४० सुर नर विहित विवाहको, जवलूं नहि व्यवहार; प्रजुकूं नी तवलूं नही, युग्म धर्म अधिकार. ॥ १४१ ॥ कवित्त इकतीसा. ॥ साधुकूं कुपात्र कोउ कहे पात्रधारी नांहि; ठात्रसो पढ्यो है कोपें गात्रकूं न मानही; पाउधारी नाहि, लब्धि पात्र और पात्रधारी; एह रीति नीति ज्ञाता सूत्रयें प्रमानही; ग्लानकूं आहार दान पात्र विनु केसे होत, गृही पात्र जुंजे तो ग्रहस्थ नाव ठानही; पाहुनेकी नक्ति युक्ति पात्रहीथे करे साधु, पिरुकी संगक्ति पात्र विना केसे जानही. ॥ १४२ ॥ सवैया तेइसा ॥ शौचके कारन राखे कमंडलु, पात्रकुं ठोरि कहा गुन पायो; वीठिसि पींठि धरी त्यजि उघेकुं, औरसु मूढने वेप वनायो; नतलेंधी लग जोहि कमंडलु, पात्र

जंगम तित्थ तुरंगम सगम, रंगम ह्वानि धिकारन जानी, ताके प्रयोजन योजन साठि निशाहिमे आय जु निर्मल ज्ञानी, अछमही भृगु कछ सुलछन, पावन कीनि सुधाखरिवानी, ताके नमो मुनिसुव्रतके पद संपद कारन तारन प्रानी ॥ १०२ ॥ दोहरा ॥ महामत्र नव पद कहे, कहे पच पद आन, गोमुठसारादिक धुरे, नव पद लिखे प्रमान १०३ ज्यू चूला विनु श्रुत नही, त्यू न मुढ नवकार, जो नखे पहि आदरो, जपहु एक ॐकार १०४ श्रुत सवहीमे पच पद, नव पद श्रुत महमत, शुद्ध परपर बुध लहे, ए जिन शासन तत १०५ चूला वर्ण बतीशकी, कहे सु सबहि अजान, अडसठ अरकर कवचमे, कहे जु मंत्र प्रमान १०६ नव अरकर पदये नही, तहा ठदको भंग, ऐसे यहु पद देखिऽ, आगममाहि सुचग १०७ देव देव उर देव सब, अर्द्ध मागधी वाणि, जासे सत्यारथ वचन, पचम अगे जाणि १०८ और कहे जिन भासही, सर्व मागधी वाणि, तामे साखी कौन थो, कहा लाज कह हाणि ? १०९ दत रहित जिन मानते, याको नहि कछु लाज. सा माने नहि दाढ तस, पूजे जे सुरराज ११० कहे ज्यु तत्र समाधिते, जाति लिंग नहि हेत, चडालादिक जातिको, क्यु नहि मुकति सकेत, १११ गुणथानक प्रत्यय मिटे, नीच गोत्रकी लाज, दर्शन ज्ञान चरित्तको, सवह तुल्य समाज ११२ कौन जाति अधिकारिणी, नहि तो कहो प्रमान, ब्रह्मजाति ब्रह्मणवंदे क्षत्रिय क्षत्रिय मान ११३ त्राण नही कुल जाति कछु, विद्याचरण विहीन, सूगडागको वचन यह, क्यु न करो मन लीन ? ११४ करमभाव प्रभुको रह्यो, नीच गोत्र अवशेष, तायें द्विज घरि अवतरे, तहा करे जम द्वेष ११५ दोष नही दो तातको, क्षेत्र बीजके न्याय, शील भग नहि मातकू, गर्भ न वीर्य कहाय ११६ अन्न खात्र परिनाम हे, पय तृणको परिनाम, द्रव्य भिन्न पें भिन्न गुन, गर्भ न वीरय नाम ११७ करम भाव प्रभुकु कहो, जो आवे तुम्ह लाज, सदा सिद्ध तो मानिलो, कहा जनमको काज ११८ कल्यानक दो घरि किये, कल्यानक षट्ट होत, सो दूशन हमकू नही, तहँ दिन गणित उद्योत ११९ सुरकृत कल्यानक नही, ऋषभ राज अभिषेक, वीरगर्भ अपहारसें, त्यू न कल्यानक टेक १२० नैगमेषिकी शकति हे, रोम कूपमें गर्भ, सक्रम करतहि अपहरे, सो नहि मानत अर्भ १२१ कहे बाहुबल केवली, नम्यो ऋषभके पाय, बेठो देइ प्रदक्षिणा, कहो न ऋूव बनाय १२२ अप्रमत्तता हे जहा, तहा न बधन भाव,

[illegible] प्रगटि न [illegible], सो तो जिन व्यवहार १२३ नीर न मानें सीतकूं [illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] कहे सो तो [illegible] [illegible]. १२४ हरि हरिनी हरिजैसे सु [illegible] [illegible] [illegible] मथुरा नगरी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. १२५ दिव गति [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. होत अनंतहि काल १२६. काल [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] होत हरि [illegible] [illegible]. [illegible] कहे विचारि. १२७ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नाहिसी. काल बहु [illegible]. १२८ [illegible] [illegible] [illegible] नहीं [illegible] कहे [illegible] [illegible] काल अनंत अनंतसें. होन [illegible] [illegible] १२९ [illegible] [illegible] गति नहीं. [illegible] [illegible] निरधार. नाहूं कोप [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] विचार १३० [illegible]. वीर विहार [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible]. कहे सु वचन विरुद्ध १३१ सुदि [illegible] [illegible] दिने. वीर उपन्नो [illegible], श्रावन सुदि [illegible] दिने आपुन कियो पयान. १३२ [illegible] दिन मौनी रहे. [illegible] [illegible] अजान. [illegible] [illegible] अजापितां. [illegible] है वचन प्रमान १३३ मौन अजा [illegible] जानियें मानए अधिक कुमान; एक सजा [illegible] कहत. क्यूं लागत तुम पास १३४ जबै देव जिन विचरिते; पान कमल पग हेठि; कहे नूनि परि गमनमें, ते देव नकी वेठि १३५ पाउ धरै जहां धरनि परि, तहां कमलको काज; कमल गगन उपरि चले. कहा वन्यो गम्राज. ! १३६ सोल सुपन जिनमातकूं, सोल कहें सुर लोक; इंद्र मिलत सत मानही ते सवही मत फोक. १३७ वदले अतिशय तीस चउ. कहे जु गुरु कुल रीति, तो अहश्य आहार विधि, दाखन पाव नीती. १३८ कुगति रहित जिनवर कहो, वलि टोकत कुल हेत, चरम नीर घृत कुलपको, कौन दोप कहु ले न ? १३९ मरुदेवी औ नाभिको; युगल धर्म नहि दोप, दशायु सनूमुख धर्मकी, करै धर्मको पोप १४० सुर नर विहित विवाहको, जवलूं नहि व्यवहार; प्रभुकूं जी तवलूं नहीं, युग्म धर्म अधिकार ॥ १४१ ॥ कवित्त इकतीसा. ॥ साधुकूं कुपात्र कोउ कहे पात्रधारी नांहि; गात्रसो पट्यो है कोंपे गात्रकूं न मानही; पाउधारी नाहि, लब्धि पात्र और पात्रधारी; एह रीति नीति ज्ञाता सूत्रथें प्रमानही; ग्लानकूं आहार दान पात्र विनु कैसे होत, गृही पात्र भुंजे तो ग्रहस्थ जाव गानही; पाहुनेकी भक्ति युक्ति पात्रहीथें करै साधु, पिंडकी संशक्ति पात्र विना कैसे जानही. ॥ १४२ ॥ सवैया तेइसा ॥ शौचके कारन राखे कमंडलु, पात्रकुं ठोरि कहा गुन पायो; वीठिसि पींछि धरी त्यजि उंघेकुं, औरसु मूढने वेप वनायो; नतलब्धी लग जोहि कमंडलु, पात्र

जंगम तिरय तुरगम सगम, रंगम हानि धिकारन जानी, ताके प्रयोजन योजन साहि निशाहिमे आय जु निर्मल ज्ञानी, अश्वमही भृगु कछ सुलछन, पावन कीनि सुधारसवानी, ताके नमो मुनिसुव्रतके पद सपद कारन तारन प्रानी ॥ १०२ ॥ दोहरा ॥ महामत्र नव पद कहे, कहे पच पद ध्यान, गोमुखसारादिक धुरे, नव पद विखे प्रमान १०३ ज्यू चूला विनु श्रुत नही, त्यू न मुढ नवकार, जो सखे पढि आदरो, जपहु एक ॐकार १०४ श्रुत सवहीमे पच पद, नव पद श्रुत महमन, गुरू परपर बुध लहे, ए जिन शासन तंत १०५ चूला वर्ण वतीशकी, कहे सु सवहि अजान, अडसठ अक्षर नवचमे, कहे जु मत्र प्रमान १०६ नव अक्षर पदये नही, तहां लहको भग, ऐसे बहु पद देखिर, आगममाहि सुचंग १०७ देव देव नर देव सव, अर्द्ध मागधी वाणि, जाते सत्यारथ वचन, पंचम अगे जानि १०८ और कहे जिन भागही, सर्व मागधी वाणि, तामे साखी कोन थो, कहा लाज पद हाणि ? १०९ दत रहित जिन मानते, याको नहि कबु लाज. सा मानि नहि दाट तन, पूजे जे सुरराज ११० कहे ज्यु तव समाप्तिते, जाति लिग नहि हेत, चडालादिक जातिको, क्यु नहि मुकति सकेत, १११ गुणथानक प्रापप मिटे, नीच गोत्रकी लाज, दर्शन ज्ञान चरित्तको, सवहु तुल्य समाज ११२ कोन जाति अधिकारिणी, नहि तो कहो प्रमान, ब्रह्मजाति ब्रह्मणवदे क्षत्रिय क्षत्रिय मान ११३ प्राण नही कुल जाति कबु, विद्याचरण विहीन, सूगडागको वचन पढ, क्यु न करो मन लीन ? ११४ करमनाव प्रभुको रह्यो, नीच गोत्र अवलेप, तापे द्विज घरि अवतरे, तहा करे जम्म हेप ११५ दोष नही दो मानवो, क्षेत्र बीजके न्याय, शील भग नहि मातहू, गर्भ न वीर्य कहाय ११६ अन्न न्याय परिनाम है, पय तृणको परिनाम, द्रव्य भिन्न पे भिन्न गुन, गर्भ न वीरय नाम ११७ करम भाव प्रभुकु कह्यो, जो आवे तुम्ह लाज, महा मिद्ध तो मानिवो, कहा जनमको काज ११८ कहा नव दो घरि दिये, कल्यानक पद होन, सो दूशन हमहू नही, तहँ दिन गणित दयोन ११९ सुरकृत कल्यानक नही, इन्द्र गज अनिमेख, वीरगर्भ अपहारमें, ग्यू न कल्यानक टेक १२० नेगमेषिकी शक्ति है, रोम कूपमें गर्भ, संक्रम करनहि करते, सो नहि मानन अर्थ. १२१ कहे बाहुबल केवली, नम्यो रुपतरे पाय, वेगो देह दरहिया, कहो न छन्न बनाय १२२ अप्रमतता है जहां, तहा न वरन नाय,

अंत प्रवृत्ति न ठारही, तो जी जिन सद्भाव. १२३ ठींक न माने वीरकूं, कर्म वेद्य को जाव;फरसनकूं दरसन कहे,सो तो कुटिल स्वजाव. १२४ हरि हरिनी हरिवर्षके,यु गल हरे सुर कोइ; मथुरा नगरी राज्य दिइ; करे देह लघु सोइ. १२५ दिव्य शक्ति तिथें जयो, हरिको वंग विशाल;ऐसो अचरय जाव ए, होत अनंतहि काल १२६. काल ल अनंतथें, युगल युगल अपहारि; शून्य होत हरि खेत युं, दूपन कहे विचारि. १२७ कहे सिद्धांत हम, जेसो युग अपहार; तेसो पूरन ताहिको, काल वहू निर . १२८ एक रूप अचरय नही, सदा कहे दश संख्य; काल अनंत अनंतथें, होत संख्य असंख्य १२९ कहे चमरकी गति नही, शक्र लगें निरधार; ताकूं कोप कृतां ो, जगवइ अंग विचार. १३० देशअनारयमेंनही, वीर विहार अशुद्ध; मनुपिणि न जोगवे, कहे सु वचन विरुद्ध. १३१ सुदि वैशाख दशमि दिने, वीर उपन्नो न; श्रावन सुदि परूवा दिने; आपुन कियो वखान. १३२ ठासठ दिन मोनी रहे, खे एम अजान; एकहु सजा अजापितां, हम हैं वचन प्रमान. १३३ मौन अजा त जानिके, मानहु अधिक डुमास, एक सजा तैसी कहत, क्यूं लागत तुम पास १३४ ठवे देव जिन विचरिते; पान कमल पग हेठि; कहे जूमि परि गमनमें, ते देव की वेठि. १३५ पाउ धरे जहँ धरनि परि, तहां कमलको काज; कमल गगन उपरि है, कहा वन्यो एसाज. ! १३६ सोल सुपन जिनमातकूं, सोल कहैं सुर लोक; इंद्र खित सत मानही, ते सवही मत फोक. १३७ वदले अतिशय तीस चउ, कहे जु रु कुल रीति; तो अदृश्य आहार विधि, दाखत पावै जीती. १३८ जुगति रहित जिनवर कहो, वलि ढोकत कुन हेत, चरम नीर घृत कुतपको, कौन दोप कहु ले न. ? १३९ मरुदेवी औ नाजिको; युगल धर्म नहि दोप; दशायु सन्मुख धर्मकी, करे धर्मको पोप १४० सुर नर विहित विवाहको, जवलूं नहि व्यवहार; प्रजुकूं जी जवलूं नही, युग्म धर्म अधिकार. ॥ १४१ ॥ कवित्त इकतीसाः ॥ साधुकूं कुपात्र कोउ कहे पात्रधारी नांहि; ठात्रसो पढ्यो है कोपे गात्रकूं न मानही; पाउधारी नाहि, लब्धि पात्र और पात्रधारी; एह रीति नीति ज्ञाता सूत्रथें प्रमानही; ग्लानकूं आहार दान पात्र विनु केसे होत, गृही पात्र जुंजे तो गृहस्थ जाव ठानही; पाहुनेकी जक्ति युक्ति पात्रहीथे करे साधु, पिंककी संशक्ति पात्र विना केसे जानही. ॥ १४२ ॥ सवैया तेइसा ॥ शौचके कारन राखे कमंडलु, पात्रकुं ठोरि कहा गुन पायो; वीठिसि पींठि धरी त्यजि उघेकुं, औरसु मूढने वेप वनायो; नतलेंधी लग जोहि कमंडलु, पात्र